100 नाटक

बच्चों के सौ नाटक

बच्चों के सौ नाटक

संपादक

डा० हरिकृष्ण देवसरे

आमुख

नाटक से मनोरंजन के साथ साथ जीवन की सम्यक अभिव्यक्ति संभव मानी गई हैं। पं० सीताराम चतुर्वेदी ने बच्चों के नाटकों का मुख्य उद्देश्य 'अवसर के अनुकूल आचरण सिखाना, साथ ही मानवस्वभाव और मानवचरित्र का अध्ययन करना, भावों को व्यक्त करना, सम्यक रीति से उच्चारण करना, बोलना और अभिनय सिखाना' माना है। किंतु नाटकों का एक प्रमुख उद्देश्य मनोरंजन करना भी है। पीटर स्लेड का मत है : 'नाटक का अर्थ है क्रिया और संघर्ष। यह बहुत बड़ी क्रिया है। जहां कहीं भी जीवन है, वहां यह कभी नहीं रुकती। इसका मानसिक स्वास्थ्य से आंतरिक संबंध होता है। यह जीवन जीने की कला है। यह तभी कार्य करती है जब भावात्मक पक्ष वास्तविकता के साथ अनुकूल रूप में होता है।'

बच्चों को अपने नाटकों के लिए अपने बड़ों पर निर्भर करना पड़ता है। जब कभी भी बच्चों को नाटक खेलने की आवश्यकता होती है, तब अच्छे नाटक का चुनाव एक समस्या बन जाता है। यह 'अच्छा नाटक' क्या है? वास्तव में बच्चे ऐसे नाटक को अधिक पसंद करते हैं जिसमें उनका भरपूर मनोरंजन तो हो ही, साथ साथ वे उसे अपने सीमित साधनों में ही मंच पर प्रस्तुत कर सकें, उसके संवाद सरल और कंठस्थ किए जा सकने वाले हों तथा दर्शकों को वह अपने साथ लेकर चले।

हिंदी में बच्चों के नाटक लिखने और उनको मंच पर प्रस्तुत करने की आवश्यकता पिछले लगभग सौ वर्षों मे महसूस की जाती रही है। लेकिन आरंभ में जो नाटक लिखे गए, उनका स्वरूप, उनकी भाषा बच्चों के अनुरूप नहीं बन पाई। यह और बात है कि बच्चों ने उसे सरल बनाकर किसी तरह मंच के योग्य बना लिया। राजा लक्ष्मण सिह के नाटक 'शकुंतला' (दृष्टव्य : 'बालक भरत') और भारतेंदु हरिश्चंद्र कृत 'अंधेर नगरी' के साथ यही हुआ।

बच्चों के नाटकों का एक संकलन सन १९१७ में प्रकाशित हुआ था— 'सरल नाटक माला'। इसमें ५१ नाटक संकलित किए गए थे। संपादक के अनुसार इन नाटकों का संग्रह करते समय यह ध्यान रखा गया था कि 'अश्लीलता या अनुचित शृंगार रस न आवे, स्त्री पात्र न आवें, परदों का विशेष उलझाव न रहे और यथासंभव शिक्षा मिले।' इन नाटकों को जिस आवश्यकता को महसूस करते हुए संकलित किया गया था, वह भी संपादक ने स्पष्ट किया : 'जब किसी स्कूल में किसी उच्च पदाधिकारी का शुभागमन होता है अथवा कोई शुभ अवसर उपस्थित

होता है तो एकत्रित जनसमुदाय के मनोविनोद के लिए कोई नाटक खेलने का प्रयत्न बहुधा किया जाता है...यद्यपि हिंदी में नाटकों का अभाव नहीं है, तथापि अच्छे नाटकों की संख्या बहुत थोड़ी है।' इस कथन से स्पष्ट है कि इन बालनाटकों के संकलन का उद्देश्य यह था कि उच्चाधिकारियों अथवा शुभ अवसर पर उपस्थित जनसमूह के मनोविनोद के लिए नाटक उपलब्ध कराए जाएं। बच्चों के मनोरंजन या उनकी अभिनय कला में विकास करने का कोई उद्देश्य न था। संकलन के नाटकों के विषय भी मुख्य रूप से स्कूलमास्टर या पंडितजी का बच्चों से मजाक उड़वाना, उस समय की राजनीतिक स्थिति पर जबरदस्ती कुछ कहलवाना, अंगरेजी-हिंदी के शब्दों के गलत अर्थ निकालकर जबरदस्ती हंसाने की कोशिश करना आदि थे। उदाहरण स्वरूप हमने दो नाटकों के संपादित अंश इस संकलन में दिए हैं।

बच्चों के नाटकों की दिशा में द्विवेदीयुग और उसके बाद भी कोई उल्लेखनीय प्रगति नहीं हुई। जो भी छोटे छोटे नाटक पाठ्यपुस्तकों में उपलब्ध हुए, वे दरअसल बड़ों के नाटकों को काट-छांटकर, उनकी भाषा को सरल करके ही प्रस्तुत किए गए नाटक थे। 'प्रताप प्रतिज्ञा', 'राखी की लाज', 'मातृभूमि का मान' ऐसी ही रचनाएं हैं। कुछ स्फुट रचनाएं 'मच्छड़राम', 'कर्तव्यपालन', 'वैयाकरण' आदि संभवतः बच्चों के लिए विशेष रूप से लिखी गई हों, किंतु इनमें मनोरंजन कम, शिक्षा देने की भावना अधिक परिलक्षित हुई है। फिर भी, पाठ्यपुस्तकों के माध्यम से ही सही, जो छोटे छोटे एकांकी इस तरह संकलित होकर बच्चों तक पहुंचे, उनसे बच्चों में इस विधा के प्रति रुचि जागृत करने में निश्चय ही सहायता मिली है। इसीलिए इन एकांकियों को इस संकलन में स्थान दिया गया है।

बच्चों के लिए पृथक नाटकों की रचना की ओर स्वतंत्रताप्राप्ति के बाद गंभीरतापूर्वक ध्यान दिया गया। जबलपुर से मिश्रबंधु प्रकाशन ने नर्मदाप्रसाद खरे कृत 'नवीन बालनाटक माला' (सन १९५४) दो भागों में प्रकाशित की। इसके छोटे छोटे नाटकों में कम से कम पात्र रखे गए थे और कथानक भी छोटे-छोटे ही थे। इन नाटकों को मंच पर प्रस्तुत करने की अपेक्षा, कक्षा या घर के कमरे में बच्चे खेल खेल में ही प्रस्तुत कर सकते थे। लेखक ने इन नाटकों का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए कहा था : 'नौ-दस वर्ष के बालकों के मानसिक स्तर का ध्यान रखकर ही इन नाटकों की रचना की गई है। इन नाटकों की कथाओं से अधिकांश बालक पहले से ही परिचित रहेंगे, ऐसा हमारा विश्वास है। इस दृष्टि से इन नाटकों को पढ़ने में उन्हें आनंद आएगा और वे इनका अभिनय करने की चेष्टा भी करेंगे।'

बच्चों के पत्रों में भी सरल और अभिनेय बालनाटकों का प्रकाशन आरंभ हो गया था। 'भारत' के 'बाल विशेषांक' (१९५६) में कई अच्छी रचनाएं

प्रकाशित हुई थीं, इनमें बच्चों की रुचि के अनुकूल कथानक लिए गए थे और साथ ही इन्हें बच्चे मंच पर प्रस्तुत भी कर सकते थे। युक्तिभद्र दीक्षित कृत 'अक्षर सम्मेलन', रमेश वर्मा कृत 'टिकट नहीं लिया' और उमाकांत मालवीय कृत 'सूरज की जीत' ऐसी ही रचनाएं हैं। 'अक्षर सम्मेलन' में मनोरंजन के साथ-साथ बच्चों में कविता के प्रति रुचि का विकास करने की भावना है तो 'सूरज की जीत' संगीत नाट्य है जो एक रोचक कथा के मनोरंजन के साथ बच्चों को अपनी अभिनयकला विकसित करने का अवसर भी देता है। 'टिकट नहीं लिया' में बिना टिकट यात्रा के जोखिम को स्पष्ट किया गया है।

केशवचंद्र वर्मा कृत 'बच्चों की कचहरी' (१९५६) बच्चों के सुंदर एकांकियों का संग्रह सिद्ध हुआ और उस समय इसकी काफी चर्चा हुई थी। इस संग्रह के सभी एकांकी अभिनेय तो थे ही, इनके विषय बच्चों की अपनी समस्याओं और अपने परिवेश से सीधे जुड़े हुए थे। इसलिए इन एकांकियों का स्वागत हुआ था। 'बच्चों की कचहरी' में एक ऐसी घरेलू अदालत का दृश्य प्रस्तुत किया गया है जिसमें अपराधी 'माली' पर मुकदमा चलाया जाता है। बेचारा माली परेशान होकर कह उठता है—'चिरियन केर जान जाय, लरिकन केर खिलौना।' 'काला चोर' में जासूसी उपन्यास पढ़ने वाले एक 'पढ़ाकू' लड़के की कहानी है जो सपने में काले चोर से भिड़ जाता है। 'बड़े भैया' की समस्या हल करने में प्रयत्नशील बच्चे अंत में किस तरह खामोश हो जाते हैं, यह एक रोचक स्थिति है। शेखी बघारने वाले एक बच्चे की पोल खुलती है 'शेर का शिकार' में।

'चचा छक्कन के ड्रामे' (१९५७) में कुदसिया जैदी ने बड़ी ही रोचक स्थितियों की कल्पना की थी। सहजता और सरलता इन नाटकों की विशेषता थी। इसी तरह के कुछ और भी स्फुट प्रयास हुए किंतु वे उल्लेखनीय महत्व के नहीं बन सके।

सन १९६२ में श्रीकृष्ण और योगेंद्र कुमार लल्ला के संपादन में 'प्रतिनिधि बाल एकांकी' संकलन का प्रकाशन हुआ। यह एक ऐतिहासिक प्रकाशन सिद्ध हुआ क्योंकि इससे पूर्व बच्चों के श्रेष्ठ एकांकियों को इस तरह प्रस्तुत करने की दिशा में कोई प्रयास नहीं हुआ था। इन एकांकियों को प्रस्तुत करने के लिए संपादकों ने कई वर्ष तक अपना प्रयास जारी रखा, क्योंकि :

> ऐसे बाल एकांकी तो काफी मिले जो सच्चे अर्थों में बच्चों के लिए थे ही नहीं। कुछ तो रंगमंच पर खेले नहीं जा सकते थे, कुछ में समस्याएं बच्चों से संबंधित नहीं थीं। किसी की भाषा क्लिष्ट थी, किसी के संवाद नीरस थे। किसी में दृश्य अधिक थे, किसी में पात्रों की संख्या। अंत में हिंदी के कई यशस्वी और सिद्धहस्त साहित्यिकों से प्रार्थना की, आग्रह किया। प्रयत्न

जारी रखे और तीन वर्ष के प्रयत्नों तथा परिश्रम के बाद यह संग्रह प्रस्तुत हुआ।

इस संकलन के एकांकी अभिनेय हैं और साधारण परिस्थितियों में थोड़े से सामान द्वारा भी इन्हें रंगमंच पर प्रस्तुत करना संभव है। यहां इस संकलन से कुछ चुने हुए एकांकी हमने प्रस्तुत किए हैं। बच्चों को अपनी आया से किस तरह की शिकायत हो सकती है और कितनी रोचक तथा बालसुलभ बातें उठ सकती हैं, इसे 'आया का मुकदमा' में बड़ी सहजता से प्रस्तुत किया गया है। यदि थोड़ा-सा प्रयास करके मजेदार मेकअप हो सके तो 'सब्जी सम्मेलन' जैसे एकांकी को बड़ी सुगमता से प्रस्तुत किया जा सकता है और इसके दर्शक हंसते हंसते लोटपोट हो जाएंगे। यात्रा की तैयारी अपने आप में एक रोचक स्थिति होती है, शायद यात्रा से भी अधिक रोचक। तब अगर 'गाड़ी रुकी नहीं' तो इसमें यात्रा करने वाले का दोष है या गाड़ी का? आलसियों का शत्रु है 'आराम हराम है' का मंत्र। लेकिन ऐसे लोगों को भी ठिकाने लगाना ही पड़ता है। 'गुड़िया का इलाज' वास्तव में बच्चों की एक टेढ़ी समस्या होती है, किंतु यदि बच्चे इसे भी मजाक समझ लें और किसी के भोलेपन का लाभ उठा लें तो इसमें किसकी गलती है? आज के वैज्ञानिक युग ने सुविधाएं तो दी हैं किंतु घर में कदम कदम पर खतरों को भी उपस्थित कर दिया है। यही परेशानी प्रस्तुत है 'खतरनाक घर' में, जो आज का कोई भी घर हो सकता है। जब 'सेर को सवा सेर' मिल जाता है तो चालाक से चालाक आदमी भी ठीक हो जाता है। लेकिन कई बार 'सिर मुंड़ाते ही ओले पड़ते हैं' क्योंकि सोचा कुछ, किया कुछ और हुआ कुछ। कभी कभी कम ताकत वाले बड़ी ताकत वाले से भिड़ने का साहस तो कर ही बैठते हैं। 'शिशु सम्मेलन' में बच्चों ने कुछ ऐसे ही फैसले किए। लेकिन जब पिताजी आए तब सारा खेल उलट गया। गुड़िया की बीमारी की बात तो हो चुकी है, अब 'गुड़िया के ब्याह' की भी स्थिति का आनंद लीजिए। कुल मिलाकर ये सभी एकांकी बच्चों को अपनेपन का एहसास कराते हैं और उनमें एक अच्छे अभिनेता बनने के अंकुर जगाते हैं।

बच्चों में राष्ट्रीय भावनाएं जागृत करने और राष्ट्रीय समस्याओं से उन्हें परिचित कराने में नाटकों की महत्वपूर्ण भूमिका का प्रयोग भी किया गया। भारत पर हुए चीनी हमले (१९६२) के बाद ऐसी कई रचनाएं प्रकाशित हुईं जिनमें एकता, सहयोग और साहस की भावना को बल प्रदान किया गया था। मनोहर वर्मा कृत 'हम सब एक हैं' में गुड्डे-गुड़िया की शादी के बहाने विभिन्न प्रांतों के विभिन्न भाषाभाषियों के बीच एकता स्थापित की गई। 'सहयोग' (बालकराम नागर) की रस्सी यदि परिश्रम से तैयार की जाए तभी मजबूत बनेगी, वरना हमारी फूट का भूत ही हमें खा जाएगा। 'हम एक हैं' (कमलेश्वर),

'राह अनेक : मंजिल एक' (राधेश्याम 'प्रगल्भ') 'बालनिकेतन' (सरस्वतीकुमार दीपक), 'बचत आंदोलन' (आनंदप्रकाश जैन) भी ऐसे ही एकांकी हैं जिनमें राष्ट्रीय समस्याओं से बच्चों को परिचित कराने के साथ साथ उनके समाधान में बच्चों की क्या संभावित भूमिका हो सकती है, इसे भी सुझाया गया है।

बच्चों की अपनी समस्याओं, समसामयिक परिस्थितियों और बदलते समाज की स्थितियों पर आधारित विषयों को लेकर एकांकी लेखन की परंपरा का विकास करने में बच्चों के मासिक पत्र 'पराग' का योगदान अत्यंत उल्लेखनीय हैं। 'पराग' ने समय समय पर बालसमस्याओं से संबंधित एकांकियों के प्रकाशन का महत्वपूर्ण कार्य तो किया ही, साथ ही 'बाल एकांकी प्रतियोगिता' आयोजित कर कुछ प्रतिनिधि और महत्वपूर्ण एकांकी भी प्रस्तुत किए। 'जासूसी का शौक' (राजकमल जौहरी) अच्छा होते हुए भी कई बार अपने ही जाल में लोग कैसे फंस जाते हैं— यह रोचक स्थिति दृष्टव्य है। कोई लड़का अगर 'झगड़ालू' घोषित कर दिया जाए तो वह कैसा महसूस करेगा ? और फिर बच्चों की अदालत उस पर मुकदमा चलाए ? इस स्थिति का रोचक चित्रण है 'झगड़ालू लड़का' (श्रीकृष्ण) में। इनका ही दूसरा नाटक है 'पुस्तकालय' जिसमें पुस्तकालय के उपयोग और उसके नियमों के बारे में बच्चों को जागरूक बनाने का प्रयत्न है।

कमलेश्वर ने बच्चों के लिए कई रोचक एकांकियों की रचना की। उन्होंने बच्चों की समस्याओं और उनके आपसी संबंधों का सूक्ष्मता से अध्ययन किया। इसी आधार पर लिखे उनके एकांकी ('दोस्ती', 'पैसों का पेड़') बहुत सफल और रोचक बन पड़े हैं। भूलों से नसीहत लेकर निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है 'हारिए न हिम्मत' (राधेश्याम 'प्रगल्भ') में, और विपत्ति के समय जो काम आए, वही सच्चा मित्र है इसकी सीख दी है 'विपति कसौटी जे कसे' (राधेश्याम 'प्रगल्भ') ने। जादू और ज्योतिष के चमत्कार बच्चों को मजा तो देते हैं किंतु इनके प्रति अंधविश्वासी बनना खतरे से खाली नहीं रहता। 'ज्योतिष का चमत्कार' (घनश्याम गोयल) मजेदार नाटक है।

बच्चों के लिए जिन स्वनामधन्य नाटककारों ने कलम उठाई है, उनमें विष्णु-प्रभाकर के प्रति बालसाहित्य सदैव ऋणी रहेगा। विष्णुजी ने बच्चों के क्रिया-कलापों, उनकी आदतों और उनके दैनिक जीवन की स्थितियों से अनेक कथानक उठाकर नाटक लिखे हैं। 'पुस्तक कीट' में दिन-रात कीड़े की तरह पुस्तक से चिपटी रहने वाली बालिका की समस्या है, 'बहादुर बेटा' में देश के लिए कुछ करने की चाह है और 'हड़ताल' में बच्चों की अपनी समस्या प्रस्तुत की गई है।

इतिहास की घटनाओं और पौराणिक चरित्रों को लेकर लिखे गए एकांकियों का अपना विशिष्ट महत्व होता है। ये एकांकी जहां बच्चों को देश की सांस्कृतिक, आध्यात्मिक और वीरता की परंपराओं से जोड़ते हैं, वहीं सामयिक संदर्भ में उनके

अर्थों को भी स्पष्ट करते हैं। 'सिद्धार्थ का गृहत्याग' (नरेश मेहता), 'टेढ़ी उंगली' (मन्मथनाथ गुप्त), 'मां का प्यार', 'वीर अभिमन्यु' आदि ऐसी ही रचनाएं हैं।

घर के सदस्यों, विशेषकर भाई-बहन के संबंधों में अनेक बार बालोचित झगड़े उठ खड़े होते हैं। 'झूठ का दान' (देवराज दिनेश) और 'पानी और रसगुल्ले' (रमेश भाई) में ऐसी ही स्थितियों का समाधान है। लेकिन कुछ मजेदार स्थितियां भी आती है और बच्चों को उनमें अधिक आनंद मिलता है, जैसे : 'मजेदार मामाजी' (सत्येंद्र शरत), 'चकमा', 'शोर' और 'उपवास' (डा० मस्तराम कपूर 'उर्मिल') में।

बड़े लोग अक्सर ही बच्चों की आदतें सुधारने की बातें कहते हैं। बच्चों की आदतें भी कोई मामूली तो होती नहीं। उनका इलाज भी विशिष्ट ही होता है। इसलिए कई नाटकों में बच्चों की आदतों को विषय बनाकर अत्यंत रोचक किंतु सहज स्थितियां प्रस्तुत की गई हैं। 'आदतसुधार दवाखाना' (मंगल सक्सेना), 'झूठ का अलार्म' (वेद राही), 'ऐ रोने वालो' (स्वदेश कुमार), 'भूलसुधार' (देववती शर्मा), 'अनुशासन' (महेंद्रनाथ झा) और 'डर' (श्याम व्यास) ऐसे ही अत्यंत सशक्त एकांकी हैं।

आधुनिक समाज और प्रजातांत्रिक व्यवस्था ने बच्चों को भी नई चेतना दी है, उन्हें अपनें अधिकारों के प्रति जागरूक कराया है और कर्तव्यों के निर्देश दिए हैं। बच्चों के जिन नाटकों में इन स्थितियों का उपयोग अत्यंत कुशलता और सफलता के साथ किया गया है, वे हैं—'तोतली भाषा का सूबा' (सत्य जैसवाल), 'हमें बापू से शिकायत है' (अमृतलाल वेगड़), 'हिरण्यकश्यप मर्डर केस' (श्रीकृष्ण), 'ये भी धरती के बेटे हैं' (ओमप्रकाश आदित्य), 'श्वानधर्म यह जिंदाबाद' (लक्ष्मीकांत वैष्णव) और 'बाल संसद' (डा० हरिकृष्ण देवसरे)।

छोटे बच्चों के लिए मजेदार एकांकी लिखने में श्रीमती रेखा जैन ने विशेष सफलता पाई है। उनके एकांकी 'अप्सरा का तोता', 'काकभगोड़ा', 'उद्यम-धीरज बड़ी चीज है', और 'थप्प रोटी थप्प दाल' मंच पर भी सफलतापूर्वक प्रस्तुत किए जा चुके हैं।

बच्चों के एकांकियों में आधुनिक भावबोध को अभिव्यक्त करने के भी कुछ सफल प्रयोग हुए हैं। 'भों भों-ग्वों ग्वों' में एक कुत्ते और बंदर के माध्यम से शोषण के विरुद्ध आवाज उठाई गई है और 'लाख की नाक' (दोनों के लेखक—सर्वेश्वरदयाल सक्सेना) में सामंतवादी सत्ता के बहरे होने का एहसास कराया गया है। छोटे भी बड़े काम कर सकते हैं, क्योंकि असली चीज है बुद्धि और आशा—इसे स्पष्ट किया गया है 'बिल्ली के खेल' (डा० लक्ष्मीनारायण लाल) में।

बच्चों के लिए 'हास्य एकांकी' लिखना टेढ़ी खीर माना जाता है। कारण यह है कि हास्य चरित्रों की कल्पना, उनके लिए ऐसी स्थितियों की कल्पना जिसमें

हास्य उत्पन्न हो और फिर अभिनय की कुशलता—इन सबका संगम कुशलता-पूर्वक प्रस्तुत कर पाना काफी कठिन है। किंतु इस क्षेत्र में भी कुछ सशक्त हस्ताक्षर हैं और उनके एकांकी इस संकलन में प्रस्तुत किए गए हैं। 'डाक्टर चुनचुन' (गोविंद शर्मा), 'नाटक जो नहीं हो सका' और 'जादूगर' (केशव दुबे), 'तलाश अर्जुन की', 'चोंचू नवाब', 'दस पैसे के तानसेन' (के० पी० सक्सेना) रोचक हास्य-एकांकी हैं।

इस संकलन के सभी एकांकी जहां बालसाहित्य की इस विधा की समृद्धि के सूचक हैं, वहीं इसके विकासक्रम का भी परिचय देते हैं। इनके चयन में विषयों की विविधता, शैलीगत प्रयोगों और बच्चों के लिए इनकी उपयोगिता को तो ध्यान में रखा ही गया है, साथ ही यह भी देखा गया है कि बच्चों के लिए ये किस सामा तक अभिनेय हैं। हिंदी में रचित बालएकांकियों की प्रतिनिधि रचनाओं के इस संकलन में यथासंभव उनका रचनावर्ष भी दे दिया गया है। हिंदी के बाल-एकांकी आज जिस स्थिति में हैं, वह निश्चित ही उत्साहजनक स्थिति है। इससे हमारे सुधी पाठक निश्चय ही सहमत होंगे।

हरिकृष्ण देवसरे

अनुक्रम

भरत

☐ राजा लक्ष्मणसिंह

पात्र

बालक : भरत   तपस्विनी : दो
तपस्विनी : एक   दुष्यंत

[सिंह के बच्चे को लिए हुए एक बालक आया और उसके साथ दो तपस्विनी आईं ।]

बालक : अरे बछड़े, तू अपना मुख खोल, मैं तेरे दांत गिनूंगा ।

तपस्विनी एक : ए हठीले बालक, तू इन वन के पशुओं को क्यों सताता है ? हम तो इन पशुओं को बाल-बच्चों के समान रखती हैं । तेरा खेल में भी साहस नहीं जाता, इससे तेरा नाम ऋषि ने सर्वदमन रखा है ।

दुष्यंत : (आप ही आप) आहा, क्या कारण है कि मेरा स्नेह इस लड़के में पुत्र का सा होता आता है ? हो न हो, यह हेतु है कि मैं पुत्र-हीन हूं ।

तपस्विनी दो : जो तू इस बच्चे को छोड़ न देगा, तो सिंहनी तुझ पर दौड़ेगी ।

बालक : (मुसकराकर) ठीक है, सिंहनी का मुझे ऐसा ही डर है ।

[रोष में आकर ओंठ काटने लगा]

दुष्यंत : (आप ही आप चकित सा होकर) यह बालक किसी बड़े बली का बेटा है । इसका रूप उस अग्नि के समान है, जो सूखा काठ मिलने से अति प्रज्ज्वलित होती है ।

तपस्विनी एक : हे बालक, सिंह के बच्चे को छोड़ दे । मैं तुझे उससे भी सुंदर खिलौना दूंगी ।

बालक : (हाथ पसारकर) पहले खिलौना दे दो । लाओ कहां है ।

दुष्यंत : (लड़के के हाथ को देखकर आप ही आप) आहा ! इसके हाथ में तो चक्रवर्ती के लक्षण हैं । उंगलियों पर कैसा अद्भुत जाल है । और हथेली की शोभा प्रातः कमल को भी लज्जित कर रही है ।

तपस्विनी दो : हे सखी सुव्रता, यह बातों से न मानेगा, जा तू कुटी में एक मिट्टी का मोर ऋषिकुमार शंकर के खेलने को रक्खा है, सो ले आ ।

तपस्विनी एक : मैं अभी लिए आती हूं। [गई]

बालक : तब तक मैं इसी सिंह के बच्चे से खेलूंगा।

तपस्विनी दो : **(बालक की ओर देखकर और मुसकराकर)** तेरी बलैया लूं, अब तू इसे छोड़ दे।

दुष्यंत : **(आप ही आप)** इस लड़के के खिलाने को मेरा जी कैसा चाहता है। **(आह भरकर)** धन्य हैं वे मनुष्य, जो अपने पुत्रों को कनियां लेकर उनके अंग की धूलि से अपनी गोद मैली करते हैं और पुत्रों के मुख निष्कारण हंसी से खुलकर, उज्ज्वल दांतों की शोभा दिखाते और तुतले वचन बोलते हैं।

तपस्विनी दो : **(उंगली उठाकर)** क्यों रे ढीठ, तू मेरी बात कान नहीं धरता। **(इधर-उधर देखकर)** कोई ऋषि यहां हैं? **(दुष्यंत को देखा)** अहो परदेशी! आओ, कृपा करके इस बली बालक के हाथ से सिंह के बच्चे को छुड़ाओ।

दुष्यंत : अच्छा। **(लड़के के पास जाकर और हंसकर)** हे ऋषिकुमार, तुमने तपोवन के विरुद्ध यह आचरण क्यों सीखा है, जिससे तुम्हारे कुल को लाज आती है। यह तो काले सांप ही का धर्म है कि मलयगिरि से लिपटकर उसे दूषित करे। **(लड़के ने सिंह को छोड़ दिया।)**

तपस्विनी दो : हे बटोही, मैंने तुम्हारा बहुत गुण माना, परंतु जिसको तुम ऋषिकुमार कहते हो, सो ऋषि का बालक नहीं है।

दुष्यंत : सत्य है, उसके काम [illegible] ही साहस के हैं। यह ऋषिपुत्र नहीं जान पड़ता, परंतु मैं [illegible] में इसका वास देख ऋषिपुत्र जाना था। **(लड़के का हाथ, हाथ में लेकर आप ही आप)** आहा, जब इसका हाथ छूने से मुझे इतना सुख हुआ है, तो जिस बड़भागी का यह बेटा है, उसको कितना हर्ष होता होगा।

तपस्विनी दो : **(दोनों की ओर देखकर)** बड़े अचंभे की बात है।

दुष्यंत : तुमको क्यों अचंभा हुआ?

तपस्विनी दो : यह अचंभा है कि इस बालक का और तुम्हारा कोई संबंध नहीं है तो भी तुम्हारी-इसकी उन्हार बहुत मिलती है, और दूसरे यह अचंभे की बात है कि यह तुमको आगे से नहीं जानता था और अभी इसकी बुद्धि भी बालक है, तो भी तुम्हारी बात इसने क्यों तुरंत मान ली।

दुष्यंत : **(लड़के को गोद में उठाकर)** हे तपस्विनी, जो यह ऋषिपुत्र नहीं है तो किसका वंश है?

तपस्विनी दो : यह पुरुवंशी है।

दुष्यंत : **(आप ही आप)** इसी से मेरी इसकी उन्हार मिलती है। **(उसको गोद से उतारकर, प्रकट)** पुरुवंशियों में यह रीति तो निश्चय है कि युवा अवस्था भर रनवास में रहकर पृथ्वी की रक्षा और पालन करते हैं, फिर जब वृद्धापन आता है, वानप्रस्थ आश्रम लेकर जितेंद्रिय तपस्वियों के आश्रम में वृक्षों के नीचे कुटी बनाकर रहते हैं, परंतु मुझे आश्चर्य यह है कि इस बालक के देवता के से चरित्र हैं, यह मनुष्य का पुत्र क्यों कर होगा।

तपस्विनी दो : हे परदेशी, तेरा यह संदेह तब मिट जाएगा, जब तू जान लेगा कि इस बालक की मां एक अप्सरा की बेटी है।

दुष्यंत : **(आप ही आप)** यह तो बड़े आनंद की बात सुनाई, इससे कुछ और आशा बढ़ी। **(प्रकट)** इसकी माता का पाणिग्रहण किस राजर्षि ने किया है?

तपस्विनी दो : जिस राजा ने अपनी विवाहिता स्त्री को बिना अपराध छोड़ दिया है, उसका नाम मैं न लूंगी।

दुष्यंत : **(आप ही आप)** यह कथा तो मुझी पर लगती है। भला, अब इस बालक की मां का नाम पूछूं। **(सोचकर)** परंतु सत्पुरुषों की यह रीति नहीं है कि पराई स्त्री का वृतांत पूछें।

[पहली तपस्विनी खिलौना लेकर आई]

तपस्विनी एक : हे सर्वदमन, देख यह कैसा शकुंतलावण्य है।

बालक : **(बड़े चाव से देखकर)** कहां है शकुंतला, मेरी माता।

तपस्विनी दो : **(हंसती हुई)** यहां तेरी माता नहीं है। हमने दुअर्थी बात कही थी, अर्थात सुंदर पक्षी दिखाया था।

दुष्यंत : **(आप ही आप)** इसकी मां मेरी ही प्यारी शकुंतला है, या इस नाम की कोई दूसरी स्त्री है। यह वृतांत मुझे ऐसा व्याकुल करता है, जैसे मृगतृष्णा प्यासे हरिण को व्याकुल करती है।

बालक : जो यह मोर चले-फिरेगा और उड़ेगा तो मानूगा, नहीं तो नहीं।

तपस्विनी एक : **(घबराकर)** आहा, बालक की बांह से रक्षाबंधन कहां गया। **(खिलौना ले लिया)**

दुष्यंत : घबराओ मत, जब यह नाहर से खेल रहा था, तब इसके हाथ से गंडा गिर गया था, सो वह पड़ा है। मैं उठाकर तुम्हें दिए देता हूं। **(उठाना चाहा)**

तपस्विनी दो : हैं हैं, इस गंडे को छूना मत।

तपस्विनी एक : हाय, इसने तो उठा ही लिया। **(दोनों आपस में अचंभे से देखने लगीं)**

दुष्यंत : गंडा यह लो, परंतु यह कहो कि तुमने मुझे इसको छूने से रोका क्यों था ?

तपस्विनी दो : इसलिए रोका था कि इस यंत्र में बड़ी शक्ति है। जिस समय इस बालक का जातकर्म हुआ था, तब महात्मा मरीचि के पुत्र, कश्यप ने यह गंडा दिया था। इसमें यह गुण है कि कदाचित धरती पर गिर पड़े तो इस बालक के मा-बाप को छोड़कर दूसरा कोई न उठा सके।

दुष्यंत : और जो कोई उठा ले तो क्या हो ?

तपस्विनी दो : तो यह तुरंत सांप बनकर उसको डसे।

दुष्यंत : तुमने ऐसा कभी होते देखा है ?

तपस्विनी एक : अनेक बार।

दुष्यंत : **(प्रसन्न होकर)** तो अब मेरा मनोरथ पूरा हुआ।

[लड़के को गोद में ले लिया]

पर्दा गिरता है

[१८६२]

अंधेर नगरी

□ भारतेंदु हरिश्चंद्र

पात्र

महंत — कुंजड़िन
नारायणदास, गोवर्धनदास } शिष्य — हलवाई

राजा, फरियादी, कल्लू बनिया, कारीगर, चूने वाला,
भिश्ती, कसाई, गड़रिया, कोतवाल, दो सिपाही

स्थान—शहर से बाहर सड़क

[महंतजी और दो चेले बातें कर रहे है]

महंत : बच्चा नारायणदास, यह नगर तो दूर से बड़ा सुंदर दिखलाई पड़ता है। देख कुछ भिक्षा मिले तो भगवान को भोग लगे। और क्या ?

नारायणदास : गुरुजी महाराज, नगर तो बहुत ही सुंदर है, पर भिक्षा भी सुंदर मिले तो बड़ा आनंद हो।

महंत : बच्चा गोवर्धनदास, तू पश्चिम की ओर जा और नारायण-दास पूर्व की ओर जाएगा।

[गोवर्धनदास जाता है]

गोवर्धनदास : (**कुंजड़िन से**) क्यों, भाजी क्या भाव ?

कुंजड़िन : बाबाजी, टके सेर।

गोवर्धनदास : सब भाजी टके सेर। वाह ! वाह ! बड़ा आनंद है। यहां सभी चीजें टके सेर। (**हलवाई के पास जाकर**) क्यों भाई हलवाई मिठाई क्या भाव ?

हलवाई : सब टके सेर।

गोवर्धनदास : वाह ! वाह ! बड़ा आनंद है। सब टके सेर ? क्यों बच्चा, इस नगरी का नाम क्या है ?

हलवाई : अंधेर नगरी।

गोवर्धनदास : और राजा का नाम क्या है ?

हलवाई : चौपट्ट राजा।

गोवर्धनदास : वाह ! वाह !

अंधेर नगरी चौपट्ट राजा,
टके सेर भाजी टके सेर खाजा।

हलवाई : तो बाबाजी, कुछ लेना हो तो ले लें।

गोवर्धनदास : बच्चा, भिक्षा मांगकर सात पैसे लाया हूं, साढ़े तीन सेर मिठाई दे दे।

[महंतजी और नारायणदास एक ओर से आते हैं और दूसरी ओर से गोवर्धनदास आता है]

महंत : बच्चा गोवर्धनदास, कह, क्या भिक्षा लाया? गठरी तो भारी मालूम पड़ती है।

गोवर्धनदास : गुरुजी महाराज, सात पैसे भीख में मिले थे उसी से साढ़े तीन सेर मिठाई मोल ली है।

महंत : बच्चा, नारायणदास ने मुझसे कहा था कि यहां सब चीजें टके सेर मिलती हैं, तो मैंने इसकी बात का विश्वास नहीं किया। बच्चा, यह कौन सी नगरी है और इसका कौन सा राजा है, जहां टके सेर भाजी और टके सेर खाजा मिलता है?

गोवर्धनदास : अंधेर नगरी चौपट्ट राजा,
टके सेर भाजी टके सेर खाजा।

महंत : तो बच्चा, ऐसी नगरी में रहना उचित नहीं है, जहां टके सेर भाजी और टके सेर खाजा बिकता है। मैं तो इस नगर में अब एक क्षण भर भी नहीं रहूंगा। देख, मेरी बात मान, नहीं तो पीछे पछताएगा। मैं तो जाता हूं, पर इतना कहे जाता हूं कि कभी संकट पड़े तो याद करना।

[राजा, मंत्री और नौकर लोग यथास्थान बैठे हैं। पर्दे के पीछे 'दुहाई है' का शब्द होता है]

राजा : कौन चिल्लाता है। उसे बुलाओ तो।

[दो नौकर एक फरियादी को लाते हैं]

फरियादी : दुहाई, महाराज, दुहाई!

राजा : बोलो क्या हुआ?

फरियादी : महाराज, कल्लू बनिए की दीवार गिर पड़ी, सो मेरी बकरी उसके नीचे दब गई। न्याय हो।

राजा : अच्छा, कल्लू बनिए को पकड़ लाओ।

[नौकर लोग दौड़कर बाहर से बनिए को पकड़ लाते हैं]

राजा : क्यों रे बनिए, इसकी बकरी क्यों दबकर मर गई?

कल्लू : महाराज, मेरा कुछ दोष नहीं। कारीगर ने ऐसी दीवार बनाई

कि गिर पड़ी ।

राजा : अच्छा, कल्लू को छोड़ दो, कारीगर को पकड़ लाओ ।

[कल्लू जाता है। लोग कारीगर को पकड़कर लाते हैं]

राजा : क्यों रे कारीगर, इसकी बकरी कैसे मर गई ?

कारीगर : महाराज, चूने वाले ने चूना ऐसा खराब बनाया कि दीवार गिर पड़ी ।

राजा : अच्छा, उस चूने वाले को बुलाओ ।

[कारीगर निकाला जाता है। चूने वाला पकड़कर लाया जाता है]

राजा : क्यों रे चूने वाले, इसकी बकरी कैसे मर गई ?

चूने वाला : महाराज, भिश्ती ने चूने में पानी ज्यादा डाल दिया, इसी से चूना कमजोर हो गया ।

राजा : तो भिश्ती को पकड़ो ।

[भिश्ती लाया जाता है]

राजा : क्यों रे भिश्ती, इतना पानी क्यों डाल दिया कि दीवार गिर पड़ी और बकरी दब गई ?

भिश्ती : महाराज, गुलाम का कोई कसूर नहीं, कसाई ने मसक इतनी बड़ी बना दी थी कि उसमें पानी ज्यादा आ गया ।

राजा : अच्छा, कसाई को लाओ, भिश्ती को निकालो ।

[लोग भिश्ती को निकालते हैं। कसाई को लाते हैं]

राजा : क्यों रे कसाई, तूने ऐसी मसक क्यों बनाई ?

कसाई : महाराज, गड़रिए ने टके की ऐसी बड़ी भेड़ मेरे हाथ बेची कि मसक बड़ी बन गई ।

राजा : अच्छा, कसाई को निकालो, गड़रिए को लाओ ।

[कसाई निकाला जाता है। गड़रिया लाया जाता है]

राजा : क्यों रे गड़रिए, ऐसी बड़ी भेड़ क्यों बेची ?

गड़रिया : महाराज, उधर से कोतवाल की सवारी आई, उसकी भीड़-भाड़ के कारण मैंने छोटी-बड़ी भेड़ का खयाल ही नहीं किया, मेरा कुछ कसूर नहीं ।

राजा : इसको निकालो, कोतवाल को पकड़कर लाओ ।

[कोतवाल को पकड़कर लाया जाता है]

: क्यों रे कोतवाल, तूने सवारी धूम से क्यों निकाली कि गड़रिए ने घबराकर बड़ी भेड़ बेच दी ?

कोतवाल : महाराज, मैंने कोई कसूर नहीं किया ।

राजा : कुछ नहीं महाराज, महाराज। ले जाओ, कोतवाल को अभी फांसी दे दो।

[सभी कोतवाल को पकड़कर ले जाते हैं]

स्थान—जंगल

[गोवर्धनदास बैठा मिठाई खा रहा है]

गोवर्धनदास : गुरुजी ने हमको नाहक यहां रहने को मना किया था। माना कि देश बहुत बुरा है, पर अपना क्या ?

[चार सिपाही चार ओर से आकर उसको पकड़ लेते हैं]

पहला सिपाही : चल बे चल, मिठाई खाकर खूब मोटा हो गया है। आज मजा मिलेगा।

गोवर्धनदास : (**घबड़ाकर**) हैं, यह आफत कहां से आई ? अरे भाई, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है जो मुझे पकड़ते हो ?

दूसरा सिपाही : आप बड़े मोटे हैं, इसलिए फांसी लगेगी।

गोवर्धनदास : मोटा होने से फांसी ! यह कहां का न्याय है ? अरे, फकीरों से मजाक नहीं किया जाता।

पहला सिपाही : जब सूली पर चढ़ जाओगे तब मालूम होगा कि फांसी है या मजाक। सीधी तरह चलते हो या घसीटकर ले चलें ?

गोवर्धनदास : तब भी बाबा बात क्या है कि एक फकीर आदमी को नाहक फांसी देते हो ?

पहला सिपाही : बात यह है कि कल कोतवाल को फांसी का हुक्म हुआ था। जब फांसी देने को उसे ले गए तो फांसी का फंदा बड़ा निकला क्योंकि कोतवाल साहब दुबले हैं। हम लोगों ने महाराज से अर्ज की। इस पर हुक्म हुआ कि किसी मोटे आदमी को फांसी दे दो, क्योंकि बकरी मरने के अपराध में किसी न किसी को सजा होना जरूरी है, नहीं तो न्याय न होगा।

गोवर्धनदास : दुहाई परमेश्वर की ! अरे मैं नाहक मारा जाता हूं। अरे, यहां बड़ा ही अंधेर है। अरे, गुरुजी महाराज का कहा मैंने न माना, उसका फल मुझे भोगना पड़ा। गुरुजी, तुम कहां हो ? आओ, मेरे प्राण बचाओ ! अरे, मैं बे-अपराध मारा जाता हूं ! गुरुजी ! गुरुजी !

[गोवर्धनदास चिल्लाता है, सिपाही उसे पकड़कर ले जाते हैं]

गोवर्धनदास हाय बाप रे ! **मुझे बेकसूर** ही **फांसी देते हैं।** अरे भाइयो, कुछ तो धर्म का खयाल करो। अरे मुझे छोड़ दो। हाय ! हाय !

पहला सिपाही अबे, चुप रह, राजा का हुक्म भला कहीं टल सकता है ? यह तेरा आखिरी दम है, राम का नाम ले, बेफायदा क्यों शोर करता है ?

गोवर्धनदास हाय, मैंने गुरुजी का कहना न माना, उसी का यह फल है। गुरुजी, कहां हो ? बचाओ, गुरुजी ! गुरुजी !

महंत अरे बच्चा गोवर्धनदास, तेरी यह क्या दशा है ?

गोवर्धनदास (**गुरुजी को हाथ जोड़कर**) गुरुजी, दीवार के नीचे बकरी दब गई, जिसके लिए मुझे फांसी दी जा रही है। गुरुजी, बचाओ ?

महंत कोई चिंता नहीं, नारायण सब समर्थ हैं। (**भौंह चढ़ाकर सिपाहियों से**) सुनो, मुझे शिष्य को अंतिम उपदेश देने दो ? तुम लोग जरा किनारे हो जाओ। देखो, मेरा कहना न मानोगे तो तुम्हारा भला न होगा।

सिपाही : नहीं महाराज, हम लोग हट जाते हैं। आप बेशक उपदेश दीजिए। (**सिपाही हट जाते हैं। गुरुजी चेले को कान में समझाते हैं**)।

गोवर्धनदास : तब तो गुरुजी, हम अभी फांसी चढ़ेंगे।

महंत : नहीं बच्चा, हम बूढ़े हुए, हमको चढ़ने दे।

गोवर्धनदास : स्वर्ग जाने में बूढ़ा-जवान क्या ? आप तो सिद्ध हैं। आपको गति-अगति म क्या ? मैं फांसी चढ़ूंगा।

[इस प्रकार दोनों हुज्जत करते हैं। सिपाही लोग परस्पर चकित होते हैं। राजा, मंत्री और कोतवाल आते हैं]

राजा : यह क्या गोल-माल है ?

सिपाही : महाराज, चेला कहता है मैं फांसी चढ़ूंगा, गुरु कहता है मैं चढ़ूंगा। कुछ मालूम नहीं पड़ता कि क्या बात है ?

राजा : (**गुरुजी से**) बाबाजी, बोलो। आप फांसी क्यों चढ़ते हैं ?

महंत : राजा, इस समय ऐसी शुभ घड़ी है कि जो मरेगा, सीधा स्वर्ग जाएगा।

मंत्री : तब तो हमीं फांसी चढ़ेंगे।

गोवर्धनदास : नहीं, हम। हमको हुक्म है।

कोतवाल : हम लटकेंगे, हमारे सबब से तो दीवार गिरी।

राजा : चुप रहो सब लोग। राजा के जीते जी और कौन स्वर्ग जा सकता है? हमको फांसी चढ़ाओ, जल्दी जल्दी।

[राजा को लोग फांसी पर लटका देते हैं]

पर्दा गिरता है

(१८८१)

पाठशाला

□ भगवन्नारायण भार्गव

पात्र

पंडितजी और पांच-छह विद्यार्थी

[कुर्सी पर पंडितजी और फर्श पर विद्यार्थी बैठे हैं।]

पंडितजी : अरे लड़को, क्या कर रहे हो? यहां आओ, तुम्हारा पाठ सुनें। (**सब चुप रहते हैं**) क्यों नहीं बोलता, अरे गोविंद?

गोविंद : हां पंडितजी।

पंडितजी : यहां आ।

गोविंद : (**पास आकर**) कहिए।

पंडितजी : इतिहास याद कर लाया?

गोविंद : वाह पंडितजी! मैं इतिहास-वितिहास नहीं पढ़ने का। वह तो हमारा उपहास है। उसमें लिखा है कि हिंदू पशु के समान जंगली थे।

पंडितजी : क्यों बकबक करता है? हट यहां से। अरे भोला, तू यहां आ।

भोला : (**हाथ जोड़कर मुसकराते हुए**) महाराज?

पंडितजी : भूगोल सुना।

भोला : भूगोल—पृथ्वी गोल है। (**इसी को बार बार कहता है**)

पंडितजी : आगे बढ़।

भोला : कहां?

पंडितजी : (**आंखें लाल लाल करके**) लाना मेरा डंडा!

सब विद्यार्थी : (**खड़े होकर**) पंडितजी, डंडे का क्या कीजिएगा?

पंडितजी : तुम लोगों की मरम्मत करूंगा।

सब विद्यार्थी : क्या हम टूटे-फूटे पदार्थ हैं जो आप मरम्मत करेंगे?

पंडितजी : (**स्वगत**) परमेश्वर! इन लड़कों से पीछा छुड़ा। इधर ये नाक में दम करते हैं, उधर वे लोग कसकर सवारी गांठते हैं। (**प्रगट**) लड़को, तुम अपना भला नहीं देखते?

सब विद्यार्थी : क्यों नहीं, क्यों नहीं? आप हमें छुट्टी दीजिए। फिर हम अपना भला ही भला देखेंगे।

पंडितजी : चुप रहो, अपना पाठ सुनाओ।

चंचल : पंडितजी, आप भी विचित्र मनुष्य हैं। चुप रहें और पढ़ें भी, यह कैसे ?

पंडितजी : (**सांस खींचकर**) हे ईश्वर ! लड़को। तुम सब शैतान के अवतार हो।

चंचल : तो हम सबका पूजन कीजिए और अच्छा अच्छा प्रसाद चढ़ाइए।

पंडितजी : बस, अब बहुत गड़बड़ हो ली। अब सवाल करो।
अरे लड़को तुम्हारी परीक्षा निकट आ गई है। तुमको कुछ भी चिंता नहीं है।

भोला : महाराज ! परीक्षा तो आप ही के निकट है। यदि हम लोग फेल हो जावेंगे तो आपकी बदनामी होगी, आप पर जुर्माना होगा और तनख्वाह भी कम कर दी जावेगी। आप हमको तंग करते हैं। उसी का यह फल है।

पंडितजी : (**दीनता से**) अरे बाबा ! समय तो तुम्हारा ही नष्ट होगा। फेल होने पर फिर पढ़ना पड़ेगा।

चंचल : समय कौन बला है ? अभी हमारी आयु ही क्या है ? यदि अभी से पढ़ने लगेंगे तो पंडितजी, आपकी बुद्धि का दीवाला निकल जावेगा।

पंडितजी : तुम लोग नहीं पढ़ना चाहते, तो हमारी पाठशाला छोड़ दो।

सब विद्यार्थी : बहुत अच्छा !

[सब भाग जाते हैं]

पंडितजी : परमात्मन्, इन लोगों का कहना भी ठीक है। पास-फेल होना तो हमारा ही है, इनका क्या ? नतीजा अच्छा रहे तो पारितोषिक, नहीं तो जुर्माना बना-बनाया है। (**सांस खींचकर**) चलो जी, घर चलें। जो होगा सो होना रहेगा।

[प्रस्थान]

पाठशाला का एक दृश्य

□ रामचंद्र रघुनाथ सर्वटे

पात्र

आठ-दस लड़के — मास्टर

एक सभ्य मनुष्य

स्थान —एक शाला

[रामू, चंदू, नंदू और कई लड़के टाट-पट्टियों पर बैठे हुए अपना पाठ याद कर रहे हैं। सामने काला तख्ता और पास ही एक टूटी सी कुरसी रखी है। मास्टर नही हैं।]

रामू : आज का भूगोल तो भैया बड़ा कठिन है। रटते रटते दम निकल गया, पर वह तो जरा भी याद नही होता। **(रटता है)** सिवनी जिले का आकार हल बक्खर के समान है। समान है, समान है, है है है...। शंभू महादेव का पहाड़। यदि वह लिखा होता कि शंभू महादेव का पहाड़ हमारे गुरुजी के साफे के समान है तो कुछ भी अनुचित न था।

चंदू : क्यों रे रामू, गुरुजी के विषय में क्या कहता है?

रामू : मैं क्या कहता हूं? कल हमारे बाड़े में चिन्नी ही उनकी नकल कर रहा था। उसी ने मुझसे कहा।

चंदू : खैर भैया, खूब रहो। हां, यह तो देखो। यह व्याकरण क्या कठिन है? **(रटता है)** कारकों का विस्तारपूर्वक वर्णन आगे मिलेगा, आगे मिलेगा, आगे मिलेगा, लेगा लेगा, गा गा गा, आ आ। अरे ए, गुरुजी आए, चुप्प!

[गुरुजी आते हैं। सब लड़के खड़े होकर प्रणाम करते हैं और आज्ञा पाकर चुपचाप बैठ जाते हैं]

गुरुजी : क्यों रे नंदू, फीस लाया? आज कौन सी तारीख है?

नंदू : नही मालूम। माताजी बोलीं कि अमावस के बाद फीस देंगे।

गुरुजी : अच्छा, कल हमने तुमको घोड़े पर एक निबंध लिखने के लिए कहा था। सो लिखा कि नही?

नंदू : जी नही गुरुजी, हमने नही लिखा।

गुरुजी : क्यों नही लिखा?

नंदू : मेरे यहां घोड़ा ही नहीं है, फिर मैं किस पर निबंध लिखूं ?

गुरुजी : अरे गधे ! यदि तेरे पास घोड़ा न हुआ तो क्या हो गया ? क्या कभी तूने घोड़ा नहीं देखा है ? गधा कहीं का ! उसका वर्णन, रंग, रूप, निवासस्थान, उत्पत्तिस्थान, भक्ष्य इत्यादि लिखना था। इसके लिए घर में ही घोड़े की क्या आवश्यकता थी ? अच्छा, मैं तुम्हें अभी देखता हूं। क्यों रे रामू ! तू क्यों नहीं लिखकर लाया ?

रामू : गुरुजी महाराज ! धन्य है आपको ! (**दोनों हाथ जोड़ता है**) मेरे पिताजी अत्यंत ही क्रुद्ध हुए। इस निबंध के कारण कल मेरे हाथ-पैर दुरुस्त हो गए।

गुरुजी : (**क्रोधित होकर**) याने ?

रामू : याने क्या ? आपने घोड़े पर निबंध लिखने के लिए कहा था, इसीलिए मैं दावात, कलम और कापी लेकर अपने घोड़े पर किसी तरह बैठ गया। ज्योंही मैंने एक लकीर लिखी कि न जाने हमारे घोड़े को क्या लहर आई कि उसने एकदम अपनी गरदन जोर से हिला दी। बस, फिर क्या था, मैं नीचे हुआ और वह ऊपर। बाल बाल बच गया, नहीं तो जान पर ही आ बीती थी।

गुरुजी : रामू, तू बिलकुल गधा है ? अरे, मैंने तुझे घोड़े पर निबंध लिखने के लिए कहा था, तो क्या उसका अर्थ यह होता है कि घोड़े पर बैठकर निबंध लिखना चाहिए। मूर्ख कहीं का ! मालूम होता है कि तू अक्ल के पीछे सदा लट्ठ ही बांधे फिरता है। तुम्हारे जैसे बेवकूफों के सामने मास्टर अपना सर भी पीटें तो क्या हो सकता है ? तुम लोग तो कुत्ते की पूंछ के समान हो। बारा साल तक भी पोंगड़ी में बंद कर रखो, तो भी वह सीधी नहीं होगी। वैसा ही तुम्हारा हाल है।

चंदू : गुरुजी, मुझसे एक सवाल नहीं बनता। क्या मैं आपसे पूछूं ?

गुरुजी : हां। पूछ ! पूछेगा क्यों नहीं ?

चंदू : अ एक काम को दस दिनों में करता है। उसी काम को ब १५ दिनों में करता है। दोनों ने मिलकर उस काम को ८ दिनों तक किया। आगे अ बीमार हो गया, तो गुरुजी ! उसे कौन सी दवाई देनी चाहिए ?

गुरुजी : (**क्रोधित होकर**) ठहर, पहले तुझे ही एक उत्तम दवा देता हूं। नंदू, जरा खूंटी पर का बेंत तो ला। (**खिड़की में से तमाखू की**

पिचकारी छोड़कर) तेरी चमड़ी ही उधेड़नी पड़ेगी। तभी तू ठीक राह पर आएगा। चल, हाथ आगे कर। हां, करता है कि नहीं ? नहीं तो उस म्याल से उल्टा टांग दूंगा।

चंदू : **(रोने का बहाना करता हुआ)** अब ऐसा कभी नहीं करूंगा पंडितजी। आ। आ। कल किसी लड़के ने मुझसे यही सवाल पूछा था। जब मैं उसे न कर सका, तो आपसे पूछ लिया। इसमें मेरा क्या कसूर है ? पंडितजी ! अ ! अ !

गुरुजी **(बीच ही में)** अच्छा अच्छा जा, अपनी जगह पर बैठ।

चंदू **(गुरुजी की ओर देखकर)** गुरुजी ! कल आपने एक कविता मुखाग्र याद करने को दी थी। वह सुनना है।

नंदू अभी पूरी याद नहीं हुई है पंडितजी।

गुरुजी जितनी आती है, उतनी ही कह।

नंदू बिलकुल सफाई है।

गुरुजी **(गुस्से से)** क्यों ?

नंदू मेरे बड़े भाई ने मुझे याद नहीं करने दिया।

गुरुजी गधे, झूठ बोलता है। भाई ऐसा क्यों कहेगा ?

नंदू विद्या कसम, मास्टर साहिब ! मेरे भाई ने ही मुझे याद नहीं करने दिया।

गुरुजी इसका मतलब यह हुआ कि कविता बिलकुल ही याद न करनी चाहिए ? चोर कहीं का ! रामू, तू सुना।

रामू मेरे पिताजी ने कहा कि बिना अर्थ समझे कविता कभी याद नहीं करनी चाहिए।

गुरुजी फिर क्या उसका अर्थ तुम नही समझ सकते ?

रामू क्यों नहीं समझ सकते हैं ? पर पिताजी ने कहा कि मेरा अर्थ गलत है ?

गुरुजी तूने क्या अर्थ किया था ?

रामू 'जग में उत्तम वस्तु को ग्रहण करै मतिमान', इसके अनुसार मैंने अपने पड़ोसी के एक लड़के की जरी की उत्तम टोपी छुड़ा ली, क्योंकि वह उत्तम वस्तु थी। जब मेरे पिता को मालूम हुआ तो उन्होंने आपको कई गालियां दीं, क्योंकि आपने बिना अर्थ समझाए ही हमें कविता रटने के लिए कहा था। वे बोले कि तेरा अर्थ गलत है।

गुरुजी : बेवकूफ, क्या तूने इसका अर्थ ऐसा किया ? अरे, संसार में जो उत्तम गुण रहते हैं उन्हीं को मतिमान लोग अंगीकार करते

हैं। यह उसका सरल अर्थ है। यदि तू उसे छोड़कर अर्थ का अनर्थ करने लगे तो हम क्या तुम्हारे सामने सिर फोड़ें ? गधे, नालायक !

[इतने में एक महाशय प्रवेश करते हैं]

महाशय : प्रणाम, मास्टर साहिब।

गुरुजी : (**तमाखू की थैली छिपाकर**) प्रणाम, कहिए क्या काम है ?

महाशय : मुझे आप ही से काम है। काम खानगी है, परंतु अत्यंत आवश्यक है।

गुरुजी : महाशय जी ! आप ही देख रहे हैं कि मैं बालकों को शिक्षा प्रदान कर रहा हूं। मैं इनके माता-पिता से द्रव्य लेता हूं, इसलिए उन्हें उसका योग्य बदला देना मेरा परम कर्तव्य है।

महाशय : आप ही के लाभ की बात है। (**कान में कुछ कहता है**)

गुरुजी : ऐसा कहिए। तो...तो अब ठीक है।

महाशय : आपकी परहित चिंता प्रसिद्ध ही है। चलिए, तो फिर जल्द चलिए।

गुरुजी : बालको ! आज तुम अपना सबक अच्छी तरह याद करके नहीं आए हो। इसलिए आज तुम्हें छुट्टी दी जाती है। समझे। मुझे काम है, इसलिए नहीं, वरन यह छुट्टी इसलिए दी जाती है कि तुम्हें अपना सबक याद करने के लिए समय मिले। कल घोड़े पर तो एक निबंध लिखना ही है, परंतु उसी के साथ एक गधे पर भी लिख लाना। समझे ? क्यों चंदू, रामू, कल जरूर लिखना है। भला ? नहीं तो आज के समान क्षमा नहीं होगी। क्यों रे नंदू, यदि तेरे घर में पूछा कि आज छुट्टी क्यों हो गई, तो क्या कहेगा ?

नंद : गुरुजी, मैं कहूंगा कि आपके पास कोई एक महाशय आए थे और उन्होंने आपको पैसे की लालच बताई, सो आपने हमें छुट्टी दे दी और आप उनके साथ लंबे हुए।

[इतना कहकर भाग जाता है]

गुरुजी : हां गधे। अच्छा कल तुझे देखूंगा।

[और लड़के भी भाग जाते हैं]

महाशय : चलिए, अब देर न कीजिए।

गुरुजी : चलिए।

[दोनों जाते हैं]

मच्छड़राम

□ मास्टर बलदेव प्रसाद

पात्र

मच्छड़   बालक

संभावण

[एक बालक बैठा है। दूसरा मच्छड़ का वेष बनाए आता है]

मच्छड़ : भन् भन् भन् भन् भन् भन् भन् भन्,
राग सुरीले गाते हैं हम।
चूस चूस कर खून खुशी से,
चुपके से उड़ जाते हैं हम।

बालक : आप कौन हैं ? आपका राग तो बड़ा सुरीला है।

मच्छड़ : मेरा राग सुरीला है ? क्यों न होगा मेरा राग सुरीला ? क्या तुम जानते नहीं कि मैं हर रोज कितना खून पीता हूं।

बालक : क्या कहा ? आप हर रोज खून पीते हैं ? क्या इसीलिए आपका राग सुरीला है ?

मच्छड़ : हां ! मुझे ऐसा लगता है कि तुम मुझे पहचानते नहीं हो।

बालक : हां भाई, आज तक तो मुझे तुमसे मिलने का सौभाग्य नहीं मिला।

मच्छड़ : मुझे लोग मच्छड़राम कहकर पुकारते हैं। मैं नालियों और पानी के गड्ढों में पैदा होता हूं। इसीलिए मुझे आप नालीप्रसाद या गड्ढाचंद भी कह सकते हैं।

बालक : ओ हो ! तो आप श्रीयुक्त नालीप्रसादजी, गड्ढाचंदजी या मच्छड़रामजी हैं ? बड़ी कृपा की आपने जो इस दास को दर्शन दिए।

मच्छड़ : (हंसते हुए) हें हें हें...अजी इसमें कृपा की कौन सी बात है ? कृपा करना तो मेरा धंधा ही है। मैं तो ऐसी कृपा रोज बहुतों पर करता हूं।

बालक : ओ हो ! तब तो आप बड़े परोपकारी है।

मच्छड़ : (हंसते हुए) हें हें हें...परोपकारी ! हां, मैं सचमुच बड़ा परोपकारी हू। मैं सफाई का पाठ पढ़ाता हूं। जो लोग घर साफ

नहीं रखते हैं, या जिनके घर के आस-पास कीचड़ भरे गड्ढे या रुके हुए पानी की नालियां होती हैं उन्हें मैं सजा देता हूं।

बालक : क्यों महाशय, आप साफ न रहने की क्या सजा देते हैं ?

मच्छड़ : मैं कभी उनके कान या नाक में और यदि मुंह खुला मिला तो उसमें भी घुस जाता हूं। इससे भी वे नहीं चेतते तो मैं उन्हें काटता हूं।

बालक : वाह ! वाह ! निश्चय ही आप संसार का बड़ा उपकार कर रहे हैं। मच्छड़रामजी, आपको बार बार प्रणाम है।

मच्छड़ : प्रणाम ! अरे तुम तो क्या बड़े बड़े तक मुझे प्रणाम करते हैं। अपने बल से मैं बड़े बड़े पहलवानों को पछाड़ देता हूं। वह दांव लगाता हूं कि वे भी कई दिनों तक पड़े रहते हैं।

बालक : बड़े आश्चर्य की बात है। आप हैं तो इतने जरा से और पहलवानों को पछाड़ देते हैं। वह कौन सा दांव है आपका ?

मच्छड़ : मैं उन्हें काटकर उनके खून में रोग के कीटाणु छोड़ देता हूं। कुछ दिनों बाद उन्हें जोर से ठंड लगती है और तेज बुखार आ जाता है। इस बुखार का नाम जानना चाहते हो ?

बालक : हां, हां।

मच्छड़ : इस बुखार का नाम—मलेरिया या जूड़ीताप।

बालक : आपकी बात सुनकर तो मुझे भी ठंड लगने लगी। मालूम होता है मानो बुखार बढ़ रहा हो।

मच्छड़ : डरो मत, बैठो। देखो, मैं तुम्हें अपने दांव से बचने का उपाय भी बताता हूं।

बालक : (**डर से कांपता हुआ**) जरूर बताइए, जरूर बताइए। महाराज मच्छड़रामजी, नालीप्रसादजी, गड्ढाचंदजी, जरूर बताइए।

मच्छड़ : सुनो, मलेरिया या जूड़ीताप होने पर कुनैन और उससे मिलती-जुलती दवाइयां खानी चाहिए। पेट साफ रखना चाहिए !

बालक : अच्छा अच्छा ! मैं जूड़ीताप से छुटकारा पाने के लिए कुनैन और उससे मिलती-जुलती दवाइयां भी खाऊंगा (**मुंह बिगाड़ता है**), पेट भी साफ करूंगा (**पेट और पीठ पर हाथ रखता है**) साथ ही साथ, आपसे बचने का उपाय भी बता दीजिए।

मच्छड़ : (**हंसता है**) तुम बहुत चालाक हो। अच्छा बताता हूं। मुझसे बचने का उपाय है—घर में स्वच्छता रखना। घर के आस-पास जो नाली और गड्ढे हों, उनमें डी० डी० टी० डालना या कोई ऐसी दवाई छोड़ना, जिससे कीटाणु मर जाते हैं।

बालक : मैं आज ही से अपने घर में ब ड़ी सफाई रखूंगा। घर के आस-पास नाली और गड्ढों में कीटाणु मारने की दवाई छोड़ा करूंगा। पर मैं एक बात पूछना चाहता हूं।

मच्छड़ : क्या ?

बालक : मच्छरदानी से आपका क्या संबंध है ?

मच्छड़ : ओफ-ओ। मच्छरदानी मेरी शत्रु है, समझे। उसे लगाकर जो लोग सोते हैं उनका खून मैं नहीं पी सकता। उन्हें मैं पछाड़ नहीं सकता। तुमने मच्छरदानी का नाम लेकर मुझे गुस्सा दिलाया है...हां !

बालक : **(बनते हुए, कान पकड़कर और गालों पर थप्पड़ मारते हुए)** भूल हुई। **(जाते जाते)** अब मैं चलता हूं। मुझे आपसे डर लगता है। लेकिन मच्छड़राम ! आज से मैं मच्छरदानी लगा कर सोऊंगा।

मच्छड़ : **(गुस्से से धमकाता हुआ)** भाग जा...नहीं तो...

[लड़का चिढ़ाता हुआ भाग जाता है]

पर्दा गिरता है

['बालभारती', म० प्र० से]

प्रतापप्रतिज्ञा

□ जगन्नाथ प्रसाद 'मिलिंद'

पात्र

चंद्रावत	प्रताप
सभासद	शक्तिसिंह

दो मुगल सरदार

स्थान—युद्धभूमि, हल्दीघाटी

[चंद्रावत क्षत-विक्षत योद्धा के वेश में]

चंद्रावत : सर्वनाश निकट है। स्वतंत्र मेवाड़ का सौभाग्य सूर्य अस्त हुआ चाहता है, चारों ओर मुगल सेना बादलों की तरह छाई हुई है। बीच में अकेले बलिदानी वीर प्रतापसिंह प्राणों की बाजी लगा कर दोनों हाथों से तलवार चला रहे है। हजारों नर मुंडों से हल्दीघाटी पाट देने पर भी विजय की आशा व्यर्थ है।

[एक सभासद का रणवेश में प्रवेश]

सभासद : सरदार, महाराणा के शरीर में अगणित घाव हो गए हैं, रक्त की धारा निकल रही है, तलवार चलाते चलाते दोनों हाथ थक गए है। चेतक घोड़ा मृतप्राय हो गया है, राणा फिर भी पागलों की तरह लड़ रहे हैं। इस विकट समय पर हमें क्या आज्ञा है?

चंद्रावत : कुछ नहीं, राणा के साथ साथ युद्ध करने जाओ, लड़ते लड़ते मर जाओ। मैंने उपाय सोच लिया है।

[सभासद का प्रस्थान]

चंद्रावत : चित्तौड़ ! जन्मभूमि ! प्रणाम ! तुम्हारा यह तुच्छ सेवक आज विदा लेता है। मां, जीते जी तुम्हें स्वतंत्र न देख सका, अब मर कर देखने की अभिलाषा है। अपने भग्नावशेषों के हाहाकार-मय स्वर से एक बार आशीर्वाद दो, मां हंसते हंसते मरने की शक्ति प्रदान करो ! जीवन के अंतिम क्षणों में कर्तव्य पालन करने का अवसर दो। जिस राजमुकुट को इन हाथों ने तुम्हारे हित के लिए, विलासी जगमल के सिर से उतारा था, उसी

को ये फिर, तुम्हारे ही हित के लिए वीरवर प्रताप के मस्तक से उतारेंगे। तुम्हारे सम्मान की रक्षा के लिए, आशालता को कुचलने से बचाने के लिए—आज महाराणा प्रताप के बदले यह चंद्रावत प्राणों की आहुति देगा।

[प्रताप का रणोन्मत्त वेश में उधर से गुजरना]

प्रताप : बस, समय हो गया। साधन चुक गया, अब प्राणों की बारी है। मां के लिए जीवन बलिदान...

चंद्रावत : मेवाड़ के प्राण ! सैनिक के रहते सेनानी का बलिदान ! राणा के प्राणों का मूल्य है मेवाड़ का सम्मान—चित्तौड़ का उद्धार ! इतने सस्ते नहीं हैं ये प्राण। इन प्राणों में संजीवनी शक्ति है, राणा ! ये मुझ जैसे एक नहीं, हजारों चंद्रावत इंगित मात्र से उत्पन्न कर सकते हैं। आप विधाता हैं, हम सृष्टि। अपने बदले हमें मरने दें राणा। मैंने ही ये राजचिह्न आपके मस्तक पर रखे थे, मैंने ही यह तेजस्वी तलवार आपके हाथ में दी थी। मैं ही अब इन्हें वापस मांगता हूं। दो, जल्द दो राणा, अब समय नहीं है। क्या दान दोगे ?

प्रताप : क्यों नहीं दूंगा। आप जनता के प्रतिनिधि हैं—पूज्य हैं। ये निधियां आपकी है। आप ले जा सकते हैं, पर मातृभूमि के स्वाधीनता यज्ञ में चुपचाप प्राणों की आहुति देने से इस दरिद्र प्रताप को आप कैसे रोक सकेंगे ? मैं निश्चय कर चुका हूं, सरदार, मैं मरूंगा, देश के लिए मरूंगा, रण से पीठ दिखाकर कलंक का टीका लगवाने के पहले इन प्राणों को मां के चरणों पर हंसते हंसते उत्सर्ग कर दूंगा।

चंद्रावत : साथ ही मेवाड़ के भविष्य को भी सदा के लिए मिट्टी में मिला देंगे। महाराणा ! आपके बाद मुझे ऐसा कोई वीर नजर नहीं आता, जो चित्तौड़ के उद्धार के लिए इतना त्याग कर सके। हठ न करें, देव, आप स्वदेश की आशा हैं। आपका यह क्षणिक हठ मेवाड़ की अखंड पराधीनता का कारण हो जाएगा।

प्रताप : निश्चय कर चुका हूं, चंद्रावतजी, जीते जी रण से विमुख न रहूंगा। सैनिक परिस्थितियों का दास नहीं, स्वामी होता है। आप ये अपनी निधियां लीजिए। मेवाड़ के महाराणा ने देश के लिए एक सामान्य सैनिक के वेश में मरना खूब सीखा है।

[फुर्ती से तलवार पर मुकुट रखकर चले जाते हैं]

चंद्रावत : प्रभो ! राणा की रक्षा करो (**मुकुट हाथ में लेते हुए**) आ !

कांटों के ताज। संकट के स्नेही ! मेवाड़ के राजमुकुट ! आ ! तुझे आज एक तुच्छ सैनिक धारण कर रहा है। इसलिए नहीं कि तू वैभव का राजमार्ग है बल्कि इसलिए कि आज तू देश पर मर मिटने वालों का मुक्तिद्वार है। आ, मेरी साधना के अंतिम साधन। इस अवनत मस्तक को मां के लिए कट-मरने का गौरव प्रदान कर।

[शक्तिसिंह का प्रवेश]

शक्तिसिंह : **(नेपथ्य की ओर इंगित करके)** घोर युद्ध हो रहा है ! ऐं ! चंद्रावत ने मेवाड़ का राजमुकुट पहन रखा है। मुगलों ने उसे प्रताप समझकर चारों ओर से घेर लिया है और वह राणा ! एक सामान्य सैनिक के वेष में पागलों की तरह घनघोर युद्ध कर रहे हैं। अरे क्या इनके लिए राजमुकुट का कुछ भी मूल्य नहीं है। हाय अभागे शक्ति, तूने प्रताप को नहीं पहचाना। इतना त्याग ! इतनी वीरता ! ऐसा संग्राम ! मानो प्राणों की ममता छू भी नहीं गई है ! ऐं, यह क्या ! उनके घोड़े ने पीठ फेर दी। हाय अभागा चेतक ! राणा को रण से लेकर भाग रहा है। सर्वनाश ! राणा लगाम खींच रहे हैं। फिर भी दुष्ट रुकता ही नहीं। हाय, यह उधर दूसरा वज्रपात ! चंद्रावत को मुगलों ने प्रताप समझकर मार डाला। धन्य चंद्रावत ! धिक् शक्तिसिंह, मेवाड़ियों में केवल तू ही नराधम है। सैनिक का जन्म पाकर भी तेरे भाग्य में ऐसी मृत्यु नहीं बदी थी। **(शोकाकुल होता है)**

[दो मुगलों का प्रवेश]

एक मुगल : अरे म्यां, कुछ खबर भी है। बंदे भाग गए। वह देखो, मगरूर प्रताप भागा जा रहा है।

दूसरा मुगल : ऐं ऐं, प्रताप ! क्या कहते हो भाईजान।

पहला मुगल : अरे म्यां देखो भी, यों आंखें क्या फाड़ रहे हो, मुंह क्या बना रहे हो ?

दूसरा मुगल : **(नेपथ्य की ओर गौर से देखकर)** हां, हां, मालूम तो कुछ ऐसा ही होता है।

पहला मुगल : चलो, जल्द उसे पीछे से तीर मारकर गिरा देंगे, फिर बांध कर, कैद करके—शाहजादा साहब को नजर करेंगे और मारे इनामों के मालामाल हो जाएंगे।

[प्रस्थान]

शक्तिसिंह : लेकिन, इसके पहले ही दोजख चले जाएंगे। शेर पर दूर से ढेला फेंकना चाहते हैं। तलवार के एक ही वार में दो के चार हो जाएंगे, इसका पता ही नहीं। शक्तिसिंह, अभागे शक्तिसिंह अब भी समय है। इन्हें राह ही में खपाकर प्रताप के प्राण बचाकर मातृभूमि मेवाड़ का कुछ हित साधन कर ले। हृदय बोल, बहुत दिनों में जी भर कर बोल, प्यारा बोल, पुराना बोल, जय मेवाड़ !

[प्रस्थान। पट परिवर्तन]

[प्रताप अकेले शोकाकुल बैठे हैं]

प्रताप : चेतक ! प्यारे चेतक ! तुम राह ही में चल बसे। तुम्हारी अकाल मृत्यु देखने के पहले ही ये आंखें क्यों न सदा को मुंद गईं। मेरे प्यारे सुख-दुख के साथी, तुम्हें छोड़कर मेवाड़ में पैर रखने को जी नहीं करता। शरीर का रोम रोम घायल हो गया है, प्राण कंठ में आ रहे हैं, एक कदम भी चलना दूभर है, फिर भी इच्छा होती है कि तुम्हारे शव के पास दौड़ता हुआ लौट आऊं, तुमसे लिपटकर जी भरकर रो लूं और वहीं चट्टानों से सर टकरा टकराकर प्राण दे दूं। अपने प्राण देकर प्रताप के प्राण बचाने वाले मूक प्राणी ! तुम अपना कर्तव्य पूरा कर गए, पर मैं संसार में मुंह दिखाने योग्य न रहा ! हाय, मेरे पापी प्राणों से तुमने किस दुर्दिन में प्रेम करना सीखा था। चेतक, चेतक, प्यारे चेतक ! **(विकल होकर आंखें मूंद लेते हैं)**

[दोनों मुगलों का प्रवेश]

पहला मुगल : यार, कितने तीर मारे, मगर इसकी पीठ में एक भी न लगा। मगरूर ने पीछे फिरकर भी न देखा। राह में घोड़ा मर गया, तो पैदल ही यहां तक चला आया। चलते में निशाना ठीक नहीं बैठता। इस वक्त थककर बेहोश हो गया है। हां, लगाओ तो यार एक हाथ कस कर।

दूसरा मुगल : इस मुर्दे पर मैं क्या हाथ उठाऊं ! तुम्हीं काफी हो। हां, लगाओ एक हाथ सपाटे का। फिर जल्दी चलकर इनाम पाएं।

[शक्तिसिंह का प्रवेश और प्रहार करना]

शक्तिसिंह : बुजदिलो, सोता हुआ मेवाड़ी शेर भी तुम जैसे कायरों के दिल दहला देने को काफी है। इस बुरे वक्त में भी इस पर हाथ उठाने की हिम्मत तुम जैसे बुजदिलों में नहीं हो सकती।

[मुगलों की मृत्यु]

शक्तिसिंह : राणा प्रताप ! महाराणा प्रतापसिंह ।

प्रताप : (आंखें खोलकर) कौन ? ऐं, शक्तिसिंह ! तुम यहां क्यों आए ? क्या बदला लेने ! अब वह प्रताप प्रताप नहीं रहा भाई। अब इससे बदला लेकर तुम्हारी भीषण प्रतिहिंसा शांत न होगी। बदला लेना था तो समर में लेते, जब प्रताप राणा प्रताप न सही, एक सशक्त सिपाही तो था। अब क्या रखा है। किंतु नहीं, तुम्हें प्रतिहिंसा की प्रबल प्यास जो लग रही होगी। अच्छा, लो शक्तिसिंह, बदला लोगे ? पथ के भिखारी प्रताप से बदला लोगे ? तो लाओ, रण से विमुख प्रताप के कायर हृदय में, अंत समय प्यारी मेवाड़ी कटारी भोंक दो। बड़ी शांति से मरूंगा शक्ति, जल्दी करो। विलंब हो रहा है। हां, निकालो कटार। बदला लो, बदला लो। इस पापी प्रताप का अब मरना ही हितकर है।

शक्तिसिंह : वज्रपात है भैया। इस कुसमय में मेवाड़ के नेता के बहुमूल्य प्राणों पर उंगली का भी आघात वज्रपात है। कौन कहता है, प्रताप पापी है; कौन कहता है, प्रताप कायर है। प्रताप वीरों का आदर्श है। भारत का अभिमान है। राजस्थान की शान है और मेवाड़ियों का प्रखर प्रकाशवान भानु है।

प्रताप : क्या कह रहे हो शक्ति। तुम्हारे मुंह से ये बातें नवीन मालूम होती हैं।

शक्तिसिंह : यह मेरा दुर्भाग्य है भैया। मेरे पापों का कड़ुवा फल है। मैं मेदाड़ को भूल गया था। भारतीयता को खो बैठा था। देश-भक्ति को ठुकरा चुका था, स्वाभिमान को तिलांजलि दे चुका था। उसी का यह दंड है। कहो, हां, खूब कहो, ऐसी हृदयबेधक बातें कहो, भाई, अपराधी को खूब दंड मिलने दो। बिना प्राय-श्चित पूरा हुए पापी की आत्मा को शांति नहीं मिलती।

प्रताप : फिर वही बातें। शक्तिसिंह, तुम्हारे स्वभाव में अचानक अंतर कैसे हो गया ?

शक्तिसिंह : आंखें खोलकर मेवाड़ी वीरों का बलिदान देखने से इस युद्ध ने कान मलकर मुझे बता दिया कि मेरा अहंकार व्यर्थ है। मुझसे कई गुनी वीरता, कई गुनी देशभक्ति और कई गुना त्याग मेवाड़ के एक एक सैनिक के हृदय में हिलोरें ले रहा है। और आप ! आप तो देव हैं भैया। मेवाड़ के सौभाग्य से यहां जन्म लेने आए हैं। आपकी यह क्षत-विक्षत देह और प्राणों की ममता

छोड़कर भीषण संग्राम ! आश्चर्य होता था भैया, और श्रद्धा उमड़ी पड़ती थी। इच्छा होती थी कि तुम्हारे चरणों पर सिर रखकर समरांगण में सदा के लिए वीरों की नींद सोया जाए। भैया, क्या तुम मुझे क्षमा न करोगे ? मेवाड़ को फिर एक बार बड़े प्यार से मां कहने का अधिकार न दोगे ? भैया, मुझे क्षमा करो।

प्रताप : क्षमा ! क्षमा कैसी भाई ! भ्रातृप्रेम का निर्मल झरना विद्वेष की शिला से नहीं रुक सकता। तुम्हारे एक 'भैया' संबोधन पर लाखों क्षमा निछावर हैं। भाई पुकारो तो शक्ति, पुकारो तो भैया, एक वार मुझे फिर प्यार से 'भैया' कहकर पुकारो तो।

शक्तिसिंह : भैया, भैया मेरे ! **(रोते रोते पैरों पर गिर पड़ना)**

प्रताप : **(उठाकर)** आओ शक्ति ! आओ भैया ! बरसों बाद गले मिलकर रो लें। संसार में, सारे साथी छूट जाने के बाद, भाई भाई का मिलना विशेष सुखकर होता है।

[गले मिलते हैं]

पटाक्षेप

[१६२६]

कर्तव्यपालन

□ रामनरेश त्रिपाठी

पात्र

राजा — जंगल का रखवाला

राजा के मुसाहिब

स्थान—जंगल का रास्ता

समय—शाम

[राजा जंगल से निकलकर एक रास्ते के किनारे खड़ा है।]

राजा : (**यकायक पहुंच कर**) यह तो किसी के घर का रास्ता है। यह सबके लिए खुला नहीं हो सकता। (**खड़े खड़े होंठों पर उंगली रखकर**) मैं राजा हूं। आश्चर्य है अंधेरा मेरी कुछ भी परवाह नहीं करता, वह बढ़ता ही आ रहा है। मामूली आदमी की तरह मैं भी भूल और भटक सकता हूं। पूरब, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण दिशाएं भी, जो मेरा आतंक मानती थीं, इस समय सब चुप हैं। दरबार में बढ़ बढ़कर बातें करने वाली मेरी बुद्धि इस समय नहीं बता सकती कि मैं किधर जाऊं। इस समय तो किसी भिखमंगे का कुत्ता भी मुझे भूंक सकता है, और वह भिखमंगा मिले, तो मुझे सलाम भी न करे। और ये बढ़िया बढ़िया चमकीले कपड़े? ओह ! मुझे बहुत भारी लग रहे हैं। आज मेरा सारा अभिमान मुझे झूठा जान पड़ रहा है। (**हंसता है**) अच्छा हुआ, मुझे पता तो चल गया कि मैं वास्तव में राजा ही नहीं, मनुष्य भी हूं। (**किसी की आहट सुनता है**) कोई आ रहा है। मुझे क्या करना चाहिए ? क्या कुछ राजापन दिखाऊं ? नहीं, नहीं, फेंको इस राजापन के ढोंग को। मनुष्य होने का लाभ लो।

[वनरक्षक का प्रवेश]

वनरक्षक : आज मैं बदमाश को पकड़ पाया। तुम कौन हो ?

राजा : मैं बदमाश नहीं, तुमको विश्वास दिलाता हूं।

वनरक्षक : अच्छी बात है। किसने बंदूक चलाई ?

राजा : मैंने नहीं चलाई।

वनरक्षक : (**तिरस्कार के स्वर में**) तुम झूठ बोलते हो।

राजा : (**मन में**) झूठ बोलता हूं? कैसे दुख की बात है कि मैं राजा होकर एक अपराधी की तरह सुन रहा हूं। (**प्रकट**) तुम मेरी बात का विश्वास करो। भाई, मैंने बंदूक नहीं चलाई।

वनरक्षक : अच्छा, अच्छा, इधर आओ। तुमने राजा के एक हिरन को गोली मारी। क्या नहीं मारी?

राजा : नहीं, सचमुच नहीं। मैं खुद राजा का बहुत सम्मान करता हूं। मैंने भी गोली की आवाज सुनी है और मुझे भय है कि कुछ चोर या डाकू जंगल में छिपे हुए हैं।

वनरक्षक : मुझे यकीन नहीं। खैर, तुम कौन हो? और तुम्हारा नाम क्या है?

राजा : (**गंभीर होकर**) मेरा नाम?

वनरक्षक : हां, तुम्हारा नाम? तुम्हारा कोई नाम तो होगा ही। क्या नहीं है? तुम कहां रहते हो? और करते क्या हो?

राजा : इन्हीं प्रश्नों के उत्तर देने का मुझे अभ्यास नहीं है।

वनरक्षक : हो सकता है। पर ये ही प्रश्न हैं, जिनके उत्तर देने में सच्चे आदमी को डर नहीं लगता। खैर, अगर तुम अपने बारे में कोई साफ उत्तर नहीं देना चाहते हो, तो मत दो। मगर तुम जाना कहां चाहते हो? चलो मैं तुमको बाहर निकाल आऊं।

राजा : (**क्षुब्ध होकर**) तुम? किस अधिकार से?

वनरक्षक : (**जोश के साथ**) मैं राजा का वनरक्षक पुंडरीक हूं, इस अधिकार से।

राजा : (**गौर से देखकर**) पुंडरीक?

वनरक्षक : (**अकड़ के साथ**) जी हां, पुंडरीक। किसी आदमी को, जिस पर मुझे शक होता है और जब तक वह अपना परिचय, जितना तुमने दिया है उससे अधिक नहीं देता, मैं इस राह से नहीं जाने देता।

राजा : अच्छी बात है, भाई। मुझे बड़ी खुशी है कि मेरी तरह तुम भी राजा के एक अच्छे अफसर हो। अगर तुम विश्वास करो...

वनरक्षक : नहीं, तुम विश्वास के पात्र नहीं हो।

राजा : मैं राजा का एक अफसर हूं। मैं राजा के साथ इस जंगल में शिकार खेलने के लिए आया था और यहां राह भूल गया हूं। जंगल में मुझे रात हो गई और मैं घर से बहुत दूर पड़ गया हूं।

वनरक्षक : इसमें सचाई की कमी है। अगर तुम शिकार को निकले थे तो तुम्हारा घोड़ा कहां है?

राजा : घोड़ा थककर गिर पड़ा, मैंने उसे छोड़ दिया।

वनरक्षक : यदि मैं तुम्हारी बात का विश्वास न करूं...

राजा : मैं झूठ नहीं बोलता, भले आदमी!

वनरक्षक : वाह! वाह! दरबार में रहते हो और झूठ नहीं बोलते?

राजा : खैर, तुम जैसा समझो। मगर मैं झूठ नही बोल रहा हूं, यह मैं तुमको विश्वास दिलाता हूं। यदि तुम कभी राजधानी में आओगे, तो मैं तुमको दिखा दूंगा कि मैं झूठ नहीं बोल रहा हूं। (**जेब से एक रुपया निकालकर और पुंडरीक की ओर हाथ बढ़ाकर**) यह लो इनाम और आज रात को मुझे अपनी झोंपड़ी में रहने दो।

[वनरक्षक राजा का मुंह देखता है।]

राजा : यदि यह कम हो, तो सवेरे तुम जो कहोगे, वही तुमको दूगा और खुश कर दूंगा।

वनरक्षक : (**जोर से हंसकर**) ओहो, अब मैंने माना कि तुम दरबारी हो। आज के लिए तो एक छोटी सी रिश्वत और कल के लिए एक बड़ा सा वादा! एक ही सांस में दोनों। मगर मेरे दोस्त, पुंडरीक दरबारी नहीं है।

राजा : (**क्रोध से**) तू एक नीच आदमी है। जबान संभालकर नहीं बोलता। मैं तेरे बारे में अधिक जानना चाहता हूं।

वनरक्षक : (**लापरवाही से**) 'तू' और 'तेरे' शब्द को इस तरह लापरवाही से मत फेंको। मैं भी उतना ही भला आदमी हूं, जितने तुम हो।

राजा : (**शांत होकर**) क्षमा करो, मित्र।

वनरक्षक : (**मुसकराकर**) मैं क्रोध में नहीं हूं, पर जब तक तुम्हारी सचाई पर मेरा संदेह है, तब तक मैं तुमसे विशेष प्रेमभाव नही दिखला सकता।

राजा : तुम ठीक कहते हो, पर मैं तुमको कैसे विश्वास दिला सकता हूं?

वनरक्षक : ओह! तुम जैसा मुनासिब समझो, करो। राजधानी यहां से दस मील (१६ किलोमीटर) पर तो है। तुम अभी राजधानी जाना चाहो, तो मैं तुमको रास्ता बताऊंगा और अगर तुम रात भर इस गरीब के घर में टिकना पसंद करो, तो मेरे

सिर आंखों पर रहो। सवेरे मैं तुम्हारे साथ चलूंगा।

राजा : क्या तुम अभी साथ नहीं चल सकते ?

वनरक्षक : नहीं, चाहे तुम राजा ही क्यों न हो।

राजा : तब तो चलो, मैं तुम्हारे ही घर में रात काटूंगा।

[घोड़े पर सवार एक सरदार का प्रवेश]

दरबारी : महाराज ! कुशल से तो हैं ? महाराज के लिए हमने सारा जंगल छान डाला।

वनरक्षक : (**चकित होकर, आखें फाड़कर**) कौन ? महाराज ? तब तो मुझसे बड़ी भूल हुई। (**घुटने टेककर**) महाराज, आपके साथ मैंने जो ढिठाई की, उसे क्षमा कीजिए।

[राजा तलवार खींचता है]

वनरक्षक : महाराज, आप अपने उस सेवक का वध निश्चय ही नहीं करेंगे, जिसने ईमानदारी से अपना फर्ज अदा किया है।

राजा : नहीं, मेरे सच्चे और बहादुर मित्र ! मैं तुमको क्षमा नहीं कर सकता। मैं तुम्हारे जैसे नेक और सच्चे आदमियों के सम्मान का ऋणी हूं। उठो, राजरत्न पुंडरीक, उठो। अपनी पदवी का प्रमाण और मेरी प्रसन्नता का चिह्न यह तलवार लो। तुमने हमें जो सुख दिया है, उसके लिए एक हजार रुपए सालाना का पुरस्कार तुमको जीवन भर मिलता रहेगा।

[राजा तलवार देता है। पुंडरीक घुटने टेककर उसे दोनों हाथों से लेता है और माथे से छुआता है। फिर खड़े होकर राजा को प्रणाम करता है।]

राजा : पुंडरीक !

पुंडरीक : महाराज !

राजा : चलो, हमें महल तक पहुंचा आओ। आज तुम हमारे मेहमान रहोगे।

पुंडरीक : (**प्रसन्न होकर, सिर झुकाकर**) जो हुक्म, महाराज !

[राजा सरदार के घोड़े पर सवार होकर चलता है। उसके आगे पुंडरीक रास्ता दिखाता चलता है। सरदार राजा के पीछे जाता है।]

पर्दा गिरता है

'बालभारती', महाराष्ट्र से]

राखी का मूल्य

☐ हरिकृष्ण 'प्रेमी'

पात्र

कर्मवती	तातार खां
बाघसिंह	हिंदूबेग
जवाहरबाई	सिपाही
हुमायूं	दूत

[स्थान : चित्तौड़ का भीतरी भाग। महारानी कर्मवती, जवाहरबाई और बाघसिंह बैठे हुए बातचीत कर रहे हैं।]

कर्मवती : हां, बाघसिंहजी। युद्ध का क्या हाल है?

बाघसिंह राजपूत वीरता से लड़ रहे हैं, किंतु एक तो हमारी संख्या बहुत कम है, दूसरे शत्रुओं का योरोपियन तोपखाना आग उगल रहा है। उसका मुकाबला तलवारों से तो हो नहीं सकता। हमें मरना है। हम हंसते हंसते मरेंगे और बहुतों को मार कर मरेंगे, पर दुख है तो यही कि मरकर भी मेवाड़ के मान की रक्षा न कर पाएंगे।

कर्मवती बड़ा कठिन प्रसंग है। इस समय मेरे स्वामी नहीं हैं। उनके रहते मेवाड़ की ओर आंख उठाने का किसमें साहस था? उनके आतंक से मेवाड़ के बाहर भी दूर दूर तक अत्याचारियों के प्राण कांपा करते थे, मेवाड़ की सीमा में पैर रखने का तो साहस ही किसे हो सकता था? बाघसिंहजी, हमने आपस के वैमनस्य की आग में अपने ही हाथों सर्वस्व स्वाहा कर दिया।

बाघसिंह अब पश्चाताप करने से क्या होता है देवि! अब तो हमें मार्ग बताइए। ऐसे प्रसंगों पर विवेक अनुशासन के चरणों पर झुक जाना चाहता है।

कर्मवती मुझे एक उपाय सूझा है।

बाघसिंह क्या?

कर्मवती मैं हुमायूं को राखी भेजूंगी।

जवाहरबाई हुमायूं को? एक मुसलमान को भाई बनाओगी?

कर्मवती चौंकती क्यों हो, जवाहरबाई! मुसलमान भी इंसान है! उनके

भी बहनें होती हैं। सोचो तो बहन, क्या वे मनुष्य नहीं हैं। क्या उनके हृदय नहीं हैं? वे ईश्वर को खुदा कहते हैं, मंदिर में न जाकर मस्जिद में जाते हैं, क्या इसीलिए हमें उनसे घृणा करनी चाहिए?

वाघसिंह : किंतु और भी तो बाधाएं हैं। क्या हुमायूं पुराना बैर भूल सकेगा? सीकरी के युद्ध के जख्मों के निशान क्या आसानी से मिट सकेंगे?

कर्मवती : हमारी राखी वह शीतल प्रलेप है, जो सारे घाव भर देती है, वह वरदान है जो सारे बैरभावों को जलाकर भस्म कर देती है। राखी पाने के बाद कोई बैर-विरोध याद रख सकता है?

जवाहरबाई : मुसलमान भारत के शत्रु है।

कर्मवती : ऐसा न कहो। उन्हें भी तो भारत में जीना-मरना है। हमारी तरह भारत उनकी भी जन्मभूमि हो चुकी है। अब वे काफिले में लाद कर अरब नहीं भेजे जा सकते। उन्हें रहना पड़ेगा और हमें उन्हें रखना होगा। वे हमें भाई समझें और हम उन्हें। यही स्वाभाविक है, यही उचित है। इस विकट अवसर पर मेवाड़ की रक्षा का और उपाय ही क्या है? बाघसिंहजी, आप ही कुछ बताइए। आपकी क्या सम्मति है?

बाघसिंह : हम तो आज्ञा पालन करना जानते हैं, सम्मति देना नहीं।

कर्मवती : अच्छा तो फिर वही हो। भ्रातृत्व और मनुष्यत्व पर विश्वास करके हुमायूं की परीक्षा की जाए। लीजिए यह राखी और यह पत्र, आज ही दूत के साथ बादशाह हुमायूं के पास भेजिए।

[राखी और पत्र देती है]

जवाहरबाई : अच्छी बात है। हम भी देखेंगे कि कौन कितने पानी में है। इस बहाने एक मुसलमान की मनुष्यता की परीक्षा हो जाएगी और यह भी प्रकट हो जाएगा कि एक राजपूतनी की राखी में कितनी ताकत है।

[पटाक्षेप]

दूसरा दृश्य

[बिहार में गंगातट पर हुमायूं का फौजी डेरा। अपने खास तंबू में हुमायूं, उसका सेनापति हिंदूबेग और तातार खां बैठे हैं। एक पहरेदार का प्रवेश।]

पहरेदार : (अभिवादन करके) जहांपनाह।

हुमायूं : क्या है ?

पहरेदार : खिदमत में मेवाड़ का एक दूत आया है।

हुमायूं : मेवाड़ से ? अच्छा यहीं भेज दो।

[पहरेदार का प्रस्थान]

हुमायूं : आओ मेवाड़ के बहादुर !

दूत : (अभिवादन करके) स्वर्गीय महाराणा संग्रामसिंहजी की महारानी कर्मवतीजी ने आपको यह सौगात भेजी है।

हुमायूं : (हाथ बढ़ाकर) मेरी किस्मत। हिंदूबेग ! तुम जानते हो, मैं मेवाड़ की बहुत इज्जत करता हूं और हर एक बहादुर आदमी को करनी चाहिए। वहां की खाक भी सिर पर लगाने की चीज है, वहां के जर्रे जर्रे में बहिश्त है।

तातार खां : दुश्मन की तारीफ करने में, जहांपनाह से बढ़कर...

हुमायूं : दुश्मन ! हः हः हः। आंखों पर से तअस्सुब का चश्मा हटा कर देखो। जिन्हें हम दुश्मन समझते हैं, वे सब हमारे भाई हैं, हम एक ही खुदा के बेटे हैं, तातार ! हां, देखूं तो इसमें क्या लिखा है।

[हुमायूं पत्र पढ़ते पढ़ते विचारमग्न हो जाता है]

हिंदूबेग : क्या सपना देखने लगे, जहांपनाह ! महारानी कर्मवती ने क्या जादू का पिटारा भेजा है ?

हुमायूं : सचमुच हिंदूबेग, उन्होंने जादू का पिटारा भेजा है। मेरे सूने आसमान में उन्होंने मुहब्बत का चांद चमकाया है। उन्होंने मुझे राखी भेजी है, मुझे अपना भाई बनाया है। (दूत से) बहन कर्मवती से कहना, हुमायूं तुम्हारी मां के पेट से पैदा न हुआ तो क्या हुआ, वह तुम्हारे सगे भाई से बढ़कर है। कह देना—मेवाड़ की इज्जत मेरी इज्जत है। जाओ !

[दूत का प्रस्थान]

तातार खां : आपके अब्बाजान के जानी दुश्मन की औरत ने...?

हिंदूबेग : उसी औरत ने, जिसके खाविंद ने कसम खाई थी कि मुगलों को हिंदुस्तान के बाहर खदेड़े बगैर चित्तौड़ में कदम न रखूंगा...

हुमायूं : अफसोस कि तुम इस राखी की कीमत नहीं जानते। छोटे छोटे दो धागे जानी दुश्मन को भी मुहब्बत की जंजीरों में जकड़ देते हैं। यह मेरी खुशकिस्मती है कि मेवाड़ की बहादुर रानी ने मुझे भाई बनाया है और बहादुरशाह से मेवाड़ की हिफाजत

करने के लिए मेरी मदद चाही है।

तातार खां : तो क्या जहांपनाह ने उनकी इल्तजा मंजूर कर ली है ?

हुमायूं : यह इल्तजा नहीं हुक्म है। राखी आ जाने के बाद भी क्या सोच-विचार किया जा सकता है ? यह तो आग में कूद पड़ने का न्योता है। हिंदुस्तान की तवारीख कह रही है कि राखी के धागों ने हजारों कुर्बानियां कराई हैं। मैं दुनिया को बता देना चाहता हूं कि हिंदुओं के रस्मो-रिवाज मुसलमानों के लिए भी उतने ही प्यारे हैं; उतने ही पाक हैं।

तातार खां : एक मुसलमान के ऊपर एक हिंदू को तरजीह...

हुमायूं : कौन हिंदू और कौन मुसलमान, यह मैं खूब समझता हूं। तातार खां, मैं जो कुछ कह रहा हूं, खुदा की हिदायत के मुताबिक कह रहा हूं।

तातार खां : एक काफिर कौम को मुसलमानों के खिलाफ मदद दे रहे हैं, क्या यही खुदा की हिदायत है ?

हुमायूं : तुम भूलते हो। तुम सब एक ही परवरदिगार की औलाद हो। हिंदुओं के अवतारों ने और तुम्हारे पैगंबरों ने एक ही रास्ता दिखाया है। 'कुरान शरीफ' में साफ लिखा है कि 'हमने हर गिरोह के लिए इबादत का एक खास रास्ता मुकर्रिर कर दिया है, जिस पर वह अमल करता है, इसलिए उस पर झगड़ा न करो।'

तातार खां : वे हमारे पैगंबर को नहीं मानते।

हुमायूं : और तुम उनके पैगंबर को मानते हो ? तुम्हारे 'कुरान शरीफ' में तो तुम्हें हुक्म दिया गया है कि तुम दूसरों के पैगंबरों पर भी ईमान लाओ, उनका यकीन करो। सचाई जहां भी रोशन हुई है, जिस किसी के भी मुंह से रोशन हुई है, सचाई है। खुदा की साफ हिदायत होते हुए भी तुम हिंदुओं के धर्म और अवतारों की इज्जत न करते हुए उनसे लड़ते हो। राजपूत इस वक्त सचाई पर हैं और बहादुरशाह गुमराह हैं। सच्चे मुसलमान का काम सचाई का साथ देना है, फिर चाहे उसे मुसलमान के ही खिलाफ क्यों न लड़ना पड़े। बस आज ही मेवाड़ की तरफ कूच करना होगा।

हिंदूबेग : मुझे हिंदू-मुसलमान का खयाल नहीं। पर मैं समझता हूं कि शेर खां को खुला छोड़कर मेवाड़ की तरफ लौट जाना खतरे से खाली नहीं।

मायूं : अब सोचने का वक्त नहीं। बहन का रिश्ता दुनिया के सारे सुखों, दौलतों, ताकतों और सल्तनतों से बढ़ कर है। मैं इस रिश्ते की इज्जत रखूंगा। सल्तनत जाए, पर मैं दुनिया को यह कहते नहीं सुनना चाहता कि मुसलमान बहन की इज्जत करना नहीं जानते। तख्त से उतर कर अगर किसी सच्ची बहन के दिल में जगह पा सकूं तो अपने आपको दुनिया का सबसे बड़ा खुशकिस्मत इंसान समझूंगा। बहन कर्मवती ! तुम्हारी राखी मुझे वही ताकत दे जो वह राजपूतों को देती आई है। तातार खां, हिंदूबेग ! जल्दी फौज तैयार करो।

[राखी हाथ में बांधते बांधते जाता है। सबका प्रस्थान।]

पर्दा गिरता है

वैयाकरण

□ रामेश्वरदयाल दुबे

पात्र

व्यक्ति पहला	संज्ञानंद (पुरुष पात्र)
व्यक्ति दूसरा	क्रियादेवी (स्त्री पात्र)
व्यक्ति तीसरा	सर्वनामन् (पुरुष पात्र)
व्याकरणचंद्र (पुरुष पात्र)	विशेषण (पुरुष पात्र)
भाषा (स्त्री पात्र)	अव्यय (पुरुष पात्र)

स्थान : भाषा के घर का बाहरी कमरा

समय : प्रातःकाल

[मंच पर दो व्यक्ति व्यक्तिगत बातचीत करते हैं। उनकी अशुद्ध भाषा को सुनकर व्याकरणचंद्र को क्रोध आता है।]

पहला व्यक्ति : मेरे की औरत का हार हो गई, अब तू मेरे को क्या समझाते है? हमेरा तो सर्वनाश हो गई।

दूसरा व्यक्ति : बहुत बुरा हुई। बहुत बुरा हुई। मगर करने भी क्या सकता? अब दुखी होने को जरूर नहीं। तकदीर की बात। क्या करने सकता?

तीसरा व्यक्ति : करने क्या नहीं सकता। मैं तो रिपोर्ट करेंगे।

[क्रुद्ध व्याकरणचंद्र का प्रवेश]

व्याकरणचंद्र : छिः, बंद करो यह बकवास। (**दोनों आदमी धीरे से खिसकते हैं**) भाषा का तो श्राद्ध ही किए डालते हैं। जो देखो, मनमानी करता चला जा रहा है। हाय! मुझ व्याकरणचंद्र का कोई खयाल नहीं करता! अरी भाषा! अरी भाषा! (**कोई उत्तर न पाकर**) अरी भाषा!

[भाषा का प्रवेश]

भाषा : क्या मुझे बुलाया?

व्याकरणचंद्र : तुम्हें बुलाया। तुम्हें अपनी तनिक भी फिक्र नहीं। यह हो क्या रहा है? तुम्हारे क्षेत्र में यह जो ऊधम मचा है, क्या तुम्हें पसंद है?

भाषा : क्या हुआ? बताइए भी।

व्याकरणचंद्र : हाय ! तुमने सुना नहीं ? यह क्या चल रहा था। ? 'मेरे की औरत' ? 'मेरे की औरत' क्या होती है ? 'मेरी औरत' से काम नहीं चलेगा ? 'सर्वनाश हो गई' या 'हो गया' ? ऐसा क्रोध आता है...

भाषा : समझी। बेचारे लोग। आप क्रोध न किया करें। वे गलतियां करते हैं, करें। उनका काम तो चल ही जाता है। एक बात कहता-लिखता है, दूसरा समझ लेता है, बस। और चाहिए क्या ? इसमें क्रोध की ऐसी क्या बात ?

व्याकरणचंद्र : **(मुंह बनाते हुए)** इसमें क्रोध की ऐसी क्या बात ? देखो, भाषा, मैं इसे बिलकुल बरदाश्त नहीं कर सकता। बिलकुल नहीं। मैं कहे देता हूं कि तुम्हारा सारा व्यापार हमारे नियमों के अनुसार चलना चाहिए। समझी !

भाषा : अच्छा भाई, अच्छा ! प्रयत्न करूंगी। मगर तुम मुझे नियमों की जंजीर से कितना जकड़ोगे ?

व्याकरणचंद्र : जितना संभव होगा, जकड़ूंगा। यह कुछ अपने लिए नहीं, तुम्हारे लिए, भाषा के लिए करूंगा। मैं चाहता हूं कि भाषा शुद्ध बने, संस्कारी बने, सुसंस्कृत बने। इसके लिए कितना प्रयत्न करता रहता हूं।

भाषा : **(मुसकराकर)** यह क्या मैं जानती नहीं ? अच्छा, अच्छा। आप अपना काम करें। मैं इन्हें समझाती हूं।

[व्याकरणचंद्र का प्रस्थान]

भाषा : संज्ञानंद, क्रिया, विशेषण, इधर चलो तो। सर्वनामन् को भी बुलाओ।

[संज्ञानंद और क्रियादेवी का आगमन]

भाषा : देखो, संज्ञा ! क्रिया ! तुम लोगों के कारण मुझे नित्य डांट सहनी पड़ती है। कितनी बार कहा कि जैसा स्थान हो, वैसा काम किया करो। जान-बूझ कर तुम लोग ऐसा काम क्यों करते हो, जिससे मुझे उल्टी-सीधी सुननी पड़े ?

संज्ञानंद : मां, मैं तो कुछ नहीं करता। मैं तो सरल संज्ञानंद ठहरा।

क्रियादेवी : मैं क्या करती हूं, मां ! मैं तो कुछ नहीं करती।

भाषा : कैसे नहीं करती है ? तू अपनी मनमानी करती है। कितनी बार कहा कि संज्ञा को देख देख कर उचित क्रिया कर। पुरुष, पुरुष के साथ बैठता है, स्त्रियां स्त्रियों के साथ। तू बड़ी हुई। इतना तो तुझे समझना चाहिए। देख, आदमी जाता है और

औरत जाती है। आदमी आम खाता है और औरत आम खाती है। समझी ?

क्रियादेवी अरी मां। आदमी-औरत को कौन नहीं पहचान लेता है ? मगर कठिनाई तो तब होती है, जब यह समझ में नहीं आता कि जिसके साथ मुझे जाना है, वह श्रीमानजी हैं या श्रीमतीजी।

भाषा बेटी क्रिया ! मैं तेरी इस कठिनाई को समझती हूं, मगर यह कोई ऐसी कठिनाई भी नहीं है, जो हल न की जा सके। बहुतों को तू स्वयं पहचान ही लेती है। अच्छा ! मैं तेरे पिताजी से कह दूंगी। वे तुझे अच्छी तरह समझा देंगे।

क्रियादेवी : कौन ? पिताजी ? न बाबा ! उनसे मुझे बहुत डर लगता है। मां, तुमने देखा नहीं। लाल पेंसिल जैसी उनके पास एक छड़ी है। जरा गलती हुई कि सड़ से चला देते हैं।

भाषा : तो क्या गलतियां होती रहें ? यह अच्छी बात है ? सभ्य तो वे ही कहलाते हैं, जो साधारण व्यवहार में गलती नहीं करते।

संज्ञानंद : मुझे क्यों बुलाया था, मां ?

भाषा : तुझसे भी यही कहना था कि सोच-समझकर काम किया कर। काम तो तुझे करना ही है। कर्ता जो ठहरा।

संज्ञानंद मां, देख ! यह नहीं होगा। जब देखो तब मुझे ही कर्ता बनाकर मुझसे ही काम लिया करती है। आखिर मेरे भी जान है।

भाषा : अरे, तू कैसी बात कर रहा है ? काम से कोई जी चुराता है ? कर्ता का कितना बड़ा पद तुझे मिला है ! फिर सर्वनाम भी तो सहायता करता है।

संज्ञानंद : खाक सहायता करता है। वह तो सदा पीछे आता है।

भाषा : तो क्या वह पहले आए ? तेरे बिना उसे कौन पहचानेगा ?

[सर्वनामन् और विशेषण का प्रवेश]

सर्वनामन् : मां ! (चौंककर) अरे, यहां तो कर्ताजी भी विराजमान हैं।

[दूर खड़ा होना है]

विशेषण : क्यों सर्वनामन् ! तुम हमारे सुयोग्य दादा से क्यों डरते हो, जो दूर जाकर खड़े हो गए हो ? उन जैसा गुणवान, शक्तिशाली व्यक्ति कहां मिलेगा ?

सर्वनामन् : वाह ! विशेषणजी। लगे तारीफ करने। जिंदगी भर तारीफ ही करते रहोगे या और भी कुछ ? तुम कहते हो कि मैं संज्ञा

दादा से डरता हूं। मैं संज्ञाजी से क्यों डरूं? मैं उनका 'वास्तेजी' जो हूं।

भाषा : (**चौंककर संज्ञानंद से**) यह 'वास्तेजी' क्या ?

संज्ञानंद : क्या जाने।

विशेषण : वास्तेजी ! वास्तेजी का क्या अर्थ है ?

सर्वनामन् : नहीं समझे ? कैसे समझोगे। सारी जिंदगी दूसरों की विशेषता बताने में ही बिता दी। कभी और भी कुछ सीखा होता। अरे भाई, 'वास्तेजी' का अर्थ है कि मैं संज्ञाजी के बदले में काम करता हूं। मैं अपने को विनोद की भाषा में 'वास्तेजी' कहा करता हूं।

[सब हंसते हैं]

विशेषण सर्वनामन्जी ! आप तो अच्छे 'वास्तेजी' निकले। मेरा क्या ? मुझे तो जो काम सौंपा गया है, उसे करता रहता हूं। दूसरों के गुण दिखाना मेरा काम है।

सर्वनामन् : (**उपेक्षा के साथ बुहराते हुए**) हां, गुण दिखाना तुम्हारा काम है। जिसका गुण दिखाना चाहते हो, उसी का दिखाते हो, सब के तो नहीं। क्रियादेवी की तुमने कभी प्रशंसा की ? मैंने तो नहीं सुना।

विशेषण : तुम ठीक कहते हो। क्रियादेवी की तारीफ करना मेरे वश का काम नहीं। वह मेरा काम भी नहीं है।

[क्रियाविशेषण का प्रवेश]

क्रियाविशेषण : क्रिया की प्रशंसा करना मेरा काम है। मैं क्रियाविशेषण जो ठहरा। व्यक्तियों की तारीफ करने में क्या रखा है ? तारीफ तो कृति की होनी चाहिए। काम किस तरह किया गया, कहां किया गया, किस समय किया गया। इन बातों का ही महत्व है। क्यों क्रियादेवीजी, मैं ठीक कह रहा हूं न ?

क्रियादेवी : (**प्रसन्नता प्रकट करती है**) वाह ! शाबाश ! ठीक ही कह रहे हो।

विशेषण : (**हंसकर**) जी नहीं। क्रिया का महत्व नहीं, कर्ता का महत्व हुआ करता है।

संज्ञानंद : (**प्रसन्नता प्रकट करता है**) वाह !

सर्वनामन् : यह खूब रही, भाषा मां ! आह देखता हूं, मेरे घर में भी दलबंदी शुरू हो गई है। विशेषण ने संज्ञा का पक्ष लिया। क्रियाविशेषण ने क्रिया का।

भाषा : पगला कहीं का। इसे क्या दलबंदी कहेंगे ? जिसमे जिसका संबंध होता है, वह एक दूसरे की सहायता करता ही है। अपने अपने कार्य को अगर कोई महत्व दे, तो इसमें क्या बुराई ?

क्रियादेवी : मां, काम करने में तो कोई बुराई नही, किंतु एक बात तो तुम मानोगी कि मुझे सबसे अधिक काम करना पड़ता है.

भाषा : पगली कहीं की। कर्ममय जीवन ही तो जीवन है। अकर्मण्य जीवन भी कोई जीवन है ?

संज्ञानंद : मां कर्म की भी खूब याद दिलाई। इस क्रिया का व्यापार कभी कभी बिलकुल बेकार होता है। कहने के लिए तो काम करती है, परंतु काम तो कुछ होता नही। कभी रोती है, कभी हंसती है, कभी कूदती है इसमें कोई कर्म हुआ ? बेकार, अकर्मक।

क्रियादेवी : मां ! मैं दिन-रात तो काम करती रहती हूं। कभी कुछ, कभी कुछ। फिर भी संज्ञा दादा मेरी शिकायत ही करते रहते हैं। कभी कभी अकेली होती हूं, हंस लेती हूं, कूद लेती हूं, यह भी इन्हें पसंद नहीं। मेरे व्यापार प्रायः तो सकर्म ही होते है।

विशेषण : (चुपके से) मां, मा ! प्रकांड पंडित वैयाकरणजी आ रहे है।

[सब सावधान हो जाते है]

भाषा दया करके उनके सामने सब अपना अपना काम ठीक करना, नहीं तो मुझे डांट खानी पड़ेगी।

[व्याकरणचंद्र का प्रवेश। अव्यय का कान पकड़कर लाते हैं।]

व्याकरणचंद्र : भाषा सबको लेकर तुम यहा बैठी हो। तुम्हे पता है, यह अव्यय कहां मारा मारा फिर रहा था ?

भाषा : कहां था, अव्यय ?

अव्यय : सामने, किनारे, तले, बीच, आसपास, अलावा, अतिरिक्त, विना, सिवाय।

क्रियादेवी : मां, यह अव्यय क्या बक रहा है ?

भाषा : बेटी, जानती नहीं...यह अव्यय है।

अव्यय : शाबाश, धन्य धन्य, वाह वाह, जी हां, ठीक, अच्छा, बहुत अच्छा।

क्रियादेवी : जाने क्या कह रहा है। मेरी तो कुछ समझ में नहीं आता।

भाषा : बेटी, घर में सबसे छोटा यही है, उतना ही नटखट भी।

अव्यय : अफसोस, त्राहि त्राहि, धिक्कार, अच्छा, प्रणाम, नमस्कार,

सलाम, बंदगी।

व्याकरणचंद्र : नटखट तो ठीक, मगर उस पर भी ध्यान देना चाहिए।

भाषा : अव्यय पर मैं क्या ध्यान दूं? वह सब के साथ जा सकता है, सब के साथ अच्छा लगता है। सबसे छोटा है न!

व्याकरणचंद्र : अच्छा अच्छा। यह तो बताओ, तुमने इन संज्ञानंद, सर्वनामन्, विशेषण, क्रिया आदि को समझा दिया कि नहीं कि इन्हें नियमों का ध्यान रखकर चलना चाहिए।

भाषा : समझा तो दिया है, परंतु जब ध्यान रखें, तब न। बच्चे जो ठहरे। गलती कर जाते हैं।

व्याकरणचंद्र : गलती करेंगे, तो मार खाएंगे, मार। मैं कहे देता हूं। तुम्हारी रचना में गलतियां हों, यह मुझे बिलकुल पसंद नहीं, बिलकुल पसंद नहीं। समझी?

भाषा : खूब समझी, खूब समझी। लेकिन एक प्रार्थना है, बच्चों के सामने तो अब मत डांटा करो। मैं बूढ़ी होने को आई।

व्याकरणचंद्र : खबरदार, जो ऐसा कहा। मेरी भाषा कभी बूढ़ी नहीं हो सकती। मेरी भाषा, मेरी प्यारी भाषा!

भाषा : मेरे व्याकरण।

पर्दा गिरता है

मातृभूमि का मान

□ हरिकृष्ण 'प्रेमी'

पात्र

राव हेमू : बूंदी के राव	चारणी : एक गायिका
अभयसिंह : मेवाड़ के सेनापति	वीरसिंह : बूंदी का राजपूत
महाराणा लाखा : चित्तौड़ के महाराणा	दो वीर साथी

पहला दृश्य

[स्थान—बूंदीगढ़। बूंदी के राव हेमू अपने कमरे में मेवाड़ के सेनापति अभयसिंह से बातें कर रहे हैं।]

अभयसिंह : महाराव, सिसौदिया वंश हाड़ाओं को आदर और स्नेह की दृष्टि से देखता है।

राव हेमू : तो फिर आप बूंदी को मेवाड़ की अधीनता स्वीकार करने की आज्ञा लेकर क्यों आए है?

अभयसिंह : महाराव, हम राजपूतों की छिन्न-भिन्न असंगठित शक्ति विदेशियों का किस प्रकार सामना कर सकती है? इस बात की अत्यंत आवश्यकता है कि हम अपनी शक्ति एक केंद्र के अधीन रखें।

राव हेमू : और वह केंद्र है चित्तौड़।

अभयसिंह : इसमें भी कोई संदेह है, महाराव। चित्तौड़ का गौरव फिर लौटा है। जो राजवंश पहले मेवाड़ के अधीन थे, महाराणा लाखा चाहते हैं, आज भी उसी तरह रहें। बूंदी राज्य भी सदा से मेवाड़ के आश्रित...

राव हेमू : बूंदी राज्य सदा से मेवाड़ के आश्रित!...यह तुम क्या कहते हो। अभयसिंहजी, हाड़ा वंश किसी की गुलामी स्वीकार नहीं करेगा।

अभयसिंह : महाराव, आज राजपूतों का एक सूत्र में गूंथे जाने की बड़ी आवश्यकता है और जो व्यक्ति यह माला तैयार करने की ताकत रखता है, वह है महाराणा लाखा।

राव हेमू : ताकत की बात छोड़ो, अभयसिंह। प्रत्येक राजपूत को अपनी

ताकत पर नाज है।

अभयसिंह : किंतु अनुशासन का अभाव हमारे देश के टुकड़े किए हुए है।

राव हेमू : प्रेम का अनुशासन मानने को हाड़ा वंश सदा तैयार है, शक्ति का नहीं। मेवाड़ के महाराणा को यदि अपने ही जाति भाइयों पर तलवार आजमाने की इच्छा हुई है तो उससे उन्हें कोई नहीं रोक सकता। बूंदी स्वतंत्र राज्य है और स्वतंत्र रहकर वह महाराणाओं का आदर करता रह सकता है। अधीन होकर किसी की सेवा करना वह पसंद नहीं करता।

अभयसिंह : तो मैं जाऊं ?

राव हेमू : आपकी इच्छा।

[दोनों का दो तरफ प्रस्थान। पट परिवर्तन।]

दूसरा दृश्य

[स्थान—चित्तौड़ का राजमहल। महाराणा लाखा बहुत चिंतित और व्यथित अवस्था में कमरे में टहल रहे हैं।]

लाखा : मेवाड़ के गौरवपूर्ण इतिहास में मैंने कलंक का टीका लगाया है। इस बार मुट्ठी भर हाड़ाओं ने हम लोगों को जिस प्रकार पराजित और विफल किया, उससे मेवाड़ के आत्मगौरव को कितनी ठेस पहुंची है, यह मेरा ही हृदय जानता है।

अभयसिंह : महाराणा जी। दरबार के सभासद आपके दर्शन पाने को उत्सुक हैं।

महाराणा : सेनापति अभयसिंहजी, आज मैं दरबार में नही जाऊंगा। आप जानते हैं कि जब से हमें नोमरा के मैदान में बूंदी के राव हेमू से पराजित होकर भागना पड़ा, मेरी आत्मा मुझे धिक्कार रही है। बाप्पा रावल और वीरवर हमीर का रक्त जिसकी धमनियों में बह रहा हो वह प्राणों के भय से भाग जाए, यह कितने कलंक की बात है।

अभयसिंह : किंतु जरा सी बात के लिए आप इतना शोक क्यों करते हैं, महाराणा ? हाड़ाओं ने रात के समय अचानक हमारे शिविर पर हमला कर दिया। आकस्मिक धावे से घबराकर हमारे सैनिक भाग खड़े हुए। आप तो तब भी प्राण पर खेलकर राव हेमू से लोहा लेना चाहते थे। किंतु हमीं लोग वहां से आपको खींच लाए। इसमें आपका क्या अपराध है और इसमें मेवाड़

के गौरव में कमी आने का कौन सा कारण है ?

महाराणा : जिनकी खाल मोटी है, उनके लिए किसी भी बात में कोई भी अपयश, कलंक या अपमान का कारण नही होता। किंतु जो आन को प्राणों से बढ़कर समझते आए है, वे पराजय का मुख देखकर भी जीवित रहें, यह कैसी उपहासजनक बात है। सुनो अभयसिहजी, मै अपने मस्तक से इस कलंक के टीके को धो डालना चाहता हूं।

अभयसिह : मेवाड़ के सैनिक आपकी आज्ञा पर अपने प्राणों की बलि देने को प्रस्तुत है।

महाराणा : उनके पौरुष की परीक्षा का दिन आ पहुचा है। महारावल बाप्पा का वंशज मै लाखा प्रतिज्ञा करता हूं कि जब तक बूदी के दुर्ग में ससैन्य प्रवेश नही करूंगा, अन्न-जल ग्रहण नहीं करूंगा।

अभयसिह : महाराणा ! छोटे से बूदी दुर्ग को विजय करने के लिए इतनी बड़ी प्रतिज्ञा करने की क्या आवश्यकता है ? बूदी को उसकी धृष्टता के लिए तो दड दिया ही जाएगा, लेकिन हाड़ा लोग कितने वीर है। युद्ध करने मे वे यम से भी नही डरते। इसमे सदेह नही कि अतिम विजय हमारी ही होगी, किंतु यह निश्चयपूर्वक नही कहा जा सकता कि इसमें कितने दिन लग जाएगे। इसलिए ऐसी भीषण प्रतिज्ञा आप न करे।

महाराणा : आप यह क्या कहते है, सेनापति ? क्या कभी आपने सुना है कि सूर्यवश मे पैदा होने वाले पुरुष ने अपनी प्रतिज्ञा को वापस लिया हो ? 'प्राण जाहि पर वचन न जाई' यह हमारे जीवन का मूल मंत्र है। जो तीर तरकस से निकलकर कमान पर चढ़कर छूट गया, उसे बीच मे नही लौटाया जा सकता। मेरी प्रतिज्ञा कठिनाई से पूरी होगी, यह मैं जानता हूं और इस बात की हाल के युद्ध मे पुष्टि भी हो चुकी है कि हाडा जाति वीरता मे हम लोगों से किसी प्रकार हीन नहीं है, फिर भी महाराणा लाखा की प्रतिज्ञा वास्तव मे प्रतिज्ञा है। वह पूर्ण होनी चाहिए।

नेपथ्य में गान

ये सागर मे रत्न निकाले। युग युग मे है गए संभाले।
इनसे दुनिया मे उजियाला। तोड़ मोतियों की मत माला।
ये छाती में छेद कराकर, एक हुए है हृदय मिलाकर।
इनमें व्यर्थ भेद क्यों डाला ? तोड़ मोतियो की मत माला।

[गाते गाते चारणी का प्रवेश।]

महाराणा : तुम कुछ गा रही थीं, चारणी? तुम संपूर्ण राजस्थान को एकता की शृंखला में बांधकर देश की स्वाधीनता के लिए कुछ करने का आदेश दे रही थीं? किंतु मैं तो उस शृंखला को तोड़ने जा रहा हूं। दो जातियों में जानी दुश्मनी पैदा करने जा रहा हूं।

चारणी : यह आप क्या कहते हैं, महाराणा?

अभयसिंह : चारणी, महाराणा ने प्रतिज्ञा की है कि जब तक वे बूंदी के गढ़ को जीत न लेंगे, अन्न-जल ग्रहण न करेंगे।

चारणी : दुर्भाग्य! (**कुछ सोचकर**) महाराणा, मैं ऐसा नहीं होने दूंगी। देश का कोई भी शुभचिंतक इस विद्वेष की आग को फैलने देना पसंद नहीं कर सकता।

अभयसिंह : किंतु महाराणा की प्रतिज्ञा तो पूरी होनी ही चाहिए।

चारणी : उसका एक ही उपाय है। वह यह कि यहां पर बूंदी का एक नकली दुर्ग बनाया जाए। महाराणा उसका विध्वंस करके अपनी प्रतिज्ञा पूरी कर लें। महाराणा, क्या आपको मेरा प्रस्ताव स्वीकार है।

महाराणा : अच्छा, अभी तो मैं नकली दुर्ग बनाकर उसका विध्वंस करके अपने व्रत का पालन करूंगा। किंतु हाड़ाओं को उनकी उद्दंडता का दंड दिए बिना मेरे मन को संतोष न होगा। सेनापति, नकली दुर्ग बनवाने का प्रबंध करें।

[सबका प्रस्थान। पट परिवर्तन।]

तीसरा दृश्य

[चित्तौड़ के निकट एक जंगली प्रदेश। नकली दुर्ग के मुख्य दरवाजे से महाराणा लाखा और सेनापति अभयसिंह का प्रवेश।]

अभयसिंह : आपने दुर्ग का निरीक्षण कर लिया? ठीक बन गया है न?

महाराणा : क्यों न बनता? निस्संदेह यह ठीक बूंदी दुर्ग की हू-ब-हू नकल है। अब इस पर चढ़ाई करने का खेल खेला जाए। इस मिट्टी के दुर्ग को मिट्टी में मिलाने से मेरी आत्मा को संतोष तो नहीं होगा लेकिन अपमान की वेदना में जो विवेकहीन प्रतिज्ञा मैंने कर डाली थी, उससे तो छुटकारा मिल ही जाएगा। उसके बाद फिर ठंडे दिमाग से सोचना होगा कि बूंदी को मेवाड़ की अधीनता स्वीकार करने के लिए किस

तरह बाध्य किया जाए।

अभयसिंह : निश्चय ही महाराज ! शीघ्र ही बूंदी के पठारों पर सिसौदिया का सिंहनाद होगा। अच्छा, अब हम लोग आज के रण की तैयारी करें।

महाराणा : किंतु यह रण होगा किससे ? इस दुर्ग में कोई तो हमारा पथ-प्रतिरोध करने वाला होना चाहिए।

अभयसिंह : हां, खेल में भी तो कुछ वास्तविकता आनी चाहिए। मैंने सोचा है, दुर्ग के भीतर अपने ही कुछ सैनिक रख दिए जाएंगे जो बंदूकों से हम लोगों पर छूछे वार करेंगे। कुछ घंटे ऐसा ही खेल होगा। फिर यह मिट्टी का दुर्ग मिट्टी में मिला दिया जाएगा। अच्छा, अब हम चलें।

[दोनों का प्रस्थान। दूसरी ओर से वीरसिंह का कुछ साथियों के साथ प्रवेश।]

वीरसिंह : मेरे बहादुर साथियो ! तुम देख रहे हो हमारे सामने यह कौन सी इमारत बनाई गई है ?

पहला साथी : हां, सरदार, यह हमारी जन्मभूमि बूंदी का दुर्ग है।

वीरसिंह : और तुम जानते हो कि महाराणा आज इस गढ़ को जीतकर अपनी प्रतिज्ञा पूरी करना चाहते हैं। किंतु क्या हम लोग अपनी जन्मभूमि का अपमान होने देंगे ? यह हमारे वंश के मान का मंदिर है। क्या हम इसे मिट्टी में मिलने देंगे ?

दूसरा साथी : किंतु यह तो नकली बूंदी है।

वीरसिंह : धिक्कार है तुम्हें। नकली बूंदी भी हमें प्राणों से अधिक प्रिय है। जिस जगह एक भी हाड़ा है, वहां बूंदी का अपमान आसानी से नहीं किया जा सकता। आज महाराणा आश्चर्य के साथ देखेंगे कि यह खेल केवल खेल ही नहीं रहेगा। यहां की चप्पा चप्पा भूमि सिसौदियों और हाड़ाओं के खून से लाल हो जाएगी।

तीसरा साथी : लेकिन सरदार, हम लोग महाराणा के नौकर हैं। क्या महाराणा के विरुद्ध तलवार उठाना हमारे लिए उचित है ? हमारा शरीर महाराणा के नमक से बना है। हमें उनकी इच्छा में व्याघात नहीं पहुंचाना चाहिए।

वीरसिंह : और जिस जन्मभूमि की धूल में खेलकर हम बड़े हुए हैं, उसका अपमान भी कैसे सहन किया जा सकता है ?

पहला साथी : निश्चय ही जहां बूंदी है, वहां पर हाड़ा है और जहां पर हाड़ा

हैं, वहां पर बूंदी है। कोई नकली बूंदी का भी अपमान नहीं कर सकता। जन्मभूमि हमें प्राणों से भी अधिक प्रिय है।

वीरसिंह : मेरे वीरो ! तुम अग्नि कुल के अंगारे हो। अपने वंश की आभा को क्षीण न होने देना। प्रतिज्ञा करो कि प्राणों के रहते हम इस नकली दुर्ग पर मेवाड़ की राजपताका को स्थापित न होने देंगे।

सब लोग : हम प्रतिज्ञा करते है कि प्राणों के रहते इस दुर्ग पर मेवाड़ का ध्वज न फहरने देंगे।

वीरसिंह : मुझे आप लोगों पर अभिमान है और बूंदी आप जैसे पुत्रों को पाकर फूली नहीं समाती। जिस बूंदी में ऐसे मान के धनी पैदा होते हैं, उस पर संसार आशीर्वाद के साथ फूल बरसा रहा है। चलो, हम दुर्ग रक्षा की तैयारी करें।

[सबका प्रस्थान। पट परिवर्तन।]

चौथा दृश्य

[स्थान—बूंदी के नकली दुर्ग का बंद द्वार। महाराणा लाखा और अभयसिंह का प्रवेश।]

महाराणा : सूर्य डूबने को आया। यह कैसी लज्जा की बात है कि हमारी सेना बूंदी के नकली दुर्ग पर अपना झंडा स्थापित करने में सफलता प्राप्त नहीं कर सकी ? वीरसिंह और उनके मुट्ठी भर साथी अभी तक वीरतापूर्वक लड़ रहे हैं।

अभयसिंह : हां महाराणा, हम तो समझते थे कि घड़ी-दो घड़ी में यह खेल खत्म हो जाएगा, लेकिन हमें छूछे वारों का मुकाबला करने के बजाय हाड़ाओं के अचूक निशानों का सामना करना पड़ा।

महाराणा : यह भी अच्छा हुआ कि हमारे इस खेल में भी कुछ वास्तविकता आ गई।

अभयसिंह : मैंने जब दुर्ग से अग्निवर्षा होती देखी तो मुझे कुछ आश्चर्य हुआ था। कुछ क्षणों के लिए सफेद झंडा फहरा कर मैंने युद्ध को रोक दिया था। उसके बाद मैं स्वयं दुर्ग में गया और वीरसिंह को उसके साहस के लिए प्रशंसा की, साथ ही उससे अनुरोध किया कि तुम व्यर्थ प्रयास में अपने प्राण न खोओ। तुम महाराणा के नौकर हो। तुम्हें उनके विरुद्ध हथियार न उठाने चाहिए। किंतु उसने उत्तर दिया कि महाराणा ने

हाड़ाओं को चुनौती दी है। हम इस चुनौती का उत्तर देने को मजबूर हैं। महाराणा यदि हमारे प्राण लेना चाहते हैं तो खुशी से ले लें। लेकिन हम इतने कायर और निष्प्राण नहीं हैं कि अपनी आंखों से बूंदी का अपमान होते हुए देखें। मेवाड़ में जब तक एक भी हाड़ा है, नकली बूंदी पर भी बूंदी की ही पताका फहराएगी।

महाराणा : निश्चय ही इन वीरों का जन्मभूमि के प्रति आदरभाव सराहनीय है। यह मैं जानता हूं कि इन लोगों के प्राणों की रक्षा का कोई उपाय नहीं। इतने बहुमूल्य प्राण लेकर भी मुझे प्रतिज्ञा पूरी करनी पड़ेगी। वह देखो, दुर्ग की उस दरार में खड़ा हुआ वीरसिंह कितनी फुर्ती से बाणवर्षा कर रहा है। अकेला ही हमारे सैकड़ों सैनिकों की टोली को आगे बढ़ने से रोके हुए है। धन्य हैं ऐसे वीर, धन्य है वह मां जिसने ऐसे वीर पुत्र को जन्म दिया। धन्य है वह भूमि जहां पर ऐसे सिंह पैदा होते हैं।

[जोर का धमाका और प्रकाश होता है]

महाराणा : अरे देखो अभयसिंह, गोले के वार से वीरसिंह के प्राण पखेरू उड़ गए। बूंदी के मतवाले सिपाही सदा के लिए सो गए। अब हम विजयश्री प्राप्त कर सके। जाओ, दुर्ग पर मेवाड़ की पताका फहराओ और वीरसिंह के शव को आदर के साथ यहां ले आओ।

[अभयसिंह का प्रस्थान]

महाराणा : आज इस विजय में मेरी सबसे बड़ी पराजय हुई है, व्यर्थ के दंभ ने आज कितने ही निर्दोष प्राणों की बलि ले ली।

[चारणी का प्रवेश]

चारणी : महाराणा, अब तो आपकी आत्मा को शांति मिल गई होगी। अब तो आपने अपने सिर के कलंक का टीका धो लिया। यह देखो बूंदी के दुर्ग पर मेवाड़ के सेनापति विजयपताका फहरा रहे हैं। वह सुनिए, मेवाड़ की सेना में विजय दुंदुभि बज रही है।

महाराणा : चारणी, क्यों पश्चाताप से विकल प्राणों को तुम और दुखी करती हो? न जाने किस बुरी सायत में मैंने बूंदी को अपने अधीन करने का निश्चय किया था। वीरसिंह की वीरता ने मेरे हृदय के द्वार खोल दिए हैं, मेरी आंखों पर से पर्दा हटा दिया है। मैं देखता हूं ऐसी वीर जाति को अधीन करने की

अभिलाषा करना पागलपन है।

चारणी : तो क्या महाराणा, अब भी मेवाड़ और बूंदी के हृदय मिलाने का कोई रास्ता नहीं निकल सकता?

[वीरसिंह के शव के साथ अभयसिंह का प्रवेश]

महाराणा : (शव के पास बैठते हुए) चारणी, इस शहीद के चरणों के पास बैठकर मैं अपने अपराध के लिए क्षमा मांगता हूं, किंतु क्या बूंदी के राव तथा हाड़ावंश का प्रत्येक राजपूत आज की इस दुर्घटना को भूल सकेगा?

[राव हेमू का प्रवेश]

राव हेमू : क्यों नहीं, महाराणा! हम युग युग से एक हैं और रहेंगे। आपको यह जानने की आवश्यकता थी कि राजपूतों में न कोई राजा है, न कोई महाराजा। सब देश, जाति और वंश की मान रक्षा के लिए प्राण देने वाले सैनिक हैं। हमारी तलवार अपने ही स्वजनों पर न उठनी चाहिए। बूंदी के हाड़ा सुख और दुख में सदा से चित्तौड़ के सिसौदियों के साथ रहे हैं और रहेंगे। हम सब राजपूत अग्नि के पुत्र है, हम सबके हृदय में एक ही ज्वाला जल रही है हम कैसे एक-दूसरे से पृथक हो सकते हैं। वीरसिंह के बलिदान ने हमें जन्मभूमि का मान करना सिखाया है।

महाराणा : निश्चय ही महाराव! हम संपूर्ण राजपूत जाति की ओर से इस अमर आत्मा के आगे अपना मस्तक झुकाएं।

[सब बैठकर वीरसिंह के शव के आगे झुकते हैं।]

पटाक्षेप

छींक

□ डा० रामकुमार वर्मा

पात्र

गायत्री : पंचम मिसिर की पत्नी   संपत : नौकर
पंचम मिसिर : मोटे पंडित   देवीदीन : दूधवाला

[पंचम मिसिर का घर। प्रातः का समय है। वे सो रहे हैं। उनकी पत्नी गायत्री उन्हें जगाने की चिंता में है। नेपथ्य में जोर से एक छींक होती है। दस सेकंड बाद दूसरी होती है।]

गायत्री : (**पंचम मिसिर को जगाते हुए**) अरे, आज क्या सोते ही रहोगे? सात बज गए, इतना दिन चढ़ आया।

[पंचम मिसिर आलस भरे स्वर में अंगड़ाई लेते हैं।]

कल कह रहे थे, मुझे यह काम करना है, वह काम करना है। सात सात बजे तक सोकर काम करोगे?

पंचम : (**जम्हाई लेकर अलसाए स्वर में**)

जय जय जय नटवर गिरधारी।
दिन भर राखो लाज हमारी॥

गायत्री : (**उसी स्वर में**) कुंभकरनजी की बलिहारी।

पंचम : (**अलसाए स्वर में**) एं, क्या कहा? सुन नहीं पाया। हां, तुम भी मेरे साथ प्रार्थना किया करो। (**फिर अंगड़ाई लेकर**) ओह! क्या दिन निकल आया? आज बड़ी जल्दी सूरज भगवान निकल आए।

गायत्री : सूरज भगवान तो अपने समय पर ही निकलते हैं। तुम्हारी नींद तो जैसे कुंभकरन की धरोहर है, खुलने का नाम ही नहीं लेती।

पंचम : (**चैतन्य होकर**) शिव! शिव! धीरे धीरे उठ रहा हूं, भाई। जरा उठने दो। आज जरा कुछ नींद लग गई, तो सबेरे सबेरे तुम सत्यनारायण की कथा बाचने लगी। अभी उठता हूं, हाथ-मुंह धोता हूं, फिर जरा मुहूर्त देखकर निकलूंगा, तो देख लेना तुम्हारे द्वार पर सोना न बरसा दूं तो मेरा पंचम मिसिर नाम नहीं। (**सहसा**) अरे हां, त्रिवेनी की मां! मैं तो कहना ही

भूल गया। रात में ऐसा बढ़िया सपना देखा है कि बस...उछल पड़ो।

गायत्री : क्या उछल पड़ूं ? यही कहोगे कि सपने में सुनार की दुकान पर गया था।

पंचम : (**प्रसन्नता से**) अरे त्रिवेनी की मां ! सुनार की दुकान क्या है उसके सामने। मैंने देखा कि. .अहह, क्या देखा कि बस देखते ही रहो, तुम मुझे न जगाती तो हाय, हाय, मैं कहां से कहां पहुंच जाता !

गायत्री : चारपाई पर पड़े पड़े ?

पंचम : अरे, हंसी समझती हो, त्रिवेनी की मा। अरे, मैंने वह देखा कि बड़े बड़े ऋषि-मुनि भी नही देख सकते।

गायत्री : सो क्या देखा ? मैं भी तो सुनू।

पंचम : सुनाऊं ? मैंने देखे हैं, विष्णु भगवान। अहह ! क्या सीन था— विष्णु भगवान शेषनाग पर सो रहे हैं। साक्षात लक्ष्मीजी उनका पैर दबा रही हैं। तो, मैं दूसरी तरफ से पहुंचा और दूसरा पैर दबाने लगा। विष्णु भगवान ने मेरी तरफ देखा और पूछा : 'क्या चाहते हो, पंचम मिसिर ?' मैंने कहा : 'हे दीन-बंधु ! दीनों के रखवाले। मैं यही चाहता हूं कि लाला हरि-किशनदास की लड़की जानकी की शादी मनोहरलाल के लड़के से लगा दू।'

गायत्री : वाह, तुमने विष्णु भगवान से क्या मांगा ? अरे, सोना, चांदी कुछ मांगते !

पंचम : अरे त्रिवेनी की मा, हरिकिशनदास की लड़की जानकी की शादी तो एक बहाना है बहाना ! इस शादी के लगाने से घर में इतनी लक्ष्मी आएगी कि दो साल बाद त्रिवेनी की शादी कर लेना।

गायत्री : अच्छा, तो विष्णु भगवान ने क्या कहा ?

पचम : उन्होंने गणेशजी को बुलाया और उनके चूहे पर मुझे बिठ-लाया।

गायत्री : चूहे पर बिठलाया ?

पचम : हा, हां, साक्षात चूहे पर बिठलाया। गणेशजी का चूहा कोई मामूली चूहा तो नहीं था ? वह था एक बड़े हाथी के बरा-बर...जैसा हाथी हरिकिशनदास का है न !

गायत्री : फिर ?

पंचम : फिर जैसे ही मैं चढ़ने को हुआ लक्ष्मीजी ने बड़े जोर से छींका।
गायत्री : लक्ष्मीजी ने ?
पंचम : हां, हां, साक्षात लक्ष्मीजी ने मुंह फेरकर ऐसे जोर से छींका कि...
गायत्री : अरे, वो तो संपत ने छींका था, जब तुम सो रहे थे।
पंचम : संपत ने ? नहीं, मुझे तो ऐसा मालूम हुआ कि साक्षात लक्ष्मीजी ने छींका था।
गायत्री : नहीं; संपत ने छींका था।
पंचम : इस संपत को छींकने की क्या जरूरत पड़ गई ? मेरे जगने में छींके तो छींके, मेरे सोते में भी छींकता है ?
गायत्री : छींक आई होगी।
पंचम : ऐसे कैसे आ गई होगी ? छींक अच्छी नहीं होती, त्रिवेनी की मां, उससे बड़े बड़े राज उलट जाते हैं।
गायत्री : पर खैर, तुम्हारा राज तो नहीं उलटा ?
पंचम : उलटे या न उलटे, पर उसे देख लूंगा, हां।
गायत्री : अच्छा तो बाद में देख लेना, अभी तो उठो।
पंचम : देखो त्रिवेनी की मां। मैंने रात में पंचांग देख लिया है। हरिकिशनदास के यहां जाने का मुहूर्त नौ बजकर पंद्रह मिनट पर है। अभी काफी देर है। पर मैं इस गधे संपत को देखना चाहता हूं। (पुकारते हुए) संपत ! संपत !
संपत : (बाहर से) जी, पंडितजी।

[प्रवेश]

पंचम : क्यों रे, कल मैंने तुझसे क्या काम करने को कहा था ?
संपत : पंडितजी, आपने कहा था कि चूहेदानी में नेवला पकड़ कर रख लेना।
पंचम : तो चाहे मुझे सपने में चूहा दिख जाए, लेकिन चूहेदानी में तुझसे नेवला पकड़ते नहीं बनेगा।
गायत्री : चूहेदानी में नेवला ?
पंचम : हां, चूहेदानी में नेवला। नेवला शकुन की चीज है। हमारे शास्त्रों में लिखा है कि घर से चलते समय अच्छा शकुन होना चाहिए। नेवले का देखना अच्छा शकुन माना जाता है। मैंने संपत से कहा कि चूहेदानी में नेवला पकड़ लेना और चलते वक्त मुझे दिखा देना।
गायत्री : सगुन का अच्छा इंतजाम किया आपने !

पंचम : तो क्यों रे, तूने चूहेदानी में नेवला पकड़ा ?

संपत : जी...जी...नेवला आया ही नहीं। मैंने कई बार पिंजरे में रोटी डाल डालकर नेवले को दिखाया, पर वह आया ही नहीं।

पंचम : तो तेरी तरह नेवले के दिमाग भी चढ़ गए हैं ? कमबख्त समझते हैं कि उनका देखना शकुन है, तो नखरे दिखलाते हैं। पंचांग में इन कमबख्तों का दीखना अपशकुन माना जाए, तब तो बात है।

संपत : ऐसा जरूर कर दीजिए, पंडितजी।

पंचम : (चिढ़ते हुए) ऐसा जरूर कर दीजिए, पंडितजी। और हां, तूने देवीदीन ग्वाले से कह दिया है कि जब मैं घर से चलूं तो गाय और बछड़ा लेकर मेरे सामने दूध दुह दे ?

संपत : देवीदीन से कह तो दिया है।

गायत्री : तो क्या यह भी कोई सगुन है ?

पंचम : पंचम मिसिर की पत्नी होकर इतना भी नहीं जानती कि यह कार्यसिद्धि का सबसे बड़ा शकुन है ? और हां, तुमने दही मंगा लिया है ?

गायत्री : वह तो घर में ही है।

पंचम : बस, तो ठीक है, मैं उसे खाकर जाऊंगा। संपत, बाहर जाकर देख कि अभी ग्वाला तो नहीं आया ?

संपत : बहुत अच्छा, पंडितजी। [प्रस्थान]

पंचम : बात यह है, त्रिवेनी की मां, कि हमारे शास्त्रों और पुराणों में जो कुछ लिखा है, वह झूठ थोड़े ही हो सकता है।

संपत : (आकर) पंडितजी। अभी देवीदीन नहीं आया।

पंचम : जब आए तब मुझे खबर देना, समझे ? अब मैं उठता हूं।

[उठते ही संपत जोर से छींकता है।]

पंचम : (उबलकर) इस गधे ने फिर छींका। क्यों बे संपत, लगाऊं दो तमाचे ?

संपत : मेरा कोई कसूर नहीं, पंडितजी।

पंचम : तो किसका है ? मेरा है ? मैंने छींका ? देखो त्रिवेनी की मा। मैं उठा और इसने छींका। यह संपत ऐन मौके पर छींकता है, मैं इस गधे की नाक काट डालूंगा, हां। गणेशजी की सूंड़ की तरह नाक बढ़ा ली है। जब देखो तब छींक ! जब देखो तब छींक !

गायत्री : (हंसकर) कहीं गणेशजी की नाक छींकने से तो नहीं बढ़ गई है।

पंचम : ऐसी बात कहकर तुम मेरा गुस्सा दूर करना चाहती हो ? मैं जानता हूं। लेकिन यह छींक अच्छी नहीं होती, मैं बता देता हूं।

गायत्री : तो मैं यह जानना चाहती हूं कि छींक की बात किस पुराण में लिखी है ? जा रे संपत, बाहर जा।

[संपत बाहर जाता है]

पंचम : मैं जानता हूं, तुम उसको बचाना चाहती हो।

गायत्री : तो मैं यह जानना चाहती हूं कि छींक की बात किस पुराण में लिखी है ?

पंचम : छींक की बात जलपुराण में लिखी है।

गायत्री : जलपुराण में ?

पंचम : क्यों, क्या तुम्हें शक है ? अरे, हमारे यहां बहुत से पुराण हैं; अग्निपुराण, वायुपुराण है तो एक जलपुराण भी है।

गायत्री : पर जलपुराण का नाम तो कभी सुना नहीं।

पंचम : तो सुना तुमने किस किस का नाम है ? अरे इतना नहीं समझती कि जब तीन लोक के जानने वाले हमारे ऋषि-मुनियों ने अग्निपुराण लिखा, वायुपुराण लिखा तो क्या जलपुराण न लिखा होगा ?

गायत्री : नहीं, जरूर लिखा होगा, पर जलपुराण का छींक से क्या संबंध ?

पंचम : अरे जल के देवता कौन हैं ? वरुण भगवान। और वरुण भगवान का स्थान है नाक, इसीलिए छींक में नाक से पानी निकलता है, इसीलिए हमारे ऋषि-मुनियों ने छींक का वर्णन जलपुराण में किया है।

गायत्री : ठीक है। अब बात समझ में आई। और पंडित आपकी तरह न समझा पाते होंगे।

पंचम : किसी ने इतना पढ़ा भी है, जितना मैंने पढ़ा है ?

गायत्री : तो उठो, फिर जल्दी से तैयार हो जाओ। सेठजी के यहां जाने का समय हो रहा है।

पंचम : अच्छी बात है, उठता हूं।

[बाहर से देवीदीन पुकारता है।]

देवीदीन : पंडितजी महाराज !

पंचम : अब यह कौन आ गया? आज उठना भाग्य में नहीं बदा है। (**जोर से**) कौन है?

देवीदीन : मैं, पंडितजी महाराज! मैं, देवीदीन। 'संपत भैया कहे रहे कि भिनसार गइया और बछवा लेके हमारे घर के समनवां दुहि जायो। कौनो हमार गइया कानी हौद में कई दीन है। अब गइया तो आइ नहीं सकत। आज्ञा होई तो भैंस लाइ के दुहि देई। पर आपको सगर दूध लेइ पड़ी।

पंचम : नहीं, उसे लाने को जरूरत नहीं। आज दूध नहीं लगेगा। (**स्वगत**) अच्छा शकुन रहा, गाय के बदले भैंस।

देवीदीन : जैसी मरजी, पालागी। (**स्वगत**) ऐसे ने पंडितजी बना है। आपन टेट में रुपैया धरे होइ हैं, पर गरीब की मदद नाहीं कइ सकत हैं।

पंचम : क्या कह रहे हो, देवीदीन?

देवीदीन : कुछ नहीं पंडितजी (**जोर से छींकता है**) ई छीं...

पंचम : सुबह सुबह छींकता क्यों है?

देवीदीन : का बताई पंडितजी। आपके बगलिया मां कौनौ मरिचा पिसाई रहा है। ओईसे जौने का देखो तौन छींकत है। अब ही संपत भैयो छींकत रहे। आ क् छीं।

[देवीदीन छोकता है। संपत का दौड़ते हुए प्रवेश]

संपत : पंडितजी। [पंडितजी कहते ही उसको जोर से छींक आती है।]

पंचम : ठहर, आज मैं तेरी छीक निकालता हूं। अरे, मुझे भी छोक आ रही है। एं, ये छीं...आक् छी। आक्...छीं।

पर्दा गिरता है

तैमूर की हार

□ डा० रामकुमार वर्मा

पात्र

तैमूर : आक्रमणकारी
जफरअली : तैमूर का सरदार
अलीबेग, मुबारक : तैमूर के सिपाही
कल्याणी : एक ग्रामीण स्त्री
बलकरन : कल्याणी का पुत्र
तीन ग्रामीण

कल्याणी : **(गुनगुनाती हुई गाती है)**—
अब मत जाना तुम दूर...दूर।
उठ रही है पश्चिम में धूर,
उठ रही है पश्चिम में धूर।

बलकरन : **(चाकू तेज करते हुए)** यह तुम क्या गुनगुना रही हो, मां ? इस पत्थर पर मेरा चाकू तेज नहीं हो रहा है।

कल्याणी : क्या तेरा चाकू भी मेरा गाना सुन रहा है ? **(पास आकर मोढ़े पर बैठते हुए)** पर आज चाकू तेज करने की तुझे क्या सूझी ? आज तो तेरी वर्षगांठ है।

बलकरन : वर्षगांठ ! मेरी वर्षगांठ पर तो हथियारों की पूजा होनी चाहिए, मां ! पूजा ! हां, तो मां, क्या यह वर्षगांठ वैसी ही होगी जैसी पारसाल हुई थी ? **(चाकू रोक देता है)**

कल्याणी : हां, बिलकुल वैसी ही। इस वर्षगांठ पर तू पूरे बारह वर्ष का हुआ। बेटा, मैं तो आशीर्वाद देती हूं कि इसी तरह तेरी बहुत सी वर्षगांठें मनाई जाएं। तू दिन दूना, रात चौगुना बढ़े।

बलकरन : इसीलिए तू गाना गा रही थी। **(फिर चाकू तेज करता है)** मां, कैसा है वह गाना ?

कल्याणी : डर का गाना है। अब तो वह जमाना बीत गया। बहुत बरस हुए, जब महमूद गजनवी आया था।

बलकरन : अच्छा !

कल्याणी : कहते हैं वह गजनी से आया था। उसने सोमनाथ का मंदिर तोड़ा और बहुत से आदमियों का खून बहाया। फिर बहुत-सा

धन लेकर वह यहां से चला गया। बेटा आज तो तेरी वर्ष-गांठ है।

बलकरन : तो, सब कुछ भूल जाओ, मां ! बतलाओ, आज वर्षगांठ में क्या क्या करोगी ?

कल्याणी : क्या करूंगी ? अपने प्यारे बेटे को नहलाऊंगी, चंदन लगाऊंगी, फूलों की माला पहनाऊंगी। फिर, आज मैंने तेरे लिए बहुत अच्छी अच्छी मिठाइयां बनाई हैं। देख, उस कोने में रखी हुई हैं। मिठाइयों के साथ खीर खिलाऊंगी, तुझे आशीर्वाद दूंगी। बस, दूध भर आ जाए। खीर बनने में देर ही क्या लगती है ? पानी उबल ही रहा है।

बलकरन : अभी दूध नहीं आया ?

कल्याणी : सूरज चढ़ आया, अभी तक सुजान दूध लाया ही नहीं, जाने क्यों नहीं लाया।

बलकरन : मैं ले आऊं ?

कल्याणी : सुजान आता होगा, बेटा तू कहां जाएगा ?

[शीघ्रता से प्रस्थान]

कल्याणी : (बलकरन के जाने की दिशा की ओर देखती हुई) मेरा भोला बच्चा बलकरन ! अभी से कैसी बातें करता है ! (संतोष से) बलकरन, मेरा बेटा।

[फिर अंगीठी के पास आकर आग ठीक करती है। थोड़ी देर तक स्तब्धता रहती है। फिर भयानक शोर और भगदड़। कल्याणी झिझककर खिड़की से बाहर देखने लगती है।]

हिंदू ग्रामीण : (घबराए हुए स्वर में) तुरक आ गया ! तुरक आ गया !! भागो, भागो...तुरक आ गया।

कल्याणी : (आगे बढ़कर दृढ़ता से) पागल हो गए हो क्या ? तुरक कहां से आ गया।

[दूसरे ग्रामीण का प्रवेश]

मुसलमान ग्रा० : बहन, भाग चलो ! जल्दी, जल्दी ! वह तैमूर आ गया ! मैंने अपनी आंखों से देखा है। लूटते हुए आ रहे हैं वे लोग। हम लोग मरे...चलो बहन !

कल्याणी : अरे कैसा तैमूर ! कहां का तैमूर !!

मुसलमान ग्रा० : (नेपथ्य में देखते हुए) तुम नहीं चलोगी ? वह आया ! वह आया !!

[फिर भगदड़ की आवाज। चीख और पुकार। तीसरे ग्रामीण का प्रवेश।]

तीसरा हिंदू ग्रा० : बहन कल्याणी, सब कुछ छोड़कर जल्दी से भागो, तभी जान बचेगी। जंगल में छिप जाओ, नहीं तो घर के तलघर में ही चलो। चलो मेरे साथ...समय नहीं है।

कल्याणी : (घबराहट से) बलकरन ! मेरा बलकरन तो अभी नहीं आया। उसे छोड़कर मैं कहीं भी नहीं जाऊंगी।

तीसरा ग्रामीण : कहां गया बलकरन ?

कल्याणी : (घबराहट से) वह...वह...दूध लेने गया है। सुजान के घर।

तीसरा ग्रामीण : सुजान के घर ? तब उसका कुछ नहीं बिगड़ेगा। सुजान का घर खास रास्ते से हटकर दूर कोने में है। वे लोग सीधे रास्ते ही चले आ रहे हैं। तुम तलघर में छिप जाओ।

[तीन सैनिक घर में घुस आते हैं। उनके हाथों में तलवार है। वे घर के सामान को तोड़ते-फोड़ते जाते हैं।]

जफर कोई नहीं ! कमबख्त सब भाग गए।

पहला तख्त के नीचे भी कोई नहीं है।

जफर : मुबारक ! इस वक्त आदमियों को कत्ल करने का हमारा उतना मकसद नहीं है, जितना सोना-चांदी लूटने का है। इस घर में देखो कहीं है ?

मुबारक : (देखते हुए) कहीं कुछ नहीं है, सरदार ! मामूली सी झोंपड़ी है। इसमें सोना-चांदी कहां ?

अलीबेग कुछ बर्तन मालूम होते हैं, सरदार ! (बर्तनों के पास आकर उन्हें खोलता है) सरदार है, यह है।

मुबारक : (अलीबेग के पास आकर) सरदार ! बढ़िया खाना, तरह तरह की मिठाइयां ! ओह (छूकर) बिलकुल ताजा ! गरम !

जफर : (हाथ से छूकर) हां गरम मिठाइयां हैं। लो, तुम लोग भी तो भूखे होगे।

मुबारक : सरदार नोश फरमाएं।

जफर : मैं खाऊंगा। लो, तुम लो। (मुबारक को देता है। वह प्रसन्न होकर लेता है) अच्छी मिठाइयां हैं। लो अलीबेग, तुम भी लो !

नेपथ्य से—(तीव्र आवाज से) चुप रहो, कमबख्तो !

[तैमूरलंग का प्रवेश। वह लंगड़ाता हुआ आगे बढ़ता है। उसे देखते ही सब चौंक पड़ते हैं, मिठाइयां जमीन

पर फेंककर फौजी ढंग से तनकर खड़े हो जाते हैं। सन्नाटा छा जाता है, तैमूरलंग बारी बारी से तीनों को घूरता हुआ आगे बढ़ता है।]

तैमूर : (**तीव्र स्वर में**) मैंने अफगानिस्तान के बाद हिंदुस्तान की ओर रुख इसलिए नहीं किया था कि मेरे सिपाही दौलत लूटने के बदले खाना ढूंढ़ते फिरें। मैंने क्या हुक्म दिया था, सरदार ?

जफर : (**सैनिक ढंग से**) बुलंद इकबाल ने हुक्म फरमाया था कि आज शाम तक अमरकोट पहुंच जाना है।

मुबारक : हम लोग आलीजाह की माफी के ख्वास्तगार हैं। माफी अता फरमाई जाए।

तैमूर : हरगिज नहीं ! गाजी तैमूर कुसूर को माफ करना नहीं जानता। सरदार, तुमने जो हुक्मउदूली की है, उसकी सजा तुम्हें मिलेगी। मैं तुम्हारा नाम...तुम्हारा नाम...

जफर : जफरअली।

तैमूर : जफरअली ! आज शाम को तुम्हारी सजा तजबीज की जाएगी। अभी मैं तुम्हें तुम्हारे मरतबे से खारिज करता हूं, समझे ?

जफर : बुलंद इकबाल का हुक्म !

तैमूर : जाओ, शाम तक अमरकोट पहुंचने का मेरा हुक्म पूरा हो। (**तीव्रता से**) जाओ !

[तीनों सैनिकों का शीघ्रता से प्रस्थान और बलकरन का दूध लिए हुए प्रवेश]

बलकरन : (**पुकारते हुए**) मां ! मां ! मैं यह दूध ले आया।

तैमूर : (**चौंककर**) दूध ?

बलकरन : (**उजाड़ घर को देखकर चौंकते हुए**) यह सब क्या ? (**तैमूर को देखकर**) ऐं, तुम कौन ? (**पुकारता है**) मां...मां...! (**कुछ उत्तर न पाकर**) मेरी मां कहां है ? (**तैमूर गौर से बलकरन को देखता है**) इस तरह मेरे...घर में घुस आने वाले तुम कौन हो ?

तैमूर : (**जोर से**) खामोश। गाजी तैमूर से यह नाचीज सवाल करता है कि तुम कौन हो ? कमबख्त। अगर बात पूछने की तमीज नहीं है तो खामोश रहो। लेकिन ठहर...वह दूध इधर ला इस वक्त खुदा ने मेरे लिए भेजा है।

बलकरन : यह दूध...यह मेरी वर्षगांठ के लिए है।

तैमूर : साफ जबान में बात कर, जो समझ में आए। सामने दूध

हाजिर कर (**बलकरन से छीनकर जोर से अट्टहास करता है**) दूध मेरा है कि नहीं। अब तुझे इस तलवार से काट दूं?

बलकरन : (**हिचकते हुए**) क्या...क्या तुम मेरा खून बहाना चाहते हो? मेरी मां यही कहती थी।

तैमूर : तू बड़ा निडर मालूम होता है। सामने आ। मेरी तलवार से कटने का फख्र हासिल कर।

बलकरन : मेरे पास सिर्फ एक चाकू है। मेरे हाथ में भी एक तलवार दो।

तैमूर : ओफ ओह! तू मुझसे दो हाथ लड़ने का हौसला भी रखता है। अच्छा! पहले दूध पिऊंगा। गला सूख रहा है।

[तख्त पर तलवार रखकर दोनों हाथों मे दूध का बर्तन मुंह में उलट देता है। बलकरन दौड़कर तैमूर की तलवार उठा लेता है।]

तैमूर : (**सहमा**) मेरी तलवार...

बलकरन : तुम्हारी तलवार अब मेरे हाथ में है। अब तुम मुझसे लड़ सकते हो, सामने आओ।

तैमूर : (**दुहराकर**) सामने आओ? शाबाश! लेकिन मेरी तलवार तुमसे संभल नहीं सकेगी, बच्चे इधर ला।

बलकरन : जैसे दूध छीन लिया था वैसे तलवार भी छीन लो।

तैमूर : तो अब तुझे ज्यादा देर तक जिंदा नहीं रखूंगा। (**पैंतरा बदलकर तलवार छीन लेता है**) यह रही मेरी तलवार।

बलकरन : छीन ली! लेकिन यह बहादुरी नहीं है। मेरे पास चाकू है। उसी से लड़ूंगा।

तैमूर : चाकू से लड़ेगा? चाकू से। (**अट्टहास करता है**) ह ह ह ह ह!

बलकरन : हां! थोड़ी देर पहले मैंने इसे तेज किया है। देखो, यह कितना तेज है। मेरी अंगुली से खून निकाल सकता है।

[अंगुली में चुभोकर खून की बूंदें दिखलाता है।]

तैमूर : शाबाश! तैमूर के दिल में रहम नहीं है लेकिन तेरी बातें सुनकर मैं तेरी जान बख्शता हूं और तेरी एक मुराद पूरी कर सकता हूं।

बलकरन : मुझे कुछ नहीं चाहिए।

तैमूर : नहीं, तू मेरा छोटा सा बहादुर दोस्त है, चाकूवाला और इस हैसियत से तेरा मुझ पर हक है।

बलकरन : तो मेरी मां कहां है?

तैमूर : मैं नहीं जानता! मेरे सिपाहियों ने तेरी मां को कत्ल भी न

किया होगा, क्यों? उनकी तलवारों पर खून का एक भी धब्बा नहीं था।

बलकरन : आप मेरी मुराद पूरी करेंगे, तो फिर आपसे मैं यही चाहता हूं कि आप हमारे गांव से बाहर चले जाएं।

तैमूर : मंजूर! मैं दूसरे गांव जाऊंगा। अपने छोटे बहादुर दोस्त की मुराद पूरी करूंगा। तेरा दूध और चाकू मुझे हमेशा याद रहेगा। तैमूर खूंखार है लेकिन बहादुरी को सलाम करता है। बहादुर बच्चे को तैमूर का सलाम।

[फौजी ढंग से सलाम करता है। शीघ्रता से प्रस्थान]

बलकरन : (उसके जाने की दिशा में देखता हुआ) तैमूर...बहादुरी को सलाम करता है।

[शीघ्रता से कल्याणी का प्रवेश। वह अतिशीघ्रता से बलकरन को हृदय से लगा लेती है।]

कल्याणी : बेटा...बेटा...बलकरन। (सिसकने लगती है)

बलकरन : ऐं! मां तू रोती क्यों है? तू कहां थी?

कल्याणी : बेटा, तैमूर के सिपाही आए थे। उनसे बचाने के लिए ठाकुर दादा मुझे तलघर में खींच ले गए थे। तुझे तो कुछ नहीं हुआ बेटा? कहीं चोट तो नहीं आई? देखूं (गौर से बलकरन के शरीर को देखती है। चीखकर) ओह, यह खून?

बलकरन : उसने नहीं निकाला मैंने ही अंगुली चीरकर गिराया है।

कल्याणी : (घबराकर) तेरी अंगुली से खून तो अभी तक निकल रहा है, बेटा।

बलकरन : उसकी कुछ चिंता नहीं है, मां। तैमूर कहता था—तेरा चाकू मेरी तलवार से भी तेज निकला।

कल्याणी : क्या तूने चाकू से उस पर वार किया था?

बलकरन : नहीं, मां। मैं तो लड़ना चाहता था, पर वही मीठी मीठी बातें करने लगा। इस तरह चलता था (लंगड़ाकर चलता है और हाथ फैलाकर कहता है) तैमूर खूंखार है, लेकिन बहादुरी को सलाम करता है। बहादुर बच्चे को तैमूर का सलाम।

[फौजी ढंग से सलाम करता है]

कल्याणी : (आश्चर्य से, प्रसन्नता से) वाह, तू तो बिलकुल तैमूर ही बन गया।

बलकरन : मैं लंगड़ा नहीं बनना चाहता, मां।

कल्याणी : (हंसकर) हां, लंगड़ा कभी न बने, तू सब तरह से फूले-फले।

तेरी उमर दिन दूनी रात चौगुनी हो। भगवान को हजार-हजार धन्यवाद है कि उसने मेरे बच्चे की तैमूर से रक्षा की।

बलकरन : यह सब तेरा आशीर्वाद है, मां।

कल्याणी : हां, बेटा, आज तेरी वर्षगांठ है न। (चारों तरफ देखकर) तुरक के सिपाहियों ने सारा घर तोड़-फोड़ डाला। तेरे लिए मैंने कितनी अच्छी मिठाइयां बनाई थीं। सब नष्ट हो गईं। अब तेरी वर्षगांठ कैसे मनाऊं ?

बलकरन : अपना आशीर्वाद भर दे दे, मां, और...

कल्याणी : और क्या ?

बलकरन : और, तू चंदन लगाने के लिए कहती थी, न ! मेरी अंगुली से खून का रक्त-चंदन बना ले।

कल्याणी : धन्य मेरे लाल। (हृदय से लगाती है) घर घर में ऐसे लाल हों।

पर्दा गिरता है

(बालभारती, म० प्र० से)

अशोक का शस्त्र-त्याग

☐ बंशीधर श्रीवास्तव

पात्र

अशोक	पद्मा
द्वारपाल	बौद्ध भिक्षु
संवाददाता	सैनिक

पहला दृश्य

[एक मैदान में मगध के सैनिकों के शिविर लगे हैं। बीच में मगध की पताका फहरा रही है। पताका के पास ही महाराज अशोक का शिविर है। संध्या बीत चुकी है। आकाश में तारे चमकने लगे हैं। शिविरों में दीपक जल गए हैं। अपने शिविर में अशोक अकेले ठहर रहे हैं। उनके मुख पर चिंता की छाया है। वे कुछ सोचते हुए आसन पर बैठ जाते हैं।]

अशोक : (**स्वतः**) आज चार साल से यह युद्ध हो रहा है और कलिंग आज भी जीता नहीं जा सका है। दोनों ओर के लाखों आदमी मारे गए हैं, लाखों घायल हुए हैं। पर हम आज भी असफल हैं। क्या होगा इसका परिणाम ?

द्वारपाल : (**सिर झुकाकर**) राजन् ! संवाददाता आना चाहता है।

अशोक : आने दो।

संवाददाता : (**प्रवेश कर**) महाराज अशोक की जय हो ! शुभ संवाद है। गुप्तचर समाचार लाया है कि कलिंग के महाराज लड़ाई में मारे गए हैं।

अशोक : (**प्रसन्नतापूर्वक**) मारे गए हैं ? तो मगध की विजय हुई है ! कलिंग जीत लिया गया है !

[संवाददाता चुप रहता है]

अशोक : बोलते क्यों नहीं हो तुम ? चुप क्यों हो ?

संवाददाता : (**धीरे से**) बोलूं क्या महाराज ! कलिंग दुर्ग के फाटक आज भी बंद हैं। फिर किस मुंह से कहूं कि कलिंग जीत लिया गया !

अशोक : (**उत्तेजित होकर**) कलिंग के फाटक आज भी बंद हैं ?

संवाददाता : हां महाराज ! कलिंग के फाटक आज भी बंद हैं।

अशोक : (**उत्तेजित होकर खड़े होते हुए**) बंद हैं तो खुल जाएंगे। जाओ

जाकर सेनापति से कह दो कि कल सेना का संचालन मैं स्वयं करूंगा। कल या तो कलिंग के दुर्ग के फाटक खुल जाएंगे या मगध की सेना ही वापस चली जाएगी। जाओ (**हाथ से जाने का संकेत करते हैं**)।

दूसरा दृश्य

[दूसरे दिन प्रातःकाल का समय। शस्त्र-सज्जित अशोक खड़े हैं। उनके पास उनका सेनापति है। सामने कलिंग दुर्ग है, जिसके फाटक बंद हैं।]

अशोक : मेरे वीर सैनिको! आज चार साल से युद्ध हो रहा है, फिर भी हम इस कलिंग को जीत नहीं पाए हैं। उसके किसी दुर्ग पर मगध की पताका नहीं फहरा रही है। कलिंग के महाराज मारे गए हैं। उनके सेनापति पहले ही कैद हो चुके हैं, फिर भी, कलिंग आत्मसमर्पण नहीं कर रहा है। आओ, आज हम अपनी मातृभूमि की शपथ लेकर प्रण करें कि या तो हम कलिंग के दुर्ग पर अधिकार कर लेंगे या सदा के लिए मृत्यु की गोद में सो जाएंगे।

सब सैनिक : (**तलवार खींचकर**) मगध की जय! महाराज अशोक की जय!!

[सहसा दुर्ग का फाटक खुल जाता है। सब आश्चर्य से उधर देखने लगते हैं। उनकी तलवारें खिंची की खिंची रह जाती हैं। शस्त्र-सज्जित स्त्रियों की विशाल सेना फाटक से बाहर निकलने लगती है। सेना के आगे पुरुष-वेश में एक वीरांगना है, जो सैनिक के वेश में साक्षात चंडी सी दिखाई देती है। यह कलिंग महाराज की लड़की पद्मा है। स्त्रियों की सेना अशोक की सेना से कुछ दूरी पर रुक जाती है। अशोक के सिपाही मंत्र-मुग्ध से देखते रह जाते हैं। अशोक भी चकित रह जाते हैं।]

पद्मा : (**आगे बढ़कर अपनी सेना से**) बहिनो! तुम वीरकन्या, वीर-भगिनी और वीरपत्नी हो। मुझे तुमसे कुछ नहीं कहना है। जिस सेना ने तुम्हारे पिता, भाई, पुत्र और पति की हत्या की है, वह तुम्हारे सामने खड़ी है। आज उसी से तुम्हें लोहा लेना है। तुम प्रण करो कि जननी जन्मभूमि को पराधीन होते देखने

के पहले तुम सदा के लिए अपनी आंखें बंद कर लोगी।

अशोक : (स्वतः) यह कौन है? क्या साक्षात दुर्गा कलिंग की रक्षा करने के लिए युद्धभूमि में उतर-आई हैं? शेष सैनिक भी सभी स्त्रियां हैं। क्या स्त्रियों से भी युद्ध करना होगा? क्या अशोक को स्त्रियों का भी वध करना पड़ेगा? ना! ना! मैं स्त्रीवध नहीं करूंगा। मुझे विजय नहीं चाहिए। मैं यह पाप नहीं करूंगा। मैं शस्त्र नहीं चलाऊंगा। (प्रकट) सैनिको, स्त्रियों पर हाथ न उठाना। (आगे बढ़कर) तुम कौन हो, देवी?

पद्मा : मैं कलिंग महाराज की कन्या हूं। मैं हत्यारे अशोक की सेना से लड़ने आई हूं। जब तक मैं हूं, मेरी ये वीरांगनाएं हैं, कलिंग के भीतर कोई पैर नहीं रख सकता। कहां है अशोक? कहां है मेरे पिता का हत्यारा? मैं उससे द्वंद्व युद्ध करना चाहती हूं।

अशोक : अशोक तो मैं ही हूं, राजकुमारी। दोषी मैं ही हूं। परंतु तुम स्त्री हो, तुम्हारी सेना भी स्त्रियों की है। मैं स्त्रियों पर शस्त्र नहीं चलाऊंगा।

पद्मा : क्यों महाराज?

अशोक : शास्त्र की आज्ञा है, राजकुमारी।

पद्मा : और शास्त्र की आज्ञा है कि तुम निरपराधियों की हत्या करो? शास्त्र की आज्ञा है कि तुम अपनी विजय लालसा पूरी करने के लिए लाखों माताओं की गोद सूनी कर दो? लाखों स्त्रियों की मांग का सिंदूर पोंछ दो? फूंक दो उस शास्त्र को जो तुम्हें यह सिखाता है। मैं तुमसे शास्त्र सीखने नहीं आई हूं, शस्त्रों से युद्ध करने आई हूं। तुम हत्यारे हो, मैं अपनी बलि चढ़ाकर तुम्हारी खून की प्यास बुझाने आई हूं। अपने सिपाहियों से कहो कि तलवार उठाएं। कलिंग की स्त्रियां तुमसे कुछ नहीं चाहतीं, केवल युद्ध चाहती हैं।

[अशोक सिर झुका लेते हैं]

पद्मा : क्यों, सिर क्यों झुका लिया, महाराज? मैं युद्ध चाहती हूं, केवल युद्ध। आज आपके भीषण युद्ध की पूर्णाहुति होगी।

अशोक : बहुत हो चुका राजकुमारी! मैं अब युद्ध नही करूंगा। कभी युद्ध नहीं करूंगा। (तलवार नीचे फेंक देते हैं)

पद्मा : यह क्या महाराज?

अशोक : (अपने सैनिकों से) तुम भी अपनी तलवारें नीचे फेंक दो। आज से अशोक तुम्हें कभी किसी पर आक्रमण करने की आज्ञा नहीं

देगा। फेंक दो अपनी तलवारें।

[सब सैनिक अपनी तलवारें फेंक देते हैं।]

पद्मा (आगे बढ़कर) मैं भुलावे में नहीं आ सकती, महाराज ! मैं तुमसे युद्ध करूंगी। मुझे अपने पिता का बदला लेना है।

अशोक (सिर झुकाकर) तो लीजिए बदला, राजकुमारी ! मैं अपराधी हूं। जिस अशोक ने लाखों का सिर काटा है और जिस अशोक का सिर आज तक किसी के आगे नहीं झुका, वह आपके आगे नत है। काट लीजिए इस सिर को। मैं हथियार नहीं उठाऊंगा। मेरी प्रतिज्ञा अटल है।

[अशोक सिर झुकाकर खड़े हो जाते है।]

पद्मा तो जाइए महाराज। स्त्रियां भी निहत्थों पर वार नहीं करेंगी। आप अपनी प्रतिज्ञा की रक्षा के लिए जीवित रहिए।

[पद्मा अपनी स्त्रियों की सेना के साथ दुर्ग में चली जाती है।]

तीसरा दृश्य

[अशोक और उनके सभी सरदार पीले वस्त्र धारण किए हुए हैं। उनके सामने एक बौद्ध भिक्षु बैठे हुए हैं।]

बौद्ध भिक्षु : (अशोक से) कहो—मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि...

अशोक : मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि...

बौद्ध भिक्षु : जब तक मेरे शरीर में प्राण रहेंगे...

अशोक : जब तक मेरे शरीर में प्राण रहेंगे...

बौद्ध भिक्षु : अहिंसा ही मेरा धर्म होगा।

अशोक : अहिंसा ही मेरा धर्म होगा।

बौद्ध भिक्षु : मैं सबसे प्रेम करूंगा, और मेरी करुणा का सदाव्रत सबको मिलेगा।

अशोक : मैं सबसे प्रेम करूंगा, और मेरी करुणा का सदाव्रत सबको मिलेगा।

बौद्ध भिक्षु : प्रतिज्ञा करो कि जब तक जीवित रहूंगा, अपनी प्रजा की भलाई करूंगा। सब प्राणियों को सुख और शांति पहुंचाने का प्रयत्न करूंगा। सब धर्मों को समान दृष्टि से देखूंगा।

अशोक : मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि मैं शक्ति भर आपकी आज्ञा का पालन करूंगा।

बौद्ध भिक्षु : बोलो—
बुद्धं शरणं गच्छामि।
धर्मं शरणं गच्छामि।
संघं शरणं गच्छामि।

सभी : बुद्धं शरणं गच्छामि।
धर्मं शरणं गच्छामि।
संघं शरणं गच्छामि।

पटाक्षेप

('राष्ट्रभारती' से)

मगध महिमा

□ रामधारीसिंह 'दिनकर'

पात्र

कल्पना	प्रमुख सभासद
इतिहास	चाणक्य
सात नागरिक	सेल्यूकस

चंद्रगुप्त

दृश्य १

[नालंदा का खंडहर। गैरिक वसन पहने हुए कल्पना खंडहर के भग्न प्राचीरों की ओर जिज्ञासा से देखती हुई गा रही है।]

कल्पना : यह किस तापस की समाधि है ?
किसका यह उजड़ा उपवन है ?
ईंट ईंट हो बिखर गया यह,
किस रानी का राजभवन है ?

यहां कौन है, रुक रुक जिसको
रवि-शशि नमन किए जाते हैं ?
जलद जोड़ते हाथ और
आंसू का अर्घ्य दिए जाते हैं।

प्रकृति यहां गंभीर खड़ी,
किसकी सुषमा का ध्यान रही कर ?
हवा यहां किसके वंदन में
चलती रुक रुक ठहर ठहर कर ?

है कोई इस शून्य प्रांत में
जो यह भेद मुझे समझा दे.
रजकण में जो किरण सो रही,
उसका मुझ को दरस दिखा दे ?

[नेपथ्य मे इतिहास उत्तर देता है]

इतिहास : कल्पने ! धीरे धीरे बोल !
पग पग पर सैनिक सोता है, पग पग सोते वीर,
कदम कदम पर यहां बिछा है ज्ञानपीठ गंभीर।
यह गह्वर प्राचीन अस्तमित गौरव का खंडहर है !
सूखी हुई सरित का तट यह उजड़ा हुआ नगर है।
एक एक कण इस मिट्टी का मानिक है अनमोल !
कल्पने ! धीरे धीरे बोल !

यह खंडहर उनका, जिनका जग
कभी शिष्य औ' दास बना था,
यह खंडहर उनका, जिनसे
भारत-भू का इतिहास बना था।
कहते हैं पा चंद्रगुप्त को
मगध सिंधुपति-सा लहराया,
राह रोकने को पश्चिम मे
सेल्यूकस सीमा पर आया।
मगधराज की विजय-कथा सुन
सारा भारतवर्ष अभय हो,
विजित किया सीमा के अरि को,
राजा चंद्रगुप्त की जय हो।

[पट परिवर्तन]

दृश्य २

[मगध की राजधानी का राजपथ। जहा-तहा फूलो के तोरण और वंदनवार सजे हैं। ठौर ठौर पर मंगल कलश रखे हुए है तथा दीप जल रहे है। सड़क के दोनों ओर के महल भी सुसज्जित दीखते है। रास्ते पर नागरिक आनंद की मुद्रा मे आ-जा रहे हैं। नागरिकों का एक दल गाता हुआ प्रवेश करता है।]

सब : जय हो, चंद्रगुप्त की जय हो !

पहला : जय हो उस नरवीर सिंह की, जिसकी शक्ति अपार,
जिसके सम्मुख कांप रहा थर थर सारा संसार।
मौरिय-वंश अजय हो।

सब : चंद्रगुप्त की जय हो।

दूसरा : जय हो उसकी, हार खड़ा जिसके आगे यूनान,
जिसका नाम जपेगा युग युग सारा हिंदुस्तान।
दिन दिन भाग्य उदय हो !

सब : चंद्रगुप्त की जय हो !
जय हो बल-विक्रम-निधान की,
जय हो भारत के कृपाण की,
जय हो, जय हो मगधप्राण की !
सारा देश अभय हो,
चंद्रगुप्त की जय हो !

तीसरा : गली गली में तुमुल रोर है, घर घर चहल-पहल है,
जिधर सुनो, बस, उधर मोद-मंगल का कोलाहल है।

चौथा : घर घर में, बस, एक गान है, सारा देश अभय हो !
घर घर में, बस, एक तान है, चंद्रगुप्त की जय हो !

[नेपथ्य में शंखध्वनि होती है]

पाचवां : देख रहे क्या यहां ? शंख जय का वह उठा पुकार,
मगधराज का शुरू हो गया, ख्यात, विजय-दरबार !

छठा : हां, राजा जा चुके, जा चुके हैं चाणक्य प्रवीण,
सेल्यूकस के साथ गया है पंडित एक नवीन।

सतवां : और सुनो, यह खास बात कहती थी मुझसे चेटी,
सेल्यूकस के साथ गई है सेल्यूकस की बेटी।

सब चलो, चलें, देखें दरबार !
चलो, चलें, चलो, चलें !

[सब जाते है। पट परिवर्तन]

दृश्य ३

[चंद्रगुप्त का राजदरबार। सेल्यूकस, उसकी युवती कन्या, मेगस्थनीज एक ओर बैठे है। चंद्रगुप्त, चाणक्य और सभासद यथास्थान बैठे हैं। दूसरे दृश्य वाले नागरिक भी आते है।]

एक नागरिक : **(आपस में कानोंकान)**
है महाराज खुद बोल रहे,
मत हिलो-डुलो,
चुपचाप सुनो !

चंद्रगुप्त : मगधराज के सभासदो ! पाटलीपुत्र के वीरो !
मगध नहीं चाहता किसी को अपना दास बनाना !
गुरु कहते हैं, दास-भाव आर्यों के लिए नहीं है,
मैं कहता हूं, मनुजमात्र ही गौरव का कामी है।
मैं न चाहता, हरण करें हम किसी देश का गौरव,
किसी जाति को जीत उसे फिर अपना दास बनाएं।
उठी नहीं तलवार मगध की किसी लोभ-लालच से,
और न हम प्रतिशोध भाव से प्रेरित हुए कभी भी।
छिन्न-भिन्न है देश, शक्ति भारत की बिखर गई है,
हम तो केवल चाह रहे हैं उसको एक बनाना।
मृदु विवेक से, बुद्धि-विनय से, स्नेहमयी वाणी से,
अगर नहीं, तो धनुष-बाण से, पौरुष से, बल से भी।
ऋषि हैं गुरु चाणक्य, नीति हम उनकी बरत रहे हैं।
भरतभूमि है एक, हिमालय से आसेतु निरंतर,
पश्चिम में कंबोज-कपिश तक उसकी ही सीमा है।
किया कौन अपराध, गए जो हम अपनी सीमा तक ?
अनाहूत हमसे लड़ने क्यों सेल्यूकस चढ़ आया ?
मदोन्मत्त यूनान जानता था न मगध के बल को,
समझा था वह हमें छिन्न, शायद, पुरु-केकय सा।
वह कलंक का पंक आज धुल गया देश के मुख से।
हम कृतज्ञ हैं, सेल्यूकस ने अवसर हमें दिया है।
वीर सिकंदर के गौरव का प्रतिभू सेल्यूकस था,
आज खड़ा है वह विपन्न, आहत सा मगध सभा में,
उस बलिष्ठ शार्दूल सदृश निष्प्रभ, हततेज, अकिंचन,
पर्वत से टकराकर जिसने नखरद तोड़ लिए हों,
उस भुजंग सा जिसकी मणि मस्तक से निकल गई हो,
उस गज सा जिस पर मनुष्य का अंकुश पड़ा हुआ हो।
सभा कहे, बरताव कौन सा मगध करे इस अरि से।

प्रमुख सभासद : महाराज ने कही न ये अपने मन की ही बातें,
यही भाव है मगध देश के धर्मशील जन जन में।
नहीं चाहते किसी देश को हम निज दास बनाना,
पर स्वदेश का एक मनुज भी दास न कहीं रहेगा।
हम चाहते संधि, पर, विग्रह कोई खड़ा करे तो,
उत्तर देगा उसे मगध का महाखड्ग बलशाली।

सेल्यूकस के साथ किंतु, कैसा बरताव करें हम,
इसका उचित निदान बताएं गुरु चाणक्य स्वयं ही,
क्योंकि सभा अनुरक्त सदा है उनकी ज्ञान विभा पर।

चाणक्य : आग के साथ आग बन मिलो,
और पानी से बन पानी,
गरल का उत्तर है प्रतिगरल,
यही कहते जग के ज्ञानी।
मित्र से नहीं शत्रुता और
शत्रु से नहीं चाहिए प्रीति।
मांगने पर दो अरि को प्रेम,
किंतु, है यह भी मेरी नीति।
शक्ति के मद में होकर चूर
विजय को निकला था यूनान,
एक ही टकराहट में गया
मगध को वह लेकिन, पहचान।
प्रीति जो निकली पीछे झूठ,
भीति क्या? हम तो हैं तैयार,
चरण फिर फिर चूमेगी जीत,
मगध की तेज रहे तलवार।
अतः, है सेल्यूकस के हाथ,
मित्रता ले या ले आमर्ष,
खड़ा है लेकर दोनों भेंट
ग्रीस के सम्मुख भारतवर्ष।

सेल्यूकस : सामने नहीं मंच पर आज
खड़ा है विजयी भारत वीर,
और है मिट्टी पर यूनान,
पराजय की पहने जंजीर।
हमारी बंधी हुई है जीभ,
हमारी कसी हुई है देह,
भला फिर मैं मांगूं किस भांति
गुणी चाणक्य! बैर या स्नेह?
मित्रता या कि शत्रुता घोर,
आपका जो जी चाहे करें,

एक है लेकिन, छोटी बात,
विनय है, उसको मन में धरें।
याद है, कल पोरस के साथ
सिकंदर ने सलूक जो किया?

चंद्रगुप्त : धन्य सेल्यूकस ! तुमने खूब
आज गुरुवर को उत्तर दिया।
वीरता का सच्चा बंधुत्व,
झूठ है हार-जीत का भेद,
वीर को नहीं विजय का गर्व,
वीर को नहीं हार का खेद।
किए मस्तक जो ऊंचा रहे
पराजय-जय में एक समान,
छीनते नहीं यहां के लोग
कभी उस वैरी का अभिमान।
सिकंदर ही न, और भी लोग
प्रेम करते हैं अरि के साथ।
मगध का कर यह देखो बढ़ा,
बढ़ाओ अब तो अपना हाथ।

[चंद्रगुप्त सिंहासन पर से अपना हाथ बढ़ाता है। सेल्यूकस दोनों हाथों से उसे थाम लेता है।]

सेल्यूकस : जय हो मगधनरेश ! न था मुझको इसका अनुमान,
आज पराजित है, सचमुच ही, भारत में यूनान।
जय हो, दिन दिन बढ़े मगध का बल, वैभव, उत्कर्ष,
हुआ आज से सेल्यूकस का भी गुरु भारतवर्ष।
संधि नहीं, संबंध जोड़कर मुझको करें सनाथ,
अर्पित है दुहिता यह मेरी, पकड़ें इसका हाथ।
ग्रीस देश की इस मणि को उरपुर में रखें सहेज,
सीमा पर के चार प्रांत देता हूं इसे दहेज।
आज्ञा हो तो राजदूत मेगस्थनीज को छोड़,
अब जाऊं मैं शेष दिवस काटने ग्रीस की ओर।

[चंद्रगुप्त सेल्यूकस की पुत्री को सिंहासन पर बिठाते हैं। मेगस्थनीज उठकर राजा को प्रणाम करता है। नागरिकों का कोरस गाते हुए प्रस्थान।]

सब : जय हो, चंद्रगुप्त की जय हो।
जय हो बल-विक्रम-निधान की,
जय हो भारत के कृपाण की,
जय हो, जय हो मगधप्राण की,
सारा देश अभय हो,
चंद्रगुप्त की जय हो।

[गीत दूर पर खत्म होता सुनाई पड़ता है।]

पटाक्षेप

['राष्ट्रभारती' से]

शिवाजी का सच्चा रूप

नर्मदाप्रसाद खरे

पात्र

शिवाजी : प्रसिद्ध मराठा वीर
मोरोपंत : शिवाजी के महामंत्री
सोनदेव : शिवाजी का एक सेनापति

[संध्या समय शिवाजी राजगढ़ दुर्ग की दालान में मखमल की गद्दी पर तकिए के सहारे बैठे हुछ सोच रहे हैं। इसी समय मोरोपंत का प्रवेश।]

मोरोपंत : महाराज की जय हो !

शिवाजी : बैठो, महामंत्री, सेनापति सोनदेव का क्या समाचार है ? कब आ रहे हैं ?

मोरोपंत : श्रीमंत सरकार ! सेनापति सोनदेव कल्याण प्रांत को जीतकर आ गए हैं। साथ में वहां का सारा खजाना लूट कर लाए है।

शिवाजी : (**चौंककर**) ऐसी बात है। बड़ी खुशी की बात है। सेनापति सोनदेव कहां हैं ?

मोरोपंत : श्रीमंत की सेवा में अभी उपस्थित हो रहे हैं।

शिवाजी : कल्याण के सरदार को आखिर मुंह की खानी पड़ी।

मोरोपंत : सब श्रीमंत का ही प्रताप है।

[सेनापति सोनदेव का प्रवेश]

शिवाजी : बैठो, सेनापति सोनदेव। कल्याण जीतने के लिए बहुत बहुत बधाई !

सोनदेव : सब श्रीमंत की वीरता का ही प्रताप है। आपका नाम सुनकर शत्रुओं को पसीना आने लगता है।

शिवाजी : कल्याण के खजाने में क्या क्या प्राप्त हुआ, सेनापति सोनदेव ?

सोनदेव : हीरे-जवाहरात से कई पिटारे भरे हैं। साथ ही श्रीमंत के लिए मैं एक निराली चीज लाया हूं। श्रीमंत की आज्ञा हो तो अपनी भेंट सेवा में उपस्थित करूं।

शिवाजी : (**हंसकर**) प्रसन्नतापूर्वक।

[सोनदेव बाहर जाते है और चार कहार एक डोली लिए हुए उनके पीछे पीछे आते हैं। डोली शिवाजी के

सामने रखकर कहार चले जाते हैं।]

शिवाजी इस पालकी में क्या है...बड़ी विचित्र भेंट मालूम पड़ती है सेनापति सोनदेव की।

सोनदेव (मुसकाकर) श्रीमंत! पालकी में कल्याण के सूबेदार अहमद की बहू है। उसकी सुंदरता की कहानी सारे कल्याण राज्य के मुंह पर है। ऐसी अनुपम सुंदरी लाखों में खोजने पर भी न मिलेगी। उसी को बंदी बना कर ले आया हूं। यही मेरी भेंट है, श्रीमंत के लिए।

शिवाजी (तमतमाए हुए चेहरे से) सोनदेव, पालकी की खिड़की खोल दो।

[सोनदेव पालकी की खिड़की खोलता है। उसमें से एक सुंदर स्त्री निकलकर चुपचाप शिवाजी के सामने आकर खड़ी हो जाती है।]

शिवाजी (एक बार उसकी ओर देखकर आंखें नीची कर लेते हैं) मां, आप जैसी सुंदर हैं, यदि हमारी मां भी इतनी सुंदर होतीं तो हम भी इतने ही सुंदर होते। मैं आपकी सुंदरता की केवल पूजा कर सकता हूं। (सोनदेव की ओर घूमकर) सोनदेव, तुमने इतना बड़ा अपराध किया है जिसे मैं क्षमा नहीं कर सकता। यह जानते हुए भी कि मैं पराई स्त्री को अपनी मां ही मानता हूं, तुमने यह नीचता का कार्य कैसे किया? मैं मुसलमानों का शत्रु नहीं हूं, उनके धर्म का मैं आदर करता हूं। इसीलिए मैंने आज तक किसी मसजिद की एक इंट भी नहीं उखाड़ी। उनकी कुरान को हाथ तक नहीं लगाया। और उनकी बहू-बेटी पर कभी आंख तक नहीं डाली। तुमने यह क्या किया? मेरा सिर लज्जा से झुका जा रहा है। लोग मेरे विषय में क्या सोचते होंगे। सरदार अहमद की बहू, मेरी भी बहू है, मेरी बेटी ही है। उनके खाने-पीने और राजगढ़ तक सुरक्षित भेजने का प्रबंध करो।

सोनदेव जो आज्ञा श्रीमंत!

शिवाजी और सुनो, मेरी ओर से घोषणा कर दो कि भविष्य में जो ऐसा कदम उठाएगा, उसका सिर काट लिया जाएगा।

मोरोपंत जय हो श्रीमंत की!

पर्दा गिरता है

यमराज का निमंत्रण

□ नर्मदाप्रसाद खरे

पात्र

अभिमानसिंह : एक अभिमानी राजा
पंडित गुणगानी : राजा का एक भाट
महामाया : अभिमानसिंह की रानी
यमदूत : यमराज का दूत
कृपापालसिंह : राजा का मंत्री

पहला दृश्य

[राजमहल का एक कमरा। रात्रि के समय भी कमरे में दिन जैसा तेज प्रकाश फैला है। राजा-रानी बराबरी से बैठे हैं। मंत्री और भाट उनके सामने बैठे हुए हैं।]

राजा अभिमानसिंह : (**मंत्री से**) क्यों मंत्रीजी, मेरे विषय में प्रजा की क्या राय है?

कृपापालसिंह : महाराज, सारी प्रजा आप से प्रसन्न है। छोटे-बड़े सभी आपकी प्रशंसा करते हैं। आपकी दया, सत्यता और न्याय को कौन भूल सकता है।

राजा अभिमानसिंह : रानी महामाया, आप मेरे विषय में क्या सोचती हैं? सच सच बताइए।

रानी महामाया : महाराज, आपके समान इस संसार में और कोई दूसरा राजा नहीं है।

राजा अभिमानसिंह : गुणगानी जी, आपका काम ही मेरे गुण गाना है। पर आज तुम मेरी बड़ाई के गीत न गाकर, सच सच बताओ कि मैं कैसा राजा हूं?

पंडित गुणगानी : अन्नदाता, मैं कभी आपकी झूठी बड़ाई नहीं करता। आप गुणों की खान हैं। आपके एक एक गुण की प्रशंसा में एक एक पुस्तक लिखी जा सकती है। आप ऐसे अनोखे वीर हैं कि जब आप चलते हैं तो पृथ्वी डगमगाने लगती है, हिमालय थर्राने लगता है और शेषनाग (**जो पृथ्वी का भार संभाले हैं**) की पीठ में छाले पड़ जाते हैं। लक्ष्मी तो आपकी आंखों में रहती है क्योंकि

महाराज की कृपादृष्टि जिस पर पड़ जाती है, वह देखते-देखते मालामाल हो जाता है। सरस्वती तो आपके जीभ रूपी कमल पर बैठी वीणा बजा रही है। आपके प्रताप से ही सूर्य और चंद्रमा चमकते हैं, दिन-रात होते हैं। यदि आप न हों तो सब जगह अंधेरा ही अंधेरा फैल जाए। महाराज, आप, आप ही हैं।

राजा अभिमानसिंह इसका मतलब यह हुआ कि मुझे अभी बहुत वर्षों तक राज्य करना चाहिए।

सब एक साथ कम से कम सौ वर्षों तक महाराज!

[राजा और रानी एक ओर जाते हैं और अन्य लोग दूसरी ओर]

दूसरा दृश्य

[राजा एक सजे हुए पलंग पर सोया हुआ है। वहीं अचानक यमदूत पहुंचता है। यमदूत मोटा-तगड़ा, काला-कलूटा है। उसके दांत बहुत बड़े बड़े हैं। नंगे बदन है। एक लंगोटी लगाए है। हाथ में फरसा है। राजा अचानक छटपटाकर, उठकर पलंग पर बैठ जाता है।]

राजा अभिमानसिंह : तू कौन है, जो इस तरह काल के गाल में आ गया है।

यमदूत : मैं यमदूत हूं। मुझे यमराज ने भेजा है। तुमको पकड़कर नरक में ले जाने के लिए आया हूं।

राजा अभिमानसिंह : (बिगड़कर) अरे यमदूत, क्या यमराज को मालूम नहीं कि मैं पृथ्वी पर का प्रजापाल हूं, महीपाल हूं, लोकपाल हूं, दंडपाल हूं, संखपाल (सूर्य) हूं, धर्म की ढाल हूं और स्वयं महाकाल (यमराज) हूं। मेरे चलने से भूचाल (भूकंप) आता है, पेड़ों की डाल-डाल कंपती है, शत्रुओं के रोम रोम कंपते हैं। मेरे दयालु होते ही कंगाल भी मालामाल हो जाते हैं, चिथड़े पहनने वाले काश्मीरी शाल ओढ़ने लगते हैं। रे यमदूत, तू जाकर पशुपाल (शिव) से कह दे कि पृथ्वी के मनुष्य पशु हो गए हैं। मैं ही उनका पशुपाल (चरवाहा) बनकर उनको चराता हूं। मेरे न रहने से उनकी देखभाल करने वाला कोई न रहेगा। तू अभी यहां से भाग जा, नहीं तो मेरे पहरेदार तेरे हाथों में हथकड़ी डाल देंगे, तेरी खाल खींच लेंगे,

तुझको कालकोठरी में डाल देंगे, तेरी खोपड़ी फोड़ डालेंगे, तेरे भाल (माथा) में भाला भोंक देंगे।

यमदूत : (**क्रोध से**) मैं इन बंदर-घुड़कियों से डरने वाला नहीं हूं। मैं तुझे नहीं छोड़ सकता। तेरी एक नहीं सुन सकता। तुझे जो कुछ कहना है, यमराज से कहना।

[यह कहकर यमदूत राजा के गले में फंदा डाल देता है।]

राजा अभिमानसिंह : (**जोर से चिल्लाकर**) अरे द्वारपाल, जयपाल, हरपाल, कोई है। दौड़ो, यह चंडाल हमारे प्राण लिए लेता है, रोटी दाल की तरह खाए जा रहा है। हमारा कहना टाल रहा है। हमारे खून को उबाल रहा है। यहां जांच-पड़ताल करने वाला कोई नहीं है। सब लोग क्या हड़ताल करके ससुराल चले गए हो। कोई माई का लाल है? जल्दी करबाल (**तलवार**) लेकर दौड़ो। क्या सब लोग मर गए। अरे दौड़ो, दौड़ो...

यमदूत : अब तेरी कोई नहीं सुन सकता। यमराज से सभी डरते हैं। मैं उनका ही दूत हूं—मेरे सामने कोई नहीं आ सकता। अब तेरा चिल्लाना व्यर्थ है। अब संसार को तेरी जरूरत नहीं है। संसार के लिए तू मर चुका है। मैं तो तेरी लाश उठाने आया हूं।

राजा अभिमानसिंह : (**गिड़गिड़ाकर**) नहीं यमदूत, यह बात नहीं है। मुझे मेरी प्रजा बहुत प्यार करती है। मेरे बिना वह अनाथ हो जाएगी। आप मेरी बातों को सच मानकर मुझे अभी कुछ दिन और यहीं रहने दें। आप मुझे छोड़ दीजिए। मैं आपको बड़ी जागीर दे दूंगा।

यमदूत : राजा, मैं घूस नहीं लेता। भगवान के दूत मेरे पीछे भी लगे रहते हैं।

राजा : दूतराज, मैं आपके साथ चलने को तैयार हूं। पर सच मानिए, मेरे न रहने से सब घबड़ा जाएंगे, राज्य का काम-काज गड़बड़ा जाएगा, सब लोग पागलों की तरह हड़बड़ाकर समुद्र की ओर भागेंगे और डूबकर प्राण दे देंगे।

यमदूत : यह तुम सोचते हो। अपने मुंह मियां-मिट्ठू बनने से कुछ नहीं होता। हर कोई अपने को बड़ा ही समझता

है। हमारे भगवान की दृष्टि में बड़ा वह है, जिसे सब लोग बड़ा मानें। पीठ पीछे जो तारीफ होती है, वह सच्ची तारीफ है। मुंह पर तो सब तारीफ ही करते हैं। तेरे मरने से तीन आदमी भी दुखी होते तो मैं तेरी प्रार्थना मानकर तुझको उनके लिए यहां कुछ दिन और रहने देता।

राजा : यदि आपको मुझ पर विश्वास नहीं है, तो आप स्वयं परीक्षा लेकर देख लीजिए। मेरे लिए कितने लोग दुखी हैं।

यमदूत : अच्छा, तू ही बता, मैं किन तीन लोगों से पूछूं कि उन्हें तेरी जरूरत है अथवा नहीं।

राजा : रानी, मंत्री और मेरे गुणगानी भाट से ही पूछकर देख लें।

यमदूत : अच्छा, तू सांस रोककर पड़ जा। मैं तेरे ऊपर एक चादर डाले देता हूं। और मैं धर्मराज का रूप धारण किए लेता हूं, जिससे वे लोग निर्भय होकर सच सच बोलें, डरें नहीं। बोल, तुझे यह शर्त स्वीकार है।

राजा : स्वीकार है।

[यमदूत राजा को एक चादर से सिर से पैर तक ढांक देता है। स्वयं वेष बदलकर आता है। और अपनी अदृश्य शक्ति से रानी, मंत्री और पंडित गुणगानी को बुलाता है।]

यमदूत : (धर्मराज के वेष में) चलो रानी महामाया!

रानी : (सामने आकर) कहिए, महाराज क्या आज्ञा है।

यमदूत : (धर्मराज के वेष में) यह तुम्हारे स्वामी का शव है। क्या तुम चाहती हो कि मैं इन्हें जिंदा कर दूं?

रानी : नहीं महाराज, अब मेरा बेटा राजा बनेगा। मैं राजमाता कहलाऊंगी। मैं हर्गिज नहीं चाहती कि राजा को आप जिंदा करें।

यमदूत : (धर्मराज के वेष में) अच्छा तुम जाओ।

[मंत्री का प्रवेश]

मंत्री : कहिए, प्रभु क्या आज्ञा है?

यमदूत : (धर्मराज के वेष में) राजा का शव देख रहे हो।

मंत्री : हां, प्रभु!

यमदूत : (धर्मराज के वेष में) राजा कैसा था ? क्या इसे संसार में कुछ दिन और रहना चाहिए ?

मंत्री : महाराज, मैं तो इस राजा से बिलकुल हैरान हो गया था। यह मेरी कोई भी बात नहीं सुनता था। मेरी सलाह ही नहीं मानता था। स्वयं तो पागल था ही, मुझे भी पागल बना देता था।

यमदूत : (धर्मराज के वेष में) अच्छा जाओ। पंडित गुणगानी को भेजो।

पंडित गुणगानी : (सामने आकर प्रणाम करता है) जय हो महाप्रभु की !

यमदूत : (धर्मराज के वेष में) तुम तो राजा के भाट ही थे। अब वे संसार में नहीं हैं। अब भी उनकी सच्ची बड़ाई में दो शब्द कह दो।

पंडित गुणगानी : राजा बहुत घमंडी था। अपनी झूठी प्रशंसा में फूला रहता था। हम तो झूठी प्रशंसा करते करते थक गए। अच्छा हुआ, अब हमें झूठ न बोलना पड़ेगा। जान बची और लाखों पाए।

यमदूत : (धर्मराज के वेष में) अच्छा जाओ, अब झूठा गुणगान कभी मत करना।

[राजा के मुख पर से चादर हटाता है।]

यमदूत : (असली रूप में) सुन लिया न अपने कानों से कि तुम्हारी किसको कितनी चाह है—तुम्हें कौन कितना चाहता है ?

राजा : हां दूतराज, अब आप मुझे सीधे नरक ले चलिए। मुझे यमराज का निमंत्रण स्वीकार है।

पर्दा गिरता है

अक्षर सम्मेलन

□ युक्तिभद्र दीक्षित

पात्र

१. सूत्रधार
२. हर अक्षर के लिए अलग अलग बच्चे भी हो सकते हैं या केवल कुछ ही बच्चे विभिन्न अक्षरों की भूमिका कर सकते हैं।

[दूर पर ढोल का शब्द]

सूत्रधार : ढामढमाढम ढोलक बोली, पंचो दुनिया गोल है।
अरब चीन, जापान गोल है, कुस्तुंतुनिया गोल है।
बुढ़ऊ बाबा गोल यहां पर, छोटकी मुनिया गोल है।
मूरखचंद भी गोल यहां पर, बड़का गुनिया गोल है ।।

कई बच्चे : गोल है जी, गोल है जी, गोल है।

[ढोलक का शब्द पूर्ववत थोड़ी देर चलता रहता है]

सूत्रधार : यह है ऐसी जगह जहां पर भाषण होते रोज हैं।
ज्ञानी पंडित रोज बताते अपनी अपनी खोज हैं ।।
नाटक, फीचर और तमाशों का लगता बाजार है।
कवि सम्मेलन, मुशायरों की अपनी अलग बहार है।
रोज यहां होते रहते हैं छोटे बड़े खयाल भी।
सरे-शाम जुटती है हर दिन काका की चौपाल भी ।।
आज यहां अक्षर सम्मेलन जमा हुआ है ठाठ से।
बड़े बड़े अक्षराचार्य सब डटे हुए हैं भाट से ।।

बच्चा एक : यह है स्वर समुदाय
किनारे जो बैठा है।

बच्चा दो : यह है व्यंजन वर्ग
जरा सा जो ऐंठा है ।।

[शोरगुल]

सूत्रधार : शांत भाइयो ! शुरू हो रहा सम्मेलन का काम।
सबसे पहले कविवर 'अ' के सुनिए वचन ललाम ।।

बच्चे : आइए, आइए।

अ : अजब बात है !
अजगर कभी न करता काम।
करता सुबह - शाम आराम ।।
पंछी नहीं जोतते खेत।
उड़ते फिरें सेंत ही मेंत।।
बिल्ली के घर भैंस न लगती।
चूहों की दूकान न सजती।।
लेकिन फिर भी सांझ-सकारे।
सबको देना चारा राम।।
अजब बात है !
यही बात है, सही बात है।।
[तालियां]

सूत्रधार : इसके बाद कृपा कर आगे
आएं बढ़के 'आ' जी।
देर हो रही, बढ़ती है
श्रोताओं की नाराजी।।

सब : आइए, आइए।

आ : आज तक न हाथ में किताब है छुई कभी।
बैठकर पढ़ाइयां न जिसमें है हुई कभी।।
वह रोज मास्टर की डांट-मार खाएगा नहीं।
वह बैठ इम्तहान में नकल उड़ाएगा नहीं।।

एक आवाज : आप अपनी बीती कह रहे हैं शायद!
[शोरगुल। 'नहीं चाहिए', 'नहीं चाहिए', 'बैठ जाइए',
आदि]

सूत्रधार : शांत भाइयो, शांत।
सुनो अब कविता इनकी।

इ : इस जग में जंजाल बहुत है।
इधर डांट पड़ती अम्मा की
उधर पिताजी नैन तरेरें।
इधर करें सब घर के धंधे
'होम टास्क' जी उधर गुरेरें।
ऊपर से जब कहें, गुरुजी
(नकसुर में) 'उठा करो जी और सवेरे'।
लग जाती है आग बदन में

होता हमें मलाल बहुत है।
इस जग में जंजाल बहुत है॥
['ठीक है', 'बिलकुल ठीक है' की आवाज]

सूत्रधार : इसके बाद पधारें 'ई' जी।

ई : ईश्वर की माया विचित्र है!
ईख बनाई अच्छा किया।
मगर यह अदरख कौन चीज है?
जिसका स्वाद न बंदर जाने
वह बोलो कैसे लजीज है?
गुरु भला, स्कूल बला है
चपरासी भी नेक मिला है।
लेकिन नौ बजते बिजली सी
गिरती जो, आया विचित्र है,
ईश्वर की माया विचित्र है।
['बहुत अच्छे', 'बहुत सुंदर' का स्वर]

सूत्रधार : इसके बाद पधारेंगे जो
लक्ष्मी जी के बड़े मित्र हैं।
['आइए आइए' का शोर]

उ : उल्लू उजबक कह लो आज
मगर कल पहचानोगे!
कलम मेज से गायब होगी
चश्मे का न पता पाओगे।
जीवन-संगिनी छड़ी हाथ की
घड़ी खोज कर थक जाओगे।
हो जाओगे लेट, टटोलो—
नोट, उसी से टक्कर लोगे।
कलम न होगी, हाथ दुखेगा—
माथ, हाजिरी भर न सकोगे।
उल्लू भी बेढब होता है तब समझोगे।
उजबक भी कुछ हो सकता है, तब जानोगे।
['हियर हियर' की आवाजें]

सूत्रधार : अब आप पधारें!
['आइए आइए']

ऊ : ऊदल बोले तब आल्हा से सुन लो बात बनाफर राइ।
बड़े पढ़ैया कालिज वाले जिनसे पोथी छुई न जाइ॥
कमर होइ गइ धनुहा जिनकै, अउ आंखिन तें नहीं सुझाइ।
पटिया पारे मांग संवारे खीसइ बाइ बाइ रहि जाइ॥
बुढ़ऊ बप्पा भे पैंसठ के, एक पग जिन चला न जाइ।
बोलो भला जवानन खातिर वै, कब लग धौं कहौ कमाइ॥

[आपस की कानाफूसी]

सूत्रधार : अब कुछ दार्शनिक रंग की रचनाएं प्रस्तुत हैं। आइए 'ए' जी

ए : एक दिन
वह कौन सा होगा कि जिस दिन
मछलियां उड़ जाएंगी
नीले गगन पर
चील-कौवे
तैरते होंगे सरोवर में
बिलों में आदमी रहने लगेंगे
और चूहे डंड पेलेंगे अटारी पर
दुटंगे आदमी को
बकरियां जब पालने लग जाएंगी
फिर देखकर यह अजब माया
तब महाकवि मौन सा होगा
मगर वह दिन कौन सा होगा ?

['वाह वाह', 'अति सुंदर'—तालियां]

सूत्रधार : और आपके बाद...

ऐ : ऐब यही है, आप लगाते ऐनक ऐसी
जिसमें सबकी शकल दिखे जैसी की तैसी
नयन आपके टुकुर टुकुर तो सबको देखें
बच जाते हैं साफ स्वयं पर वह अनदेखे
उनमें क्या है, समझ न पड़ता,
घृणा ? या कि फिर हंसी
या कि
ऐसी की तैसी !

['नहीं चलेगी', 'नहीं चलेगी']

सूत्रधार : मर्यादा को आप न लांघें।
शांत रहें।

हां, क्या फरमाया नाम...म
मिस्टर,·'ओ' जी !
वड़े वड़े विषयों के खोजी ।

ओ : ओम की भी इक कहानी है।
एक दिन ऐसा हुआ चंदा गगन में—
वादलों के संग था कुछ खेलता ।
और इतने में पहुंच, श्रीमान सूरज की
सदेशवाहिनी किरणें
अचानक कह गई गुपचुप
न जाने कौन सी वह वात ।
चंदा रो पड़ा, होने लगी वरसात अश्कों की
गिरे आकाश मे लेकिन खजूरों ने उन्हें लटका लिया
वात लेकिन वह पुरानी है।
[शोर—'अब नहीं कविता सुनानी है']

सूत्रधार : सुना आपने ? मिस्टर 'ओ' के वाद
पधारें कविवर 'औ' जी !
तन के दुर्बल बहुत
किंतु हैं मन के मौजी !

औ : और कछू कहनो न हमे, हम चाहत हैं इतनोई भाखैं,
ये कवि आज के ऐसे भये जु हवान में डोला करैं बिन पाखैं।
देखी सबै अनदेखी करें, बक ध्यान लगावत बंद कै आंखै,
दूरि की कौड़ी बटोरा करें, अरु पाकिट एक छदाग न राखैं ।।
['नो मोर,' 'नो मोर', 'बैठ जाइए' । अधिक शोरगुल]

सूत्रधार : अब पारी है श्रीमान की
आएं 'अं' जी ।

अं : अंगारों पर चलना सीखो।
सागर सरिस मचलना सीखो।
लेकिन जो हो शत्रु उसे,
तुम अजगर बनो, निगलना सीखो ।
[तालियां]

सूत्रधार : स्वरसमूह के अंतिम प्रतिनिधि
माननीय श्री अः जी ।

अः : अहः आज का यह सम्मेलन कुछ ऐसा है।
बीन बज रही आगे लेकिन चुप भैंसा है।

लेकिन कुछ कहना ही होगा कह ही डालूं,

एक स्वर : 'बेहतर होगा आप जरा सा खाएं कचालू'।

['बैठ जाइए', 'बैठ जाइए' का स्वर]

सूत्रधार : शांत भाइयो, शांत रहो
अब खड़े हो रहे हैं 'क वर्ग' जी।
पहले प्रतिनिधि !

तीन स्वर : ठहर जाइए।

सूत्रधार : (अचकचाकर) आप कौन हैं ?

तीन स्वर : हम सब हैं अंतस्थ
नहीं हैं स्वस्थ
और फिर शब्दों में
रहना पड़ता है बन करके मध्यस्थ।
इसी से हुक्म मिले तो
हम सब अपने घर को जाएं।

सूत्रधार : कीजिए जो मन भाए।
अरे ! आइए मिस्टर 'क' जी।

क : कम अकली की कोई आप दवा कर लेंगे ?
कछुआ बनो अगर जग में तुमको रहना है।
पीठ करो मजबूत, अरे यमदूत—
सरीखे ये टीचर के भूत
तुम्हारा क्या कर लेंगे ?

['बेशक कुछ नहीं !' का शोर]

सूत्रधार : (मरे मन से) आइए कविवर 'ख' जी।

ख : खबर मिली थी यहां पर सम्मेलन है,
खाकर खस्ता चले, इसी से चित्त मगन है।
याद आ रहा स्वाद और मुंह में पानी है,
मैं कैसे कुछ कहूं यही बस हैरानी है।

एक आवाज : तो आए क्यों यहां मुफ्त में ढो कर बस्ता ?

दूसरी आवाज : होगी खुली दुकान, उड़ा दें जाकर खस्ता।

[हंसी]

सूत्रधार : खैर, जो हुआ सो हुआ,
इधर आएं श्री 'ग' जी।

ग : गदहे में गुन बहुत हैं सदा पालिए भाय।
बोझा ढोवे घर रहै, प्रात: देय जगाय॥

प्रातः देय जगाय, करे नित 'चीपूं चीपूं'।
जैसे करै सहाय मील का पहला भोंपू।।
कह गड़बड़ कविराय दुलत्ती अगर बचालें।
तो फिर छोड़ें अश्व आप सब गदहा पालें।।
['बड़ी नेक सलाह है प्यारे !
क्या कहने हैं तुम्हारे ! !']

सूत्रधार : इस समूह के एक कवि जी
अभी शेष हैं, आगे आएं।

घ : घड़ी घड़ी सुनो, धोखाधड़ी से बचके रहो।
और बेकार की इस गड़बड़ी मे बचके रहो।।
इन्हीं हाथों से अगर आम तोड़ने हैं तुम्हें।
मास्टरजी की लचकती छड़ी मे बचके रहो।।

सूत्रधार : अब चवर्ग के प्रतिनिधि कवियों
की पारी, आएं—'च' जी।

च : चला चली में वे स्कूल में मुझसे बोले
मीठी बोली थी मगर साथ में मिर्ची घोले।
चलो चलें न यार, बाग में खाएं अमरूद
कौन खाएगा मार कह के हम तुरंत डोले।
['आधी आधी बांट लेते जनाब !']

सूत्रधार : इसके बाद पधारें 'छ' जी।

छ : छांह में बैठ छबील छटांक भर छोले उछाह से खावत हैं मने।
और इतै घर में जै गनेस के वाहन डंड लगावत हैं मने।।
लोटा और थारी बिकी घर की अब बाप उन्हें गरियावत हैं।
छैल भये पढ़ि पथरा तबौ निज नाम हू बांचि न पावत हैं।।

एक आवाज : लेकिन उसके डंडे से बचकर रहिएगा, जनाब !
[हंसी]

सूत्रधार : इसके बाद पधारें 'ज' जी। आप धुरंधर !

ज : जब भी जीवन की नश्वरता पर मैंने कुछ भी सोचा है।
वह गुब्बारा हाइड्रोजन का
सोच सोचकर कांप उठा हूं।
अनायास उसके फटने की
कर कल्पना अलाप उठा हूं।
'चुप कर मुन्ने, सो जा जग्गू'
कह कहकर अम्मा-बाबू ने
तब तब मुझे दबोचा है।

एक स्वर : खैर मानिए, कान गरम नहीं हुए।
[तालियां—शोर]
सूत्रधार : अब पधारें 'झ' जी।
झ : झड़प हुई थी कभी आप से हुजूर मेरे
काश होते न जरा हाथ ये मजबूर मेरे।
देख लेता मैं अकड़ झट ये—जनाबे दरजा
बेंत तो खाते आप, होते पर कसूर मेरे।
एक आवाज : अब भी क्या बिगड़ा है
आजमा के देख लीजिए न?
[हंसी]
सूत्रधार : अगर हंस चुके हो सब सज्जन
तो टवर्ग के प्रतिनिधियों का नाम पुकारू?
आवाजें : जरूर, जरूर!
सूत्रधार : खूब! लीजिए ट, ठ, ड, ढ की रचना सुनिए।
ट : टका सा ये जवाब
टके की बात का, मगर
वो, बात कौन सी है
इसका मुझको कुछ पता नहीं।
ठ : ठहर के इक ठठेरे की दुकान
पर वे एक दिन
वे सोचने लगे कि ठगी में
मिला पता नहीं।
ड : डगर की बात और है
मगर मुझे डर है यही
कि लुत्फ तो तब आए जब
सके 'व' कुछ बता नहीं।
ढ : ढलक पड़ेंगे अश्कों के नाले
बहेगी नाक भी
अगर्चे मास्टर ने उनकी
माफ की खता नहीं।
सूत्रधार : अब तवर्ग के प्रतिनिधि आएं।
त : तकी राह मैंने बहुत दिन मगर फिर
न दावत मिली और न इतवार आया
उन्होंने कहा था कि दावत करूंगा

अगर पास हूंगा तो, मानो सही तुम
बनेगी मिठाई और पूड़ी छनेगी
अगर चाहना संग खाना दही तुम
मगर जब नतीजा निकलने का वह दिन
बहुत इंतजार कराके जो आया
तो वो खीस बा के बड़ी सादगी
से बोले कि हाय—न अखबार आया
['बहुत अच्छे', 'बहुत अच्छे' का शोर]

सूत्रधार : अब पधारें 'थ' जी।

थ : थमो, जरा यह बात सुनो ! जो
तुम्हें सुनाना चाह रहा है।
बहुत दिनों से चाह रहा जी
कोई ऐसा राग निकाल
सुनकर जिसे पास की बगिया
का सो जाए माली—काल।
क्योंकि बड़े बढ़िया होते उस बगिया के सेव
कि जिनमें से केवल दो-चार उड़ाना चाह रहा हूं।
['माली के डंडे से बच के रहिएगा']

सूत्रधार : इसके बाद पधारें 'द' जी।
आप मुक्त छंद में एक रेखाचित्र प्रस्तुत करेंगे।

द : दमड़ीलाल
बड़े हैं सेठ
लिए मटके सा पेट
फिरा करते हैं।
खा कुछ सकते नहीं
क्योंकि उसमे खर्चा होता है।
और अगर कुछ खा भी लें
तो पचता नहीं।
क्योंकि उनको चिंता रहती है
चोर, डाकुओं और लुटेरों की।
इसीलिए बीमार बड़े बेजार।
रहा करते है।
और उधर कविराज
डाक्टर गरम करे हैं टेंट।

उड़ावें माल।

[तालियां]

सूत्रधार : 'ध' जी।

ध : धधक रहा है मेरा सर
नहीं सूझे कोई।
हाल है पस्त मेरा, पर
नहीं बूझे कोई।
पढ़ने-लिखने की एक हद भी है
कब तलक यों कहो जूझे कोई।

सूत्रधार : तवर्ग के अंतिम प्रतिनिधि !

न : नकनका के उनने कहा
यार जरा बात सुनो
आज भर के लिए दें दो
जरा दावात, सुनो।
हमने हंस हंस के उन्हें हीं टाल दिया
भाइयों और भी आगे के हालात सुनो।

['नो मोर', 'नो मोर' का शोर]

सूत्रधार : अच्छा खैर, अब आप पधारें 'प' जी।

प : पटका-पटकी है बुरी चीज।
हम मुफ्त भिड़े जाकर उनसे
बेकार समय बरबाद किया।
ना घर का ही कुछ काम किया
ना ठीक सबक ही याद किया।
है सोच यही कैसे घर में
दिखलाऊंगा फटही कमीज।

एक स्वर : दो चार हाथ घर के भी सही,
क्या फर्क पड़ता है ?

[हंसी]

सूत्रधार : आइए मिस्टर 'फ'। कुछ वीर रस सुनाइए

फ : फड़क रही है भुजा हमारी।
आज खैरियत नहीं कि जिसने
खाए मेरे आगे पेठे।
आज खैरियत नहीं कि जिसने
बीच सड़क पर कान उमेठे।

आज उसी से टक्कर लूंगा
और करूंगा चोट करारी।

एक स्वर : बैठ जाइए, कोई सुन लेगा तो लेने के देने पड़ जाएंगे।

ब : वहस नहीं है आप खेलें या पढ़ें लेकिन
दोनों ही चीज हैं जरूरी आदमी के लिए।
वात बस इतनी है कि वक्त के पाबंद रहो
फिर तो कोई नहीं मजबूरी आदमी के लिए।

सब : बड़े अच्छे खयाल हैं, जनाब !

भ : भड़क उठी है आग सीने में
अब न आता है मजा जीने में।
दूध तो मैंने भी पिया लेकिन
निकल गया है वह पसीने में।

सूत्रधार : अब आएं 'म' जी।

म : मचल के वे कहने लगे हमसे शब को
कि हम भी वहुत देखते हैं सनीमा।
कहा हमने मिस्टर यह आदत बुरी है
अकल को न यों तुम दिलाओ अनीमा।

सूत्रधार : व्यंजन वर्ग समाप्त हुआ।

य : यदि मैं बन का तोता होता
खाता मिर्च लाल।
राम का नाम सुनाता घर में
बन जाता रखवाल ।।
सबक मास्टर देते तो मैं
रट कर उन्हें सुनाता।
करता हरदम पास परीक्षा
कभी न गोता खाता ।।

सूत्रधार : श्री 'र' जी।

र : रबर का गेंद तो देखा है वहुत ही अक्सर
आदमी को बना फुटबाल आज ही देखा।
जा रहा था जो ढुलकता हुआ चौराहे पर
उसकी कुदरत का यह कमाल आज ही देखा ।।

सूत्रधार : अब 'ल' साहब तशरीफ लाएं।

ल : लपकता हुआ आज पहुंचा जो कालेज
तो देखा गुरुजी खड़े थे पधारे।

'रहे सिर सलामत'—यह सोचा, तो भागा
खड़े ही रहे होंगे हंटर सुधारे ।।

सब : घर पै कितनी पड़ी थी—जनाब !

एक आवाज : क्या कभी फिर नहीं आइएगा ।

सूत्रधार : इसके बाद पधारे 'व' जी ।

व : वक्त जाकर न हाथ आता कभी
घड़ी का मुंह न जिसे भाता कभी ।
उसके सब काम अधूरे रहते
हाथ मलता कभी, पछताता कभी ।।

सब : वाह ! वाह !

सूत्रधार : 'श' जी ।

श : शहद के धोखे में हम तेल पी गए
और सपने में आज जेल भी गए ।
पास तो हमें न होना था और हुए भी नहीं
गर्क सब काम हुआ, जेल भी गए ।

एक स्वर : अब पछताए होत क्या ?

सूत्रधार : दो हैं जिनके पेट सामने आएं 'ष' जी ।

ष : षटरस व्यंजन बने किंतु कुछ स्वाद न आया ।
रुचि से किया तैयार बड़ी वाली भाभी ने
नमक डालना उनको लेकिन याद न आया ।

आवाज : खाकर लेते फांक, कमी पूरी हो जाती ।

सूत्रधार : लेते जिनका नाम दांत आपस में जट्टे
अब आएं वह सम्मुख कविवर 'स' जी ।

स : समाचार था मिला कि मामाजी आएंगे
सोचा था भरपेट मिठाई हम पाएंगे ।
लेकिन हमसे अधिक पिताजी उनको प्यारे
कौन जानता था पिल्ला ताजी लाएंगे ।

सब : बड़ी बुरी खबर सुनाई आपने ।

सूत्रधार : 'ह' जी ।

ह : हमें क्या काम दुनिया से, हमें तो आम प्यारा है ।
गुरुजी को छड़ी प्यारी है, डैडी को घड़ी प्यारी ।
मगर चच्ची का क्या, उनको तो केवल दाम प्यारा है ।

सूत्रधार : अब आते हैं संयुक्ताक्षर ।

क्ष : क्षत्रियो ! और छात्र ! बस अंतर इतना
एक मांगता खंग दूसरा लेखनी।
क्षमा वड़ों को चाहिए छोटों को अपराध
कहा बड़ों ने मानने की किसको साध।
हमसे यदि पूछे कोई कह दें अपने आप
बुरा नहीं सप्ताह में पड़े अगर एकाध।

सब : कोई मुजायका नहीं।

सूत्रधार : आइए 'त्र' जी।

त्र : त्रस्त हूं मैं, अजब मेरे हाल
इस तरह घेरे मुझे जंजाल हैं।
इस तरह तो पढ़ाई साल भर
उस तरफ ट्यूटर की आंखें लाल हैं।

एक स्वर : वाह ! वाह ! क्या कहने हैं ! कमाल है।

सूत्रधार : सज्जनो ! इसके पहले कि आज के अक्षर सम्मेलन की कार्रवाई समाप्त हो, जब अक्षराचार्य कविवर 'ज्ञ' के वचनामृत आप लोग पान करें और हां आज के इस सम्मेलन की सफलता और आप लोगों के धैर्य के लिए मैं इसी समय बहुत बहुत धन्यवाद देता हूं अन्यथा सम्मेलन हो चुकने पर मुझे सुननेवाला यदि कोई न रहा तो मैं क्या करूंगा ?

[शोरगुल—हां, आइए, 'ज्ञ' जी।]

ज्ञ : ज्ञान की बात यही है भाई
कि हम खूब पढ़ें, खेलें और बलवान बनें।
देश में और जहां में नाम करें
काम करें खूब और इंसान बनें।

['वाह वाह' और शोर के बीच सम्मेलन समाप्त होता है।]

टिकट नहीं लिया

□ रमेश वर्मा

पात्र

वाचक	एक बालक
रामकिशुन	टिकट चेकर
श्याम	मजिस्ट्रेट

[वाद्य संगीत बजते बजते धीमा हो जाता है और वाचक का स्वर उभरता है।]

वाचक : कई वर्ष पहले की बात है शहर बांदा की। रेलवे की बांदा-कानपुर लाइन नई नई खुली थी। इसी लाइन पर चलने वाली दो गाड़ियों और तीन मजेदार बच्चों की यह कहानी है।

[रेलगाड़ी चलने की धीमी आवाज होती है।]

वाचक दो गाड़ियां और तीन बच्चे। एक गाड़ी बांदा से चार बजे शाम छूटती, दूसरी बांदा छः बजे पहुंचती। तीन बच्चे थे—श्याम, रामकिशुन और बच्चा। तीनों चार बजे की गाड़ी पर सवार होते। केन नदी का पुल मिलता, भूरागढ़ का किला दिखलाई पड़ता, ऊंची-नीची जमीन आती, आठ कि० मी० का सफर तय होता, और खैरादा स्टेशन आ जाता। यहीं उनकी यात्रा का अंत हो जाता। साढ़े पांच बजे उन्हें बांदा लौटने को गाड़ी मिलती, उस पर सवार होकर वे लौट आते। सोलह मील की यात्रा वे रोज करते और वह भी बिना टिकट...

[रेलगाड़ी चलने की धीमी आवाज पृष्ठभूमि में होती रहती है।]

वाचक रोज ही उनकी यह बेमतलब, बेकार, बेटिकट यात्रा होती। घर में लोग समझते, वे अनिवार्य खेल खेलने स्कूल गए हैं। किसी को भला असलियत क्या मालूम। पहली अक्तूबर को, जिस दिन लाइन पर ट्रेन चली थी, उस दिन...

[एक संक्षिप्त मौन]

श्याम मेरा एक प्रस्ताव है, रामकिशुन।

रामकिशुन क्या, श्याम?

श्याम याद है न, आज से कानपुर की गाड़ी चलने वाली है?

रामकिशुन : हां, तो ?

श्याम : क्यों न हम लोग उस पर सफर करें ?

रामकिशुन : कैसे ?

श्याम : कैसे ? (जरा रुक कर) अजीब आदमी हो ! बिना टिकट, और कैसे ?

रामकिशुन : नहीं !

श्याम : हां, शाम को चार बजे गाड़ी जानेवाली है न, उसी से हम लोग चलेंगे ।

रामकिशुन : कहां ?

श्याम : अरे खैरादा, और कहां ? इतने बड़े हो गए, पर रहे निरे बुद्धू ही, जरा भी अकल न आई ।

रामकिशुन : (विचार में डूबे स्वर में) यह तो ठीक है । पर लौटेंगे कैसे ?

श्याम : साढ़े पांच बजे कानपुर से आने वाली गाड़ी हमें मिलेगी, उसी से चले आएंगे ।

रामकिशुन : और पकड़े गए तो ?

श्याम : अरे, हट, कायर कहीं के ! पकड़े कैसे जाएंगे !

रामकिशुन : पर एक बात है । आज ही से तो 'कंपलसरी गेम्स' शुरू होने वाले हैं । उनमें नहीं जाएंगे तो फाइन ठुकेगा ।

श्याम : हां, यह बात तुमने कही अक्लमंदी की । सवाल टेढ़ा है । (सोचते हुए) पर इसे हल करना ही पड़ेगा, हल करना ही पड़ेगा, बिना हल किए काम ही नहीं चलेगा । किसी न किसी तरह हमें इस मुसीबत से छुटकारा पाना ही चाहिए । पाना ही चाहिए । (रुक कर) पर अभी तो पूरा दिन पड़ा है । ...वह देखो, बच्चा आ रहा है, उससे भी सलाह कर लें । (पुकार कर) बच्चा !

बच्चा : हां ।

श्याम : हम लोगों ने एक मजेदार स्कीम बनाई है आज ।

बच्चा : क्या ?

श्याम : तुम बता दो रामकिशुन ।

रामकिशुन : श्याम का कहना है कि आज शाम को हम लोग चार बजे वाली गाड़ी में बिना टिकट खैरादा चलें, और छः बजे वाली गाड़ी से लौट आएं । तुम्हारी क्या राय है ?

बच्चा : (खुश होकर) स्कीम बहुत अच्छी है । मैं बिलकुल तैयार हूं ।

श्याम : बस एक बात रह जाती है । आज ही से 'कंपलसरी गेम्स' शुरू हो रहे हैं । उनमें न जाने पर फाइन लगेगा । किसी तरह हम

मुसीबत से छुटकारा मिलता तो ठीक हो जाता।

बच्चा : तो यह कौन सी बड़ी बात है। स्कूल पहुंचते ही मैं नागर साहब से कहूंगा और देखना, आज ही क्या हमेशा के लिए खेलों से छुट्टी दिलवा दूंगा।

[क्षणिक निस्तब्धता। संगीत]

वाचक : और सचमुच नागर साहब ने उन तीनों को हमेशा के लिए खेल से छुट्टी दिलवा दी। फिर क्या था। उन्होंने बांदा से खैरादा, और खैरादा से बांदा बिना टिकट यात्रा करनी शुरू कर दी—रोज बिना नागा। दिन बीतते गए। पचीस दिसंबर की दोपहर बीती। चार बजे। कानपुर वाली गाड़ी ने सीटी दी। गार्ड ने सीटी दी, हरी झंडी दिखाई। इंजिन के मुंह से 'भक भक' की आवाज हुई। पहिए डोलने लगे। हमेशा की तरह श्याम, बच्चा और रामकिशुन फर्स्ट क्लास के डिब्बे के दरवाजे और खिड़कियां बंद करके, रोशनी जलाकर अलग अलग बर्थ पर बैठ गए।

[गाड़ी स्टार्ट होने की, फिर पटरियों पर दौड़ने की आवाज होती है।]

वाचक : हमेशा की तरह केन नदी का पुल मिला, भूरागढ़ का किला दिखाई पड़ा, ऊंची-नीची जमीन आई, आठ किलोमीटर का सफर तय हुआ, और खैरादा स्टेशन आ गया।

[गाड़ी के धीमे होकर रुकने की आवाज होती है।]

रामकिशुन : श्याम, दरवाजा खोलो।

श्याम : (इत्मीनान से) घबराते क्यों हो, खोल तो रहा हूं?

[चरमराहट की आवाज होती है, जैसे दरवाजा खोला जा रहा हो। फिर 'भड़ाक' से द्वार बंद होता है।]

श्याम : अरे, बाप रे!

बच्चा : क्या हुआ?

श्याम : (फुसफुसाकर) चुप रहो। यमदूत है।

रामकिशुन : यमदूत! यमदूत क्या हैं?

श्याम : चुप रहो! उधर का दरवाजा खोलता हूं।

[दरवाजा खुलता है और 'भड़ाक' की आवाज के साथ बंद होता है।]

श्याम : बाप रे! इधर भी!

रामकिशुन-बच्चा : (एक साथ) कौन?

श्याम यमदूत !

[गाड़ी चलने के लिए सीटी देती है।]

रामकिशुन (झल्लाए स्वर में) क्या कह रहे हो, श्याम ? दरवाजा खोलो। गाड़ी छूटने वाली है।

श्याम (घबराए स्वर में) दरवाजा खोलना बेकार है। अब नीचे नहीं उतर सकते।

रामकिशुन-बच्चा (एक साथ) क्यों ?

श्याम मैं दरवाजा जरा सा खोलता हूं। तुम खुद देख लो।

[धीमी चरमराहट के साथ द्वार खुलता और बंद होता है।]

रामकिशुन अब क्या होगा ?

श्याम यही तो मैं भी सोच रहा हूं।

बच्चा कुछ न कुछ तो करना ही चाहिए।

[गाड़ी चल पड़ती है और रफ्तार पकड़ लेती है।]

श्याम किसी न किसी तरह, किसी भी स्टेशन पर हम लोगों को उतर पड़ना चाहिए। फिर जो गाड़ी सबसे पहले मिलेगी, उसी से लौट जाएंगे।

[गाड़ी चलती रहती है।]

वाचक पर वे किसी भी स्टेशन पर उतर न पाए। हर स्टेशन पर वे दरवाजा खोलते, पर यमदूतों को देखकर भयभीत होकर फौरन डिब्बे में जा बैठते। इसी तरह कई स्टेशन निकल गए। 'यमुना दक्षिणी किनारा' नामक स्टेशन आया। आगे यमुना का पुल था। फिर 'हमीरपुर रोड' स्टेशन। गाड़ी 'यमुना दक्षिणी किनारा' से छूटी तो...

[बाहर से दरवाजा भड़भड़ाने की आवाज होती है।]

श्याम चुप बैठना बिलकुल।

रामकिशुन-बच्चा (एक साथ) कौन है ?

श्याम (मुंह में उंगली लगाकर) श-श-श-श। यमदूत है।

[दरवाजा फिर भड़भड़ाया जाता है।]

एक आवाज (जोर से) दरवाजा खोलो।

[क्षणिक निस्तब्धता। फिर भड़भड़ाहट और क्रोधपूर्ण 'दरवाजा खोलो'।]

रामकिशुन : (कांपते स्वर में) दरवाजा खोल दो, श्याम !

श्याम : अच्छा !

बच्चा : (**अपने आप, जल्दी जल्दी**) जय हनुमान ज्ञान गुण सागर, जय कपीश तिहुं लोक उजागर।

[दरवाजा खुलता है।]

वही आवाज : (**भारी स्वर में**) टिकट।

[क्षणिक निस्तब्धता।]

वही आवाज : (**और तेजी से**) टिकट।

बच्चा : (**धीमी आवाज में, जल्दी जल्दी**) भूत पिशाच निकट नहीं आवैं, महावीर जब नाम सुनावैं। हे महावीर इस पिशाच को यहां से दूर करो।

रामकिशुन : (**लड़खड़ाते स्वर में**) टिकट तो हमारे पास नही है?

टिकटचेकर : (**जोर से हंसकर**) टिकट नहीं है? कोई बात नहीं। रुपए निकालो, मैं बनाए देता हूं।

श्याम : कितने?

टिकटचेकर : सत्रह रुपए पचास पैसे।

श्याम : इतना तो हमारे पास न होगा।

टिकटचेकर : कितना होगा। दस रुपए दो, मैं तुम्हें छोड़ दूगा।

बच्चा : (**पहले ही की तरह**) महावीर विक्रम बजरंगी, कुमति निवार सुमति के संगी। हे हनुमानजी, इस टिकटचेकर को सुमति दो कि यह हम लोगों को छोड़ दे।

रामकिशुन : पर इतना भी तो हमारे पास नहीं है।

टिकटचेकर : तो क्या है? पांच है!

श्याम : जी नहीं।

टिकटचेकर : नानसेंस! तब क्या है तुम्हारे पास?

श्याम : जी, हमारे पास तो सिर्फ पांच आने पैसे हैं।

टिकटचेकर : (**एकदम उछलकर**) यू इडियट! मुझसे मजाक करते हो।

श्याम : नहीं साहब, मजाक नहीं करते। हमारे पास इसके अलावा सचमुच कुछ नहीं है। हां, ये नेकर और कमीजें जरूर हैं जो हम पहने हुए हैं। चाहिए तो...

टिकट चेकर : मुझसे मजाक करते हो। अभी मैजिस्ट्रेट के सामने ले जाऊंगा तो दीवाला बोल जाएगा।

रामकिशुन : नहीं, साहब!

टिकटचेकर : तो फिर सोच लो एक बार!

श्याम-रामकिशुन : क्या सोचें, साहब! जितना बता चुके हैं उससे ज्यादा है ही नहीं हमारे पास। पर हम वादा करते हैं कि अगर आप हमें

छोड़ दें तो फिर कभी बिना टिकट यात्रा न करेंगे।

टिकटचेकर (**क्रुद्ध स्वर में**) चुप रहो !

बच्चा (**अपने आप**) दुर्गम काज जगत के जेते, सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते।...हे बजरंगी यह दुर्गम काज सुगम कर दो कि यह चेकर हमें छोड़ दे।

[गाड़ी धीमी होने लगती है।]

वाचक पर टिकटचेकर ने उन्हें छोड़ा नहीं। हमीरपुर रोड स्टेशन आ गया। उन्हें उतार कर चेकर दूसरे फर्स्ट क्लास के डिब्बे में ले गया। रेलवे मैजिस्ट्रेट साहब ऊनी ओवरकोट पहने ऊनी कपड़ों के बीच बैठे थे। पचीस दिसंबर की रात के आठ बजने वाले थे। कड़ाके की सर्दी थी। पर मैजिस्ट्रेट साहब ने शुद्ध हवा आने के लिए खिड़कियां खोल रखी थीं।

श्याम (**कांपते स्वर में फुसफुसाकर**) बड़ी सर्दी है।

रामकिशुन मेरी तो हड्डियां कांप रही हैं।

बच्चा अम्मा-बाबूजी को बड़ी चिंता हो रही होगी।

टिकटचेकर हुजूर, ये लड़के फर्स्ट क्लास में बिना टिकट सफ़र कर रहे थे।

मैजिस्ट्रेट (**भारी स्वर में**) क्या ?

टिकटचेकर ये तीनों बिना टिकट...

मैजिस्ट्रेट ठीक है, ठीक है, पचास पचास रुपए जुर्माना।

श्याम, बच्चा, रामकिशुन : बाप रे !

श्याम और मैजिस्ट्रेट साहब, अगर हम लोग इतना जुर्माना न दे सके तो ?

मैजिस्ट्रेट तीन तीन महीने की कैद (**टिकटचेकर से**) आप जाइए, बलबीर साहब !

टिकटचेकर जी हुजूर !

[गाड़ी चल पड़ती है।]

मैजिस्ट्रेट : (**भारी स्वर में कुछ मुलामियत लाकर**) कहां से चढ़े थे ?

श्याम, बच्चा, रामकिशुन : बांदा से।

मैजिस्ट्रेट : कहां जाना था ?

तीनों : खैरादा।

मैजिस्ट्रेट : क्या काम था ?

तीनों : कुछ नहीं।

मैजिस्ट्रेट : कुछ नहीं ? (**हैरान स्वर में**) कोई काम नहीं, फिर भी गाड़ी पर चढ़े। क्या बात है, सच सच बताओ। जेब काटनी थी ? (**थोड़ा मौन**) हां बताओ, जेब काटनी थी ?

श्याम : (**साहस करके**) कोई काम नहीं था, साहब, हम लोगों को एक नशा सा हो गया है।

मैजिस्ट्रेट : (**चौंक कर**) नशा ?

श्याम : जी हां, हम करीब करीब रोज इसी गाड़ी में खैरादा तक आते हैं, और साढ़े पांच बजे वाली गाड़ी से बांदा लौट जाते हैं। (**जरा रुक कर, जल्दी से**) लेकिन मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि भविष्य में हम कभी ऐसा नहीं करेंगे।

मैजिस्ट्रेट : (**धीमी हंसी हंस कर, जैसे यह बात सुनकर, उन्हें बड़ा मजा आया हो**) पढ़ते हो ?

रामकिशुन : जी हां, आठवें दर्जे में।

श्याम : पहली अक्तूबर को, जिस दिन पहली बार गाड़ी चली थी, हम लोग खैरादा तक आए थे। उसके बाद तो नशा ही हो गया।

मैजिस्ट्रेट : फिर खैरादा में उतरे क्यों नहीं ?

बच्चा : यमदूतों के कारण। शायद गैंग चल रहा है आज ?

मैजिस्ट्रेट : (**खुलकर हंसने के बाद**) तुम लोग बड़े मजेदार लड़के हो। (**जरा रुक कर**) सर्दी लग रही होगी, लो यह कंबल ओढ़ लो।

श्याम : (**फुसफुसा कर**) अंधा क्या चाहे दो आंखें।

रामकिशुन : शायद हम लोग बच जाएंगे।

बच्चा : सब हनुमानजी का प्रताप है।

श्याम : कंबल तो बड़ा गरम है।

मैजिस्ट्रेट : (**अति गंभीर स्वर में**) तो अब क्या करोगे तुम लोग ?

तीनों : (**लड़खड़ाते स्वर में**) क्या करेंगे ? क्या...

मैजिस्ट्रेट : हां, क्या करोगे ?

श्याम : करेंगे क्या, जो कुछ हैं, हमीं हैं।

मैजिस्ट्रेट : तो तीन तीन महीने काटने पड़ेंगे।

[थोड़ी खामोशी]

मैजिस्ट्रेट : (**गंभीर स्वर में**) हूं। तुम्हारा नाम क्या है ?

श्याम : श्याम।

मैजिस्ट्रेट : और तुम्हारे दोस्तों के ?

श्याम : इनका रामकिशुन, और वह जो सिकुड़े बैठे हैं, उनका बच्चा।

मैजिस्ट्रेट : तुम्हारे पिता क्या करते हैं? (**कुछ देर मौन रहता है**) तुम्हा पिता क्या करते हैं?

रामकिशुन : (**थोड़े मौन के बाद**) बांदा के डिस्ट्रिक्ट और सेशन जज हैं।

मैजिस्ट्रेट : कौन, मिस्टर शर्मा?

श्याम : (**धीमे स्वर में**) जी हां।

मैजिस्ट्रेट : ओह, तो तुमने पहले क्यों नहीं बताया? तुम्हारे पिता तो मे ख़ास दोस्त हैं। हम लोग एम० ए० तक साथ साथ पढ़े थे।.. चाय पियोगे?

श्याम : एक एक लोटा। (**धीमें हंसता है**)

मैजिस्ट्रेट : (**हंसने के बाद**) तुम ठीक अपने पिता की तरह शैतान हो पर एक बात गांठ बांध लो। बिना टिकट यात्रा करना अच्छ बात नहीं। मान लो मेरी जगह पर कोई और होता तो?.. पर मैं जुर्माना माफ नहीं करूंगा।

श्याम : जैसा आप चाहें।

मैजिस्ट्रेट : इस बार तो जुर्माना अपने पास से अदा कर दूंगा, पर प्रतिज्ञा करो कि अब कभी बिना टिकट यात्रा नहीं करोगे।

तीनों : हम अब कभी बिना टिकट यात्रा नहीं करेंगे, कभी नहीं...

[आवाज धीरे धीरे मंद पड़ती है। संगीत के साथ समाप्ति।]

(१९५६)

सूरज की जीत

□ उमाकांत मालवीय

पात्र

सूरज	हरित (हरा रंग)
इंद्रधनुष	रश्मि
लाल रंग	मेघराज
नील (नीला रंग)	प्राची
पीत (पीला रंग)	समीर

कुछ बादल

पहला दृश्य

[सूरज के आसमानी घर में रश्मि, चांद, तारे और इंद्रधनुष सभी प्रसन्नचित्त हो खेल रहे हैं। पावस की ऋतु है। इंद्रधनुष कई बार बाहर जाकर खेलने की अनुमति मांगता है। किंतु बूढ़ा पिता सूरज उन्हें आज्ञा नहीं देता। रश्मि भी अपने भाई इंद्रधनुष के साथ है। उधर इंद्रधनुष का धीरज छूट रहा है, झुंझलाहट के कारण उसकी आंखें छलछला आती हैं। रश्मि सीधी-सादी लड़की है। वह सूरज के मना करने पर संतोष करके बैठ जाती है। इंद्रधनुष को नाराज देखकर सूरज उसे समझाता हुआ कहता है।]

सूरज : इतने बड़े हुए तुम लेकिन संकट से अनजान हो।
ज्ञात नहीं यह पावस का दिन, तुम इतने नादान हो।
बाहर काले बादल के दल, घुमड़ रहे आकाश में।
घात लगाए बैठे हैं, वे इस दुर्लभ विश्वास में।

[मेघगर्जन की ध्वनि एक ओर से आती है।]

तहस-नहस कर बूढ़े रवि को औ' उसके परिवार को।
एक छत्र हो राज्य करें, फिर जीते नभसंसार को।
माना यह, तुम बड़े हुए हो, पर फिर भी कमजोर हो।
दुश्मन से लोहा लेने को, अभी न तुम शहजोर हो।

[इंद्रधनुष को सूरज की भली अमृत सी सीख विष मालूम देती है। वह फिर बूढ़े पिता-सूरज से कहता है।]

इंद्रधनुष : तुम नाहक डरते हो बाबूजी, मैं पक्का शूर हूं।

दुश्मन से मैं कभी न डरता, ताकत में भरपूर हूं ।

[सूरज फिर इंद्रधनुष को समझाता है। आगे हो सकने वाली दुर्घटनाओं की कल्पना से वह सिहर जाता है। उसका गला भर आता है।]

सूरज : जिद न करो तुम मेरे बच्चे, मैं हूं इतना जानता।
तुम सुंदर हो, अति महान हो, सारा जग है मानता।
तुम यदि मेरे निकट रहोगे, मुझमें अमित रहेगा बल।
जब हम सब मिलकर रहेंगे, कर न सकेंगे कुछ बादल।

[सूरज का गला बुरी तरह भर आता है। वह आगे नहीं बोल पाता। अपने सयाने बेटे इंद्रधनुष के सिर पर हाथ फेरता हुआ अपनी भरी हुई आंखें पोंछने लगता है। इंद्रधनुष अपनी नादानी के कारण सूरज की बात नहीं मानता। वह समझता है कि केवल उसे घर में रोक रखने की यह उसके पिता की चाल है। अतः पिता की सीख को ठुकराकर वह अलग होने का निश्चय करता हैं।]

इंद्रधनुष : मुझे रोक रखने की बाबूजी, यह केवल चाल है।
मुझको हाथ लगा दे कोई, किसकी यहां मजाल है।
अपनी आजादी खोकर मैं, यहां न रह सकता क्षण भर।
मैं तो बाहर ही जाऊंगा, घर क्या है यह बंदीघर।

[इंद्रधनुष की नाराजगी सुनकर उसकी मुंहबोली बहन रश्मि उसे मनाने आती है।]

रश्मि : कहां चले तुम सुरधुनु भैया, घर से यों नाखुश होकर।
बाबूजी की बात न टालो, पछताओगे जीवन भर।

[अभिमानी इंद्रधनुष को प्यारी बहन रश्मि की भी बात अच्छी नहीं लगती। उसकी भोली-भाली प्रार्थना उसे तीर सी लगती है। वह बहन को भी झिड़क देता है।]

इंद्रधनुष : जाओ, जाओ, घर में बैठो, मुझे न दो यह उलटी सीख।
जब तेरे दरवाजे जाऊं, मत देना तुम मुझको भीख।

[इतना कहकर पिता सूरज और बहन रश्मि को दुखी छोड़कर अभिमानी इंद्रधनुष अपने बेटे लाल, पीत, नील और हरित को लेकर घर से बाहर चल देता है। भाई-भतीजों को घर से यों रूठकर जाने देख रश्मि

सिसक सिसककर रोने लगती है। सूरज उसे स्नेह से समझाने की कोशिश करता है किंतु उसका भी गला भरा हुआ है। वह बार बार आंखों से भर आने वाले अपने आंसू पोंछता है। रश्मि का सौतेला भाई समीर उसके बगल में सिर झुकाए हुए निकल जाता है। वह स्वयं इतना दुखी है कि कुछ कह नहीं पाता।]

दूसरा दृश्य

[एक ओर आकाश कुछ साफ हो चला है। पश्चिम में काले बादलों के कुछ टुकड़े बच रहे हैं। इंद्रधनुष अपनी पूरी शान से चमक रहा है। धूप-छांह की आंख-मिचौनी जारी है, धरती गीली है। लगता है, एकाध लहरा पानी बरस चुका है। एक कोने में सूरज और काले बादलों का युद्ध चल रहा है। कभी सूरज तो कभी बादल जीतते से मालूम होते हैं। इंद्रधनुष निश्चिंत होकर चमक रहा है। शीतल पुरवइया हौले हौले डोल रही है। पेड़ के पत्ते तालियां बजा रहे हैं। एक वृक्ष पर कुछ भीगे हुए कौवे पंख फुलाए हुए अपने पंखों को हिला हिलाकर पानी झाड़ रहे हैं। इंद्रधनुष के बेटे उसके सौंदर्य का कारण अपने को बताकर अपनी वाहवाही करते हैं।]

लाल : मैं उषा की लाली से भी बढ़-चढ़कर हूं,
मैं संध्या की लाली से भी सुंदरतर हूं।
मुझसे ही है इंद्रधनुप का गौरव बढ़ता,
मेरे ही बल पर वह नभ के माथे चढ़ता।

[इंद्रधनुष बेटों के यह लक्षण देखकर भयभीत होता है और सोचने लगता है क्या करूं, क्या न करूं? तब तक...]

नील : मैं सागर की गहन नीलिमा से भी सुंदर,
मैं अंबर की सरल नीलिमा से भी बढ़कर।
मुझसे ही है इंद्रधनुष का गौरव बढ़ता,
मेरा ही बल पर वह नभ के माथे चढ़ता।

[पीत भला इन डींगों को कैसे सहन कर सकता। आखिर वह भी बोल पड़ता है।]

पीत : मैं सुवर्ण का और धूप का पीलापन हूं,
मैं केशर की महक और नभ का चंदन हूं।
मुझसे ही है इंद्रधनुष का गौरव बढ़ता,
मेरा ही बल पाकर वह नभ के माथे चढ़ता।

[पीत की बात सुनकर हरित की भौहें तन जाती हैं और वह भी अकड़कर बोलता है।]

हरित : मैं सावन की हरियाली से सुंदरतर हूं,
मैं तोते के पंखों से भी बढ़-चढ़कर हूं।
मुझसे ही तो इंद्रधनुष का गौरव बढ़ता,
मेरे ही बल पर वह नभ के माथे चढ़ता।

[इंद्रधनुष की सहनशीलता का बांध टूट जाता है। आखिर वह झुंझलाकर बोलता है।]

इंद्रधनुष : तुम सब तो मेरे संग रहकर गौरव पाते।
और, अलग रहकर कौड़ी के तीन कहाते।

[इंद्रधनुष के घर की कलह देखकर रश्मि फिर दौड़ी आती है। उसका जी नहीं मानता। वह उनको समझाने की फिर कोशिश करती है।]

रश्मि : तुम सब पर परिवार टिका है,
तुम तो शोभा हो अंबर की।
तुम लड़ते रह जाओगे यदि,
इज्जत बच न सकेगी घर की।

[अभिमानी भतीजों को बुआ रश्मि की बात अच्छी नहीं लगती और वे भी उसे झिड़क देते हैं।]

लाल, पीत, हरित तथा नील (**एक साथ**) :
घर जाओ, बाबूजी तुम को झिड़क चुके हैं,
हम न यहां झिडकी के आगे कभी झुके हैं।

[दुखी होकर रश्मि लौट जाती है। लाल, इंद्रधनुष से कहता है।]

लाल : तुम बाबा से अलग हुए थे अपनी आजादी की खातिर।
तो मैं ही क्यों साथ रहूंगा अपनी बरबादी की खातिर।

[इंद्रधनुष रुआंसा होकर अपने बेटों का मुंह देखने लगता है। तब तक...]

हरित : अलग अलग होकर हम देखें हममें कितना पानी है,
यह बूढ़ों की गीदड़भभकी जानी औ' पहचानी है।

[हरित के कथन के साथ ही सभी अलग हो जाते हैं। इंद्रधनुष का सारा सौंदर्य नष्ट हो जाता है। फीका फीका सा इंद्रधनुष डबडबाई आंखों से यह सब देखता रह जाता है।]

तीसरा दृश्य

[सिंहासन पर मेघराज कुछ गंभीर होकर बैठे हैं। तब तक उनका गुप्तचर भूरा बादल आता है। उसे देखकर मेघराज दुश्मन का समाचार पूछता है।]

मेघराज : दुश्मन के खेमे का हाल बताओ, भाई !
क्या अपनी किस्मत कुछ सुंदर रंगत लाई ?

भूरा बादल : दुश्मन के घर फूट पड़ गई, यह अपना सौभाग्य है।
छिन भर में इन सबको जीतो, नभ पर अपना राज्य है।

[मेघराज के अट्टहास से, कर्कश मेघध्वनि से, आसमान कांपने लगता है। मेघराज को मनचाहा सुंदर मौका मिल जाता है। वह अपनी बहन बिजली को बुलाकर कहता है।]

मेघराज : जाओ तुम दुश्मन के सर पर आफत बनकर टूटो,
फूट पड़ गई है उस घर में जाकर जीभर लूटो।
मैं भी अपनी सेना लेकर पहुंच वहां जाऊंगा,
और शत्रु का सर्वनाश कर पूरा सुख पाऊंगा।
पूरव में बादल से लड़कर सूरज थककर हारा,
इन्हें हरा कर नभ का होगा सारा राज्य हमारा।

[मेघराज अपनी सेना लेकर इंद्रधनुप के विरुद्ध आगे बढ़ता है। सभी बादल मिलकर रणगीत गाते हैं। बादल की गरज से युद्ध का बाजा बजता है।]

सब बादल : दुश्मन का सर चूर करो।
सबके सब मिल बिगुल बजाएं,
धरनी औ अंबर थर्राएं,
दुश्मन सब हथियार डाल दे।
इतना तुम मजबूर करो।

सब : दुश्मन का सर चूर करो।

तीसरा बादल : माना हम हैं बादल काले,
पर आफत के हैं परकाले।
शत्रु हृदय में घाव हुआ जो,
उसे बढ़ा नासूर करो।

सब : दुश्मन का सर चूर करो।

[मेघसेना रणगीत गाती हुई आगे बढ़ती है। दुश्मन के घर फूट पहले ही पड़ चुकी है। अतः इंद्रधनुप को जीतना बादल के लिए मुश्किल न था। बिजली अपनी

पूरी ताकत से इंद्रधनुष के परिवार पर टूट पड़ती है। इस प्रकार अचानक किसी भी आक्रमण का सामना करने के लिए वह तैयार न था। फलतः बेटों सहित बुरी तरह घायल होकर इंद्रधनुष भाग जाता है। बेटों से कुछ करते नहीं बनता। वह बेटों सहित बहन रश्मि के पास जाकर गिड़गिड़ाने लगता है।]

इंद्रधनुष : क्षमा करो तुम रश्मि बहन अब, मैं हूं तेरा अपराधी।
पितावचन को टाल, मोल ले ली है मैंने बरबादी।
और मूर्खतावश मैंने, तेरा अपमान किया है।
झूठा अभिमानी दुनिया में, कितने रोज जिया है।

[रश्मि इंद्रधनुष की तकलीफ देखकर करुणा से भर उठती है। वह झट से उनको समझाते हुए कहती है।]

रश्मि : भूला हुआ सुबह का आखिर घर पहुंचा है शाम हुई।
अब दुश्मन की विजय समझ लो, क्षण भर में बेकाम हुई।
तुम सब मिलकर घर आए हो, यह एका रंग लाएगा।
यह सर पर आई आफत को, आखिर दूर भगाएगा।
चलो पिताजी के चरणों में, झुककर सभी प्रणाम करो।
पछताने से क्या पाओगे, अब चलकर कुछ काम करो।

[रश्मि घायल भाई इंद्रधनुष और भतीजों की मरहम-पट्टी कर उन्हें धीरज बंधाती है और उन सबको लेकर सूरज के दरबार की ओर चल पड़ती है।]

चौथा दृश्य

[दरबार में सूरज अकेला उदास बैठा है। एक दरवाजे से रश्मि के साथ घायल इंद्रधनुष और उसके बेटे प्रवेश करते हैं। रश्मि का संकेत पाकर सब सूरज के चरण पकड़ लेते हैं। सूरज प्रेम के आवेश में आकर इंद्रधनुष को गले लगाता है। सबकी आंखों में आंसू और ओंठों पर मुस्कान आ जाती है। इधर मेघदल विजय की खुशी में रंगरलियां मना रहा है। उन्हें क्या पता कि दूसरी ओर क्या हो रहा है। भोर होते ही सूरज इंद्रधनुष पर रश्मि का तीर चढ़ाकर युद्धक्षेत्र की ओर चलता है। सूरज के चलने के साथ प्राची गीत गाती है।]

प्राची : आया नया विहान।
अंधकार के बादल भागे, तजकर निद्रा जगे अभागे।
सब मिलकर जब एक हो गए, उगजी शक्ति महान।

आया नया विहान।
दुर्ग चूर हो गया विपत्ति का, सूरज चमक रहा संपत्ति का।
नई शक्ति का दर्शन पाकर टूटा गर्व गुमान।
आया नया विहान।
रात गई लो भोर हुई है, ओस लजाती छुई-मुई है।
रवि तम पर जय पाने को, ले आया तीर कमान।
आया नया विहान।

[गीत समाप्त होते होते सूरज पूरब की ओर से आसमान पर चढ़ जाता है। मेघों को ललकार कर वह इंद्रधनुष से रश्मि के तीर छोड़ता है। धनुष से छूटते ही रश्मि मेघों के टुकड़े टुकड़े कर डालती है। मेघों के स्याह छोटे छोटे टुकड़ों को समीर गेंद की तरह उछाल उछाल कर इधर-उधर फेंकने लगता है। इस खिलवाड़ से सूरज का काम आसान हो जाता है। घायल-घबराए हुए बादल मैदान छोड़कर क्षितिज-पार भाग जाते हैं। सूरज तब इंद्रधनुष को पूरी आजादी से खेलने के लिए आसमान पर छोड़ देता है। शाम हो चुकी है, अतः वह थका-मांदा विजयसंतोष के साथ अस्ताचल की ओर बढ़ जाता है। रजनी नीलम की थाली में चांद का दिया जलाकर उसकी आरती उतारती है। आसमान साफ हो जाने पर तारों के दिए जलाकर वह दीवाली मनाती है। समीर गुनगुनाने लगता है।]

समीर : धीरे धीरे विजन डुलाकर रवि का श्रम मैं दूर करूंगा।
और ज्योति के पुंज सूर्य का हाथ बंटाकर तिमिर हरूंगा।
नभ पर घिर घिरकर ये बादल, मेरे तन को करते घायल।
अतः शत्रु पर जय पाने को, दिनकर का ही संग करूंगा।
घोर विपत्ति के भीषण क्षण में घर पर हो या समरांगण में।
देव तुम्हारा आश्रय पाकर, मैं दुश्मन से नहीं डरूंगा।

[समीर गुनगुनाता हुआ एक ओर जाता है और धीरे धीरे पर्दा गिरता है।]

बच्चों की कचहरी

□ केशवचंद्र वर्मा

पात्र

गोपी	टिल्लो
रामू	परभू
चंपी	माली
जरी	

[गोल कमरे में सब बच्चे जमा हैं। हल्ला-गुल्ला, शोर। आपस में बातचीत करने की आवाज।]

गोपी : भई, अगर इतना हल्ला-गुल्ला मचाओगे तो फिर हम लोग जिस काम के लिए यहां इकट्ठे हुए हैं वह सौ जन्म में भी न हो पाएगा।

रामू : हां, सुनो। मैं कह रहा हूं कि अगर अपने अधिकारों के लिए हम लोगों को लड़ना है तो एका रखकर ही आगे बढ़ सकते हैं। आप सब लोगों की अगर एक राय हो तभी हम लोग माली पर मुकदमा चलाएं।...ऐसे कई आदमी हैं जो हम बच्चों के अधिकारों का ठीक ठीक ख्याल नहीं करते। हम उन सबको बारी बारी से अपनी कचहरी में लाएंगे। इसके लिए यह बहुत जरूरी है कि आप सब लोग एक राय होकर हमें बताएं। हम सबसे पहले माली को बुलाना चाहते हैं।

कई बच्चे : (१) हां, हां, माली को जेल में बंद करवा दो दादा !
(२) जेल कर दो !
(३) बेंत लगाओ दादा !!

रामू : (समझाते हुए) ठीक है, ठीक है, सब हो जाएगा।...सब हो जाएगा। मगर आपकी राय है न ?

कई स्वर : हां, हां ! राय है...मुकदमा चलाओ।

गोपी : अच्छा तो अब जज किसे बनाया जाए ?

चंपी : राजू दादा को जज बनाओ। एक झापड़ में सबको ठीक कर...

गोपी : चुप रह चंपी। जज कहीं झापड़ थोड़े ही मारता है। वह तो फांसी देता है, फांसी !

टिल्लो : तब तो परमू भैया को बनाओ। इन्होंने तो जमील को उठा के पटक दिया था। इनको कह दो, ये फांसी लगा देंगे।

गोपी : तू भी बड़ी उल्लू है टिल्लो। जज थोड़े ही फांसी लगाने बैठता है। जज तो हुक्म करता है सोच-समझ कर...

परमू : मेरी मानो मैं कहूं। भाई सोचने-समझने वाली बात है। रम्मू दादा को जज बनाओ। वही सबसे होशियार आदमी अपने बीच में हैं। क्यों भाई, क्या कहते हो ?

सब : हां, हां, ठीक है...

दृश्य परिवर्तन

[कमरा कचहरी की तरह सजा दिया गया है। रामू जज की कुर्सी पर बैठा हुआ। चार-पांच लड़कों की जूरी बनाकर बैठा दी गई। टिल्लो, चंपी और गोपी मुकदमा चला रहे हैं। गोपी वकालत कर रहा है। राजू, परमू पुलिस के रूप में मौजूद हैं। हल्ला मचता है।]

रामू : (**हथौड़े से मेज ठोकता हुआ**) आर्डर, आर्डर। आप लोग सब चुप होकर बैठिए। मैं अदालत की कार्यवाही शुरू करना चाहता हूं। हां, टिल्लो देवी, आपको क्या कहना है ?

टिल्लो : रामू दादा।

रामू : मिस्टर गोपी, आप इनके वकील हैं। आप इनको बताइए कि अदालत में कैसे बातचीत की जाती है।

गोपी : अरे टिल्लो...जज साहब कहो, जज साहब।

टिल्लो : जज साहब...हमने बाग में से एक गुलाब का फूल तोड़ लिया था। उसके लिए माली ने हमको डांटा है और कहा है कि बाबूजी से शिकायत कर देंगे।

रामू : माली को पेश किया जाए। राजू, ले आओ जाकर।

राजू : यह हाजिर है जज जी। गोविंद माली हाजिर है।

सब : (**एक साथ**) अच्छा, यही है ?

माली : का बात है छोटे सरकार ?

रामू : तुमने टिल्लो को फूल तोड़ने पर डांटा था ?

माली : नाहीं छोटे सरकार। बिटिया कली कली तोड़ के फेंकती रहीं, तो हमने मना कै दिया।...हमका तो भइया...

रामू : (**हथौड़ा ठोकते हुए**) शट अप ! बिटिया का मना कै दिया ? क्या माने हैं ?

गोपी : हां दादा...अरे जज साहब, हमकों भी गोविंद माली ने बाबूजी से डांट खिलवाई थी।

चंपी : हमको भी कहा था कि कान खिचवाएंगे।

रामू : आर्डर, आर्डर, मैं कहता हूं मिस्टर गोपीनाथ आप टिल्लो देवी के वकील की हैसियत से हैं कि आपको खुद कुछ शिकायत है ?

गोपी : (सकपका कर) जी...जी नहीं, जी हां, मुझे जो कहिए, चाहे जो समझिए। मैं तो वकील भी हूं और फरियादी भी हूं।

सब बच्चे : गोविंद माली को सजा दी जाए।

रामू : आर्डर, आर्डर। हां, माली तुमको क्या कहना है इस वारे में ?

माली : अय छोटे सरकार मैं का कहूं ? जौन कुछ हमका कहें का रहा हम तो पहिलेन कहि दीन। हम का करी ? बड़े सरकार रोजै फूल गिनत हैं। जव फूल गायब रहत हैं बड़े सरकार उनके हिसाब मांगत हैं। फिर तू पंच जी सब फूल तोड़ लेत हो तौ फिर कहां से हम उनका हिसाब देई ?

रामू : कुछ नहीं...यह सब फिजूल बात कर रहे हो।

चंपी : फूल बच्चों के लिए नहीं हैं तो क्या बूढ़ों के लिए हैं ?

टिल्लो : क्या बाबूजी फूलों से खेलते हैं ?

गोपी : माली झूठ बोलता है। बाबूजी तो कुछ नहीं कहते। यही हम लोगों पर अपनी साहबी जमाते हैं। लगता है कि बाग इन्हीं के बाप का बनवाया हुआ है। अब तो हमने और राजू ने तय किया था कि अगर फिर कभी हमारी शिकायत की तो हम लोग खूब इनकी मरम्मत करेंगे।

रामू : आर्डर, आर्डर। शांत...गड़बड़ बात अदालत में मत बोलिए। माली साहब, आपका कोई वकील भी है ?

माली : सरकार हमार कौन वकील है। जौन कहित है मान लेव। तौ मान लेव नाही तो फिर इहै समुझि लेव कि हम झूठ कहित हैं।

सब : हां हां, झूठ है, बिलकुल झूठ।

रामू : अच्छी बात है। हर एक आदमी ने इसकी बात भी सुन ली है। और टिल्लोदेवी की बात भी पता चल गई है। अब जूरी लोगों की क्या राय पड़ती है ?

जूरी : (सभी सदस्य) इसको फांसी दी जाए।

सब : हां, हां, बहुत ठीक। (ताली बजती है)

रामू : नहीं, मेरी राय है कि जूरी ने बहुत सख्ती से काम लिया है।

अब भी कुछ सोच-समझ लिया जाए तब फिर जूरी अपनी राय दे। सजा बहुत कड़ी दे दी गई है।

जूरी : **(सभी सदस्य)** कालापानी भेजा जाए।

एक स्वर : लेकिन वहां पर यह बाग की रखवाली करेगा।

दूसरा स्वर : और वहां के बच्चों को भी तकलीफ देगा।

सब : नहीं नहीं, कालापानी नहीं, फांसी दी जाए।

रामू : **(हथौड़ा ठोकता हुआ)** आर्डर, आर्डर ! जूरी लोग क्या कहते हैं ?

जूरी : हमारी राय में जज साहब खुद ही अपनी राय दें।

माली : छोटे सरकार। हमका माफ कै दीन जाय। अब आप लोग जौन जौन कहि हैं तौन तौन हम लोग करव। हम सब नौकर-चाकर आपै लोगन के सेवा के बरे तौ हइन। हमका जौन चाहै तौन सजा दै लैव। चाही तो माफ कै दैव।

जूरी : **(सब लोग)** नहीं नहीं, हरगिज माफ नहीं किया जाए। इस तरह से करने पर इनकी आदत खराब हो जाएगी। आप लोग सब क्या कहते हैं ?

सब लोग : फांसी, फांसी। **(चिल्लाकर)** फांसी दो, इनको।

रामू : **(बहुत गंभीर होकर निर्णय देता है)** आर्डर, आर्डर ! सुनिए। जो कुछ भी दोनों पक्षों ने कहा-सुना है, मैंने सब सुन लिया। मैं समझता हूं कि गोविंद को माफ कर देना इस तरह की हरकतों को भड़कावा देना होगा। इसीलिए सोचता हूं कि गोविंद माली को सजा जरूर देनी चाहिए।

सब लोग : **(चिल्लाकर)** वाह वाह ! हियर ! हियर !

[ताली बजाते हैं, सीटी बजाते हैं।]

रामू : शांत, शांत ! जी हां, यही सोच-समझकर मैं गोविद माली को यह सजा देना चाहता हूं कि यह पचास अमरूद हम लोगों को लाकर दें जो कि हम लोग आपस में बांटकर खाएंगे।

सब लोग : वाह वाह ! **(ताली बजाते हैं)**

रामू : जी हां। और मैं दूसरी बात यह कहना चाहता हूं कि आइंदा से माली जब कभी भी बाग में रहे तब हम लोग न जाएं और अगर जाएं भी तो उसकी आंख बचाकर जाएं। और अगर माली कभी देख भी ले तो हम लोगों से आंखें चुरा ले।

सब लोग : वाह वाह ! वेरी गुड **(शोर)**

रामू : शांत। जी हां, और इतवार के दिन हम लोगों की छुट्टी रहती

है, उस दिन माली बिलकुल ही बाग में न जाए।

सब लोग : बहुत अच्छा...बहुत अच्छा...वाह वाह !

रामू : सब लोग खुश हैं। और माली तुम भी खुश रहो कि फांसी की सजा तुम्हें नहीं दी गई।

माली : (सांस खींचकर) का कही छोटे सरकार। जौन जौन बात हमका कह्यो ऊतौ हमरे लिए कच्ची फांसी ह्वै गई। राम राम...चिरियन केर जान जाय लरिकन के खिलौना...और का कही।

सब : (चिल्लाकर) रामू दादा की जै !

(१९५६)

काला चोर

□ केशवचंद्र वर्मा

पात्र

सुरेश	कालाचोर	जग्गू
शीला		विन्नी

[जग्गू बैठा हुआ किताब के पन्ने उलट रहा है। सुरेश आता है।]

सुरेश : अरे ओ जंगली ! क्या पढ़ता है हर वक्त बैठा बैठा ? चल उठ तुझे बड़ी मजेदार...

जग्गू : अरे तुम क्या मजेदार बताओगे। देखो, देखो, यह किताब नई लाया हूं। सचमुच बड़ी मजेदार है। जब काला चोर निकलकर छत पर से कूदा तब यह पुलिस इंस्पेक्टर भी उसके साथ धड़ाम से कूद पड़ा... बस उसने धड़ से पिस्तौल चला दी और पु...पुलिस

सुरेश : **(हंसता हुआ)**अच्छा, अच्छा; बड़ा मजा आ रहा है। बिस्तर पर लेटे लेटे पिस्तौल की और चोर की बातें पढ़कर बड़ा मजा आ रहा है। कहीं सचमुच सामने आ धमकता तो फिर हजरत, सिट्टी-पिट्टी भूल जाती।

जग्गू : **(उत्साह से)** क्या कहते हो ? मैं होता...मैं होता तो ऐसा कूद-कर पकड़ता कि फिर काला चोर भाग थोड़े ही सकता था...मैं चटपट उसकी गर्दन नाप लेता। क्या समझते हो जग्गू को।

सुरेश : **(हंसते हुए)**कुछ नहीं। कुछ नहीं,ठीक ही समझता हूं जग्गू को। अच्छा, आप तैयार हो जाइए, मैं अभी सबको लेकर आता हूं। खेलने चलेंगे।

जग्गू : हां हां चलूंगा। तुम तैयार होकर आ जाओ। बस किताब में अब दस ही पन्ने रह गए हैं। मैं तब तक इसे समाप्त कर लूंगा। तुम आ जाओगे तब तक न ?

सुरेश : **(बाहर जाते हुए)** तैयार रहना।

[जग्गू किताब के पन्ने पलटता रहता है और भुन भुन करके पढ़ता रहता है। धीमे धीमे उसे नींद आ जाती है। वह सो जाता है। पृष्ठभूमि में गंभीर वाद्यसंगीत

की आवाज, जो कि बताता है कि स्वप्न चल रहा है।
स्टेज पर प्रकाश बहुत हलका पड़ जाता है।]

जग्गू : (**कुछ बड़बड़ाते हुए**) चोर...काला चोर...चाचाजी...वह काला चोर... काला चोर ऊपर चढ़ रहा है। यह आंखों पर काली नकाब डाली है... यह काली पतलून। चाचाजी हाथों में पि...पि...पिस्तौल म...म...मैं...

[काला चोर आता है और वह जग्गू को एक लात मार कर उठाता है।]

काला चोर (**गरज कर**) तू कौन है लड़के ?

[घबराकर उठता है।]

जग्गू मैं...मैं...मैं जग्गू...मेरे पास कु...कुछ नहीं। यही कमीज... पा...पाजामा है। चाहे ले लो।

काला चोर (**डांटकर**) चुप रे। मैं काला चोर हूं। मैं कमीज-पाजामा नहीं लेता हूं, मैं तो आदमियों की जान लेता हूं, जान। यह देखता है भरी पिस्तौल।

जग्गू (**घिग्घी बंध जाती है**) म...म...मेरी जान... न लो...मेरा... मेरे दोस्त... अभी आते होंगे ..मैं खेलने कैसे जाऊंगा। सुनो, मैं पांव छूता हूं। (**रोने लगता है**)

काला चोर (**हंसते हुए**) अच्छा। मगर बता तेरे चाचा की तिजोरी कहां पर है। मैं तुझे जान से मार डालूंगा अगर तूने नहीं बताया। कुंजी लाकर मुझे दे दे, नहीं तो...फिर।

जग्गू (**घबराकर**) हां हां मैं तुझे अभी कुंजी लाकर देता हूं...मेरी जान छोड़ दो। (**रोते हुए**) तुम अगर मुझे मार डालोगे तो चाचाजी बहुत नाराज होंगे मुझ पर कि काला चोर को किताब घर पर क्यों लाया था...

काला चोर : अच्छा, इधर ला कुंजी (**जग्गू कुंजी लाकर देता है**)

[काला चोर तिजोरी खोलता है। तिजोरी में बहुत से गहने रखे हुए हैं।]

काला चोर : ओहो। यहां बहुत गहने रखे हुए हैं। वाह जग्गू...वाह... तूने तो बड़ी मजेदार चीज दिखाई। यह हार तो लाख रुपए से कम का न होगा। (**हार उठाता है**)

जग्गू : मगर तुम जो उसको ले जाओगे तो हमारी अम्मा क्या पहनेंगी ? अभी कल ही तो उनको मोती की शादी में पहनकर जाना है। तुम चाहो तो परसों आकर ले जाना।

काला चोर : वाह मियां। हमको ही चरका पढ़ाते हो। तुम तो हमारे भी चचा निकलोगे। परसों तक यहां इसे रहने भी दोगे?...बस आगे मत बढ़ना नहीं तो खैर नहीं।

जग्गू : **(घबराते हुए)** नहीं नहीं, तुम इसको नहीं ले जा सकते।

काला चोर : अच्छा, यह बात है। तो लो पकड़ो, मैं तो जाता हूं।...

[जग्गू एक डंडा उठाकर टूट पड़ता है और काला चोर के साथ लड़ने लगता है। मारपीट होती है। मंच पर कुछ अंधेरा कुछ उजाला।]

काला चोर : **(लड़ते हुए)** नहीं मानता जग्गू। तो फिर तेरी जान की खैर नहीं। मैं तुझे जान से मार डालूंगा।

जग्गू : **(लड़ते हुए)** मैं पहले तुझे ही समाप्त किए देता हूं। यह ले... **(सहसा जोर से डंडा उठाकर मारता है। काला चोर चिल्लाता है)**

काला चोर : **(चिल्लाते हुए)** आह! ओह मार डाला...मार डाला...हाय मर गए... यह ले पाजी...**(पिस्तौल चला देता है)**

[मंच पर पहले अंधकार फिर रोशनी हो जाती है। काला चोर अदृश्य हो जाता है। जग्गू एक तकिए ऊपर लेटा है।]

जग्गू : **(कराहता हुआ)** अरे...मार डाला, चाचाजी...चाचा जी... **(बड़बड़ाते हुए)** चाचा जी, मैं क्या करूं, काला चोर घर में घुस आया था, मैंने उसे डंडे से मारकर बेहोश कर दिया है। उसको पुलिस में पकड़वा दीजिएगा...मुझको तो गोली लग गई है, मैं नहीं बचूंगा...आज गोली चल गई।

[सहसा सुरेश, रमेश, शीला, बिन्नी सब आ जाते हैं। सब एक साथ खिलखिलाकर हंस पड़ते है।]

सुरेश : **(गाता हुआ)** अरे ओ भलेमानस, कह दिया था कि शाम को पांच बजे बिस्तर पर लेटकर किताब नहीं पढ़ी जाती है। अब ऊंघ रहे हो...ओ जग्गू...

जग्गू : **(आधा सोया हुआ, आधा जगा हुआ)**...सुरेश भाई, तुम देर से आए। मैंने कितना इस बदमाश से कहा कि मुझे मेले जाना है,मगर इस पाजी ने गोली मार ही तो दी। अब मैं नहीं बचूंगा। क्या करूं?

सुरेश : **(हंसते हुए)** अरे किसने गोली मार दी है?

जग्गू : काले चोर ने...मैंने उसे पकड़ कर रखा है। यह देखो, बेहोश

पड़ा है। तुम पुलिस को बुलाकर लाओ...

शीला और बिन्नी : अरे जग्गू, यह तो तकिया है तू जिस पर लदा हुआ लेटा है। यहां कहां काला चोर।(**हंसती है**)

जग्गू : (**जैसे चेतते हुए**) ऐं, क्या कहती हो, तकिया?... तो (**सोचते हुए**) मेरे गोली नहीं लगी...(**गले के पास दिखाते हुए**) यहीं तो लगी थी, मगर यहां तो कुछ नहीं है।

सुरेश : हत्तेरी बौड़म की। रात की कौन कहे, शाम से ही सपने देखने लगे...उठो, चलो, खेलने नहीं चलोगे?

जग्गू : (**सोचते हुए**) यह सब सपना था...तो फिर मैं मरा नहीं होऊंगा लेकिन फिर काला चोर भी तो नहीं पकड़ पाया होऊंगा।... यह कैसा क्या हो गया। तो मैं जिंदा हूं (**सहसा उछलकर**) तो मैं जिंदा हूं... काला चोर मुझको नहीं मार पाया।

[सब हंसने लगते हैं।]

शीला : हां श्रीमान जग्गू महाशय, आप सही-सलामत जिंदा हैं। आप तशरीफ ले चलिए, शाम हो रही है।

[फिर हंसने लगते हैं।]

जग्गू : हां, हां, चलो चलो...क्या कहूं, अब कभी भी शाम को ऐसी किताबें नहीं पढ़ा करूंगा।

[सब बच्चे 'चलो चलो' करते हुए चले जाते हैं।]

पटाक्षेप

(१९५६)

बड़े भैया

□ केशवचंद्र वर्मा

पात्र

मदन शीला रमेश

[घर के सब बच्चे बड़े कमरे में इकट्ठा हैं; इधर-उधर की बातचीत कर रहे हैं।]

मदन : चुप, चुप ! अरे इतना हल्ला मचा कर क्यों बातें करते हो ? बड़े भैया आते होंगे। तुम सबकी हुलिया खराब कर देंगे।

रमेश : हां, मदन। (**हंसकर**) बड़े भैया आकर एकदम बोलने ही लगेंगे, 'तुम कोई बच्चे हो। तुम्हें बोलने का भी शऊर नहीं है। तुम एकदम बेकार आदमी साबित होगे। तुम एकदम निकम्मे निकलोगे। तुम दुनिया में कुछ नहीं कर सकोगे।' है न शीला ?

शीला : अजी और न जाने क्या क्या अपनी सनक में कहते ही चले जाएंगे।

मदन : वैसे बड़े भैया नाराज होते हैं तो बड़ी जल्दी ही खुश भी हो जाते हैं। कहते है, 'देखो, देखो तुम्हारी समझ में नहीं आया है। मेरा मतलब यह नहीं था। मेरा मतलब, मेरा मतलब तुम ठीक नहीं समझे...' बार बार एक ही बात दुहराते हैं। उनकी चिल्ल-पौं से हम लोग थक जाते हैं लेकिन वह हैं कि थकने का नाम नहीं लेते।

शीला : (**हंसकर ताली बजाते हुए**) अजी, सुनो भाई। अजी परसों बड़े भैया ने बहुत मजा किया। एक होटल में चाय पीने के लिए बैठे तो ऐसे बैठे कि जैसे वहां आप कोई नाटक रचने जा रहे हों। बड़े भैया के सामने एक शीशा टंगा था, जिसमें वह रह रहकर अपना मुंह देखते थे और बाल संवारते थे। मैं... कह...

रमेश : झूठी कहीं की। तूने कहां देखा उनको ?

शीला : मैं पिताजी के साथ पास वाले कमरे में बैठी थी। उन्हें क्या पता कि शीला भी वहां जमी है। किसी का इंतजार कर रहे थे। इतने में बड़े भैया के कोई दोस्त आए। काफी पहलवान

जैसे थे। वह रम्मू है न हमारा नौकर। उसके पास बीड़ी के बंडल जो रहते हैं, उस पर उनकी शकल छपी रहती है।

मदन : (**आश्चर्य से**) अच्छा ?

शीला : हां जी, वह फिर आकर बैठ गए। बड़े भैया बहुत खिलखिला कर उनसे बातें करते रहे। बड़े भैया ने चाय मंगवाई, लेकिन वह होटल का बैरा थोड़ी देर में लेकर लौटा तो बड़े भैया एकदम अकड़ गए। वह पहलवान बाबू भी मारने को खड़े हुए।

रमेश : अरे ! फिर क्या हुआ ?

शीला : फिर क्या ? फिर मैनेजर आया और उसने इन दोनों को बाहर निकलवा दिया...(**कान पकड़ती हुई**) बाबा मेरा नाम न लगा देना। नहीं तो बड़े भैया कच्चा ही खा जाएंगे। हां।

मदन : अरे चल। उनसे कौन कहेगा ? जो कहे पहले उसी की मरम्मत शुरू हो जाए। बड़े भैया के करतब मैं बताऊं तुम्हें। एक बार ऐसा हुआ...

रमेश : (**चिल्लाकर**) वह देखो, बड़े भैया आ गए।

मदन : (**सहमकर**) अरे बाप रे...कहां हैं...मर गए...

[बड़े भैया नहीं आए, सब हंसने लगते हैं।]

मदन : (**झेंपकर**) जाओ, मैं नहीं सुनाता...तुम लोगों ने मुझे डरा दिया। हां नहीं तो।

रमेश : हम लोग देख रहे थे कि आप यह जो नकलें उतार रहे हैं, वे बड़े भैया के सामने भी खुलेंगी कि नहीं ? तुम सचमुच बड़े डरपोक हो, मदन !

मदन : जी हां। मैं डरपोक हूं, आप बड़े बहादुर हैं न। बड़े बहादुर की दुम बनते हो तो आओ सुनाओ न बड़े भैया के किस्से ! बड़े भैया आकर वह कानकटाई करेंगे कि तबीयत आपकी सही हो जाएगी...मियां सारी बहादुरी हवा हो जाएगी, हवा।

शीला : अरे, चलो चलो। बहादुर बनने की जरूरत नहीं है। मैं बाहर देख रही हूं। जैसे उनके आने का वक्त होगा मैं चिल्ला दूंगी। तुम सुनाओ जी, मदन।

मदन : बड़े भैया कालिज में एक दिन कबड्डी खेल रहे थे। जानते ही हो एक हड्डी के आदमी। जब बड्डी बड्डी कहकर उधर बढ़े तो इनकी टांग धर ली। बंगाली कुर्ता पहने थे बेचारे। पकड़ने वाले के हाथ में कुर्ते की एक आस्तीन आ गई...बड़े भैया धम्म

से गिर पड़े। जज ने इनको हटा दिया। मैं भी खड़ा खेल देख रहा था। मुझको देखकर बिगड़ गए। कहने लगे, 'यहां क्या कर रहे हो? दिन भर खेलते ही रहते हो कि कभी किताब भी छूते हो?'

शीला : यह तो है कि बड़े भैया बहुत कमजोर हैं। (**बुड्ढों की तरह सिर हिलाकर**) कोई एक धक्का लगा दे तो सौ दुनमुनी खा जाएं।

रमेश : (**गंभीर मुद्रा में**) हम लोगों को चाहिए कि बड़े भैया की तंदुरुस्ती पर खासतौर से ध्यान दें। आखिर हम न करेंगे तो कौन करेगा?

मदन : (**सोचकर**) हमारे छोटे मामा रोज एक एक मन के मुगदर भांजते हैं। कहो तो चार-पांच दिन के लिए मांग लाएं।

रमेश : और भाई, तुम लोग कहो तो पिताजी के लिए रोज चौबीस बादाम पीसे जाते हैं, मैं तीन-चार रोज चुरा लाया करूं।

शीला : (**गंभीरता के साथ**) हमारे दादा तो सवेरे उठते-बैठते हैं। उनके हाथ बहुत मोटे मोटे हैं। जरा सा हाथ चलाते हैं तो मुसरिया निकल आती है। हम लोगों को तो बड़े भैया कान पकड़वा कर उठाते-बिठाते हैं कि बुद्धि सुधर जाए। मेरी तो राय है कि बड़े भैया भी कान पकड़कर दस-पंद्रह वार उठा-बैठा करें...तंदुरुस्ती भी ठीक हो जाए और बुद्धि भी ठीक हो जाएगी...है न?

दोनों : हां हां, ठीक कहती हो।

रमेश : बेचारे बड़े भैया हम लोगों के लिए कितना करते हैं। लेकिन हम लोग उनके लिए कुछ नहीं करते।

मदन : अब की उनकी सालगिरह मना ली जाए।

शीला : कब है जी?

मदन : पहली अप्रैल को बता रहे थे बड़े भैया।

[सब हंसते हैं।]

शीला : ठीक है, ठीक। हम लोग अब की पहली अप्रैल को उनका जन्मदिन मनाएंगे। सब लोग उन्हें एक एक उपहार देंगे।

शीला : (**चिल्लाकर**) होशियार!...आ गए...आइए आइए। बड़े भैया!

[बड़े भैया का प्रवेश]

बड़े भैया : (**नाराजगी के स्वर में**) यह क्या हो रहा है?...मुझको जरा

सी देर हो जाए तो तुम लोग जमीन-आसमान एक कर देते हो...क्या हो रहा था अभी ?

शीला : मैं बताऊं बड़े भैया ?

मदन : (धीरे से) मैं कहूं बड़े भैया ?

बड़े भैया : हां, क्या बात थी ?

शीला : आपकी सालगिरह मनाने की बात हो रही थी।

बड़े भैया : (हंस कर) तुम्हें क्या पता कि मैं कब पैदा हुआ था ?

शीला : बड़े भैया, मदन बताता था कि आप पहली अप्रैल को पैदा हुए थे।

बड़े भैया : (पकड़ने के लिए दौड़ते हुए) शैतान कहीं की।...अच्छा चल...

[शीला भाग जाती है।]

पटाक्षेप

(१९५६)

शेर का शिकार

☐ केशवचंद्र वर्मा

पात्र

विजय	जग्गू
मीरा	एक बालक
बड़े भैया	

[एक ओर से विजय और दूसरी ओर से मीरा का प्रवेश]

विजय : अरे मीरा, कितनी देर से तुम लोगों का इंतजार कर रहा हूं, अब चले हो घर से। वहां हम लोगों ने पिकनिक का प्रोग्राम बनाया है, तुम लोगों के बिना सब अधूरा रहता न।

मीरा : (**चिनचिनाते हुए**) क्या करें, आते आते तो रास्ते में वो जग्गू मिल गया था और तुम जानते ही हो वह कितना गप्पी है। सारा समय बरबाद कर दिया उसने।

विजय : अरे, वह तुम लोगों को कहां मिल गया ?

मीरा : मिल गया क्या, आने लगी तो मैंने सोचा उसे भी लेती चलूं। बस उसी के घर जरा रुक गई थी।

विजय : (**हंस कर**) क्या उड़ा रहा था ?

मीरा : अरे उड़ा क्या रहा था। कहने लगा कि मैं कल चाचाजी के साथ शिकार को गया था तो...(**नकल उतारते हुए**) मैंने ये किया, वो शेर मारा, वो भालू मारा और वो गीदड़ मारा और जाने क्या क्या। (**दोनों हंसते हैं**)

विजय : अच्छा, तो रह कहां गए हजरत ?

मीरा : आते होंगे। हम से कहा है कि तुम चलो, हम अभी आते हैं।

[बड़े भैया का प्रवेश]

बड़े भैया : अरे आज तुम दो ही हो ? बाकी सब कहां रह गए। (**जरा हंस-कर**) अरे विजय, जग्गू आज नहीं दिखाई पड़ा।

विजय : बड़े भैया...आपने जग्गू का नया किस्सा नहीं सुना ?

बड़े भैया : (**जरा मुसकराकर**) क्या हुआ ?

विजय : (**बनाते हुए**) बड़े भैया, वो मीरा से हांक रहा था कि मैंने ये शेर मारा, वो भालू मारा और वो गीदड़ मारा---जाने क्या

क्या ऊंट-पटांग सब।

बड़े भैया : **(हंसते हुए)** मीरा डरी होगी कि जब सब गीदड़ मार चुका है तो कहीं हमको न मारे ?

मीरा : **(मुंह बनाकर)** हां। बड़े चले हैं हमको मारने वाले।

बड़े भैया : अच्छा सुनो, हम तुमको एक बात बताते हैं। अभी जग्गू जब आए तो उसे भी पिकनिक पर ले चलते हैं और वहां उसको खूब बनाएंगे।

[जग्गू आता है।]

जग्गू : भैया नमस्ते !

तीनों : आओ ! आओ जग्गू, तुम्हारी ही तो बात हो रही थी।

बड़े भैया : जग्गू, हम लोग पिकनिक पर जा रहे हैं, तुमको भी ले चलेंगे। हम लोगों के सब दोस्त चलेंगे।

जग्गू : **(उछलता हुआ)** हां हम, हम तो जरूर चलेंगे।

बड़े भैया : जग्गू ! सुना तुमने कल कोई शेर मार डाला ?

विजय : **(मुंह बनाते हुए)** हूं हूं, शेर नहीं तो चमगादड़ मार डाला।

जग्गू : **(दूर की हांकते हुए)** हां बड़े भैया, उधर से शेर निकला। चाचा जी थानेदार साहब के साथ पानी पीने के लिए चले गए थे और हमको छोड़ गए थे कि बेटा ये सब सामान देखना। इतने में उधर से दहाड़ता हुआ शेर निकला।

बड़े भैया : **(आश्चर्य से)** अच्छा ! तो तुम भागे होगे जग्गू।

जग्गू : **(शेखी से)** हूंह्। बड़े भैया...आपने जग्गू को क्या समझा है। मैंने चाचाजी की बंदूक उठाई और मारा धांय। और बड़े भैया, शेर चित्त हो गया और चाचाजी आए तो बोले, शेर किसने मारा है ? मैंने कहा, आपके लडके ने मारा है।

बड़े भैया : सचमुच जग्गू, तुम बहुत बहादुर हो ! अच्छा भाई विजय, मीरा, जग्गू, तुम सब लोग तैयार रहो। कल इसी समय पिक-निक पर चलेंगे।

तीनों : हां हां, बड़े भैया हम सब तैयार रहेंगे।

[दृश्य परिवर्तन]

जंगल का दृश्य

[नेपथ्य में मोटर रुकने का स्वर। जानवरों और चिड़ियों की बोलियों की आवाज सुनाई पड़ती है। सब बच्चे चिल्लाकर प्रवेश करते हैं। बड़े भैया के हाथ में एक

नकली बंदूक भी है।]

एक बच्चा : (उछलते-कूदते हुए) अरे वाह, भैया वाह, वो देखो मोर, मोर, मोर।

[मोर की बोली सुनाई पड़ती है।]

अरे नाच रहा है—नाच रहा है।

विजय : बड़े भैया, ये तो पूरा जंगल है। यहां तो बड़ा मजा है।

[लपककर एक बच्चा नीबू तोड़ता है।]

एक लड़का : बड़े भैया, ये नींबू लो। खाने के साथ खाएंगे।

बड़े भैया : (समझाते हुए) देखो भाई, बता दिया, यह जंगल है। इधर-उधर मत जाना। यहां शेर-वेर भी रहते हैं। तुम लोग तो हरगिज न जाना। हां, जग्गू की बात दूसरी है।

विजय : हां हां, बड़े भैया, आप खाने-वाने का ठीक प्रबंध कराइए, हम लोग यहीं हैं।

[बड़े भैया जाते हैं।]

विजय : (गंभीर होकर) अब बताओ यार जग्गू, बड़े भैया तो गए। जो कहीं शेर-वेर आ ही गया तो...

मीरा : (बनाते हुए) शेर आ गया तो क्या, वड़े भैया की बंदूक रखी हुई है। जग्गू मार डालेगा।

जग्गू : हां, हां। (शेखी में) मैं तो मिनटों में निशाना लगाता हूं। शेर, भालू, लकड़बग्घा बस देखा कि धांय।

[सहसा शेर की बोली सुनाई पड़ती है।]

मीरा : (चिल्लाकर) अरे, शे-शे-शे-शे-शे-शे-शे शेर...

विजय : (घबराकर सांस खींचते हुए) ब-ब-ब-ब-ब-ब बड़े भैया! (रुआंसा होकर पुकारता है) बड़े भैया, हाय अब तो गए (घबराता हुआ इशारा करके) वो झाड़ी में, वो झाड़ी मे आवाज आ रही है। जग्गू, अब तुम्हीं सबकी जान बचाओ।

जग्गू : (जैसे दम घोंटते हुए) मैं क्या कर सकता हूं? बड़े भैया की बंदूक चल भी नहीं सकती। (शेर की बोली फिर सुनाई पड़ती है) तुम्हीं बताओ विजय, जान कैसे बचे? (रुआंसा होकर चिल्लाता है) बड़े भैया, बड़े भैया!

मीरा : तुम तो बहुत तीसमारखां बनते थे। अब क्या हो गया?

[नेपथ्य में शेर की बोली]

जग्गू : देखो मीरा! (डरकर घबराते हुए) इस वक्त ये सब मजाक अच्छा नहीं।

विजय : ये लो जग्गू, बड़े भैया की बंदूक। मार दो, इसको मार दो। **(बंदूक देती है)**

[शेर की बोली]

जग्गू : ब-ब-ब-ब-व वड़े भैया ! **(रोते हुए)** कहां चले गए बड़े भैया। **(गोली छूटती है)**

[झाड़ी से खरखराहट का स्वर। घबराहट में बंदूक छूट जाती है।]

विजय : **(रुआंसा होकर)** अरे जग्गू, झाड़ी तो इधर ही बढ़ती चली आ रही है।

[झाड़ी चलने लगती है।]

[शेर की बोली सुनाई पड़ती है। मीरा चीखती है। सहसा बड़े भैया झाड़ी में से निकल आते हैं।]

जग्गू : **(चिल्लाकर)** अरे, बड़े भैया आप !

बड़े भैया : **(हंसते हुए)** क्या हुआ जग्गू, तुम तो बड़े बहादुर बनते थे। जरा से ही में घबरा गए। ये तो शेर की बोली थी, कहीं असली होता तो...

विजय : बड़े भैया, आपको चोट तो नहीं लगी ?

बड़े भैया : नहीं रे। मैं जानबूझकर नकली बंदूक लाया था इसीलिए।

विजय : बड़े भैया, जग्गू तो बिलकुल डर गया था। आप जरा देर न आते तो यह बेहोश ही हो जाता।

जग्गू : **(मुंह बनाते हुए)** उंह, बड़े चले...

बड़े भैया : **(पुचकारते हुए)** नहीं नहीं, जग्गू बड़ा बहादुर है। भाई, चलकर यही कहना कि जग्गू ने एक शेर मारा है। क्यों जग्गू ?

[सब हंस पड़ते हैं।]

पटाक्षेप

(१९५६)

चाचा ने तस्वीर टांगी

□ कुद्सिया जैदी

पात्र

चचा	चची
लल्लन्	छुट्टन
नन्हा	बन्नो
मोदा	इमामी
मामा	

[दालान में चारपाई, तख्त, घड़ौंची, नेमतखाना आदि करीने से रखे हैं। सामने दीवार के साथ तख्त पर मसनद, गावतकिया आदि लगे हैं। चची तख्त पर बैठी है। पनदनिया में से पान लगा कर खा रही है। तख्त के पास जमीन पर उगालदान रखा है। दाईं तरफ चारपाई पर दो बच्चे बैठे मूंगफली खा रहे हैं। मोदा फर्श पर झाड़ू दे रहा है। पर्दा उठता है तो चचा कुरते के अंदर से पेट खुजाते हुए बाएं हाथ के दरवाजे से अंदर आते हैं।]

चची : छुट्टन के अब्बा! यह तस्वीर कब से रखी हुई है। खैर ये बच्चों का घर ठहरा। कहीं टूट-फूट गई तो बैठे-बिठाए पांच-सात का धक्का लग जाएगा। आखिर कौन टांगेगा इसको?

चचा : टांगेगा और कौन। मैं खुद टांगूंगा। कौन सी ऐसी दूध की नहर लानी है। रहने दो, मैं अभी सब कुछ खुद ही किए लेता हूं। **(शेरवानी उतारते हुए)** अरे इमामी, जरा बीबी से दो आने पैसे लेकर कील तो ले आ।

इमामी : **(नेमतखाने के पास खड़ा है)** बहुत अच्छा।

[चची के पास आता है। चची पनदनिया से दुअन्नी निकालकर देती है। बाएं दरवाजे से भागकर जाता है।]

चचा : अरे ओ इमामी!

चची : किसे पुकार रहे हो? वह तो गया भी।

चचा : मोदे! ओ मोदे! **(मोदे झाड़ू रोक देता है)** जाना इमामी के पीछे। कहियो कि तीन तीन इंच की ही कीलें लीजियो। भाग कर जा उसे रास्ते ही में।

चचा : नन्हे, ओ नन्हे। कहां है तू? जरा इधर तो आ। (**नन्हा मूंगफली खाता हुआ आता है**) जाना बेटे, जरा मेरा हथौड़ा तो ले आना। (**पुकारकर**) बन्नो, बन्नो, बेटी जरा इधर तो आना। (**बन्नो आती है**) जाओ अपने बस्ते में से चपती निकाल लाओ। (**नन्हा और बन्नो जाते हैं**) और सीढ़ी की भी जरूरत होगी हमको। (**लल्लू चारपाई पर बैठा मूंगफली खा रहा है।**) अरे लल्लू, जरा तुम किसी से कह देते, सीढ़ी यहां लाकर लगा देता। (**लल्लू जाता है**) और हां, देखना, वह लकड़ी के तख्ते वाली कुरसी भी लेते आते तो खूब रहता।

[बन्नो चपती लेकर बाए दरवाजे से भागी हुई आती है। लल्लू उसी दरवाजे से बाहर भागता है। दोनों की टक्कर होती है। दोनों रोने लगते हैं।]

आखिर क्या नियामत आ रही है? आंखें खोलकर क्यों नहीं चलते। जाओ, जाकर अपना काम करो।

चची : बस अब चुप हो जाओ, कोई बात नहीं। काम में तो ऐसी थोड़ी-बहुत चोट लग ही जाती है।

[लल्लू बाहर जाता है, बन्नो चपती जमीन पर से उठाकर चचा को दे देती है।]

चचा : शाबाश! चलो एक चीज तो आई।

[नन्हा बाएं दरवाजे से अंदर आता है।]

चची : लो, यह लो हथौड़ी।

चचा : हां, इसे कहते है हथौड़ी।

चची : जरा बैठकर पान खा लो। अभी आई जाती हैं चीजें।

चचा : (**चची की बात अनसुनी करके**) यह तुम कहां चल दिए लल्लू, कहा जो है जरा यहीं ठहरे रहो। बस काम के वक्त सब के सब न जाने किधर को चले जाते है। (**लल्लू और बन्नो कुरसी लेकर बाएं से आते हैं**) इधर रख दो इसे। (**कुरसी रखकर जाने लगते हैं**) जरा यही ठहरे रहो, सीढ़ी पर रोशनी कौन दिखाएगा हमको। (**इमामी अंदर आता है**) क्या इमामी ले आया कीलें? मोदा मिल गया था? तीन तीन इंच ही की हैं न? (**कीलें देखकर**) बस बहुत ठीक है।

चचा : ए लो, सुतली मंगवाने का तो खयाल ही न रहा, अब क्या करूं?

चची : करो क्या? किसी बच्चे से कहो, लपककर ले आएगा।

[मोदा आता है।]

चचा : मोदे बेटे, कीलें तो बिलकुल हमारी मर्जी की आ गईं। **शाबाश** ! जरा जाना मेरे भाई जल्दी से। हवा की तरह जा, और देखियो, बस गज-सवागज सुतली ले आ। (**जाने लगता है**) अरे सुन तो, न बहुत मोटी हो, न बहुत पतली। बस समझा के कह दीजियो, तस्वीर टांगने के लिए चाहिए। बस जा !

[मोदा जाने लगता है।]

चची : जा कहां रहा है ? पैसे तो लेता जा। क्या मुफ्त लाएगा सुतली ? (**कमरबंद में से पैसे खोलकर देती है**) देख तो, जरा दो आने का कत्था भी लेता आइयो, मेरे भाई।

चचा : (**घूमकर**) क्यों बे, ले आया सुतली ?

मोदा : अभी तो पैसे ले रहा हूं। कत्था भी तो आएगा।

चचा : कैसा कत्था, कहां लगेगा ? (**चची से**) अच्छा, तुम्हें चाहिए।

[दाएं हाथ के दरवाजे से नन्हा हाथ में एक लंबा सा बांस लिए अंदर आता है। चचा आंखें फाड़ फाड़कर देखते हैं और सब बच्चे जोर जोर से हंसते हैं।]

चचा : (**बड़े गंभीर स्वर में**) अजी सीढ़ी लाए होते, यह बांस क्या होगा ? (**झल्लाकर**) हम कोई मदारी तो हैं नहीं कि बांस पर चढ़कर कील ठोकेंगे। (**फिर कुछ कुछ ताव में आते हैं**) ले जाओ वापस और सीढ़ी लेकर आओ।

[नन्हा बड़े इत्मीनान से बांस का घोड़ा बनाकर उस पर बैठ जाता है। फिर बड़ी शान से पूरे स्टेज पर बांस घुमाकर जिधर से आया था, उधर चला जाता है।]

चचा : (**मोदे को देखकर**) क्यों बे, ले आया सुतली ?

मोदा : नहीं तो।

चचा : (**ताव में आकर**) देखीं तुमने इस हरामखोर की हरकतें ? यानी उस वक्त से अब तक आप यहीं हैं ? कुछ हो जाए, मगर बेगम साहिबा का कत्था जरूर आएगा।

[नन्हा और लल्लू सीढ़ी लाते हैं, जो दरवाजे में अटक जाती है।]

चचा : भई देखते नहीं, सीढ़ी फंस गई। जाकर हाथ लगवाओ।

[सब दौड़ते हैं और सीढ़ी लेकर आते हैं।]

चचा : अमां, कहीं रख दो। यहां रख दो। अच्छा वहां रख दो। (**बच्चे सीढ़ी लेकर घूमते हैं**) अजी रुको, सोच तो लेने दो।

जो है वह यही चाहता है कि घड़ी की चौथाई में हो काम। सोचने नहीं देते कमबख्त !

चची : सोचने की कौन सी बात है ? जहां तस्वीर लगेगी, वहां दीवार से लगवाकर खड़ी कर दो सीढ़ी।

चचा : पहले ही क्यों न आया खयाल ? कमअक्लों की टोली। हटाओ तो तख्त हटाओ। भई सीढ़ी रख दो जमीन पर, और तख्त हटाकर एक तरफ को कर दो। बस हो गया काम।

[सीढ़ी जमीन पर रखकर बच्चे तख्त हटाते हैं और सीढ़ी को दीवार से लगा देते हैं।]

बच्चे : **(एक साथ)** बस अब्बा मियां ?

चचा : बस भई, अब सुतली आ जाए तो काम शुरू हो।

[मोदा सुतली लाता है जिसका एक सिरा उसने चुटकी में थाम रखा है।]

चचा : लो, अब आ गई सुतली। बस तस्वीर टंगी समझो।

[सब बच्चे आधा दायरा बनाए सीढ़ी के पास खड़े हैं। कोई कीलें थामे है, किसी के हाथ में सुतली, किसी के फीता, किसी के शमा और कोई हथौड़ी, और कोई तस्वीर लिए खड़ा है।]

चची : इतने में तुम तस्वीर टांगो मैं चाय बनाकर लाती हूं।

[दाएं दरवाजे से चली जाती है।]

चचा : या अली ! **(सीढ़ी पर चढ़ते हैं)** दद्दू बेटा, जरा देना तो तस्वीर। पहले अंदाजा कर लें कि टांगना कहां है। **(पुकार-कर)** छुट्टन की अम्मां। जरा इधर तो आना। बता तो दो कि तस्वीर कहां टंगवा रही हो : वरना ऊंची-नीची हो गई तो मुश्किल होगी।

[तस्वीर हाथ में लेकर जरा वजन करते हैं। सीढ़ी पर से पांव फिसलता है। चचा तस्वीर हाथ से छोड़कर संभलने की कोशिश करते हैं।]

चची : **(आती है)** लो अब टांगते हो तो टांग लो तस्वीर, वरना हटाओ यह टांडा-भांड।

चचा : **(सुनी-अनसुनी करके)** या अली ! **(सीढ़ी पर चढ़ते हैं बच्चे आधा दायरा बनाए अलग अलग चीजें लिए खड़े हैं)** लाओ कील। पाजी, अब हम नीचे आएं। कुरसी पर चढ़कर दे। **(बच्चा कील देता है)** बस अब ठीक है। बस अब ठीक है। लाओ हथौड़ी

दो। (**हथौड़ी लेने लगते हैं तो कील गिर जाती है**) ऐ लो, अब कमबख्त कील गिर पड़ी। भई देखना, कहां है? (**सब के सब घुटनों के बल बैठकर ढूंढ़ते हैं**) अरे कमबख्तो, ढूंढ़ो। अब तक तो मैं सौ मरतबा तलाश कर लेता। अब मैं रात भर सीढ़ी पर खड़ा सूखा करूंगा? कील तो गिरी, अब कमबख्तो तुम तो अपना काम करो। बस सीढ़ी थामे रखो। कोई और ढूंढ़ लेगा कील। कमबख्त कील न हुई अच्छी-खासी दस नंबर की सुई हो गई। अंधो, क्या दूरबीन लाऊं?

इमामी : लो मियां कील।

चचा : (**कील लेकर इधर-उधर आंखें फाड़ फाड़कर देखते हैं**) अरे भई, वह कहां गया?

चची : या अल्लाह! अब क्या खो दिया?

चचा : अमां वह निशान जो हमने लगाया था? जरा छुट्टन बेटे, आना तो ऊपर। शायद तुम्हें दिखाई दे जाए।

छुट्टन : (**ऊपर जाता है**) यह है अब्बा।

चचा : (**गुस्से में**) निशान न हुआ छलावा हो गया कि घड़ी भर में इधर और उधर। नहीं, हमारे खयाल में यही है।

सब : (**एक साथ**) हां, यही है।

चचा : हम तो पहले ही कह रहे थे। (**चचा कील ठोंकते हैं तो पूरी कील और आधी हथौड़ी दीवार के अंदर उतर जाती है और चचा की नाक दीवार से टकराती है**) अरे मेरी नाक, जरा देखना तो। सब छिल गई।

चची : रुको, नाक का मामला है, मैं अभी लाई फाहा। (**चची स्टिकिंग प्लास्टर का टुकड़ा बक्स से निकालकर देती है**) लो, यह चिपका लो। नाक पर मक्खी-वक्खी न बैठ जाए। मौसम वैसे ही खराब है।

चचा : (**फाहा नाक पर लगाते हैं**) लाओ दूसरी कील।

चची : बस, रहने दो। अब और किसी को जख्मी करोगे। तुम्हें यों कील गाड़ना हुआ करे तो आठ रोज पहले खबर दे दिया करो। मैं बच्चों को लेकर मायके चली जाया करूं। और नहीं तो!

चचा : एक तो हम तुम्हारा काम करें, जख्मी हों, पसीने में सराबोर हों और आप हैं कि कुछ पसंद ही नहीं आता। गोया ये खुद गाड़तीं कील।

चची : इससे तो अच्छी ही गाड़ती। सारा घर तिलपट कर दिया।

चचा : ठीक है। आइंदा हम किसी काम में दखल नहीं दिया करेंगे।

[चचा कील गाड़कर, तस्वीर टांगते हैं, जो बिलकुल टेढ़ी है।]

लो टांग दी तस्वीर और क्या जान लोगी ?

चची : और जरा दीवार का हुलिया तो देखना। गज गज भर दीवार की यह हालत है गोया चांदमारी होती रही हो।

[चचा नीचे उतरते हैं तो पूरे कद मे मामा के पांव पर खड़े हो जाते हैं।]

मामा : लाहौल बिलाकूवत। मैं समझा...

चची : बस रहने दो।

चचा : रहने क्या दो ? अजी लग गई तस्वीर। बस इतनी सी बात थी। लोग इस काम के लिए मिस्त्री बुलवाया करते हैं।

पर्दा गिरता है

(१६५७)

सेठ और मुनीम

□ संकलित

पात्र

सेठजी | सेठानी | मुनीमजी

सेठ : (आवाज देता है) मुनीमजी, ओ मुनीमजी !

मुनीम : क्या बात है सेठजी, सुबह ही सुबह क्या आफत आ गई ?

सेठ : अभी आई कहां है, उसी को तो बुला रहा हूं।

मुनीम : यानी कि मैं आफत हूं ?

सेठ : अरे तुम न सही, तुम्हारा हिसाब तो आफत है।

मुनीम : वह कैसे सेठजी ?

सेठ : (झुंझला कर) आफत नहीं तो और क्या है ? कल के हिसाब में दो पैसों का घाटा निकल रहा है। उसको निकालने के लिए कल आधी रात तक मैं लालटेन जलाए बैठा रहा, पर घाटा...

मुनीम : (बात काट कर) सेठजी, गजब हो गया।

सेठ : (उछल कर) क्या बात है मुनीमजी, क्या बात है ?

मुनीम : सेठजी, घाटा तो अब आठ पैसों का हो गया। आधी रात तक छह पैसों का तेल जल गया और दो पैसों का घाटा तो था ही।

सेठ : धत् तेरे की, भाग्य में घाटा ही घाटा लिखा है। अच्छा, पहले उन दो पैसों के घाटे को तो निकालो।

मुनीम : वही फरक ठीक करते करते तो दिमाग खराब हो गया। अभी फिर जुटता हूं। (मुनीम थोड़ी देर तक हिसाब जोड़ता है)

सेठ : (गुस्से से) गजब है मुनीमजी, इधर लाओ बहीखाता। कोदों देकर तो नहीं पढ़ा था ?

मुनीम : कोदों नहीं सेठजी, रुपए देके, और सभी इम्तहान रुपए देकर पास किए थे। किसी में दो किसी में चार। दर्जा चार में मां बिगड़ गई, उसने एक पैसा भी नहीं दिया मास्टर को, बस फेल कर दिया उस बेईमान ने।

सेठ : मालूम हो गई तुम्हारी योग्यता, लाओ बहीखाता इधर दो।

मुनीम : यह लीजिए बहीखाता। मगर आप भी तो शायद तीसरी फेल हैं।

सेठ : (बहीखाता लेकर हिसाब जोड़ता है) एक, दो चार इत्यादि।

रोकड़ बाकी सही है।

मुनीम : जमा देख जाइए।

सेठ : (फिर जोड़ता है) जमा भी ठीक है।

मुनीम : खर्च भी देख लीजिए।

सेठ : (हिसाब जोड़ता है) एक, दो, तीन, पांच, आठ, नौ, सत्रह, आठ, बाइस (पेट पकड़कर जोर से चिल्लाता है) मुनीमजी मरा !

मुनीम : मुनीमजी तो जिंदा है, सेठजी, सोडा पी लीजिए, पेट ठीक हो जाएगा।

सेठ : कितने में आएगा ?

मुनीम : एक रुपए की एक बोतल आएगी।

सेठ : अरे, न, न, न, न इतनी मंहगी चीज नहीं चाहिए।

[पेट पकड़कर फिर जोर से चिल्लाता है]

मुनीम : सोडा पी लीजिए, ठीक हो जाएगा।

सेठ : अच्छा, अगर सोडे से ठीक हो जाएगा तो ले आओ। मगर मोल-भाव कर लेना, कहीं ज्यादा दाम न दे देना।

[मुनीम सोडे की बोतल लाकर देता है। सेठ आधी बोतल पीकर]

सेठ : लो मुनीमजी, आधा सोडा वापस कर दो।

मुनीम : खुली बोतल वापस नहीं हो सकती।

सेठ : अरे वाह, यह क्या बात हुई ? जब खर्च नही हुआ तो वापस क्यों नहीं होगी। यह भी कोई मजाक है ?

मुनीम : बिलकुल वापस नही हो सकती। या तो इसे पी लीजिए या फेंक दीजिए।

सेठ : फेंक दूं, खूब कही। जब पैसा दिया है तो फेंक क्यों दूं ? लो जाकर अंदर रख दो। कभी काम आएगा।

मुनीम : बोतल वापस करनी है।

सेठ : हैं ! क्या कहा। बोतल क्यों वापस करनी है, क्या मुफ्त ली है ? रुपया नहीं दिया है ?

मुनीम : बोतल के दाम नहीं दिए गए हैं, सिर्फ सोडे के दाम दिए गए हैं। बोतल वापस करनी होगी।

सेठ : अच्छा घनचक्कर है। मैं पहले ही कहता था कि मंहगा सौदा मत किया करो। अच्छा, बचा हुआ सोडा एक लोटे में रख लो, फिर कभी काम आएगा। बोतल वापस कर दो।

मुनीम : सोडा खराब हो जाएगा। इसके रखने से कोई फायदा नहीं।

सेठ : हो जाएगा तो हो जाने दो, मगर मैं ऐसी चीज नहीं फेंक सकता जिसमें धन लगा हो। सोडा रखकर बोतल वापस कर दो।

मुनीम : बहुत अच्छा, सेठजी !

[बोतल लेकर के चला जाता है।]

सेठ : (**फिर जोर से चिल्लाता है**) अरे मरा मुनीमजी !

मुनीम : मुनीम का दुश्मन मरे, डाक्टर को बुलाऊं सेठजी।

सेठ : डाक्टर को बुलाने में कितना खर्च पड़ेगा ?

मुनीम : यही कोई बीस रुपए खर्च हो जाएंगे।

सेठ : अरे, न न न न, इतना महंगा सौदा नहीं खरीदना। डाक्टर को न बुलाना। इससे अच्छा तो यही है कि मुझे मर जाने दो। मगर पहले यह बताओ कि मरने में कितना खर्च होगा ?

मुनीम : मरने में इससे ज्यादा खर्च होगा।

सेठ : हैं, मरने में जीने से ज्यादा खर्च होगा, यह कैसे ?

मुनीम : यह ऐसे कि कोई पांच सेर तो देशी घी लगेगा...

सेठ : अरे वाह, जीवन भर तो डालडा खाया और चिता फूकी जाएगी देशी घी से ? सूखी लकड़ी लेना और फूंक मार के जला देना, बस, घी की जरूरत ही क्या है ?

मुनीम : कोई दस मन लकड़ी खर्च होगी।

सेठ : वाह रे मुनीमजी, दस मन के बजाय दो ही मन में जला देना। सूखी लकड़ी लेना और उसे फूंक मार मार के जलाए रखना। खैर, मैं समझ गया। अगर किफायत से काम लिया गया तो मरने में ही फायदा रहेगा। जाकर सेठानी को बुलाओ, अब मैं मरूंगा।

मुनीम : ऐसा न कहिए, सेठजी !

सेठ : मुनीमजी, मैं खूब समझता हूं। तुम बस मेरा नुकसान चाहते हो। जब मुझे मरने में फायदा दिखलाई पड़ रहा है तो मैं क्यों न मरूं ? मरने के अलावा और कोई चारा नहीं है। बुला लाओ जल्दी सेठानी को।

मुनीम : (**आवाज देता है**) सेठानी, ओ सेठानी !

सेठानी : (**अंदर से ही**) क्या बात है, मुनीमजी !

मुनीम : जल्दी आइए, सेठजी मर रहे हैं।

सेठानी : क्या कहा तुमने ? अगर फिर ऐसी बात कही तो मुंह नोच लूंगी।

मुनीम : मैं ठीक कह रहा हूं। जल्दी चलिए, नहीं तो...

सेठानी : (बात काटकर) नहीं तो तुम्हारा सिर ! चलो, देखती हूं।

सेठानी : (बाहर निकलकर) क्या बात है सेठजी ? मुनीमजी क्या अनाप-शनाप बक रहे हैं।

सेठ : मुनीम बिलकुल ठीक कह रहा है सेठानी, अब मैं मरना चाहता हूं।

सेठानी : ऐसा न कहिए सेठजी, मरें आपके दुश्मन।

सेठ : हैं, हैं, तुम भी मिल गई मुनीम से, जो मेरे दुश्मनों को मारकर उनको फायदा पहुंचाने की बात सोच रहा है। तुम नहीं समझ रही हो, सेठानी। मेरे पेट में बहुत जोर का दर्द हो रहा है। अगर डाक्टर बुलाता हूं तो खर्च ज्यादा पड़ता है। अगर मर जाता हूं तो खर्च कम पड़ता है। मैंने सब हिसाब लगाकर देख लिया है, मरने में जीने से ज्यादा फायदा है।

सेठानी : मैं अपने जेवर बेचकर डाक्टर को बुलाऊंगी। आपको मरने नहीं दूंगी।

सेठ : अरे न न न न, ऐसा न करना। जेवर कभी मत बेचना। बड़ी मुश्किल से जेवर बने हैं। सुनो, जो मैं कहता हूं, समय कम है, जीने में घाटा ही घाटा है और मुझे ज्यादा देर तक जिंदा रखकर मेरा घाटा न बढ़ाओ।

सेठानी : यह आप क्या कह रहे हैं।

सेठ : (बात काटकर) देखो जिद मत करो, मुझे मरने दो। हां, एक काम करना। इस मुनीम के बच्चे को चाभी मत देना वरना यह घर फूंक कर तमाशा देखेगा। सारा खर्चा अपने हाथों करना। मेरे जलाने-बलाने में कम से कम खर्च करना।

[सेठानी सिसकती है।]

रोने-धोने की जरूरत नहीं है। रोने मे आंसू खर्च होते हैं और खर्च मे हमको बचना चाहिए। बस चाभी इस मुनीम के बच्चे को मत देना। सारा इंतजाम खुद करना। अच्छा, अब मैं चला।

[चुपचाप लेट जाता है।]

मुनीम : सेठानीजी, अब रोने-धोने से क्या होता है ? सेठजी तो मर ही गए। अब जल्दी इनके फूंकने-फांकने का प्रबंध होना चाहिए।

सेठानी : मैं कुछ नहीं जानती, मुनीमजी। मुझे क्या पता, क्या होता है, क्या नहीं। कितना खर्च होगा ?

मुनीम : यही कोई पचास रुपए।

सेठानी : लो यह चाभी। पचास रुपए तिजोरी में से निकाल लो और फूंकने का प्रबंध करो।

[मुनीम चाभी लेता है। सेठ तेजी से उठता है।]

सेठ : धत् तेरे सेठानी की ! मैंने क्या कहा था कि चाभी मुनीम को मत देना वरना वह ज्यादा खर्च कर देगा। जब मरने पर भी पचास रुपए खर्च होंगे, तब मैं जिंदा रहूंगा। जिंदा रहने में ही फायदा है।

पर्दा गिरता है

खतरनाक घर

□ सत्येंद्र शरत्

पात्र

मकान मालिक :	आयु ४० वर्ष
राजू :	१३ वर्ष का बालक
रमा :	राजू की बहन। आयु १० वर्ष
रहस्यमयी :	१४-१५ वर्ष की गोरी और मधुर स्वर वाली बालिका
चाकू, बिजली का पंखा, स्टोव	१०-११ वर्ष की आयु के बालक—रंग-बिरंगे कपड़ों में
सुई, दियासलाई कुरसी, मेज, दवा की गोली, कैंची	१०-११ वर्ष की बालिकाएं—रंग-बिरंगे कपड़ों में

[पर्दा उठने पर साधारण रूप से सजे हुए एक घर की बैठक दिखाई देती है। कमरे के दाहिने कोने में एक मेज और दो-तीन कुरसियां रखी हैं। मेज पर लिखने-पढ़ने के सामान के अलावा बिजली का एक पंखा भी रखा है। कमरे में और भी थोड़ा-बहुत सामान है, जो प्रतिदिन के उपयोग में आने वाला है। कमरे को देखने से यही लगता है कि यहां बिना किसी झंझट के आराम से रहा जा सकता है।

कमरे के दाईं ओर वाले दरवाजे से राजू और रमा मकान मालिक के साथ साथ कमरे के अंदर प्रवेश करते हैं। मकान मालिक के बड़ी बड़ी मूंछें हैं। राजू और रमा बहुत उत्सुकता और उत्साह के साथ कमरे में चारों ओर दृष्टि दौड़ाते हैं।

इन लोगों के पीछे पीछे सफेद साड़ी पहने गुप-चुप भाव से एक और बालिका गंभीरता के साथ प्रवेश करती है। वह धीरे से एक कोने में खड़ी हो जाती है और उन तीनों की ओर देखने लगती है। उसकी ओर कोई ध्यान नहीं देता। इस बालिका ने रहस्यमय ढंग से कमरे में प्रवेश किया है, इसलिए हम इसे 'रहस्यमयी' कहेंगे।

राजू और रमा इस बीच कमरे का अच्छी तरह निरीक्षण कर चुके हैं। मकान मालिक दोनों बच्चों की उत्सुकता देख अपनी मूंछों पर हाथ फेरते हुए मुसकराता है।]

मकान मालिक : क्यों बच्चो, देख लिया न कमरा ? पसंद आया ?

राजू : (**संतोषपूर्वक**) हां, चौधरी साहब, कमरा तो बहुत अच्छा है। क्यों रमा ?

रमा : (**सिर हिलाती हुई**) हां भैया, कमरा तो सचमुच अच्छा है।

[राजू और रमा की इस बात पर रहस्यमयी बालिका इनकार के भाव से सिर हिलाती है।]

राजू : (**इधर-उधर देखते हुए**) मेरे विचार से यह कमरा हम दोनों के लिए बहुत अच्छा रहेगा। हम लोग यहां बड़े मजे में पढ़-लिख सकेंगे और परीक्षा की खूब तैयारी कर सकेंगे। क्यों रमा ?

रमा : हां, भैया, यहां हमें कोई दिक्कत नहीं होगी। यहां जरूरत की हर चीज मौजूद है—कुरसी है, मेज है, बिजली है, पंखा है...

मकान मालिक : ठीक है। तुम लोग आराम मे यहां बैठो। मैं बाहर का जरूरी काम निबटाकर एक घटे के अंदर वापस आ जाऊंगा। इस बीच तुम्हारे पिताजी को भी चिट्ठी लिख दूंगा...अच्छा, मैं जाता हूं। तुम लोग किसी प्रकार का संकोच न करना।

राजू : जी अच्छा।

[मकान मालिक अपनी मूंछें ठीक करता हुआ बाहर चला जाता है। उसके बाहर होते ही रहस्यमय बालिका सामने आती है। राजू और रमा चौंकते हैं और आश्चर्य से उसे देखते हैं।]

रहस्यमयी : क्या तुम दोनों इस घर में रहने के लिए आ रहे हो ?

राजू : (**आश्चर्य से देखते हुए**) हां...लेकिन...

रहस्यमयी : क्या तुमने यहां आने का पक्का इरादा कर लिया है ?

रमा : (**आश्चर्य से देखते हुए**) हां...लेकिन तुम...

रहस्यमयी : मैं तुम्हें एक बात बताना बहुत जरूरी समझती हूं।

राजू, रमा : (**एक साथ**) क्या ?

रहस्यमयी : (**जैसे भेद की बात बता रही हो**) यह घर खतरनाक घर है।

राजू : (**साश्चर्य**) खतरनाक घर।

रहस्यमयी : हां, खतरों से भरा घर।

रमा : (**साश्चर्य**) खतरों से भरा हुआ घर।

रहस्यमयी : हां...इस घर में कदम कदम पर खतरे हैं। जरा सी भी लापरवाही से तुम लोगों की जिंदगी खतरे में पड़ सकती है।

रमा : (**कौतूहल से**) क्या ऐसा भी हो सकता है कि यहां हमें किसी खतरे का सामना ही न करना पड़े ?

रहस्यमयी : हां, हो क्यों नहीं सकता।

रमा : (**उत्सुकता से**) कैसे हो सकता है ?

रहस्यमयी : यही बताने तो मैं यहां आई हूं—देखो, यदि तुम हमेशा मुझे अपने साथ रखोगे, एक क्षण के लिए भी मुझे अपने से अलग नहीं करोगे तो तुम हमेशा खतरों से बचे रहोगे।

राजू : (**अविश्वास के साथ**) लेकिन तुम हो कौन ? हम तो तुम्हें पहचानते तक नहीं।

रहस्यमयी : (**धीमे से मुसकराती है**) धीरे धीरे पहचान जाओगे।

रमा : (**उत्सुकता से**)अच्छा तुम्हारा नाम क्या है ?

रहस्यमयी : मेरा नाम सावधानी है।

राजू :
रमा : (**एक साथ, आश्चर्यपूर्वक**) सावधानी ?

रहस्यमयी : हां, सावधानी। जिस घर के बच्चे-बूढ़े मुझे हमेशा अपने साथ रखते हैं, उस घर से खतरे दूर रहते हैं। मैं हर घर में जाकर वहां रहने वालों को खतरों से सावधान करती हूं। यह मेरा कर्तव्य है।

राजू : (**ऊबकर**) अच्छा, तुम चाहती क्या हो ?

रहस्यमयी : यही कि तुम इस घर में हमेशा मुझे अपने साथ रखो। मैं तुम्हें इस घर में हर खतरे से बचाऊंगी।

राजू : (**रूखे स्वर में**) नहीं, नहीं, हम तुम्हें इस घर में अपने साथ नहीं रख सकते। हमें अपनी परीक्षा की तैयारी करनी है। हम किसी को भी अपने साथ नहीं रख सकते।

रहस्यमयी : (**विनम्रता के साथ**) लेकिन मैं तुम्हें खतरों से दूर रखूंगी। मैं तुम्हें हर कदम पर खतरों से बचाऊंगी।

राजू : (**रूखे स्वर में**)नहीं हमें तुम्हारी जरूरत नहीं है। हमें तुम्हारी बात पर विश्वास नहीं है। मेरे ख्याल मे तुम्हारी यह कहानी मनगढ़ंत है कि यह घर खतरनाक है। कोई घर खतरनाक नहीं होता। हम ऐसी पुरानी और दकियानूसी बातों पर यकीन नहीं करते...अब हम पर कृपा करो और यहां से जाओ...

रहस्यमयी : (**निराशा के साथ**) अच्छा, जैसी तुम्हारी इच्छा...मैं जाती हूं : (**जाने लगती है**)

[अचानक कमरे के बाएं भाग की रोशनी कम हो जाती है और वहां अंधेरा सा हो जाता है। मेज पर रखा पंखा अपने आप तेजी से चलने लगता है। कुछ अजीब तरह

की डरावनी सी आवाज सुनाई पड़ने लगती है। ऐसा लगता है जैसे कोई तेजी से कैंची चला रहा हो। ऐसा भी लगता है जैसे कोई स्टोव बहुत तेज जल रहा हो। ये सब आहटें मिली-जुली और मन में डर पैदा करने वाली हैं।

रमा डर जाती है और एकदम अपने भाई का हाथ पकड़ लेती है। भाई खुद सहम गया है।]

रमा : **(भयभीत स्वर में)** भैया, ये आवाजें कैसी हैं? मुझे डर लग रहा है।

राजू : **(थोड़ा पीछे हटता हुआ, कांपते स्वर में जोर से)** तुम लोग कौन हो?...क्या चाहते हो?

[कमरे के दाहिने कोने से तीन-चार बारीक और अजीब सी आवाजें एक स्वर में चिल्लाती हैं।]

आवाजें : **(एक साथ)** हम खतरे हैं...घरों में बसने वाले खतरे!

राजू : **(साहस कर)** यहां इस घर में क्यों आए हो?

आवाजें : **(एक साथ)** हम हर घर में रहते हैं...यह अलग बात है कि घर में रहने वाले हमें देर से पहचानते हैं...हम हर दिन किसी न किसी घर में, किसी न किसी आदमी या बच्चे को नुकसान पहुंचाते रहते हैं...

राजू : **(साहस कर, कांपते से स्वर में)** मुझे तुम्हारी बातों पर विश्वास नहीं हो रहा है...अगर तुम सच बोल रहे हो तो छिप कर क्यों खड़े हो? सामने क्यों नहीं आते?

[आवाजें थोड़ी धीमी हो जाती हैं। अब कमरे के दाएं भाग से एक बालक का धारीदार कपड़े पहने प्रवेश। उसके गले में गत्ते का एक चौकोर टुकड़ा धागे से टंगा है जिस पर चाकू की ड्राइंग बनी हुई है और मोटे अक्षरों में 'चाकू' लिखा हुआ भी है।]

चाकू : **(बदली आवाज में)** मैं चाकू हूं...मेरी धार बहुत तेज है...मैं हमेशा इस ताक में रहता हूं कि जैसे ही तुम्हारी नजर बचे, तुम पर चोट कर जाऊं...मेरा वार बड़ा खतरनाक होता है।

[एक बालिका प्रवेश करती है। उसके भी गले में गत्ते का एक चौकोर टुकड़ा धागे से लटका हुआ है, जिस पर सुई की ड्राइंग बनी हुई है और मोटे अक्षरों में लिखा हुआ भी है—'सुई'। बालिका आती है और चाकू वाले

बालक के पास खड़ी हो जाती है।]

सुई : **(आवाज बदल कर)** मेरे बिना किसी घर का काम चल ही नहीं सकता। मैं सुई हूं...लापरवाह लोगों को सजा देने से मैं कभी नहीं चूकती...मैं इंसान को लहू-लुहान कर देती हूं।

[विचित्र से रंग-बिरंगे कपड़ों में एक और बालिका का प्रवेश। उसके गले में भी गत्ते का चौकोर टुकड़ा लटका है, जिस पर दियासलाई की ड्राईंग बनी हुई है और मोटे अक्षरों में 'दियासलाई' लिखा हुआ है। वह सुई के पास आकर खड़ी हो जाती है।]

दियासलाई : **(आवाज बदल कर)** और मैं हूं दियासलाई। सिर से पैर तक जहर से बुझी हुई...बेख्याल लोगों को जला देना मेरा परम धर्म है।

[वैसी ही अजीब सी शक्ल बनाए एक बालक का प्रवेश। उसके गले में जो गत्ता लटका हुआ है उस पर बिजली के पंखे की ड्राईंग बनी हुई है और लिखा हुआ है—'बिजली का पंखा'। वह दियासलाई के पास आकर खड़ा हो जाता है।]

बिजली का पंखा : **(आवाज बदल कर)** और मैं हूं बिजली का पंखा। जो लोग मेरा तार ढीला रखते हैं, मुझे चलता ही छोड़ देते हैं, या अपने बच्चों को मुझसे खेलने पर उन्हें मना नहीं करते, उन लोगों की खबरें तो अखबार में पढ़ी ही जा सकती हैं...मैं खुद क्या बताऊं ?

[अब दो बालिकाएं प्रवेश करती हैं। एक के गले वाले गत्ते में कुर्सी की ड्राईंग बनी हुई है और 'कुरसी' लिखा हुआ है। दूसरे के गत्ते में मेज की ड्राइंग बनी हुई है और 'मेज' लिखा हुआ है। दोनों बालिकाएं बिजली के पंखे के पास खड़ी हो जाती हैं।]

कुरसी : **(बदली आवाज में)** मैं हूं तीन टांग की कुरसी...

मेज : **(बदली आवाज में)** और मैं हूं डगमग डगमग करने वाली मेज...

कुरसी-मेज : **(एक स्वर में—एक साथ)** जो लोग बिना देखे-भाले हमारी सवारी करते हैं, वे एक मिनट में धड़ाम से नीचे आ जाते हैं और हम उनकी सवारी करने लगते हैं...उनके हाथ-पैर टूट जाने का हमें कोई अफसोस नहीं होता...

[विचित्र सी वेश-भूषा में एक और बालिका का प्रवेश। उसके गले के गत्ते में दवा की शीशी और गोलियों की ड्राइंग बनी हुई है और लिखा हुआ है—'दवा की गोली।' वह बोलते बोलते प्रवेश करती है और अपने साथियों के निकट खड़ी हो जाती है।]

दवा की गोली : **(बदली आवाज से)** मेरे शिकार से अस्पताल में भेंट की जा सकती है—मैं दवा की जहरीली गोली हूं...मेरे बहुत सारे नाम हैं...कुनैन...एस्प्रो...कैस्टोफिन...नीद की गोली... नेप्थलीन की गोली...चूहों को मारने की गोली...बच्चा हो या बूढ़ा, जो भी बिना देखे मुझे मुंह में रखता है, अपने आपको खतरे में डालता है...

[दो और रंग-बिरंगे बच्चे प्रवेश करते हैं। इनमें से एक बालिका है और एक बालक। बालिका के गले में कैंची की ड्राइंग बनी हुई है और उस पर 'कैंची' लिखा हुआ है। बालक के गले में स्टोव की ड्राईंग बनी हुई है और नीचे 'स्टोव' लिखा हुआ है। दोनों बच्चे अपने साथियों के निकट खड़े हो जाते हैं।]

कैंची : **(बदली आवाज में)** मैं कैंची हूं...मैं अच्छों अच्छों के कान कतरती हूं...जो मुझसे खेल करता है, वह फौरन मेरा मजा चखता है।

स्टोव : **(बदली आवाज में)** और मैं हूं स्टोव...मेरा गुस्सा तो मशहूर है...मुझे जलता छोड़कर घर से बाहर जाइए और तब मेरा तमाशा देखिए...

[विचित्र और डरावनी आवाजें कुछ देर के लिए फिर तेज हो उठती हैं। भाई-बहन सिहर कर पीछे हटते हैं।]

राजू : **(रमा का हाथ कसकर पकड़ते हुए)** रमा! मेरे खयाल में सचमुच ही इस घर से बाहर चले जाना चाहिए। यह घर सचमुच ही खतरनाक है। हम यहां नहीं रहेंगे।

रमा : **(थोड़े साहस से काम लेती हुई)** लेकिन भैया, ये खतरे तो हर घर में रहेंगे। भाग कर जाने से काम कैसे चलेगा?

राजू : लेकिन इन खतरों के बीच इस घर में रहा भी कैसे जा सकता है!

रमा : **(याद करती हुई)** भैया, तुम्हें उनकी याद है जो अभी थोड़ी देर पहले आई थीं?...वही, जिन्होंने हमारी मदद करने का वायदा किया था!

राजू : (याद करके) हां, हां, वही न, जिन्होंने अपना नाम 'सावधानी' बताया था।

रमा : मैं तो उन्हीं को याद कर रही हूं। शायद वह हमारी मदद के लिए आ जाएं। (आंखें बंद करती है)

[बाएं दरवाजे से रहस्यमयी बालिका का उसी रहस्यमय ढंग से प्रवेश। वह भाई-बहन के निकट आकर खड़ी हो जाती है। भाई-बहन का चेहरा उसे देख खिल उठता है।]

रहस्यमयी (राजू-रमा से) तुमने मुझे याद किया था न ? इसीलिए मैं आई हूं...अगर तुम मुझे अपने साथ रखोगे तो मैं हमेशा इन खतरों से बचाऊंगी।

राजू-रमा (एक साथ) हां, सावधानी, हम हमेशा तुम्हें अपने साथ रखेंगे... हम कभी असावधान नहीं रहेंगे...हमेशा सावधानी बरतेंगे।

रहस्यमयी (मुसकराकर) ठीक है। लो, अब मैं तुम्हें इन खतरों से दूर रहने की तरकीब बताती हूं।

[रहस्यमयी बालिका भाई-बहन के कान में फुसफुसाती है। भाई-बहन प्रसन्न हो उठते हैं। वे मुसकराने लगते हैं। रहस्यमयी बालिका अपनी बात पूरी कर पीछे हट जाती है।]

राजू : (ऊंची और निर्भीक आवाज से) इस घर में बसने वाले खतरो, अब हम तुमसे सावधान हो गए हैं। अब हमें तुम्हारा बिलकुल भी डर नहीं है। अब हम सावधानी से तुम्हारा सामना करेंगे। (चाकू की ओर मुड़ कर) चाकू, अब तुम हमें नहीं डरा सकते। इस्तेमाल करने के बाद हम तुम्हें सावधानी से बंद कर तुम्हारी जगह रख देंगे।

[चाकू का सिर नीचे झुक जाता है।]

रमा : (सुई से) सुई, हमें बहुत अफसोस है, तुम हमें लहू-लुहान नहीं कर सकोगी। हम हमेशा एक लंबे धागे से तुम्हें बींधकर रखेंगे और तुमसे काम लेने के बाद तुम्हें धागे की रील में फंसा देंगे।

[सुई का सिर नीचे झुक जाता है।]

राजू : (दियासलाई से) दियासलाई, हम तुम्हें ताक में रखेंगे। हम तुम्हें खेलने की चीज नहीं बनाएंगे। जब जरूरत होगी, तभी तुम्हें हाथ लगाएंगे।

रमा : हम तुमसे अपना कान भी नहीं कुरेदेंगे।

राजू : और मुंह में तो भूलकर भी नहीं डालेंगे।

[दियासलाई का सिर नीचे झुक जाता है।]

रमा : (बिजली के पंखे से) बिजली के पंखे, हम तुमसे बहुत इज्जत से पेश आएंगे।

राजू : हम हमेशा तुमसे एक हाथ दूर रहेंगे।

रमा : जब हमें हवा की जरूरत नहीं होगी, हम तुम्हें आराम से कोने में बैठे रहने देंगे।

[बिजली के पंखे का सिर नीचे झुक जाता है।]

राजू : (कुरसी से) तीन टांग की कुरसी, हम तुम्हें बैठक से उठा कर स्टोर में उलट कर रख देंगे।

रमा : (मेज से) डगमग मेज, हम बढ़ई को बुलवा कर तुम्हारे चारों पैर बराबर करवा देंगे।

[कुरसी-मेज का सिर नीचे झुक जाता है।]

राजू : (दवा की गोली से) दवा की गोली, हम तुम्हें शीशी में कैद रखेंगे। हम कागज पर लाल स्याही से 'जहर' लिखकर उसे शीशी के ऊपर चिपका देंगे।

रमा : और शीशी को आलमारी में बंद कर देंगे।

[दवा की गोली का सिर नीचे झुक जाता है।]

राजू : (कैंची से) हम तुम्हें अपने कान कतरने का मौका नहीं देंगे।

रमा : हम तुमसे सिर्फ कागज या कपड़ा कतरेंगे और तुम्हें मेज की दराज में बंद रखेंगे।

राजू : (स्टोव से) स्टोव, हम तुम्हें जलता छोड़कर घर से बाहर कभी नहीं जाएंगे।

रमा : हम जब भी तुम्हारे पास बैठेंगे, अपने कपड़ों का ध्यान रखेंगे।

राजू : तुम्हारा काम पूरा होते ही हम तुम्हें बुझा देंगे।

रमा : हम स्प्रिट की बोतल को हमेशा तुमसे दूर रखेंगे...

[कैंची और स्टोव का सिर नीचे झुक जाता है।]

राजू : (विजयगर्व से) घर में बसने वाले खतरो, अब तुम्हें क्या कहना है?

[सब खतरे एक-दूसरे की ओर पराजित दृष्टि से देखते हैं। वे अपना सिर झुकाए, नीची नजर से दाहिनी ओर प्रस्थान करते हैं और कमरे के बाहर हो जाते हैं। धीरे धीरे कमरे के दाएं भाग में रोशनी लौट आती है। बिजली का पंखा भी बंद हो जाता है।]

राजू : (**रहस्यमयी से**) हम तुम्हारे आभारी हैं, सावधानी ! अब हम तुम्हारी बातों को हमेशा ध्यान में रखेंगे।

रमा : और हम दोनों भाई-बहन तुम्हारे साथ इस घर में बड़े आनंद से रहेंगे।

[रहस्यमयी बालिका मुसकराती है। भाई-बहन भी उसके साथ मुसकराते हैं।]

पर्दा गिरता है

(१६६२)

गाड़ी रुकी नहीं

□ मनोहर वर्मा

पात्र

गिरीश	मुकेश
रमेश	झुम्मन
सुदेश	प्रदीप
राकेश	मास्टरजी

[स्थान : होस्टल में लड़कों का एक कमरा। सब लड़के यात्रा पर जाने के लिए अपना सामान बांधने में व्यस्त हैं।
समय : दिन का तीसरा पहर।
पर्दा उठते ही स्टेज पर गिरीश, रमेश और सुदेश अपने अपने कार्य में व्यस्त दिखाई देते हैं। गिरीश होलडाल जमा रहा है।]

गिरीश : **(उतावली में, कुछ खोजते हुए)** रमेश, मेरी चादर कहां है ?

रमेश : मुझे क्या पता ? **(ट्रंक जमाता है। काफी कपड़े ट्रंक के पास ही रखे हैं।)**

गिरीश : फिर किसे पता है ? जिससे पूछो, वह यही जवाब देता है। **(खोजते हुए)** किसी को पता नहीं, तो फिर गई कहां ?

[कहते कहते खड़ा हो जाता है। कमर पर हाथ रखकर एक क्षण ठहरता है, फिर इधर-उधर बिखरे पड़े कपड़ों और होलडाल में खोजता है।]

सुदेश : **(कपड़ों पर प्रेस करते करते)** कैसी थी चादर ?

गिरीश : **(खड़ा होकर सुदेश की ओर देखते हुए। हाथ कमर पर)** नीली चौकड़ी वाली।

सुदेश : अरे हां, कहीं देखी तो थी। **(सोचने की मुद्रा। फिर चुटकी बजाते हुए)** हां, याद आया...**(कुछ ठहरकर)** धोबीघाट पर देखी थी। **(हंसी)**

[इधर रमेश दौड़कर खूंटी पर लटक रहे हेंगर मे हरी ऊनी पैंट उतारकर अपने ट्रंक में रखने लगता है।]

गिरीश : अरे, अरे, यह क्या हो रहा है ? पैंट मेरी है, जनाब !

रमेश : तुम्हारी है ? **(मुसकराते हुए)** तो फिर मेरी कहां गई ? **(इधर-**

उधर नजर दौड़ाता है)

सुदेश : पहने तो हो।

रमेश : एं! (अपनी पहनी हुई पेंट देखता है, जो सफेद है। फिर हंस कर) यह नहीं, यार ऐसी ही हरी पेंट थी। (इधर-उधर खोजता है। तभी पार्श्व में रकाबियां और बर्तन गिरने की आवाज के साथ एक हल्की सी चीख)

सुदेश : अरे, राकेश, भैंस ने काट खाया क्या?

[सुदेश दौड़कर भीतर जाता है—साथ ही रमेश भी। दूसरे ही क्षण राकेश के साथ दोनों लौटते हैं। राकेश के कपड़ों पर कुछ साग-भाजी और चटनी आदि के दाग लगे होते हैं। रमेश राकेश की बांह पकड़े लाता है और सुदेश कुछ बर्तन, जिनमें खाने-पीने का सामान है।]

गिरीश : (आश्चर्य से) अरे! यह क्या हुआ, राकेश?

[राकेश पांव पकड़कर बैठ जाता है।]

रमेश : हुआ क्या, बड़े तीसमारखां बनते हैं। खाने-पीने का सामान एक साथ उठाकर ला रहे थे, पांवों के बीच से चूहा निकलकर भागा...

सुदेश : तो हजरत चूहे से ऐसे डरे, ऐसे चौंके कि धड़ाम! ये नीचे, बर्तन ऊपर और चूहा बिल में। (हंसी)

गिरीश : फिर...(चिंतित सा) खाने का क्या हुआ?

सुदेश : खाने का? यह हुआ...(बर्तन में से दो-एक परांठे निकाल कर दिखाते हुए) यह पूड़ी साग में चुपड़ी। यह आलू का साग (दूसरा बर्तन उठाते हुए) कांच के चूरे से भरपूर।

गिरीश : (पेट में दोनों हाथ लगाकर) तो फिर आज पेट की छुट्टी।

सुदेश : और भूख को फांसी।(राकेश की कमीज पर लगी चटनी चाट लेता है)

राकेश : (तेजी से) अरे, यह टेबिल पर धुआं।

सुदेश : ओह, माई गाड। मर गए। (बर्तन पटककर भागता है)

[राकेश के कहने के साथ ही रमेश भी, जो अपना ट्रंक जमा रहा होता है, भागता है और उस टेबिल के पास ही रखे होलडाल से गिरते गिरते बचता है। पर उसका हाथ प्रेस के तार पर पड़ जाता है। इधर प्रेस धरती पर और उधर प्लग से वायर टूट जाता है। पटाक की आवाज के साथ फ्यूज उड़ जाता है। टेबिल पंखा

और टेबिल लैंप बंद हो जाते हैं।]

सुदेश : (**अपनी नमी देकर रखी हुई बुशर्ट उठाते हुए**) लो, हो गई प्रेस।

राकेश : (**हल्के लंगड़ाते हुए**) अपना तो बेड़ा गर्क हो गया! पांच-छः कपड़े तर पड़े हैं। (**चलकर टेबिल तक जाता है**) क्या करें, अब? पता नहीं, इस रमेश को बैठे-बैठाए क्या हो जाता है।

रमेश : (**हंसते हुए**) भई, मैंने कोई जान-बूझ कर तो किया नहीं।

राकेश : दूसरों का काम बिगाड़ कर हंसते हो, बेशरम हो पक्के।

[मुकेश दौड़ता हुआ आता है।]

मुकेश : ए रमेश, धोबी से कपड़े लाया मेरे?

रमेश : (**मुंह बनाकर**) ओह! वेरी सारी।

मुकेश : वेरी सारी। (**मुंह बिगाड़ कर**) एक छोटा सा काम बताया, वह भी नहीं हुआ। हम ही बेवकूफ हैं, जो तुम्हारा काम कर देते हैं।

गिरीश : क्या काम किया तूने?

सुदेश : जूतों पर पालिश...

राकेश : (**आगे जोड़ता है**) सिर में मालिश। (**ठहाका**)

मुकेश : (**मुसकराते हुए**) ला, ला, रसीद दे जल्दी।

रमेश : (**पतलून की जेबें टटोलते हुए**) रसीद तो मैंने बाजार से लौटते ही तुम्हें दे दी थी, भई।

मुकेश : (**अपनी जेबें टटोलता है**) मुझे? (**जेब से ट्रंक की चाबी निकलती है**) नहीं, नहीं, रमेश मुझे नहीं दी तुमने।

रमेश : म्यां, देखो तो सही, कहीं ट्रंक में रख दी होगी।

[मुकेश एक बंद रखी अटैची को उठाकर पलंग पर रखकर खोलता है और सब कपड़े निकाल निकाल कर देखता है। बाहर कपड़ों का ढेर लग जाता है। रसीद नहीं मिलती।]

मुकेश : (**चिंतित सा**) मर गए, उस्ताद। रसीद नहीं मिली। (**रुककर**) रमेश, तुम अपने पास और देख लो एक बार।

[खोया खोया सा स्वयं इधर-उधर कपड़ों में और बार बार अपनी जेबों में ढूढ़ता रहता है। दुबारा टटोलता है। बुशर्ट की ऊपर वाली जेब से एक-दो कागज के साथ एक परची निकालता है।]

रमेश : मुकेश, देखो, यह तो नहीं। (**परची देता है**)

मुकेश : यही तो है दुष्ट। मेरे सारे जमे-जमाए कपड़े निकलवा दिए। (रमेश हंसता है) बड़ा तीर मारा है, जो अब हंस रहे हो। (वापस अपने कपड़े जमाने लगता है)

[चपरासी झुम्मन का दौड़े दौड़े आना। मुंह में तंबाकू दबाए दबाए कुछ मुंह ऊंचा करके बोलता है और बार बार धोती को ऊंचे चढ़ाता-छोड़ता है।]

झुम्मन : गिरीश भैया, आपको मास्टरजी बुलाए रहेन, जल्दी।

गिरीश : (झुंझलाते हुए) उफ्, मास्टरजी अपना ही अपना काम करवाते रहेंगे। मैं अपना सामान न जमाऊं? अब तीनों घड़ियों के अलार्म बजने ही वाले हैं।

मुकेश : अरे रे, बिगड़ते क्यों हो? कोई खास काम होगा। घड़ियों के अलार्म तो गाड़ी के टाइम से पंद्रह मिनट पहले के हैं। (झुम्मन से) झुम्मन, तुम गिरीश का होलडाल बांध दो तब तक।

झुम्मन : हां, हां, हम बांध देइत, लल्ला...लाओ। (घुटने से ऊंची धोती को और ऊंचे चढ़ाते हुए,फुदकती चाल से चलते हुए होलडाल के पास पहुंचता है)

गिरीश : (जाते जाते) देख जरा ठीक से बांधना। मैं अभी आया। (चला जाता है।)

[झुम्मन होलडाल को गोल करके पट्टे खींचता है। एक-दो बार हूं...हूं...करके खींचता है, फिर होलडाल पर पांव लगाकर पट्टा और जोर खींचता है। पट्टा टूट जाता है। एइ लो, बाबू...कहता हुआ झटके के साथ पीछे को लुढ़क जाता है। सभी उपस्थित लड़के ठठाकर हंसते हैं। तभी गिरीश का दौड़ते हुए वापस आना।]

गिरीश : (हंसते हुए) सुनो, दोस्तो, सुनो, सभी लोग अपने अपने बिस्तर वापस खोलो।

सुदेश : (हंसते हुए) तुम्हारा तो झुम्मन ने खोल भी दिया... (एक बार फिर हंसी)

गिरीश : मास्टरजी के होलडाल को चूहे खा गए हैं, इसलिए उनके होलडाल का सामान हमें अपने होलडाल में भरना होगा।

[तभी एक लड़का गद्दा, तकिया, कंबल, चादर आदि लाकर आंगन में पटक देता है।]

गिरीश : लो, भई, एक एक चीज बांट लो। यह रहा मास्टरजी का सामान।

झुम्मन : **(गंभीरता से)** यह पट्टा टूट गएन, ललुवा...अब का करिहैं ?

गिरीश : **(माथा ठोंकते हुए)** अबे, इसे जल्दी से सिलवा, ललवा के कलवा ।

[हंसी के बीच पट्टा लिए झुम्मन धोती ऊंचे उठाए फुदकती चाल से चल देता है। तभी प्रदीप प्रवेश करता है ।]

प्रदीप : मुकेश, मास्टरजी, अपनी चाबियों का गुच्छा मंगा रहे हैं ।

मुकेश : मैंने मास्टरजी को दे दिया...शायद ! **(अपनी जेब बाहर से ही टटोलता है)**

प्रदीप : उन्हें नहीं मिल रहा। वह तो खुद ढूंढ रहे हैं।

[प्रदीप और मुकेश दोनों जाने लगते हैं ।]

मुकेश : रमेश, मेरी अटैची खुली पड़ी है ?

रमेश : **(अटैची को देखता है। ढक्कन खुला है)** हां, बंद कर दूं ?

मुकेश : ऐं...हां...**(चला जाता है)**

[रमेश अटैची बंद करके पास ही रखा खटके से बंद हो जाने वाला ताला लगा देता है। कुछ क्षण बाद ही मुकेश लौट आता है। चिंतित सा अपनी अटैची के पास पहुंचता है। ताला बंद पाता है।]

मुकेश : रमेश, चाबी दे तो ।

रमेश : चाबी। कैसी चाबी ?

मुकेश : अटैची की ।

रमेश : चाबी कहां थी ? खाली ताला ही था, मैंने दबाकर ही बंद कर दिया था ।

मुकेश : फिर चाबी कहां गई ? **(बड़ा चिंतित सा पतलून और कमीज की जेब में खोजता है)**

गिरीश : तुम्हारे पर्स में थी न एक चाबी ?

मुकेश : हां, वही तो थी। **(कुछ सोचकर)** पर्स मैंने तुम्हें ही तो दिया था ।

गिरीश : मुझे तुमने अटैची में रखने को ही तो कहा था। तभी रख दिया था।

मुकेश : तब तो मर गए, उस्ताद !

[मास्टरजी का प्रवेश]

मास्टरजी : **(हाथ की दोनों कुहनियों से पतलून को ऊंचे खिसकाते हुए)** अरे मुकेश, चाबियां दो, भई ।

मुकेश : सर, मुझे याद है, मैंने आपको लौटा दी थीं।

मास्टरजी : (**पतलून खिसका कर चश्मा साफ करते हुए**) तुमने मुझे दी थीं, पर मैंने तुम्हें वापस दे दी थीं फिल्म निकालने को।

मुकेश : (**डरते हुए**) यस, सर...।

मास्टरजी : फिल्में कहां हैं ?

मुकेश : सर, अटैची में।

मास्टरजी : बस, उन्हीं के साथ चाबियां होंगी जरूर...देखो...

मुकेश : (**डरते हुए**) सर, ताला लगा है।

मास्टरजी : (**चिढ़ते हुए**) ताला खोल नहीं सकते ? अजीब लड़के हो।

मुकेश : सर, चाबी अंदर अटैची में ही...

मास्टरजी : (**गुस्से में**) चलो, उठाओ अटैची और हाथ के हाथ बाजार जाकर खुलवाओ अब। चाबियों के बिना क्या होगा, मगर... लगता है, तुम लोगों को आज चलना नहीं है। (**बड़बड़ाते हुए जाते हैं**)

[मुकेश भी अटैची उठाकर चलता है।]

सुदेश : (**चिढ़ाते हुए**) अच्छा, भई मुकेश, अच्छी तरह जाना। चिट्ठी-पत्री देते रहना।

[मुकेश मुसकराता है। और लड़के भी हंसते हुए टा टा, वाई वाई करते हैं। मास्टरजी झुम्मन को आवाजें देते वापस आते हैं।]

मास्टरजी : (**झुम्मन को न देखकर**) अरे, यह झुम्मन का बच्चा कहां गया ?

राकेश : सर, वह तो...(**डरते हुए**) होलडाल की बेल्ट सिलवाने गया है।

मास्टरजी : ओह, तुम लोग सुबह से कर क्या रहे हो ? (**परेशान सा**) तुमने खाने के सामान का पैकिंग कर दिया, राकेश।

राकेश : सर...मैं...(**खाने के सामान की ओर देखता है**) अभी पैक किए देता हूं।

मास्टरजी : कब करोगे फिर ? गाड़ी चली जाएगी, उसके बाद ? (**कुछ रुक कर**) और प्रदीप, तुम्हारे जिम्मे क्या काम था ?

प्रदीप : सर लांड्री से आपके...

मास्टरजी : (**बीच ही में**) हां, कपड़े लाने थे न। कहां रखे ?

प्रदीप : सर, लाया ही कहां !

मास्टरजी : क्यों ?

प्रदीप : सर, आज उसकी दूकान बंद है।

[टूटी बेल्ट लिए झुम्मन का प्रवेश]

झुम्मन : (**घबराया सा**) ये पट्टवा तो ठीक नाहीं हो सकी...

मास्टरजी : क्यों ?

झुम्मन : आज सबै ही दुकान बंद रही, बाबू।

[गिरीश का अटैची लिए प्रवेश]

मास्टरजी : (**खीझते हुए**) तुम्हें भी दूकान बंद मिली होगी ?

गिरीश : (**गंभीरता से**) यस, सर ! (**लड़कों की हंसी**) आज शहर में हड़ताल है, सर !

मास्टरजी : (**मुंह बिगाड़ कर खीझते हुए**) सर...सर...सर, सबका सिर फिर गया है। आज कैसे जाओगे तुम लोग ? (**घड़ी देखते हैं**) कुल दस-पंद्रह मिनट रह गए हैं। मैंने तीन-चार लड़कों को कुछ सामान लेकर स्टेशन भेज भी दिया।

[टेलीफोन की घंटी। झुम्मन दौड़कर कारीडोर से टेलीफोन उठाकर मास्टरजी के पास ले आता है। तभी तीनों अलार्म घड़ियों के अलार्म बज उठते हैं। मास्टरजी झुंझलाकर उधर देखते हैं और चार-पांच लड़के डरते-सकपकाते अलार्म बंद करने दौड़ते हैं।]

मास्टरजी : हां, तो कैलाश, तुम स्टेशन से बोल रहे हो। हां...हां...हां... गाड़ी जाने में कुछ ही मिनट रह गए हैं ?...मैं क्या करूं ? यहां से लोग अभी तैयार ही नहीं हुए।...ऐं...क्या डिब्बे में बिस्तर भी बिछा लिए हैं ? अरे, इतनी जल्दी क्या थी, बेवकूफ ?...ऐं...गाड़ी सीटी दे रही है ? तो कमबख्त दौड़कर अपना सामान तो उतारो।...हां...हां...अरे। पागल हो ? अब इस गाड़ी से कैसे जा सकते हैं ?...(**झुंझलाते हैं**) गधे...

[मास्टरजी के टेलीफोन रखने के साथ ही पर्दा गिर जाता है।]

सिर मुंड़ाते ओले पड़े

□ प्रेमलता दीप

पात्र

संजीव	चुन्नू
पूर्णिमा	संजय
संदीप	घनचक्कर

तथा अन्य ६ से १४ वर्ष तक की आयु के १०-१५ बच्चे : बंगाल, राजस्थान पंजाब, महाराष्ट्र, गुजरात, आंध्र, केरल, कर्नाटक आदि प्रांतों की वेशभूषा में।

[मध्यमवर्ग परिवार के घर का एक कमरा। बाईं ओर एक पलंग है जिस पर पलंगपोश बिछा है। पीछे दीवार से सटी तीन-चार कुर्सियां रखी हैं और कमरे के बीचोबीच एक छोटी मेज रखी है। मंच के अग्रिम भाग में दाएं-बाएं दो दरवाजे हैं--एक घर के भीतर खुलता है और दूसरा बाहर की ओर।

पर्दा उठने पर संजीव जमीन पर लेटा दिखाई देता है। बड़े से गावतकिए को पेट के नीचे लंबाई में रखकर वह लेटा है और सामने को झुका है। कोहिनी टेके, एक हाथ पर ठोड़ी रखे, दूसरे हाथ से जमीन पर रखी किताब के पन्ने पलट रहा है। उसकी मुद्राओं से ऐसा लगता है कि वह किसी नाटक का अभ्यास कर रहा है। लगभग एक मिनट तक ऐसा करने के बाद वह खड़ा हो जाता है।]

संजीव : ऊंह, मैं भी गधा हूं। गधे की तरह जमीन पर लेट लगाकर क्या नाटक का रिहर्सल किया जाता है? **(धीमी आवाज में)** कोई सुन तो नहीं रहा? चंदू मामा ने मेरा नाम गधेराम रख दिया तो ठीक ही किया क्योंकि मेरे सब काम गधों जैसे होते हैं। नाटक किया जाता है खड़े होकर, या इंसानों की तरह बैठकर, मंच पर। गावतकिए पर नहीं। मगर...यहां मंच कहां से आए? मंच होता है ऊंचा सा प्लेटफार्म और सामने दर्शकों के बैठने का स्थान होता है। प्लेटफार्म पर कलाकार होते हैं और सामने होते हैं दर्शक। **(दर्शकों की ओर देखते हुए)** यहां दर्शक तो है नहीं। हां, कलाकार जरूर हाजिर है और... और...ठीक है। पलंग को ही मंच मान लेते हैं। **(उछलकर पलंग पर खड़ा हो जाता है)** और अब रिहर्सल शुरू होती है। **(ऊंची आवाज में, मुद्राओं सहित)** ओ रावण, हट जा सामने

से, नहीं तो शिवजी की तरह अपना तीसरा नेत्र खोलकर तेरा दहन कर दूंगी।...अरे, यह क्या? ये तो सीताजी के 'डायलाग' थे और मैं तो लड़का हूं। तो क्या बनूं? ठीक से, लक्ष्मण बनता हूं। (**चिल्लाकर**) शूर्पनखा, शूर्पनखा...

[पूर्णिमा आवाज सुनकर भीतर से दौड़ी आती है। वह संजीव की मुद्राएं देखकर घबराई हुई सी लगती है क्योंकि इस समय संजीव पलंग पर टांगें चौड़ी करके खड़ा है। दाहिने हाथ की मुट्ठी आकाश की ओर है और बाएं हाथ की मुट्ठी नीचे की ओर तनी है।]

पूर्णिमा : भैया! भैया!

संजीव : खबरदार, जो एक कदम भी आगे बढ़ाया! (**पूर्णिमा सहमकर वहीं खड़ी हो जाती है**) आगे बढ़ी तो तेरी नाक काट लूंगा।

पूर्णिमा : मेरी? (**वह आश्चर्यचकित हो जाती है। आंखें फैली की फैली रहती है और मुंह खुला**)

संजीव· : हां, तेरी! नहीं नहीं, तेरी नहीं शूर्पनखा की।

पूर्णिमा : कहां है शूर्पनखा?

संजीव : रामायण में।

पूर्णिमा : रामायण में? भैया, दिमाग तो ठीक है तुम्हारा?

संजीव : हां, गौ नए पैसे ठीक है दिमाग हमारा। हट जा शूर्पनखा, इस समय हम लक्ष्मण नहीं हैं, तेरे भक्षक हैं।

पूर्णिमा : (**संजीव का रौद्र रूप देखकर चिल्लाती है**) भैया, पागल हो गए हो क्या?

संजीव : ए लड़की, पागल कहती है हमें! एक कलाकार को पागल कहती है। अपने बड़े भाई को मूर्ख बताती है। जानती नहीं, इस समय हम नाटक कर रहे हैं।

पूर्णिमा : नाटक?

संजीव : हां, नाटक!

पूर्णिमा : किसको दिखाने के लिए? यहां तो कोई है भी नहीं।

संजीव : न हो, हम किसकी परवाह करते हैं। सच बताएं, हम नाटक नहीं, नाटक की रिहर्सल कर रहे हैं।

पूर्णिमा : ओह! तो कलाकारजी मंच पर खड़े हैं। कलाकारजी, जरा नीचे उतरिए, आपसे जरूरी बात कहनी है।

संजीव : (**उसी नाटकीय मुद्रा में**) हमसे? अच्छी बात है। तो हम अभी कलाकार से इंसान बन जाते हैं। (**कूदकर नीचे आता है**)

बोलो, देवी, क्या कष्ट है ?

पूर्णिमा : कष्ट कुछ नहीं। मालूम है, आज दावत है।

संजीव : दावत किस चीज की है।

पूर्णिमा : चने-कुरमुरे और गुड़ की।

संजीव : बस ?

पूर्णिमा : और क्या ? पाकेटमनी के जो दो रुपए बचाए थे, उससे क्या आपको दूध-जलेबी की दावत मिल जाती ! **(संजीव दूध-जलेबी का नाम सुनकर होंठों पर जबान फिराने लगता है)**

पूर्णिमा : **(तुनककर)** भैया, कहते हैं सौ बरस कुत्ते की पूंछ पत्थर के नीचे रख दो, तब भी वह टेढ़ी की टेढ़ी ही रहेगी।

संजीव : गलत।

पूर्णिमा : कैसे गलत ?

संजीव : सौ बरस में तो कुत्ता मर चुका होगा। मरकर बदन अकड़ जाता है और तब पूंछ अकड़कर जरूर सीधी हो जाएगी।

पूर्णिमा : भैया, अगर हम इसी तरह बहस करते रहे और अम्मा आ गई तो सारा गुड़ गोबर हो जाएगा।

संजीव : आलराईट। देख, अभी सेटेलाईट की तरह फुरती दिखाता हूं।

[संजीव जल्दी जल्दी कुर्सियां रखने लगता है। संदीप भागा हुआ आता है।]

संदीप : दीदी, दीदी, बाहर चुन्नू आया है, भैया के नाटक की ड्रेस लेकर।

संजीव : **(लपककर संदीप के पास पहुंचता है)** ड्रेस लाया है ? तो आने दे उसे, बाहर क्यों रोक दिया है ?

संदीप : वह अंदर आने से डरता है।

संजीव : अजीब आदमी है। हम हौवा हैं क्या ?

संदीप : हम हौवा नही। वह पूछ रहा था, अम्मा-बाबू घर पर हैं क्या ?

संजीव : ओह, यह बात है। **(जोर से)** चुन्नू, अंदर चले आओ भाई, बेखटके। मैदान साफ है, अम्मा बाबू घर पर नहीं है।

चुन्नू : **(बाहर से पुकारकर)** घर पर नहीं हैं तो कहां गए हैं ?

संजीव : वे मुंडन में गए हैं।

चुन्नू : किसके मुंडन में गए हैं ?

संजीव : **(पूर्णिमा से)** देखा, है न जमूरा। बड़ों के भी कभी मुंडन होते हैं ? सिर तो बेचारे बच्चों के ही मूड़े जाते हैं और मूंड़ने

वाले होते हैं बड़े।

पूर्णिमा : पर भैया, सिर मुंड़ाते ओले पड़े। मैंने तो यह नहीं कहा कि सिर्फ बच्चों के ही सिर मुंड़ाने पर ओले पड़ते हैं।

संजीव : धत् पगली! यह तो कहावत है। वहां सचमुच सिर थोड़े ही मूड़ा जाता है...

चुन्नू : **(बात काटकर जोर से)** तो क्या मैं अंदर आऊं?

संजीव : **(जोर से)** बेखटके।

[चुन्नू हाथ में बड़ी सी काली काली, रावण की पोशाक लटकाए ऐसे दबे पांव, हिलता-डुलता प्रवेश करता है मानो अंदर कोई उसे काट लेगा। सब हंसते हैं।]

संजीव : ला यार, दिखा तो ड्रेस कैसी बनाई है संजय ने?...हां भई, मेहनत तो खूब की है। वाह वाह, इसे पहनकर तो खूब खिलेगा रावण! पूर्णिमा, मैं इसे पहन लूं तो तू मुझसे डरेगी न? **(कहते कहते वह ड्रेस फैला देता है, जिसका चेहरा बड़ा ही भयानक है)**

पूर्णिमा : **(डरने का अभिनय करती हुई)** उई मां! मैं क्या, इसे देखकर तो सारे हिंदुस्तान के बच्चे डर जाएं।

संदीप : और अम्मा-बापू?

[सब हंसते हैं।]

पूर्णिमा : भैया, अब कब तक इसका निरीक्षण करते रहोगे? दावत की भी कुछ फिक्र है कि नहीं। जाओ, इसे अंदर रख आओ। मैं भी फ्राक बदल कर आती हूं। संदीप, तुम भी अपने कपड़े बदल लो।

[तीनों अंदर जाते हैं। कुछ क्षण के लिए मंच खाली रहता है। फिर धीरे धीरे बाहर से भीड़ का शोर उभरता है।]

बहुत सी आवाजें : संजीव! संजीव! पूर्णिमा! संदीप!

[पूर्णिमा और संजीव भाग कर मंच पर आते हैं। पूर्णिमा के फ्राक की दुम लटक रही है जिसे वह जल्दी जल्दी बांधती है। मगर संदीप आधी पहनी नेकर हाथ में थामे हैं, जो बार बार खिसक जाती है। वह कस कर नेकर बांधता है। संजीव दरवाजा खोलता है।]

संजीव : अहा, आज तो सारा का सारा हिंदुस्तान हमारे घर पधार रहा है।

[विभिन्न प्रांतों की वेशभूषा में बहुत से बच्चे दिखाई पड़ते हैं। संदीप और पूर्णिमा सब को अर्धगोलाकार रूप में बिठाते हैं।]

संजीव : भाइयो और बहनो ! जरा दिल थामकर बैठिए, लखनऊ के नवाब साहब तशरीफ ला रहे हैं। (**लखनऊ के नवाब साहब की ड्रेस पहने और साथ में बुर्का ओढ़े बेगम साहिबा आती हैं। इसी तरह कमेंट्री के साथ सब बच्चे आते हैं।**) और यह हैं महाराष्ट्र के मच्छीमार, गुजरात के व्यापारी, पारसी बिजनेस मैन और उनकी वाईफ, पंजाब का लड़का और लड़की, बंगाल के कलाकार और उनकी धर्मपत्नी, राजस्थान के सेठ और सेठानी, सिंधी जोड़ा, केरल, आंध्र और कर्नाटक प्रांतों के बच्चे और भाइयो, जरा दिल थामिए, यह रहे घनचक्कर भैया। (**सब दरवाजे की ओर देखते हैं, मगर कोई नहीं आता। इतने में बच्चे अर्धगोलाकार रूप में मंच पर बैठ चुके हैं।**) दोस्तो, घनचक्कर भैया नहीं आए ?

एक लड़का अजी, वह क्या आएंगे ? जब वह सड़क पर चलते हैं तो लगता है, चल इधर रहे हैं और देख कहीं और रहे हैं। सो उसी झोंक में कहीं और पहुंच गए होंगे। (**सम्मिलित हंसी**)

[बाहर से बेसुरी आवाज सुनाई पड़ती है।]

आवाज अरे भाई संजीव, घर में ही हो ?

सब आ गए, घनचक्कर। आज तो सब खाना वह ही खा जाएंगे। अब क्या करें ?

संजीव दोस्तो, डरने की कोई बात नहीं। इधर आओ।

आवाज अरे, कोई है क्या ?

[सब बच्चे छिप जाते हैं। कुछ पलंग के नीचे, कुछ दरवाजों के पीछे। संजीव भी जाता है। घनचक्कर अंदर प्रवेश करता है। लंबा-पतला, तंग पजामा लंबा कुरता, छोटा कोट, सिर पर गोल टोपी, हाथ में बड़ा सा झोला।]

घनचक्कर : हैं ! कमरे में कोई भी नहीं। कहां गए सब लोग ? मैं तो दावत का सामान बटोरने के लिए साथ में झोला भी लाया था। (**सोचता सोचता पलंग पर बैठ जाता है, फिर उचककर खड़ा हो जाता है**) ठीक है, ठीक है सब लोग दावत का सामान खरीदने बाजार गए होंगे। तब तक मैं पलंग पर ही बैठता हूं।

[वह पलंग पर बठ जाता है। एक बच्चा उसके पांव में चिकोटी भर लेता है। घनचक्कर पांव ऊपर उठाकर खुजाता है जिससे जूते का निचला भाग दर्शकों को दिखाई पड़ जाता है। उसमें तला ही नहीं है।]

घनचक्कर : (**तले में खुजाता खुजाता**) मालूम होता है, पलंग के नीचे बड़े मोटे मोटे खटमल घुस गए हैं। (**टांगें ऊपर करके पलंग पर ही बैठ जाता है**)

[बच्चे इकट्ठे दम लगाकर चारपाई हिलाते हैं। घनचक्कर कूदकर खड़ा हो जाता है।)

घनचक्कर : हैं ! भूचाल, भूडोल, अर्थक्वेक...या...भूत। (**कुछ बच्चे जोर जोर से दरवाजा हिलाते हैं**) दरवाजा हिल रहा है... बिना हवा के, बिना पवन के। ऊंह, विना पवन के, बिना वायु के। सब के चले जाने के बाद जरूर इस घर में भूतों का वास हो गया है।

[घनचक्कर दरवाजे की ओर देखता हुआ आगे बढ़ता है। उसका हाथ फैला है, आंखें भी फैली हैं और वह झुका झुका ही चल रहा है। पीछे से काले कपड़े पहने संजीव आता है और उसके कंधे पकड कर थपथपाता है। घनचक्कर घूम कर देखता है, उछलता है और बेसुरे तरीके से चिल्लाता है—'भूत'। वह भागने की कोशिश करता है।]

संजीव : (**मोटी आवाज में, ठहर ठहर कर**) ठहरो ! कहां जाते हो ?

घनचक्कर : (**कांपते हुए**) घ—घ—घर

संजीव : कौन से घर ?

घनचक्कर : अपने...

संजीव : तुम यहां क्यों आए ?

घनचक्कर : द—द—दावत खाने, भूत जी...

संजीव : तो जानते हो इस लालच की क्या सजा है ?

घनचक्कर : जी नहीं...

संजीव : इसकी यही सजा है कि जो हम कहें, वही तुम्हें करना होगा, नहीं तो तुम गधे बना दिए जाओगे।

घनचक्कर : नहीं नहीं, मैं गधा नहीं बनना चाहता। मैं आपके पांव पड़ता हूं, भूतजी। आप मुझे भले जो सजा दें, गधा मत बनाओ।

संजीव : तो बेटा, जरा एक टांग पर तो नाचो—और जोर से। कान

पकड़ो—एक नहीं, दोनों। अब गधे की तरह जमीन पर लोट लगाओ। खड़े हो जाओ। अब दुलत्ती झाड़ो। अब कुत्ते की तरह रेंको। अब कुत्ते की तरह बैठो और उसी की तरह भौंको। अब मुर्गा बनकर बांग दो। अब बंदर की तरह खुजाओ और बंदर की तरह कलाबाजी लगाओ। अब अपने मुंह पर दस तमाचे मारो और बोलो—लालच बुरी बला है।

घनचक्कर : **(इशारों पर नाचता हुआ)** लालच बुरी बला है भाइयो, लालच बुरी बला है। लालच बुरी बला है भाइयो,लालच बुरी बला है।

संजीव : बस, शोर मत मचाओ और भाग जाओ।

[घनचक्कर जाता है। बच्चे हंसते हंसते अपने अपने स्थान से बाहर निकल आते हैं। संदीप और पूर्णिमा ढाक के पत्तों में चने-कुरमुरे बांटने लगते हैं। संजीव ड्रेस बदलने अंदर जाता है लेकिन घबराकर पुनः लौट आता है।]

संजीव : पूर्णिमा, गजब हो गया। यह ड्रेस तो चिपक गई, उतरती ही नहीं।

पूर्णिमा : चुन्नू भैया ने कहा था न कि संजय भैया ने कहा है कि इसे पहनना मत, नहीं तो गजब हो जाएगा।

सजीव : अब लैक्चर झाड़ेगी या मदद भी करेगी।

संदीप : वाह भैया, यह काम तो लड़कों का है। लड़कियां तो बस बातें बनाना जानती हैं। लाओ, मैं इसे खींच कर निकाल दूं।

[संदीप ड्रेस खींचता है, मगर वह उतरती नहीं। फिर तो सब बच्चे पिल पड़ते हैं। खींचातानी शुरू हो जाती है। संजीव चिल्लाता है।]

पूर्णिमा : जल्दी करो ! जल्दी करो। अम्मा और बाबू आ गए तो बेड़ा गर्क हो जाएगा। शाबाश, जल्दी करो।

संजीव : **(रोता हुआ)** सिर मुंडाते ही ओले पड़ गए। अब क्या करूं ?

संदीप : **(रुआंसा होकर अलग खड़ा हो जाता है)** भैया, अब तो सबकी चांदपिटाई हो जाएगी। अम्मा बोलेंगी, 'घर को ही नाटकघर बना दिया।' अब क्या करें, भैया ? **(रोने लगता है)**

[खींचातानी जारी रहती है। संजय भागा भागा आता है। दोनों हाथों में काले काले कपड़े के बड़े बड़े कान पकड़े है।]

संजय : संजीव, ओ संजीव। लो भई, तुम्हारे कान तो मेरे घर पर ही... अरे...यह क्या किया तुमने ? बिना मेरे पूछे ही ड्रेस पहन ली। कहलाया था कि मत पहनना। तुम्हारे सिर पर भूत सवार हो गया था क्या ?

संजीव : (रोता रोता) सिर पर नहीं भैया, यहां तो बदन पर भूत सवार हो गया है। घनचक्कर को डराने के लिए यह ड्रेस पहन ली और अब तो मेरा ही कचूमर निकल गया है...गले पड़ गई यह ड्रस, अब क्या करूं ?

संजय : गले पड़ गई तो गले पड़ा ढोल बजाओ। मुझे क्या रो रोकर सुनाते हो।

संजीव : नहीं भैया, पैरों पड़ता हूं। इस बार जान छुड़ा दो, फिर हमेशा तुम्हारा कहा माना करूंगा।

[संजय जेब से एक शीशी और रुई निकालता है। जैसे जैसे संजय रुई में रखे लोशन से भिगोकर बदन पर लगाता है, ड्रेस छुटती जाती है। इतने में बाहर से मां की आवाज आती है—'बेटा संजीव।' अब तक ड्रेस अलग हो चुकी है। संजीव उसे पलंग के नीचे फेंक देता है। सब बच्चे सिर पर पांव रखकर भागते हैं और ये तीनों बच्चे एक लाइन में अपनी अपनी किताब लेकर बैठ जाते हैं और गाते हैं।]

तीनों : जान बची तो लाखों पाए
लौट कर बुद्धू घर को आए।

[वे एक दूसरे को देखकर हंसते और गाते हैं।]

पर्दा गिरता है

(१९६२)

सेर को सवा सेर

□ विश्वदेव शर्मा

पात्र

पंडित मसुरियादीन	ललाइन
पंडितानी	चौधरी
लाला मंजीमल	आठ-दस गांववाले

पहला दृश्य

[पंडित मसुरियादीन का घर। वह आसन पर बैठे संध्या कर रहे हैं—चंदन का बड़ा तिलक लगाए, रुद्राक्ष की माला पहने। पंडितानी एक ओर मट्ठा बिलो रही है।

मंच के बाईं ओर एक खाट पड़ी है जिस पर बिस्तरा बिछा हुआ है। दीवार पर लक्ष्मी, गणेशजी, हनुमानजी की तसवीरें टंगी हैं।

पंडितजी मंत्रोच्चार करके आचमन लेते हैं और आसन से उठ खड़े होते हैं।]

पंडित : ओ३म नमः शिवाय...अहं ! मैंने कहा, पंडितानी, कुछ लोनी-मट्ठा मिलेगा कि बस सुबह सूखी ही सूखी रहेगी।

पंडितानी : अभी लाती हूं। अरे हां, आजकल श्राद्धों में भी तुम घर ही खाओगे क्या ? आज का न्योता माना है कहीं का ?

पंडित : अरे, अभी तो कोई जजमान आया ही नहीं। भोले शंकर भेजेंगे ही किसी अपने प्यारे को। ओ३म नमः शिवाय !

[दरवाजे पर दस्तक होती है।]

बाहर से आवाज : पंडितजी ! अजी ओ पंडितजी !

पंडित : (चौंककर) ले, कोई आया...अरे, यह तो लाला मूंजीमल की आवाज है...ओ ! कंबल लाइयो।

[पंडितजी खाट पर चढ़ जाते हैं। पंडितानी भौंचक्की सी कंबल लाती है।]

पंडित : (कंबल ओढ़कर लेट जाते हैं) जल्दी से एक तकिया मेरे सिरहाने रख दे। (पंडितानी तकिया देती है) हां, बस, बस ठीक है।

मूंजीमल : (बाहर से) अजी पंडितजी ! पंडितजी भीतर हैं, पंडितानी ?

[पंडितानी भौंचक्की सी खड़ी हैं।]

पंडित : हूं भई लालाजी... **(कराहकर)** घर ही हूं। **(धीरे से पंडितानी से)** जरा चेहरा गमगीन कर ले और दरवाजा खोल दे।

पंडितानी : **(खीझकर, धीरे से)** क्या है यह सब कुछ ? भले-चंगे यह जूड़ी सी क्यों चढ़ आई तुम्हें ?

पंडित : **(धीरे से ही)** अरे, तू नहीं जानती। इस मूंजी का माल मारने का यही तरीका है। बस, बोलना कुछ मत, सुनती रहना। जा, दरवाजा खोल दे।

[पंडितानी दरवाजा खोल देती है। लाला मूंजीमल भीतर आते हैं।]

लाला : पंडितजी, पालागन। ऐं, अरे. आप कैसे हो रहे हैं ? मैंने कहा तबीयत तो ठीक है ?

पंडित : सुखी रहो लालाजी। अजी तबीयत ही ठीक होती तो क्या बात थी ? हफ्तों से बीमार पड़ा हूं...भूख जैसे मर गई है...एक कौर खाने को जी नहीं करता। **(कराहकर)** देही में से जैसे जान निकल गई है।

लालाजी : राम...राम...राम ! अच्छी-भली खुराक को क्या नजर लगी है। और पंडितजी, मैं तो बड़ी आशा से आया था...

पंडित : कहो, कहो, लालाजी ! तुम तो अपने जजमान हो।

लाला : अजी, क्या कहूं। आज बड़े लालाजी का श्राद्ध था। ललाइन बोली, पंडितजी को कह आओ—अजी आप थोड़ा-घना तो खाते ही होंगे एकाध रोटी...अब अपने तो गुरु आप ही हो और किसकी शरण में जाऊं ?

पंडित : ओहो। **(कराहकर)** तबीयत तो ऐसी है कि अगर राजा इंद्र भी आते तो न जाता। मगर आप भी अपने हैं। **(फिर कराहकर)** ओहो !...मना भी नहीं कर सकता...जरूर आऊंगा। आप ललाइन से कह जाना...आऊंगा तो जो रुचेगा बनवा लूंगा...खाया ही क्या जाएगा ? चलो, नाम तो हो जाएगा।

लाला : **(खुश होकर)** आपने तार दिए, पंडितजी...जजमान का भगत हो तो ऐसा हो...दाल-फुलकी जो जी करे ललाइन से बेतकल्लुफी में बनवा लेना...आपका घर है जी...पालागन ! चलूं, दूकान को देर हो रही है।

पंडितजी : सुखी रहो, लालाजी...**(कराहकर)** ओफ ओ...क्या हो गया है मेरे शरीर को।

[लालाजी जाते हैं। पंडितानी किवाड़ बंद कर लेती है।]

दूसरा दृश्य

[पंडितानी बैठी 'रामायण' पढ़ रही है। पास ही अंगीठी जल रही है जिस पर पतीली में कुछ बन रहा है। पंडितानी उठकर अंगीठी में आंच ठीक करती है। फिर आसन पर आ बैठती है।]

पंडितानी : **(रामायण पढ़ते हुए)**
सुनि केवट के बैन, प्रेम लपेटे अटपटे।
विहंसे करुणा ऐन, चितइ जानकी लखन तन ॥
[दरवाजे पर दस्तक होती है।]

पंडितजी : **(बाहर से)** पंडितानी ! ओ पंडितानी !

पंडितानी : घंटा भर भी हुआ न होगा कि लौट आए। कहती न थी, वह वे तिल नहीं जिनमें तेल हो। **(दरवाजा खोलते हुए)** आए होंगे बैरंग। अब ठोको घड़ी भर आटा इनके लिए।
[पंडितजी भीतर आते हैं। हाथ में बड़ी सी छबड़ी है, जो कपड़े से ढंकी है। पंडितजी भीतर आकर दरवाजा बंद कर लेते हैं।]

पंडित : ओहो ! तभी तो वेदों में लिखा है...

पंडितानी : क्या लिखा है वेदों में ? न्यौता खाने जाओ और बैरंग वापस आओ। सच कह रही हूं, अब मेरे बस का नहीं है कुछ भी बनाना...

पंडित : ओहो भागवान ! तुझसे कौन कहता है कुछ बनाने को। तू बनाए ही तो कौन खा लेंगे हम ? नाक तक भरा है हमारा पेट और ले यह अपने लिए भी...**(छबड़ी बढ़ा देता है)**

पंडितानी : **(छबड़ी पर से कपड़ा उठाकर देखती है और खुश होकर)** हाय राम ! सारी की सारी घंटेवाले की मिठाइयां। कोई और जजमान मिल गया था शायद। मैं भी तो कहूं, जाते देर नहीं हुई और वापस...**(अलमारी खोलकर छबड़ी उसमें रख देती है)**

पंडित : अरे, कोई और जजमान क्यों मिलता। हमारे भूजीमल ही कोई गिरे-पड़े सेठ है ? बस, जरा टेढ़ी अंगुली चाहिए इन पीपों में से घी निकालने के लिए ?

पंडितानी : **(चौंककर)** सच ! लाला मूंजीमल का ही माल है यह सब ? कैसे मारा भला इस मूंजी को ?

पंडित : अरे, जजमान के घर खाट भेजने का चलन हमारे खानदान में नहीं है तो क्या घर पर भी खाट तैयार करने का चलन जाता

रहा। यहां तो पेट फटा जा रहा है, आप पूछ रही हैं कैसे मारा मूंजी को ?

पंडितानी : अरे, बिछाती हूं अभी। मुझे क्या पता था कि इतनी जल्दी आ जाओगे। (खड़ी हुई खाट को बिछा देती हैं। बिस्तरा बिछते ही पंडितजी लेट जाते हैं) हां, अब सुनाओ कैसी रही ?

पंडित : अरे, रहती क्या ? एक ही पैंतरे में लाला का कूंडा हो गया। मैं पहुंचा तो ललाइन बोली, 'पंडितजी, लालाजी कह गए हैं कि जब पंडितजी आएं तो जो वह कहें बना देना। क्या बनाऊं ?'

पंडितानी : तो तुम क्या बोले, पंडितजी ?

पंडित : अरे, बोलना क्या था ? जो जी में आता बनवा लेता। खुली छूट थी। मगर डर लग रहा था कि कहीं लाला आज बीच में भी दूकान से न आ जाए। इससे तरकीब दूसरी ही लड़ाई।

पंडितानी : तो घर कुछ बनवाया ही नहीं ?

पंडित : बिलकुल नहीं जी। मैंने पट्टी पढ़ाई—'सेठानी। अब क्या परेशान होंगी। बाजार की पूरी-मिठाई मंगा लो। वेदों में लिखा है कि हलवाइयों के माल खाने को देवता भी तरसते हैं, फिर पितरों का तो कहना ही क्या ?'

पंडितानी : खूब बेपर की उड़ाई।

पंडित : बस, यही थोड़ा सा फलाहार मैंने मंगवा लिया। डटकर खाया और जो बचा उसे परोसे में घर ले आया।

पंडितानी : और दक्षिणा ?

पंडित : वही कैसे रह जाती ? दो रुपए उस खाते भी चढ़ गए।

पंडितानी : तो यह कहो तुमने हजामत कर दी बेचारे मूंजीमल की।

पंडित : अब हजामत की भूलो। फिक्र इस बात की करो कि लाला आकर पूजा शुरू न कर दे। देखो, लेट तो मैं गया ही हूं, अब जमीन पर थोड़ी थोड़ी दूर पर पानी डाल दो और उस पर राख बिखरा दो—लाला आए तो कह देना जब से आए हैं बराबर कै-दस्त आ रहे हैं—सिट्टी-पिट्टी भूल जाएगा।

पंडितानी : तुमने तो अच्छी-खासी मुसीबत मोल ले ली। तो लाऊं फिर पानी और राख ?

[पंडितानी भीतर चली जाती है और राख-पानी लेकर आती है। अभी दो-एक ही जगह वह राख-पानी डाल पाती है कि दरवाजे पर जोर से दस्तक होती है।]

लाला : पंडितजी ! अजी, ओ पंडितजी !

पंडित : लो आ गया कमबख्त ! मैं कहता न था, इसका मन दुकान पर लगा ही न होगा कि न जाने मैं क्या क्या खा जाऊं। घर पहुंचा होगा और वहां से यहां...(मुंह ढंककर कराहने लगता है)

[पंडितानी जल्दी जल्दी और दो-तीन जगह पानी और राख डालती है। दरवाजे पर फिर दस्तक होती है।]

लाला : अजी दरवाजा खोलो ! क्या कर रहे हो, पंडितजी ?

पंडितानी : (झुंझलाकर दरवाजा खोलते हुए) क्यों दरवाजा तोड़ रहे हो लाला ? (लाला भीतर आते हैं) जाने क्या क्या खिला दिया, अब क्या प्राण लेने आए हो ?

लाला : क्या मतलब है, आखिर मैं...

[पंडितजी जोर से कराहते हैं। पंडितानी उनके पास जाकर चीखकर रो उठती हैं। लाला हक्के-बक्के हो जाते हैं।]

लाला : मतलब याने...क्या हुआ है पंडितजी को ?

पंडितानी : (गरजकर) क्या हुआ है पंडितजी को। जब से आए हैं कै-दस्त हो रहे हैं। हैजा तो कर दिया, सड़ा-गला खिलाकर। अब पूछते हो क्या हो गया पंडितजी को !

पंडित : (कराहते हुए, मंदी आवाज में) पानी...थोड़ा सा पानी... अब मैं चला, पंडितानी...जो कुछ कहा-सुना हो माफ...पुलिस में खबर कर देना...लाला...।

लाला : (कांपते हुए) मैंने कहा...पंडितानी जी...पंडितजी का इलाज किसका हो रहा है ?

पंडितानी : इलाज किसका कराऊं ? (रोते हुए) घर में रुपए ही कहां हैं ? अजी लालाजी, तुमने कहां की दुश्मनी निकाली ? हाय हाय रे, अब क्या होगा ? (हाथों में सिर देकर रोने लगती है)

लाला : (कांपते हुए) पंडितानी, ऐसा मत सोचो...इलाज में रुपए की कमी नहीं रहेगी...लो यह पचास रुपए...इलाज कराओ। और जरूरत हो, मंगा लेना—अपना समझ कर। और देखो, पुलिस को खबर मत करना। जाने क्या हो ?

[लाला धोती के फेंट में से पचास रुपए निकाल कर देते हैं। पंडित कराहते हैं और खाट पर से आधे उठकर कै करने का अभिनय करते हैं। कै नहीं आती, कराह कर फिर लेट जाते हैं।]

पंडितानी : **(रुपए लेते हुए)** हाय, रुपयों से क्या होगा ? मेरा तो आदमी चला रे। अरे, पचास रुपए क्या कर लेंगे ?

लाला : **(पचास रुपए और देकर)** लो, सौ रुपए रख लो। और अभी नहीं हैं...मंगा लेना। मुझे जल्दी ही इनकी तबीयत की खबर करा देना। मुझे तो जानो फुर्सत नहीं मिलेगी आने की। **(तेजी से बाहर चले जाते हैं)**

पंडितानी : **(किवाड़ बंद करते हुए)** हां, अब क्यों फुर्सत मिलेगी इधर आने की ? अब तो इधर मुंह भी नहीं करोगे। **(हंसते हुए)** अजी सुनते हो, अब उठ जाओ। अब तो गया वह मूंजी।

पंडित : **(उठकर बैठते हुए)** वाह-वाह। मान गया पंडितानी, तुम मेरी गुरु हो। पहली ही बार नाटक किया और मुझसे बाजी मार गई। लाला का तो दम ही निकल गया, तुम्हारा रोना-धोना देखकर।

पंडितानी : अब क्या करना है ?

पंडित : करना क्या, कुछ दिन बीमार रहकर मर जाना है।

पंडितानी : ऐं ! **(लड़खड़ा जाती है)**

पंडित : अरे, मरना भी वैसे है जैसे हैजा हुआ है। कुछ बीमारी के नाम से ऐंठेंगे और फिर कुछ क्रियाकर्म के लिए।

पंडितानी : अब की बार लाला कच्चा चबा जाएगा।

पंडित : अरे, देखा जाएगा। इस बार तो वह शिकंजे में आया है। ऐसी मार पड़ेगी, भूल जाएगा सारी कंजूसी। नमः शिवाय, नमः शिवाय।

तीसरा दृश्य

[पंडित मसुरियादीन खाट पर लेटे हैं। उनके बाल और दाढ़ी बढ़ रही है। पंडितानी पास बैठी हैं। सफेद धोती पहने, विधवा का सा वेश।]

पंडितानी : इस लाला के पैसे खाते छः महीने तो हो गए। अब यह नाटक बंद भी करोगे।

पंडित : अरे, जब नाटक शुरू किया तो बंद भी कर देंगे। वह तो यह कि सारे गांव वाले अपना साथ दे रहे हैं, नहीं तो नाटक का बंटा-ढार हो जाता।

पंडितानी : कुछ भी हो, उसे उसके मूंजीपन की करारी सजा मिल चुकी। अब तो उसे माफ कर ही दो।

[दरवाजे पर खट खट होती है।]

पंडित : देख, ललाइन तो नहीं है...यही वक्त है उसके आने का। मैं तो भीतर चला...।

[पंडितजी उठकर भीतर की कोठरी में भाग जाते हैं। पंडितानी दरवाजा खोलती है। ललाइन भीतर आती है—मोटी-ताजी, गोल-मटोल।]

ललाइन : पांव लागी, पंडितानी।

पंडितानी : सुखी रहो, सदा सुहागन रहो। बैठो, सेठानीजी। पीढ़ा लो।

ललाइन : क्या बैठूं, पंडितानी...आती हूं तो मुंह दिखाने को जी नहीं चाहता। (रुआंसी होकर) हमारे कारण तुम्हारा भरा-पूरा घर...(रोने लगती है)

पंडितानी : (रोते हुए, अपने आंसू पोंछते हुए) मेरे तो करम ही फूट गए। पंडित तो बीच धार में दगा दे गए। तुमने पचास रुपए महीना बांध दिया तो इज्जत से दो रोटी खा भी रही हूं, नहीं तो कहीं की न रही थी।

ललाइन : भगवान की मरजी में किसका वश चलता है—हम कौन हैं देने वाले। सब भगवान का दिया है।

पंडितानी : यह तो है ही, सेठानी। अब तुम्हारी मुनिया ही अच्छी-भली ब्याही-बराई भगवान को प्यारी हो गई...जमाई को देखकर तसल्ली होती तो वह भी सालभर के भीतर ही भीतर...

ललाइन : (रो पड़ती है) मेरी तो किस्मत ही फूटी है। न बिटिया रही, न जमाई।

[भीतर से जोर से आवाज आती है—'हरि ओइम' दोनों उछल पड़ती है। पंडितानी पीछे की ओर देखते हुए चिल्लाती है।]

पंडितानी : ऐ...ऐ, कौन है भीतर ?

पंडित : कौन होते ? क्या हमारी भी आवाज नहीं पहचानती, पंडितानी ?

पंडितानी : (घबराए स्वर में) कौन पंडित ? ..हे भगवान, इतनी अच्छी तरह क्रियाकर्म किए, फिर भी भूत बन गए...

ललाइन : हे भगवान ! (डर से कांपते हुए) हे महावीर—हे हनुमानजी।

[ललाइन आंख मूंद लेती है। धीरे धीरे फुसफुसाती रहती है। पंडित भीतर के कमरे से निकलते हैं।]

पंडितानी : (इशारा करते हुए, धीरे से) हाय, कहां आ मरे। अब क्या होगा ?

पंडित : (पंडितानी को शांत रहने का इशारा करते हुए) हरि ओइम...
आंखें खोलो सेठानी...देखो, हम भूत नहीं हैं।

[ललाइन आंख खोलती है और पंडितजी को देखकर, चीखकर आंख बंद कर लेती है।]

पंडितानी : (जल्दी जल्दी)

हे हनुमान। ज्ञान गुण-सागर
हे कपीस ! तिहुं लोक-उजागर

पंडित : लो ! हम तो स्वर्गलोक से तुम्हारे लिए खुशखबरी लेकर आए थे। तुम हो कि हमें भूत समझ रही हो।

ललाइन : खुशखबरी ! (आंख खोलती है)

पंडित : हां, हां, खुशखबरी ! एक तरफ तो धेवते की नानी बन गई, दूसरी तरफ अब मिठाई खिलाने से कतराती हो।

ललाइन : मैं। नानी !

पंडित : हां, हां। स्वर्ग में मुनिया के लड़का हुआ है। कल का दष्टौन है...मेरे सिर हो गई कि तुम तो तपस्वी ब्राह्मण हो, धरती पर जा सकते हो। मेरी मां को को खुशखबरी सुना आओ—हम आ गए। अब तुम हो कि...

ललाइन : (खुश होकर) सच्ची ! सच मेरी मुनिया के लड़का हुआ है। अजी पंडितजी, तुम्हारे मुंह में घी-बूरा। लाला दिल्ली गए हैं—आकर सुनेंगे तो खिल जाएंगे।

पंडित : लेकिन हमें तो इसी पहर में फिर लौटना है...जब शनि की दशा में सूरज का योग हो और चंद्रमा उसे देखता रहे, तभी हम स्वर्ग से आ-जा सकते हैं।

ललाइन : हाय ! इतनी जल्दी जाओगे।

पंडित : क्या करूं, मजबूरी है...वक्त ही इतना थोड़ा है।

ललाइन : अजी कुछ बिटिया के लिए तो ले जाते...वह भी क्या कहेगी कि मां ने खाली हाथ लौटा दिया...

पंडित : तो, वक्त तो कुल एक घड़ी रह गया है...कुछ कर सको तो कर लो।

ललाइन : कुछ हरज नहीं, पांच-सात साड़ी घर से निकल ही आएंगी, जेवर अपने ही दे दूंगी। पचीस रुपए लेते जाइयो। मीठा वहीं खरीद लियो।

पंडित : बस बस, तो जल्दी करो...देखो, जल्दी आना...नहीं तो फिर हमें चला ही जाना पड़ेगा...तुम्हारा काम रह ही जाएगा।

ललाइन : रह कैसे जाएगा। बस मैं गई और आई समझो।

[जल्दी से बाहर जाती है। पंडितानी दरवाजा बंद करके आती है।]

पंडितानी : सच कह रही हूं, हर चीज की एक हद होती है। देख लेना, इस बार लाला कच्चा चबा जाएगा।

पंडित : तुम ही तो कहती थी, नाटक बंद करो। आखिरी दृश्य चल रहा है।

[दरवाजे पर खटखट होती है।]

ललाइन : (भीतर आकर हांफते हुए) मुझे देर तो नहीं हुई? बस, मैं तो गई और आई। ये साड़ी और एकाध जेवर लाई हूं।

पंडित : बस बस, बहुत है...(सामान ले लेते हैं)

[दरवाजा जोर से खुलता है और लाला मूंजीमल भीतर आते हैं। सब हक्के-बक्के हो जाते हैं।]

लाला : तो पंडित जी! अब स्वर्ग के लिए भी माल ले जाने लगे।

पंडित : मतलब...बात यह है लाला...

लाला : बस बस, सब समझ गया। अभी दिल्ली से लौटा तो नौकर ने बताया ललाइन अपने नाती के लिए सामान भेजने गई हैं। यहां आकर देखता हूं कि...

[चौधरी सहित आठ-दस गांव वाले भीतर आ जाते हैं।]

चौधरी : बधाई हो, लालाजी।

सब : बधाई हो।

लाला : क्या बधाई है! क्या बकवास है।

एक : अजी, आपके नाती जो हुआ है।

लाला : सब बकवास है। सब जालसाजी है।

दूसरा : जालसाजी तो आप भी करते हैं। मैंने जो आपसे कर्जा लिया था, सौ के पांच सौ तो दे चुका, अब भी दो सौ बाकी बने हुए हैं।

तीसरा : मैं तौलकर मन भर गेहूं ले गया था और आपने तोले तो पचीस सेर ही निकले।

चौथा : मैं तीन सेर घी लाया, घर तोला तो ढाई सेर निकला।

लाला : ओहो! यह व्यापार का रोना यहां क्यों रो रहे हो? मैं व्यापार करता हूं, उसमें चाहे जो करूं, तुम कौन हो?

एक : अजी, आज सेर को सवा सेर मिला है, आज चोर के घर मोर नाचा है।

दूसरा : पंडित मसुरियादीन की जय !

सब : जय !

पहला : लाला, अब पंडित का पीछा छोड़ो। सबका गला ही रेता है हमेशा। अबकी हम सबने मिलकर पंडित से तुम्हारी पूजा करवा दी।

दूसरा : अब दक्षिणा भी तकड़ी दे चुके, अब अपने घर जाओ।

लाला : घर जाओ। मतलब मैं यों ही लूट देखता रहूं ?

चौधरी : तुम अभी मान चुके हो लाला कि व्यापार में तुम चाहे जो करते रहे हो। करो तो पंडित का बाल भी बांका...हम भी कचहरी में सारी बात कह देंगे कि तुम कैसे हमें लूटते रहे हो !

लाला : नहीं नहीं, मेरा मतलब यह थोड़े ही है...पंडित जी तो हमारे पूज्य हैं। इन्हें तो हमेशा देने का ही अपना हक है...ललाइन जो लाई हैं, यहीं रहे...मैं दूकान पर जा रहा हूं।

[लाला बाहर भागते हैं। सब लोग हंस पड़ते हैं।]

सब : सेर को सवा सेर की जय !

पर्दा गिरता है

(१९६२)

मोटे मियां

□ विमला लूथरा

पात्र

मोटूमल	एक खूब मोटा आदमी
गलमटोल	उसका मित्र
डाक्टर	
कैलाश	डाक्टर का नौकर

[पर्दा उठने पर डाक्टर का कमरा दिखाई देता है। एक ओर मेज-कुरसी लगी है। दूसरी ओर मरीजों को लिटाकर देखने के लिए लकड़ी का एक ऊंचा तख्त है। दीवार पर दो-तीन बड़ी तसवीरें हैं जिनमें आंख, कान और दिल के चित्र बने हुए हैं। सामने की दीवार में एक आला है, जिसमें कुछ दवाइयों की शीशियां पड़ी हैं। डाक्टर साहब आते हैं—सफेद कोट पहने, गले से स्टेथस्कोप लटकाए हुए। उनके पीछे पीछे उनका नौकर कैलाश है।]

डाक्टर : देखो, कैलाश, यह सब सामान यहां से उठा कर कमरा साफ कर दो।

कैलाश : सरकार, मैं तो रोज ही सामान उठा कर कमरा साफ करता हूं।

डाक्टर : सफाई का सवाल नहीं—इस कमरे को खाली करना है।

कैलाश : खाली ?

डाक्टर : हां, खाली। (पांवों से दरी का कोना उठाते हुए) यह दरी भी उठा दो।

कैलाश : तो मरीजों के बैठने को कुर्सियां बाहर लगा दूं ?

डाक्टर : नहीं, नहीं, तुम नहीं समझे। कुर्सियां, मेज, तख्त, दरी, सब अंदर वाले कमरे में रख दो। जरा जल्दी करो, मैंने दस बजे का समय दिया है।

कैलाश : (कुतूहलवश) क्या कोई आपरेशन होने वाला है।

डाक्टर : नहीं भाई, आपरेशन नहीं। (जरा खीझकर) एक तो तुम सवाल बहुत पूछते हो...

कैलाश : क्षमा कीजिएगा, मेरी बुद्धि मोटी है न ! और फिर आपके साथ काम करते दिन भी कितने हुए हैं ?

डाक्टर : तो सुनो, जो मरीज दस बजे मेरे पास आ रहे हैं, उन्हें एक विशेष रोग है और उसका मेरे पास एक विशेष इलाज भी है। इसीलिए मैंने इस कमरे का फर्श एक अलग ढंग का बनवाया हैं। (दरी उठाकर दिखाता है) यह देखो, लोहे की चादर है यह। कई बीमारियों के लिए इसका प्रयोग किया करता हूं। तुम अभी नए नए आए हो मेरे पास, इसलिए नहीं जानते।

कैलाश : जी, समझ गया। ये जो दवा की शीशियां रखी हैं, इन्हें आले में ही रहने दूं या उठा दूं?

डाक्टर : मुझे कमरा एकदम खाली चाहिए। और देखो—जैसे ही दोनों मरीज पहुंचें, मुझे अंदर खबर कर देना।

कैलाश : इसी चिकित्सा के लिए आएंगे?

डाक्टर : हां, भई, हां।

कैलाश : मैं उन्हें कैसे पहचान पाऊंगा?

डाक्टर : तुम उन्हें देखते ही पहचान लोगे—अच्छे मोटे-ताजे, पले हुए आदमी हैं।

कैलाश : जी अच्छा!

डाक्टर : और देखो, यदि तुम्हें किसी के रोने-चिल्लाने या दरवाजा पीटने का शोर सुनाई दे तो मुझसे पूछे बिना कमरा मत खोल देना।

कैलाश : बहुत अच्छा, हुजूर!

[डाक्टर जाता है। कैलाश कुछ चीजें उठाकर, कुछ घसीटकर, कमरे से बाहर ले जाता है। साथ साथ बोलता जाता है।]

कैलाश : बहुतेरे डाक्टरों के साथ काम किया है पर इस ढंग का डाक्टर तो पहले नहीं देखा। कहता है दो मोटे मोटे मरीज आ रहे हैं।

[बाहर पांवों की आहट होती है। कैलाश दरवाजा खोलता है। दो खूब मोटे मोटे आदमी अंदर आते हैं।]

कैलाश : (स्वाभाविक रूप से) आप बैठिए, मैं डाक्टर साहब को खबर करता हूं।

दोनों मोटे : (हांफते हुए) अरे भाई, बैठें कहां? कोई कुरसी भी तो हो।

कैलाश : अभी लाया—जरा डाक्टर साहब से कह आऊं। (जाता है लेकिन एक ओर छिप जाता है)

मोटूमल : (हांफते हुए) भाई गोलमटोल इस डाक्टर का घर बहुत ऊंचा

है। दम फूल जाता है सीढ़ियां चढ़ते चढ़ते।

गोलमटोल : (हांफते हुए) मेरा भी बुरा हाल है, मोटूमल। हमारा तो यही पांच-सात सीढ़ियां चढ़ने से दम फूल गया है और डाक्टर की सुनो। कहता है कसरत करो। आप जरा दुबला-पतला है न, इसीलिए। हमारी तरह होता तो पूछता, कसरत कैसे की जाती है!

मोटूमल : भई सच्ची बात तो यह है कि मैं इस मोटापे से बहुत परेशान हूं। चल नहीं सकता, दौड़ नहीं सकता। सुबह दस बजे दफ्तर पहुंचना होता है—कितनी भीड़ होती है बसस्टैंड पर। बस आती है और चली जाती है, लोग लपक कर चढ़ जाते हैं, मैं वहीं का वहीं मुंह देखता रह जाता हूं।

गोलमटोल : ठीक कहते हो दोस्त! मेरी तो खुद इस मोटेपन से तोबा! कल सवेरे इसी तरह बस छूट गई तो मैंने सोचा रिक्शा कर लूं, ठीक समय पर पहुंच जाऊंगा। रिक्शा वाला भी ऐंठने लगा। बोला, रुपया लूंगा। मैंने जरा डांटा तो उलटा मजाक करने लगा।

मोटूमल : हैं? बड़ा बदतमीज था।

गोलमटोल : हां, कहता था, आपको तो दो सवारी के पैसे देने चाहिए।

मोटूमल : जरा देखो तो इन लोगों की जुर्रत।

गोलमटोल : लेकिन करें क्या? न हमारा यह हाल होता, न लोग हंसते। मैं तो बहुत चेष्टा करता हूं कि किसी तरह कुछ भार कम हो जाए परंतु जब कांटे पर खड़ा होता हूं तो सुई को देखकर दिल बैठ जाता है। घटने के बजाय वह तो बढ़ता ही जाता है।

मोटूमल : चिंता न करो, यह डाक्टर बहुत अच्छा है। हमें जरूर ठीक कर देगा।

[डाक्टर आता है।]

डाक्टर : कहिए, क्या हाल है?

दोनों मोटे : आप ही देखकर बताइए, डाक्टर साहब!

डाक्टर : सैर करनी शुरू की?

मोटूमल : हां, थोड़ी थोड़ी।

डाक्टर : रोज जाते हो न?

मोटूमल : क्या बताऊं, डाक्टर साहब...(झिझक सा जाता है)

गोलमटोल : बता दे न! डाक्टर साहब से क्या शर्म?

डाक्टर : हां, हां, बताओ, बताओ।

मोटूमल : क्या बताऊं, डाक्टर साहब, चला ही नहीं जाता। अपने घर की गली के बाहर तक पहुंचा था कि दम फूलने लगा और मुझे रिकशा पर बैठकर लौट आना पड़ा।

डाक्टर : इस तरह तो काम नहीं चलेगा। कहिए, गोलमटोलजी, आपने कुछ खाना कम किया।

गोलमटोल : हां, हां, डाक्टर साहब, अब तो बहुत कम खाता हूं।

डाक्टर : कितनी रोटियां खाते हो ?

गोलमटोल : (झिझक कर) आप इससे पूछ लीजिए। क्यों मोटूमल, कभी बीस से ज्यादा खाई हैं मैंने ?

डाक्टर : तुम झूठ बोलते हो दोनों ! न खाना कम करते हो, न कसरत। यदि मेरी बात नहीं मानते तो फिर मेरे पास आते ही क्यों हो ? मेरा भी समय नष्ट करते हो, अपना भी।

मोटूमल : नहीं, डाक्टर साहब, नाराज मत हों। आपके पांवों पड़ता हूं। (झुकने की चेष्टा करता है, पर हाथ घुटने तक भी बड़ी मुश्किल से पहुंचता है) आपके बिना और कौन है हमारा हितैषी ?

गोलमटोल : डाक्टर साहब, कोई मीठी सी गोलियां नहीं हैं आपके पास ? बस, उन्हें चूसते जाएं और भार कम होता जाए ?

डाक्टर : गोलियां तो नहीं हैं मेरे पास। हां, एक विशेष प्रकार की चिकित्सा का प्रबंध कर सकता हूं, आप लोगों के लिए।

मोटूमल : इस चिकित्सा से कसरत तो नहीं करनी पड़ेगी रोज रोज ?

डाक्टर : (मुसकराकर) नहीं।

गोलमटोल : क्या खाना भी कम नहीं खाना होगा ?

डाक्टर : नहीं।

गोलमटोल : तो जरा जल्दी कर दो, डाक्टर साहब, मैं तो खड़े खड़े थक गया।

डाक्टर : अभी उसका प्रबंध करता हूं।

दोनों : (ताली बजाकर) यह ठीक है। डाक्टर साहब, आपने तो कमाल की बात कही।

डाक्टर : तो आप लोग अपने कोट और जूते उतारिए। (कैलाश से, जो एक ओर खड़ा सब बातचीत सुन रहा था) इनकी चीजें साथ वाले कमरे में रखो। मै जाकर जरा सामान ठीक करता हूं।

[डाक्टर जाता है और बाहर से दरवाजा बंद कर देता

है। कैलाश जूते और कोट लिए दूसरी ओर जाता है और उधर के किवाड़ भी बंद कर देता है।]

गोलमटोल : भला जूतों का मोटापे से क्या संबंध ?

मोटूमल : और कमरा खाली करने की क्या जरूरत थी ? भैया, मुझे तो दाल में कुछ काला दिखता है।

गोलमटोल : हां, इस डाक्टर ने कोई चाल चलने की ठानी है जरूर। देखो, दरवाजे भी बंद करवा दिए हैं।

मोटूमल : जो दरी बिछी रहती थी वह भी उठवा दी है और न जाने यह काला सा क्या बिछा दिया है ?

गोलमटोल : लोहे की चादर मालूम होती है।

मोटूमल : (**हैरान सा**) कुछ गरम नहीं लग रहा यह फर्श ?

गोलमटोल : (**अचंभित**) अरे, यह तो तेज गर्म होता जा रहा है। (**डर से**) हे भगवान ! यह क्या होने वाला है।

मोटूमल : मेरे तो पैर भी जलने लगे। अब क्या करें, गोलमटोल ? (**एक पैर ऊपर उठाता है, एक पैर नीचे रखता है**)

गोलमटोल : मैं तो यहां एक पल नहीं रह सकता—जल्दी करो, बाहर निकल चलो।

[दरवाजे की ओर बढ़ते हैं परंतु वह बाहर से बंद है। इतने में फर्श इतना गरम हो गया है कि एक जगह खड़े रहना कठिन है—मोटूमल और गोलमटोल दोनों घबराए हुए हैं। कभी एक पैर उठाकर उसके तलवे मलते हैं, कभी दूसरा उठाकर उसके। देखते ही देखते वे नाचने लगते हैं, कूदने लगते हैं, पसीने से तर-ब-तर हुए जाते हैं—डाक्टर को कोसते हैं।]

मोटूमल : अरे डाक्टर साहब, दरवाजा तो खोल दो।

गोलमटोल : डाक्टर साहब, मेरे पैरों में छाले पड़ गए।

मोटूमल : (**दरवाजा पीटते हुए**) डाक्टरजी ! ओ डाक्टरजी। हाथ जोड़ता हूं, डाक्टरजी, दरवाजा खोल दो—हम घुट कर मर जाएंगे।

[कोई उत्तर नहीं मिलता।]

दोनों : (**एक साथ पुकारते हैं**) डाक्टर साहब, बचाओ ! बचाओ !!

मोटूमल : डाक्टर साहब, मैं प्रतिज्ञा करता हूं, मैं पांच मील लंबी सैर करूंगा।

गोलमटोल : डाक्टर साहब, मैं लिखकर देता हूं कि मैं दोनों समय का खाना

छोड़ दूंगा।

[दरवाजा खुलता है। डाक्टर मुसकराता हुआ आता है। उसके पीछे पीछे कैलाश दोनों मोटों के कोट और जूते उठाए हुए है।]

डाक्टर : इनके जूते इन्हें दे दो और दो कुर्सियां लाओ जल्दी से इनके बैठने के लिए।

दोनों : (बिगड़ कर) यह क्या चाल थी फर्श गरम करने की। अच्छा मजाक सूझा है आपको ! भलेमानस आदमियों को इस तरह सताया जाता है क्या ?

डाक्टर : पहले पांच मिनट आराम कर लो, फिर जो मन में आए करना। तब तक इस बिजली के इलाज का असर आपको मालूम हो जाएगा।

मोटूमल : दम निकल गया कूद कूद कर। इतना गर्म करने की क्या जरूरत थी ?

गोलमटोल : पांवों के तलवों पर तो छाले पड़े हैं—जूते कैसे पहनें ?

डाक्टर : (जेब से एक शीशी निकाल कर) लाओ, दिखाओ तो, तैलवों पर यह दवा लगा दूं।

[दवा लगाता है। उसके पांवों की जलन शांत हो जाती है। हांफना भी धीरे धीरे बंद हो जाता है।]

डाक्टर : कहो, अब कैसा लग रहा है ?

मोटूमल : (मुसकराकर साथी की ओर देखता है) कुछ तो फर्क हुआ मालूम पड़ता है।

गोलमटोल : मुझे भी अपना शरीर कुछ हलका सा लग रहा है।

डाक्टर : इन पांच मिनटों में तुम लोगों का कम से कम एक एक किलो भार कम हो गया होगा। बस, यह इलाज दस-पंद्रह दिन करने से आप लोग ठीक हो जाएंगे।

दोनों : धन्यवाद डाक्टर साहब, अब हम चलें। (जूते पहनते हैं)

डाक्टर : ठहरिए तो, ऐसी जल्दी क्या है ! तो कल सवेरे ठीक इसी समय आ जाना।

मोटूमल : बुरा न मानिएगा, डाक्टर साहब, अब तो मैं अपना इलाज आप ही करूंगा।

गोलमटोल : डाक्टर साहब, आज से चार रोटी से ज्यादा खाऊं तो मेरा नाम गोलमटोल नहीं।

मोटूमल : (गोलमटोल से) और यदि तुम कल सैर के लिए सुबह पांच

बजे न उठे तो मेरी-तुम्हारी दोस्ती खत्म।

गोलमटोल : और यदि तुमने मुझे चार से ज्यादा रोटी खाने को कहा तो मैं तुम्हारा मुंह न देखूंगा।

मोटूमल : अच्छा, अब चल ! डाक्टर साहब, नमस्कार !

गोलमटोल : नमस्ते, डाक्टर साहब !

[दोनों जाते हैं। डाक्टर और कैलाश उन्हें देखकर हंसते हैं।]

पर्दा गिरता है

(१९६२)

गुड़िया का इलाज

□ चिरंजीत

पात्र

पुष्पा मुन्नू चुन्नू

[कमरे में चुन्नू-मुन्नू की नन्हीं बहन पुष्पा चारपाई पर लेटी है। अपने आगे चारपाई पर उसने सोने-जागने वाली बहुत सी गुड़िया लिटाई हुई हैं। सिरहाने की ओर तिपाई पर पानी से भरा गिलास, चम्मच, चाकू और दवाई की शीशियां रखी हुई हैं। एक ओर एक कुरसी रखी हुई है। पुष्पा बहुत ही उदास है। वह बार बार गुड़िया को हिलाती-डुलाती है, थपथपाती है और फिर आंसू पोंछती हुई अपने ही आप बड़बड़ाने लगती है।]

पुष्पा : (**अपने आप, उदास स्वर में**) आंखें खोल मेरी लाड़ली। हाय तेरी बीमारी मुझे लग जाए। (**हाथ जोड़कर**) हे भगवान ! परसों तक मेरी गुड़िया रानी को भली-चंगी कर दे। परसों इसका ब्याह है।

[यह कहते कहते पुष्पा अपनी गुड़िया के ऊपर झुक जाती है। तभी बाहर वाले कमरे के दरवाजे पर कुछ खुसुर-पुसुर सी सुनाई देती है, जैसे चुन्नू और मुन्नू बातें कर रहे हों। पुष्पा का ध्यान उधर नहीं जाता। कुछ देर बाद चुन्नू कमरे में प्रवेश करता है...हंसता हुआ, लेकिन पुष्पा के पास पहुंचते ही एकदम गंभीर हो जाता है।]

चुन्नू : पुष्पा, क्या हाल है गुड़िया का ?

पुष्पा : (**सिर ऊपर उठाकर**) बिलकुल वैसा ही है, चुन्नू। रत्ती भर फर्क नहीं पड़ा। लाख जतन कर चुकी हूं, लेकिन होश में आती ही नहीं।

चुन्नू : हां, आंखें तो ज्यों की त्यों बंद है। पता नहीं क्या रोग लग गया है इस बेचारी को।

पुष्पा : (**रुंधे गले से**) यही तो मेरी समझ में नहीं आ रहा। पता नहीं मेरी लाडली को क्या हो गया। रात हंसती-खेलती सोई थी, सवेरे देखती हूं तो बेहोश पड़ी है। चुन्नू, मैं तो चिंता से मरी जा रही हूं। परसों इसकी शादी मैंने रचा रखी है। सभी

सहेलियों के पास निमंत्रण भी भेज चुकी हूं। हाय, मैं तो कहीं मुंह दिखाने योग्य नहीं रही।

चुन्नू : हां, ठीक कहती हो, पुष्पा बहन। जब तक गुड़िया रानी स्वस्थ न हो जाए, शादी कैसे हो सकती है?

पुष्पा : **(सिसकते हुए)** मेरी गुड़िया रानी, जरा आंखें खोलकर मेरी ओर देख तो। देख,तेरे दुख से निढाल हुई जा रही हूं। **(सिसकती है)**

चुन्नू : देखो, पुष्पा बहन, यों रोनें-कलपने से तो यह ठीक होने की नहीं। किसी अच्छे डाक्टर को बुलाकर इसे दिखाओ।

पुष्पा : किसको बुलाऊं? कोई डाक्टर नजर भी तो नहीं आता।

चुन्नू : मेरी नजर में एक बड़ा ही योग्य डाक्टर है। कहो तो अभी बुला लाऊं।

पुष्पा : **(उत्साह से)** अरे, चुन्नू भैया, अगर कोई योग्य डाक्टर नजर में है तो देर क्यों कर रहे हो? जाओ, फौरन बुला लाओ।

चुन्नू : **(जाते हुए)** अभी बुलाकर लाया।

पुष्पा : सुनो तो, कौन है यह डाक्टर?

चुन्नू : **(लौटकर)** वह बौना डाक्टर कहलाता है। कद में तो वह मुझसे भी छोटा है, लेकिन उसकी योग्यता के आगे बड़े बड़े डाक्टर पानी भरते हैं। दुनिया भर की यूनीवर्सिटियों की डिग्रियां उसके पास हैं। अगर चाहे तो मुर्दे को भी जिंदा कर दे।

पुष्पा : **(खुश होकर)** अपनी गुड़िया के इलाज के लिए मुझे ऐसा ही डाक्टर चाहिए। जाओ, फौरन उस बौने डाक्टर को बुलाकर लाओ। भगवान तुम्हारा भला करे।

[चुन्नू जाता है। पुष्पा फिर अस्पष्ट शब्दों में अपने आप अपनी गुड़िया की हालत का रोना रोने लगती है। कुछ ही देर बाद चुन्नू बौने डाक्टर को साथ लेकर आता है। डाक्टर ने काली ऐनक और काली दाढ़ी लगा रखी है। उसके सिर पर हैट और हाथ में बैग है।]

चुन्नू : **(आकर)** पुष्पा, आ गए डाक्टर साहब।

पुष्पा : **(खुश होकर)** आ गए। नमस्ते,डाक्टर साहब! बैठिए कुरसी पर!

डाक्टर : नमस्ते बहनजी। कौन बीमार है, आपके यहां? **(कुरसी पर बैठता है)**

पुष्पा : मेरी यह लाड़ली गुड़िया, डाक्टर साहब!

डाक्टर : क्या कष्ट है इसे ?

पुष्पा : यह तो आप ही बताइए न।

डाक्टर : देखिए, मैं डाक्टर हूं, ज्योतिषी नहीं।

चुन्नू : (कान में) अरे यार, यह क्या कह रहा है। सारा मामला गड़-बड़ हो जाएगा।

डाक्टर : अच्छा, अच्छा ! (पुष्पा से) देखिए, बहनजी, मेरा मतलब है कि आप मुझे विस्तार से बताएं। कब यह बीमार हुई ? क्या कष्ट इसने अनुभव किया ? बेहोशी कब से शुरू हुई ?

चुन्नू : डाक्टर साहब, मैं बताता हूं। रात गुड़िया बिलकुल स्वस्थ थी। रात हंसती-खेलती सोई। सवेरे जब इसे पुष्पा बहन ने उठाया दुलराया, गुदगुदाया, तो इसने बिलकुल आंखें नहीं खोली। बस, मिट्टी की तरह अचेत पड़ी रही।

डाक्टर : खैर, मिट्टी की तो यह है ही।

चुन्नू : (कान में) अरे, क्यों बना-बनाया खेल बिगाड़ रहा है।

पुष्पा : क्या कहा डाक्टर साहब ?

डाक्टर : कुछ नहीं। हर मनुष्य आखिर मिट्टी का ही पुतला है। लेकिन आप चिंता न कीजिए, बहनजी। मुझमें मिट्टी को भी जिंदा करने की शक्ति है। मैं रोग की जांच करके अभी बताता हूं। (चुन्नू से) श्रीमानजी उस हैंड बैग से मेरी जरा स्टेथस्कोप निकाल दीजिए।

चुन्नू : (बैग खोलकर रबड़ की नली निकालते हुए) यह लीजिए स्टेथस्कोप डाक्टर साहब।

पुष्पा : यह कैसा स्टेथस्कोप है, डाक्टर साहब ? यह तो शायद साइ-किल में हवा भरने वाली पंप की नली है।

डाक्टर : (गंभीरता से) हां, इसकी शक्ल तो साइकिल पंप की नली जैसी ही है, लेकिन काम में यह बिलकुल उससे भिन्न है। यह विज्ञान का एक नया चमत्कार है। इससे दो काम लिए जाते हैं—कान से लगाकर इससे हृदय की धड़कन की परीक्षा की जाती है और इसके सुराख से शरीर का अंदरूनी भाग देखा जाता है।

चुन्नू : अर्थात यह एक्स-रे का काम भी देती है।

डाक्टर : हां, बिलकुल। बिलकुल।

पुष्पा : फिर तो यह बड़े काम की चीज हुई। अच्छा, तो अब आप मेरी गुड़िया का परीक्षण कीजिए। अगर मेरी गुड़िया ठीक

हो गई, तो मैं आपको मुंहमांगा इनाम दूंगी, डाक्टर साहब ।

डाक्टर : **(कान से नली लगाते हुए)** देखिए, बहन जी, यह इनाम वाली बात मेरे सामने न कहिए । पैसे-धेले का मुझे कोई लालच नहीं । जनता की सेवा के लिए ही मैंने डाक्टरी का पेशा अपनाया है । **(नाली से गुड़िया के हृदय का परीक्षण करता है ।)**

पुष्पा : चुन्नू भैया, यह डाक्टर साहब तो बहुत ही अच्छे हैं ।

चुन्नू : मैंने तो तुमसे कहा था, पुष्पा बहन । देखो न, ये कैसे ध्यान से गुड़िया के रोग की जांच कर रहे हैं ।

डाक्टर : **(कुछ देर बाद)** ओहो, इस नन्हीं सी जान को कितना बड़ा रोग ।

पुष्पा : **(घबराकर)** क्या बात है, डाक्टर साहब ?

डाक्टर : कुछ पूछिए मत, बहनजी । अच्छा किया कि आपने मुझे जल्दी बुला लिया, नहीं तो इसके बचने की कोई आशा नहीं थी ।

पुष्पा : **(और घबराकर)** अच्छा, डाक्टर साहब ! क्या रोग है इसे ?

डाक्टर : बड़ा भयंकर रोग है । कल रात यह कहीं गिरी है । इसके दिमाग की पिछले हिस्से की नसों में चोट लगने से कुछ ऐसा उलझाव पैदा हो गया है कि उसका सीधा प्रभाव इसके हृदय और आंखों पर पड़ा है ।

पुष्पा : **(घबराकर)** तो फिर अब क्या होगा ?

डाक्टर : इसका आपरेशन करना होगा । **(चाकू उठाकर घुमाता है और रख देता है)**

पुष्पा : **(घबराकर)** आपरेशन ? मेरी इस फूल सी गुड़िया का आपरेशन इस चाकू से ? नहीं, नहीं डाक्टर साहब, चीर-फाड़ न कीजिए । कोई लेप लगाकर या दवाई पिलाकर ही इसका रोग दूर कर दीजिए ।

डाक्टर : **(गंभीरता से)** ऊं हूं ! आपरेशन के सिवा और कोई चारा ही नहीं । आप घबराइए नहीं, इसके जीवन की जिम्मेदारी लेता हूं ।

पुष्पा : लेकिन, डाक्टर साहब...

चुन्नू : पुष्पा बहन, मान जाओ । डाक्टर साहब को आपरेशन करने दो । हमारा स्वार्थ तो यह है कि जैसे भी हो, गुड़िया तंदुरुस्त हो जाए ।

पुष्पा : **(रोते हुए)** लेकिन, चुन्नू इस नन्हीं सी जान का आपरेशन...

डाक्टर : **(बात काट कर)** मैं आपकी बात समझ गया हूं। आपका हृदय इतना कोमल है कि आप आपरेशन होता हुआ नहीं देख सकेंगी।

पुष्पा : **(कुछ उलझन में पड़कर)** हां...लेकिन...

चुन्नू : कोई बात नहीं, पुष्पा बहन। तुम कमरे से बाहर चली जाओ। मैं डाक्टर साहब के पास रहता हूं।

पुष्पा : **(कुछ देर सोच कर)** अच्छा, तो मैं जाती हूं अपनी लाड़ली को आपके हाथों में सौंपकर। **(बाहर जाती है)**

चुन्नू : **(कुछ देर बाद)** शाबाश ! कमाल का अभिनय किया है।

डाक्टर : अरे भाई, शाबाशी तब देना, जब रसगुल्ले मुंह में पहुंच जाएं।

चुन्नू : लेकिन, हां, इस गुड़िया की आंख कैसे ठीक कर रहे हो ?

डाक्टर : तुम्हारे सामने अभी ठीक किए देता हूं। जरा वह चाकू मुझे देना।

चुन्नू : **(चाकू पकड़ाते हुए)** चाकू से क्या करोगे ?

डाक्टर : इस गुड़िया के सिर में बालों के नीचे यहां सूराख करूंगा, दरअसल बात यह है कि गुड़िया की आंखें छोटे से भारी गोले के साथ लगी एक कमानी की सहायता से खुलती-बंद होती हैं। वही कमानी कहीं इधर-उधर अटक गई है। यहां गर्दन के ऊपर सूराख करके सलाई से उसे ही ठीक करूंगा। **(कुछ देर बाद जैसे चाकू से सूराख कर लिया हो)** यह लो, सूराख हो गया और यह मैंने कमानी का अटकाव हटा दिया।

चुन्नू : देखूं, गुड़िया की आंखें...

डाक्टर : देखो, गुड़िया को लिटाने से आंखें यह बंद हो गईं और उठाने से यह खुल गईं।

पुष्पा : **(बाहर से)** डाक्टर साहब, आपरेशन हो गया ?

डाक्टर : हां, बहनजी, अंदर आ जाइए। आपरेशन सफल रहा।

पुष्पा : **(आकर)** सच ?

डाक्टर : यह देखिए, आपकी गुड़िया ने आंखें खोलकर हंसना-खेलना शुरू कर दिया।

पुष्पा : **(गुड़िया को लेकर, खुश होकर)** वाह, डाक्टर साहब। आपको मैं किस मुंह से धन्यवाद दूं। आपने तो सचमुच चमत्कार करके दिखा दिया है।

डाक्टर : **(बैग में अपनी चीजें डालते हुए)** अच्छा, तो बहनजी, मैं चलता हूं।

पुष्पा : ठहरिए, अपनी फीस तो लेते जाइए। **(धीरे से)** क्यों, चुन्नू भैया, डाक्टर साहब को क्या फीस दी जाए ?

चुन्नू : कुछ भी दे दो। डाक्टर साहब बिल्कुल लालची नहीं हैं।

पुष्पा : मेरे पास रुपया था। उनमें से पच्चीस पैसे मैंने गुड़िया की शादी के निमंत्रण पत्रों पर खर्च कर दिए और...

चुन्नू : कोई बात नहीं, डाक्टर साहब पचहत्तर पैसों में ही खुश हो जाएंगे।

पुष्पा : **(हंसते हुए)** यह लीजिए, डाक्टर साहब अपनी फीस।

डाक्टर : **(पैसे लेकर, जेब में डालते हुए)** इसकी क्या जरूरत थी। खैर, आप मजबूर करती हैं तो...**(तभी डाक्टर के चेहरे पर से दाढ़ी खिसकती है और नीचे से मुन्नू की शक्ल निकल आती है)**

पुष्पा : लेकिन ठहरिए, यह आपकी दाढ़ी...

डाक्टर : **(घबराकर)** क्या ? **(दाढ़ी को संभालता है)**

चुन्नू : **(घबराकर)** मुन्नू, भागो जल्दी से। तुम्हारी दाढ़ी नीचे गिर रही...

पुष्पा : **(हैरान होकर)** अच्छा, यह मुन्नू है ! अब समझी। रसगुल्लों के लिए पैसे ऐंठने को ही यह स्वांग रचा गया था। ला, मेरे पैसे, मुन्नू।

मुन्नू : **(दाढ़ी, ऐनक और हैट उतारकर, हंसते हुए)** नहीं पुष्पा, ये पैसे अब वापस नहीं मिल सकते। तुम्हारी गुड़िया के स्वस्थ होने की खुशी में अभी रसगुल्लों की दावत होगी।

पुष्पा : हाय, मेरे पचहत्तर पैसे।

[चुन्नू-मुन्नू हंसते है।]

(१९६२)

आराम हराम है

□ सरस्वतीकुमार 'दीपक'

पात्र

भोला	:	एक किसान
रामी		
श्यामा		भोला की तीन बेटियां
रधिया		
वाचक		

वाचक : गया अंधेरा, हुआ सवेरा
पंछी जागे पौधे जागे
भागी नदियां, आगे आगे
जब मुरगा आंगन में बोला,
आंखें मलकर जागा भोला,
बांधी गाय, पिलाया पानी,
खोले बैल, खिलाई सानी,
उसे खेत पर जाना था,
खेतों को सरसाना था,
जैसे ही कुटिया में झांका,
देखा, छाया है सन्नाटा।
सोचा, हैं बिन मां की बेटी
हैं तीनों किस्मत की हेटी
सब कुछ करने की मजबूरी
नींद न हो पाती है पूरी।
धीरे मे कुंडी खड़काई।
रामी दौड़ी दौड़ी आई।
पांव छुए, थोड़ा शरमाई,
दूध कटोरे में भर लाई।।

भोला : बिटिया श्यामा है कहां ?
और, वह रधिया है कहां ?

रामी : श्यामा—बापू—
रधिया—बापू—(अटकती है)

भोला : सोई हैं ?
रामी . हां, सपनों में खोई हैं।
भोला : अच्छा, अच्छा, अभी उठाता
नाक पकड़कर अभी नचाता।
ओ री, श्यामा !
ओ री, रधिया !
दोनों : हां बापू।
भोला : जागी बिमला, जागी कमला
और अभी तुम सोती हो
अरे, अरे क्यों रोती हो ?
श्यामा : रात देर तक काम किया था।
रधिया : नहीं बैठने तलक दिया था।
भोला : अच्छा, अब तुम दोनों जागो
खटिया छोड़ो, सुस्ती त्यागो।
उठकर घर का काम करो
और न अब आराम करो।
पहले साफ करो यह दाना
श्यामा : अच्छा बापू ?
भोला : फिर इसको पिसवाकर लाना।
रधिया : अच्छा बापू।
भोला : फिर भर कर के पानी लाना।
श्यामा : अच्छा बापू।
भोला : फिर हिलमिल चूल्हा सुलगाना।
रधिया : अच्छा बापू !
भोला : अभी खेत पर जाता हूं, दिए जले घर आऊंगा।
पास बैठकर तब तीनों के, साथ रोटियां खाऊंगा। **(जाता है)**
श्यामा : रधिया, सो जा।
रधिया : श्यामा, सो जा।
अभी कहां बीती है रात ?
श्यामा : हाय, कांपता मेरा गात। **(खड़खड़ होती है)**
ए रामी, क्या करती खड़खड़,
सोने दे, क्या करती गड़बड़ ?
रामी : जागो बहनों, भोर हुई,
जगमग चारों ओर हुई,

उठकर प्रभु को करो प्रणाम
घर का कितना करना काम।

श्यामा : काम की बच्ची !

रधिया : अकल की कच्ची !

श्यामा : कहा, हमें तो सोना है।

रधिया : बिस्तर बड़ा सलौना है।
काम करे वह जिसकी किस्मत में रोना ही रोना है।

दोनों : अभी हमें तो सोना है। (झटपट सो जाती हैं)

वाचक : दोनों श्यामा-रधिया सोईं
लंबी चादर तान ली।
हमें नहीं कुछ भी करना है,
अपने मन में ठान ली।
रामी ने उठ बोरी खोली
उन्हें जगाकर हारी भोली।
दाने फटके और संवारे
करतब से वे गए निखारे।
खिला फूल सा सारा नाज
रामी हंसकर करती काज।
सोचा अब मैं उन्हें बुलाऊं
सो ली होंगी उन्हें जगाऊं।

रामी : जागो, श्यामा !
जागो, रधिया।
सूरज सिर पर आया है।
काम बहुत करना है बाकी
सूरज सिर पर आया है।
जागो, श्यामा।
जागो, रधिया।

श्यामा : 'जागो जागो' का तूने कैसा तूफान मचाया है !
बापू से कह दूंगी तूने कितना हमें सताया है !
अभी उठी हैं,

रधिया : अभी हमें मुंह धोना और नहाना है,
फिर पीपल के पेड़ तले गुड़िया का ब्याह रचाना है,
जा जा, तू यह बोरी लेकर, आटा नहीं पिसाना है।

दोनों : आटा नहीं पिसाना हमको, आटा नहीं पिसाना है।

[खिड़की को झटके के साथ बंद करती हैं।]

वाचक नन्हीं-मुन्नी रामी बिटिया ने फिर नाज उठाया।
चक्की पर जाकर के उसने सारा नाज पिसाया।
नाज पिसाकर फुदक फुदककर अपने घर वह आई।
जब श्यामा-रधिया ने गुड़िया गुड्डे साथ नचाई।
न आई श्यामा
न आई रधिया
रामी ने आटा छाना
जब श्यामा-रधिया ने अपना खेल रचा मनमाना
रामी भोली
फिर भी बोली—

रामी आओ बहना!
मानो कहना।
कुछ तो घर का काम करो।

श्यामा चुप भी रह ना
अब, हमको बापू से कहना।

रामी यही, नहीं पहना है हमने काम-काज का सच्चा गहना।

श्यामा जा जा, क्यों करती है बड़बड़,
मुंह पर लग जाएगा झापड़।

रधिया हम हैं बड़ी, और तू छोटी
हमको नहीं बेलने पापड़
जाती है या धक्का दूं?

श्यामा और पीठ पर मुक्का दूं?

[रामी हंसती हुई चली जाती है।]

वाचक दांत फाड़कर भरी कबड्डी
ले करके गुड़ियों की गड्डी
रामी लेकर घड़ा चली
नहीं कहीं रंगत बदली
हंसकर करती रहती काम
लेकर के मालिक का नाम
गगरी में भर लाई पानी
यह नन्हीं गुड़ियों की रानी
पहले हंसकर आटा छाना
फिर पानी में उसको साना

दिनभर उसने काम किया
नहीं जरा आराम किया
जब सूरज पश्चिम में आया
चिड़ियों का दल घर को आया
जब रामी ने लकड़ी लेकर
चूल्हे पर की फू फू फू
श्यामा-रधिया खेल रही थीं
घर के बाहर छुआ-छू
बैलों ने घंटी खटकाई
भोला ने आवाज लगाई

भोला : ओ री श्यामा
ओ री रधिया
ओ री रामी ! आओ तो
मैं गाजर-मूली लाया हूं
ये गन्ने ले जाओ तो।

वाचक : श्यामा छुपी पेड़ के पीछे
रधिया छुपी खाट के नीचे
रामी बोली—

रामी : आती हूं
बापू, पानी लाती हूं।

भोला : क्यों बिटिया, रोटी तैयार ?

रामी : ह बापू, सब कुछ तैयार।
बिछा दिए हैं, चारों आसन
सजा दिए हैं, सारे बर्तन
खाएंगे सब हिल-मिलकर
कलियां जैसे खिल खिलकर।

भोला : लेकिन रामी !
श्यामा-रधिया दोनों कहां हो गई छू ?

श्यामा-रधिया : **(बाहर से)** अभी हाथ-मुंह धो करके—
हम दोनों आती हैं बापू,

भोला : ऐसा लगता है तीनों ने
मिलकर सारा काम किया

दोनों : **(आती हुई)** हां, बापू !

भोला : श्यामा, तुमने नाज उठाया ?

श्यामा : ना बापू !
भोला : रधिया, तुमने नाज पिसाया ?
रधिया : ना बापू !
भोला : श्यामा, क्या तू पानी लाई ?
श्यामा : ना बापू !
भोला : रधिया, तूने आग जलाई !
रधिया : ना बापू !
रामी सब कुछ करने बैठी,
दोनों : हम दोनों को धता बताई।
भोला : अच्छा, तुमको धता बताई ?
दोनों : हां, हां, हां !
भोला : अच्छा, दोनों उठो यहां से
उठकर दोनों चलो यहां से
दोनों : (रोती हुई) बापू, हम जाएं कहां ?
भोला : जहां नचाए गुड्डे-गुड़िया
जहां उछाली तुमने धूल
रामी सारा काम करे
तुम दोनों रहीं झूलती झूल
जो कांटों का ढेर लगाते
उनको कब मिलते हैं फूल
जाओ रोटी नहीं मिलेगी
चोटी खोल उड़ाओ धूल
नहीं निकम्मों को खाना
मेहनत का सच्चा दाना।
रामी : नहीं, नहीं, बापूजी, इनको माफ करो।
भोला : नहीं, नही, हट जाओ, रस्ता साफ करो।
जो भी काम करेगा
उसको जीने का अधिकार है,
रोटी खाना और
दूध के पीने का अधिकार है,
नहीं जिन्हें करना है काम
उनका कोई न लेगा नाम।
रामी : बापू, अब ये काम करेंगी

दोनों : हां, बापू अब काम करेंगी,
अब मेहनत से नहीं डरेंगी।

सब : (गाते हैं)
हिलमिल करना काम है
अब आराम हराम है।
अब आराम हराम है।
पंछी तिनके जोड़ते
हिम्मत कभी न छोड़ते,
चींटी दौड़ी जाती है
दाने चुनकर लाती है,
नहीं देखती दिन निकला है—
नहीं देखती शाम है।
अब आराम हराम है।
हल, बैलों का साथी है,
नई फसल लहराती है।
हाथी बोझ उठाते हैं,
और सूंड़ लहराते हैं।
सुस्ती से कुछ कभी न मिलता—
कहीं नहीं आराम है।
अब आराम हराम है।
माली करता है सेवा,
सेवा की पाता मेवा।
बीज पेड़ बन जाता है,
कितने फूल खिलाता है।
जो भी सच्ची मेहनत करता
होता उसका नाम है।
अब आराम हराम है।

पक्षी (कवि) सम्मेलन

□ देवराज दिनेश

पात्र

हरिराम कपोत	राधेलाल बटेर
बगुला	उल्लू
कोयल	तोता
मुर्गा	मोर
श्रोता एक	श्रोता दो

[नेपथ्य में इन सब पक्षियों के स्वरों के रिकार्ड बज रहे हैं। तभी पर्दा उठता है। छोटे छोटे बालक पक्षियों का रूप धारण किए बैठे हैं। दो बालक अपने असली रूप में हैं। जनता तालियां बजाती है। तभी असली रूप में एक बालक माइक पर आता है।]

हरिराम कपोत : (**माइक से**) उपस्थित सज्जनो, भाइयो और बहनो। आज हमारी बालसभा का यह बारहवां कविसम्मेलन है। आपके स्नेह से हमारी बालसभा के सभी कविसम्मेलन बहुत सफल हुए हैं। हमारे इन बाल कविसम्मेलनों में विशेषकर सब्जी-सम्मेलन, पशुसम्मेलन बहुत सफल रहे। सभी लोगों ने उनको खूब सराहा। वैसे देखा जाए तो हर कविसम्मेलन अपने आप में एक नाटक है किंतु इस प्रकार के रूपधारी नाटक और अधिक प्रभावशाली हो जाते हैं। लीजिए, अब आपके सामने हाजिर है पक्षीसम्मेलन। अब हमारी बालसभा के महामंत्री श्री राधेलाल बटेर मंच पर उपस्थित कवियों को पुष्पमाला पहनाएंगे। आइए बटेरजी।

एक श्रोता : (**ऊंची आवाज में**) तब तो आप दोनों भी पक्षी ही हुए—कबूतर और बटेर।

[सभा में हंसी की लहर लहराती है]

हरिराम : जी हां, कपोत का अर्थ कबूतर ही होता है। (**रुककर**) बटेरजी सबसे पहले राष्ट्रीय पक्षी श्री मयूरजी को माला पहनाएंगे। मयूरजी आज की हमारी इस कविसभा के सभापति भी हैं।

[बटेरजी मोर का स्वांग भरे बालक को माला पहनाते

हैं। नेपथ्य में मोर की कुहुक, तालियां बजती है।]

हरिराम : मैं मयूरजी से प्रार्थना करूंगा कि वे सभापति का आसन ग्रहण करें।

[मयूर गावतकिए के सहारे बैठता है, जनता फिर तालियां बजाती है।]

हरिराम : श्री बगुलाभगत जी।

बगुला : केवल बगुला कहिए। बगुलाभगत तो इंसानों में होते हैं।

[जनता हंसती है, बटेर बगुले को माला पहनाते है, तालियां।]

हरिराम : श्री तोताराम मिट्टू।

श्रोता एक : मिट्टू नहीं, मियां मिट्ठू या मिट्ठू मियां।

[हंसी, तालियां और माल्यार्पण]

हरिराम : अब प्रसिद्ध कवयित्री कोकिलाजी।

श्रोता दो : पहले एक कुहुक हो जाए।

[हंसी की लहर]

हरिराम : चिंता मत कीजिए, आपकी इच्छा पूरी होगी।

[बटेर द्वारा कोयल को माल्यार्पण, तालियां]

हरिराम : अब बटेरजी कुक्कुट महाराज अर्थात मुर्गजी को माला पहनाएंगे।

[माल्यार्पण और तालियां]

हरिराम : और अंत में जिन्हें हम बड़ी मुश्किल से यहां आने के लिए राजी कर पाए हैं, एकांतवासी श्री उलूकदेव को बटेरजी माला पहनाएंगे।

[माल्यार्पण और तालियां]

उल्लू : (हंसता है) उलूकदेव। अरे भाई सीधी-सादी भाषा में उल्लू कहो ताकि बात सबकी समझ में आ जाए।

[सब हंसते हैं]

हरिराम : अब मैं मुर्ग महाराज से प्रार्थना करूंगा कि वह इस कवि-सम्मेलन का संचालन संभालें।

[मुर्गा माइक पर आता है।]

मुर्गा : (नेपथ्य में टेप द्वारा तीन बार मुर्ग की आवाज) जैसी आपकी आज्ञा। सबसे पहले मैं स्वर की रानी कोयल से प्रार्थना करूंगा कि वह हमारे कविसम्मेलन का शुभारंभ करें। मानवसमाज में में बहुत अच्छा गाने वाली को कोकिलकंठी कहा जाता है।

लीजिए, अब आप कोयल की कुहुक सुनिए।

[नेपथ्य में कोयल की कुहुक की टेप चलती है। कोयल बनी बालिका ऐसा अभिनय करती है जैसे कुहुक उसी के मुख से आ रही हो।]

कोयल : मैं आपको एक गीत सुना रही हूं।

गीत

मैं कोयल मतवाली।
मैं मन से उतनी ही उजली जितनी तन से काली।

मीठी वाणी की महिमा मैं हूं सबको बतलाती
मीठे बोल बोलकर मैं दुनिया को सदा रिझाती।
मेरी वाणी सुनकर मधुवन पर छाती हरियाली।
मैं कोयल मतवाली॥

थके पथिक मेरा स्वर सुनकर अपनी थकन मिटाते
पेड़ों की शीतल छाया में सपनों में खो जाते।
मेरी कुहुक सभी के मन की पीड़ा हरनेवाली।
मैं कोयल मतवाली॥

प्यारे बच्चो, मुझको तुमसे केवल इतना कहना
मीठे बोल बोलकर सबका मन बहलाते रहना।
मीठी वाणी में होती है सचमुच शक्ति निराली।
मैं कोयल मतवाली॥

['बहुत सुंदर', 'धन्य हो' की आवाज और तालियां]

मुर्ग : कोयलजी का धन्यवाद। उन्होंने बच्चों को निश्चित ही एक बहुत अच्छी सलाह दी है। मीठा बोलेंगे, कोयल कहलाएंगे। कठोर वाणी बोलेंगे तो कौए की उपाधि पाएंगे। अब श्री तोतारामजी से प्रार्थना है कि वह आपका मन बहलाएं।

[आने से पहले तोते की आवाज की टेप चलती है, बालक आवाज के साथ अभिनय करता हुआ माइक पर आता है।]

तोता : हम कोई भांड़ हैं जो आपका मन बहलाएं। हम और कोयलजी तो गीतकार हैं, गीत सुनाएंगे।

श्रोता एक : (ऊंची आवाज में) आदरणीय तोतारामजी। मेरा आप व

आपके कुनबे वालों से एक निवेदन है।

तोता : कर डालिए।

श्रोता एक : महाराज मेरी बाटिका में कुछ पेड़ आम और अमरूद के हैं। एकाध साबुत फल हमें भी खा लेने दीजिए।

[सब हंसते हैं]

तोता : (हंसकर) कविसम्मेलन के बाद अपना पता नोट करा देना, हम कोई और बाग ढूंढ़ लेंगे। फल खाना तो हम छोड़ नहीं सकते, हमारा आहार है।

श्रोता दो : तोतारामजी कोई आपबीती हो जाए।

तोता : मतलब, आप गीत सुनना नहीं चाहते। ठीक है, मैं आपको एक कविता सुनाता हूं। कविता का शीर्षक है 'कैद'। कैद चाहे किसी भी तरह की हो, अच्छी नहीं होती।

कैद

कैद आखिर कैद ही है
चाहे चांदी के पिंजरे में हो, लोहे के पिंजरे में
या तीलियों के पिंजरे में।
कैद आखिर कैद ही है
कैद में मन छटपटाता है,
बीता हुआ समय याद आता है।
कैद चाहे राजा के महल में हो, चाहे पनवाड़िन की दूकान पर!
मैं एक दिन लालच में भरमाया
मीठे फल छोड़कर
दाना चुगने के चक्कर में धरती पर आया।
वहां एक बहेलिए ने फैलाया था जाल—
कई मित्रों के साथ बंदी बनाया तत्काल!
उसने मुझको तीलियों के पिंजरे में डाल—
एक पनवाड़िन को बेच दिया।
पनवाड़िन ने मेरे लिए
चांदी का पिंजरा बनवाया।
द्वार पर लटकाया।
पनवाड़िन भक्तिन थी,
दिन भर पान चबाती
मुझको रामनाम की महिमा बतलाती।
मेरे लिए पूरी बनाती।

मोतीचूर के लड्डू मंगाती।
हरी मिर्च भी खिलाती,
पर मुझको आम, अमरूद बेरों की याद आती।
सूरजमुखी की छवि मन को तड़पाती।

मोर : सूरजमुखी फूल के बीज तो आपका बढ़िया भोजन होते हैं।

मुर्ग : (**हंसकर**) बालसखी मैना भी तो याद आती होगी।

तोता : खूब, खूब। अरे आपने मैना की याद क्यों दिला दी?

उलूक : अच्छा है मैना यहां न हुई, वरना यहां भी तोता-मैना संवाद शुरू हो जाता। (**सब हंसते हैं**)

मोर : कविता बहुत अच्छी है, आगे कहो भाई!

तोता : पनवाड़िन पूरी खिलाते हुए कहती—
'बोल मियां मिट्ठू बोल,
मन की आंखें खोल
राम नाम कह,
भक्ति भावना में बह!'
मैं जानता था, जहां मैंने राम नाम कहा,
जिंदगी भर इसकी कैद में रहा!
इधर मेरी कंठी फूटने को तैयार,
मैं बड़ा लाचार!
कोई ऐसा शब्द चाहिए था,
जो मुझको इस कैद से बचाए,
विवश होकर पनवाड़िन की इस कैद से भगाए!
एक दिन उसके पनवाड़ी ने कर दी कृपा
हो गया काम,
मैंने मन ही मन जपा राम नाम!

श्रोता एक : वह शब्द क्या था महाराज?

तोता : अभी बताता हूं! आपको पसंद आए तो आप उसे अपना उपनाम रख लेना! आगे कविता इस प्रकार है:
उस दिन पनवाड़ी बैठा था दुकान पर
एक ग्राहक आया!
उसे देख पनवाड़ी मुसकराया!
बुड़बुड़ाया—
गधा आ रहा है।
उसे पास आया देख बोला—

'अबे गधे इतने दिन कहां रहा,
अक्ल के उल्लू हमने तेरे बिन बड़ा दुख सहा !
(**रुककर**) उल्लू जी से क्षमायाचना सहित !

उल्लू : कोई बात नहीं। अक्ल के उल्लू इंसानों में ही होते हैं !

तोता : तभी मेरी कंठी फूटी,
मैंने वहां खड़े सब की वाह वाही लूटी !
[जनता में हंसी की लहर, तालियां]
अब जो भी गाहक आता,
मैं उसके स्वागत में चहचहाता !
'गधा आ रहा है !
अबे गधे इतने दिन कहां रहा ?
अक्ल के उल्लू हमने तेरे बिन बड़ा दुख सहा !'
आने वाले झुंझलाते,
पास खड़े कहकहा लगाते !
पनवाड़ी मुसकराता,
मुझको शेर बतलाता !
पनवाड़िन झुंझलाती,
मुझको मारने को आती !
मेरे भाग जगे,
गाहक कम होने लगे !
आखिर उकताकर उसने एक दिन—
मुझको पिंजरे से निकाला,
हवा में उछाला !
बोली भाग दुष्ट !
तू कभी नहीं लेगा राम नाम।
मैंने तुरत पेड़ की एक शाख पर बैठकर कहा—
'काकी ! राम राम'
राम राम, राम राम !
[सब हंसते हैं, तालियां बजाते हैं, 'बहुत बढ़िया', 'बहुत अच्छे' आदि आवाजें]

मुर्ग : इस तरह तोताराम जी कैद से आजाद हुए ! अब मैं बगुला-भगतजी से प्रार्थना करूंगा, वह आएं और अपनी कविता सुनाएं !

बगुला : (**माइक पर आता है, नेपथ्य में बगुले की आवाज का रिकार्ड**

चलता है) मैं एक बात आपको बता दूं, मैं बगुला भगत नहीं, सिर्फ बगुला हूं। बगुला भगत तो इंसानों में होते हैं। मैंने इसी भाव को लेकर भगवान से प्रार्थना की है !

कविता

पशु-पक्षी कीड़ों की आदत अपना कर इंसान।
बन बैठा है इस दुनिया का एक नया भगवान।।
इसकी मनमानी से हम सब जीव आ गए तंग।
यह गिरगिट की तरह पलों में बदला करता रंग।।
दुर्बल देख भेड़िया बनता, सबल देखकर स्यार।
तुझसे भी ज्यादा प्रभु इसकी महिमा अपरंपार।।
इसके रहते इस दुनिया में नहीं हमारा काम।
हमें मुक्ति देकर हम सब पर कृपा करो अब राम।।
एक दूसरे को ये बगुला भगत बताते आज।
सच कह दूं तो इसके आगे सभी जीव मोहताज।।
अपने तन पर मेरे जैसे उजले कपड़े धार।
बनकर बगुला भगत कर रहा जग का बेड़ा पार।।
यह करता है काम ठगी के होता मैं बदनाम।
इसके रहते नहीं हमारा जग में कोई काम।।

[हंसी, 'वाह वाह', 'आज के इंसान का सही रूप खींचा है' आदि आवाजें]

मेरी मछली तो मुझ से बच जाती है भगवान,
पर इसकी मछली की कभी नहीं बचती है जान !
मैं तो भूख मिटाने को करता हूं सदा शिकार,
यह फैशन की खातिर देता है जीवों को मार !

['सच कहते हो', 'बढ़िया कविता है' आदि आवाजें और तालियां]

मेरी तुमसे अंतिम विनती है मेरे भगवान।
या हम रहें धरा पर या फिर रहे कुटिल इंसान।।
बहुरूपिया बना यह धारा करता है अति रूप।
इसके आगे दुखी चांदनी, कांपा करती धूप।।

[कविता की समाप्ति पर तालियां]

मुर्गा धन्य हो बगुलाजी, बहुत बढ़िया कविता सुनाई। सचमुच इंसान के बहुरूपियापन के आगे चांदनी अर्थात चंद्रमा और धूप अर्थात सूरज दोनों फीके हैं। बच्चो, ईश्वर ने हम सबको

आपका मन बहलाने के लिए बनाया है ! पर कुटिल लोगों ने हमें बड़ा परेशान किया हुआ है ! अब मैं उल्लूजी से निवेदन करूंगा कि वह आपको अपनी रचना सुनाएं।

[उल्लू आता है, टेप पर उसकी ध्वनि गूंजती है, उल्लू बना बालक अभिनय करता है।]

उल्लू : मैं संचालक का धन्यवादी हूं, इन्होंने मेरे नाम का सही उच्चारण किया है ! मुझको देव, राव ऐसे शब्दों से नफरत है। बगुला भाई ने बहुत अच्छी कविता पढ़ी है। वास्तव में इंसान ने पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़े की हर आदत अपना ली है ! यह देखते हुए हम सब विवश हैं। इस धरती पर हमारी क्या जरूरत हैं ? कई बार दो कवियों के सोचने का ढंग एक हो जाता है। मेरे और बगुले के बीच में भी यही हुआ है ! यूरोप के देश मुझको एकांतवासी योगी कह कर मेरी पूजा करते हैं। इस उपमहाद्वीपवासी मुझको मनहूस समझते हैं, अद्भुत बात है।

मैं खंडहरों और वीरानों में रहता हूं। शहरों, नगरों गांवों से मेरा कोई वास्ता नहीं। लेकिन इन सब जगहों पर मेरा नाम खूब लिया जाता है। ऐसे बहुत से इंसान होंगे जिन्होंने मेरी शक्ल नहीं देखी होगी, पर परस्पर एक-दूसरे को उल्लू कह कर सुख प्राप्त करते हैं। एक छोटी सी रचना सुना रहा हूं, बात भाई बगुला वाली ही है। बगुला अभी भवमुक्ति के लिए प्रार्थना ही कर रहे हैं, पर मैं तो भवमुक्ति का अधिकारी हूं, रचना इस प्रकार है :

मुझे मुक्ति दो भवभयहारी,
मैं तो हूं इसका अधिकारी।
इस धरती पर मेरा कोई काम नहीं है,
मुझको भी अब यहां तनिक आराम नहीं है।
मैंने अपना काम कर दिया है धरती पर
धरती का हर मानव,
एक दूसरे को उल्लू समझा करता है।
एक दूसरे को उल्लू कह कह कर,
यह अपने मन की पीड़ा हरता है !

[हंसी, 'बहुत अच्छा' की आवाजें]

उल्लू : शहर के लोगों ने शायद, मुझको देखा कभी नहीं, मेरा नाम ही सुना है, फिर भी मुझको हर समय कोसते हैं ! मैंने आगे

कहा है :

मैं गरीब खंडहर का वासी
इस पर भी ते सत्यानाशी
जिस मूरख पर चिढ़ जाते हैं
सोचे समझे बिना उसे झट
मेरा पट्ठा बतलाते हैं !

[लोग हंसते हैं]

मुर्ग : वाह वाह, यह भी खूब रही ! यह तो मैंने अकसर अपने मालिक को अपने कर्मचारियों से कहते सुना है।

उल्लू : आप ठीक कहते हैं, अपने कर्मचारियों से ही क्यों, जब इंसान क्रोधित होता है तो सबसे यही कहता है ! अंतिम पंक्तियां सुनिए :

मानव मतलब इंसान,
मानव चाहे कहे स्वयं को उल्लू,
पर मुझको उल्लू कहलाने से नफरत है।
अब धरती पर मेरा कोई काम नहीं हैं,
मुझको भी अब यहां तनिक आराम नहीं है !

[हंसी और तालियों की गड़गड़ाहट में उल्लू की कविता समाप्त होती है, मोर माइक पर आता है।]

मोर : वास्तव में ही उल्लू भाई ने इंसान पर एक बहुत अच्छा व्यंग्य पढ़ा। इंसान अपनी आदतें छोड़ पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़ों की आदतें अपना रहा है ! अगर उसे यही करना है तो इस दुनिया में हमारी क्या जरूरत है ? छोड़िए, इस बात पर फिर कभी चर्चा करेंगे। अब मैं अपनी कविसभा के संचालक मुर्गजी से प्रार्थना करता हूं कि वह अपनी कविता सुनाएंगे।

[मोर मसनद के सहारे बैठता है, मुर्ग माइक पर आता है।]

मुर्ग : मैं सब पक्षियों से अधिक इंसान के करीब हूं। मेरी कई नस्लें हैं। मैं दुनिया के हर हिस्से में पाया जाता हूं। मैं और मेरा परिवार सदा मांसाहारी इंसानों का पेट भरने के काम आता है ! मेरे मालिक को मुर्गे लड़ाने का शौक है। शाही जमाने में लोग मुर्गों को आपस में लड़ाकर अपना मन बहलाते थे ! आज भी हमारी कुश्ती के लिए दंगल जुड़ते हैं !

मोर : मुर्गे और बटेर लड़ाने का शौक हमारे देश में बहुत पुराना है !

श्रोता एक : जनाव, ये मास्टर लोग बालकों को मुर्गा क्यों बनाते हैं ?

मुर्ग : मेरी समझ में खुद नहीं आता ! बड़ा बुरा रिवाज है। दोनों टांगों के बीच में से हाथ निकाल कर कान पकड़ कर खड़े होना अच्छी खासी सजा है !

श्रोता दो : उस पर कुकड़कूं भी बुलवाते हैं। फिर एक दो मिनट नहीं घंटों खड़ा रखते हैं।

मुर्ग : मैं जानता हूं भाई। मेरे मकान के पिछवाड़े पाठशाला है। मैं अपनी छत की मुडेंर पर बैठा सब सीन देखता रहता हूं। हमारा रहीम भी वहीं पढ़ता है।

श्रोता एक : यह रहीम कौन है, साहेब ?

मुर्ग : मेरे मालिक का लड़का है ! मेरी और रहीम की बहुत दोस्ती हैं ! वहां मास्टर धनपतराय पढ़ाते हैं ! पढ़ाने से उनका कोई वास्ता नहीं, वह सारे दिन पान चबाते रहेंगे, सिगरेट पीते रहेंगे। जासूसी नावल पढ़ते रहेंगे। जो भी सामान लाने में देर कर दे उसको मुर्गा बना देंगे। एक दिन मैंने छत से देखा कई लड़कों के साथ रहीम भी मुर्गा बना हुआ है। सब कुकड़कूं बोल रहे हैं !

श्रोता एक : क्या हेडमास्टर उसे कुछ नहीं कहते ?

मुर्ग : किसी मंत्री की सिफारिश से आया है, सब उससे डरते हैं ! पर मैं चंगेजी नस्ल का मुर्गा हूं। आप मेरी कलगी से ही अनुमान लगा सकते हैं। लोग मुझको कलगी वाला भी कहते हैं। मुझे प्यार के साथ साथ गुस्सा भी बहुत आता है। मैंने बच्चों की यह बुरी हालत देख मास्टरजी की अक्ल ठिकाने लगाने की सोच ली !

श्रोता दो : वह किस तरह महाराज ?

मुर्ग : अपनी कविता में मैंने इस भाव को भी लिया है—अब कविता सुनिए :

कविता

मैं जागरण दूत हूं सोई दुनिया सदा जगाता।
अपनी मधुर कुकड़कूं से मैं आलस दूर भगाता।
सुनकर मेरी बांग छिटकने लगता स्वयं अंधेरा,
मेरी वाणी सुन सब कहते, जागो हुआ सवेरा।
'मुर्गा बोल रहा है, जागो भोर हो गई भाई'
युग युग से यह एक कहावत जग में चलती आई !

श्रोता एक : पर अब तो आप असमय भी बांग लगाने लग जाते हैं !

[जनता की हंसी]

मुर्ग : (हंसकर) असमय बांग लगाने वाले नकली मुर्ग हैं, असली नहीं ! वैसे मुसीबत के समय तो बोलना ही पड़ता है ! यह भाव भी सुनिए :

आधी रात हुई चोरों ने घर में सेंध लगाई।
आहट सुनते ही झट मेरी नींद खुल गई भाई।
चढ़ मुंडेर पर मैंने अपनी स्वर लहरी लहराई,
सभी पड़ोसी जागे, जागे घर के लोग-लुगाई।
चोर आ गए सकते में, मालिक मुझ पर झुंझलाए,
मुझे पीटने को कोने से लाठी लेकर आए !
तभी नजर पड़ गई सेंध पर बात समझ में आई,
पकड़े गए चोर सब, मैंने फिर से बांग लगाई !
बांहों में भरकर फिर मालिक ने मुझको पुचकारा
सबसे बोले—कलगी वाला है अपना रखवारा ।।

['बहुत सुंदर', 'बहुत बढ़िया' की आवाजें, तालियां]

श्रोता दो : अब मुर्ग महाराज, मास्टर धनपतराय वाली बात भी हो जाए !

मुर्ग : लीजिए, तो कुछ लाइनें उन पर भी सुन लीजिए :

मास्टर धनपतराय सदा बच्चों को मुर्ग बनाते,
जैसे भैंस जुगाली करती, वैसे पान चबाते।
यदि कोई समझाए तो उल्टा उस पर गुर्राते।
'ऊपर करो शिकायत मेरी' कह सबको धमकाते !
उनकी इस आदत पर मुझको ताव बहुत आता था,
पर मालिक के डर से मैं झुंझला कर रह जाता था।
लंबी-चौड़ी मूछें उसकी, सिर था उसका गंजा।
मैंने छत से कूद जमाया उसके सिर पर पंजा !
कान, नाक, गर्दन पर मैंने वार किए मनमाने।
उसे बना कर मुर्गा कर दी, उसकी अक्ल ठिकाने !

[सब हंसते हैं, तालियां बजाते हैं]

उसकी इस गंदी हरकत का सबको राज बताया,
सब ने उसको धिक्कारा, वह मन ही मन शरमाया,
बच्चों पर यदि कोई जुल्म करे तो गुस्सा आता।
यह अपनी फुलवारी, इनमे शोभित भारत माता ।।

['बहुत बढ़िया' की आवाजें, तालियां]

मुर्ग : अब मैं आज की सभा के सभापति श्री मयूरजी से प्रार्थना करूंगा कि वह हमें आशीश दें।

[नेपथ्य में मोर की कुहुक की टेप चलती है।]

मोर : (माइक पर आकर) मैं इस कार्यक्रम की सफलता के लिए आप सबको बधाई देता हूं। मैं कवि तो हूं नहीं, मैं तो नर्तक हूं। नाचना ही मेरा पेशा है। अपने पंख फैलाकर नाचना मुझको अच्छा लगता है !

श्रोता एक : तो थोड़ी देर नाच ही हो जाए !

मोर : कभी आकाश पर बादल छाने दीजिए, तब अपना नाच दिखाऊंगा।

मुर्ग : कविता की कुछ पंक्तियां तो हमें सुना ही दीजिए,

मोर : जो आज्ञा !

बादल देख गगन में मेरे पैर थिरकने लगते,
पंख फैल जाते हैं, मन में भाव अनूठे जगते !
मैं जब नाचा करता उस क्षण सबके मन को भाता,
मुझे देख अपनी रचना पर, खिलते स्वयं विधाता।
मेरे पंख कृष्ण के सिर की शोभा रहे बढ़ाते,
मोर मुकुटधारी से सारे दुश्मन थे घबराते।

['वाह वाह', 'बहुत सुंदर' की आवाजें]

मेरे पंखों के पंखे से गरमी भागा करती,
मेरी कूक सदा वन उपवन का सूनापन हरती।
सब जीवों से प्यार मुझे है, सांप नहीं पर भाता,
उसका मेरा सदा रहा है तीन व छः का नाता।

['बहुत खूब' की आवाजें तालियां]

एक दिवस मैं नाच रहा था, बच्चे झूम रहे थे,
नन्हें-मुन्ने बादल नील गगन में घूम रहे थे।
मुझे दाद देते थे बालक, बजा बजाकर ताली,
मेरी छवि उस क्षण थी सबको मोहित करनेवाली।
तभी शोर पड़ गया अचानक, सबकी मति बौराई,
कोलाहल की ओर शीघ्र फिर मैंने दृष्टि उठाई।
एक भयानक नाग पास बच्चों के दिया दिखाई,
मैंने पंख समेटे झट से, खुल कर दौड़ लगाई।

बीच कमर से उसको पकड़ा पहुंचा नील गगन में।
घायल कर खाई में पटका, चैन पड़ा तब मन में।
प्यारे भोले बच्चो! तुमसे मुझको इतना कहना,
दुष्टों से अच्छे लोगों की रक्षा करते रहना।
मीठी कूक सुनाना सबको कभी न देना गाली,
कविसम्मेलन खत्म हुआ, अब शीघ्र बजाओ ताली!

[हंसी और तालियां]

हरिराम कपोत : इसी के साथ हमारा कविसम्मेलन समाप्त होता है। मैं सभापतिजी, कवियों और आप सब को धन्यवाद देता हूं।

पर्दा गिरता है

आया का मुकदमा

गंगाप्रसाद माथुर

पात्र

जज	आया
वीणा	कृष्ण
मदन	

[कमरे में अदालत लगी हुई है। बीच में एक मेज-कुरसी पर जज बैठा है। उसके बाईं ओर अभियुक्त 'आया' कटघरे के पीछे खड़ी है—जो चिमनी के स्क्रीन से बनाया गया है। दाईं ओर वीणा, कृष्ण और मदन हैं।]

जज : (मेज को थपथपाते हुए) खामोश ! खामोश !

कृष्ण : जज साहब, हम इस औरत के सताए हुए हैं।

जज : यह औरत कौन है ?

वीणा : हुजूर, यह हमारी आया है।

कृष्ण : यह हम पर बहुत जुल्म करती है।

वीणा : यह हमें मार डालेगी।

मदन : हुजूर, ये झूठ बोल रहे हैं। आया का कोई कसूर नहीं।

जज : लड़के, तू कौन है, जो इस औरत की तरफ से बोल रहा है ?

मदन : हुजूर, मेरा नाम मदन है। यह औरत हम तीनों की आया है।

कृष्ण : यह आया मदन को प्यार करती है, इसलिए मदन इसकी तरफदारी करने आया है।

जज : हां, तुम दोनों को आया से क्या क्या शिकायतें हैं ?

वीणा : यह बहुत झूठी है।

जज : वीणा, तुम साबित करो कि आया झूठी है।

वीणा : आया, बताओ आठ और पांच कितने होते हैं ?

आया : तेरह।

वीणा : कितने ?

आया : तेरह। तेरह।

वीणा : अदालत नोट करे, आया कहती है, आठ और पांच तेरह होते हैं। अच्छा, आया, सात और छः कितने होते हैं ?

आया : तेरह।

वीणा : अदालत नोट करे, अभी अभी आया ने कहा था आठ और पांच तेरह होते हैं। और अब कहती है सात और छः तेरह होते हैं। अब बताइए, जज साहब इसका किस बात पर एतबार किया जाए।

जज : क्यों, आया, अब तुम्हारे पास क्या जवाब है ? तुमने हमारे सामने दो बयान बदले। कृष्ण, आया के खिलाफ कोई और शिकायत है।

कृष्ण : हमें आया की ऐनक के खिलाफ शिकायत है। इस ऐनक में चीजें बड़ी दिखाई देती हैं।

जज : क्यों, आया, तुम्हारी ऐनक में चीजें बड़ी दिखाई देती हैं ?

आया : जी हुजूर।

कृष्ण : जब ऐनक लगाकर हमें चीजें बांटती है, तब हमारे हिस्से में बहुत कम चीजें आती हैं।

जज : यह तो वाकई बुरी बात है।

वीणा : सरकार, एक शिकायत मेरी भी है।

जज : बयान करो।

वीणा : कुछ दिन हुए आया ने मेरे थप्पड़ मारे।

जज : (हैरत से) वह क्यों ?

वीणा : जी, मैंने कहा, मेरे पेट में दर्द है।

जज : फिर ?

वीणा : इसने मुझे कड़वा चूरन खिलाना चाहा। हालांकि मेरे पेट में चूरन वाला नहीं बल्कि लैमन वाला दर्द हो रहा था।

कृष्ण : एक शिकायत मेरी भी सुनिए।

जज : बयान करो।

कृष्ण : कुछ दिन हुए इसने मेरे पैसे छीन लिए और कान मरोड़े।

जज : कोई वजह ?

कृष्ण : मैंने इससे कहा था कि मुझे मलाई की बरफ ला दो।

जज : क्यों, आया, क्या यह सच है ?

आया : जी हां।

जज : वजह ?

आया : सर्दियों में मलाई की बरफ खिलाकर निमोनिया करना था क्या ?

कृष्ण : मैंने आया को पहले ही बता दिया था कि मैं कंबल ओढ़ कर बरफ खाऊंगा।

जज : आया, तब तुमने इसके पैसे क्यों छीने? इसके कान क्यों मरोड़े?

आया : जी, वह...

वीणा : हुजूर, पहले आया से एक बात पूछना चाहती हूं।

जज : आज्ञा है, पूछो।

वीणा : आया, बताओ तुम्हारा भांजा भला आदमी है या नहीं।

आया : वह तो बहुत ही भला आदमी है।

वीणा : हुजूर, एक दिन आया ने घर साफ किया, कूड़ा-करकट इकट्ठा करके इसने मुझसे कहा : 'ऐ लड़की, इसे खिड़की से बाहर फेंक दे।' और जब मैं खिड़की की तरफ चली तो बोली : 'सुन, कूड़ा किसी भले मानस को देखकर फेंकना।'

जज : क्यों, आया तुमने कहा था कि कूड़ा किसी भले मानस को देखकर फेंकना?

आया : जी, कहा था, मगर यह लड़की...

जज : आर्डर, आर्डर, जो बात पूछी जाए सिर्फ उसका जवाब दो। हां, वीणा, फिर क्या हुआ?

वीणा : तो, जनाब, मैं बड़ी देर तक खिड़की में खड़ी रही क्योंकि आने-जाने वालों में मुझे कोई भी भला आदमी मालूम न होता था। इतने में आया का भांजा उधर से निकला। मैंने झट सारा कूड़ा उस पर फेंक दिया क्योंकि वह काफी भला आदमी है। इस पर जब आया के भांजे ने इससे मेरी शिकायत की, तब मुझे कमरे में बंद किया गया।

कृष्ण : इसके जुल्म तो अब, सरकार, हद से बाहर हो गए हैं। अभी कुछ दिन हुए, इसने पिताजी से कहकर मेरे सौदे के पैसे बंद करा दिए थे।

जज : वह क्यों?

कृष्ण : एक दिन इसने मुझे एक हिसाब का सवाल बोला।

जज : हिसाब का सवाल?

कृष्ण : जी, हां, यह हमें पढ़ाती भी है।

जज : अच्छा, फिर?

कृष्ण : जब मैं सवाल हल करके इसके पास ले गया, तब वह बोली : 'बिलकुल गलत। जवाब में एक आने की कमी है। फिर निकालो।' खैर साहब, मैंने फिर सवाल निकाला। लेकिन इसने फिर एक आने की क़मी बता दी।

जज : फिर क्या हुआ ?

कृष्ण : साहब, पांच-छः बार निकाला, लेकिन हमेशा एक आने की कमी आई। मैंने कहा : 'आया, अब तो मेरे खेलने का वक्त हो गया, मैदान में मेरे साथी इंतजार कर रहे होंगे। अब छुट्टी दे दो, सवाल कल निकाल लूंगा।'

जज : ठीक है, खेल के वक्त खेल और पढ़ाई के वक्त पढ़ाई।

कृष्ण : लेकिन, साहब, यह बुढ़िया आफत की पुड़िया, कब मानने वाली थी ? बोली—'जब तक सवाल ठीक नहीं होगा, यहां से नहीं जा सकते।'

जज : अच्छा, फिर तुमने क्या किया ?

कृष्ण : मरता क्या न करता, सरकार। मैंने एक-दो बार सवाल फिर हल किया, लेकिन इसने हर बार एक आने की कमी बताई।

जज : ओह, फिर तो बड़ी मुश्किल पड़ी होगी ?

कृष्ण : जी, हां, लेकिन मुझे एक तरकीब सूझी।

जज : वह क्या ?

कृष्ण : मैंने सवाल फिर हल किया।

जज : तो क्या इस बार सवाल ठीक निकल आया ?

कृष्ण : जी नहीं, वह तो न ठीक निकलना था, न निकला। एक आना फिर कम रहा। हिसाब की कापी पर मैंने एक इकन्नी अपनी जेब से निकालकर रखी, और आया से कहा : 'अब मुझे छुट्टी दे। जवाब में जो एक आने की कमी रह गई है वह मेरी इकन्नी से पूरी कर ले।'

जज : तो फिर तुम्हें छुट्टी मिल गई होगी।

कृष्ण : जी, यही तो मुसीबत है। बजाय छुट्टी मिलने के मेरे खर्च के पैसे भी बंद कर दिए गए।

जज : वह क्यों ?

कृष्ण : इसने मेरी शिकायत पिताजी से कर दी। वह बोले : 'इस लड़के के पास पैसे फालतू आ गए हैं, जो इस तरह हिसाब की कमी पूरी करता है।' और सरकार, फिर मुझे पैसे मिलने बंद हो गए। आखिर वीणा की सिफारिश से कई दिन बाद मुझे दोबारा पैसे मिलने शुरू हुए।

वीणा : जनाब, इसे तो सजा मिलनी ही चाहिए।

कृष्ण : और यह तो कल की ही बात है, हम सब चाय पी रहे थे। वीणा और मैं मेज पर बैठे थे। मदन वहां अभी नहीं आया था

सामने केक के तीन टुकड़े रखे थे। उनमें से एक आया ने वीणा को दे दिया। अब प्लेट में दो टुकड़े रह गए थे—एक बड़ा था, दूसरा जरा छोटा। मैंने बड़ा टुकड़ा उठा लिया। अभी मुंह तक ले ही गया था कि आया बोली : 'अगर मदन होता तो वह जरूर छोटा टुकड़ा उठाता।' मैंने कहा : 'मैं बड़ा हूं, इसलिए बड़ा टुकड़ा ले लिया।' इस पर आया ने मेरे कान मरोड़े और एक चांटा भी मारा।

जज : क्यों, आया ?

आया : अरे लड़के, क्यों झूठ बोल रहा है ? हुजूर, यह झूठा है।

कृष्ण : मैं झूठ बोल रहा हूं ? सब तेरी तरह झूठे हैं ?

जज : आर्डर, आर्डर। शोर न करो। आया का गवाह मदन बताए कि आया ने कृष्ण को पीटा था या नहीं ?

मदन : जी, आया ने इसे नहीं मारा बल्कि इसने तो प्यार किया था।

जज : क्यों, आया, तुमने इसे प्यार किया था ?

आया : जी, हां, मैंने तो इसे प्यार किया था।

वीणा : जज साहब, यह सब तो मामूली शिकायतें हैं। अगर हम कहें कि आया हमें मिटाने पर तुली है तो झूठ न होगा। जनाब, एक दिन यह कहने लगी, इंसान मिट्टी का बना हुआ है।

जज : क्यों, आया, तुमने कहा था कि इंसान मिट्टी का बना हुआ है ?

आया : जी, मैंने कहा था।

कृष्ण : और, जनाब, दूसरे दिन सुबह इसने मुझे पकड़ लिया कि आ, तुझे नहलाऊं।

जज : हैं ? तुम्हें नहलाना चाहा ?

वीणा : जज साहब, अब आप सोचिए, इसका क्या इरादा था ?

कृष्ण : यह जानती थी कि इंसान मिट्टी का बना हुआ है और फिर भी यह मुझे नहलाना चाहती थी। नतीजा साफ जाहिर है—अगर मैं नहा लेता तो कीचड़ बन जाता। अब आप ही बताइए, इसका इरादा खतरनाक था या नहीं ?

वीणा : हमारे साथ इंसाफ किया जाए।

जज : मदन, तुम्हें आया की सफाई में कुछ कहना है ?

मदन : जी, हां, मैं अदालत से प्रार्थना करता हूं कि वह इस बात पर गौर करे कि आया ने कृष्ण और वीणा के साथ जो कुछ किया है, उसे करने में आया का क्या इरादा था। क्या आया वास्तव

में इन दोनों को कोई नुकसान पहुंचाना चाहती थी या वह इन्हें एक अच्छा लड़का और लड़की बनाना चाहती थी ? आया हमारी मां के समान है। क्या कोई यह सोच भी सकता है कि मां अपने बच्चों का बुरा चाहती है ? हुजूर, मेरी बात पर गौर करें। मुझे और कुछ नहीं कहना है।

जज हमने कृष्ण और वीणा की सब शिकायतें गौर से सुनीं और उनके बारे में आया और उसके गवाह मदन के सफाई के बयान भी सुने। सब कुछ सुनने और समझने के बाद हम इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि आया बेकसूर है। इन बातों को करने में उसका कोई बुरा इरादा नहीं था और उसने कृष्ण और वीणा को अच्छे बालक बनाने के विचार से ही ऐसा किया। इसलिए हम आया को रिहा करते हैं। अदालत बरखास्त होती है।

(१९६२)

गुड़िया का ब्याह

□ रमेशकुमार माहेश्वरी

पात्र

जीजी — टुइयां

गुड्डी — मंजू

मुन्नी

[मंच पर बिलकुल सामने बाईं ओर एक परदा पड़ा हुआ है, जिसके पीछे एक दरवाजा होगा, ऐसा आभास होता है। दाईं ओर बगल में एक गैलरी का मुख्य द्वार दिखाई देता है, जिसमें कोई परदा आदि नहीं है। कमरा बिलकुल साधारण है, अधिक सज्जा नहीं। मुन्नी और गुड्डी धीरे धीरे बातें करती हुई एक कपड़े से दीवार को झाड़ रही है।]

जीजी : (**बिना सिर उठाए ही**) अरी, कब तक साफ किए जाओगी? क्या दीवार की कलई उतारकर ही दम लोगी?

गुड्डी : जीजी, तुम अपने गुड्डे का पुलोवर बुने जाओ, तुम्हें क्या? हम तो अपनी समधिन के स्वागत की तैयारी कर रहे हैं।

मुन्नी : (**हंसकर**) कब आएंगी जाने हमारी समधिन।

जीजी : (**गैलरी की ओर देखकर**) आती ही होंगी। समय तो हो गया है। किसी काम में देर लग गई होगी।

मुन्नी : (**मुसकरा कर**) जीजी के लिए मिठाई का थाल ला रहे होंगे। (**जीजी हंसकर चुप रह जाती है**)

जीजी : अरी मुन्नी, तूने गुड्डे को धूप में तो रख दिया था न?

मुन्नी : हां, हां, जीजी मैं तो उसी समय रख आई थी, जब आपने रंग करके दिया था।

गुड्डी : जीजी, सूखकर तो बड़ा अच्छा लगेगा हमारा गुड्डा। (**सहसा गैलरी की ओर देखकर**) लो, जीजी वे लोग तो आ गए।

[सब लोग दरवाजे की ओर लपकते हैं। मंजू और टुइया सबको हाथ जोड़ कर नमस्ते करते हैं। टुइयां जीजी से मिलाने के लिए हाथ आगे बढ़ाता है। जीजी मंजू का हाथ पकड़ लेती है और जोर से हिलाती है। टुइयां बोर हो जाता है और खिसिया कर कमरे में इधर-

उधर चक्कर लगाने लगता है। जीजी सबको ले जाकर फर्श पर बिछी चादर पर बैठाती है।]

मंजू : अरे टुइयां, यहां आ जा न !

टुइयां : तुम अपना काम करो। मैं जरा कैलेंडर देख रहा हूं।

गुड्डी : (हंसकर) कल सोमवार है। मास्टरजी का काम नहीं किया होगा, इसलिए शायद देख रहा हो कि छुट्टी हो जाए तो अच्छा है।

मुन्नी : गुड्डी, तू तो पागल है। इसे तारीख देखना आता हो तो देखे भी, यह तो तसवीर देख रहा है।

[सब खिलखिलाकर हंस पड़ते हैं।]

टुइयां . (गरम होकर आता है) हंहंहंहंहं (मुंह खिजाता है) सबको अपने जैसा समझती है। तुझसे ज्यादा काम करके ले जाता हूं।

मंजू : (टुइयां का हाथ पकड़ कर, खींच कर उसे बैठाती हुई) टुइयां, तुझे कब तमीज आएगी।

जीजी : जब टुइयां से टुआ हो जाएगा।

[सब लोग फिर खिलखिलाकर हंस पड़ते हैं। टुइयां खिसिया जाता है।]

मंजू : हां, तो जीजी, आपने काम की बात तो अभी तक बताई ही नहीं। आप कितने बाराती लाएंगी ?

जीजी : यही तो मैं भी बड़ी देर से सोच रही हूं। आदर्श ब्याह करूं, तो गुड्डे के दोस्त सब बुरा मानेंगे। अधिक बाराती से आऊं तो तुम्हें परेशानी होगी।

गुड्डी : कैसे भी हो, जीजी, कम से कम दस बाराती तो हो ही जाएंगे।

मंजू : जीजी, हमारे घर में तो अभी एक ही टी-सैट है। दो हम लोग भी हैं, कुछ घराती भी तो होंगे।

मुन्नी : तो क्या बात है, गरमियों का मौसम है, कुछ लोगों को शरबत पिला देना।

गुड्डी : भाई, मैं तो चाय ही पिऊंगी और उसमें भी चीनी तेज।

मुन्नी : और जीजी, गरमियों में बिना आइसक्रीम के तो मजा ही नहीं आता।

टुइयां : हां, हां, छह कप खाएगी तू तो। हमारे यहां तो कारखाना खुला हुआ है।

मंजू (टुइयां के सिर पर हलकी सी चपत लगा कर) टुइयां, तू इतना ज्यादा क्यों बोलता है ? याद नहीं, रात ही मम्मी ने पिताजी

से कहा था कि बेटीवालों को झुक कर चलना चाहिए !

टुइयां : तो मैं तो बेटा हूं ।

[सब लोग हंस पड़ते हैं ।]

मंजू : मुन्नी, इसकी बात का बुरा मत मानना। यह तो बेवकूफ है। **(लेकिन मुन्नी रूठने का अभिनय करती हुई चली जाती है)**

टुइयां : हां, हां, मैं तो बेवकूफ हूं। तू बड़ी होशियार की बच्ची है। रोज घर पर डांट पड़ती है । तब कैसा मजा आता है ।

गुड्डी : मंजू, पलंग निवाड़ का बनवाया है या बान का ?

मंजू : मैं पापा से कह दूंगी। वह कल ही बढ़ई से एक निवाड़ का पलंग बनवा देंगे।

जीजी : **(सहसा उछल कर)** अरे, मंजू, एक बात तो मैं पूछना भूल ही गई थी।

मंजू : **(उत्सुकता से)** क्या, जीजी ?

जीजी : अगर तेरी गुड़िया का रंग तुझ जैसा सांवला हुआ तो क्या होगा ? हमारे घर में तो कोई लड़की सांवली नहीं है। महरी भी गोरी है ।

मंजू : जीजी, मेरी गुड़िया तो बिलकुल सफेद है। ऐसा तो तुम्हारा गुड्डा भी नहीं होगा। फिर, मैंने उसे आज ही सफेद कपड़े पहनाए हैं।

टुइयां : क्या ? तूने पहनाए हैं या मैंने ?

मंजू : सिए किसने थे, तूने या मैंने ?

टुइयां : पैसे तो मैंने दिए थे । तू वैसे ही लाट साहबनी बनी जा रही है।

मंजू : टुइयां, मुझसे बदतमीजी की, तो मैं तेरा सिर फोड़ दूंगी।

टुइयां : **(बड़बड़ाता रहता है)** तू आज घर चल, चुड़ैल, तेरी कुटंती न करवाई तो मेरा नाम नहीं। आज पापा से जाते ही तेरी शिकायत करूंगा। बड़ी आई गुड़िया वाली। **(बड़बड़ाता रहता है)**

मंजू : जीजी, तुम इसकी परवाह मत करो। इसका तो दिमाग खराब है।

टुइयां : दिमाग तेरा खराब होगा। तेरी बहनजी का होगा।

[सब लोग हंस पड़ते हैं।]

जीजी : अच्छा, मंजू बहन, तुम सब बातों को कहीं नोट कर लो। कहीं भूल न जाओ। आइसक्रीम वाली, केक वाली, जेवरों वाली,

पलंग वाली...

मंजू : हाय, जीजी, ये तो बहुत सारी चीजें हो गई। यह सब मैं कैसे करूंगी ? मेरी गुल्लक में तो कुल दो रुपए हैं। बस, थोड़े से पैसे और होंगे।

जीजी : शादी-ब्याह के मौके पर पैसे का लोभ थोड़े ही किया जाता है, मंजू। किसी और से भी तो ले सकती हो। टुइयां भी तो मामा है, भात देगा।

टुइयां : (**बहुत जोर से मुंह फाड़ कर**) लेने के नाम से कैसा मुंह फाड़ दिया सबने—टुइयां भी तो मामा है। मैं तो एक फूटी कौड़ी भी किसी को नहीं दूंगा। मेरी बला से, चाहे कुछ भी हो जाए।

मंजू : अरे, जा, जा, तुझसे मांगता कौन है, मक्खीचूस ? (**धीरे से**) जीजी, इतना सब तो मैं नहीं कर सकूंगी। आप एक बार और सोच लेना। अब मैं जा रही हूं। (**कुछ उठने की मुद्रा बनाती है**)

गुड्डी : कुछ भी हो, मंजू, जीजी, हमारे गुड्डे की शादी तो शानदार होनी चाहिए। कोई ऐसा-वैसा तो है नहीं...

[सहसा मुन्नी भागी हुई अंदर आती है।]

मुन्नी : जीजी, गजब हो गया।

सब लोग : (**एक साथ**) क्या हुआ ?

मुन्नी : गुड्डे को तो बंदर ले गए। पता नहीं कहां गया।

जीजी : (**उठकर बाहर को भागते हुए**) हाय, मेरा गुड्डा !

[सब लोग उसके पीछे भागते हैं। टुइयां भी खड़ा होकर हक्का-बक्का सा देखता रह जाता है। मंजू 'जीजी, जीजी' कह कर पुकारती है, लेकिन तब तक जीजी दरवाजे से बाहर हो जाती है।]

पर्दा गिरता है

शिशु सम्मेलन

□ श्रीकृष्ण

पात्र

सतीश	महेश
मनोज	नरेंद्र
जवाहर	शंकर
राजेंद्र	बीना
गिरीश	सुनील
नीरज	पिताजी
राकेश	अन्य कुछ बच्चे

[एक बड़ा कमरा, जिसमें बीस-तीस बच्चे आ सकते हैं। फर्श पर दरी बिछी हुई है। सामने दीवार के सहारे दो कुर्सियां और एक छोटी मेज रखी है। मेज पर एक घंटी रखी हुई है और कुछ कागज-पत्र बिखरे हुए हैं। एक कुर्सी पर संस्था का प्रधान मनोज बैठा है और दूसरी पर मंत्री सतीश जमा हुआ है। फर्श पर बीस-पचीस के लगभग बारह साल से कम उम्र के बच्चे बैठे हुए हैं। एक लड़की भी बैठी है। यह सुनील की छोटी बहन बीना है। कमरे का अधिकतर सामान अस्त-व्यस्त है। एक ओर सोफा उल्टा पड़ा हुआ अपनी किस्मत को रो रहा है, तो दूसरी ओर जूतों की पेंठ खुली है। कार्निश का सामान भी बेतरतीब है। दीवारों पर जहां-तहां दो-तीन कैलेंडर लटके हुए हैं। सामने खूंटी पर एक बेंत लटकी हुई है। सभा में चिल्ल-पौं मची है। मंत्री सतीश घंटी बजाकर सबको सचेत करने का प्रयत्न करता है।]

सतीश : साथियो, अब आप लोग शांत हो जाइए, खामोश हो जाइए। जलसे की कार्यवाही शुरू होती है।

[सभा में ऐसी चुप्पी छा जाती है कि सुई भी गिरने पर सुनाई पड़ जाए।]

सतीश : आज हमारे शिशु सम्मेलन का यह दसवां उत्सव है। आप सब लोग जानते हैं कि इस सभा के हर सम्मेलन में आप लोगों की शिकायतों पर आपस में विचार होता है, नए नए प्रस्ताव रखे जाते हैं। आज भी यही काम होना है, लेकिन इससे पहले हमारे सभापति महोदय आपके सम्मुख कुछ न कुछ जरूर

कहेंगे। आओ, मनोज भैया।

[तालियों की गड़गड़ाहट होती है और मनोज उठ कर थोड़ा खांसता है, फिर कमीज का कालर ठीक करके गंभीर मुद्रा बना लेता है।]

मनोज : भाइयो ! मुझे कुछ ज्यादा नहीं कहना है। मैं तो यह कहता हूं कि आज जमाना ऐसा है कि हरेक को अपने अपने हकों के लिए लड़ना जरूरी है। हमारी अम्माएं अपने हकों के लिए रात-दिन सिर फोड़ती रहती हैं। अपने दूसरे देशों के साथियों की ओर देखिए। वे जब स्कूल जाने के लिए घर से निकलते हैं, तब उनके पैरों में पतलून होती है, बदन पर कोट होता है, हाथों में दस्ताने और पैर की अंगुलियों में जुराबें होती हैं, गले में टाई और सिर पर हैट होता है। और यहां क्या हालत है ? गले में कुरता होता है, पाजामा भी हुआ तो हुआ, नहीं तो नही सही, एक लंगोटी ही काफी समझी जाती है। हर जरा लंबे कद का आदमी पास से गुजरते हुए हमारे कान ऐंठने में अपनी बड़ाई समझता है।

जवाहर : वाह, मनोज भैया ! तुमने तो जैसे हमारी मुसीबतों की तसवीर ही खींच कर रख दी।

मनोज : भाइयो ! हमारे माता-पिता हमें बच्चा समझकर हम पर कितना जुल्म ढाते हैं, यह कोई छिपी बात नहीं है। माता-पिता ही नहीं, ये भैया-भाभी, चाचा-चाची, ताऊ-ताई, मामा-मामी जो भी आते हैं, हम ही पर रोब जमाते चले आते हैं। काम करते वक्त तो हम, सलाह लेते समय बड़े भैया ! मगर भाइयो, अब हमारी आंखें खुल गई हैं। हमारे भी जी है। हम किसी से दबकर नहीं चलेंगे।

कई बच्चे : हां, हम किसी से दबकर नहीं चलेंगे।

मनोज : मित्रो ! हम ही तो देश के भावी नागरिक हैं। न जाने हममें से कौन आगे चलकर प्रधानमंत्री, वित्तमंत्री या राष्ट्रपति बने।

राजेंद्र : भाइयो, मैं तो एक्टर बनना चाहता हूं लेकिन मेरे पिताजी मुझे डाक्टर बनाना चाहते हैं।

कई बच्चे : यह ज्यादती है। हरेक को हक है कि वह जो चाहे, बने।

मनोज : हां, तो दोस्तो, अब आप अपनी अपनी कठिनाइयां सभा के सम्मुख रखें ताकि उन पर खेद प्रकट किया जा सके, अत्याचारियों की निंदा की जा सके और सामूहिक आंदोलन की

नींव डाली जा सके।

[सभापतिजी बैठ जाते हैं और बच्चे फिर किलकारियां भर भर कर तालियां बजाते हैं। सतीश हाथ उठाकर सबको चुप कराता है। गिरीश खड़ा होता है।]

गिरीश : भाइयो, मैं आप लोगों से पूछता हूं कि यदि किसी काम को करने की तबीयत न हो, तो उसे करना चाहिए या नहीं?

कई बच्चे : कभी नहीं। बिलकुल नहीं। हरगिज नहीं। बेमन से किया काम कभी ठीक नहीं होता।

गिरीश : बस तो, भाइयो, आप मेरी मुसीबत सुनिए। मेरी स्कूल जाने की बिलकुल भी इच्छा नहीं होती। मगर पिताजी हैं कि हर वक्त डंडा लिए सिर पर सवार रहते हैं। मैं कहता हूं कि अगर विश्वकवि रवींद्रनाथ ठाकुर बचपन में ढंग से पढ़-लिख लेते, तो क्या कभी विश्वकवि हो सकते थे?

कई बच्चे : कभी नहीं। कभी नहीं।

गिरीश : यदि सरदार पटेल बचपन में स्कूल में पहाड़ों के नाम पर भैंस के कटरों के रस्से पकड़ कर न लाते, तो क्या कभी सरदार पटेल हो सकते थे?

बच्चे : असंभव। असंभव।

गिरीश : तो, भाइयो, बस इन्हीं बातों पर आपके प्यारे साथी गिरीश की, यानी मेरी ठुकाई होती है, कान मसले जाते हैं और कभी तो मुर्गा बनने की भी नौबत आ जाती है।

सब बच्चे : यह अत्याचार है।

[गिरीश बैठ जाता है। नीरज खड़ा होता है।]

नीरज : भाइयो, आप अगर मेरी मुसीबतों की कहानी सुनेंगे तो भाई गिरीश का दुख भूल जाएंगे। हम दो भाई हैं। मैं छोटा हूं, इसलिए इसका नाजायज फायदा उठाया जाता है। जब भी मैं घर में घुसता हूं, तभी मम्मी को पिताजी पर बड़े भैया की शादी के लिए जोर डालते देखता हूं। मैं पूछता हूं, क्यों जी, किसी को कुछ हमारी भी चिंता है? आखिर हममें कमी क्या है? क्या हम निखट्टू हैं? क्या हमारी शक्ल-सूरत अच्छी नहीं है? चौथे दरजे में पढ़ते भी हैं। बस, यही तो कमी है कि हम कुछ कमाकर नहीं लाते, सो बड़े भैया ही क्या कमाकर लाते हैं? उस पर भी तुर्रा यह कि हर साल उनके तो नए नए कपड़े सिलवाए जाते हैं और हमें उनकी उतरन पहननी पड़ती

है। सिर्फ इसलिए कि उनकी उतरन हमारे बदन पर फिट आती है।

एक बच्चा : आपने तो, भाईसाहब, जैसे मेरे दिल की बात कह दी। मुझे भी बिलकुल ऐसा ही महसूस होता है।

बच्चे : यह घोर अन्याय है और समाज की जलती हुई समस्याओं में से एक है।

राकेश : भाइयो, मुझे अपने पिताजी की एक आदत बिलकुल पसंद नहीं। हर तीसरे दिन वह नकद चार आने अपनी शेव कराने में फूंक देते हैं। हमें भी तो देखो, सालों बीत जाते हैं, मगर सिवा चाट-पकौड़ी खाने के और किसी काम में चवन्नी नहीं खरचते।

महेश : अजी, तुम्हें तो चार आने मिल भी जाते हैं, यहां तो कभी कुछ मांगते भी हैं, तो घुड़के जाते हैं, आंखें निकाली जाती हैं, लाल-पीले होते हैं, आसमान सिर पर उठा लेते हैं, और अगर कभी रीझे, तो देते हैं सिर्फ तीन पैसे, सो भी नए। क्यों, नरेंद्र भैया, चुप क्यों हो? बोलते क्यों नहीं?

नरेंद्र : अजी, अगर इतनी ही बात होती, तो फिर भी गनीमत थी। उसमें भी सैकड़ों बंधन लगे होते हैं—देखो, कंचे मत खरीदना, चाट मत खाना, पतंग मत उड़ाना, लैमनजूस मत लेना, यह मत लेना, वह मत लेना। मैं पूछता हूं कि फिर इन पैसों का क्या अचार डाला जाए? आटा खरीदें, दाल खरीदें या घर-गृहस्थी की फिक्र करें?

बच्चे : घोर अन्याय है। हमें इन बातों के विरुद्ध मोर्चा लेना ही होगा। यह समस्या सारे शिशु-समाज की रोज रोज की समस्या है।

शंकर : और हमारा घर तो पक्षपात का जैसे अड्डा है। अगर मैं जरा सा भी अपना नाखून मुंह में रखता हूं तो तुरंत एक करारा सा तमाचा मुंह पर पड़ता है। लेकिन अगर छोटा मुन्ना अपना सारा पांव तक मुंह में ठूंस लेता है, तो सब के सब देखकर खुशी से फूल जाते हैं, उसके फोटो उतारते हैं। हमारा फोटो कोई नहीं उतारता।

सतीश : ओह! हे भगवान। हमें शक्ति दे कि हम इन अत्याचारों की कहानियों को धैर्य के साथ सुन सकें। इन्हें सुन सुन कर तो रोंगटें खड़े हो जाते हैं।

बीना : भाइयो, मैं भी कुछ कहूं?

सुनील : नहीं, नहीं, तुम चुप रहो। भाइयो, लड़कियां अव्वल दरजे की चुगलखोर होती हैं। इन्हें तो बोलने का क्या, सभा में घुसने तक का हक नहीं होना चाहिए। कोई भी काम करो, यह उसकी चुगली फौरन पिताजी से कर देती हैं। उसी दिन की बात है, जरा मैं पिताजी का हुक्का गुड़गुड़ा कर देख रहा था कि देखूं स्वाद में कैसा लगता है। झट जाकर इस चुगलखोर ने पिताजी के कानों में पूर दिया—पिटाजी, पिटाजी, भैया हुक्का पी रिया है। यहां बिना बातों ही मुर्गा बना दिए गए।

सब बच्चे : इसे सभा से बाहर निकाल दो।

वीना : अच्छा, तो यह बात है। मैं अभी एक एक की खबर लेती हूं।

[पैर पटकती हुई, गुस्से से बड़बड़ाती वह बाहर निकल जाती है।]

मनोज : भाइयो, यह तो कुछ ठीक नहीं हुआ। मेरा तो दिल धड़क रहा है।

सतीश : दिल तो मेरा भी बैठा जा रहा है।

सुनील : अजी, यह उसकी बंदरभभकी है। मैं उसे खूब अच्छी तरह जानता हूं। आखिर बहन तो मेरी ही है।

[उसी समय सुनील के पिताजी वीना की अंगुली पकड़े हुए भीतर प्रवेश करते हैं।]

पिताजी : यह सब क्या हुड़दंग मचा रखा है? मेरे कमरे का सामान किस [illegible] उलटा-पलटा है?

[illegible]ना : (चिल्लाकर) इन्हीं सब लोगों ने सारी गड़बड की है, पिताजी।

मनोज : (कांपता हुआ उठ कर) हम अपने अधिकार लेंगे। हम किसी से दबकर नहीं चलेंगे।...हां...

आवाजें : हां, हम अपने अधिकार लेकर रहेंगे। हमें हमारे अधिकार दो।

पिताजी : क्यों बे, सुनील के बच्चे। क्या तुझे भी अधिकार चाहिए?

सुनील : (अपने साथियों की ओर देखकर साहस से) हां, हां!

पिताजी : अच्छा तो अभी दिलाता हूं तुझे अधिकार।

[पिताजी झपटकर खूंटी से बेंत उतारते हैं! बच्चों में भगदड़ पड़ जाती है। पिताजी बेंत हवा में उठाए सुनील को ढूंढते-फिरते हैं लेकिन सुनील का कहीं पता नहीं है।]

हरी मिर्चें

□ स्वदेश कुमार

पात्र

राम : एक लड़का
लक्ष्मी : राम की माता
पुरोहित

[लक्ष्मी रसोई में खाना बनाने में व्यस्त है। राम स्कूल से लौटकर आता है।]

लक्ष्मी : राम, आ गया रे स्कूल से ?

राम : हां, मां ! आज क्या मेरी दावत है, जो इतनी सारी चीजें बनाई हैं ?

लक्ष्मी : तेरी दावत नहीं है। आज एकादशी का व्रत है न, सो पुरोहित जी को भोजन कराना है।

राम : मां, तुम तो रोज ही किसी न किसी पुरोहित को भोजन कराती हो। हमारा सारा राशन तो यही लोग खा जाते हैं।

लक्ष्मी : साधु-संन्यासियों को भोजन कराना तो धर्म का काम है, बेटा ! हमें राशन की क्या चिंता ? बाजार में चाहे जितना अनाज ले लो। हां, दाम जरूर अधिक देने पड़ते है।

राम : मां, तुम्हारा यह धर्म मेरी समझ में नहीं आता। हमारे स्कूल के पंडितजी तो कहते हैं कि हमें सप्ताह में एक दिन व्रत रख-कर अनाज बचाना चाहिए क्योंकि देश में अनाज की बहुत कमी है। और तुम्हारे पुरोहितजी व्रत के दिन खूब हलुआ-पूरी उड़ाते है। मां, क्या चोरबाजार मे अन्न खरीदना भी धर्म का काम है ?

लक्ष्मी : तू बहुत बातें करने लगा है। ले, चल, ये चीजें उस कमरे में ले जाकर रख। पुरोहितजी आते ही होंगे।

[पुरोहितजी खड़ाउंओं की खटपट करते हुए आते हैं।]

लक्ष्मी : प्रणाम, पुरोहितजी !

पुरोहित : दूधों नहाओ, पूतों फलो, बेटी !

राम : पुरोहितजी, आजकल पीने को तो दूध मिलता नहीं और आप कहते हैं कि दूध में नहाओ। पहले ही देश में आवश्यकता से

अधिक पूत हैं और आप कहते हैं कि पूतों फलो।

पुरोहित : (खिसियानी हंसी हंसकर) बड़ा नटखट बालक है।

लक्ष्मी : आप इसकी बात का बुरा न मानिए। न जाने स्कूल में क्या क्या बेकार की बातें सीखकर आता है।

पुरोहित : भोजन में कितनी देर है, बेटी ? अभी एक यजमान के घर और जाना है।

राम : क्या वहां भी भोजन करना है ?

पुरोहित : नहीं, बेटा, यहां भोजन करने के पश्चात भला पेट में स्थान थोड़े ही रहेगा। वहां से तो मैं केवल सीधा ले लूंगा।

लक्ष्मी : आप इस आसन पर विराजिए, पुरोहितजी, मैं अभी भोजन परोसकर लाती हूं। राम, तू मेरे साथ आ।

[राम चीजें ला लाकर पुरोहितजी के सामने रखता जाता है और पुरोहितजी भोजन की सुगंध सूंघने लगते हैं।]

लक्ष्मी : लक्ष्मीनारायण कीजिए, पुरोहितजी।

पुरोहित : सब राम की कृपा है।

राम : मेरी ?

पुरोहित : भगवान राम की, बेटा ! तू जानता है, भगवान राम कौन थे ?

राम : जानता हूं। रामराज्य में कोई भूखा नहीं मरता था। सब अपने धर्म का पालन करते थे। साधु-संन्यासी तपस्या करते थे। व्रत-उपवास के पश्चात फलाहार करते थे, हलुआ-पूरी नहीं...

लक्ष्मी : चुप रह, दुष्ट !

पुरोहित : क्यों क्रोध करती हो, बेटी ? अभी यह बालक है। हां, तेरे पति नहीं आए अभी ?

लक्ष्मी : उनकी दुकान के मालिक अमीरचंद को पुलिस ने पकड़ लिया है। वह देर से आएंगे।

पुरोहित : राम, राम। यह तो बड़ा अनर्थ हुआ। ये पुलिसवाले भी बड़े जालिम होते हैं। भले आदमियों की इज्जत एक मिनट में उतार लेते हैं।

राम : लेकिन अमीरचंद भला आदमी तो नहीं है। पहले उसका नाम गरीबचंद था। पता है आपको, वह अमीरचंद कैसे बन गया ?

पुरोहित : कैसे ?

राम : चोरबाजार में मंहगे दामों गेहूं और चावल बेच बेचकर।

इसीलिए तो पुलिस ने पकड़ लिया ।

पुरोहित : चोरबाजारी ! यह तो पाप है ।

राम : अच्छा, आप भी चोरबाजारी को बुरा समझते हैं, बड़ा आश्चर्य है । तो क्या मैं आशा करूं कि अब आगे से आप व्रत के दिन फलाहार ही करेंगे ?

लक्ष्मी : राम, तू चुप नहीं रहेगा ? पुरोहितजी, आप भोजन करिए । इसकी बातों पर ध्यान मत दीजिए ।

पुरोहित : (खाते हुए) भोजन तो बड़ा स्वादिष्ट बनाया है, बेटी !

लक्ष्मी : सब आपकी कृपा है ।

पुरोहित : मेरी क्या, भगवान...ओह, बाप रे, मर गया । पानी !

लक्ष्मी : क्या हुआ ? यह लीजिए पानी ।

पुरोहित : (गटागट पानी पीकर) हाय, मुंह जल गया मेरा तो ।

लक्ष्मी : (आश्चर्य से) मुंह जल गया ? इतनी अधिक गरम तो कोई चीज नहीं है ।

पुरोहित : (सी सी करते हुए) नहीं, बेटी, वैसे नहीं जला । हाय, जबान फुंकी जा रही है ।

राम : लीजिए, पानी और पी लीजिए ।

पुरोहित : (पानी पीकर) अरे बेटा, मर गया मैं तो ।

राम : सच ? राम नाम सत्य है ।

लक्ष्मी : (डांटकर) क्या बकता है । पुरोहितजी, कुछ बताइए भी तो क्या हुआ ?

पुरोहित : (सी सी करते हुए) हाय, मिर्चें ?

लक्ष्मी : मिर्चें ? मिर्चें तो मैंने किसी चीज में भी जरा सी भी नहीं डालीं । किसमें लगी आपको मिर्चें ? आलुओं में ?

पुरोहित : नहीं ।

लक्ष्मी : गोभी में ?

पुरोहित : नहीं ।

लक्ष्मी : बैंगन में ।

पुरोहित : नहीं ।

लक्ष्मी : टिंडों में ?

पुरोहित : नही, पानी ।

लक्ष्मी : पानी में ? पानी में मिर्चें कहां से आईं ?

पुरोहित : अरे नहीं, पानी पीने को मांग रहा हूं ।

लक्ष्मी : लीजिए (पानी गिलास में डालती है)तो क्या सेम में मिर्चें थीं ?

पुरोहित : नहीं ।

लक्ष्मी : आलू-मेथी में ?

पुरोहित : (**सी सी करते हुए**) नहीं, नहीं ।

लक्ष्मी : अच्छा, तो क्या गाजर में मिर्चें लगीं ?

पुरोहित : नहीं, गाजर में भी नहीं ।

लक्ष्मी : (**कुछ परेशानी से**) रायते में ? दाल में ?

पुरोहित : नहीं बेटी, नहीं ।

लक्ष्मी : तो...भात में ? पूरियों में ? कचौरियों में ? या मीठे चावलों, रबड़ी, रसगुल्लों, बरफी, हलुए में थीं ?

पुरोहित : नहीं, भला, इनमें मिर्चें कैसे हो सकती हैं ?

लक्ष्मी : तो पुरोहितजी, अब तो कोई चीज सामने दिखाई देती नही । आप ही बता दीजिए कि आपको किस चीज में मिर्चें लगी ।

पुरोहित : अरे, वह हो तो बताऊं । किसी सब्जी के दो टुकड़े रखे हुए थे भिंडियों के पास । उन्हें मैंने भिंडी समझकर खा लिया और तब से...

राम : (**हंसकर**) वे दो टुकड़े हरी मिर्चों के थे । हरी मिर्चों में विटामिन होते हैं । मैंने इसीलिए उन्हें रख दिया था कि वह स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होंगी ।

लक्ष्मी : (**क्रोध से**) तूने यह शैतानी क्यों की ?

राम : इसीलिए कि पुरोहितजी को सुबुद्धि आ जाए और तुम्हें चोर-बाजार से फिर अनाज न ख़रीदना पड़े ।

लक्ष्मी : पुरोहितजी, आप यह दूध पी लीजिए । मिर्चें लगनी बंद हो जाएंगी ।

पुरोहित : न बेटी, मुझे सुबुद्धि आ गई । अब मैं कभी नहीं आऊंगा । चलता हूं ।

राम : पुरोहितजी, धन्यवाद ! मां, लाओ, यह दूध मैं दीनू माली के बच्चों को पिला आऊं । बेचारे गरीब बालकों को दूध की बहुत आवश्यकता है ।

पटाक्षेप

[१९६२]

हम सब एक है

□ मनोहर वर्मा

पात्र

गुड्डे वाली लड़की : गुजराती
गुड़िया वाली लड़की : सिंधी
तथा एक-दो अन्य
बालिका पात्र, वय १० से १४ वर्ष
गुड्डे वाला लड़का : गुजराती
गुड़िया वाला लड़का : सिंधी
सरदार, बंगाली, राजस्थानी सेठ, उत्तरप्रदेशीय पंडितजी
तथा दो अन्य पात्र बालक पात्र १० से १४ वर्ष
पांच-सात छोटे बच्चे, जो ढोल-नगाड़े, बैंड, रोशनी
और घोड़े वाले हों वय ७ से १० वर्ष

[**रंगमंच** : रंगमंच की साज-सज्जा बिलकुल शादी-ब्याह के समय की गई सजावट सी हो। मंच ब्याह का घर लगे। गुब्बारे और कागज की बेलों से सजा हो। तेज रोशनी के साथ साथ रंग-बिरंगी सजावटी रोशनी भी हो। बारात के बैठने के लिए सोफा या कुर्सियां आदि लगी हों।

वेशभूषा : सब अपनी अपनी प्रांतीय पोशाकें पहने हों।

पर्दा उठने पर ढोल, बाजे, नगाड़े आदि बजाते एक कतार में सब प्रवेश करते हैं। उनके पीछे गले में माला डाले बाराती हैं, अपने अपने प्रांत की पोशाकों में। इनके पीछे घोड़े पर दूल्हा।

बारात का जुलूस मंच पर एक चक्कर लगाकर रुक जाता है। बाराती लोग यथास्थान बैठ जाते हैं और ढोल-बाजे-शहनाई इत्यादि वाले एक ओर खड़े हो जाते हैं। दूल्हा को द्वार की ओर घोड़े-सहित ले जाते हैं—जहां दूल्हा की आरती उतारी जाती है। फूल उछाले जाते हैं, मालाएं पहनाई जाती है और फिर घोड़े पर से उतारकर उसे अंदर ले जाते हैं। दूल्हा के साथ आई दूल्हा की मां और बारात में आई सब लड़कियां भी अंदर चली जाती हैं।

इधर बारातियों के बैठते ही पानी के गिलास आते हैं—कुछ बाराती दूल्हा की आरती आदि रस्में देखते रहते हैं। तभी हाथ में छोटी सी चमड़े की अटैची लिए सरदारजी का प्रवेश। सरदारजी को देखते ही सबके चेहरों पर मुसकराहट

आ जाती है और एक बाराती बोल पड़ता है : 'सत श्री अकाल सरदारजी !']

सरदार : की सतश्री अकाल बादशाओ, सान्नू उत्थे ही छड्ड आए यार ! **('र' पर जोर देकर बोलता है)**

[सरदार एक खाली कुरसी पर बैठ जाता है—पास ही अटैंची रखते हुए लोगों की प्लेटों की तरफ नजर पड़ते ही]

सरदार : ओ बादशाओ, भूख लगी है यार, सान्नू भी कुछ देओ। **(सर-दार के लिए भी चाय आती है)**

बंगाली : **(चाय की चुस्की लेते हुए)** शारदार, राजस्थानी शेठ पकौड़ा-मल को कीदर का छोड़ा बाबा...?

सरदार : **(आश्चर्य से, मुंह में मिठाई का टुकड़ा है)** ओ बादशाओ, सेठ इत्थे नहीं पोंच्चा **(आंखें मूंदकर हाथ ऊपर उठाते हुए)** वाहे गुरु...वाहे गुरु...कमाल कित्ता राजस्थानी सेठ ने बा'शाओ। **(हंसते हुए)** तो खरगोश और कछुए दी काहणी हो गई यार...

[सेठ का प्रवेश। परेशान सा, हांफते हुए कपड़े की पोटली बगल में है। सरदार की अंतिम बात सुन लेता है। हंसते हुए]

सेठ : अरे, म्हारो बेटो ओ पंजाबी काछुओ म्हारास्यूं पँली पुगग्यो कांई ?

[सेठ को देख सब मुसकरा देते हैं। दूल्हा का पिता आदर से बैठाता है]

उत्तर प्रदेशीय : सेठ साहब, आपको यात्रा में कोई कष्ट तो नहीं हुआ ?

सेठ : **(पसीना पोंछते हुए)** अरे, कष्ट री बातां पछे करज्यो। **(धोती के पल्ले से हवा करते हुए और इधर-उधर देखते हुए)** अरे ल्या भाई, ल्या कटे चलेग्यो...? **(पेट पर हाथ फेरते हुए)** अठे तो प्राण निकलग्या भूखां मरतां का **(एक खाने-पीने का सामान लाने वाले को रोककर)** एक लोटी दूध और रबड़ी लिया भाया, बाकी पछे देखी जास्सी... **(सब लोग हंस देते हैं)**

सरदार : **(नीचे से ऊपर की ओर दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए)** सेठ, साड्डे पंजाब में तू चल यार, तेनूं पेट भर लस्सी, पेड़ेवाली खिलावां ...**(पेड़ेवाली पर जोर देकर)**

बंगाली : शेठ मोशाय तुम तो हमारा बांगाल देश चलो तो रोशगुल्ला शे तुमार ई पेट भर दें बाबा।

[एकाएक भीतर से तेज नारी स्वर, लगभग चीखते हुए]

नारी स्वर : बंद करो शहनाई।

[एक लड़की आकर गुड्डे के पिता को चुपचाप कान में कुछ कहती है और दोनों अंदर चले जाते हैं। दूसरे ही क्षण अंदर से तेज पुरुष स्वर सुनाई देता है जो गुड्डे के पिता का है।]

गुड्डे का पिता : यह कैसे हो सकता है? यह तो सरासर हमारी बेइज्जती है। (**बकता हुआ मंच पर आता है**) आपको पहले सोचना चाहिए था। हमें घर बुलाकर बेइज्जत किया जा रहा है।

दो-तीन स्वर : (**बारातियों के**) क्या हुआ गुजराती बाबू? (**चिंता और आश्चर्य से**)

गुजराती : कहते हैं, यह शादी नही होगी।

सेठ : (**आश्चर्य से**) शादी नहीं होगी? कोई कारण भी तो होसी, शादी क्यों नहीं होगी?

गुजराती : कारण सुनकर दंग रह जाएंगे, सेठजी! कहते हैं गुड़िया सिंधी की है। हम गुजराती के गुड्डे से शादी नहीं करेंगे।

श्रीमती गुजराती : नहीं करते न सही। कौन हमारा गुड्डा कुंआरा रह जाएगा?

सरदार : (**स्वत**) वाहे गुरु...वाहे गुरु...(**आखें मींचे हाथ उठाकर**)

सेठ : (**स्वतः**) हरी ओम...हरी ओम...शिव शिव शिव...

उत्तर प्रदेशीय : हम लोगों के विचार अभी पचास वर्ष पुराने ही हैं। हम लोग अभी तक इन झूठे और बकार के ढकोसलों में बंधे हुए हैं।

बंगाली : (**पश्चात्ताप करते हुए**) ई तो बहुत ही बिछी है। अरे! (**आश्चर्य से**) गोजराती गुड्डा हुआ तो क्या। है तो गुड्डा ही? क्यों शारदार?

सरदार : हां, बा'शाओ!

[गुड़िया वाले सिंधी महाशय, उनकी पत्नी आदि कुछ लोग मंच पर आ खड़े होते हैं।]

गुजराती : (**उन्हें देखकर**) मुझे पता नहीं था कि इन लोगों के इतने ओछे विचार हैं। मैं तो समझता था, काफी पढ़े-लिखे लोग हैं, इज्जतदार लोग हैं, संबंध होने से और प्रेम बढ़ेगा...

सेठ : थे पहली लड़की वालां न थांको गुड्डो कोणी दिखायो हो कांई?

गुजराती : ये मेरे अच्छे मित्र हैं सेठजी! इनकी पत्नी भी मेरी पत्नी की पक्की सहेली है।

श्रीमती गुजराती : **(तुनककर, गर्व से)** यही मेरे गुड्डे पर लट्टू हुई थीं। सात बार इन्होंने कहा, तब मैंने हां भरी। इनकी गुड़िया जैसी कई गुड़ियां काजल डाले बैठी हैं मेरे गुड्डे के लिए। क्या कमी है गुड़ियों की !

सेठ : फेर कांई झगड़ो है सांई जी ? ई रिश्ता स्यूं तो आपको प्रेम ही बढ़ सी।

सरदार : **(गुड़िया की तरफ के लोगों की ओर मुंह कर)** आप नू पत्ता नहीं सी पेल्ले कि ये गुड्डा गुजराती दा है ?

सिंधी : सब कुछ पता था सरदारजी, पर आप ही सोचिए कि मेरी गुड़िया तो सिंधी है. .

श्रीमती सिंधी : और उनका गुड्डा गुजराती...

बंगाली : तो ईश में की हो गया बाबा ? ये तो शोमाज के सामने एक बहुत बड़ा आदर्शो रखता है आप लोग ! ई शब हीमत का काम है बाबा...हीमत का...

श्रीमती सिंधी : लेकिन बंगाली बाबू, जब मेरी गुड़िया सिंधी भाषा में बोलेगी तो यह गुजराती गुड्डा कैसे समझेगा ?

[गुजराती महाशय सिर थामे बैठे हैं।]

सिंधी : और जब इनका गुड्डा गुजराती बोलेगा तो मेरी गुड़िया क्या समझेगी ?

श्रीमती सिंधी : और जब एक-दूसरे की भाषा ही नहीं समझेंगे तो जिंदगी सुख से कैसे कटेगी ?

श्रीमती गुजराती : **(तुनकते हुए)** ठीक है, तुम अपनी गुड़िया किसी सिंधी जानने वाले को ही ब्याहना। **(गुजराती महाशय का हाथ पकड़कर उठाते हुए)** उठिए, आप फालतू ही इतने दुखी क्यों होते है ?

सिंधी : नहीं पंडितजी **(गरजकर)** यह शादी नहीं होगी, आप बारात ले जा सकते हैं।

बंगाली : सिंधी मोशाय, आप तो हिंदी बोल शाकता है। आपकी गुड़िया नाही बोल शाकता ?

श्रीमती सिंधी : क्यों नहीं ? मेरी गुड़िया भी अच्छी तरह हिंदी बोल सकती है ?

बंगाली : और गोजराती मोशाय, आप भी हिंदी बोलता है। क्या आपका गुड्डा नाही बोल शाकता ?

गुजराती : अच्छी तरह बोल सकता है, लिख-पढ़ सकता है।

कई स्वर : तब फिर झगड़ा कैसा ?

श्रीमती सिंधी : आप भी हिंदी बोल सकते है न बंगाली बाबू ?

बंगाली : क्यों नाहीं ! हम हिंदी बोलता है, पढ़ शाकता है।

श्रीमती सिंधी : और आप सरदारजी।

सरदार : पेंजी साड्डा तो सारा बीबी-बच्चा हिंदी जांदा सी !

श्रीमती सिंधी : (**व्यंग्य से**) तो फिर आप लोगों में थोड़ी देर पहले कैसा झगड़ा था ?

श्रीमती गुजराती : (**एकदम**) बस, बिलकुल वैसा ही झगड़ा अब है।

श्रीमती सिंधी : (**दृढ़ता से**) मैं हरगिज अपनी गुड़िया उस गुड्डे से नहीं ब्याहूंगी जिसकी बारात में आए लोगों के विचार इतने ओछे हों।

सिंधी : और जो खुद भाषा और प्रांत का भेदभाव मन में रखते हैं और दूसरों को न करने की शिक्षा देते हैं।

श्रीमती सिंधी : शादी अब हरगिज नहीं होगी। आप बारात ले जा सकते हैं। (**मुड़कर अंदर जाने लगती है**)

गुजराती : (**गुस्से में**) मुझे पता नही था कि मैं जिन लोगों को बारात में ले जा रहा हूं उनके ओछे विचारों के कारण एक श्रेष्ठ काम में बाधा पड़ेगी और मुझे इतनी बेइज्जती सहनी पड़ेगी।

बंगाली : (**अपने कान पकड़कर**) हम से गालती हूआ बाबा ! हम खमा मांगता।

सरदार : सान्नू भी माफ करो बाशा'ओ ! (**हाथ जोड़ता है**) वाहे गुरु दी कसम जो कभी ऐसे भेदभाव रखे तो...

[श्रीमती गुजराती और श्रीमती सिंधी इत्यादि के चेहरे पर मुसकराहट।]

श्रीमती सिंधी : शहनाई शुरू करो...

श्रीमती गुजराती : (**हंसते हुए**) अगर आप लोग यह पहले ही सोच लेते तो हम औरतों को अंदर बैठकर यह नाटक तो नहीं रचना पड़ता।

श्रीमती सिंधी : आपसी भेदभाव मिटाने के लिए ही तो हमने यह शादी तय की थी।

[बंगाली और सरदारजी गले मिलते हैं। गुजराती और सिंधी। इसी तरह बारी बारी सब श्रीमती सिंधी, श्रीमती गुजराती को गले से लगा लेती हैं। अंदर से लड़कियों द्वारा शादी के गीत का हलका स्वर आने लगता है। जब सब लोग गले मिल रहे होते हैं—बैकग्राउंड से यह गीत चलता है—ऊंचे स्वर में]

लड़के : एक ही धरती
एक गगन है
एक है देश हमारा...
लड़कियां : एक हिमालय
एक है गंगा
एक है वेष हमारा...
लड़का : एक ही रंग है
लड़की : एक ही ढंग है
सब : ऐसा देश हमारा...
लड़के : इस धरती पर
गिरजे भी हैं
मंदिर भी है
मस्जिद भी
गुरुद्वारे भी
लड़की : सब का बोझ उठाए कब से
देखो एक ही धरती...
दोनों : आओ
आओ
लड़का : आओ हम सब मिलकर
एक लगाएं नारा
लड़की : हम सब एक हैं
लड़का : हम सब एक हैं
सब : है हिंदुस्तान हमारा
है हिंदुस्तान हमारा
है हिंदुस्तान हमारा

[स्वर धीमा होता जाता है और पर्दा गिरता जाता है।]

(१९६२)

सहयोग

□ बालकराम नागर

पात्र

सूत्रधार : [पर्दे के पीछे से बोलता है]	छज्जू
बिरजू	चौधरी
रमा	नत्थू
भोला	आवाज : [पर्दे के पीछे से]

सूत्रधार : यह कहानी दो परिवारों की कहानी है। पहले इस परिवार के सदस्यों से मिलिए...

बिरजू : रमा, ओ रमा !

रमा : क्या बात है, भैया ?

बिरजू : बात तो ऐसी कुछ नहीं, सोच रहा था, बापू ने देर कर दी, गए तो चौपाल तक ही थे।

[बाहर से भोला की आवाज आती है।]

भोला : बिरजू ?

बिरजू : रमा, थाली परोस। बापू आ गए।

भोला : **(अंदर आकर)** बिरजू, रमा से कह दे, मेरे लिए थाली न परोसे।

बिरजू : क्यों बापू ?

भोला : मुझे भूख नहीं।

रमा : **(पास आते हुए)** क्या बात है बापू, तबीयत तो ठीक है...माथा गरम लगता है।

बिरजू : बापू, तुम्हारा जी तो ठीक है ?

भोला : ठीक ही है, बस थोड़ा आराम करूंगा।

बिरजू : हां, बापू, तुम घड़ी दो घड़ी लेट जाओ...फिर इकट्ठे ही खाएंगे।

भोला : अरे नहीं बेटा, तुम दोनों मेरे कारण भूखे न रहो।

रमा-बिरजू : तुम हमारी चिंता न करो बापू...

बिरजू : तुम खाट पर लेट जाओ बापू, बहुत थके हुए लगते हो। मैं तुम्हारे पांव दबा दूं ?

रमा : बापू, तुम्हें प्यास तो लगी होगी, पानी लाऊं।

भोला : हां, दो घूंट पी लूंगा ।

[रमा जाती है ।]

रमा : (आकर) पानी पी लो, बापू !

भोला : अरे यह पानी के साथ और क्या है ?

रमा : थोड़ा गुड़ है, बापू !

बिरजू : खाली पेट पानी नहीं पीते । (पानी पीता है)

रमा : आज चौपाल में बड़ी देर लग गई, बापू !

भोला : हां, बिटिया !

बिरजू : क्या फैसला हुआ ?

भोला : बेटा, अब तुझे सब सुना कर दुखी क्यों करूं ? अब हमारा इस गांव से अन्न-जल उठने वाला है ।

बिरजू : क्या कह रहे हो, बापू ! क्या ताऊ से कहा-सुनी हो गई ?

भोला : मैं किसी से कुछ नहीं कहता, बेटा, सुन सब की लेता हूं । तेरे ताऊ के दोनों लाडले ही आज चौपाल में बरस रहे थे ।

बिरजू : क्या कहा उन्होंने ?

भोला : वो नई बात क्या कहेंगे । वही कहा जो हमेशा से कहते आ रहे हैं ।

बिरजू : समझा ।

[दृश्य परिवर्तन]

सूत्रधार : और अब यह है तसवीर का दूसरा रुख, दूसरे परिवार की झांकी ।

छज्जू : जमीन हमारी, हल हमारा, बैल हमारे; पर जस गाते हैं सब चाचा और बिरजू का । हम तो जैसे देखने भर की दर्शनी हुंडियां हैं, असली मालिक नहीं ।

चौधरी : तुम दोनों एक तिनका तक न तोड़ो, मेहनत से जी चुराओ .. तो कोई कैसे तुम्हारे नाम की माला जपने लगे ?

नत्थू : जिनको भगवान ने जमीन-जायदाद दी है, नौकर-चाकर दिए हैं, उन्हें खुद काम में जान खपाने की क्या जरूरत है ?

छज्जू : ठीक ही तो है, ये तो नौकरों का फर्ज है कि अपने मालिकों के लिए जान खपाएं ।

चौधरी : अरे, कुछ मालिकों का भी तो फर्ज है । बैठे बैठे हुक्म चलाने से काम नहीं हो जाते । अच्छा काम वही ले सकता है जो खुद भी करना जाने उनके पास बैठ कर ।

नत्थू : हां, हां...आज तुम इन्हें पास बिठाओ, कल वो सिर पर बैठना

चाहेंगे।

चौधरी : बहुत बातें मत बना...जो मतलब की है सो कह।

नत्थू : याद रखना, बापू, एक दिन तुम्हारा यही लाडला भाई और उसका सपूत बिरजू हम सबको दूध में मक्खी की तरह निकाल बाहर करेंगे। तुम्हारी सारी जायदाद पर हाथ साफ कर जाएंगे और हम दोनों को बैलों की तरह जोतेंगे अपने हल में।

छज्जू : और नहीं तो क्या सारे खेतिहर मजदूर तो उनकी मुट्ठी में है ही, किसी दिन यही सब गवाही भी दे देंगे कि जमीन के असली मालिक भोला और बिरजू है। बस, फिर हाथ में माला पकड़ गंगा किनारे धूनी रमा लेना।

चौधरी : तुम्हारा बाप कोई कच्ची गोलियां नही खेला। ये बाल धूप में सफेद नही किए। वहां दे पटकूंगा, जहां पानी नही मांगेगा।

नत्थू : और नहीं तो क्या, सांप को कोई कितने दिन तक दूध पिला सकता है।

चौधरी : ठीक है, उन्हें गांव से बाहर, शहर की हद से लगती बंजर जमीन देकर हमेशा के लिए यह कांटा दूर करता हूं। बड़े भागीरथ हैं तो बना के दिखाए उस जमीन को खेती योग्य।

छज्जू : वाह बापू, अब आए तुम सीधे रास्ते पर।

[दृश्य परिवर्तन]

सूत्रधार : और अब इसके बाद की कहानी, दो शब्दों में यही है कि... वही हुआ जो नत्थू और छज्जू चाहते थे। भोला, बिरजू और रमा गांव छोड़ कर उस बंजर जमीन की ओर चल दिए। वे चलते जा रहे थे। जब सूरज ठीक सिर पर आ गया तब एक बड़े छायादार वृक्ष को देखकर रुक गए।

रमा : लो, यहां थोड़ी देर सुस्ता तो लो बापू, जरा धूप कम हो जाए तो आगे चलेंगे।

भोला : अच्छा बिटिया। यह बिरजू कहां रह गया...

रमा : वो आ रहा है, बापू। अरे यह पटसन कहां से ले आए, भैया...

बिरजू : उधर कुएं पर रमिया कहार का लड़का मिल गया। थोड़ी सी देता गया। सोचा रस्सा ही बट लेंगे।

भोला : ठीक है। कुछ समय भी कट जाएगा और एक काम की चीज भी बन जाएगी। आओ मिल कर रस्सा ही बट लेते हैं।

रमा-बिरजू : अच्छा, बापू।

[दृश्य परिवर्तन]

सूत्रधार : और इसके बाद की कहानी तुम समझ ही गए होगे। वह अपने बच्चों के साथ मिल कर अपनी बंजर जमीन को उपजाऊ बनाने की कोशिश में जुट गया। और वह कहावत है न कि जहां चाह, वहां राह। अपनी इस कोशिश में उन्हें सफलता मिली। और जब बंजर जमीन को मेहनत से खेती योग्य बनाने की खबर नत्थू-छज्जू को मिली तो वह मुहावरा है न, सीने पर सांप लोटना...तो बस ऐसा ही हाल हुआ उनका।

नत्थू : कुछ सुना बापू ? भोला चाचा के वारे-न्यारे हो रहे हैं।

छज्जू : हमारे कई खेतिहर मजदूर गांव छोड़ कर उनके पास बसने जा रहे हैं।

चौधरी : जो जाता है, जाने दे भाड़ में। देखूंगा जब उस जमीन पर घास का तिनका भी उगेगा।

छज्जू : सुना है, बिरजू आधी जमीन पर संतरे का बाग लगाने की सोच रहा है। पता नहीं कौन सा पारस पत्थर हाथ लग गया है उनके ?

नत्थू : तुम जरा देख कर तो आओ अपनी आंखों से, बापू।

छज्जू : ऐसा काम करो बापू कि सांप भी मर जाए और लाठी भी न टूटे।

नत्थू : लो बापू, अपनी लाठी संभालो।

छज्जू : और यह लो अपनी पगड़ी...

नत्थू : तुम कहो तो हम भी तुम्हारे साथ चलते है लेकिन हम एक कोस पीछे रहेंगे।

चौधरी : अच्छा चल कर देखें तो कि माजरा क्या है ?

[दृश्य परिवर्तन]

सूत्रधार : और फिर जैसा तय हुआ था छज्जू-नत्थू एक कोस पीछे रुक गए और चौधरी भोला से मिलने गया। बड़े भाई को आते देखा तो छोटा भाई खुशी से फूला न समाया।

भोला : अरे भैया, तुम ! पांय लागन।

चौधरी : उठो भोला। अब मैं पांव छुआने के योग्य नहीं रहा। मैंने तुम्हें गांव से निकाल...

भोला : कैसी बातें करते हो, भैया ! जो होता है होनी करवाती है। आदमी तो उसके हाथों कठपुतला है।

चौधरी : तू मुझे माफ नहीं कर सकता भोला ?

भोला : ऐसा कह कर मुझे नरक में न धकेलो, भैया ! तुम मेरे बड़े

भाई हो, पिता के बराबर।

चौधरी : क्या सच ? तू अब भी मुझे अपना मानता है...अब मेरा बोझ हलका हुआ। सुना, कैसा है ?

भोला : तुम्हारी कृपा है।

चौधरी : (**बनावटी खुशी से**) मेरी कृपा ? यह क्यों नहीं कहता कि तुम पर किसी पारस पत्थर की कृपा हुई है।

भोला : पारस पत्थर...(**हंसता है**) हमारा पारस पत्थर तो हमारी मेहनत ही है भैया...पर एक चमत्कार और भी हुआ।

चौधरी : वही तो मैं जानना चाहता हूं।

भोला : वो दूर पेड़ देख रहे हो। उस पेड़ के प्रेत से मेरी दोस्ती हो गई है।

चौधरी : प्रेत से दोस्ती ?

भोला : हां, भैया। उस पेड़ पर एक प्रेत रहता है। कान में सुनो (**कान में खुसर-पुसर करता है**)

[दृश्य परिवर्तन]

सूत्रधार : और भोला ने अपने बड़े भाई के कान में एक झूठी कथा कह दी कि जब वो पेड़ के नीचे चटाई बिछा कर बैठे और उन्होंने रस्सा बंटा तो कैसे रस्से के डर से एक प्रेत ने रुपयों से भरे घड़े का पता बताया। इसके बाद चौधरी ने भोला से विदा ली और एक कोस पीछे आकर अपने लाडलों से सारा हाल कहा।

छज्जू : बापू ! रुपयों से भरा घड़ा मिल जाए तो मजा आ जाए।

नत्थू : फिर हम भी अपने गांव में इनसे बड़ा संतरे का बाग खड़ा करें।

चौधरी : ये सपने बाद में देखना, पहले वहां पेड़ के नीचे चटाई बिछा कर रस्सा बंटते हैं।

छज्जू : बापू, हमें काहे को प्रेत के आमने-सामने करते हो।

नत्थू : हमारा इससे पहले किसी प्रेत से पाला नहीं पड़ा। क्या पता डर से हमारी चीख निकल जाए।

छज्जू : अरे ! सब किए-कराए पर पानी फिर जाएगा।

चौधरी : तो फिर रस्सी कौन बटेगा।

नत्थू : रस्सी हम बाजार से मोल ले आते हैं।

छज्जू : और चटाई हमारे पास है ही।

नत्थू : बापू, तुम ही रस्सी और चटाई लेकर पेड़ के नीचे जाना। हम दोनों वापस गांव जा रहे हैं।

छज्जू : क्योंकि हमें बड़े जोर से भूख लग रही है।

चौधरी : अच्छा, अच्छा, जाकर रस्सी तो लाओ। मैं अकेला ही पेड़ के नीचे जाऊंगा।

[दृश्य परिवर्तन]

सूत्रधार : और इसके बाद का यह आखिरी दृश्य है। चौधरी एक चटाई और रस्सी लिए दिखाई देता है। पेड़ के नीचे चटाई बिछाकर रस्सी की ओर देखता है। संयोगवश वहां सचमुच प्रेत था।

चौधरी : रस्सी कुछ कच्ची मालूम होती है ?

आवाज : बाजार से लाए हो या खुद बनाई है ?

चौधरी : (**इधर-उधर देखकर**) कौन ?

आवाज : पहले मेरी बात का जवाब दो।

चौधरी : कोई सामने आए तो बात करूं।

आवाज : सामने आऊंगा, तो डर कर भाग जाओगे।

चौधरी : मैं डर कर भाग जाऊंगा। तो क्या यह डरपोक प्रेत का पेड़ नहीं ?

आवाज : नही, अब यह बहादुर प्रेत का पेड़ है।

चौधरी : पर मुझे तो डरपोक प्रेत के पेड़ के नीचे जाना है।

आवाज : डरपोक प्रेत को डरा-धमकाकर कुछ ऐंठना चाहते हो ?

चौधरी : मैं ऐंठना नहीं चाहता। डरपोक प्रेत तो खुद ही डर कर देता है।

आवाज : तो मु ो, डरपोक प्रेत तुम मे नहीं डरेगा, तुम्हारी रस्सी से भी नहीं।

चौधरी : क्यों ? क्या यह रस्सी मजबूत नहीं है। मेरे लड़के लाए थे, बेचारे...बड़े भोले-भाले हैं। दूकानदार ने गंवार समझकर ठग लिया लगता है।

आवाज : (**हंसकर**) तुम अपने लड़कों को भोला-भाला कह रहे हो। (**हंसता है**)

चौधरी : देखो जी, तुम रस्सी की बात करो, मेरे लड़कों की नहीं।

आवाज : अरे मूर्ख। इस रस्मी को सहयोग की भावना से नही बटा गया है। इसमें आपसी मेल-जोल की कड़ियां नहीं। प्रेत को उन्ही लोगों की रस्सी बांध सकती है जिनके मन मिले हुए हों, जो दूसरों के दुख-सुख की परवाह करते हों, दूसरों की मदद करते हों, दूसरों का हक न मारते हों। मुझे तेरी हालत पर गुस्सा भी आ रहा है और हंसी भी। तू यहां आकर मुझे बांधनें आया

है। तू जो अपने मन को नहीं बांध सका, तू जो अपने लड़कों को काबू में नहीं रख सका, तू मुझे इस रस्सी से काबू में करेगा? (हंसता है)

चौधरी : मुझे माफ कर दो, मुझे क्षमा कर दो, प्रेतजी।

आवाज : प्रेत जी! (हंसता है) एक बार फिर कह, प्रेतजी।

चौधरी : मैं सौ वार कहने को तैयार हूं प्रेतजी, प्रेतजी, प्रेतजी, प्रेतजी...

आवाज : बस, अब मेरे नाम की माला न फेर।

चौधरी : क्षमा...क्षमा।

आवाज : कायर, तू मुझसे क्षमा मांगता है तो जा तुझे माफ किया। जाकर अपने लड़कों को समझा। तेरे लड़के, जिन्हें तत्तैये काट रहे हैं...

चौधरी : क्या कहा, मेरे लड़कों को तत्तैये काट रहे हैं। दोनों बड़े नटखट है, तत्तैयों को छेड़ बैठे होंगे।

आवाज : (हंसकर) अरे मूर्ख, ये तत्तैये और तरह के हैं। नजर न आने वाले तत्तैये। भेदभाव और ऊंच-नीच के जहर का डंक भरे हुए, जिससे आज तक तेरे लड़के दूसरों को काटते रहे हैं।

चौधरी : क्षमा. क्षमा! मैं अपने लड़को छज्जू, नत्थू के लिए क्षमा की भीख मागता हू। अब वो ऐसा कभी नहीं करेंगे। कभी नहीं करेंगे।

प्रेत : अच्छा, तो डरपोक प्रेत तुम सबको क्षमा करता है। अपनी रस्सी और चटाई उठा कर यहां से रफूचक्कर हो जाओ... जाओ नौ-दो ग्यारह हो जाओ...दुम दबा कर भाग जाओ...

[चौधरी भाग जाता है। प्रेत हंसता रहता है।]

पटाक्षेप

जासूसी का शौक

□ राजकमल जौहरी

पात्र

मुन्नी	मन्नू
दीदी	झगड़सिंह
राजेश	भैया

[एक कमरे का भीतरी भाग। दाईं ओर एक मेज रखी है। बाईं ओर पीछे की ओर एक खिड़की खुलती है, जहां पर एक पेड़ दिखाई देता है। इसी ओर बीच में एक चौकी रखी है, जिस पर एक गुड़िया पड़ी है। मुन्नी का प्रवेश]

मुन्नी : अरे, यह गुड़िया को क्या हुआ ? इसके सिर के दो टुकड़े कैसे ? (**रोने लगती है**) ऊं ऊं ऊं...मेरी गुड़िया किसने तोड़ी ?... इसका प्लास्टिक का सिर ऊं ऊं ऊं...

[दीदी का प्रवेश]

दीदी : क्या बात है, मुन्नी रो क्यों रही है ?

मुन्नी : दीदी, ऊं ऊं ऊं...मेरी गुड़िया का किसी ने सिर तोड़ दिया; मेरी गुड़िया का सिर...ऊं ऊं ऊं...

दीदी : देखूं जरा। (**हाथ बढ़ाकर गुड़िया लेती है**) अरे सचमुच, किसी ने इसका सिर तोड़ दिया, बिलकुल बीच से दो टुकड़े कर डाले !

मुन्नी : हां, दीदी...देखो न...ऊं ऊं ऊं...

दीदी : तो अब हमारे सामने सवाल यह है कि इस गुड़िया का सिर किसने तोड़ा ?

मुन्नी : न मालूम किसने तोड़ा...ऊं ऊं ऊं...

दीदी : चुप हो जा, मुन्नी, रो मत, सोचने दे।

मुन्नी : मैं अपनी गुड़िया यहां रखकर चली गई थी। जब लौटी तो इसके दो हिस्से मिले...ऊं ऊं ऊं...

[राजेश का प्रवेश]

राजेश : अरे, यह क्या शोर मचा रखा है ? मुन्नी का यह रेडियो कैसे खुल गया ?

मुन्नी : तुमको तो हर समय हंसी सूझती है...यहां मेरी गुड़िया...

राजेश : क्या हुआ तेरी गुड़िया को ?

दीदी : किसी ने इसका सिर तोड़ दिया !

राजेश : ऐं, सिर तोड़ दिया ! जरूर यह कोई जासूसी का मामला है। अच्छा ठहरो, मैं अपनी एक जासूसी की किताब पढ़कर हत्यारे का पता लगाऊंगा।

दीदी : हां, भैया, जल्दी करना।

राजेश : बहुत जल्दी लो, दीदी, हत्यारा बड़ा चालाक है, कोई भी सूत्र नहीं छोड़ा। **(इधर उधर देखता है)**

मुन्नी : क्या, भैया ?

राजेश : **(जेब से एक किताब निकालते हुए)** मैं जो यह किताब पढ़ रहा हूं न, वह एक जासूसी की किताब है, जिसमें लिखा है—सिर फोड़ने वाला संसार का महानतम अपराधी होता है।

मुन्नी : अच्छा !

राजेश : हां, और तुमको यह विश्वास दिलाता हूं कि हत्यारे का पता बड़ी जल्दी लगा लूंगा।

मुन्नी : ठीक है, भैया, फिर देखना कैसे उसके सिर पर चढ़कर गुड़िया वसूल करती हूं।

राजेश : मुन्नी, जरा यह तो बता, पिताजी कहां गए हैं ?

दीदी : भैया, वह तो थाने चले गए हैं, सुपरिटेंडेंट साहब आए थे, उन्हीं के साथ।

राजेश : अच्छा, दीदी, तब ठीक है। मुन्नी, तू जाकर मेरा एक काम कर।

मुन्नी : क्या ?

राजेश : जा, मन्नू को बुला ला उसके घर से। वह प्राइवेट डिटेक्टिव राजीव कुमार शर्मा यानी मेरा असिस्टेंट यानी सहकारी है। उससे कहना, बास बुलाते है।

मुन्नी : भैया, क्या...बांस ?

राजेश : बांस नही, बास बास !

मुन्नी : अच्छा, भैया अभी लो। **(जाती है)**

राजेश : हां, तो दीदी जरा बताना कि गुड़िया किस स्थिति में थी? तुम लोगों ने उसे छुआ तो नहीं ?

दीदी : नहीं, भैया, वह ऐसे ही पड़ी थी...**(इशारे से दिखाती है)**

राजेश : अच्छा, तो हत्यारा किधर से भागा होगा। **(इधर-उधर देख कर खिड़की की ओर देखता है)** बिलकुल ठीक है। गुड़िया इस ओर पीठ किए बैठी थी। उधर की खिड़की खुली थी।

यह खिड़की बाग की ओर खुलती है। बस हत्यारा खिड़की की ओर से आया होगा। उसके हाथ में एक रूल होना चाहिए। गुड़िया उधर बेखबर होगी और उसने आकर गुड़िया के सिर पर रूल दे मारा होगा और गुड़िया...

दीदी : खतम हो गई होगी, है न ?

राजेश : हां, दीदी, सोच तो ऐसे ही रहा हूं। पर अब...

[मन्नू का प्रवेश]

मन्नू : कहो, भई राजीव, क्या हो गया ?

राजेश : देखो जी, जब कोई केस हुआ करे, तो बास कहा करो।

मन्नू : **(सलाम ठोंकते हुए)** ओ० के० बास !

राजेश : भई, बात यह है कि कुमारी मधु की गुड़िया की किसी ने सिर फोड़कर हत्या कर दी; अपराधी का पता लगाना है।

मन्नू : क्या...यानी मधु की गुड़िया...यानी उसकी हत्या...वह मर गई यानी...

राजेश : हां, हां, यानी के सगे, तुम जाकर दीदी तथा मधु के बयान लिखो, तब तक मैं सूत्र खोजता हूं।

मन्नू : यानी मैं...बयान लूं...यानी अच्छा...**(जाता है)**

राजेश : **(सोचता हुआ)** हां, तो वह खिड़की में से कूदा...बाहर बगीचे की क्यारी सटी हुई है...तब तो जरूर उसके पैरों के निशान वहां होने चाहिए **(खिड़की में से झांककर)** मिल गया...मिल गया, मन्नू, जल्दी आ !

मन्नू : क्या है...यानी...

राजेश : अरे, भाई, उधर देख...जमीन पर दो पैरों के निशान कितने बड़े बड़े...हां हां...

मन्नू : यानी ये तो सचमुच आदमी जितने हैं ! यानी फिर ?

राजेश : जा जल्दी से उनकी नाप ले आ। बस, अब तो चुटकी मे... **(चुटकी बजाता हुआ खिड़की से कूद जाता है)**

मन्नू : **(सिर उठाकर)** अरे बास, देखना यहां एक पैमाना और खाकी कपड़ों का टुकड़ा और है...

राजेश : हां है, तू लेकर जल्दी ऊपर आ।

मन्नू : तो यह तय हुआ कि वह आदमी खाकी कपड़े पहने था।

मुन्नी : भैया, अपने घर वह सिपाही यूं मूंछों वाला जो आता है न, मुझे तो उस पर...

राजेश : हां, मुन्नी, तूने याद तो अच्छी दिलाई। अच्छा अच्छा, वह

भैया के साथ अभी आता होगा।

मुन्नी : **(बाहर झांककर)** भैया के साथ वह आ रहा है।

राजेश : मन्नू, तैयार हो जा। अपनी पिस्तौल निकाल ले, मैं अपनी निकालता हूं।

[दोनों जेब से खिलौने वाली पिस्तौल निकालते हैं। भैया तथा सिपाही का प्रवेश।]

राजेश : **(कड़ककर)** खबरदार, झगड़ूसिंह, अपने हाथ ऊपर उठा लो, वरना...

झगड़ूसिंह : ओय होय ! आज तो भैयाजी की नक्कल करते दीक्खै हैं !

मन्नू : यह मजाक नहीं है, हाथ ऊपर उठा लो...तुम यानी हत्यारे हो...यानी

झगड़ूसिंह : वाह वाह प्यारे, भैयाजी ऐस्सै ही कहा करै हैं, जब्ब कोई कत्ल का केस हो जावै है...

राजेश : तुम ऐसे नही मानोगे, तो मैं गोली मार दूंगा...एक दो...

भैया : बात क्या है, राजीव, क्यों बेचारे को तंग कर रहे हो, अगर पापा ने सुन लिया, तो...

राजेश : पर भैया, इसने सचमुच गुड़िया की हत्या की है, उसका सिर फोड़ दिया।

भैया : किसका, प्लास्टिक की गुड़िया का ?

राजेश : हां, भैया !

भैया : अरे पागलो, आओ तुमको तमाशा दिखाऊं। देखो, इस गुड़िया का सिर किसी ने फोड़ा नहीं है बल्कि गर्मी के कारण इसका चिपकना पदार्थ पिघल गया है और इसके सिर के दोनों हिस्से अलग हो गए।

मन्नू : यानी...यानी...

भैया : हां, किसी ने इसका सिर नही फोड़ा। वाह रे जासूस, अच्छा तमाशा किया। जासूसी किताबें पढ़ते पढ़ते तुम बिलकुल मूर्ख हो गए हो।

मुन्नी : ही ही ही ही...भैया, जासूसी करेंगे, जरा सूरत तो देखो, ही ही ही ही...**(भागती है)**

राजेश : ठहर तो जा, मरी...**(पीछे भागता है, पीछे पीछे मन्नू भी भाग जाता है। सिपाही और भैया हंसते हैं)**

पर्दा गिरता है

(१९६२)

झगड़ालू लड़का

□ श्रीकृष्ण

पात्र

जज	:	
चपरासी	:	
वकील	:	सरकारी वकील
सुशील	:	झगड़ालू लड़का
दीपक	:	सुशील का सहपाठी
नरेंद्र	:	सुशील का सहपाठी
मंजु	:	सुशील की छोटी बहन
आभा	:	मंजु की सहेली

अन्य कुछ बच्चे

[अदालत में जमा हुए बच्चों का शोर धीरे धीरे तेज होता है।]

एक आवाज : आज तो झगड़ालू लड़के का मुकदमा है।

दूसरी आवाज : देखो तो बाहर खड़ा खड़ा कैसा घूर रहा है!

पहली आवाज : आओ, चलें, उसे देखें।

दूसरी आवाज : नहीं यार, मुझे तो डर लगता है। कहीं झगड़ा ही कर बैठे!

जज : (**मेज पर हथौड़ा मारते हुए**) आर्डर! आर्डर!! (**शोर कम हो जाता है**) झगड़ालू लड़के को हाजिर करो!

चपरासी : सुशीलकुमार हाजिर है? सुशीलकुमार!

सुशील : अरे, क्यों गला फाड़ रहा है? दिखाई नहीं देता, हम यहां खड़े हैं!

चपरासी : तुम वाकई झगड़ालू हो। इधर आओ। हां, इस कटघरे में खड़े हो जाओ।

सुशील : खड़ा हो जाता हूं, पर यहां पंखे की हवा कुछ कम आती है।

वकील : जो तुमसे पूछा जाए, सिर्फ उसी बात का जवाब दो। जानते हो, यह अदालत है।

सुशील : जी हां, अदालत ही समझकर यहां आया हूं।

चपरासी : कसम खाओ कि जो कहोगे, ठीक ठीक कहोगे।

सुशील : तुम्हारी कसम, जो कहूंगा, ठीक ठीक कहूंगा।

[लोगों के हंसने की आवाज]

चपरासी : मेरी कसम क्यों खाते हो ?

सुशील : तो फिर कसम मैं खा लेता हूं, चाहे तुम जिसका नाम ले दो।

वकील : समय बरबाद मत करो। गंगाजी की कसम खाकर कहो कि मैं जो कुछ कहूंगा, ठीक ठीक कहूंगा।

सुशील : गंगाजी की कसम, मैं जो कहूंगा, ठीक ठीक कहूंगा।

जज : (सुशील से) तुम्हारा नाम ?

सुशील : सुशीलकुमार।

जज : हरकतों से तो तुम सुशील नहीं लगते। तुम्हारा नाम तो झगड़ू होना चाहिए था।

सुशील : जी, बचपन का मेरा यही नाम है।

जज : बाप का नाम ?

सुशील : बाप तक जाने की जरूरत नहीं है, हुजूर !

वकील : माई लार्ड ! यह बहुत झगड़ालू और नटखट है। इसकी शैतानियों का कहां तक बयान करूं ? कितनों के ही इसने सिर फोड़े, कितनों को ही टांग में टांग उलझा कर गिरा दिया। किसी की निब तोड़ी, किसी की कापी पर स्याही बिखेरी। दूसरों की किताबों पर अपना नाम लिख देना इसके लिए मामूली सी बात है। मैं इस पर अपने संगी-साथियों को तंग करने का आरोप लगाता हूं। माई लार्ड ! किसी को पढ़ने का शौक होता है, किसी को खेलने का, किसी को पतंग उड़ाने का किसी को तसवीर बनाने का। इन जनाब को शौक है लड़ने का, झगड़ा करने का। दिन में जब तक गिन कर दस-पांच लड़कों से यह झगड़ नहीं लेता, इसका खाना हजम नहीं होता।

सुशील : यह झूठ है ! खाना हजम करने के लिए तो मैं पिताजी की जेब में से रोज चूरन की गोलियां निकालकर खाता हूं। असल में मैं किसी से नहीं झगड़ता। सब मुझसे झगड़ते हैं।

जज : लेकिन वे तुमसे ही क्यों झगड़ते हैं ?

सुशील : मैं क्या जानूं ?

वकील : माई लार्ड, अब मैं गवाह पेश करता हूं जिनसे यह झगड़ा है। मेरा पहला गवाह है दीपक।

चपरासी : दीपक हाजिर है ?

दीपक : हाजिर हूं, श्रीमान।

जज : तुम इस लड़के को जानते हो ?

दीपक : जी, सारे स्कूल में इसे कौन नहीं जानता ? इसका रिकार्ड है हुजूर, स्कूल में कोई लड़का ऐसा नहीं जिससे यह नहीं लड़ा।

जज : तुम्हारे साथ इसका झगड़ा किस बात पर हुआ ?

दीपक : जी, परसों की बात है...इसने मेरी पैंट पर स्याही छिड़क दी और फिर मारपीट भी की। हुजूर, थप्पड़ का निशान अभी तक मेरे गाल पर मौजूद है।

सुशील : तो तूने मुझे चोर क्यों कहा ?

जज : आर्डर ! आर्डर !! दूसरा गवाह बुलाया जाए।

वकील : मेरा दूसरा गवाह है नरेंद्र।

चपरासी : नरेंद्र हाजिर है ?

नरेंद्र : मैं उपस्थित हूं, जी।

जज : तुम इस लड़के को कितने अरसे से जानते हो ?

नरेंद्र : जी, यह और मैं एक ही क्लास में पढ़ते हैं ? रहते भी एक ही मुहल्ले में हैं।

जज : तुम कैसे कह सकते हो कि यह लड़का झगड़ालू है ?

नरेंद्र : ज़ी...जी...

जज : जी, जी, क्या ? बोलो...

नरेंद्र : जी, मुझे डर लगता है। यह बाहर निकलकर मारेगा।

वकील : माई लार्ड ! देख लीजिए, इसी से साबित होता है कि यह झगड़ालू है। शरीफ लड़के इससे डरते हैं।

जज : नहीं, नहीं, तुम बिलकुल मत डरो। जो कहना है, बेफिक्र होकर कहो।

नरेंद्र : जी, यह सबसे झगड़ता है।

जज : तुमसे भी कभी इसका झगड़ा हुआ है ?

नरेंद्र : जी, कई बार।

जज : झगड़ा तो तुम दोनों के बीच ही हुआ। मतलब यह कि जितनी बार यह तुमसे झगड़ा, उतनी ही बार तुम भी इससे झगड़े। फिर तो तुम भी झगड़ालू हुए।

नरेंद्र : जी नहीं, मैं झगड़ालू नहीं हूं। मेरा कभी किसी से झगड़ा नहीं होता। यही मुझसे झगड़ता है।

जज : कोई घटना बयान करो जिससे साबित हो कि झगड़ा यही शुरू करता है।

नरेंद्र : जी, एक दिन की बात है। मैं इसकी सीट पर बैठ गया। बस इसने मुझसे खूब झगड़ा किया और जज साहब, इसने मेरी नई

कमीज भी फाड़ी थी।

सुशील : तो तू उठा क्यों नहीं सीट से ?

नरेंद्र : क्यों उठता ? मैं तो अपनी सीट पर बैठा था।

जज : आर्डर ! आर्डर !! आपस में मत लड़ो। अगला गवाह।

वकील : माई लार्ड ! अपने तीसरे गवाह के रूप में अब मैं मंजु रानी को हाजिर करता हूं।

मंजु : मैं हाजिर हूं, सर। जज साहब, देखिए यह मेरी ओर आंखें निकाल रहा है। इसका मुंह दूसरी ओर करा दीजिए, सर।

जज : तुम उसकी तरफ देखो ही नहीं और जो हम पूछें, सिर्फ उसका जवाब दो। हां, तो तुम इसे कब से जानती हो ?

मंजु : जब से पैदा हुई, सर।

वकील : माई लार्ड, मंजु रानी मुलजिम की छोटी बहन है।

जज : क्या तुमसे भी कभी इसने झगड़ा किया है।

मंजु : सर, यह पूछिए कि किस दिन झगड़ा नहीं किया ? रोज ही तो झगड़ता है।

सुशील : क्यों री मंजु की बच्ची, बोल कब झगड़ा मैं तुझसे ? झूठ बोलती है ! घर चल, न चुटिया पकड़ कर खींची तो मेरा नाम नहीं।

जज : (**हथौड़ा बजाकर**) आर्डर ! आर्डर !! तुम बीच में क्यों बोलते हो ? उसे कहने दो ? (**मंजु से**) तुम अपना बयान जारी रखो।

मंजु : सर, उसी दिन की बात है। मैं अपनी सहेलियों के साथ कैरम खेल रही थी कि यह आ गया और मेरी सहेलियों के साथ कैरम खेलने की जिद करने लगा। इसके झगड़े से परेशान होकर हमें खेल बंद करना पड़ा।

जज : कुछ और भी कहना है तुम्हें ?

मंजु : सर, मुझे और इसे रोज दस दस पैसे मिलते हैं, खाने के लिए। यह तो अपने पैसों की चीज लेकर चुपके से खा जाता है, हवा भी नहीं लगने देता। लेकिन जब मैं अपने पैसों की चीज लेती हूं तब मेरी चीज में से भी जबरदस्ती हिस्सा बंटाता है। नहीं देती, तो लड़ता-झगड़ता है।

सुशील : हुजूर, मैं इस आरोप का डटकर विरोध करता हूं। क्या खूब ! मेरी चीज जो देवीजी हजम किए बैठी हैं, उसका तो कहीं जिक्र ही नहीं। अपनी चीज को गा दिया।

मंजु . एक दिन दो मूंगफली क्या दे दीं, बदले में दो महीने से मेरी चीज में से हिस्सा बंटा रहा है।

जज : बस, बस, हम सब कुछ समझ गए। अब तुम जा सकती हो।

मंजु : धन्यवाद, जज साहब।

वकील : माई लार्ड ! मैं समझता हूं इतने ही गवाह काफी हैं। चावलों में से दो-चार दाने ही देखे जाते हैं।

जज : (सुशील से) तुम्हारा भी कोई गवाह है ?

सुशील : जी नहीं।

वकील : माई लार्ड ! इसके झगड़ालू होने का एक यह भी सबूत है कि इसके हक में गवाही देने के लिए कोई लड़का तैयार नहीं हुआ। गवाही कोई दे भी क्यों ? सभी से तो यह लड़-झगड़ चुका है। माई लार्ड ! अभी आपके सामने तीन गवाह पेश हुए। तीनों ने इस बात का सबूत दिया कि यह लड़का झगड़ालू है। उनमें एक गवाह इसके मुहल्ले का था, दूसरा इसका सहपाठी था और तीसरी गवाह थी इसकी छोटी बहन। इससे साफ जाहिर होता है कि यह अपने मुहल्ले में, स्कूल में और घर में, हर जगह झगड़ा करता है। इसलिए मैं अदालत से प्रार्थना करूंगा कि वह इस लड़के को कठोर से कठोर दंड दे ताकि यह फिर किसी से लड़ने-झगड़ने की हिम्मत न कर सके और पढ़ाई में दिल लगाए। शुक्रिया, माई लार्ड !

जज : (मेज पर हथौड़ा मारकर) आर्डर ! आर्डर !! हमने तीनों गवाहों के बयान सुने। सब सुनकर हम इस परिणाम पर पहुंचे कि सुशीलकुमार पर जो आरोप लगाया गया है, वह सही है। लेकिन किसी जुल्म-जुर्म के सिलसिले में अदालत में आने का यह इसका पहला मौका है। इसलिए इसके साथ रियायत बरतते हुए, हम इसे कोई शारीरिक दंड न देकर एक अनोखी सजा देंगे। स्कूल के नोटिस बोर्ड पर एक मरखने बैल का कार्टून बनाकर लगाया जाएगा जिसका चेहरा तो सुशील का होगा, लेकिन धड़ बैल का। उस कार्टून के नीचे लिखा जाएगा—'यह मरखना बैल है। इससे बचकर चलो।'

[बच्चों का प्रसन्नतासूचक शोर उभरता है। नारे लगते हैं—'बच्चों की अदालत जिंदाबाद,' 'जज साहब जिंदाबाद।']

(१९६३)

सोने का हंस

□ नारायण 'भक्त'

पात्र

राजा	युवक
राजकुमारी	जादूगर
दूत	पृष्ठभूमि से आवाज

पहला दृश्य

राजकुमारी : **(स्वप्न में)** अहा, कितना मनोरम स्थान है यह ! कितना मोहक ! कितना लुभावना ! रंग-बिरंगे फूल, फल, पत्ते और पेड़। कितना सुख मिलता है ! यह सरोवर कितना अच्छा है ! कितना आनंदप्रद ! कमल के फूल। किंतु ये फूल और कमल फूलों की तरह नहीं। कमल के नीले फूल। सचमुच स्वर्ग है यह ! नील कमल। और ये हंस ? हंसों की टोली तालाब में तैरती हुई कितनी भली लग रही है ! और यह क्या ? यह कौन सा पक्षी है ? विचित्र ! अंग-प्रत्यंग पीले, सुनहरे। यह भी तो हंस ही है। लेकिन और हंसों जैसा नहीं। यह तो सोने का हंस है। कितना अच्छा है। जी करता है, इसे देखती रहूं। **(एक आदमी के आने की आवाज)** यह कैसी आवाज ? यह तो आदमी है। इस जगह मनुष्य कैसे आया ? अरे, यह तो कोई राजकुमार है ? किंतु यह यहां कैसे ? हंसों की ओर क्यों बढ़ रहा है यह ? राजकुमार ! मत पकड़ो। सोने का हंस तुम्हें मैं नहीं लेने दूंगी। मेरा हंस है। मेरा सुंदर हंस। **(उस आदमी के भागने की आवाज)** तुम भागे ! राजकुमार, मत भागो **(जोर से)** राजकुमार। हंस। सोने का हंस।

राजा : **(दूर से)** बेटी ! क्या है ?

राजकुमारी : **(जागकर)** अरे ! यह क्या ? मैं कहां हूं ? यह तो मेरा महल ही है। मेरा घर। और वह जगह कहां गई ? तालाब कहां है ? राजकुमार और मेरा सोने का हंस ? राजकुमार कहां हैं ?

राजा : बेटी ! क्या कह रही हो ? तुम इस प्रकार मुझे क्यों देख रही

हो ? कौन राजकुमार ? कौन हंस ?

राजकुमारी : तुम । तुम कौन ? मैं तो राजकुमार को खोजती हूं । सोने के हंस को चाहती हूं ।

राजा : बेटी ! क्या कह रही हो ? तुम जाग गई हो । अभी सोई थीं तुम । क्या तुमने स्वप्न देखा है ? स्वप्न में किसी हंस को देखा है ? किसी राजकुमार को देखा है ?

राजकुमारी : पिताजी ! तो स्वप्न में ही थी मैं ? कितना अच्छा सोने का हंस था । पिताजी, मेरा हंस दीजिए । सोने का हंस । राजकुमार । हंस । (जोर से) सोने का हंस, सोने का हंस ।

राजा : यह क्या हुआ, कुछ समझ में नहीं आता । कैसा स्वप्न देखा है इसने ? सोने का हंस देखा है ? अच्छा बेटी, उठो । धीरज धरो । मैं अभी सोने का हंस मंगवाता हूं । उठो तो तुम । लेकिन मिलेगा कहां सोने का हंस ? बेटी, उठो भी तो । होश करो । अभी दूतों को भेजता हूं ।

दूसरा दृश्य

युवक : (पहाड़ काटने की आवाज) काम करने वाले को कौन रोक सकता है । मैं मनुष्य हूं । भाग्य पर क्यों टिका रहूं । काम करूंगा और आगे बढ़ूंगा ।

दूत : तुम कौन हो युवक ? इस तरह पहाड़ को क्यों काट रहे हो ?

युवक : और तुम कौन हो ?

दूत : मैं तो राजा का दूत हूं ।

युवक : कौन राजा ?

दूत : जो इस पहाड़ का भी मालिक है । बताओ, तुम कौन हो । देखने में इतने कोमल हो और पहाड़ काटने चले हो ?

युवक : लेकिन तुम यह जानकर क्या करोगे ?

दूत : बताओ भी तो, तुम कौन हो । तुम्हारे जैसे बहादुर आदमी की जरूरत है मुझे ।

युवक : भई ! मैं कर्म पर विश्वास करने वाला आदमी हूं । परिवार के लोगों ने मुझे निकाल दिया है । इसी से मैं भटकता फिर रहा हूं । मैं अपने भविष्य को बनाने चला हूं । और आगे बढ़ता चला जाऊंगा । कर्म पर मुझे विश्वास है । परिश्रम पर मुझे पूरा भरोसा है ।

दूत : मैं बहुत खुश हूं युवक। तुम चाहो तो स्वर्ग को भी पृथ्वी पर ला सकते हो। तुम्हारे सामने संसार की सभी शक्ति सिर झुकाएंगी।

युवक : और तुम क्या खोज रहे हो ?

दूत : युवक ! मुझे तो सब कुछ मिल गया। तुम मिले तो सब मिला।

युवक : इसका मतलब ?

दूत : मेरे राजा की लड़की ने एक स्वप्न देखा है। उसने स्वप्न में सोने के हंस को खेलते देखा है। अब वह बेचैन है उस सोने के हंस के लिए।

युवक : सोने का हंस ? वह कैसा होगा ?

त : राजकुमारी की बात है। सोने का हंस नहीं मिलने पर हो सकता है, राजकुमारी न बचें। इसलिए राजा ने घोषणा कर दी है कि जो कोई सोने का हंस लाएगा उसे मैं अपने राज्य का आधा हिस्सा दूंगा।

युवक : वाह ! अच्छी घोषणा है। लेकिन हंस मिलेगा कहां ?

दूत : वही तो नहीं मालूम। लेकिन तुम युवक हो। कर्मठ हो। तुम इसे खोजो, शायद पा सको।

युवक : अच्छा। शायद मिल जाए। मैं अभी से सोने के हंस की खोज में निकलता हूं।

तीसरा दृश्य

राजकुमारी : पिताजी ! हंस आ गया ? सोने का हंस आया ?

राजा : बेटी ! धैर्य धरो। मैंने सारे राज्य में ऐलान करा दिया है कि जो कोई हंस लाकर देगा, उसे राज्य का आधा हिस्सा मिलेगा।

राजकुमारी : लेकिन सोने का हंस ?

राजा : हां बेटी ! सोने का हंस। तुम शांत रहो। तुम्हें हंस मिलेगा।

राजकुमारी : सोने का हंस ?

राजा : हां, सोने का हंस। लेकिन बेटी, तुम उठो भी तो। खाना-पीना छोड़ने से क्या होगा ? उठो, खा लो।

राजकुमारी : पिताजी ! कितना अच्छा हंस था ! कितना सुंदर था ! और राजकुमार !!

राजा : बेटी ! तुम शांत रहो। सब ठीक हो जाएगा। सोने का हंस भी मिल जाएगा और तुम अच्छी भी हो जाओगी।

राजकुमारी : लेकिन कैसे मिलेगा हंस ?

राजा : मिलेगा बेटी ! दुनिया में ऐसी कौन सी चीज है, जो न मिले। बेटी, तुम आराम करो। तबीयत भी खराब हो रही है तुम्हारी ! क्या होगा ? क्या करूं ? भगवन ! बेटी अच्छी हो जाए !

राजकुमारी : और हंस पिताजी, सोने का हंस ! सोने का हंस...

चौथा दृश्य

[एक विचित्र सनसनाहट की आवाज]

युवक : अरे, यह आवाज कैसी है। हवा भी तो नहीं है। फिर ऐसी आवाज ! यह तो किसी आदमी की आवाज है।

आवाज : मैं युगों से इसमें बंद हूं। मुझे निकालो। मुझे निकालने वाले का भला होगा। मुंहमांगा वरदान पाएगा। निकालो मुझे।

युवक : अरे, यह आवाज ! लेकिन यहां तो कोई नहीं है। यहां तो एक पंछी भी नहीं मालूम पड़ता, लेकिन मनुष्य की आवाज कैसी ?

आवाज : मैं इसी पत्थर की मूर्ति में हूं। मुझे निकालो। इसे तोड़ दो। तोड़ दो।

युवक : ओह। यह मूर्ति है। मूर्ति के भीतर की आवाज है। लेकिन यह कैसे ? यह तो विचित्र बात है। खैर, क्या करना है। परोपकार करना ही मनुष्य का काम है। (**मूर्ति तोड़ने लगता है. तोड़ने की आवाज**) लेकिन बनी है कितनी मजबूत यह मूर्ति ! (**थकता है**) ओफ, कैसे टूटेगी ?

आवाज : वाह पुत्र ! तुम विजयी होगे, तोड़ने चलो। अब तुरंत निकल जाऊंगा।

युवक : (**तोड़ता है**) ओफ ! कितना कड़ा पत्थर है ! मूर्ति बड़ी है ! अच्छा तोड़कर ही रहूंगा। (**एक गर्जन**) मूर्ति टूट गई। वाह !

आवाज : क्या चाहते हो युवक ? मैं प्रसन्न हूं। तुम क्या चाहते हो, बताओ। वरदान में क्या दूं ?

युवक : आप खुश हैं तो मुझे सोने का हंस दीजिए।

आवाज : (**ठहाका लगाकर**) ह हा ह हा। सोने का हंस ! नहीं मिलेगा

सोने का हंस। जानते हो, मैं भी सोने का हंस लाने चला था लेकिन जादूगर ने मुझे पत्थर बना दिया।

युवक : कब की बात है?

आवाज : आज से पांच सौ वर्ष पहले की। और तब से बेटा! मैं इसी मूर्ति में पड़ा था। यों ही सदा रटता रहा—निकालो, निकालो। लेकिन आज के पहले तक यहां कोई न आ सका था।

युवक : तो सोने का हंस नहीं मिलेगा?

आवाज : तुम पा सकोगे अवश्य। लेकिन परिश्रम करने की जरूरत है। जल्दी जाओ। जादू की नगरी में सोने का हंस है। जा सकोगे?

युवक : अवश्य। मैं जाऊंगा! अवश्य जाऊंगा।

आवाज : जाओ बेटा! लेकिन संभलकर जाओ। लो यह वंशी। जहां कहीं भय लगे, वहां वंशी फूंकना।

युवक : अच्छा, अब मैं चला आगे।

आवाज : लेकिन वंशी दो बार कभी न फूंकना।

युवक : अच्छा, अब चला मैं।

[एक भारी और विचित्र आवाज]

युवक : यह क्या? आवाज कैसी? यहां तो कोई आदमी नहीं। फूल-पत्ते भी नहीं। मैं कहां चला आया? जंगलों, पहाड़ों का पता नहीं। लेकिन यह क्या? यह कौन सा जीव है? मुंह फैलाए खड़ा है। अरे! यह तो निगल जाएगा मुझे। (भारी आवाज) ओफ, यह क्या? यह कैसी आवाज! मैं किसके मुंह में चला जा रहा हूं! यह तो जानवर है। लेकिन मुंह आदमी का सा है। दांत बड़े बड़े और जीभ इतनी लंबी! आंखें ओफ, ओफ अब क्या करूं? ओ हां, वंशी (**वंशी की दो फूंक आवाज**) चारों ओर सन्नाटा छा गया। जानवर भाग गए। वाह! अब क्या डर है। लेकिन यह क्या? आग कैसी लग गई? आग की चिनगारी कैसी आ रही हैं। (**चारों ओर से राक्षसों की आवाज**) यह तो और भी डरावना दृश्य है। क्या होगा अब? आग में जलना होगा? क्या करूं? कहां भागूं? वंशी तो फूंकी, लेकिन कहां कुछ हुआ? ओफ! अरे...यह क्या? पृथ्वी धंसी जा रही है। यह द्वार कैसा खुला! पृथ्वी में द्वार! मैं समाता चला जा रहा हूं, नीचे जा रहा हूं। बचाओ, बचाओ, बचाओ।

पांचवां दृश्य

जादूगर : तुम कहां आए हो ? यह तो जादू का देश है।

युवक : भूल हुई ! मुझे क्या पता था। माफ करो।

जादूगर : माफ नहीं करता। देवी के सामने तुम्हारी बलि दी जाएगी। सुंदर आदमी का मांस। देवी खुश होगी। ह हा ह हा।

युवक : इससे क्या होगा ? तुम कौन हो ?

जादूगर : मैं, मैं जादूगर हूं। यहां का मालिक, यहां का राजा। चलो दूत, चलो। (**विचित्र आवाज**)

युवक : यहां क्या करेंगे आप ? मैं चला जाता हूं। मुझे बचा लो।

जादूगर : इसे बलि दो। देवी के सामने आज मैं प्रसाद चढ़ाऊंगा। तलवार कहां है ? ओ, यह है। तुम ठीक तरह बैठो। इस प्रकार बैठो। देवी के सामने बैठो। लो, यह फूल-माला पहनो। आंखें मूंद लो। संभल जाओ। एक-दो, ठीक रहो। हिलो-डुलो नहीं। एक दो, एक दो (**विचित्र आवाज**)। तलवार तो ठीक है। अच्छा, एक दो(**वंशी की एक आवाज**)एक दो तीन। अरे ! युवक कहां चला गया ! तलवार कहां गई ? यह हुआ क्या ?

युवक : बच गया। ओह ! कितनी खुशी की बात है। बलि होने से बचा। लेकिन हंस कहां मिला ? खुशी है (**वंशी की दो फूंक**) अरे फिर क्या हुआ। (**विचित्र आवाज**) ये सब कौन आ गए ? चारों ओर से राक्षसों का दल। नुकीले भालों के साथ ! इधर भी, उधर भी ! अरे क्या ? हवा तक नहीं बह सकती यहां। अब क्या होगा ? तुम लोग हटो, भागो। मैं चला जाता हूं। चला मैं। (**आवाज**) मुझे मत ले जाओ। कहां लिए जा रहे हो ? मैं नहीं जाऊंगा। अरे कुएं में डालोगे ? क्यों ? यह कैसा कुआं है ? अरे, तुम लोगों ने गिरा दिया।

आवाज : तुम कौन हो ?

युवक : मैं आदमी हूं।

आवाज : क्या चाहते हो ? कहां से आए हो ?

युवक : मैं सोने का हंस लूंगा। मुझे सोने का हंस चाहिए।

आवाज : हंस ? ले जा सकोगे ? तुम्हें परिश्रम करना पड़ेगा। जानते हो, क्या करना होगा ?

युवक : बतलाइए, क्या करना होगा।

आवाज : हाथ-पैर, नाक सभी काटने होंगे और जानते हो, कलेजा निकाल कर देना होगा हंसों के राजा को। तब मिलेगा हंस।

युवक : अच्छा तो मैं तैयार हूं।

आवाज : तो जाओ इस रास्ते।

युवक : यह रास्ता तो विकट है। इतने कीड़े-मकोड़े। अरे अब कहां चला आया ! यह तो हंसों की बस्ती है ! लाखों हंस। कितने भोले हैं ये हंस ! यह सरोवर है। ये सभी हंस हैं !

[एक विचित्र आवाज होती है]

आवाज : तैयार हो ?

युवक : जी हां !

आवाज : इधर आओ। हाथ दो।

युवक : काट लो तुम।

आवाज : मैं तुम्हारी परीक्षा ले रहा था कि तुम बहादुर हो या नहीं। ठीक है। अब जाओ वहां।

युवक : बहुत अच्छा है यह देश ! कितनी अच्छी चीजें हैं। हंसों की टोली।

आवाज : पकड़ लो उस हंस को, सोने के हंस को और चले जाओ उसी पर बैठकर। मत बोलो कुछ।

युवक : (**हंस को पकड़ता है**) इसी पर बैठ जाऊं ? अच्छा, चलो हंस ! सोने के मेरे हंस ! चलो।

अन्य आवाज : कौन ?

युवक : मैं हूं !

वही आवाज : मिला हंस ?

युवक : मिला सोने का हंस।

वही आवाज : वंशी दो।

युवक : लीजिए वंशी।

वही आवाज : जाओ। अब जाओ तुम।

छठा दृश्य

राजकुमारी सोने का हंस ! हंसकुमार !

राजा बेटी, धैर्य रखो। मिलेगा हंस। अभी शांत रहो।

राजकुमारी पिताजी ! अभी तक नही मंगवाया आपने ?

राजा बेटी, सभी दूत गए हैं। अभी आते होंगे।

दूत महाराज ! महाराज ! सोने का हंस !

राजा भीतर आओ ! क्या बात है ?

दूत : एक युवक हंस लेकर आया है।

राजा : उसे भीतर आने दो।

राजकुमारी : हंस पिताजी ! सोने का हंस !

राजा : आ गया बेटी ! हंस आ गया।

राजकुमारी : सच पिताजी !

राजा : सच। देखो, वह है हंस।

राजकुमारी : पिताजी, यही हंस है। यही मेरा हंस है और राजकुमार भी तो वही है। राजकुमार ! हंस दो मुझे। तुम वही राजकुमार हो न ?

युवक : कौन ?

राजकुमारी : उस दिन वाले ? हंस लेकर भागे थे तुम।

युवक : नहीं तो। मैं तो एक युवक हूं। मैं कहां कभी था—

राजा : बेटा !तुमने बड़ा उपकार किया। धन्य हो तुम। मेरी बेटी जी उठी। तुम यहीं रहो।

राजकुमारी : पिताजी ! यही राजकुमार हैं। सोने का हंस ! राजकुमार।

युवक : अब मैं चला।

राजा : नहीं। अब कहां जा रहे हो ? तुमने मेरी बेटी की जान बचाई है ! सोने का हंस·लाकर दिया है। अब तुम मेरे राज्य के आधे के हिस्सेदार हो।

युवक : लेकिन मुझे यह सब नहीं चाहिए।

राजा : आज से तुम और राजकुमारी साथ साथ रहोगे।

युवक : लेकिन मैं एक साधारण आदमी की तरह रहना चाहता हूं।

राजकुमारी : मुझे मंजूर है, युवक...तुम्हारे साहस और त्याग के सामने मैं राजमहल तक छोड़ सकती हूं...(**शहनाई का स्वर उभरता है।**)

पर्दा गिरता है

पुस्तकालय

□ श्रीकृष्ण

पात्र

दीपक	:	एक शरारती लड़का
दीपा	:	दीपक की छोटी बहन
चाचा	:	दीपक और दीपा का चाचा
रमेश	:	दीपक के मोहल्ले का ही एक लड़का
विनोद	:	दीपक का साथी
प्रकाश	:	दीपा की सहेली का भाई

पुस्तकालय-अध्यक्ष तथा अन्य बहुत से लड़के-लड़कियां

दीपक : दीपा ! दीपा !!

दीपा : (**दूर का स्वर**) क्या है ?

दीपक : अरी, कहां हैं तू ? इधर तो आ। देख, मैं क्या लाया हूं ?

दीपा : (**निकट आता स्वर**) क्या है ? ओह, कितनी सुंदर तसवीर ! कहां से आई ? क्या चाचा लाए ?

दीपक : हूं ! चाचा लाकर देते भी हैं क्या !

दीपा : मुझे भी ला दे।

दीपक : तुझे कहां से ला दूं ? एक ही थी, सो मैं ले आया।

दीपा : मैं नहीं जानती। मुझे भी लाकर दे, नहीं मैं तेरी तसवीर ले लूंगी।

दीपक : जा, जा, बड़ी आई लेने वाली ! तेरे तो फरिश्तों को भी पता नहीं लगेगा कि मैंने कहां छिपाई है तसवीर ?

दीपा : दे, नहीं तो चाचा से तेरी झूठमूठ शिकायत कर दूंगी।

दीपक : जा जा, एक तेरे ही मुंह में जबान है, मैं तो जैसे गूंगा हूं।

दीपा : मैं चाचा से कहूंगी कि तूने किसी की तसवीर चुरा ली है और इसलिए तुझे सजा मिलनी चाहिए। पता है, चाचा को चोरी से कितनी सख्त चिढ़ है !

दीपक : तो धौंस किसे देती है ? एक बार नहीं सौ बार कह दे, हजार बार कह दे। मैं कोई डरता हूं ! जब मैंने चोरी की ही नहीं, तो चाचा मेरा क्या बिगाड़ लेंगे ?

दीपा तो फिर बताता क्यों नहीं, तू कहां से लाया है तसवीर ?

दीपक नहीं बताता। तू कोई मेरी मास्टर है या चाचाजी है ?...अरी, छोड़ ! छोड़ तसवीर ! नहीं छोड़ेगी...!

दीपा हां, नहीं छोड़ूंगी ! क्या कर लेगा तू मेरा ?

दीपक बताऊं...छोड़ ! मैं कहता हूं, फट जाएगी तसवीर। छोड़... छोड़...चाचा, देख लो, यह दीपा की बच्ची नहीं मानती।

चाचा (निकट आता स्वर) तुम दोनों भाई-बहन में कभी बनती भी है ! जब देखो, लड़ते-झगड़ते रहते हो। बोलो, क्यों झगड़ रहे थे ?

दीपा चाचा, दीपक मुझे तसवीर नहीं देता।

चाचा दीपक, तसवीर दे उसकी।

दीपक लेकिन तसवीर तो मेरी है।

चाचा तू कहां से लाया है ?

दीपा मैं बताऊं चाचा, इसने चोरी की है।

चाचा तुझसे किसने पूछा है ? तू चुप कर। दीपक, सुना नहीं, मैं क्या पूछ रहा हूं ?

दीपक मैं तो पुस्तकालय से लाया हूं।

चाचा पुस्तकालय से ?

दीपक हां, किताब में से फाड़कर।

चाचा फाड़कर ?

दीपक हां, बहुत बढ़िया तसवीर है न, चाचा !...फाड़ लाया।

चाचा फाड़ लाया ! पुस्तकालय अध्यक्ष देख लेता तो कान पकड़कर बाहर निकाल देता, समझा।

दीपक जब उसका मुंह दूसरी ओर था, तभी मैंने फाड़ी।

चाचा बड़ा नाम ऊंचा किया ! शर्म नहीं आती ! यही सब लिखता-पढ़ता है क्या ? हजार बार कहा है कि भले बच्चे चोरी नहीं करते, लेकिन एक भी समझ में आई है तेरे !

दीपक यह भी कोई चोरी है, चाचा ?

चाचा और चोरी किसे कहते हैं ? किसी दूसरे की चीज बिना पूछे लेना चोरी ही तो है।

दीपक लेकिन मैं तो पुस्तकालय का सदस्य हूं, चदा देता हूं।

चाचा सदस्य है ता क्या किताबें और तसवीर फाड़ने के लिए ? चंदा कौन नहीं देता ! यदि सब तुझ जैसे हो जाएं तो पुस्तकालय का तो फिर भगवान ही मालिक है। तुझे तसवीर अच्छी लगी,

तूने तसवीर फाड़ ली। दीपा को कोई कहानी अच्छी लगेगी, यह कहानी फाड़ लेगी। किसी और को कविता अच्छी लगे, वह कविता फाड़ ले। फिर रहेगा ही क्या ?

[दृश्य बदलता है। शोर-गुल में साफ साफ कुछ सुनाई नहीं पड़ता।]

आवाजें : लाइन सीधी रखो। अबे, धक्का क्यों दे रहा है ? सीधा खड़ा रह !

दीपक : अरे, यहां तो बड़ी लाइन लगी है। घंटों का मामला है। अब क्या हो ?

विनोद : (पुकारकर) दीपक, ओ दीपक ! अबे, सुन तो।

दीपक : कौन, विनोद ? अरे, तू भी लाइन में खड़ा है। देखूं, कौन सी पुस्तक लौटा रहा है ?

विनोद : 'जंगल की गोद में' है। तेरे पास यह कौन सी पुस्तक है ?

दीपक : 'तुम पूछो, हम बताएं। यार, थोड़ी सी जगह तो दे। मैं भी जरा खड़ा हो जाऊं। पीछे तो बहुत देर में बारी आएगी।

विनोद : अबे, तेरे लिए तो जान भी हाजिर है। ले, खड़ा हो जा।

आवाजें : अबे, कौन है ? कौन है जो बीच में घुस रहा है ? निकालो इसे !

[दीपक चुप रहता है।]

रमेश : अबे, ओ दीपक के बच्चे ! सुना नहीं। पीछे चल, पीछे ! कहां लाट साहब आगे लग गए हैं ! पुस्तकालय घर का समझ रखा है !

दीपक : अबे ओ, मुंह संभालकर बोल !

रमेश : तो पीछे क्यों नहीं जाता ?

दीपक : नहीं जाता, तू कौन होता है मुझे रोकने वाला ?

रमेश : मैं सब कुछ हूं। हम जो घंटे भर से पैरतुड़ाई कर रहे हैं, क्या मुफ्त में ?

आवाजें : इसे पीछे भेजो...(दीपक से) चल बे पीछे !

दीपक : नहीं जाऊंगा...देखूं, किसमें इतनी हिम्मत है जो मुझे हटाए ?

रमेश : तुझे तो मैं अकेला ही बहुत हूं...निकल, चलता है कि नहीं पीछे !

दीपक : अबे, छोड़...छोड़ कमीज !

रमेश : तो चल पीछे !

[कमीज फटने की आवाज]

दीपक : **(क्रुद्ध स्वर में)** बोल, क्यों फाड़ी मेरी कमीज ? **(झापड़ मारता है)**

रमेश : तूने मुझे मारा क्यों ? मैं अभी तेरे चाचा से शिकायत करता हूं।

दीपक : जा जा, कर दे।

[दृश्य परिवर्तन : रमेश चाचाजी से शिकायत कर रहा है।]

चाचा : दीपक, यह तो सरासर तेरी गलती है। तू आगे जाकर लाइन में क्यों लगा ? ख़बरदार, जो आगे से कभी ऐसी गलती की। तुझे शर्म आनी चाहिए। अच्छा बेटा रमेश, आगे से यह ऐसा नहीं करेगा। जाओ। **(रमेश जाता है)**

दीपा : चाचा, यह दीपक है ही बहुत लड़ाकू। हर किसी से लड़ता-झगड़ता रहता है।

दीपक : **(चिढ़कर)** रहने दे, तू तो जैसे दूध की धुली है ! बता, मैं और किससे झगड़ा था ?

दीपा : बता दूं ? प्रकाश से नहीं झगड़ा तू ?

[पुस्तकालय का शोर फिर उभरता है, लेकिन स्पष्ट कुछ नहीं सुनाई पड़ता। शोर धीरे धीरे तेज होकर मद्धिम पड़ जाता है और दीपक का स्वर सुनाई पड़ता है।]

दीपक : विनोद ! ओ विनोद !

विनोद : अबे, क्यों कान खाए जा रहा है ? क्या कोई खजाना मिल गया ?

दीपक : अबे, सुन तो, कितनी मजेदार कविता है—'घर की सरकार'। हंसते हंसते पेट में बल पड़ जाएंगे।

विनोद : 'घर की सरकार' ! देखूं, कहां है ?

दीपक : सुन, सुनाता हूं। **(जोर जोर से पढ़ता है)** 'घर की सरकार', कवि 'लल्ला'—

...प्रभो ! नई सरकार बना दो।
चचा हमारे लेफ्टिनेंट थे,
सेनापति तुम उन्हें बनाना।
राष्ट्रपति पद का ताऊ जी,
देखा करते स्वप्न सुहाना।
मैं हरदम खाता रहता हूं,

फूड-मिनिस्टर मुझे बना दो।
प्रभो ! नई सरकार बना दो।

विनोद : खूब ! भई, खूब ! क्या कहने हैं घर की सरकार के !

प्रकाश : अबे, सुना नहीं तूने ? कितनी बार कहा कि धीरे धीरे पढ़। क्या पैंठ खोल रखी है !

दीपक : कहा न मैंने, धीरे धीरे पढ़ने से मेरी समझ में नहीं आता।

प्रकाश : मैं क्या तेरा ठेकेदार हूं ! बैठना है तो धीरे धीरे पढ़, नहीं तो नौ-दो ग्यारह हो जा। पुस्तकालय है, कोई सराय नहीं।

दीपक : क्यों हो जाऊं नौ-दो ग्यारह ? मैं तो जोर जोर से ही पढ़ूंगा।

प्रकाश : अच्छा, पढ़कर देख।

दीपक : क्या कर लेगा तू मेरा ? तेरे बाप का पुस्तकालय है ?

प्रकाश : अबे, बाप तक पहुंचता है ? (**झापड़ मारता है**)

[दृश्य बदलता है।]

चाचा : अच्छा हुआ, तेरा इलाज भी यही है। बिना पिटे तेरी समझ में ही नहीं आता। तुझे इतनी भी तमीज नहीं कि पुस्तकालय में कभी जोर जोर से नहीं पढ़ना चाहिए। तू अकेला ही तो पढ़ने वाला नहीं, और भी लोग पढ़ते हैं। यदि सभी तेरी तरह जोर जोर से पढ़ने लगें, फिर तो पुस्तकालय अच्छी-खासी सब्जीमंडी बन जाए। किसी के कुछ भी पल्ले न पड़े।

दीपक : चाचा, आप हमेशा मुझे ही डांटते हैं, दीपा को कभी कुछ नहीं कहते।

चाचा : दीपा कभी कसूर ही नहीं करती।

दीपक : तो फिर उस पर जुर्माना क्यों हुआ ?

चाचा : जुर्माना ! कैसा जुर्माना ?

दीपक : किताब खराब करने पर।

[पुस्तकालय का शोर धीरे धीरे तेज होकर मद्धिम पड़ जाता है। पुस्तकालय अध्यक्ष और दीपा के स्वर सुनाई पड़ते हैं।]

पुस्तकालय अध्यक्ष : तुम्हें मालूम है, आज कौन सी तारीख है ?

दीपा : पंद्रह।

पुस्तकालय अध्यक्ष : और तुम्हें यह किताब दस तारीख को लौटानी थी।

दीपा : जी, याद नहीं रहा।

पुस्तकालय अध्यक्ष : पचास पैसे जुर्माना। (**पन्ने पलटने का स्वर**) अरे, और यह क्या किया तुमने ?

दीपा : कुछ भी नहीं।

पुस्तकालय अध्यक्ष : फिर किताब पर जगह जगह ये लाल निशान कैसे लग गए ? क्या मैंने लगाए ? किताब का नाश कर दिया। पता है, पुस्तकालय की किताबों पर निशान लगाना मना है, और तुमने इसे जगह जगह से रंग दिया है।

दीपा : अब कभी नहीं लगाऊंगी।

पुस्तकालय अध्यक्ष : लेकिन अब क्या हो ? अब तो तुम्हें इसकी कीमत ही भरनी पड़ेगी। और यदि फिर कभी किताब खराब की तो आगे से किताब मिलना बंद। समझीं ?

[दृश्य बदलता है।]

चाचा : नहीं, दीपा ! पुस्तकालयों की किताबों पर निशान नहीं लगाने चाहिए। यह आदत भी उसी प्रकार बुरी है जैसे पन्ने या तसवीरें फाड़ लेना। तुमने कुछ जगहों पर निशान लगाए, दूसरा अन्य स्थानों पर निशान लगाए तो ?

दीपक तो सारी किताब ही बदरंग हो जाए।

दीपा (मुंह बिचकाकर) हो जाए, तुझे क्या ?

चाचा लेकिन दीपा, यह आदत तो बुरी है। निशान लगाने से किताबें खराब होती हैं और जल्दी फटती हैं।

दीपा लेकिन यह क्यों बोलता है ?

दीपक मैं क्यों न बोलूं ? जब तू मेरी शिकायत लगाती है, तब कुछ नहीं। मैंने लगा दी तो चिढ़ गई।

दीपा अई...ए...ए...ए... !

दीपक ए...ए...ए ..ए... !

(१६९३)

दोस्ती

[] कमलेश्वर

पात्र

भूषण	मंगल
बीरन	सतीश
विजय	हरी

[पर्दा खुलते ही साफ-सुथरा भूषण हथेली पर रखी रेजगारी गिनता हुआ दिखाई पड़ता है। उसके चेहरे पर खुशी की चमक है और वह एकाध नजर इधर-उधर भी डाल लेता है।]

भूषण : एक रुपया पचहत्तर पैसे...कुल एक रुपया पचहत्तर पैसे... (**कुछ सोचकर**) पचीस पैसे और मिल जाएं तो काम बन जाए। बस, पचीस पैसे। पूरे दो रुपए हो जाएं...

[भूषण का भाई बीरन प्रवेश करता है।]

बीरन : क्या कर रहे हो, भूषण ?

भूषण : (**चौंककर रेजगारी जेब में डाल लेता है**) कुछ नहीं, दादा.. पहाड़ा याद कर रहा था।

बीरन : अच्छा, अच्छा, याद करो, भूषण !

भूषण : (**विनय के साथ**) दादा, एक बात सुनो !

बीरन : क्या है ?

भूषण : पचीस पैसे दे दो, दादा ! मेरे अच्छे दादा !

बीरन : तू इतने पैसों का करता क्या है ?

[इसी समय भूषण का दोस्त विजय आ जाता है। उन्हें बात करते देखकर चुपचाप खड़ा हो जाता है।]

भूषण : पतंग और डोरी लाऊंगा, दादा !

बीरन : और अभी तूने पिताजी से पचास पैसे लिए थे, वे क्या हुए ?

भूषण : उनकी कापियां ले आया ! (**विजय को देखकर**) कहो, विजय !

विजय : इतिहास की किताब चाहिए जरा...

[बीरन चलने को होता है तो भूषण विजय की बात काटकर कहता है।]

भूषण : दादा, दे दो न...

बीरन : मेरे पास पैसे नहीं हैं। पिताजी से ले चुका, मां से तूने पचास पैसे ले लिए और कल दीदी से पचीस पैसे लिए थे।

भूषण : (**समझाते हुए**) वे सब तो खर्च हो गए। स्लेट ले आया। चार कापियां ले आया और जो बाकी बचे, वे पेंसिल-होल्डर में खर्च हो गए।

बीरन : (**कुछ डांटकर**) कितने होल्डर-पेंसिल रोज आते हैं!

भूषण : मेरे अच्छे दादा! बस आज दे दो, फिर नहीं मांगूंगा। बस, दादा, आज!

बीरन : (**झुंझलाकर जेब से पचीस पैसे निकालकर**) ये ले पचीस पैसे। अब मांगेगा तो एक पैसा भी नहीं मिलेगा। हर समय पैसा, पैसा..

भूषण : अब नहीं मांगूंगा, दादा!

[बीरन झुंझलाता हुआ चला जाता है।]

विजय : तुम बहुत झूठ बोलते हो, भूषण!

भूषण : कैसा झूठ?

विजय : तुम झूठ बोलकर उस हरी के लिए घर से पैसे मांगते हो।

भूषण : हरी के लिए क्यों लूंगा? हमें खुद जरूरत पड़ती है। (**बात पलटकर**) तुम्हें इतिहास की किताब चाहिए न! अभी लाया।

[भूषण के जाते ही एक गंदा सा लड़का हरी आता है। विजय को खड़ा देखकर लौटने को होता है।]

विजय : कहो हरी, कैसे आए?

हरी : (**रुककर**) भूषण से मिलने आया था, मिल लूंगा।

विजय : (**व्यंग्य से**) पैसे लेने आए होगे!

हरी : पैसे लेने क्यों आऊंगा? तुम्हीं मांगते फिरते हो किताबें।

विजय : बढ़ बढ़कर बातें मत किया कर...भिखमंगा कहीं का!

हरी : ऐ विजय! घूंसा खा जाएगा।

विजय : चल बे, बड़ा आया घूंसा जमाने वाला!

हरी : (**कुछ सोचते हुए**) भूषण का घर है इसलिए कुछ नहीं बोल रहा हूं। नहीं तो अभी ठीक कर देता...

विजय : जा, जा, भिखमंगे!

[हरी घूंसा दिखाते हुए चलने को होता है।]

विजय : अब देखूं, तुझे पैसे कहां से मिलते हैं! आज ही भूषण के भाई साहब से कह दूंगा।

हरी : कह देना...जो कर पाओ कर लेना...(**चला जाता है**)

[भूषण किताब लिए हुए आता है।]

विजय : (**किताब लेते हुए**) भूषण ! अभी हरी आया था...

भूषण : (**एकदम**) चला गया ?

विजय : तुमसे हरी की बहुत पटती है। ऐसे लड़कों से दोस्ती अच्छी नहीं होती, भूषण !

भूषण : हरी बहुत अच्छा लड़का है, विजय, तुम जानते हो !

विजय : तुम्हें मालूम नहीं, इसकी मां बड़ी चोर है और यह भी चोरी करता है। इसका बाप चोरी की सजा काट रहा है...

भूषण : सच ? इसकी मां तो बहुत सीधी है।

विजय : चोर बाप का बेटा कभी अच्छा हो सकता है ?

भूषण : हरी का बाप जेल में है ? हमें मालूम नही था...

विजय : और क्या ? चोरी में ही पकड़ा गया था और इसकी मां जहां जहां बरतन मलने जाती है, वहां वहा से चीजें चुराकर लाती है। एक दिन वह पकड़ी भी गई थी।

भूषण : लेकिन हरी तो चोरी नहीं करता ! पढ़ने में भी बहुत तेज है।

विजय : बुरे के साथ बुरा ही होता है। किसी दिन तुम्हारा भी झूठा नाम लग जाएगा, तुम उसे पैसे देते हो।

भूषण : (**एकदम संभलकर**) मैं उसे पैसे क्यों दूंगा ?

विजय : तुम झूठ बोलते हो ! वह मुझसे लड़ता है और तुम उससे दोस्ती रखते हो। ऐसे नही चलेगी, भूषण ! हमारे गुइयां रहो तो हरी से बोलना छोड़ना पड़ेगा !

भूषण : लड़ाई की क्या बात है . तुम दोनों हमारे गुइयां रहो।

विजय : हमारे पिताजी हरी के साथ खेलने को मना करते है। मैं उसके साथ कभी नही खेलूंगा। अभी मुझे घूमा दिखाकर गया है।

[हरी आता है। भूषण उसे देखते ही लपकता है। विजय के चेहरे पर घृणा और क्रोध उभर आता है।]

विजय : (**चलते हुए**) भूषण...हमारी-तुम्हारी कुट्टी। तुम घर से झूठ बोल बोलकर पैसे लेते हो। सबको बताऊंगा --भूषण झूठा है, झूठा है।

हरी : (**लगभग दुतकारते हुए**) जा, जा, कह देना। क्या कर लेगा ?

विजय : स्कूल में सबसे कहूंगा। हरी चोर और भूषण झूठा है। एक चोर, एक झूठा ! (**किताब फेंककर**) ले अपनी किताब ! (**चला जाता है**)

हरी : (**गोलियां निकालकर**) गोली खेलोगे ?

भूषण : (जेब से गोलियां निकालकर तैयार होते हुए) आ जा...

[दोनों खेलने लगते हैं। तभी विजय, मंगल और सतीश के साथ गेंद-बल्ला लिए हुए आता है।)

विजय : एक झूठा, एक चोर ! (अपने साथियों से) आओ, मंगल, क्रिकेट जमेगा। (भूषण और हरी से) हटो जी, जगह छोड़ो।

भूषण : लड़ने आए हो तुम लोग ?

मंगल : हम झूठों से बात नहीं करते।

भूषण : (चीखकर) झूठे हो तुम ! उस दिन जब मार पड़ी थी, झूठ बोलने के लिए...

हरी : एक नन्ही सी पेंसिल के लिए झूठ बोल गया। चोर !

मंगल : चुप रह, हरिया ! (बढ़कर एक चपत लगा देता है) अभी जमीन चटा दूंगा।

[भूषण उसे बचाने के लिए झपटता है कि सतीश मारना शुरू कर देता है। दोनों दलों में मारपीट होने लगती है। हरी की जेब से सब पैसे बिखर जाते हैं। तभी भूषण का भाई बीरन आता है।]

बीरन : (लपककर सबको अलग अलग करता हुआ) अरे, क्यों लड रहे हो ? छोड़ो छोड़ो...(सबको छुड़ा देता है)

मंगल : (अपनी फटी हुई कमीज दिखाता हुआ) मेरी कमीज फाड़ डाली। भूषण हमें गाली देता है।

सतीश : (बिगड़कर) हमें भी गाली दी थी इसने।

बीरन : (बिगड़ते हुए) क्यों, भूषण ? तुम लोग खेलने आते हो कि लड़ने ? हर वक्त लड़ाई...

[हरी अपने पैसे उठाता रहता है।]

भूषण : नहीं दादा, हम लोग यहां खेल रहे थे। ये लोग आकर मारने लगे।

बीरन : (विजय, मंगल और सतीश से) अच्छा तुम लोग जाओ। मैं सब ठीक कर दूंगा।

[विजय, मंगल और सतीश जीत के गर्व में चले जाते हैं।]

बीरन : (डांटकर) इधर आओ दोनों !

[दोनों डरे हुए थोड़ा थोड़ा आगे सरक जाते हैं।]

बीरन : (हरी के पास पैसे देखकर) तेरे पास पैसे कहां से आए ? कितने हैं ?

हरी : **(सहमकर)** दो रुपए हैं।
बीरन : **(भूषण से)** तुम्हारे पैसे कहां हैं ?
भूषण : **(सहमते हुए)** हरी के पास हैं।
बीरन : **(डांटकर)** जुआ खेले थे ?
हरी : **(रुआंसा होकर)** नहीं, ये पैसे भूषण ने हमें दिए थे।
भूषण : **(घबराकर)** हां, मैंने इसे दिए थे।
बीरन : **(डांटकर)** क्यों दिए थे ?
भूषण : **(एकदम रो पड़ता है)** हरी को फीस जमा करनी है।
बीरन : **(समझते हुए)** क्यों, हरी ?
हरी : **(सिर झुकाकर)** हमारी अम्मा के पास पैसे नहीं थे। हमने भूषण से मांगे थे।
बीरन : **(भूषण की पीठ पर हाथ फेरते हुए)** अरे पगले, तो रोता क्यों है ? चुप हो जा। ठीक ठीक बात बता। अभी तूने पतंगों के लिए पैसे हमसे लिए थे, उनका क्या किया ?
भूषण : **(चुप होते हुए)** हरी को दो रुपए की जरूरत थी, पचीस पैसे कम थे, सो आपसे लिए थे।
बीरन : **(हंसकर)** तो पतंग के लिए नहीं चाहिए थे !
भूषण : **(आंसू पोंछकर)** नहीं।
बीरन : **(हंसकर, उसको हंसाने की कोशिश करते हुए)** तो झूठ बोलकर तू हरी के लिए पैसे जमा कर रहा था, पगले !
भूषण : हां !
हरी : हमारा नाम कट जाता, अगर हम फीस जमा न करते !
बीरन : तुम दोनों बड़े पागल हो ! **(भूषण से)** इसमें झूठ बोलने की क्या जरूरत थी ? तुमने बहुत अच्छा काम किया।
हरी : विजय और मंगल हमें भिखमंगा कहते थे, इसी पर लड़ाई हो गई। उन्होंने हमारा झूठा नाम लगाया था।
बीरन : उन्हें बकने दो। पैसे मांगने से कोई भिखमंगा नहीं हो जाता। **(भूषण से)** अब हमसे बताकर रुपए मांग लिया कर, समझा। दोस्त की मदद करना तो बड़ी अच्छी बात है।
भूषण : **(खिलकर हाथ पसारते हुए)** ये दो रुपए तो हरी की फीस के लिए हो गए, दादा। अब हमें पतंग उडाने के लिए पचीस पैसे दे दो।
बीरन : **(जेब से पचास पचास पैसे के दो सिक्के निकालकर एक एक दोनों को देते हुए)** लो, तुम दोनों लो। अच्छे और सच्चे

लड़कों को सब प्यार करते हैं। खूब खेलो और खूब पढ़ो
(चला जाता है)

भूषण : चलो हरी, पतंग ले आएं।

हरी : यह तो खूब रही। हम सच बोले थे न !

[दोनों चलने को होते हैं।]

पर्दा गिरता है

(१९६४)

हम एक हैं

□ कमलेश्वर

पात्र

चंदर	कल्लू
रमेश	बच्चू
सूदन	मास्टरजी

[सब लड़के अपने कंधों से बस्ते लटकाए हुए पाठशाला के लिए तैयार होकर निकलते हैं। एक के बस्ते में गेंद है।]

चंदर : गेंद खेलेगा, रमेश ?

रमेश : नहीं चंदर, स्कूल के लिए देर हो जाएगी। आजकल मास्टरजी बहुत नाराज होते हैं, जुर्माना कर देते हैं।

चंदर : अरे, जुर्माना तो पिताजी की जेब से जाता है, मार पड़ती तो डरते भी। **(बस्ते से गेंद निकालता है)**

[तभी सूदन अपनी किताबें लिए हुए आता है।]

सूदन : ओ हो, खेल जमने जा रहा है ! **(किताबें एक ओर पटककर)** आ जा भाई चंदर, एकाध बारी खेल लें।

रमेश : नही जी, जल्दी चलो, देर हो जाएगी। मैं नहीं रुकता। **(चलने को होता है)**

सूदन : **(बांह पकड़कर रोकते हुए)** रुको रमेश, ऐसी क्या जल्दी है ! एक घंटा छूटेगा तो छूट जाए। आ चंदर फेंक गेंद ! **(कहते हुए रमेश का बस्ता उतारकर एक ओर फेंक देता है)**

[तीनों के बस्ते एक कोने में पड़े हुए हैं। तभी चंदर जेब से गोलियां निकालता है।]

चंदर : गेंद कैसे खेलेंगे, बल्ला तो है नहीं। आओ, गोलियां खेलें।

सूदन : बहुत अच्छे ! **(अपनी जेब से गोलियां निकालकर अंटी में चटकाता है)**

[तीनों बच्चे गोलिया खेलते हैं। इतने में एक लड़का कल्लू बड़े मैले-कुचैले कपड़े पहने आता है। कल्लू जाति मे भंगी है और इन्हीं तीनों के स्कूल में पढ़ता है। वह ठिठक कर दूर खड़ा हो जाता है।]

कल्लू : (बड़े प्रेम से) ऐ चंदर भइया ! चंदर भइया !

[तीनों खेलते रहते हैं।]

कल्लू : (अपनी जेब से गोलियां निकाल चटकाते हुए) हमें खिलाओगे ! (अपनी रंगीन गोलियां दिखाते हुए) मेरे पास रंगीन गोलियां हैं।

सूदन : (पलट कर देखते हुए) बड़ा आया है रंगीन गोलियां वाला ! भंगी कहीं का !

चंदर : जा बे ! अपना काम देख !

[तीनों फिर खेलने लगते हैं।]

कल्लू : जीत जाओ तो गोलियां ले लेना।

चंदर : नहीं बे ! तेरे साथ हमें नहीं खेलना है।

[कल्लू अपनी गोलियां जेब में रखकर मन मार कर एक ओर उदास सा खड़ा हो जाता है। खेल देखता रहता है। इसी बीच चंदर सूदन की गोली पीट लेता है। वह बिखरी हुई सब गोलियां उठाता है। सूदन उसका हाथ पकड़ लेता है।]

सूदन : यह गोली जीत की नहीं है। इसे छोड़ दो।

चंदर : नहीं जी, सब बाजी की गोलियां हैं। ये सब मेरी हैं।

सूदन : नहीं, नहीं, इसे छोड़ !

चंदर : हार गए तो रोने लगे ! मैं नहीं दूंगा।

सूदन : (कुछ खिसियाकर) देख रहा है, रमेश, इसकी बेईमानी ! (चंदर से) मेरी गोली वापस कर !

कल्लू : लड़ते काहे को हो सूदन ? हमारी गोली से खेल कर जीत लो।

सूदन : (जिसका मन ललचा आता है) और हार गए तेरी गोलिया, तब ?

कल्लू : तो फिर कभी दे देना।

सूदन : फेंक, दूर से लुढ़का दे।

चंदर : मैं भंगी की गोलियों से नहीं खेलूंगा।

रमेश : अरे, गोली तो कांच की हैं।

चंदर : तो क्या हुआ ? हैं तो भंगी की।

कल्लू : मैं तो भंगी का कोई काम नहीं करता। तुम लोगों के साथ स्कूल में पढ़ता हूं। फिर भी...

सूदन : नही नहीं, रहने दे ! नहीं तो अभी घर जाकर नहाना पड़ेगा।

चंदर : (सूदन से) गोलियां उधार दे सकता हूं, लेगा ?

सूदन : ला, दे। कल लौटा दूंगा।

[चंदर चार गोलियां दे देता है। कल्लू चुपचाप खड़ा रह जाता है।]

कल्लू : मैं मास्टरजी से शिकायत करूंगा कि तुम लोग हमें भंगी कहते हो।

चंदर : भंगी है तो कहूंगा—एक नहीं सौ बार ! और क्या राजा कहूं ! (सूदन और रमेश से) आओ, भाई !

[खेल फिर जम जाता है। तभी बच्चू आता है।]

बच्चू : वाह भाई वाह ! गोलियां चटक रही हैं !

सूदन : तुमसे क्या ? हम अपना खेल खेल रहे हैं !

बच्चू : हमें नहीं खिलाओगे ?

सूदन : (अकड़कर) नहीं ! हम चार लड़कों के साथ नहीं खेलते।

बच्चू : (इधर-उधर नजर डालकर) अच्छा बेटा, बताऊंगा।

चंदर : बताएगा ? चल, भाग।

बच्चू : रो पड़ोगे, चंदर।

चंदर : हां, हां, बहुत देखे हैं तेरे जैसे। एक घूंसे में जमीन चाट जाएगा ! चोर कहीं का !

बच्चू : (मुक्का तानते हुए) मैं चोर हूं !

सूदन : चोर नहीं है तो स्कूल से क्यों निकाला गया ?

रमेश : और बेंत क्यों पड़े थे ?

बच्चू : (अपना वश चलते न देखकर) अच्छा ! इस समय तुम तीन हो न, इसीलिए। कभी अकेले में मिलना तो बताऊंगा।

[तेज नजरों से बस्तों की ओर देखता है। फिर वह मुक्का दिखाता हुआ जिधर से आया था, उसी ओर चला जाता है।]

चंदर : (कल्लू से) जा बे भंगी के बच्चे ! अपना काम देख।

कल्लू : नहीं जाता ! मैं सड़क पर खड़ा हूं। तुमसे जो करते बने कर लो। (अकड़कर खड़ा हो जाता है)

चंदर : (आंखें दिखाते हुए) तो बताऊं अभी ! (लकड़ी तानता है) चोर कहीं का !

कल्लू : चोर होगा तू ?

सूदन : अरे हटाओ, चंदर ! (उसे अपनी गोलियां जीतने की चिंता है)

रमेश : अब चलो न स्कूल, चंदर !

सूदन : एक एक बाजी और हो जाए, बस चलते हैं। (**गोलियां चटका कर**) आ जा।

[तीनों फिर गोलियां खेलने लगते हैं। तीनों अपने बस्तों की ओर पीठ किए हैं और खेलते खेलते दूसरे कोने पर आ जाते हैं। तभी चोर की तरह बच्चू आता है और बस्तों के पास दुबक कर खड़ा हो जाता है। कल्लू देख रहा है। तभी बच्चू धीरे से ऊपर वाला बस्ता सरकाता है। कल्लू उसे देख रहा है, पर वह चुप रहता है। फिर वह चुपचाप कुछ सोचता हुआ उधर ही चला जाता है, जिधर बच्चू गया है। मंच पर केवल रमेश, चंदर और सूदन झगड़ते हुए रह जाते हैं।]

चंदर : ऐसे मैं नहीं खेलता। हार गए तो खिसियाने लगे।

सूदन : खिसिया क्यों रहा हूं? गोली मैंने पीट ली है। नहीं खेलते हो मत खेलो! (**चलने को होता है**)

चंदर : (**एकदम बस्ते की ओर देखते हुए**) अरे, मेरा बस्ता कहां गया? (**मुंह फक हो जाता है**)

सूदन : (**उस ओर देखकर जहां कल्लू खड़ा था**) कल्लू भी नहीं है। वही लेकर भाग गया।

रमेश : वही चुरा ले गया।

[रमेश बढ़कर अपना बस्ता उठाता है। सूदन भी अपनी किताबें बटोरता है।]

रमेश : (**चिंता से**) अब क्या होगा?

चंदर : (**रुआंसा होकर**) मुझे मार पड़ेगी। (**आंखें मलने लगता है**) मेरा बस्ता सबसे ऊपर पड़ा था। वही उठाकर भाग गया। हाय, मेरी किताबें!

सूदन : चलो, पकड़ें चल कर कल्लू को।

रमेश : अपने घर गया होगा, या स्कूल। जल्दी चलो, भंगी का बच्चा है। मैंने पहले ही कहा था कि यह चोर है। तुम लोग माने ही नहीं। ससुरे को मार कर भगा देते, बस!

सूदन : उसे मारते तो हम छू न जाते! फिर हम भी भंगी हो जाते!

रमेश : हां, यह बात तो थी। आओ चल कर खोजें।

[तीनों चलने को होते हैं कि कल्लू चंदर का बस्ता लटकाए हुए तेजी से दौड़ता हुआ आता है।]

सूदन : (**एकदम उसे देखकर चीखते हुए**) यह रहा चोर! पकड़ो!

[चंदर आगे की ओर लपकता है। कल्लू उसका बस्ता सामने पटक देता है।]

चंदर : (कल्लू को लकड़ी जमाते हुए) क्यों बे ! चोरी करके भाग रहा था।

सूदन : हम तुझे छू नहीं सकते, नहीं तो वह कुटम्मस करते कि अक्ल ठीक हो जाती।

कल्लू : मैं तो तुम्हारा बस्ता खुद ला रहा था।

चंदर : खुद चुरा कर भाग रहा था और कहता है, मैं ला रहा था। (एक लकड़ी और जमा देता है)

कल्लू : (लकड़ी की मार से चीखते हुए) मैं भलाई करता हूं और तुम मुझे मारते हो ! तुम्हारा बस्ता बच्चू ले गया था। मैं उससे छीन कर ला रहा हूं।

सूदन : वाह उस्ताद ! चकमा दे रहे हो। बच्चू तो तभी चला गया था। आज होगी मास्टरजी से शिकायत, तब पता चलेगा।

कल्लू : तुम चाहे मास्टरजी से पूछ लेना। वह खुद पीछे आ रहे हैं। मैंने उनके सामने बच्चू से बस्ता छीना था।

[मास्टर साहब का प्रवेश]

मास्टरजी : अरे, तुम लोग क्या कर रहे हो ? स्कूल नहीं जाना है ?

[सब बच्चे उन्हें नमस्ते करते हैं।]

चंदर : स्कूल जा रहे थे जी, पर यह कल्लू...

कल्लू : ये हमें चोरी लगाते हैं, मास्टरजी। हमसे कहते हैं, तू भंगी है। हमें छूते नहीं, हमें अपने साथ खेलने भी नही देते।

सूदन : मास्टरजी, यह चंदर का बस्ता चुरा कर भागा था, इसीलिए हम लोग रुक गए थे।

कल्लू : नही, मास्टरजी ! ये लोग बस्ते पटक पटककर गोलियां खेल रहे थे और बस्ता बच्चू चुराकर भागा था।

रमेश : नहीं मास्टरजी, हमने इसे नहीं खिलाया तो यह चंदर का बस्ता चुरा कर भाग गया।

मास्टरजी : तुम लोग इसे क्यों नहीं खिला रहे थे ?

सूदन : यह भंगी है !

मास्टरजी : पर काम तो अच्छे लड़कों के करता है। तुम्हें नहीं मालूम, बच्चू तुम्हारा बस्ता चुरा ले गया था। कल्लू उससे छीन कर लाया है। कितना अच्छा काम किया है कल्लू ने !

कल्लू : ये लोग मुझे चोर कहते हैं !

मास्टरजी : (कल्लू की पीठ पर हाथ रखते हुए) तुझे चोर कौन कहेगा ? तू तो इतना अच्छा लड़का है ! ये लोग गलती करते हैं। (चंदर से) तुम लोग इसे नहीं छूते ?

चंदर : नहीं ! (कहकर लाया हुआ बस्ता उठाकर कंधे से लटका लेता है)

मास्टरजी : (हंसकर) जो बस्ता यह लाया उसे तो तुमने छू लिया, फिर इसे छूने में क्या बात है ?

चंदर : बस्ते की और बात है !

मास्टरजी : नहीं, चंदर ! कोई भी आदमी अछूत नहीं होता। फिर कल्लू तो इतना ईमानदार लड़का है।

रमेश : (समझते हुए) हां मास्टरजी, जब हम इसका बस्ता छू सकते हैं तो इसे भी छू सकते हैं।

मास्टरजी : हां, सब समान और बराबर हैं, समझे। तुम सब एक ही देश की संतान हो ! आओ, स्कूल चलो, देर हो गई है !

रमेश : (कल्लू की ओर देखकर और मुसकरा कर) चलिए।

चंदर : आ, कल्लू। अब हम दोस्त दोस्त हुए। हम तुम्हें साथ खिलाया करेंगे।

सूदन : अब हम तुमसे कभी भी बुरा बरताव नहीं करेंगे।

[कल्लू मुसकराता है।]

मास्टरजी : (हर्ष से समझाते हुए) आज मैं बड़ा प्रसन्न हूं। तुम सब बच्चों को हिल-मिलकर खेलते हुए देख कौन खुश नहीं होगा !

[चारों बच्चे एक साथ सटकर मिले-जुले चलते हैं। पीछे पीछे मास्टरजी हैं।]

पर्दा गिरता है

(१९६४)

पैसों का पेड़

□ कमलेश्वर

पात्र

रीता वीरू
विमल मितुन
मोहन

[मंच पर दस-बारह गमले रखे हैं और चार-पांच बच्चे मेज के इर्द-गिर्द बैठे हुए लूडो खेल रहे हैं। तभी मोहन बाढ़पीड़ितों के लिए चंदा जमा करता हुआ छोटी सी संदूकची और कागज के छोटे छोटे राष्ट्रीय झंडे लिए हुए प्रवेश करता है।]

रीता : (खेलते हुए) लो, मोहन आ गया। आओ मोहन !

विमल : आओ, आओ, मोहन ! मेरी जगह खेलो।

मोहन : मैं खेलने नहीं आया हूं। बहुत जरूरी काम से आया हूं।

रीता : कभी खेला भी करो, मोहन ! हर समय पढ़ना और काम करना !

मोहन : (संदूकची बजाता हुआ) चंदा जमा करने आया हूं इस समय। खेल के वक्त खेलता भी हूं। मेरी बात सुनो।

[सब बच्चे खेल रोक कर बात सुनते हैं।]

मोहन : मैं बाढ़पीड़ितों के लिए चंदा लेने आया हूं। बहुत भारी बाढ़ आई है बिहार में। लोग भूखों मर रहे हैं। उनके घर गिर गए। सब सामान बह गया।

वीरू : इतनी भयानक बाढ़ आई है !

मोहन : हां भाई, हजारों लोग बेघरबार हो गए हैं। उनके पास खाने के लिए दाना तक नहीं है। पहनने के लिए चिथड़े भी नहीं, वीरू भाई !

मितुन : तो उनका इंतजाम सरकार करेगी। हमसे क्या ?

मोहन : हमें भी तो कुछ करना चाहिए, मितुन ! इसीलिए हमने अपना एक सहायता कोष बनाया है। जो भी जमा कर पाएंगे, उन्हें भेज देंगे।

विमल : तुम भी, मोहन, ये बेकार के पचड़े ले बैठते हो। मौज से लूडो खेल रहे थे, तुम पैसे मांगने आ गए। हमारे पास पैसे कहां ?

मोहन : अरे, तुम्हें घर से पैसे नहीं मिलते, विमल ! कितने पैसे तुम रोज स्कूल के खाने-पीने में खर्च करते हो, थोड़ा सा इसमें भी दे दो (**संदूकची बजाकर**) लाओ रीता, मितुन, कुछ निकालो।

वीरू : भइया, हमारी जेब तो खाली है। (**नेकर की जेब उलट देता है**)

मोहन : तो घर से मांग लाओ।

मितुन : इस वक्त घर कौन जाएगा ? रखो संदूकची। एक बाजी लूडो हो जाए।

रीता : चंदा और लोगों से ही लेना, मोहन ! अपने साथियों से तो मत वसूल करो !

मोहन : तुम लोग दस-बीस पैसे भी नहीं दे सकते ! (**निराश होते हुए**) एक अच्छे काम के लिए कुछ भी नहीं दे सकते। वैसे पचास-पचास पैसे की टाफियां खा जाओगे।

मितुन : खाया हुआ अपने पेट में जाता है।

मोहन : लेकिन तुम्हारा दिया हुआ चंदा दूसरे के पेट में जाएगा। गरीबों का पेट भरेगा।

विमल : (**अपने साथियों से**) खेलो, भाई। यह मोहन तो नेता हो गया। (**खेलने लगता है**)

[सब बच्चे मोहन की ओर से उदासीन होकर फिर खेलने लगते हैं। मोहन एक मिनट निराश सा खड़ा रहता है। फिर जैसे उसके दिमाग में कोई मजेदार बात आती है, उसके चेहरे पर खुशी छा जाती है। वह संदूकची पटक कर खेलने के लिए तैयार हो जाता है।)

मोहन : मैं भी खेलूंगा। (**बीच में घुस जाता है**)

मितुन : आ गए रास्ते पर ! ऐ वीरू, तुम जरा हटो, मोहन को खेलने दो।

[वीरू हटकर खेल देखने लगता है और मोहन तीन-चार गोटी फेंक कर एकाएक जैसे कुछ याद करने लगता है।]

रीता : क्या हुआ, मोहन ?

मोहन : एक बहुत जरूरी बात याद आ गई। (**चुटकी बजाकर**) मैं जरा जादू का एक काम कर लूं।

वीरू : जादू सीखा है क्या ?

मोहन : ऐसा-वैसा जादू नहीं। बहुत फायदे का जादू सीखा है। और जादू भी क्या, एक मंत्र है !

मितुन : मंत्र ! कैसा मंत्र है, भाई ?

मोहन : (**जैसे मंत्र याद करते हुए**) इस मंत्र से पैसों का पेड़ लगाया जाता है।

[सब बच्चे आश्चर्य से आंखें फाड़कर मोहन को ताकते रह जाते हैं। लूडो एक ओर सरका देते हैं।]

रीता : पैसों का पेड़ ? बात समझ में नहीं आती।

मितुन : बकता है झूठ-मूठ !

मोहन : (**चलने को होता है**) यही सही, तुम लोग खेलो। मैं तो पैसों का पेड़ लगाने जा रहा हूं।

वीरू : (**मोहन की बांह पकड़ कर**) अरे हमें भी बताओ, मोहन ! क्या हम तुम्हारे दोस्त नहीं हैं ?

मोहन : भाई, विश्वास करने की बात है। विश्वास करो तो सब कुछ है, नहीं तो कुछ भी नहीं है।

रीता : हम विश्वास करते हैं, तुम बताओ भी।

विमल : (**उत्सुकता से**) कैसा होगा पैसों का पेड़ ?

मोहन : (**गमले के पौधे की ओर इशारा करता हुआ**) ऐसा ही होगा पैसों का पेड़। इस पौधे में फूल खिलते हैं, उसमें पैसे लगेंगे।

मितुन : (**अश्चर्य और खुशी से**) पैसे लगेंगे !

मोहन : और क्या ? दस पैसे बोओगे तो बीस पैसे के सिक्के लगेंगे। पचास पैसे के सिक्के बोओगे तो रुपए लगेंगे।

सब बच्चे : (**आश्चर्य से**) सच !

मोहन : (**जादूगर की तरह**) पर एक मंत्र पढ़ना पड़ता है।

वीरू : हमें बताओगे मंत्र, मोहन ?

मितुन : बताएगा क्यों नहीं ! मोहन तो हमारा बहुत अच्छा दोस्त है। क्यों, मोहन ?

विमल : फिर तो हमें घर से पैसे मांगने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी।

रीता : यह तो बहुत बढ़िया बात होगी ! (**ताली बजाती है**)

[सब बच्चे तालियां बजा बजा कर कूदने लगते हैं। वे लूडो को एक ओर रख देते हैं।]

मितुन : कहां बोएंगे हम पैसे ?

मोहन : गमलों में बो सकते हो। और इनका पौधा इतनी जल्दी निकलता है कि ताज्जुब में पड़ जाओगे।

रीता : मंत्र तो बताओ।

वीरू : लिख लो मंत्र, नहीं तो भूल जाओगे।

मोहन : (दिमाग पर जोर देते) कौन सा दिन है आज ?

मितुन : मंगलवार !

मोहन : (जादूगर की तरह) बहुत ठीक। बन गया काम। यह पेड़ मंगल के दिन ही लगता है। चार-पांच दिनों में पैसे देने लगता है।

वीरू : मंत्र तो बताओ !

मोहन : (अभिनय करते हुए) हां, हां, अभी लो। (कुछ याद करके) लिखो।

[सब बच्चे कागज-पेंसिल निकाल लेते हैं।]

मोहन : जै पैसा महाराज ! श्री...श्री...श्री पैसा महाराज की जै ! अंड-बंड-फंड। छूमंतर। (हाथ से बच्चों को रोककर) यहां पर फूंक मारना है ! (फूंक मारकर बताता है) इस तरह। पेड़ लगे, पैसा उगे; जै पैसा महाराज ! छूमंतर ! कलकत्ते-वाली, हिमालयवाली, मद्रासवाली देवी की जै ! इसके बाद तीन-चार पल पैसे का ध्यान करना। और आगे लिखो— (कुछ सोचकर) अंड-बंड-फंड। छूमंतर...छूमंतर...छूमंतर। (एक क्षण रुककर) बस इतना सा मंत्र है। अच्छा, मैं अपना पेड़ लगा आऊं।

[मोहन संदूकची लेकर चला जाता है। सब बच्चे एक-दूसरे का मुंह देखने लगते हैं।]

मितुन : मेरे पास बीस पैसे का सिक्का है। (जेब से निकाल कर दिखाता है)

वीरू : मेरे पास तो कुछ भी नहीं है।

रीता : मैं माताजी से अभी मांगकर लाती हूं।

विमल : (चीखकर) पचास पैसे लाना, रीता। हम भी पचास पैसे ले आएं।

मितुन : और क्या ? बोना है तो पचास पैसे का सिक्का बोएं।

वीरू : फिर रुपए लगेंगे। मैं भी ले आऊं।

विमल : पर बोओगे कहां ?

मितुन : रीता से गमले मांग लेंगे। इसके यहां बहुत से गमले खाली पड़े हैं।

वीरू : (स्वीकृति जताकर) हां, यह ठीक है। सब लोग यहां गमलों में पैसे बोएं, देखें, किसका पेड़ जल्दी निकलता है।

[तीनों जल्दी जल्दी भाग जाते हैं। मोहन मंच पर जाता है। गर्व से चारों ओर देखता है।]

मोहन : (चुटकी बजाकर) अब पेड़ लगा कर रहेंगे। (कुछ आहट सुनकर पार्श्व में छुप जाता है।)

[रीता एक गमला लिए हुए आती है। फिर एक एक कर सब बच्चे एक एक गमला उठाए मंच पर आते हैं। वे अपने अपने गमले में पचास पैसे का सिक्का बोते हैं और मंत्र पढ़ते जाते हैं।]

मितुन : रीता ! तूने क्या बोया ?

रीता : पचास पैसे।

वीरू : हमने भी।

विमल : हमने भी।

मितुन : जरा पानी ला, रीता ! पानी तो दे दें।

[रीता पानी लाती है। बारी बारी से सबके गमलों में डालती है। सब अपने अपने गमलों पर खड़िया से अपना नाम लिखकर कूदने लगते हैं।]

रीता : अच्छा, आओ, अब चलें।

मितुन : हम लोग शाम को अपने पौधे देखने आएंगे।

वीरू : ना जी, अभी थोड़ी देर बाद आकर देखेंगे।

विमल : और क्या, मितुन ? मोहन कहता था कि चार-पांच रोज बाद उनमें पैसे लगेंगे। अभी चलें।

[सब बच्चे अपने अपने गमले दुबारा देख कर चले जाते हैं। मोहन जो अब तक छिपा हुआ था, अपनी संदूकची, कुछ पौधे तथा झंडी लिए हुए आता है।]

मोहन : (चारों ओर देखकर) यह रही करामात ! (खुद अपनी पीठ को ठोंकता है) वाह रे मोहन, वाह !

[मोहन एक गमले की मिट्टी हटाकर सिक्का निकालता है, उसे परखता है और चंदे वाली संदूकची में डाल लेता है। इसी तरह वह चारों सिक्के खोद खोदकर संदूकची के हवाले करता है और उनमें एक एक पौधा लगाकर चलने को होता है।]

मोहन : पूरे दो रुपए हो गए चंदे में। सब बुद्धू बन गए। (प्रसन्नता से हंसता है और संदूकची के पैसे खनखना कर चला जाता है)

[चारों बच्चे खिलखिलाते हुए प्रवेश करते हैं। वे गमलों में निकले हुए पौधे देखकर एकदम खुशी से चीख उठते हैं।]

रीता : मेरा पौधा निकल आया। **(ताली बजाकर नाचने लगती है)**

वीरू : मेरा सबसे बड़ा है। **(खूब तालियां बजाता है)**

मितुन : मेरा बड़ा है, नाप लो। **(कूदने लगता है)**

[चारों खुशी में नाचने लगते हैं। तभी मोहन **झंडे** लिए प्रवेश करता है।]

मोहन : बड़ी खुशियां मना रहे हो !

मितुन : हमारे पौधे निकल आए।

मोहन : आओ, तुम लोगों के झंडे लगा दूं। **(सब साथियों के एक एक झंडा लगा देता है)**

वीरू : तुमने ये झंडे लगा दिए। हमने अभी चंदा कहां दिया।

मोहन : **(हंसकर)** तुम लोगों का चंदा हमें मिल गया है। वह हमने जमा भी कर लिया है। आखिर पैसे के पेड़ लगाए थे तुम लोगों ने !

मितुन : **(कुछ समझकर)** क्या मतलब ?

मोहन : **(हंसकर)** कैसी रही ?

रीता : **(सिर हिलाकर खुशी से)** तो तुमने चकमा दिया !

मोहन : हमें एक अच्छे काम के लिए चंदा वसूल करना ही था। इस तरह आसानी से काम हो गया।

वीरू : पर तरकीब खूब सोची। वाह भाई, वाह !

[सब बच्चे दिल खोलकर हंसते हैं।]

मितुन : अच्छा मोहन, आओ अब लूडो खेल लें। **(लूडो बिछाने लगता है)**

[सब हंसते रहते हैं।]

पर्दा गिरता है

राह अनेक : मंजिल एक

□ राधेश्याम 'प्रगल्भ'

पात्र

गोपाल : डाक्टर
कैलाश : इंजीनियर
मोहन : थलसेना में कप्तान
(तीनों बचपन में सहपाठी रहे हैं)
आत्माराम, मनोहरलाल : अध्यापक; जिन्होंने गोपाल, कैलाश और मोहन को छोटी कक्षाओं में पढ़ाया है।
राकेश : आत्माराम का दसवर्षीय पुत्र

[स्थान : आत्माराम के घर का बाहरी का कमरा।
एक बड़ी चौकोर मेज पड़ी है जिसके तीन ओर दो दो कुरसियां पड़ी हैं। एक कुरसी छोड़ सभी के सामने मेज पर चाय का एक एक खाली प्याला तश्तरी में रखा है। आत्मराम एक कुरसी पर बैठे हैं। मनोहरलाल का आगमन।]

मनोहरलाल : नमस्कार बंधु !

आत्माराम : (खड़े होकर) नमस्कार। आइए बंधु, विराजिए।
[मनोहरलाल एक कुरसी पर बैठ जाते हैं। उनके बैठ जाने पर आत्माराम भी बैठ जाते हैं।]

मनोहरलाल : कहिए आत्मारामजी, आज यह जलपान का आयोजन किस खुशी में किया है ?

आत्माराम : आप कैलाश, गोपाल और मोहन को तो जानते होंगे ?

मनोहरलाल : कौन हैं ये लोग ?

आत्माराम : अब से कोई दस साल पहले इन लोगों ने हमारे विद्यालय से आठवीं कक्षा उत्तीर्ण की थी।

मनोहरलाल : कहीं गोपाल वही तो नहीं जो अक्सर कक्षा में प्रथम आता था ?

आत्माराम : हां, वही है। कैलाश और मोहन उसके सहपाठी थे।

मनोहरलाल : कैलाश भी तो पढ़ने में बहुत तेज था न ?

आत्माराम : हां, आप ठीक समझे। कैलाश और गोपाल में एक दो अंकों का

अंतर रहता था।

[राकेश एक प्लेट में कुछ बिस्कुट आदि लाकर मेज पर रखता है। मनोहरलाल को हाथ जोड़कर प्रणाम करता है।]

राकेश : आचार्यजी, प्रणाम।

मनोहरलाल : यशस्वी बनो, चिरायु हो।

[राकेश जाता है।]

आत्माराम : हां, तो ये तीनों ही अपनी अपनी ट्रेनिंग पूरी करके इन दिनों घर आए हुए हैं। कुछ दिन के बाद ही ये अपना अपना कार्य संभाल लेंगे। मैंने आज इन लोगों को चाय पर आमंत्रित किया है। इसलिए आपको भी कष्ट दिया।

मनोहरलाल : अच्छा, ये लोग क्या क्या कार्य संभालेंगे ?

आत्माराम : मोहन तो फौज में कप्तान बनेगा, गोपाल इंजीनियर बनेगा और कैलाश डाक्टर।

[कैलाश और गोपाल आते हैं।]

दोनों : आचार्यजी, प्रणाम।

आत्माराम : यशस्वी बनो, आओ बैठो।

[दोनों साथ पड़ी कुरसियों पर बैठते हैं। बैठते हुए मनोहरलाल को अभिवादन करते हैं। मनोहरलाल दोनों को आशीर्वाद देते हैं।]

मनोहरलाल : कहो भाई, कुशल से तो हो।

गोपाल : आपकी कृपा है, आचार्यजी।

मनोहरलाल : कब आए ?

गोपाल : मुझे आए हुए तो लगभग दस दिन हो गए। कैलाश परसों ही आए हैं।

[मोहन का आगमन। मोहन फौजी वेशभूषा में है।]

आत्माराम : लो भाई, मोहन भी आ गया।

मनोहरलाल : (हंसकर) कप्तान साहब कहिए, कप्तान साहब।

आत्माराम : हमारे लिए तो मोहन ही रहेगा। चाहे कमांडर क्यों न हो जाए।

मोहन : (प्रवेश कर) इसमें संदेह भी क्या ! प्रणाम, आचार्यजी।

आत्माराम : खुश रहो, आओ बैठो, बेटा।

[कैलाश और गोपाल खड़े होकर मोहन से हाथ मिलाते हैं। मोहन के बैठ जाने पर वे भी अपने स्थान पर बैठ

जाते हैं। तभी राकेश आता है। वह कैलाश, मोहन और गोपाल को नमस्कार करता है।]

राकेश : (आत्माराम से) पिताजी, चाय ले आऊं?

आत्माराम : हां, ले आओ।

[राकेश जाता है।]

मनोहरलाल : हां, तो गोपाल बाबू, तुम्हें नौकरी पर कहां जाना है?

गोपाल : दक्षिण भारत में एक स्थान पर बांध बन रहा है। मुझे वहीं जाना है।

आत्माराम : बड़ी दूर जाओगे, भाई!

गोपाल : गुरुदेव, आप ही तो कहा करते थे: 'सबै भूमि गोपाल की।' फिर सारा भारत ही अपना घर है।

मनोहरलाल : तुम्हारा नाम भी तो गोपाल है।

[सब हंसते हैं।]

आत्माराम : गोपाल, मुझे तुम्हारी इस भावना से बड़ा सुख मिला।

[राकेश ट्रे में चाय लेकर आता है। चायदानी मेज पर रख जाता है। आत्माराम चाय को प्यालों में करने के लिए खड़े होते हैं कि मोहन चायदानी उनसे लेकर स्वयं यह काम करता है। सब लोग चाय पीने लगते है।]

मनोहरलाल : क्यों गोपाल, तुमने इंजीनियर बनना क्यों पसंद किया?

गोपाल . आचार्यजी, मैं रोज अखबारों में पढ़ा करता था कि अन्य देश उद्योग में बड़ी उन्नति कर रहे हैं। हमारे देश में कुशल इंजीनियरों की बड़ी आवश्यकता है। प्रत्येक दिन निर्माण के नए नए कार्य होते हैं। बस, मैंने तभी से मन में इंजीनियर बनकर अपने देश की सेवा का संकल्प लिया। लगता है, आप के आशीर्वाद से अब मैं अपने देश की सेवा कर सकूंगा।

आत्माराम : ठीक है। (कैलाश से) अच्छा कैलाश! तुमने डाक्टर बनना क्यों पसंद किया?

कैलाश : गुरुदेव, बचपन में आपने एक कहावत सुनाई थी।

आत्माराम : कौन सी?

कैलाश : जाके पैर न फटी बिवाई, वह क्या जाने पीर पराई।

आत्माराम : हां, फिर?

कैलाश : आचार्यजी, एक बार मैं बहुत बीमार पड़ा। तब मुझे अनुभव हुआ कि रोगी को कितनी पीड़ा होती है। डाक्टर कितनी

सहानुभूति से रोगी का इलाज करता है।

मोहन : तो तुम्हारी बीमारी ने तुम्हें डाक्टर बनाया ?

कैलाश : हां ! एक बार गोपाल बहुत बीमार हुआ था। मुझे इसकी सेवा करने का अवसर मिला। इसकी तीमारदारी और सेवा में मुझे बड़ा सुख मिलता था। बस, तभी से मैंने निश्चय कर लिया था कि डाक्टर बनूंगा और अपने देश के रोगी भाइयों का इलाज कर देश की सच्ची सेवा करूंगा।

आत्माराम : तुम्हारी नियुक्ति कहां हुई है ?

कैलाश : एक गांव में।

आत्माराम : तुम गांव में रह सकोगे ? वहां जाना तुम्हें बुरा तो नहीं लग रहा ?

कैलाश : गुरुदेव ! यह आप क्या कह रहे हैं ? मुझे प्रसन्नता है कि मुझे गांव के अस्पताल का इंचार्ज बनाया गया है। गांव में ही जाकर तो मैं जनता जनार्दन की सच्ची सेवा कर सकूंगा।

आत्माराम : तुम ऐसा मानते हो कैलाश, यह बहुत अच्छा है।

[सब लोग चाय समाप्त करते हैं।]

मनोहरलाल : मोहन, तुमने फौज में जाना क्यों स्वीकार किया ?

मोहन : यह तो आप जानते ही हैं कि पढ़ाई-लिखाई में मैं कभी भी बहुत आगे नहीं रहा। हां, बहुत पीछे भी नहीं रहा। पर खेल-कूद में मैं सबसे आगे था।

आत्माराम : (**मनोहरलाल से**) याद नहीं, कितनी ही दौड़ों में इसे जिले में सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार मिला था।

मनोहरलाल : हां, मुझे ध्यान है।

मोहन : जब मैं इतिहास में भारत पर विदेशियों के आक्रमण की कहानी पढ़ता था, तब मेरा खून खौलने लगता था। मैंने निश्चय किया कि मैं सेना में भरती होऊंगा और अपनी जन्म-भूमि की रक्षा में मिट जाने में ही कल्याण मानूंगा।

मनोहरलाल : यह तो बड़ी ही पुनीत भावना है। तुम लोगों से मिलकर आत्मा को बड़ा सुख मिला। तुम जैसे युवकों की ही तो आज देश को आवश्यकता है। तुम लोग अलग अलग रूप में देश की सेवा करो।

आत्माराम : हां, तुम्हारी राहें अवश्य अलग अलग हैं, पर मंजिल एक है—देशसेवा।

कैलाश : विश्वास कीजिए, आचार्यजी। हम लोग ऐसा कोई भी कार्य

नहीं करेंगे जिससे आपके नाम को बट्टा लगे।

आत्माराम : हम लोगों को तुमसे यही आशा है।

मनोहरलाल : आज देश को ऐसे ही युवकों की आवश्यकता है जो मिल-जुल-कर रहें, सच्चे दिल से देश की सेवा करें।

मोहन : अच्छा, अब आज्ञा दें।

आत्माराम : अच्छा, पर जब कभी इधर आओ, मिलना अवश्य। ईश्वर की कृपा से तुम खूब उन्नति करो।

[कैलाश, मोहन और गोपाल मनोहरलाल तथा आत्माराम को प्रणाम करके जाते हैं।]

पर्दा गिरता है

(१९६४)

हारिए न हिम्मत

□ राधेश्याम 'प्रगल्भ'

पात्र

कैलाश : कक्षा छह का छात्र

अरविंद : कैलाश का बड़ा भाई

श्यामचरण : कैलाश का पिता

[स्थान : कैलाश के घर का एक कमरा।

कैलाश एक कुरसी पर उदास बैठा है। अरविंद भीतर आता है। अरविंद के आने पर कैलाश खड़ा होता है।]

कैलाश : (खड़े होते हुए) आइए, भाई साहब। (दूसरी कुरसी की ओर इशारा करते हुए) बैठिए।

अरविंद : (कुरसी जरा आगे खिसकाकर बैठते हुए) अरे, पांच बज गए। आज तुम खेलने नहीं जाओगे ?

कैलाश : नहीं, भाई साहब।

अरविंद : क्यों ?

कैलाश : मन नहीं करता।

अरविंद : लेकिन आखिर क्यों ?

कैलाश : मुझे अपनी सफलता पर खीझ आती है। कोई हमदर्दी भी प्रकट करता है, तो लगता है जैसे हंसी उड़ा रहा हो। खेलने जाऊंगा तो साथी कुछ न कुछ कहेंगे ही।

अरविंद : तो तुम कभी घर से नहीं निकलोगे क्या ? और फिर असफलता कैसी ? कोई फेल तो तुम हुए नहीं हो। प्रथम नहीं आए, दूसरा स्थान रह गया, तो इसमें इतनी चिंता की क्या बात है !

कैलाश : आप कहते हैं, चिंता की क्या बात है। मुझे लगता है जैसे मेरी बहुत बड़ी चीज मुझसे छिन गई हो।

अरविंद : सो तो ठीक है। पर चिंता करने से क्या बनता है। तुम्हें तो इससे सीख लेनी चाहिए और अभी से परिश्रम करना चाहिए। तुमने खरगोश और कछुए की दौड़ वाली कहानी तो सुनी होगी ?

कैलाश : सुनी है भैया। आपका मतलब है, हमें भी कछुए की तरह

लगातार काम करना चाहिए। थोड़ी सी सफलता मिलने पर हम बीच में सुस्ताने न बैठ जाएं।

अरविंद : हां, यही बात है। थोड़ा थोड़ा नियमित रूप से पढ़ो। रोज का काम रोज खत्म कर लो। फिर देखना कि कछुए की तरह तुम भी तेज दौड़ने वाले खरगोश से बाजी ले जाओगे।

कैलाश : पर मेरा मन तो साथ ही नहीं देता। सभी कुछ सूना सूना सा लगता है। मानो मेरे मन में अब कोई उमंग ही न रही हो।

अरविंद : बावला कहीं का ! अरे, मन के हारे हार है, मन के जीते जीत। दिल में हौसला बनाए रहो। हौसला अगर पस्त हुआ तो आदमी गया काम से।

कैलाश : पर, अब मैं पिताजी के सामने क्या मुंह लेकर जाऊंगा ? वह पूछेंगे तो किस मुंह से कहूंगा कि प्रथम नहीं आ सका ?

[द्वार से एक स्वर 'कैलाश'। फिर खांसने की आवाज।]

कैलाश : लीजिए, पिताजी आफिस से आ गए। अब ?

अरविंद : तुम चिंता मत करो।

[श्यामचरण का प्रवेश। कैलाश और अरविंद दोनों खड़े हो जाते हैं। कोई कुछ बोलता नहीं।]

श्यामचरण : (एक ओर से कुरसी खींचकर बैठते हुए) अरे, तुम लोग मौन क्यों हो ? (कैलाश और अरविंद बैठ जाते हैं) आज तो कैलाश की परीक्षा का परिणाम सुनाया गया होगा। प्रथम आया ?

अरविंद : वही बात चल रही थी, पिताजी। कैलाश को दूसरा स्थान मिला है। वह बहुत दुखी है। खेलने भी नहीं गया।

श्यामचरण : ऐसे कैसे काम चलेगा, कैलाश ! तुमने सुना होगा, 'अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गईं खेत'। एक बड़ी पुरानी कहावत है, 'बीती ताहि बिसारि देउ, आगे की सुधि लेउ।'

अरविंद : यही तो मैं कह रहा था, पिताजी। पर यह कहता है कि इस असफलता से इसका मन मर चुका है।

श्यामचरण : नादान है। नहीं जानता कि असफलता को हार मान लेना ही तो भूल है। (कैलाश से) सुनो, कैलाश ! 'गिरते हैं शहसवार ही मैदाने जंग में।' इसलिए सब बातों को भुलाकर आगे की ओर देखो।

कैलाश : पिताजी ! मैंने अपने पैरों में आप कुल्हाड़ी मारी है। मैंने तब आपकी बात नहीं मानी। अगर रोज ही थोड़ा थोड़ा पढ़ लेता,

तो आज यह दिन नहीं देखना पड़ता।

श्यामचरण : तुम ऐसा महसूस करते हो, यह बहुत अच्छा है। इसलिए बीती असफलता की चिंता छोड़ आगे की सफलता के लिए प्रयास करो .

अरविंद : फिर पिताजी, भूल करना तो मनुष्य का स्वभाव है। आखिर भूल तो इनसान से ही होती है।

श्यामचरण : ठीक है। एक महान व्यक्ति का कथन है, 'मैं रोज रोज भूल करूं, पर किसी भूल को दोबारा न करूं।'

अरविंद : बहुत अच्छी बात है। सुना कैलाश, पिछली भूल को दोहराना ही सबसे बड़ी भूल है।

श्यामचरण : वास्तव में भूलों से नसीहत मिलती है। एक कवि का कहना है :

मुझको अपनी हर गलती से प्यार है,
हर नाकामी देती राह बुहार है।
हर गलती है मुझको रही संवारती,
हर आफत है मुझको रही उबारती।

अरविंद : बिलकुल ठीक है। हमें अपनी भूलों से नसीहत लेनी चाहिए, न कि उन पर रोना चाहिए। इसलिए कैलाश तुम आगे की सोचो और मन लगाकर मेहनत करो। देख लेना तुम सदैव ही सफल रहोगे।

कैलाश : पर मेरा मन...

श्यामचरण : **(उठकर कैलाश के गाल पर प्यार से हलकी सी चपत लगाते हुए)** पागल कहीं के ! बस, यह समझ लो कि संसार में जिन लोगों ने उन्नति की है, उनका एक उसूल रहा है।

कैलाश : क्या, पिताजी ?

श्यामचरण : हारिए न हिम्मत, बिसारिए न राम।

कैलाश : ठीक है, पिताजी। मैं भी अब हिम्मत से काम लूंगा और घोर परिश्रम करूंगा। वह भी नियमित रूप से।

पर्दा गिरता है

विपति कसौटी जे कसे

□ राधेश्याम 'प्रगल्भ'

पात्र

गोपाल	:	कक्षा छह का छात्र
कैलाश	:	गोपाल का सहपाठी
हरिहरनाथ	:	गोपाल का पिता
रामदीन (रामू)	:	नौकर

[स्थान : गोपाल के घर का एक कमरा।

एक चारपाई बिछी है जिस पर गोपाल लेटा है। उसके सिर से पट्टी बंधी है। निकट ही रखी मेज पर दवा की कुछ शीशियां, चम्मच, एक-दो गिलास आदि रखे हैं। एक ओर दो कुरसियां पड़ी हैं। नौकर रामदीन एक शीशी में से थोड़ी सी दवा एक चम्मच में उलटता है।]

रामदीन : लीजिए छोटे बाबू, यह दवा पी लीजिए।

गोपाल : लाओ। (**बैठता है। रामदीन से चम्मच से दवा लेता है। फिर लेट जाता है।**)

[हरिहरनाथ का प्रवेश]

हरिहरनाथ : बेटा गोपाल ! (**कुरसी पर बैठता है**)

गोपाल : (**धीमे स्वर में**) जी पिताजी।

हरिहरनाथ : कहो, अब तुम्हारी तबीयत कैसी है ?

गोपाल : बिलकुल ठीक है, पिताजी। आपने मुरदे में जान फूंक दी है। वरना मैं तो...

हरिहरनाथ : (**बात काटकर**) ऐसा मत कहो, बेटा। तुम्हीं तो मुझ बूढ़े की लाठी हो। तुम्ही तो मेरी आंखों की रोशनी हो। भगवान का लाख लाख धन्यवाद है कि उसने मेरी सुन ली।

रामदीन : पुण्य की जड़ हरी होत है, सरकार। आप जैसे धर्मात्मा को ईश्वर कोउ दुख दैबिंगे का ?

हरिहरनाथ : तुम्हारी मेहनत सफल हो गई, रामू। गोपाल आज पंद्रह दिन में ठीक ठीक बातें कर सका है। मैं तो घबरा गया था।

रामदीन : बाबूजी, मारनहारे ते बचावन वारो बड़ो होत है। (**हाथ आकाश की ओर फैलाकर**)वो नीली छतरी वारो बड़ो दयालु अै।

हरिहरनाथ : गोपाल !

गोपाल : जी, पिताजी।

हरिहरनाथ : बेटा, अगर तुम कहो तो मैं आज आफिस चला जाऊं ! जल्दी ही लौट आऊंगा।

गोपाल : जल्दी आने की क्या जरूरत है, पिताजी ! अब तो मैं बिलकुल ठीक हूं। आप आफिस का काम देखें। मेरे कारण पंद्रह दिन से आप घर पर ही रहे हैं। फिर यहां रामू काका हैं तो सही।

रामदीन : हां सरकार, आप कौनू फिकरि नाय करिबो। मैं छोटे बाबू को पूरो खयाल रखूंगो।

हरिहरनाथ : अच्छा तो मैं चलूं। देखो दवा ठीक समय पर देते रहना।

[हरिहरनाथ जाता है।]

गोपाल : रामू काका ! खड़े क्यों हो ? बैठ जाओ न। मेरा मन कुछ बातें करने को कहता है।

[रामदीन एक मूढ़ी खींच कर उस पर बैठता है।]

गोपाल : (**बैठा होकर**) अरे, कुरसी पर बैठो न।

रामदीन : नाहिं, छोटे बाबू। मैं ठीक हूं, पर आप लेट जाइए। कमजोरी बढ़ेगी।

गोपाल : नहीं, काका ! पंद्रह दिन से लेटा ही तो रहा हूं। कमर भी दुखने लगी है। ऐसा करो, एक मसनद मेरी कमर के पीछे लगा दो।

[रामदीन जाता है, मसनद लेकर लौटता है। उसे गोपाल की पीठ से लगाकर स्वयं मूढ़ी पर बैठ जाता है।]

गोपाल : (**संभलकर**) हां, अब ठीक है।

रामदीन : छोटे बाबू, आप कौन बात कहिबो चाहत हे ?

गोपाल : रामू काका, मुझे एक बात सोचकर बड़ा दुख हो रहा है।

रामदीन : कौन बात, बाबू ?

गोपाल : तुम महेश को तो जानते हो न ?

रामदीन : काहे नाय ? बेई न जो दिन-रात आपके संग खेलबो करत हे !

गोपाल : हां, काका, वही हर समय मेरे साथ रहता था। पर जब से मैं बीमार पड़ा हूं उसके दर्शन के भी लाले पड़ गए। मैंने उसे बुलाया भी, पर...

रामदीन : (**हंसकर**) महेश बाबू मतलब के मीत निकले, छोटे बाबू।

गोपाल : पर हर आदमी महेश नहीं है, काका। कैलाश को भी तुम

जानते होगे ?

रामदीन : बेही न जो इहां रोज आवत रहे।

गोपाल : हां, काका।

रामदीन : बड़े भले लरिका हैं, बाबू। ईश्वर उनकी उमर करे।

गोपाल : देखो काका, कैलाश से पढ़ाई के मामले में मेरी हमेशा दुश्मनी रही। हम दोनों में होड़ लगी रहती थी, कौन प्रथम आए। वह मुझे अपना शत्रु समझता था। पर मेरी बीमारी में मेरी जितनी सेवा उसने की है, वह तुम जानते ही हो।

रामदीन : बाबू, हमारे पुरखान ने बड़ी सोच-समझ कै बातें कही हैं। रहीम की कहन है—'रहिमन वे ही मौत हैं, भीर परे ठहराय'।

[द्वार खटखटाने की आवाज]

गोपाल : देखो तो काका, कौन है ?

[रामदीन जाता है। थोड़ी देर बाद रामदीन कैलाश के साथ लौटता है।]

कैलाश : (आते हुए) कहो गोपाल, कैसी तबीयत है ?

गोपाल : ठीक है। आओ बैठो।

[कैलाश कुरसी पर बैठ जाता है। रामदीन खड़ा रहता है।]

कैलाश : बैठो न, रामदीन काका।

[रामदीन मूढ़ी पर बैठ जाता है।]

गोपाल : कैलाश, तुम्हारी उम्र बहुत बड़ी है। तुम्हारी ही चर्चा हो रही थी।

कैलाश : मेरी बुराई कर रहे होगे।

गोपाल : नहीं, तुम्हारा उदाहरण देकर काका कह रहे थे :
रहिमन वे ही मौत हैं, भीर परे ठहराय।

कैलाश : (हंसकर) समझा। (रामदीन से) पर काका, इसमें पहल तो गोपाल ने ही की है। मैं तो इसे अपना शत्रु ही समझता था।

रामदीन : (आश्चर्य से) अच्छा !

कैलाश : हां, एक दिन जब फुटबाल खेलते हुए मेरी टांग में चोट लग गई। तब गोपाल ने अपनी कमीज फाड़ कर मेरे पट्टी बांधी। मुझे अस्पताल ले गया।

रामदीन : जे तो छोटे बाबू को कर्तव्य हो, भइया !

कैलाश : बस, तभी से मेरी आंखें खुल गईं। मैं तो बस तभी से एक बात को निबाह रहा हूं।

गोपाल : कौन सी बात को ?

कैलाश : रहिमन धागा प्रेम का,
मत तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर ना जुरै,
जुरै गांठ परि जाय।

रामदीन : कैलाश बाबू, तुमने तो रोम रोम सुखी कर दियो। तुम दोनोंई सांचे मीत हो।

कैलाश : सो कैसे, काका ?

रामदीन : बाबू, 'विपति कसौटी जे कसे, ते ही सांचे मीत।' इस बात को तो आप मानेंगे कि छोटे बाबू ने मुसीबत के समय आपका साथ दिया। आपने भी उनके दुख में हाथ बंटाया। वास्तव में सच्ची मित्रता इसी को कहते हैं।

कैलाश : काका, आपने तो बहुत अच्छी कहावत सुनाई है। एक बार फिर बताएं न ?

रामदीन : 'विपति कसौटी जे कसे, ते ही सांचे मीत।' जो मुसीबत में काम आता है, वही सच्चा मित्र है।

कैलाश : सच कहते हो, काका! आजकल तो मित्र लोगों पर भी वही वाली कहावत लागू होती है—मुंह में राम, बगल में छुरी।

रामदीन : तबहि तो बड़े लोगन ने कही है छोटे बाबू, 'विपति कसौटी जे कसे, ते ही सांचे मीत!'

पर्दा गिरता है

सयानी गुड़िया

□ डा० प्रभाकर माचवे

पात्र

गुड़िया		
आकाश	:	पिता
वाणी	:	माता
नं० १	:	मराठी लड़का
नं० २	:	गुजराती लड़का
नं० ३	:	तमिल लड़का
नं० ४	:	उर्दू बोलने वाली लड़की

[सब बच्चे मिलकर गाते हैं]

मेरी गुड़िया बड़ी सयानी,
अच्छी रानी !
ना खाये दाना, ना पीये पानी।
ना इसके नाना, ना इसके नानी।

नं० ४ : क्या नाम है इसका ? गुड़िया ?

नं० १ : नाही, नाही, बाहुली।

नं० २ : ना रे ना, रमकड़ु।

नं० ३ : इल्लै, बोम्मै।

[नेपथ्य से कई आवाजें : बोम्मलु, मानीष, पुतली, पुतूल, गुड्डी...कोलाहल]

आकाश : डाली कहो इसे, झगड़ा मिटा।

वाणी : संस्कृत पुत्तुलिका सबके लिए सर्वोत्तम होगा।

नं० ४ : बोलना मुश्किल ! पुतली ठीक है।

आकाश : क्या सिंहासनबत्तीसी वाली पुतलियां ले बैठे हो ! माडर्न बनो, बच्चो ! 'वाकी-टाकी' कहो, 'वीपी-स्लीपी' कहो।

नं० १ : बोलती-चलती, रोती-सोती क्यों नहीं ?

नं० ४ : हंसती, गाती, नाचती क्यों नहीं ?

[सब मिलकर गाते हैं]

मेरी गुड़िया बड़ी सयानी !
इसे दूध की नहीं जरूरत,
इसे अन्न की नहीं शिकायत।
इसका राशन कार्ड नहीं है,
इसका कोई लार्ड नहीं है।
यह है अपने मन की रानी !

आकाश : देखो बच्चो ! हम अब आप सबको गुड़िया का इतिहास बताते हैं। रोम में प्राचीनकाल के जो अवशेष मिलते हैं, उनमें तीन हजार बरस पुरानी एक गाड़ी मिली है। मोहनजोदड़ो में एक ऐसा गुड्डा पाया गया है, जो—

[सब बच्चे उबासियां देते हैं]

नं० ४ : हम यह सब रेडियो से सुन चुके हैं। इससे क्या होगा ?

वाणी : बालको, अपने से बड़े या गुरुजनों की बात सुनो। जीवन में आगे काम आएंगी। सदुपदेश के बारे में संत तुलसीदास ने कहा है : 'बालक बंदर एक समाना।'

[सब बच्चे कोलाहल करते हैं]

—मुझे चाहिए वह गुड़िया।
—मेरी है।
—म्हारी छे।
—माझी आहे।
—आमार पुतूल।
—माय डाल !

गुड़िया : (**एकदम बोलने लगती है**) मैं अकेली हूं ! तुम सब मेरे हाथ-पैर तोड़-मरोड़कर मुझे जीने नहीं दोगे ? मैं इस घर में नहीं रहूंगी।

[रूठकर चली जाती है]

नं० १ : बाबा, जाइ दे। जाने दो उसे। मैं तो वही अमरीका वाला दूर से आसमान में जाकर बम जैसा फटनेवाला राकेट खिलौना लूंगा।

आकाश : अमरीका ने वैसे खिलौने भेजना बंद कर दिए।

नं० २ : जावा दे ने ? हूं तो मैना लूंगी।

वाणी : मैना भी रूस के मेहमान आए थे, उनको दे दी। वह अच्छा खिलौना नहीं है बच्चो ! वह अपनी बात नहीं बोलता। जैसे रटा दो, वैसे ही बोलता है। एक मैना को सिखाया : 'तुम

सयानी हो', वह सबको कहती थी : 'तुम सयानी हो !

नं० ३ : आई वुड लाइक टु प्ले विथ ए डाग (मैं कुत्ते से खेलना चाहूंगा)।

आकाश-वाणी : (मिलकर) नो, नो, उसे दूध देना पड़ेगा, डाग-बिस्किट देने होंगे। वह बहुत मंहगा खेल का साथी है। ऐसा कुछ सोचो, जिसमें कम खर्च बालानशीन बात हो।

नं० ४ : मैं एक छोटी मोटर से खुश हो जाऊंगी।

आकाश : नहीं, नहीं। वह तो बिलकुल नहीं चलेगी। उसमें लगता है पेट्रोल। और तेल आजकल दुनिया में ही कम हो गया है।

वाणी : बच्चो, मैं तुम सब लोगों के लिए एक मनोरंजन बताती हूं। जाने दो, गुड़िया गई तो गई।

सब बच्चे : (कुतूहल से) वह क्या है ?

वाणी : हम सबके लिए एक रेडियो सेट ले आते हैं।

बच्चे : नहीं, नहीं। वह तो न लाने पर भी हर घर से सबेरे शाम 'हरे कृष्णा हरे राम' सुनाई देता ही है। जो सब लोग रखते हैं, उससे क्या खेलना ?

आकाश : फिर ऐसा करते हैं। मैं और मम्मी दोनों मिलकर 'आकाश-वाणी' बन जाते हैं। मम्मी तो ऐसी गुड़िया है, जो बहुत सयानी है। वह कभी कोई शिकायत नहीं करेगी। उसके साथ तुम सब खेल सकते हो।

वाणी : और वह रूठकर घर से कहीं जा भी नहीं सकती।

[सब बच्चे मिलकर गाते हैं]

बड़ी सयानी गुड़िया रानी,
बड़ी सयानी चिड़िया रानी।
खाती वह दाना और पानी।
नहीं मारती, नहीं डांटती,
गौ है वह बस वत्स चाटती।
नहीं चाहिए उसे जरा भी भूसा-पानी।

[एक चिड़िया आती है। उड़ जाती है। एक गाय दूर से रंभाती है।]

गुड़िया : (लौट आती है) बच्चो, मैं आ गई। बाहर मुझे आजादी नहीं थी, इस घर में जैसी है। आओ खेलो।

पर्दा गिरता है

बचत आंदोलन

□ आनंदप्रकाश जैन

पात्र

विपिन : पंद्रह वर्षीय लड़का
बच्चू : तेरह वर्षीय लड़का
गब्बू : चौदह वर्षीय लड़का
गप्पू : बारह वर्षीय लड़का
आइसक्रीम वाला

[एक अच्छा-भला ड्राइंगरूम। दीवारों पर नेताओं के चित्र टंगे हैं। एक कोने की मेज पर रेडियो रखा है। कमरे के बीचोबीच तीन सोफे इस ढंग से रखे हैं, मानो कोई छोटी-मोटी मीटिंग होने जा रही हो। बीच में चाय की लंबी मेज है। मेज पर एक गुलदस्ता रखा है। रेडियो के सामने वाले कोने में एक वैसी ही मेज और रखी है, जिस पर अनेक पुस्तकें बिखरी पड़ी हैं। उन्हीं के बीच में एक टाइमपीस रखी है। विपिन और बच्चू व्यस्त भाव से प्रवेश करते हैं।]

बच्चू : **(सोफे पर गिरते हुए)** समझता क्यों नहीं? यही बात तो कल हेडमास्टर साहब ने कही थी।

विपिन : **(उसके सामने ही सोफे पर बैठते हुए)** तो फिर हमारा भी एक कर्तव्य हो जाता है।

बच्चू : लेकिन हम कर ही क्या सकते हैं?

विपिन : अरे, हमें वे काम करने चाहिए, जो बच्चों को करने चाहिए। मैंने निश्चय किया है कि हम एक ऐसा बचत आंदोलन चलाएं कि...कि सारा देश थर्रा उठे।

बच्चू : सारा देश थर्रा उठे **(जोर से हंसता है)** हा हा हा हा हा। वाह वाह! यह डायलाग कहां सुन लिया था?

विपिन : **(लज्जित होकर)** मेरा मतलब...मेरा मतलब था कि हम लोग मिलकर एक ऐसा बचत आंदोलन करें कि खूब सारा धन इकट्ठा हो जाए।

गब्बू : **(लंगड़ाता हुआ प्रवेश करता है और पलवाई से ही तालियां बजाता चला आता है)** अच्छा तो कोई बचत आंदोलन चल रहा है। वाह भई, वाह! मगर किसलिए? कहीं पिकनिक-

विकनिक का प्रोग्राम बनाया है क्या ? (**धम्म से सोफे पर पसर जाता है**)

विपिन : (**फिर बैठता हुआ**) अब इस चोंचू को फिर से समझाओ सारी बातें। आंदोलन चलाने में यही तो सबसे बड़ी मुसीबत होती है। एक को समझाओ, दो को समझाओ, तीसरे फिर भी गैर-हाजिर।

गब्बू : अबे, तो तूने हमें समझ क्या रखा है ? हम पहले ही इतनी बचत कर चुके हैं कि तुम दोनों की आंखें फटी की फटी रह जाएं।

विपिन : सच ? अरे गब्बू, तू तो भई, सबका उस्ताद निकला। कितनी बचत कर डाली तूने ?

गब्बू : (**हंसते हुए**) ह् ह् ! याद नहीं, मास्टरजी ने क्या कहा था ? दुनिया में कोई चीज बेकार नहीं होती। मैंने अस्सी टूटी निबें, चार बिगड़े हुए फाउनटेनपेन, बीस फटी-पुरानी जुराबों के जोड़े, नौ सैंडिलें, जिनमें से सात ऊंची एड़ी की हैं और...

[विपिन और बच्चू बीच में ही ठहाका लगा लगाकर हंसने लगते हैं।]

विपिन : बस, बस, रहने दे, रहने दे।

बच्चू : तुम अपने खाने के पैसों का क्या करते हो, गब्बू जी ? उसकी बात करो।

गब्बू : मैं अपने खाने के पैसों से खालिस स्वदेशी वस्तुएं खरीदकर खाता हूं। जैसे आइसक्रीम, खट्टी-मिट्ठी गोलियां, और जी, सिंघाड़े।

[फैशन के पुतले पप्पूजी बने-ठने आते हैं और वहीं से जीभ चटखारते चले आते हैं।]

पप्पू : (**जीभ चटखारते हुए**) अरे भई, आज क्या उबलते हुए सिंघाड़ों की दावत हो रही है ? मुझे तो खुशबू बाहर से ही आने लगी थी, मालूम है ?

विपिन : लो, ये आ गए हाथी की नाक वाले, इन्हें सिंघाड़ों की सूंघ बाहर से ही आ रही थी, और वह भी उबले हुओं को।

पप्पू : (**अकड़कर अपने फैशन की बहार दिखाते हुए**) भाइयो, मैं आप लोगों जैसा कजूस-मक्खीचूस नहीं हूं, उबलते हुए सिंघाड़े मेरी जेब में ही थे और मैंने अभी अभी उनका आखिरी छिल्का इस कमरे के दरवाजे के बाहर फेंका है। मैं तो आप लोगों की

परीक्षा ले रहा था !

गब्बू : और हमारा जी ललचा रहा था ?

विपिन : ओ पप्पू के बच्चे, चुपचाप बैठ जा। यहां बचत आंदोलन चल रहा है और तू सिंघाड़ों की गप्प हांक रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस साल तो इस साल, पिछले साल भी सिंघाड़ा तुझे चखने को नहीं मिला।

पप्पू : (**बैठते हुए**) ले, ले, ले, मेरा मुंह सूंघ। सूंघता है ?

गब्बू : ऐसा न करियो, विपिन। नहीं तो दो दिन तक तबीयत खराब रहेगी। यह सुबह को बिना मंजन किए ही चाय पीता है, बिस्तरे में पड़ा पड़ा।

पप्पू : अह, तुझे चाय नसीब भी होती है। अरे, बैड-टी तो आजकल का फैशन है, फैशन। मालूम ?

विपिन : सुनो, सुनो, इन बेकार की बातों से कोई फायदा नहीं। हम लोग जिस महत्वपूर्ण काम के लिए इकट्ठे हुए हैं वह तो भूले ही जा रहे हैं। देश के बच्चे बच्चे का कर्तव्य है कि बचत करे।

पप्पू : यह तो सब सुन लिया। सब नेतागिरी की बातें हैं। बचत कैसे की जाती है...मालूम ?

बच्चू : विपिन ने एक जनरल बात कही है। ठोस सुझाव मैं देता हूं। सबसे पहले हमें आइसक्रीम का त्याग कर देना चाहिए।

गब्बू : इतनी गरमी में ! बाप रे ! (**दौड़कर मेज पर से एक कापी उठा लेता है और पंखा झलने लगता है**)

पप्पू : हूं ! आइसक्रीम छोड़ दोगे, तो मुंह से लार टपकती फिरेगी, गब्बूजी ! बच्चों के अर्थशास्त्र में आइसक्रीम कितनी बड़ी मद है...मालूम ?

गब्बू : भई, आइसक्रीम का टैंप्टेशन तो बहुत बड़ा होता है। कोई और तरकीब सोचो न।

विपिन : जो भी हो, आज से हमारी पार्टी की आइसक्रीम एकदम बंद।

सब : (**विपिन को छोड़कर**) बंद ? मर गए।

विपिन : अगर हमारी पार्टी का कोई भी सदस्य किसी आइसक्रीम वाले के पास खड़ा देखा गया, होंठ चाटता पाया गया, यहां तक कि किसी आइसक्रीम खाते हुए लड़के-लड़की के पास मुंह बाए खड़ा भी मिला तो उसे पार्टी से खारिज कर दिया जाएगा।

[पृष्ठभूमि से आइसक्रीम वाले की घंटी सुनाई पड़ने लगती है।]

आइसक्रीमवाला : (**पुकारकर जोरदार आवाज में**) पिस्ते वाली, मसाले वाली, दूध वाली, बादामों वाली आ...इ...स...क्री...म ।

[विपिन को छोड़कर सभी की हालत खस्ता होने लगती है। कोई इधर-उधर झांकने लगता है, कोई पैर हिलाने लगता है, कोई छत की तरफ देखने लगता है ।]

पप्पू : आइसक्रीम में कितना विटामिन होता है...मालूम ?

गब्बू : और दुश्मनों से लड़ने के लिए हमें विटामिनों की कितनी बड़ी आवश्यकता है...मालूम ?

बच्चू : और दूसरी पार्टियों के बच्चे हमें कितना चिढ़ा चिढ़ाकर आइसक्रीम उड़ाया करेंगे...मालूम ?

[पृष्ठभूमि से फिर घंटी बजने और आइसक्रीम वाले के पुकारने की आवाजें आती हैं ।]

आइसक्रीम वाला : दूध वाली, पिस्ते वाली, बादामों वाली आ...इ...स...क्री...म... ।

[थोड़ी थोड़ी देर बाद आवाज बराबर आती रहती है ।]

विपिन : यह जीभ का चटोरपन ही सारी राष्ट्रीय बुराइयों की जड़ है। एक बार निश्चय करके वीर बालक पीछे नहीं हटते। अरे, जरा याद तो करो कि ध्रुव ने किस प्रकार अपनी प्रतिज्ञा निभाई थी, हकीकतराय ने किस तरह अपने प्राणों का बलिदान किया था। भरत ने किस तरह शेरनी के दांत गिने थे, वे सब क्या आइसक्रीम खाया करते थे ? (**जोर से**) बस, अब जो निश्चय हो चुका, सो हो चुका ।

पप्पू : सबसे पहले दुखती रग को पकड़ने से क्या होता है...मालूम ? अरे, और भी तो कई मदें हैं। जैसे, हम चाहें तो बस में न जाकर स्कूल पैदल ही जाया करें। इससे सुबह ही सुबह का टहलना भी हो आएगा और पैसों की बचत भी होगी ।

बच्चू : ठीक है, ठीक है। मैं रोज एक कापी खरीदता हूं। अब मैं सवालों का अभ्यास स्लेट पर कर लिया करूंगा और हफ्ते में केवल एक कापी खरीदा करूंगा। इस तरह से चवन्नी रोज बचा सकता हूं ।

गब्बू : मैं हर महीने एक नई किताब खरीदता हूं। अब से मैं पुरानी किताब पर जिल्द चढ़वा लिया करूंगा और इस तरह दो रुपए महीना बचा लूंगा ।

विपिन : (**आइसक्रीम वाले की आवाज को ध्यान से सुनकर दहाड़ते

हुए) बस, बस, बकवास बंद। इस तरह कोई बचत नहीं हो सकती। मैं तुम लोगों का नेता हूं। मैं जो कहता हूं वह तुम्हें करना पड़ेगा। ध्यान रखो, मैं महीने में कितनी बार तुम लोगों की चकाचक दावतें करता हूं। अब तुम लोग एक एक दावत को तरसोगे।

सब : **(विपिन को छोड़कर)** ठीक है, ठीक है—बस प्रस्ताव पास। आज से बच्चा पार्टी का कोई सदस्य अपने पैसे से आइसक्रीम नहीं खाएगा। बच्चा पार्टी—जिंदाबाद! नेताजी विपिन—जिंदाबाद!

विपिन : अच्छा तो भाइयो, प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास किया जाता है।

पप्पू : लेकिन इस तरह अगर आइसक्रीम बेचने वालों को खुले आम सड़क पर घूमने दिया जाएगा, तो क्या होगा...मालूम?

गब्बू : पप्पू की जीभ पानी देने लगेगी...हॅ हॅ हॅ हॅ हॅ!

बच्चू : पप्पू, इस आइसक्रीम वाले को पकड़कर ला। हम इसका इस मुहल्ले में घूमना छुड़ा देंगे। फिर न रहेगा बांस, न बजेगी बांसुरी।

[पप्पू एकदम उछलकर बाहर की ओर भागता है। विपिन 'अरे, सुन तो, सुन तो' कहता ही रह जाता है।]

गब्बू : नो बेकिंग, विपिन! कंप्लीट प्रोहीबिशन फार आइसक्रीम।

बच्चू : आई सेकिंड इट। जब तक आइसक्रीम वालों को सड़क से गायब नहीं किया जाएगा, तब तक हमारे देश के बच्चों का कल्याण नहीं हो सकता।

[पप्पू आइसक्रीम के ठेले को धकेलता हुआ लाता है। आइसक्रीम वाला पीछे पीछे शान से चला आ रहा है। मंच पर आते ही वह पुकार लगाता है।]

आइसक्रीमवाला : **(दर्शकों की ओर देखकर)** दूधवाली, पिस्तेवाली, मसाले वाली, बादामोंवाली आ...इ...स...क्री...म **(फिर पात्रों की ओर देखकर)** हां, बाबूजी, कौन कौन सी आइसक्रीम निकालूं। ओह! विपिन भैया, अजी तुम तो पिस्ते वाली खाओ ही रोज रोज। आज पिस्तेवाली बड़ी बढ़िया बनाई है... क्या रबड़ी का मजा आ रहा है, विपिन बाबू! कहो तो सबके लिए पिस्ते वाली निकालूं?

गब्बू : ऐ आइसक्रीम वाले! अब इस मुहल्ले में तुम्हारा आना बंद।

हम लोगों ने सर्वसम्मति से फैसला किया है कि आज से मुहल्ले के बच्चों का आइसक्रीम खाना बंद, तुम्हारा इधर आना बंद।

बच्चू : हां, आगे से इधर आए, तो तुम्हारी सारी आइसक्रीम लूट ली जाएगी और तुम्हारी पूंछ में पटाखे बांधकर चिनगारी दिखा दी जाएगी।

पप्पू : और अगर फिर भी तुमने इधर आना न छोड़ा और बढ़िया पिस्तेवाली आइसक्रीम बनानी न छोड़ी, तो क्या होगा... मालूम ?

आइसक्रीमवाला : (**आश्चर्य से उछलकर**) अरे वाह ! आइसक्रीम नहीं खाओगे, तो पैसों का क्या करोगे तुम बाबू लोगो ?

गब्बू : हम बचत आंदोलन चला रहे हैं। क्या समझते हो ?

आइसक्रीमवाला : अरे वाह ! वाह ? क्या बात बोली ? क्योंजी, विपिन भैया, ये जो कहवे हैं तो क्या ठीक कहवे हैं।

विपिन : (**अपने साथियों से**) ऐ, तुम लोग अपनी अपनी जगह बैठो। (**आइसक्रीमवाले से**) हां भई, बात यह है कि...कि इन लोगों ने ऐसा ही फैसला किया है और जबरदस्ती मेरे सिर थोप दिया है।

आइसक्रीमवाला : ऐ वाह ! ऐसी बात है, तो हमें ही इस मुहल्ले में आने की कौन जरूरत है ? हमारा हिसाब चुकता कर देओ भैया ! पीछे बचत-फचत की बात सोचना। पूरा एक महीना का हिसाब है। पिस्ते की बढ़िया आइसक्रीम पचास पैसे। पूरे पंद्रह रुपिया दे देओ, बस।

विपिन : (**घबराकर**) मेरा मतलब, मेरा मतलब यह कि...कि तुम्हारे पैसे मार मैं थोड़े ही रहा हूं। सब चुकता हो जाएंगे, तुम बेफिकर रहो।

आइसक्रीमवाला : ऐ वाह ! सब चुकता हो जाएंगे। चुकता कैसे हो जाएंगे, जब तुम हमको इधर आने ही नहीं दोगे जी ? नहीं, नहीं, यह घपला नहीं चल सकता। कारोबार बंद, हिसाब बंद। निकालो पंद्रह रुपिया, बाबूजी। फिर हम इस मुहल्ले में नहीं आवें।

विपिन : (**बगलें झांकता हुआ**) अरे भई, तुम्हें इस मुहल्ले में आने से कौन रोकता है ?

आइसक्रीमवाला : तो फिर निकालूं पिस्ते वाली बढ़िया चार आइसक्रीम, भैया ? (**प्रसन्न होकर**) वाह ! क्या लच्छेदार रबड़ी मिलाई है आज तो ?

विपिन : **(घबराकर चारों साथियों की ओर देखते हुए)** लेकिन मैंने तो प्रतिज्ञा की है कि आइसक्रीम नहीं खाऊंगा।

पप्पू : हां, यह अपने पैसे से आइसक्रीम नहीं खा सकता...मालूम ?

गब्बू : सिर्फ अपने पैसे से हम लोगों को खिला सकता है...मालूम ?

बच्चू : और हम लोगों की जेब में एक भी पैसा नहीं...मालूम ?

आइसक्रीमवाला : तो विपिन बाबू जी, या तो हमारा कारोबार चालू रखो या हमारा हिसाब चुका देओ।

विपिन : लेकिन हम में से कोई भी आइसक्रीम नहीं खा सकता।

सब : **(विपिन को छोड़कर)** हां अपने पैसे से...मालूम ?

आइसक्रीमवाला : **(प्रसन्न होकर अपने ठेले में से तीन आइसक्रीम निकालते हुए)** ह्‌ह्‌ह्‌ह्‌ह्‌ !यह तो चलता ही रहता है। चलता ही रहता है।

विपिन : देख रहे हैं आप। यही हमारे देश की दुर्दशा की जड़ है। हम लोग लपनी प्रतिज्ञा पर अटल नहीं रह सकते। लेकिन मैं, यानी विपिन प्रतिज्ञा करता हूं कि अगर मैंने इन सबके पैसे से एक एक के स्थान पर दो दो आइसक्रीम न उड़ाईं तो मेरा नाम...

सब : **(विपिन को छोड़कर)** विपिन नहीं...और हम प्रतिज्ञा करते हैं कि हमने विपिन के पैसे से दो दो के स्थान पर चार चार आइसक्रीम न उड़ाईं, तो हमारा नाम...

गब्बू : गब्बू नहीं।

बच्चू : बच्चू नहीं।

पप्पू : पप्पू नहीं।

[तीनों मजे ले लेकर आइसक्रीम चट करते हैं, जबकि विपिन सिर खुजलाता हुआ कभी मेज के पास आता है, कभी रेडियो आन करता है, कभी किताबें ठीक करने लगता है और उधर आइसक्रीमवाला अपनी आखिरी पुकार लगाता है।]

आइसक्रीमवाला : **(दर्शकों के सामने आकर और एक कान पर हाथ रखकर)** दूध वाली, पिस्तेवाली, मसालेवाली, बादामोंवाली, बढ़िया आ...इ...स...क्री...म।

पर्दा गिरता है

ज्योतिष का चमत्कार

□ घनश्याम गोयल

पात्र

बाबा	डाक्टर
मोहन	रेखा
ईश्वरदास	अतिथि
विनोद	ज्योतिषी

[पर्दा उठने पर साधारण सा कमरा दिखलाई पड़ता है। बीचोबीच पलंग पर, मोटे तकिए के सहारे, एक बूढ़े बाबा लेटे हुए हैं। पलंग के दूसरी तरफ तीन कुरसियां रखी हैं। एक मेज पर दवा की शीशियां रखी हैं। कमरे में शाति है। रह रहकर बाबा की कराह सुनाई पड़ती है।]

बाबा : (**कराहते हुए**) मोहन ! मुन्ना ! रेखा ! अरे, तुम सब कहां चले गए ? आखिरी समय तो मेरी सुन लेते...

[तीनों बारी बारी से आते हैं।]

मोहन : (**पास बैठते हुए**) क्या बात है, बाबाजी ! बुखार तो डाक्टर की दवा से चला जाएगा। मैं अभी डाक्टर...

बाबा : (**बीच में ही तमतमाए से**) मैं लाख बार तुम लोगों को समझा चुका हूं कि मुझे डाक्टर नहीं चाहिए, मेरी जिंदगी के दिन पूरे हो चुके हैं। भला ज्योतिषी की बताई बात झूठी उतर सकती है ! मैं तो अब दो-चार दिन का मेहमान हूं...

रेखा : बहुतेरे ज्योतिषी पूरे चार सौ बीस होते है, बाबाजी ! पिताजी कह रहे थे कि अखबारों में रोज ऐसे किस्से आते रहते हैं। ज्योतिषी की बातों पर विश्वास करके लोग बिना मौत के मर जाते है...

बाबा : (**क्रोध से**) इन अखबारो को मारो गोली। तुम लोगों का दिमाग खराब हो गया है। (**करवट लेते हुए**) हाय मौत ! मौत !! मौत !!! (**फिर कुछ सोचते हुए**) देखो, मेरे मरने के बाद दावत वगैरह में रुपए न फूंकना।

मोहन : (**बाबा के माथे पर हाथ रख कर**) ओह बाबा ! आपका बुखार बहुत तेज है। आप चद्दर ओढ़ कर सो जाओ। रुपए की चिंता

न करो।

[तभी कमरे में बच्चों के पिता ईश्वरदास आते हैं।]

ईश्वरदास : आप आराम से लेटे रहो, पिताजी ! मैं डाक्टर को बुलाने जा रहा हूं। (जाते हैं)

बाबा : (क्षण भर बाद) अरे क्यों मेरी मिट्टी खराब कर रहे हो ! मुझे आराम से मर जाने दो। (कहकर शरीर को चद्दर से ढक कर सो जाते हैं)

[बच्चे चुपचाप बैठे हैं। तभी दरवाजे पर 'अलख-निरंजन' की ध्वनि सुनाई पड़ती है। बच्चे उधर ही देखते हैं। एक लंबी दाढ़ी वाला संत-महात्मा हाथ में पोथा लिए आता है।]

अतिथि : अलख निरंजन ! मैं कश्मीर का ज्योतिषी हूं बच्चो !आओ, तुम्हें तुम्हारे भाग्य का हाल बतलाऊं।

मोहन : (पास जाकर, तेज स्वर में) अरे ज्योतिषी के बच्चे ! चला जा यहां से। एक ज्योतिषी तो हमारे बाबा के प्राण ले रहा है, तुम क्या हमारे प्राण लेने आए हो ?

अतिथि : अलख निरंजन ! मैं प्राण लेने वाला ज्योतिषी नहीं, प्राण देने वाला ज्योतिषी हूं। कोई मुझ पर विश्वास न करे तो मैं उसे मुर्गा बना देता हूं।

[मोहन को गुस्सा आ जाता है। वह ज्योतिषी की दाढ़ी पकड़ कर खींचता है। ज्योतिषी की दाढ़ी मुंह से अलग हो जाती है। मोहन हक्का-बक्का रह जाता है।]

मोहन : (अभी पहचानता सा) अरे विनोद ! तुम इस वेष में ! कैसे हो यार ? मैं तुम्हें पहचान भी न सका। क्लास के साथी होते हुए भी...

विनोद : (हंसकर) आज स्कूल में ड्रामा है न। उसमें ज्योतिषी का 'पार्ट' करना है। मगर तुम्हारे बाबा को क्या हो गया ?

[तभी मोहन के पास जाकर रेखा कान में कुछ कहती है। मोहन, रेखा और मुन्ना आपस में सलाह करते हैं। फिर तीनों खिलखिला कर हंसते हैं।]

विनोद : क्या बात है दोस्तो ?

मोहन : (समझाने के ढंग से) बात यह है, विनोद, कि तुम्हें हमारा एक काम करना पड़ेगा। हमारे बाबा के मन पर किसी अध-कचरे ज्योतिषी ने यह बिठा दिया है कि अब तुम्हारी अर्थी

उठने वाली है। तब से इन्हें बुखार है। हर वक्त मृत्यु की बाट जोहते हैं। तुम इनका यह भूत उतार दो तो...

[बच्चे आपस में कुछ सलाह करते हैं। विनोद बाहर चला जाता है। मुन्ना, रेखा, बाबा के सिरहाने कुरसी डाल कर स्लेट-पेंसिल लेकर बैठ जाती हैं। मोहन और मुन्ना अलग अलग कुरसियों पर किताबें खोल कर बैठ जाते हैं। अचानक मोहन जोर से बनावटी छींक लेता है। बाबा एकदम चौंक कर उठ बैठते हैं।]

बाबा : **(बड़बड़ाते हुए)** हाय, हाय ! तुम मुझे आराम से सोने भी न दोगे। **(कहकर फिर लेट जाते हैं)**

मोहन : **(बात बनाते हुए)** बाबा ! आज हमारे शहर में कश्मीर के बहुत बड़े ज्योतिषी पधारे हुए हैं। वह हमारे एक दोस्त के यहां ठहरे हैं। उनकी इतनी लंबी दाढ़ी है, बाबा ! **(दोनों हाथ फैलाता है)** बस क्या कहना...

बाबा : **(खुशी से)** अच्छा ! यह बात है बेटे ! तो फिर बुलाओ न।

मोहन : **(उठते हुए)** कोशिश करूंगा बाबा ! वैसे आज वह जहाज से अमरीका जाने वाले थे।

बाबा : भागते हुए जाओ, बेटा ! कितना अच्छा होगा जो ज्योतिषी जी जरा मुझे देख जाएं।

[मोहन तेजी से जाता है। कुछ क्षण बाद साथ में ज्योतिषी के वेश में विनोद को लेकर लौटता है। विनोद ज्योतिषी के वेष में खूब जंच रहा है।]

ज्योतिषी : **(पास जाकर)** अलख निरंजन। जय शिवमंदन।

[बाबा हड़बड़ाए से झपट कर उठ बैठते हैं।]

बाबा : ज्योतिषी महाराज को प्रणाम।

ज्योतिषी : **(कुरसी पर बैठते हुए)** चिरंजीव हो। शतायु हो बच्चा।

बाबा : **(कातरता से)** आयु तो भगवन मेरी पूरी हो चुकी है। अब स्वर्ग की तैयारी है।

ज्योतिषी : नारायण ! नारायण ! किस बेवकूफ ने कहा कि तुम्हारी आयु पूरी हो चुकी ? **(बात बदलते हुए)** लाओ, अपना हाथ दिखलाओ। हम भूत-भविष्य, अगला-पिछला, सब कुछ बतला सकते हैं। हम यह भी बतला सकते हैं कि आपके मुंह में कितने दांत हैं, आपकी चोटी में कितने बाल हैं, साल में कितने दिन होते हैं। **(कहकर बाबा का हाथ देखने लगता है)**

ज्योतिषी : (**कुछ क्षण सोच कर**) आपकी तीन शादियां हुई हैं। अह् ह्, ह्।

बाबा : नहीं, मेरी तो दो ही हुई हैं।

ज्योतिषी : (**घबराया सा**) दो हुई हैं तो एक और हो जाएगी !

बाबा : (**आश्चर्य से**) इस बुढ़ापे में शादी होगी !

ज्योतिषी : ओह ! मैं भूल गया था। (**बात बनाते हुए**) मेरा अर्थ यह था कि कभी कभी सगाई हो कर छूट जाती है। हाथ की रेखा में सगाई भी शादी के रूप में मानी जाती है।

बाबा : (**धीरज पाकर**) तब ठीक है। मेरी एक सगाई हो कर छूट गई थी।

ज्योतिषी : (**अपना पोथा खोल कर**) हां, तो आपके बच्चे हैं। एक लड़का, जिसका नाम ईश्वरदास है।

बाबा : बिलकुल ठीक।

ज्योतिषी : और लड़कियां, लड़कियां हैं। (**पोथे में देखता है। मोहन ज्योतिषी के कंधे पर हाथ रख कर बाबा के सिरहाने की तरफ संकेत करता है। रेखा स्लेट पर झटपट चार लिख कर दिखलाती है**) आपके चार लड़कियां हैं। हैं न ?

बाबा : तुम सचमुच पहुंचे हुए ज्योतिषी हो।

ज्योतिषी : बड़ी लड़की का नाम...नाम है...(**रेखा झटपट स्लेट पर 'गंगा' लिख कर दिखलाती है**) नाम उसका है गंगा। दूसरी का नाम है (**रेखा स्लेट पर 'यमुना' लिखती है**) यमुना ! और हां, तीसरी का नाम...(**रेखा स्लेट पर 'गोदावरी' लिखती है**) तीसरी लड़की का नाम गोदावरी है न ? चौथी का नाम... (**रेखा स्लेट पर 'नर्मदा' लिखती है**) नर्मदा है। ठीक है न बच्चा ?

बाबा : (**आश्चर्य से**) धन्य हो ज्योतिषी जी महाराज ! आपने हमारे घर पधार कर कृतार्थ कर दिया है। आपकी सब बातें बिलकुल सही हैं।

मोहन : (**हाथ बांधकर**) ज्योतिषीजी ! आप इंसान नहीं, भगवान हैं। साक्षात भगवान...

ज्योतिषी : (**अकड़ कर**) बच्चा ! हमारी दिव्य दृष्टि है। हम मुर्दे को मुर्दा और जिंदे को जिंदा बना सकते हैं। (**कुछ सोच कर**) नहीं, नहीं, मेरा मतलब था कि जिंदा को मुर्दा और मुर्दे को जिंदा कर सकते हैं। अपने शाप से सब कुछ भस्म कर सकते

हैं। पृथ्वी को पीपल के पत्ते की तरह हिला सकते हैं।

बाबा : **(हाथ जोड़ कर)** भगवन ! शांत हों, शांत !

[मोहन, मुन्ना और रेखा पीठ फिरा कर हंसते हैं।]

ज्योतिषी : अच्छा बच्चा ! अब तुम्हें कुछ और पूछना है। हां, तुम्हारे चार पोते और दो पोतियां हैं। बड़े पोते यानी मोहन की शादी में **(कुछ सोचने के ढंग से)** एक मोटर कार आपको मिलेगी। एक कार मोहन को सरकार की तरफ से मिलेगी। मोहन बड़ा सरकारी अफसर बनेगा। देश-विदेश की सैर करेगा। आपको भी इंग्लैंड, अमरीका, सब जगह घुमाएगा।

बाबा : **(हाथ जोड़े खुशी से झूमते हुए)** धन्य हो भगवन, धन्य हो।

ज्योतिषी : इस साल तुम्हें पीली और सफेद वस्तुओं के व्यापार में काफी लाभ रहेगा।

बाबा : **(कुछ सोच विचार कर)** पीली वस्तुओं से मतलब हो सकता है, पीली सरसों का तेल और सफेद से मतलब रुई से हुआ। हमारा रुई और तेल का मिल है ही। फिर तो बड़ा मजा आएगा।

ज्योतिषी : **(खड़े होते हुए)** अच्छा बच्चा, अब हम चलते हैं। अधिक समय हमारे पास नहीं है।

बाबा : **(एकदम चौकन्ना सा)** महाराज ! मेरा सबसे बड़ा सवाल तो रह ही गया। मेरी आयु कितनी है ?

ज्योतिषी : **(बाबा की हथेली देखता हुआ)** आपकी आयु बच्चा ९९ साल और ९९ दिन है।

बाबा : **(खुशी से)** नारायण ! नारायण ! तुमने मुझ बचा लिया; नहीं तो बिना मौत ही मर जाता।

[ज्योतिषीजी दरवाजे की ओर बढ़ते हैं, बाबा व सब बच्चे साथ साथ जाते हैं। बाबा अचानक कुछ सोच कर चौंक पड़ते हैं।]

बाबा : मुझसे भूल हुई भगवन ! आपको पूजा के लिए कुछ देना चाहिए।

[अपनी कमीज से दस दस के दो नोट निकाल कर ज्योतिषी की ओर बढ़ाते हैं।]

ज्योतिषी : न, न। मैं माया को नहीं छूता।

[बाबा ज्योतिषी की जेब में हठ से नोट डाल देते हैं। फिर झुक कर प्रणाम करते हैं। ज्योतिषी और सब

बच्चे बाहर चले जाते हैं। तभी कमरे में बच्चों के पिता ईश्वरदास डाक्टर को लिए आते हैं।]

डाक्टर : (बाबा को वहां खड़े देख कर) अरे, अरे ! आप बिस्तरे पर से कैसे उठ गए ! आपको टाइफाइड यानी मियादी बुखार है। मियादी बुखार में उठना सख्त मना है।

बाबा : मेरा बुखार उतर गया डाक्टर साहब ! अब कभी चढ़ेगा भी नहीं।

डाक्टर : (डाक्टर व ईश्वरदास आश्चर्य से) हैं ! बुखार उतर गया !

[डाक्टर आगे बढ़कर हाथ देखता है। फिर हैंडबैग से थर्मामीटर निकालता है । बाबा पलंग पर बैठ जाते हैं और थर्मामीटर मुंह से लगा लेते हैं।]

डाक्टर : (कुछ क्षण बाद थर्मामीटर लेकर) सचमुच बुखार नहीं है। अच्छा, मैं चलता हूं।

[तभी बच्चे आकर बाबा को घेर लेते हैं। उनमें विनोद भी है। बाबा बच्चों को प्यार करते हैं। ईश्वरदास खड़े खड़े सब देखते हैं।]

पर्दा गिरता है

(१९६५)

पुस्तक कीट

☐ विष्णु प्रभाकर

पात्र

लता	सुलेखा
कुसुम	निर्मला
मालती	मुख्याध्यापिका

[मंच पर कन्या पाठशाला का दृश्य। धीरे धीरे लड़कियों का शोर बढ़ता है। बाहर छोटा पर्दा पड़ा है। एक ओर से दो-तीन लड़कियां तेजी से मंच पर आती हैं।]

कुसुम : अरे मालती, तुम इतनी तेजी से कहां भागी जा रही हो ?

मालती : सुना नहीं, घंटी बज चुकी है। क्लास में जा रही हूं।

लता : तुम न जाने कहां रहती हो ! कुछ पता भी है, आज वहां क्या हो रहा है ?

कुसुम : यह क्या जाने बेचारी ! इसे पढ़ने से भी अवकाश मिले। (हंस पड़ती है)

लता : यह भी उसी के समान है।

कुसुम : अजी, उसकी सहेली।

मालती : (क्रोध से) कुछ बताओगी भी या यों ही हंसी उड़ाती रहोगी।

लता : ओहो, ओहो मेरी रानी ! क्रोध करना भी जानती हो।

मालती : भई, मैं चली। मैं तुम्हारी तरह हंसी-मजाक में समय खोना नहीं जानती। मुझे काम करना है। परीक्षा सिर पर आ रही है।

कुसुम : जी हां, जैसे परीक्षा आप ही को देनी है। मालतीजी, क्रोध न करिए। आइए हमारे साथ चलिए।

मालती : पर कहां ? कुछ बताओगी भी।

कुसुम : हाल में।

मालती : वहां क्या है ?

लता : चलो तो पता लग जाएगा। हां, तुम्हारी कुछ हानि हो तो हमें दोष देना।

मालती : अच्छा भई, चलो। तुम्हारी जैसी इच्छा।

कुसुम : हां, अब ठीक ठीक बात कही है। आओ जल्दी करो, मुकदमा शुरू होने वाला है।

मालती : मुकदमा कैसा ?

लता : तुम निर्मला को जानती हो ?

मालती : निर्मला ! जो आठवीं क्लास में पढ़ती है ?

लता : हां, वही निर्मला, उपनाम 'तोती', उपनाम 'भीमसेनी'।

मालती : (हंसकर) भई, 'तोती' नाम का तो मुझे भी पता था, यह 'भीमसेनी' क्या है ?

लता : यह भीमसेन से बना है। पर अब चुपचाप इधर आ जाओ, लगभग सारा स्कूल यहां जमा हो रहा है।

[छोटा पर्दा हटता है। बहुत सी लड़कियां बैठी दिखाई देती हैं। एक ओर मेज के पास कई कुरसियां हैं। उन पर मुख्याध्यापिका तथा दूसरी अध्यापिकाएं बैठी हैं। शोर बढ़ता है। मुख्याध्यापिका मेज पर रूल बजाती हैं। वे तीनों एक ओर बैठ जाती हैं।]

मुख्याध्यापिका : शांत हो जाओ। क्या करती हो ? बैठना सीखो।

[यह आवाज सुनते ही वहां शांति छा जाती है।]

मुख्याध्यापिका : हां, अब आप कहिए, कुमारी सुलेखा !

सुलेखा : जी, मुझे आपसे इस लड़की के बारे में निवेदन करना है।

मुख्याध्यापिका : इसका नाम क्या है ?

सुलेखा : जी, इसके माता-पिता ने इसका नाम निर्मला रखा है। वैसे इसे 'भीमसेनी' और 'तोती' भी कहते हैं।

[हंसी उड़ती है।]

मुख्याध्यापिका : शांत ! मैं समझी नहीं, 'भीमसेनी' क्या नाम है ?

सुलेखा : (हंसी रोकती हुई) जी भीमसेन बहुत बलवान थे न। इसी प्रकार यह भी बलवान है।

मुख्याध्यापिका : (हंसती है। उन्हें हंसते देखकर सब हंस पड़ते हैं।) मैं समझी। बेटी निर्मला ! ये सब तुम्हारी हंसी उड़ा रही हैं। यह बुरी बात है। परंतु बेटी ! क्या करूं, हंसी मुझे भी आ रही है, तब इन्हें क्या कहूं। देखो न तुमने क्या हाल बना रखा है। तुम्हारे हाथ-पैर सीक-सलाई से हो रहे है। तुम्हारी आंखें अंदर घुस गई हैं। कभी शीशा देखती हो। चोटी करते समय तो देखती ही होगी।

निर्मला : जी !

मुख्याध्यापिका : फिर यह क्या हाल है ? घूमने जाती हो ?
निर्मला : जी नहीं। जो वक्त सैर करने का है, वही पढ़ने का है।
मुख्याध्यापिका : खेलती हो ?
निर्मला : जी नहीं।
मुख्याध्यापिका : घर का काम तो करती होगी ?
निर्मला : जी, समय ही नहीं मिलता।
मुख्याध्यापिका : समय ही नहीं मिलता। आखिर क्या करती रहती हो ?
निर्मला : जी, पढ़ती हूं।
सुलेखा : इसकी मां कहती थी, अकसर रात को उठकर सोते सोते पाठ रटने लगती है।
मुख्याध्यापिका : इतना पढ़ती है ?
सुलेखा : पूछो न जी, स्कूल में भी आकर आंखें नहीं उठाती। आधी छुट्टी की घंटी में भी इसके हाथ में किताब रहती है। जब कभी कोई सहेली बाहर बुलाती है, तो कह देती है—न बहन, मुझे तो पाठ याद करना है। न कभी पिकनिक पर जाती है और न यात्रा पर।
मुख्याध्यापिका : पढ़ना तो बहुत अच्छा है, निर्मला ! तुम इतना पढ़ती हो, तुम्हें तो अपने सब पाठ याद होंगे।
सुलेखा : पूछ देखिए।
निर्मला : जी, मुझे सब कुछ याद है। आप जो चाहे पूछ लें।
मुख्याध्यापिका : भूगोल पढ़ा है ?
निर्मला : जी, सारी दुनिया का याद है।
मुख्याध्यापिका : पेरिस जानती हो कहां है ?
निर्मला : (एकदम रटे हुए पाठ की तरह) पेरिस अमरीका की राजधानी है। दुनिया का सबसे बड़ा नगर है। यहां पर दुनिया की सबसे ऊंची इमारतें हैं। यहां फैशन का जन्म होता है और यह टेम्स नदी के किनारे पर है।

[हलकी और फिर तेज हंसी उठती है। लड़कियां खिल-खिला पड़ती हैं। मुख्याध्यापिका रूल बजाती है।]

मुख्याध्यापिका : शांत ! हां, तो निर्मला, हिमालय पहाड़ कहां है ?
निर्मला : (एकदम) इंग्लैंड में।
मुख्याध्यापिका : दुनिया में सबसे बड़ा पहाड़ कौन सा है ?
निर्मला : विंध्याचल। यह भारत के उत्तर में है। यह भारत के लिए बड़ा लाभदायक है। उधर से कोई दुश्मन नहीं आ सकता।

इसके कारण वर्षा होती है।

मुख्याध्यापिका : उत्तर प्रदेश की राजधानी कौन सी है?

निर्मला : कटक। यह समुद्र के किनारे है। यहां मछलियों का व्यापार होता है।

[लड़कियां किसी तरह मुंह में आंचल दबा कर हंसी रोक रही हैं। अब नहीं रोक पातीं। मुख्याध्यापिका फिर रूल बजाती है। हंसी फिर फूट पड़ती है।]

मुख्याध्यापिका : शांत! कुमारी सुलेखा! आप इन सब प्रश्नों के उत्तर लिखती जाइए, निर्मला ने बड़ी योग्यता से सब कुछ याद किए हैं। कितनी फुरती से बोलती है।

[सुलेखा लिख रही है।]

सुलेखा : जी, मैं सब कुछ लिख रही हूं।

निर्मला : जी, यह सब लड़कियां मुझे देख देख कर हंस रही हैं। इन्हें मना कर दीजिए। ये मुझे हमेशा इसी तरह चिढ़ाती हैं।

मुख्याध्यापिका : नहीं, यह बुरी बात है। जो लड़की हंसी नहीं रोक सकती, वह उठकर चली जाए।

लता : जी, हंसी की बात पर भी हंसी न आए, यह कैसे हो सकता है?

निर्मला : मैं हंसी की बात करती हूं! पढ़ना हंसी की बात है!

मालती : इतना पढ़ती हो, तो तुम फेल क्यों हो गई हो?

निर्मला : वह मैं क्या जानूं! बहनजी जानें। ये सब मुझसे इतनी चिढ़ती हैं कि...

मुख्याध्यापिका : शांत हो जाओ, कोई लड़की बीच में न बोले। और निर्मला, तुम भी उनसे बात न करो।

निर्मला : जी, वे ही मुझे छेड़ती हैं।

मुख्याध्यापिका : अब कोई नहीं छेड़ेगा। हां, तुमने इतिहास पढ़ा है!

निर्मला : जी हां, भारत का सारा इतिहास मुझे याद है।

मुख्याध्यापिका : भारत के आदिवासी कौन हैं? उनके बारे में तुम क्या जानती हो?

निर्मला : (एकदम) भारत के आदिवासी आर्य हैं। इनका रंग काला होता है, नाक चपटी और कद ठिगना। इनकी आंखें चमकती हैं।

[हंसी फिर एकदम फूटती है।]

मुख्याध्यापिका : (क्रुद्ध) निर्मला, होश में हो!

निर्मला : जी...जी...(रो पड़ती है) जी, सब मेरे दुश्मन हैं। सब मुझे

गिराना चाहती हैं। मैं इतना पढ़ती हूं...(**आगे बोला नहीं जाता**)

मुख्याध्यापिका : (**एकदम शांत**) निर्मला, इधर आओ (**निर्मला पास आती है**) इधर आओ। हां, बेटी ! इस तरह रोने से काम नहीं चलेगा।

निर्मला : (**सुबकती हुई**) जी...जी...जी, मैं तो...मैं तो...

मुख्याध्यापिका : अब शांत हो जाओ। विश्वास रखो, हम तुम्हारा अपमान नहीं करना चाहतीं। हम तो यही चाहती हैं कि तुम स्वस्थ, प्रसन्न और होशियार बनो।

निर्मला : (**रोती हुई**) मैं हमेशा ही कोशिश करती हूं।

मुख्याध्यापिका : पर गलत रास्ते से। देखती नहीं, तुम्हारा स्वास्थ्य बिगड़ गया है। तुम सदा चिड़चिड़ी रहती हो। तुमने आज एक भी सवाल का ठीक उत्तर नहीं दिया। मैं ऐसी लड़कियों को अपने स्कूल में नहीं रख सकती। मैं तुम्हें ऐसा दंड कि तुम सदा याद रखो।

[निर्मला सुबकती रहती है, बोलती नहीं।]

मुख्याध्यापिका : (**गंभीर स्वर में**) कुमारी सुलेखा ! मैंने तुम्हारी शिकायत की पूरी खोज कर ली है। यद्यपि मैं तुम्हारे बर्ताव से संतुष्ट नहीं हूं, पर तुम्हारी बात ठीक है। मैं निर्मला को दोषी ठहराती हूं। मैं उसे आज्ञा देती हूं कि तीन महीने तक किताबों की सूरत न देखे। अपनी सब किताबें मेरे पास जमा कर दे और इस अरसे में वह किसी पहाड़ी पर जाकर रहे।

[निर्मला एकदम चुप हो जाती है। लड़कियां अचरज से फुसफुसाती हैं।]

मुख्याध्यापिका : शांति। पहाड़ से लौटकर निर्मला को एक घंटा घूमना और दो घंटे खेलना होगा। इसी शर्त पर वह स्कूल में रह सकती है। अब स्कूल दो महीने के लिए बंद हो रहा है। मैं शिमला जा रही हूं, निर्मला चाहे तो वह मेरे साथ चल सकती है।

[तालियों की गड़गड़ाहट उठती है।]

निर्मला : (**एकदम हाथ जोड़कर**) मैं आपके साथ चलूंगी। आप मुझे अपने साथ ले चलिए।

मुख्याध्यापिका : अवश्य ले चलूंगी। जाओ, अब शांत होकर घर जाओ।

[वह उठती है और छोटा पर्दा गिरता है। सभा समाप्त होती है। सब जाते हैं। शोर फैलता है। लता, कुसुम और मालती हंसती हुई जाती हैं।]

सिद्धार्थ का गृहत्याग

□ नरेश मेहता

पात्र

सिद्धार्थ	:	कपिलवस्तु के युवराज
शुद्धोदन	:	सिद्धार्थ के पिता
महामाया	:	सिद्धार्थ की माता
यशोधरा	:	सिद्धार्थ की पत्नी
मंत्री	:	सारथी

प्रथम दृश्य

[युवराज सिद्धार्थ राजमंदिर के अपने प्रकोष्ठ में किसी चिंता में डूबे हुए खिड़की से दूर देख रहे हैं। बाहर वासंती हवा बह रही है। युवराज अत्यंत सुंदर युवक है। संध्या का समय है। तभी उनकी पत्नी यशोधरा प्रवेश करती है।]

यशोधरा : आर्यपुत्र, आप तैयार हो गए ?

सिद्धार्थ : (**चौंकते हुए**) क्या ?

यशोधरा : किस विचार में थे ? आपको स्मरण नहीं कि वाटिका की बात थी।

सिद्धार्थ : हां !

यशोधरा : वसंतोत्सव का आयोजन जो किया गया है। चलिए।

सिद्धार्थ : यशोधरा, मैं नहीं चल पाऊंगा।

यशोधरा : क्या आर्यपुत्र अस्वस्थ हैं ? (**सिद्धार्थ के निकट खड़ी हो जाती है**)

सिद्धार्थ : अस्वस्थ हूं, देवी, किंतु किसी रोग के कारण नहीं, पर...

यशोधरा : फिर वही महाराज, आप विचारों को नहीं छोड़ सकते ?

सिद्धार्थ : नहीं यशोधरा, पहले मैं विचारों को घेरा करता था किंतु अब विचार मुझे घेरते हैं। जानती हो, अभी उत्सव में चलने की तैयारी कर रहा था, तभी राजमार्ग से किसी की अर्थी गई। जीवनदायी वसंत में भी एक व्यक्ति मर गया। मृत्यु के क्या मुक्ति नहीं मिल सकती, यशोधरा ?

यशोधरा : महाराज, जैसे जीवन धर्म है, वैसे ही मृत्यु भी धर्म है। जीवन

है, इसलिए मृत्यु भी है।

सिद्धार्थ यों कहो कि शरीर है, इसलिए रोग है, बुढ़ापा है, मृत्यु है— जीवन भर दुख ही दुख। यशोधरा! किंतु यह तो मुझे स्वीकार नहीं। एक दिन इस तन और जीवन को रोग के कीटाणु, मृत्यु की लपटें निरर्थक ही समाप्त कर देंगी? नहीं यशोधरा, सो नहीं होने का। मनुष्य कठपुतली नहीं। इस क्रम-नियम से परे क्या है?

यशोधरा प्रभु, इतना अधिक नहीं सोचना चाहिए।

सिद्धार्थ क्योंकि सोचने से सृष्टि के विषय में, नियमों के बारे में, क्रम के संबंध में जिज्ञासा पैदा होती है और वह जिज्ञासा ही हमारे मन में निर्णय उत्पन्न करती है...

यशोधरा कैसा निर्णय, आर्यपुत्र?

सिद्धार्थ (हंसते हुए) अभी निर्णय का समय नहीं आया, देवि! चिंता न करो। चलो, आज तो वसंतोत्सव है। क्षण को सत्य सिद्ध करना चाहिए। सब कुछ कर्तव्य है यहां, यशोधरा!

[पटाक्षेप]

द्वितीय दृश्य

[कुछ समय बाद सवेरे की बेला है। मंगलवाद्य बज रहे हैं। स्त्रियां मंगलाचरण गा रही हैं। युवराज सिद्धार्थ अन्यमनस्क से कक्ष में टहल रहे हैं। युवराज की माता महामाया प्रवेश करती हैं। मंत्रीवर आदि आते हैं।]

महामाया : शाक्यवंश में नया कुलदीपक जन्मा है, सिद्धार्थ!

मंत्रीवर : कपिलवस्तु का भावी सम्राट, बधाई स्वीकारें युवराज!

[मंत्रीवर आदि प्रणाम में झुकते हैं। सिद्धार्थ उन्हें देखते हैं और फिर खिड़की के पास खड़े खड़े कहीं खो जाते हैं।]

महामाया : बेटा, किस चिंता में डूब गए? यह सोचना तो और दिन कर लोगे, आज के इस शुभ दिन तो रहने दो। चलो, महाराज, राजपंडित आदि शांतिपूजन के लिए प्रतीक्षा कर रहे हैं।

[सब का प्रस्थान। अकेले सिद्धार्थ ही रह जाते हैं।]

सिद्धार्थ : (स्वगत) एक नया कुलदीपक। कपिलवस्तु का भावी सम्राट! (किंचित उपेक्षा की हंसी के साथ) एक नया जन्म, जो कि रोगग्रस्त होगा, वृद्ध होगा और फिर एक दिन मृत्यु...इस

जन्म, रोग, वृद्धावस्था एवं मृत्यु के क्रम में फंसे रहने को जीवन कहते हैं। आज जन्म की प्रसन्नता है, तो कल यही संबंधी उसके चले जाने पर उसे बहा देंगे। सारे संबंध इस देह के हैं। देह तो मरने वाली है, इसीलिए ये संबंध भी मरने वाले हैं। और जो वस्तु मरने वाली है, उससे प्रेम या मोह कैसा? न कोई पुत्र है, न पिता। न पति है, न पत्नी। सब विभिन्न देह हैं जो अपना भोग भोगती हैं। इससे छुटकारा पाए बिना सब व्यर्थ है।

[तभी महाराज शुद्धोधन पधारते हैं।]

सिद्धार्थ : (पिता को देख चौंकते हुए प्रणाम करते हुए) प्रणाम स्वीकार करें!

शुद्धोदन : आयुष्मान भव! चलो सिद्धार्थ, आज का सा मंगल दिन नित नहीं आता।

सिद्धार्थ : महाराज, मुझे तो चारों ओर अंधेरा ही अंधेरा दिखता है।

शुद्धोदन : अधिक विचार करने से, सिद्धार्थ, मन में केवल प्रश्न ही घिरते हैं।

सिद्धार्थ : किंतु, महाराज, जब अंग शिथिल हो जाएंगे, तब इन प्रश्नों से युद्ध करने की शक्ति ही कहां रहेगी?

शुद्धोदन : युवराज, तुम क्या कहना चाहते हो?

सिद्धार्थ : कुछ नहीं, महाराज! देखता हूं, इस पुत्रजन्म के कारण मैं पितृऋण से मुक्त हुआ। शेष दो ऋणों से मुक्त होना ही पड़ेगा। (सहसा भाव बदल कर) चलिए, महाराज, पाठ-पूजन की प्रतीक्षा हो रही होगी।

[दोनों का प्रस्थान। पटाक्षेप।]

तृतीय दृश्य

[यशोधरा कक्ष में अपने पुत्र राहुल के साथ लेटी हुई है। कक्ष में एक स्वर्ण दीप जल रहा है। कमरे का दरवाजा हलके से खुलता है।]

यशोधरा : (चौंकते हुए) कौन?

सिद्धार्थ : क्या चौंक गई, यशोधरा?

यशोधरा : (उठने की चेष्टा के साथ) प्रणाम आर्यपुत्र, अभी सोए नहीं?

सिद्धार्थ : नहीं तो, आज तक सोया ही तो था। अब तो जागने की वेला आ गई, यशोधरा!

यशोधरा : (**बात न समझते हुए**) क्या भिनसार हो गई ?
सिद्धार्थ : शायद हो जाए। हां, तुम क्यों नहीं सोईं ?
यशोधरा : राहुल अभी अभी तो सोया है।
सिद्धार्थ : तो तुम भी सो जाओ, यशोधरे ! मैं चलूं।
यशोधरा : बैठिए।
सिद्धार्थ : जागने के बाद बैठा नहीं जाता है, यशोधरा, बल्कि चला जाता है।
यशोधरा : यह आज आप कैसी बातें कर रहे हैं, कुशंकाओं से मेरा मन घबरा रहा है।
सिद्धार्थ : यह तुम्हारा मोह है। अच्छा तो जाऊं न ?
यशोधरा : जैसी आर्यपुत्र की इच्छा। (**सो जाती है**)
सिद्धार्थ : (**स्वतः**) मैं तो जगाना चाहता हूं और तुम सोना चाहती हो ? अच्छा यही सही। अकेले तुम्हीं को नहीं बल्कि शेष को भी जगा सकूं, इस रहस्य की प्राप्ति के लिए जाता हूं। विदा !
[सिद्धार्थ जाते हैं। पटाक्षेप।]

चतुर्थ दृश्य

[भोर बेला। सूर्योदय हो रहा है। नदी तट पर सिद्धार्थ अपने विश्वस्त सेवक छंदक के साथ खड़े हैं।]

सिद्धार्थ : छंदक, यह नदी ही कपिलवस्तु राज्य की सीमा है न ?
छंदक : हां, प्रभु !
सिद्धार्थ : तो मैं इस भूमि पर युवराज नहीं हूं न, छंदक ?
छंदक : यदि यह भूमि आपको युवराज न माने तो मेरी कृपाण...
सिद्धार्थ : (**हंसते हुए**) छंदक, इस मातृभूमि के लिए न कोई सम्राट है, न सेवक। अच्छा, थोड़ा विश्राम करें।
छंदक : प्रभु, हम कपिलवस्तु से बीस योजन दूर हैं। लौटने में देर हो जाएगी। इस बेला तक तो आप रोज लौट जाते थे और जैसे जैसे देर होगी, वैसे वैसे महाराज को चिंता होगी।
सिद्धार्थ : तो छंदक सुनो...मैं अब लौटूंगा नहीं।
छंदक : क्या महाराज ? क्या आप...
सिद्धार्थ : हां छंदक, इस देश के जन्म, रोग, वृद्धावस्था और मृत्यु से निवृत्ति का उपाय खोजने के लिए मैं अब लौटूंगा नहीं।
छंदक : यह सब आप क्या कह रहे हैं, स्वामी ?

सिद्धार्थ : मैं इस चक्र को, गति को नहीं स्वीकारता। इन नियमों से मुक्ति चाहता हूं और इसलिए, छंदक, तुम अब लौट जाओगे।

छंदक : (**सिद्धार्थ के चरणों में गिरकर रोते हुए**) पर प्रभु, आपके बिना महाराज, राजमाता...

सिद्धार्थ : मैं आज से तुम्हारा प्रभु नहीं। मेरा किसी से कोई संबंध नहीं। मैं तो बस पथ का एक भिखारी हूं, छंदक।

[सिद्धार्थ अपने एक एक वस्त्र उतारकर छंदक को देते हैं। छंदक रोता है। देखते देखते सिद्धार्थ के तन पर राजपरिवार का एक भी वस्त्र शेष नहीं रहता।]

सिद्धार्थ : मैं भिक्षुक हूं, तुम्हीं से पहली भिक्षा मांगता हूं।

छंदक : (**सिद्धार्थ के चरणों में फूट फूटकर रो पड़ता है**) यह क्या कह रहे हैं, महाराज !

सिद्धार्थ : मुझे महाराज न कहो, छंदक। सिद्धार्थ कहो। बोलो, मुझे भीख दोगे ?

छंदक : सेवक को आज्ञा करें, देव !

सिद्धार्थ : छंदक, मनुष्यों की भाषा बोलो। यदि तुम मुझे भीख नहीं दोगे, तो तुम्हारे राजा का यह अंतिम वस्त्र भी फेंककर मुझे दिगबर जाना होगा यहां से।

छंदक : (**डर जाता है**) आज्ञा करें

सिद्धार्थ : अपना यह सादा उपवस्त्र मुझे दे दो।

[छंदक अपना उपवस्त्र देता है।]

सिद्धार्थ : औ: नदी से जल लाकर मेरे ये राजसी केश काट दो।

छंदक : प्रभु ! यह नहीं होने का कभी...

सिद्धार्थ : जैसी तुम्हारी इच्छा, छंदक। किंतु तुम्हारे अस्वीकारने के बाद भी ये कटेंगे अवश्य ही। फिर क्यों नहीं तुम्हीं काट देते ?

[छंदक रोते हुए जल लेने जाता है। लौटता है और देखते देखते सिद्धार्थ के केश कटकर धरती पर गिर जाते हैं।]

सिद्धार्थ : (**अत्यंत प्रसन्न होकर**) जाओ छंदक, तुम्हारा कल्याण हो। तुम वास्तव में मेरे विश्वासपात्र रहे। परिवार को सांत्वना देना और कहना कि यदि सिद्धार्थ अपने पथ में सिद्ध हुआ तो कभी लौटेगा। अब जाओ।

छंदक : प्रभु लौट चलिए।

सिद्धार्थ : जाओ छंदक, देर न करो अब। जाओ।

[सिद्धार्थ एक बार अपने घोड़े को प्यार करते हैं। देखते देखते छंदक रोते हुए दोनों घोड़ों को लेकर नदी पार करके अदृश्य होता है।]

सिद्धार्थ (स्वतः) सिद्धार्थ। उठो और आगे बढ़ो। चारों दिशाएं तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही हैं। चलो और निर्वाण का पथ जब तक न मिले, चलते चलो, चलते चलो...

पर्दा गिरता है

(१९६५)

झूठ का दान

□ देवराज दिनेश

पात्र

कैलाश : एक लेखक
कला : कैलाश की बहन, अवस्था १४ वर्ष
राजू : कैलाश का भाई, अवस्था १२ वर्ष

[स्थान : मध्यम श्रेणी के मकान का एक कमरा। कमरे में एक तरफ लिखने के लिए मेज-कुरसी लगी हुई हैं। मेज पर सुंदर ढंग से किताबें सजी हुई हैं। दूसरी ओर कोच पड़ा है। कमरे में कोई भी व्यक्ति नहीं है। कुछ ही देर के बाद बाहर से कैलाश आता है।]

कैलाश : वाह खूब ! दरवाजा खुला है और घर में कोई भी नहीं। (**ऊंचे स्वर में**) कला ! राजू ! कला !

कला : (**नेपथ्य से**) आई, भैया ! (**आती है**)

कैलाश : दरवाजे इस तरह खुले छोड़ जाती हो ? कोई कुत्ता-बिल्ली आकर खाने की चीजों में मुंह मार जाए तब ? (**कपड़े उतारता है**) मेरा यह कोट खूंटी पर टांग दो। और यह राजू कहां गया है ?

कला : मैं क्या जानूं ? मैं तो अभी ऊपर भाभी से स्वेटर की यह बुनाई पूछने गई थी, तब तुम्हारी कुरसी पर बैठा सवाल निकाल रहा था। मैंने कहा भी था कि जाना मत, यदि जाना हो तो मुझे आवाज दे लेना, मैं सांकल लगा लूंगी। पर वह तो मौका ढूंढ़ता है। मौका मिला और झट खेलने पहुंचा।

कैलाश : अच्छा। सक्सेना साहब के घर जाकर मेरी कहानी तो उन्हें दे आया था, है न ?

कला : गया तो था। पर कहता था, उनका घर नहीं मिला। वह रखा है, आपका कहानी वाला लिफाफा।

कैलाश : पर उनके मकान पर पहुंचना तो कोई मुश्किल नहीं है। फिर मैं तो उसे अच्छी तरह उनके घर का रास्ता समझा गया था। और साथ ही लिफाफे पर भी लिख दिया था। मेरा विचार है कि वह गया ही नहीं।

कला : यही बात है, भैया ! मुझे कांता ने बताया था कि सारा दिन वह उसके भाइयों के साथ पतंग उड़ाता रहा। पर मैं पहले ही कह देती तो आप समझते कि उसे पिटवाने के लिए झूठ-मूठ शिकायत लगा रही हूं।

कैलाश : (हंसकर) बच्चे लगाते जो हैं एक-दूसरे को पिटवाने के लिए झूठी शिकायतें।

[राजू आता है]

कला : लो भैया, यह आ गए राजूजी महाराज।

कैलाश : दरवाजे खुले छोड़कर किधर गया था राजू ?

राजू : मैं पांच-दस मिनट के लिए ही गया था, भैया ? मोहन की एक किताब देनी थी।

कला : यह झूठ बोलता है, भैया ! मोहन की किताब-विताब देने नहीं गया था। उसके साथ लट्टू चलाने गया था।

कैलाश : तुम अपना काम करो जी। (राजू से) राजू, तुम खुद झूठ बोलते हो, दूसरे अपने साथियों को झूठ बोलने की आदतें सिखाते हो। बच्चू जी, यह तो मैं हूं जो तुम्हें बड़े प्यार से समझाता हूं। पिताजी यदि जिंदा होते, तो इन बातों पर मार मार कर तुम्हारी हड्डियां तोड़ देते। मैं देखता हूं कि तुम मेरे स्नेह-प्यार का नाजायज फायदा उठा रहे हो। आज तुम झूठ बोलते हो, कल चोरी करोगे, धीरे धीरे सब बुरी आदतें पड़ जाएंगी।

कला : इससे यह पूछो भैया कि इसके पास यह बीस-पच्चीस लटटू कहां से आए। (अलमारी में से एक संदूकची लाती है) यह देखिए। यह है इसकी संदूकची। भरी पड़ी है लट्टुओं से। इसके पास इतने पैसे तो होते नहीं जो लट्टू खरीद ले।

कैलाश : बोलो राजू, इसका क्या जवाब है तुम्हारे पास ? कहो, चुप क्यों हो ? बोलते क्यों नहीं ? झूठ के पैर नहीं होते राजू और सत्य किसी बात से घबराता नहीं। एक झूठ को छिपाने के लिए दस झूठ और भी बोलने पडते हैं।

राजू : मैं लट्टू नहीं चलाया करूंगा भैया, और पतंग भी नहीं उड़ाया करूंगा।

कैलाश : मैं यह तो नहीं कहता कि खेलो-कूदो ही नहीं। समय के अनुसार पढ़ो भी और खेलो-कूदो भी, पर शर्त बद कर नहीं। हां, तो तुम्हें सक्सेना साहब का घर भी नहीं मिला। उनका

पता तो बड़ा सीधा है। उनका नाम लेकर किसी से भी पूछते, वही बता देता।

राजू : मैंने बहुत कोशिश की। हर एक से पूछा। न जाने क्यों किसी ने बताया ही नहीं। बड़ी देर तक ढूंढ़ता रहा। आखिर परेशान होकर लौट आया।

कला : मैं तो यह कहती...

कैलाश : (बात काटकर) तुम चुप रहो जी। हां, तो तुम्हें उनके मकान का पता ही नहीं लग सका ?

राजू : हां, भैया, मैं सच कहता हूं। (सुबकने लग जाता है) यह कला तो जब देखो, तब मुझे पिटवाने की बात सोचती है।

कैलाश : पर मैंने तुम्हें कभी पीटा तो नहीं। मैं तो सिर्फ यह चाहता हूं कि तुम झूठ न बोलो। झूठ सब बुराइयों की जड़ है। और यदि तुम झूठे नहीं, तो ऐसा क्यों है ? सच बोलने वाले को तो कभी किसी से डर नहीं लगता। अच्छा तुम मेरी कसम खाकर सच सच बता दो कि उनके यहां गए थे कि नहीं ?

राजू : मैं आपकी कसम खाकर कहता हूं कि मैं उनके यहां गया था। भैया, मैंने उनका मकान बहुत ढूंढ़ा...

कैलाश : (सांस भरकर) अच्छा गया होगा। पर सच बोलते हुए तुम्हारी जुबान लड़खड़ा रही है। हूं ! (सोचते हुए) कला मेरी कोट तो उतार खूंटी से। मैं खुद जाकर सक्सेना साहब को लिफाफा दे आऊंगा।

[जाता है।]

कला : भैया बहुत दुखी होकर गए हैं। तूने उनकी झूठी कसम खाकर बड़ा पाप कमाया, राजू। वह हमारे मां-बाप, दोनों की जगह हैं। हम लोग अच्छी तरह पढ़-लिख जाएं, योग्य बनें, यह उनके जीवन की सबसे बड़ी साध है। लोग आ,आकर लौट जाते हैं, पर वह इसीलिए अपनी शादी नहीं करते कि कहीं हमारा जीवन दुखी न हो जाए। गली-मुहल्ले के लोग उनकी तारीफ करते नहीं थकते। पर हम हैं कि उन्हें दुखी करने पर तुले हुए हैं। तूने बहुत बुरा किया, राजू !

राजू : (अटकते हुए) पर मैं...गया तो था।

कला : इतना बड़ा पाप करने के बाद अब तो झूठ मत बोल। मुझे सब पता है। तू कांता के घर उनकी छत पर पतंग उड़ाता रहा। मैंने अपनी छत से तुझे देखा था। और कांता ने भी मुझे बताय

कि राजू सारे दिन ऊपर खेलता रहा है और यह बात मैंने भैया को भी बता दी थी। बस, वह समझ गए कि तूने उनकी झूठी कसम खाई है।

राजू : अच्छा तो उन्हें यहां तक बात का पता था ?

कला : तूने 'सत्यवादी हरिश्चंद्र' नाटक में हरिश्चंद्र का पार्ट किया। उसका भी तुझ पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। मैं कहती हूं कि राजू भैया, तू झूठ मत बोला कर। झूठ सब बुराइयों की जड़ है।

राजू : कला दीदी ! आज मैंने बहुत बड़ा पाप किया, जो भैया की झूठी कसम खा ली। आज इसका प्रायश्चित करूंगा।

[कुछ देर उपरांत। दृश्य वही है, पर अब कला और राजू अपनी अपनी खाट पर लेटे हुए किताब पढ़ रहे हैं।]

कैलाश : **(बाहर से दरवाजा खटखटाते हुए)** कला, दरवाजा खोल आकर।

कला : आई भैया ! **(दरवाजा खोलती है)**

कैलाश : ओ हो ! आज तो बहुत थक गया। **(कोट उतारता है)**

कला : मैं सिर दबाती हूं, भैया, अच्छी तरह से लेट जाइए। आ राजू भैया के पैर दबा।

कैलाश : नहीं, राजू को अपना काम करने दे। **(कुछ रुककर)** आज तुझे एक कहानी सुनाऊं, कला ?

कला : हां, हां, हम तो यह चाहते ही हैं, ए राजू, आ चल !

[पांव दबाने का इशारा करती है।]

कैलाश : यह क्या ? राजू मेरे पांव दबाने लगा ?

कला : कोई बात नहीं, भैया ! दबाने दो इसे पांव।

कैलाश : अरे हां, मुझे यह पूछना तो याद ही नहीं रहा कि तुम लोग खाना खा चुके कि नहीं ? क्यों राजू ?

राजू : नहीं।

कला : हमने तो चाय तक नहीं पी, भैया !

कैलाश : क्यों, चाय क्यों नहीं पी ? खाना क्यों नहीं खाया ?

कला : राजू को अपने किए पर बड़ा पछतावा है, भैया ! वह कहता है भैया चाय पिएंगे, तो पिऊंगा। भैया खाना खाएंगे, तो खाऊंगा। जब तुम दोनों नहीं खाओगे, तो मैं कैसे खा-पी सकती हूं।

राजू : भैया, आज आप मुझे माफ कर दें। मैंने आपकी झूठी कसम खाई। मैं वचन देता हूं कि फिर कभी झूठ नही बोलूंगा।

कैलाश : अरी कला, खाना बनाया भी है कि नहीं ?

कला : हां, खाना बनाया तो है, भैया !

कैलाश : अच्छा, तो चाय भी और बना ले। आज रोटी और चाय इकट्ठी खाई-पी जाए।

कला : (हंसकर) और राजू, तू भैया को अपना झूठ दान में दे दे।

राजू : (हंसकर) दे दिया। (तीनों हंसते हैं)

पर्दा गिरता है

(१९६५)

पानी और रसगुल्ले

□ रमेश भाई

पात्र

मुन्नू	बिमला
भैया	भाभी

[एक मध्यवर्गीय परिवार के खाने का कमरा, जिसमें एक शीशे की अलमारी तथा एक मेज है। तीन तरफ चार कुरसियां पड़ी हुई हैं। एक घड़ी रखी हुई है, जो पौने छः बजा रही है। मेज पर चाय के प्याले, चीनी और दूध रखा है। दसवर्षीय मुन्नू अपनी भाभी के पास बैठा है।]

मुन्नू : भाभी, पौने छः बज गए। आज अभी तक भैया नहीं आए।

भाभी : आते ही...(**साइकिल की आवाज**)

मुन्नू : (**उठकर चलते हुए**) लो, भैया आ गए। (**अंदर की तरफ चलता है और उसी समय लौटकर**) वह तो शीला के पिताजी थे, भाभी !

भाभी : मुन्नू, तुम दूध पीकर खेल आओ। क्या पता दफ्तर में काम अधिक हो। शायद उन्हें देर हो जाए।

मुन्नू : मगर भाभी, मैंने आज रसगुल्ले मंगाए हैं।

भाभी : वह रसगुल्ले लाएंगे, तो कहीं भाग थोड़े ही जाएंगे। खेलकर खा लेना।

मुन्नू : नहीं भाभी, मैं ताजा ताजा रसगुल्ले खाऊंगा।

भैया : (**प्रवेश करते हुए**) ताजे ही नहीं, बिलकुल गरम गरम खाओ और खूब खाओ।

मुन्नू : बड़े अच्छे हैं मेरे भैया !

[मुन्नू खड़ा होकर कूद कूदकर गाते हुए]

बड़े भले हैं मेरे भैया।
मुझे खिलाते हैं रसगुल्ले।

भाभी : अरे मुन्नू ! कब तक गाएगा ? जा, हाथ धोकर जल्दी आ। मैं इतने में चाय लाती हूं।

मुन्नू : अभी आया हाथ धोकर।

[मुन्नू एक तरफ को और भाभी दूसरी तरफ को जाती

है। भैया शाम का समाचारपत्र पढ़ते हैं। मुन्नू नल खुला छोड़कर जाता है। और भाभी केतली लेकर कमरे में प्रवेश करती है।]

भैया : (**अखबार मेज पर रखते हुए**) मुन्नू, तुम नल बंद करके नहीं आए ?

मुन्नू : ओह, मैं भूल गया।

भैया : तो फिर जाओ, नल बंद कर आओ।

भाभी : अजी, नल बंद भी हो जाएगा, बेचारे को रसगुल्ले तो खाने दीजिए। कब का बैठा रसगुल्लों की प्रतीक्षा कर रहा है।

भैया : जहां इतनी देर प्रतीक्षा की है, वहां कुछ मिनट और सही।

भाभी : (**मुन्नू की तरफ रसगुल्लों की प्लेट बढ़ाते हुए**) अजी, दस-बीस मिनट नल खुला भी रह जाएगा तो ऐसा क्या बिगड़ जाएगा।

मुन्नू : (**रसगुल्लों को चम्मच से काटते हुए**) भैया, पानी से सस्ती और क्या चीज है।

भैया : नहीं मुन्ने, यही तो तुम्हारी भूल है। पानी सस्ता है तो क्या हुआ ? पानी एक राष्ट्रीय धन है। इसको जरा सा भी बरबाद करना राष्ट्रीय अपराध है।

मुन्नू : (**आश्चर्य से**) राष्ट्रीय अपराध ? वह कैसे ?

भैया : यों समझो मुन्नू, कभी तुम नल खुला छोड़ आए, कभी बिमला और कभी नौकर ने यह भूल की।

बिमला : माना कि छोड़ दिया, पर राष्ट्रीय अपराध कैसे हुआ ?

भैया : यों समझो कि यदि एक नल एक घंटा प्रतिदिन खुला रहा, तो जानते हो कितना पानी बह जाएगा वर्ष भर में ?

बिमला : कितना बह जाएगा भला ?

भैया : इस प्रकार की गलती से लगभग पंद्रह हजार गैलन पानी बह जाएगा।

मुन्नू : (**आश्चर्य से**) पंद्रह हजार गैलन।

भैया : हां, हां, पंद्रह हजार गैलन पानी। यह भी यदि आध इंच वाला नल हुआ तो। यदि नल इससे बड़ा हुआ तो इससे अधिक पानी नष्ट होगा।

मुन्नू : यह तो बहुत हुआ। क्यों भैया, इस पानी के कितने रुपए देने पड़ेंगे ?

भैया : पचास पैसे प्रति हजार गैलन के हिसाब से पूरे साढ़े सात रुपए।

मुन्नू : (हिसाब लगाकर) यानी कि पंद्रह रसगुल्ले बह गए।

भैया : तुम ठीक समझे।

मुन्नू : नहीं भैया। यह नहीं हो सकता। मैं पंद्रह रसगुल्ले कभी नहीं बहने दूंगा। अभी जाकर नल बंद करता हूं।

[मुन्नू का जाना]

भैया : हां, जल्दी नल बंद कर आओ।

बिमला : मुन्नू, तुम्हें जाने की आवश्यकता नहीं। मैं नल बंद कर आई हूं।

मुन्नू : धन्यवाद, भाभीजी !

बिमला : कोई बात नहीं...पर एक बात तो समझाइए।

भैया : बोलो, क्या ?

बिमला : हम जितना पानी बहाते हैं, उसका तो हम पैसा दे देते हैं, फिर यह राष्ट्रीय अपराध कैसे हुआ ?

भैया : हर वह चीज राष्ट्रीय धन है जिसके कम और अधिक होने से देश की आर्थिक स्थिति पर प्रभाव पड़ता है।

मुन्नू : क्या प्रभाव पड़ता है ? यह तो मैं भी जानता हूं।

भैया : मुन्नू, क्या तुम बता सकते हो, नलों में पानी कहां से आता है ?

मुन्नू : हमारे यहां तो यमुना से आता है।

भैया : पानी यमुना से अपने आप नलों में नहीं चला आता। बिजली की मशीनों द्वारा यमुना से पानी नलों में चढ़ाया जाता है। अब जरा यह बताओ भला : ५ हजार गैलन पानी को नल में चढ़ाने के लिए कितनी बिजली खर्च होती है ?

मुन्नू : आप ही हिसाब लगाइए।

भैया : कम से कम दस यूनिट बिजली।

बिमला : बस ? सिर्फ दस यूनिट ?

भैया : दस यूनिट बिजली कुछ कम होती है। दस यूनिट बिजली में छः सौ प्याले चाय का पानी गरम हो सकता है या तुम चार सौ अस्सी कपड़ों पर लोहा कर सकती हो।

बिमला : (आश्चर्य से) चार सौ अस्सी कपड़ों पर लोहा ?

मुन्नू : यह तो बड़ी भारी हानि होती है।

भैया : यह हानि इसलिए और भी अखरती है कि हमारे देश में बिजली की बड़ी कमी है। इसलिए यदि हम किसी भी प्रकार बिजली को नष्ट करते हैं तो दूसरों को कष्ट पहुंचाते हैं। देश के बढ़ते हुए उत्पादन को रोकते हैं।

विमला : देश के बढ़ते हुए उत्पादन को कैसे रोकते हैं?

भैया : जो बिजली हमने नष्ट कर दी, उसके स्थान पर धोबी ने कोयला काम में लिया। यह कोयला यदि बच जाता तो उसे किसान जला लेता।

बिमला : (हंसकर) क्या खूब। किसान कोयला जलाता। पर किसान के कोयला न जलाने से उत्पादन घट जाता है। समझ में नहीं आया।

भैया : यों समझो, इससे वह गोबर बच जाता, जिसे किसान जला डालते हैं।

मुन्नू : और उसकी खाद से किसान अधिक अन्न उपजा सकता।... यही कहना चाहते हैं न, भैया।

भैया : तुम ठीक समझे, मुन्नू?

बिमला : (आश्चर्य से) मगर इस छोटी सी बात का देश पर इतना प्रभाव पड़ता है। समझ में नहीं आया।

भैया : सीधी-सादी बात है। कन कन जोड़े मन जुड़े।...यह गलती कोई अकेले हम ही तो नहीं करते।

मुन्नू : अब समझा कि बिजली-पानी कितने बड़े राष्ट्रीय धन है।

भैया : चलो, समझ तो गए।

मुन्नू : अब रसगुल्ले खाएं।

भैया : तुमने इन रसगुल्लों के लिए बड़ी प्रतीक्षा की। इसलिए खूब छककर खाओ।

मुन्नू : रसगुल्ले बाद में खाऊंगा। बराबर के कमरे में पंखा चल रहा है। पहले वह बंद कर दूं...

भैया : ठीक है। जादू वह, जो सर पर चढ़कर बोले। (मुन्नू का उठ कर जाना)

बिमला : अरे! बातों बातों में मुझे बिजली की अंगीठी बंद करने की याद ही नहीं रही।

भैया : (खड़े होकर) हम सबको राष्ट्रीय धन का ठीक प्रयोग करना ही चाहिए।

पर्दा गिरता है

टेढ़ी उंगली

□ मन्मथनाथ गुप्त

पात्र

काजीजी	:	मुगल युग के एक प्रधान न्यायाधीश
मानिकचंद	:	दिल्ली का एक रईस
भवानीशंकर	:	दिल्ली का दूसरा रईस
रामनाथ	:	भवानीशंकर का मुंशी।

दरबान, नौकर, आदि।

पहला दृश्य

[दिल्ली के प्रधान न्यायाधीश मिर्जा हामिदुद्दीन संध्या समय अपने कमरे में बैठकर हुक्का पी रहे हैं। वह हुक्का पीते जाते है और कोई फारसी पुस्तक देख रहे है। ऐसा मालूम होता है कि जिस भी विषय को वह पढ़ रहे है, उसमें बहुत दिलचस्पी ले रहे हैं।]

दरवान : (**प्रवेश करता हुआ**) हजूर !

काजी : (**सिर उठाए बिना**) क्या ?

दरवान : हुजूर, एक आदमी आपसे मिलना चाहता है।

काजी : (**हुक्के से मुंह हटाकर, किताब बंद करते हुए**) कौन आदमी है? तुम जानते हो कि मैं सूर्यास्त के बाद किसी से नहीं मिलता। यही तो थोड़ा सा समय मिलता है कि कुछ पढ़ूं।

दरबान : हुजूर, मैंने सब कुछ कहा, पर वह कुछ सुनता ही नहीं। कहता है बड़ी आफत में है।

काजी : (**कुछ सोचते हुए, फिर किताब उठाकर उसे अलग करते हुए अनिच्छुक भाव से**) अ...च्छा, जब ऐसी बात है, तब ले आओ।

[मैले-कुचैले कपड़ों में एक व्यक्ति का प्रवेश।]

मानिकचंद : आदाब अर्ज, हुजूरेआला !

काजी : (**दिमाग पर जोर लगाकर पहचानते हुए खड़े होकर**) अगर मैं भूलता नहीं हूं तो आप सेठ मानिकचंद हैं। बैठिए।

[दोनों बैठते हैं।]

मानिकचंद : हां, हूं तो मैं वही, पर अब सेठ कहा।

काजी : क्यों, क्यों, क्या बात हुई ? मैंने तो कोई ऐसी बात नहीं सुनी।

मानिकचंद : बस बात कुछ ऐसी ही है, उसी के लिए तो आज आपकी खिदमत में हाजिर हुआ हूं।

काजी : **(मुंह बनाए हुए, फिर हुक्के की नली को एक बार मुंह से लगा कर फिर नली को हाथ में लेकर)** क्या बात है ?

मानिकचंद : **(कुछ सोचकर)** बात यह है हुजूर कि मैं कई पुश्तों से दिल्ली में रहता हूं। मेरे पिता ने व्यापार से अच्छा धन कमाया था ? उनके परलोकवासी होने पर वह सारा धन मुझे मिला। व्यापार की तरफ मेरा रुझान नहीं था, फिर भी जहां तक बन पड़ा, मैं अपनी कोठी की देखभाल करता था। मेरा मन व्यापार की चखचख में नहीं लगता था।

काजी : **(हुक्के का कश खींचते हुए)** तो ?

मानिकचंद : इसी बीच मेरे अलावा मेरे परिवार के सब लोग हैजे के शिकार हो गए। तब मुझे खयाल आया कि व्यापार अब किस के लिए करूंगा। सब बेच-बाचकर जो कुछ मिला, उसमें से कुछ तो मैंने तीर्थयात्रा के लिए रख लिया और बाकी एक लाख रुपए सेठ भवानीशंकर के यहां जमा कर दिए कि जब लौटूंगा तब एक मंदिर बनवा दूंगा।

काजी : **(अधीर होकर)** समझ गया, जब आप लौटे तो सेठ भवानीशंकर ने रुपए देने से इनकार कर दिया होगा। **(हुक्का पीते हैं)**

मानिकचंद : जी हां, यही बात है।

काजी : तो इसमें क्या है ? रसीद दिखाइए और रुपए वसूल कीजिए।

मानिकचंद : **(निराशा के साथ)** रसीद ही तो नहीं ली।

काजी : क्यों, रसीद क्यों नहीं ली ? **(प्रसंग बदलते हुए)** खैर जाने दीजिए। रसीद नहीं ली, तो जिस समय आपने रुपए दिए, उस समय कोई मौजूद तो होगा, उसी को गवाह के रूप में तलब कीजिए।

मानिकचंद : **(पहले से अधिक निराशा से)** उस समय वहां कोई मौजूद नहीं था।

काजी : **(कुछ क्रोध और कुछ आश्चर्य से)** तो फिर मेरे पास किस लिए आए ?

मानिकचंद : हुजूरेआला, आप जो कुछ कह रहे हैं, वह ठीक है। गलती तो मेरी ही है। पर मेरे साथ न्याय भी तो हो।

काजी : आपने जानबूझ कर विपत्ति बुलाई है, अब आप उसे भुगतिए भी।

मानिकचंद : तो मैं जाऊं? आज तक आपके यहां से कोई निराश होकर नहीं गया है।

काजी : **(पहले से अधिक जोर से टहलते हैं, फिर एकाएक जैसे कोई सूझ आ जाती है)** अच्छा, मैं न्याय करूंगा। पर आप रोज मुझसे मिलते रहिए, और जैसा जैसा कहूं, वैसा वैसा करते रहिए। फिर खुदा की मरजी।

मानिकचंद : **(उठकर सलाम करता हुआ)** अच्छी बात है, हुजूर ! मैं जाता हूं। आदाब अर्ज !

काजी : **(अन्यमनस्क भाव से)** आदाब अर्ज !

दूसरा दृश्य

[सेठ भवानीशंकर की हवेली में उनका कमरा। वह और उनका मुंशी रामनाथ बैठे हुए दिखाई देते हैं]

भवानीशंकर : मुंशीजी, मुझे तो नवाब हामिदुद्दीन ने बड़ी इज्जत दे दी।

रामनाथ : जी हां, है तो ऐसी बात। पर बीच में कुछ गड़बड़ न हो जाए।

सेठ : गड़बड़ कैसे हो जाएगी? नवाब साहब ने मुझे जो सहायक काजी का पद लेने का प्रस्ताव किया है, वह कोई अपनी ही राय से थोड़े ही किया है। मैं समझता हूं कि बादशाह सलामत का इसमें हाथ है।

रामनाथ : सेठजी, बात यह है कि मानिकचंद आया था। उसने कहा कि यदि उसके रुपए कल तक न दिए गए तो वह जाकर प्रधान न्यायाधीश की कचहरी में आपके विरुद्ध मुकदमा दायर कर देगा।

सेठ : मुकदमा दायर करेगा तो क्या करेगा? उसके पास न कोई रसीद है, न गवाही। ऐसे मुकदमों की धमकी में हम आ गए तो फिर हो चुकी।

रामनाथ : पर सेठजी, मानिकचंद को सब लोग धर्मात्मा मानते हैं। उसके खानदान को स्वयं बादशाह सलामत भी जानते हैं।

सेठ : **(कुछ निराश होकर)** इसके माने यह थोड़े ही हैं कि वह किसी के विरुद्ध कोई झूठी बात कह दे तो वह सच मानी जाएगी।

रामनाथ : नहीं, बात तो यह शायद सच न मानी जाए, पर आप पर शक तो हो ही जाएगा। संभव है कि इस शक के फलस्वरूप काजी साहब अपना प्रस्ताव वापस ले लें।

सेठ : यह तो बड़ा भारी अपमान होगा। मैं तो सब लोगों से कह चुका हूं कि मेरे पास यह चिट्ठी आई है। अब अगर यह प्रस्ताव वापस जाता है. तब तो मेरी नाक कट जाएगी। और यह दुष्ट मानिकचंद तो मुझे गली गली गालियां दे ही रहा है।

[एक नौकर का प्रवेश]

नौकर : मुंशीजी, मानिकचंद आया है।

[सेठ भवानीशंकर और रामनाथ एक-दूसरे का मुंह देखते हैं।]

रामनाथ : वह तो कहकर गया था कि कल आएगा। यह आज कैसे आ गया?

सेठ : यह तो बिलकुल भूत सा सवार हो गया है। जब देखो तब डटा रहता है। (**मुंशी रामनाथ की ओर आंख मारकर**) क्या किया जाए ?

रामनाथ : सेठजी, यह तो आपको तय करना है। अगर आपको सहायक काजी...

सेठ : बस, बस, समझ गया। (**नौकर की ओर देखकर**) उसे भीतर ले आओ।

[नौकर का प्रस्थान]

रामनाथ : मैं समझता हूं, आज इससे निपट ही लेना चाहिए।

[मानिकचंद का प्रवेश]

मानिकचंद : राम, राम, सेठजी ! (**बैठता है**)

सेठ : (**बेरुखी से**) राम, राम ! तुम तो अजीब आदमी हो। जब देखो, तब पीछे ही पड़े रहते हो।

मानिकचंद : मेरे रुपए दे दीजिए, फिर मैं आपकी हवेली की छांह से भी निकल जाऊं तो कहिएगा।

सेठ : (**रामनाथ से इशारा करता है**) देखिए मानिकचंद जी, मैं तो कभी रुपए-पैसे के किसी काम को खुद करता नहीं हूं। यही मेरे मुंशीजी हैं, यही सारे कामकाज करते हैं। आप इन्हीं से कहिए।

मानिकचंद : मैं तो अब सबसे कहकर हार चुका। अब तो केवल काजी साहब से ही कहना बाकी है, उन्हें भी सुनाऊंगा।

सेठ : मुझे तो तुम्हारी परीक्षा लेनी थी। बैठो, अभी मुंशीजी रुपए देते हैं। (**रामनाथ उठकर जाता है और एक संदूक खोलकर मुहरों की एक थैली उठाकर सेठजी के हाथ में देता है**)

रामनाथ : इसमें पूरे एक लाख की मुहरें हैं।

सेठ (**मानिकचंद की ओर थैली बढ़ाते हुए**) यह लो अपना रुपया। चाहो तो गिन लो।

मानिकचंद (**थैली लेते हुए**) जब आप इतने ईमानदार हैं कि आपने एक लाख पर लोभ नहीं किया तो दस-बीस मुहरों पर आपको लोभ न होगा, यह तो मानी हुई बात है। (**उठता है और जाने लगता है**) अच्छा, राम, राम !

तीसरा दृश्य

[काजी हामिदुद्दीन का वही कमरा। काजी साहब और मानिकचंद बैठे हुए दिखाई देते हैं।]

मानिकचंद : मुझे तो रुपए मिल गए। कैसे उसमें धर्मबुद्धि आ गई, यह मेरी समझ में नहीं आता।

काजी : धर्मबुद्धि नहीं आई, अधर्मबुद्धि आ गई। उसी के कारण उसने धर्म किया। मैंने उसको लिखा था कि मैं उसे सहायक काजी बनाने जा रहा हूं, इसी पर उसने आपके रुपए दे दिए।

मानिकचद : यह तो बहुत बुरा हुआ।

काजी : क्यों ? बुरा क्यों हुआ ?

मानिकचंद : मेरे साथ तो न्याय हुआ पर अब वह हजारों के साथ अन्याय करेगा। जिस पवित्र आसन पर आप बैठे हुए हैं, वह उसे अपवित्र करेगा।

काजी : ओह, यह बात है ? आप क्या समझ रहे हैं कि वह सचमुच सहायक काजी बनने जा रहा है ? मैंने तो उससे यह चाल खेली थी। तभी वह सही रास्ते पर आ गया। (**कुछ सोचकर**) हां, हां, मैं जानता हूं, उसने करोड़ों का लोभ देखकर तभी लाख रुपए की ईमानदारी की है। पर उसकी यह चालाकी चल कब पाएगी। यदि ऐसे व्यक्ति न्याय के आसन पर पहुंच जाएं और घूस का बाजार गरम हो जाए, तो नाश होने में देर क्या ? जहां ऐसे लोग हों, राज्य टिक नहीं सकता।

मानिकचंद : मैं आपको किन शब्दों में धन्यवाद दूं, समझ में नहीं आता। आपने खूब चाल खेली, नहीं तो वह एक पैसा भी न देता।

काजी : सीधी उंगली से घी नहीं निकलता है। मैं क्या करूं, उसी ने मुझे इस बात के लिए मजबूर किया कि मैं यह चाल चलूं।

पर्दा गिरता है

(१९६५)

मां का लाल

□ मन्मथनाथ गुप्त

पात्र

रमा : एक अधेड़ स्त्री
माधव : रमा का १५ वर्षीय पुत्र
सोहनलाल : माधव का पिता
पार्टी के सभापति, फौजी, पुलिस वाले, गांव वाले इत्यादि।

[एक मामूली कस्बा। एक मामूली दरजे की झोपड़ी में रमा, एक अधेड़ उम्र की स्त्री, रसोई में व्यस्त है। वह रसोई करती जाती है और बीच बीच में घूम घूम कर देखती जाती है। माधव का प्रवेश]

माधव : यह लो सौदा। पिता जी नहीं आए?

रमा : नहीं, वह तो अभी नहीं आए। आते ही होंगे। तू इतनी देर तक कहां था। सौदा क्या लाने गया, इतनी देर लगाई कि मानो पहाड़ खोद रहा हो।

माधव : (कुछ झेंपकर) मैं सौदा लेकर आने लगा तो उधर देखा कि बड़ी भीड़ है।

रमा : कोई बंदर नाच रहा होगा।

माधव : नहीं, मां, बंदर नहीं नाच रहा था। सभा हो रही थी। वहां मैंने सुना कि गांधीजी और सब नेता बंबई में कल, आठ अगस्त की रात को गिरफ्तार कर लिए गए।

रमा : (आश्चर्य के भाव को दबाकर) यह तो होता ही रहता है। कभी वह जेल में रहते हैं, कभी बाहर रहते हैं। वह महात्मा हैं, चाहें जहां रहें, जो करें, सब ठीक है, पर तू वहां क्या कर रहा था?

माधव : मां, सिर्फ महात्मा गांधी ही नहीं, हजारों और लोग भी गिरफ्तार हुए हैं। शहर में गिरफ्तारी हो रही है। (खुश सा होकर) यहां भी होगी।

रमा : (झुंझलाकर) जब होगी तब होगी, हमें इन बातों से क्या? तू अपना काम कर।

[माधव एक बार मां की तरफ देखता है। रमा खाना

पकाती है। माधव के पिता सोहनलाल का प्रवेश। माधव और रमा दोनों अपना काम छोड़कर सोहन-लाल के पास आते हैं। सोहनलाल पसीना पसीना हो रहा है।]

सोहनलाल : (एक झोला रखते हुए) बड़ी मुश्किल से आ पाया। चारों तरफ अजीब अजीब अफवाहें उड़ रही हैं। किसी ने कहा, रेल उड़ा दी जाएगी, इसलिए मैं लारी में आया।

रमा : क्यों, रेल क्यों उड़ा दी जाएगी ?

माधव : (जोश में) अंगरेजों की जो है।

रमा : (माधव की बातों को अनसुनी कर) रेलें तो सबके काम आती हैं, उनको उड़ाने में क्या तुक है ?

सोहनलाल : तुक हो या न हो, इससे चारों ओर परेशानी मची हुई हैं। जिले के सारे अंगरेज अफसर परेशान हैं कि न मालूम क्या हो।

माधव : पिताजी, अब क्या होगा ?

सोहनलाल : होगा क्या, अंगरेज सरकार से लड़ाई होगी। मालूम होता है कि अब की बार कुछ होकर ही रहेगा।

रमा : तब की बार भी ऐसा ही सुना था, कुछ हुआ तो नहीं।

माधव : हम किस तरफ हैं ?

रमा : हम किसी तरफ नहीं हैं। हम छोटे आदमी हैं, हमें इन बातों से क्या मतलब ?

माधव : पर पिताजी तो पार्टी के मेंबर हैं ?

रमा : (झिड़कती हुई) जा, तू अपना काम कर। वह बाहर से आए हैं, हाथ-मुंह धोकर कुछ खाएंगे या तेरे साथ बकवास करते रहेंगे।

[सोहनलाल एक बार लड़के को, फिर एक बार स्त्री को देखता है, फिर अंगोछा लेकर कुएं की तरफ जाता है। रमा रसोई में लग जाती है।]

दूसरा दृश्य

[स्थान पार्टी का दफ्तर। ऊपर एक तिरंगा झंडा लगा हुआ है। दफ्तर के बाहर लोग मंडरा रहे हैं। माधव जाता है और एक भारी-भरकम नेता के सामने खड़ा हो जाता है।]

माधव : सभापति जी, मैं आपसे कुछ बात करना चाहता हूं।

सभापति : क्या बात करना चाहते हो, बेटा ? (**कुछ सोचकर अन्यमनस्क होता हुआ**) पर हमें अभी फुरसत नहीं है। बहुत से काम करने हैं।

माधव : मैं काम ही के संबंध में आया था।

सभापति : (**एकाएक दिलचस्पी लेता हुआ**) क्या काम ?

माधव : (**कुछ झेंपता हुआ**) कल आप सभा में कह रहे थे कि महात्मा जी 'करो या मरो' का नारा देकर जेल चले गए। मैं यह पूछने आया हूं कि मैं भी कुछ कर सकता हूं ? (**आशा के साथ सभापति की ओर देखता है**)

सभापति : क्यों नही ? यह तो ऐसा संग्राम है कि इसमें सभी कुछ न कुछ कर सकते हैं। तुम्हें वह किस्सा मालूम है न कि भगवान रामचंद्र ने लंका का जो पुल बांधा था, उसमें गिलहरियों ने भी काम किया था।

माधव : (**बहुत खुश होकर**) तो कहिए, मैं भी कुछ कर सकता हूं। आप मुझे कोई काम बताइए न ?

सभापति : (**एकाएक जैसे उसे कुछ याद आता है**) मुझे जल्दी जाना है। खबर मिली है कि पुलिस की दौड़ आ रही है (**कहकर एकाएक चलने लगता है**) तुम जाकर पढ़ो-लिखो, अभी तुम्हारा यही काम है। स...म...झे ?

तीसरा दृश्य

[स्थान : मैदान। कई बालक एकत्र हैं। समय : रात का पहला पहर।]

माधव : गांव के बहुत सारे नेता गिरफ्तार हो चुके है। जब-तब पुलिस की दौड़ आ रही है। हम लोगों के जी में भी है कि कुछ करें, पर कोई बताता ही नहीं। (**निराश भाव से सिर पर हाथ मारता है**)

एक बालक : यही बात तो मेरी समझ में नहीं आती है। स्कूल जाना तो छोड़ दिया। सारे स्कूल तो बंद भी हो गए।

माधव : पढ़ना तो अच्छा होता है, पर कई बार ऐसे मौके आते हैं कि पढ़ने से भी महत्वपूर्ण काम सामने आ जाते हैं। देश संकट में है, हम लोग भी कुछ करना चाहते हैं।

[एक अज्ञात व्यक्ति का अंधकार चीरकर प्रवेश]

अज्ञात व्यक्ति : तुम लोग काम करना चाहते हो ? यह तो बहुत खुशी की बात है।

[सब बालक उसे घेर लेते हैं]

माधव : आप कौन हैं ?

वह व्यक्ति : मैं चाहे कोई भी हूं, इस समय मैं केवल एक सिपाही हूं। मैं साम्राज्यवाद का शत्रु हूं। मैं अंगरेजों को यहां से निकालकर ही रहूंगा, क्योंकि देश की गरीबी तभी दूर हो सकती है, तभी भूखों को अन्न और नंगों को कपड़ा मिल सकेगा।

माधव : (एकाएक आगंतुक को पहचान कर) आप तो हमारे सभापति जी हैं।

सभापति : मैं जो भी हूं, तुम लोगों की बात सुनकर बहुत खुश हुआ हूं। तुम लोग देश के लिए बलिदान करने को तैयार हो, यह देखकर मुझे बड़ी खुशी हुई है। अब देश स्वतंत्र होकर ही रहेगा।

माधव : (मचल जाता है) खुशी-वुशी जाने दीजिए, कोई काम बताइए। हम लोगों ने अखबारों में देखा, तो कुछ समझ में नहीं आया। अब आप ही कोई काम बताइए।

सभापति : काम बताता हूं। तुम लोगों का काम है कि पुलिस वाले या फौजी इधर आएं, तो हमें उनकी खबर दो और उन्हें हमारी खबर लगने न दो। माधव, मैं तुम्हें लड़कों का नेता बनाता हूं, तुम हमारे साथ चलो। तुम आकर सब खबर दिया करो। ये लड़के तुम्हारे अधीन काम करेंगे।

[माधव को लेकर सभापति का प्रस्थान और शेष लड़कों का तितर-बितर हो जाना।]

चौथा दृश्य

[गांव से लगे मैदान में चारों ओर फौजी और पुलिस वाले दिखाई पड़ते हैं। एक अंगरेज भी है। उसके करीब गांव वाले सिर नीचा किए हुए एक लाइन में बैठे हैं। उन सबके हाथ पीठ पीछे हैं, यद्यपि उनके हाथ बंधे हुए नहीं है। इनमें कुछ लड़के भी हैं।]

एक फौजी : तुम लोग बताओ कि तोड़-फोड़ करने वाले कहां छिपे हैं ? तुम लोगों को एक मिनट का समय और दिया जाता है।

एक नागरिक : हुजूर, हम लोगों को तो कुछ भी मालूम नहीं है। हमारा खानदान तो हमेशा से अंगरेज सरकार का नमकहलाल रहा है। गदर के जमाने में मेरे दादा ने अंगरेजों की बड़ी मदद की थी। उनकी सनदें और तमगे मैं हजूर को दिखा चुका हूं।

फौजी : उन सड़ी हुई सनदों से कुछ काम नहीं बनेगा। यह बताओ कि ये तोड़-फोड़ करने वाले खाना कहां से पाते हैं? सब तुम लोगों की शरारत है। समय खत्म हो रहा है। **(घड़ी देखता हुआ)** समय खत्म हो गया।

[कोई कुछ नहीं बोलता।]

फौजी : **(आगे बढ़कर, पहले से मुलायम स्वर में)** मैं जानता हूं कि तुम लोग दोषी नहीं हो, पर एक-दो के पाप के कारण सब लोग मारे जाओगे? इसलिए भला इसी में है कि तुम लोग उन लोगों की बात बताओ जो तोड़-फोड़ करने वालों की मदद करते हैं। नहीं तो सबकी शामत आ जाएगी। एक एक घर जलाकर, सबको नंगा करके यहां से निकाल दिया जाएगा।

दूसरा आदमी : **(खड़ा होकर)** जब कोई कुछ नहीं कहता और जो लोग मदद देते हैं, उनमें इतना साहस नहीं है कि वे अपनी बात कहें, तो मैं ही बताता हूं। **(खांसता है)** यह लड़का माधव इस शरारत की जड़ है। यह गांव वालों से खाना मांगकर उन्हें पहुंचाता है। और खबरें देता और लेता है। इसके साथ और भी कई लड़के हैं, जिन्हें मैं नहीं जानता। **(कहकर माधव की ओर इशारा करता है)**

[फौजी माधव को निकालकर अलग कर देता है। उसके दो तरफ दो फौजी आकर जगह लेते हैं।]

माधव : इन्होंने जो कुछ कहा वह ठीक है। मैं खुद ही खड़ा होने वाला था। गांव को बचाने के लिए मैं अपनी जान आसानी से दे सकता हूं। मैंने जो कुछ किया, उस पर मुझे गर्व है। मैं किसी का नाम नहीं बताऊंगा। जय! भारत माता की जय!

[कहकर तेजी से कुछ बुकनी सी निकालकर मुंह में डालता है और देखते ही देखते वहीं ढेर हो जाता है। सब लोग आश्चर्यचकित रह जाते हैं।]

फौजी : **(संभलकर)** लड़का बड़ा होशियार है। उसने जो किया, वह हमें ही करना पड़ता। खैर...अब तुम लोग जा सकते हो।

[गांव वाले उठकर धीरे धीरे जाते है।]

पांचवा दृश्य

[बहुत दिनों के बाद वही गांव। सभा हो रही है। मंच पर गांधीजी और माधव

का एक एक तैल चित्र रखा है]

सभापति : भाइयो, सब बोलने वालों ने यह कहा है कि माधव ने इस गांव को बचाया, पर मैं तो यह कहता हूं कि उसकी सेवाएं इससे कहीं ज्यादा हैं। उसी की तरह के लोगों के कारण, फरजंदों के कारण भारत मां की बेड़ियां खनखना कर गिर पड़ीं, देश स्वतंत्र हुआ। गांव तो बच गया पर इस गांव में जो सबसे अच्छी चीज थी, उसे हम खो बैठे।

[रुआंसा होकर आंखें पोंछता है। सब लोग 'जय' बोलते हैं।]

पर्दा गिरता है

(१९६५)

शिशनगर

□ प्रफुल्लचंद्र ओझा 'मुक्त'

पात्र

रतन : सहकारी संपादक
हरीश : अनुवादक
हमीद : प्रेस का कर्मचारी
रामदीन : नौकर
संपादक, अध्यापक, फोरमैन इत्यादि।

['शिशु समाचार' प्रेस। मशीनों की घड़घड़ाहट सुनाई पड़ती है। एक ओर टेलीप्रिंटर खटखटा रहा है। संपादक घंटी बजाते हैं। रामदीन आता है।]

संपादक : रामदीन! मशीन पर कौन सा फर्मा छप रहा है? मैंने देखा नहीं। एक शीट लाओ तो।

रतन : (प्रवेश करके) संपादकजी। आपने अग्रलेख लिख लिया?

संपादक : मैं अभी लिख रहा हूं। आधा घंटे में दे दूंगा। क्या बात है?

रतन : मैंने कुछ टिप्पणियां लिखी हैं। आप देख लेते।

संपादक : लाइए देखूं—प्रधानमंत्री का वक्तव्य। नेपाल का शासन सुधार। कोरियाई युद्ध किधर? शीर्षक तो ठीक ही हैं। रख दीजिए। जरा देर बाद देख लूंगा।...लेकिन रतनजी! हमें एक बात हमेशा याद रखनी है। हमें और किसी की नकल नहीं करनी है। शिशुनगर की अपनी एक हस्ती है। 'शिशु समाचार' के लिए लिखते हुए हमें अपने आदर्श के अनुसार अपने स्वतंत्र दृष्टिकोण का ध्यान रखना चाहिए।

रतन : उसका मैं सदा ध्यान रखता हूं। इन टिप्पणियों में भी आपको इसकी झलक मिलेगी।
दक्षिण भारत के तीन बालक पहाड़ों और जंगलों में एक हजार किलोमीटर की पैदल यात्रा पूरी करके अहमदाबाद पहुंचे। वे तमाम दुनिया में इसी तरह घूमेंगे।

संपादक : यह कितना महत्वपूर्ण समाचार है। बालकों द्वारा की गई इस साहसिक यात्रा का दुनियाभर के देशों पर बड़ा प्रभाव पड़ेगा। इस सामाचार को इस तरह कोने में क्यों डाल दिया गया है?

रतन : मैं इसे देख नहीं सका था। टिप्पणियां लिख रहा था।
संपादक : लेकिन आपको देखना चाहिए था। यह आपकी जिम्मेदारी है।
रतन : मैंने सोचा था, मशीन प्रूफ में देख लूंगा। हरीशजी ने अनुवाद किया था।
संपादक : तो आपने अनुवाद भी नहीं देखा था ? ना, ना, यह अनुवाद भी ठीक नहीं हैं। रामदीन, हरीशजी को भेज दो मेरे पास। लोग इतनी असावधानी क्यों बरतते हैं ? थोड़ी सी सावधानी से इन दोषों को दूर किया जा सकता है।
हमीद : (प्रवेश करके) आपने बुलाया है मुझे ?
संपादक : हां, मैंने ही बुलाया है। समाचार का पहला फर्मा छाप रहे हो न ?
हमीद : अब छापने जा रहा हूं। मशीन प्रूफ अभी आपने नहीं लौटाया। कोई गलती रह गई है उसमें ?
संपादक : हां, उसी के लिए तुम्हें बुलवाया है। देखो, ये दो टाइप निकल गए हैं यहां से।
हमीद : वे तो निकल ही जाते हैं। मैंने उन्हें ठीक कर दिया है।
संपादक : देखो हमीद। हम अभी बच्चे हैं। हमें अपनी जिम्मेदारियों के प्रति होशियार और वफादार रहना चाहिए। जरा सी गफलत से बहुत बड़ा नुकसान हो सकता है, जबकि थोड़ी सी होशियारी बरत कर हम काम को ज्यादा खूबसूरती और अच्छाई से पूरा कर सकते हैं।...जाओ, फर्मा खोल दो।...रतन बाबू। आप भी साथ जाइए। पहले पेज में जो हेर-फेर करानी हो, अपने सामने करा लीजिए।
हरीश : (प्रवेश करके) आपने मुझे बुलवाया था, संपादकजी ?
संपादक : हां, हरीशजी। वह जो अहमदाबाद के तीन लड़कों वाला समाचार है-न ?
हरीश : दक्षिण भारत के वे लड़के जो सारी दुनिया के पहाड़, जंगलों की यात्रा के लिए निकले हैं ?
संपादक : हां, वही। उसका अनुवाद आपने किया है ?
हरीश : जी हां, क्या बात है ?
संपादक : वह अनुवाद मुझे पसंद नहीं आया।
हरीश : क्या दोष है उसमें ? मैंने तो अपने जानते कोई गलती नहीं रहने दी थी।
संपादक : अनुवाद इसलिए किया जाता है कि दूसरी भाषा की बात को

हम अपनी भाषा में समझ सकें। लेकिन अगर हमारी ही भाषा मुश्किल और उलझी हुई हो जाए, तब तो उस अनुवाद को ठीक नहीं कहा जा सकता न ?

हरीश : मैं आगे से इस बात का ध्यान रखूंगा।

संपादक : ठीक है, अब जाइए आप।

फोरमैन : (प्रवेश करके) संपादकजी, हमारे हाथ का मैटर तो खत्म हो चुका। कंपोज करने के लिए कुछ और मैटर दीजिएगा।

संपादक : अग्रलेख के ये पन्ने ले जाइए। जरा देर में बाकी हिस्सा भी भेजे देता हूं।...और देखिए, फाइनल प्रूफ अब मेरे पास भेज दीजिएगा। एक नजर देख लूंगा मैं।

फोरमैन : जी अच्छा !

रामदीन : (प्रवेश करके) संपादकजी ! कोई साहब आपसे मिलना चाहते हैं।

संपादक : कौन हैं ?

रामदीन : कोई परदेसी जान पड़ते हैं। बाहर से आए हैं।

संपादक : भेज दो उन्हें।

अध्यापक : (प्रवेश करके) अरे वाह ! लड़के ने कहा संपादकजी अंदर हैं और यहां तो कोई नहीं है...अच्छा मजाक किया उसने।

संपादक : जी, नहीं। मैं हाजिर हूं। आज्ञा दीजिए।

अध्यापक : लेकिन मैं तो संपादकजी से मिलना चाहता हूं।

संपादक : मैं ही संपादक हूं। मैं आपके लिए क्या कर सकता हूं ?

अध्यापक : तुम ? (हंसते हैं) अरे भई, तुम तो खुद इतने छोटे हो कि कुछ भी नहीं कर सकते। (हंसते हैं) तुम संपादक हो ?

संपादक : छोटा सिक्का हमेशा खोटा होता है, यह तो कोई बात नहीं हुई। लेकिन खैर, आप विराजिए तो पहले।...कहां से पधारे हैं आप ?

अध्यापक : मैं दूर से आया हूं, देहात से। वहां अध्यापक हूं। शहर आते हुए यहां रुक गया हूं। लेकिन यहां की सब बातें अजीब देखता हूं। तुम सबके सब इतने छोटे हो...

संपादक : बेशक हम छोटे हैं। लेकिन छोटे बीज ही बड़े बड़े वृक्षों के रूप में बदल जाते हैं। एक दिन हम सभी आपकी उम्र के हो जाएंगे।

अध्यापक : जब हो जाओगे, तब की बात तब देखी जाएगी। अभी तो तुम लड़के हो। तुम्हारी पढ़ने-लिखने की उम्र है।

संपादक : आप यह कैसे कहते हैं कि हम पढ़ते-लिखते नहीं ?

अध्यापक : फिर इन फालतू बातों में वक्त बरबाद करने से क्या फायदा है ? जब पढ़-लिख लोगे, तब तो ये सब काम तुम्हें करने ही होंगे ।

संपादक : आपको शायद यह नहीं मालूम कि हमारे इस गांव का नाम शिशुनगर है ।

अध्यापक : शिशुनगर, यानी बच्चों का गांव ?...ऐसा नाम तो कभी सुना ही नहीं । तब क्या यहां सिर्फ बच्चे रहते हैं ?

संपादक : जी हां, और वे ही गांव का सारा प्रबंध भी करते हैं ? लेकिन हमारा ज्यादा ध्यान रचनात्मक कामों की ओर रहता है जिनसे देश के निर्माण और संगठन को बल मिलता है ।

अध्यापक : ऐसे और कौन से काम करते हो तुम लोग ?

संपादक : हम स्कूल चलाते हैं और अखबार भी । हम सूत कातने, कपड़ा बुनने और सिलाई का काम करते हैं । फिर हम लकड़ी, बेंत और मिट्टी वगैरह से बनानेवाले घरेलू उद्योग-धंधे भी सीखते हैं । लेकिन इनसे भी बड़े हमारे कुछ और काम हैं ?

अध्यापक : वे कौन से काम हैं, भई ?

संपादक : अभी आप पढ़ाई-लिखाई पर बहुत जोर दे रहे थे, इसलिए मैं मान लेता हूं कि आप पढ़ने-लिखने को बहुत जरूरी समझते हैं ।

अध्यापक : इसमें क्या संदेह है ? बेपढ़ा-लिखा आदमी तो अंधे के समान है ।

संपादक : हम लोग बारी बारी से आस-पास के गांवों में जाते हैं और उन सयाने लोगों को पढ़ाते हैं, जो अभी तक पढ़ना-लिखना नहीं जानते ।

अध्यापक : (चौंक कर) खूब, बच्चे सयानों को पढ़ाते हैं ।

संपादक : बच्चों के प्रयत्न से जो काम हंसी-खेल में हो सकता है, सरकार के लिए वही एक भार बन सकता है । राष्ट्रनिर्माण के काम में जो भी आदमी जितना भी हाथ बंटा सकता है, वह क्या उसका कर्तव्य नहीं है ?

अध्यापक : क्यों नहीं, क्यों नहीं ? यह तो तुम लोग बहुत बड़ा काम करते हो, लेकिन इसके अलावा ?

संपादक : यह तो आप भी मानेंगे कि एकता में ताकत होती है ?

अध्यापक : भला यह भी कोई कहने की बात है ! इससे किसी को इनकार

होगा ?

संपादक : इनकार न होने पर भी हमारे यहां होता आज तक यही रहा है। इसी के कारण इंसान आज जाने कितने रंगों में, धर्मों में जातियों में बंटकर एक-दूसरे का दुश्मन बन गया है। लेकिन हमारा सबमे बड़ा कलंक यह है कि हमने अपने ही कुछ भाइयों को अछूत कहकर अपने से दूर कर दिया है।

अध्यापक : मैं तुम लोगों के सभी काम देखना चाहता हूं। यह कैसे अचरज की बात है कि इतने छोटे होकर भी तुम लोग इतने बड़े बड़े काम करते हो।

संपादक : हम अपने को सब तरह देश की सेवा के योग्य बनाना चाहते हैं।

[दृश्यांतर]

[कुछ लोगों की बातचीत की साफ न सुन पड़ने वाली आवाज]

एक : सात तो चाहे बज भी गए हों। अब तक आए नहीं वे लोग ?

दूसरा : आते ही होंगे। कोई घर में बैठे हैं कि फट से निकल आएं? दो कोस चल के आना है।

एक : हां, फिर और काम भी तो होंगे उनको।

दूसरा : मगर यह लालटेन कैसी फुक फुक जल रही है ? चिमनी जरा झाड़-पोंछ नहीं ली ठीक से ?

एक : झाड़-पोंछ से क्या होता है। वह तो फूट गई है उधर से।

दूसरा : मेरे खयाल से तो हमलोग दो-एक दिया जला लें तब तक।

एक : कुछ कागज-पेंसिल भी लाए हो कि दीया ही जला के बैठोगे ?

दूसरा : जैसे कागज-पेंसिल की दुकान रखी है घर में...आज बात तो पक्की हो जाए, कल ले आएंगे फिर।

एक : पढ़ना है तो बातचीत पक्की ही है सब। लेकिन, उधर देखो न वह तो मुखियाजी आ रहे हैं शायद।

दूसरा : हां, हां, और उनके साथ दो-तीन लड़के भी हैं। लेकिन मुखिया जी के साथ और कौन है वह ?

एक : जाने कौन हैं। सब अभी मालूम हो जाएगा। लो, वे आ ही पहुंचे।

[दृश्यांतर]

अध्यापक : भाइयो ! मैं परदेसी हूं और बहुत दूर से अचानक आपके बीच आ पहुंचा हूं। मेरी आधी जिंदगी बच्चों को पढ़ाते-लिखाते ही

बीती है। मुझे जब मालूम हुआ कि ये बच्चे आपको पढ़ाएंगे तब उनके साथ मैं भी आपके पास चला आया। पढ़ना-लिखना बहुत अच्छी बात है। जरूरी भी है सबके लिए। पढ़ने से जानकारी बढ़ती है। लेकिन इस उम्र तक पढ़-लिख कर और पढ़ा-लिखा कर भी मुझे तो सच्चा ज्ञान आज ही हुआ है। यह भी इन बच्चों के काम देखकर, इनकी बातें सुन कर। मैंने आज ही इनका शिशुनगर देखा है। मैं वहां के बच्चों से मिला हूं। मैंने उनसे बातें की हैं। उनका काम देखा है। ज्ञान की यह दौलत लेकर मैं दूर जा रहा हूं। यह दौलत आप लोगों के भी पास है। आप इसे खोएं नहीं। ईश्वर करे शिशुनगर सारे देश में फैल जाए और देश के नौनिहाल देश की खुशहाली और तरक्की के मजबूत पाए बन सकें। जयहिंद ! जय भारत !

(१९६५)

मजेदार मामाजी

□ सत्येंद्र शरत

पात्र

रेणु — नीरू
अशोक — मां (शकुंतला)
मामाजी : मां के मामाजी, आयु सत्तर वर्ष।

[पर्दा उठने पर, शहर से बीस या पचीस मील दूर, शहरी ढंग से बसे हुए गांव के एक बंगले का बाहरी हिस्सा, और उसके सामने का लान दीखता है। हरी घास वाला यह लान ईंटों द्वारा बनाई गई एक छोटी सी पगडंडी द्वारा दो हिस्सों में विभाजित कर दिया गया है। लान के पीछे की ओर फूलों के कुछ गमले कतार में सजा कर रखे हुए हैं। सामने बाईं ओर एक बहुत बड़ा पत्थर है, जो किसी चट्टान का हिस्सा लगता है और जिसे घर के बच्चे खेलते समय बैठने के लिए अपना घोड़ा या सिंहासन बनाने के काम में लाते हैं। बंगले का केवल बरामदा ही दाईं ओर दीखता है जिसमें बेंत की दो आरामदेह कुरसियां गद्दी के साथ रखी हुई हैं। पर्दा उठते ही चौदह वर्षीय रेणु साफ-सुथरे कपड़ों में सजी, कंघी और रिबन हाथ में लिए बाहर आती है और लान में आकर, बंगले की ओर मुंह कर अपनी छोटी बहन को आवाज देती है।]

रेणु : नीरू! नीरू!

नीरू : (**अंदर से**) हां, दीदो!

रेणु : तुम्हारा मुंह धुल गया या नहीं?

नीरू : (**अंदर से**) हां, दीदी!

रेणु : तो जल्दी बाहर आ जाओ। मैं तुम्हारी कंघी कर दूंगी और बालों में रिबन बांध दूंगी।

नीरू : (**अंदर से**) एक सैकेंड में आई, दीदी।

[रेणू घूमकर बाईं ओर बंगले के मुख्य फाटक की ओर (जो दर्शकों को अदृश्य है) देखती है, जैसे किसी आने वाले की प्रतीक्षा की जा रही हो। तभी अंदर से नया फ्राक पहने आठ वर्षीय नीरू का तौलिए से मुंह पोंछते हुए बाहर प्रवेश।]

नीरू : रेणु दीदी, आए नहीं मामाजी अभी तक?

रेणु : नहीं, अभी तक तो नहीं आए, पर आने ही वाले होंगे। गाड़ी तो स्टेशन पर आ गई होगी। अब वह पिताजी के साथ घर आ रहे होंगे। आओ इतने में तुम्हें तैयार कर दूं।

नीरू : (रेणु के सामने आकर खड़ी होती हुई) देखो, मेरी पोनीटेल बनाना। मैं मामाजी को दिखाऊंगी।

रेणु : (हंसती है) अच्छा...(नीरू के बाल संवारने आरंभ करती है)

नीरू : दीदी, मामाजी के टाइम में तो पोनीटेल नहीं होती होगी?

रेणु : (हंसकर) नहीं, पर मामाजी ने पोनीटेल जरूर देखी होगी।

नीरू : कहां, देखी होगी, दीदी?

रेणु : तुम्हें पता है, मामाजी पिछले पांच-छह साल से देहरादून, ऋषिकेश और हरिद्वार में रहते हैं। क्या मामाजी ने वहां किसी की भी पोनीटेल नहीं देखी होगी?

[सहसा अंदर से दस वर्षीय बालक अशोक का तेजी से प्रवेश। उसने कमीज और हाफपेंट पहन रखा है। और उसका चेहरा पानी में धुला हुआ है। उसके स्वर और व्यवहार में थोड़ी झुंझलाहट है।]

अशोक : रेणु दीदी! यह नीरू की बच्ची तौलिया यहां ले आई, और मैं वहां ढूंढ़ते ढूंढ़ते परेशान हो गया। (नीरू के निकट आकर) ला, जल्दी से तौलिया दे। (तौलिया खींच लेता है और जल्दी जल्दी अपना मुंह पोंछने लगता है)

नीरू : (जो अशोक के तौलिया खींचने से हिल जाती है, रेणु के शिकायत करते हुए) देखो दीदी, ये अशोक भाईसाहब हमेशा मुझसे छीना-झपटी कर चीज लेते हैं।

अशोक : (गुस्से से) अच्छा, तो कंघी दीजिए मुझे। मैं अपने बाल काढ़ूंगा।

[रेणु के हाथ से कंघी छीनने की कोशिश करता है।]

रेणु : (डांटती हुई) बदतमीजी न करो, अशोक! तुम तो अपनी तैयारी के लिए इतने बेसबरे हो रहे हो, जैसे मामाजी आकर सबसे पहले तुम्हीं से तो हाथ मिलाएंगे।

अशोक : (बंगले के मुख्य फाटक की ओर देखते हुए, सहसा) अच्छा, रेणु दीदी, यह तो बताओ, ये जो आज आ रहे हैं, ये तो माताजी के मामाजी हैं न?

रेणु : हां।

अशोक : तो फिर हम लोग इन्हें मामाजी कैसे कहते हैं? ये हमारे

मामाजी थोड़े ही हैं ?

रेणु : हां, ये हमारे मामाजी नहीं हैं, मगर माताजी के मामाजी तो हैं। इस रिश्ते से हम भी इन्हें मामाजी ही कहते हैं। मामाजी बहुत ही मजेदार आदमी हैं। तभी तो पिताजी, मौसीजी और मौसाजी सभी इन्हें मजेदार मामाजी कहते हैं।

अशोक : अच्छा ! मुझे तो इनकी बहुत हलकी सी बात याद है। मुझे सिर्फ इतना ही ध्यान है कि मजेदार मामाजी कहानियां और चुटकले बहुत अच्छे सुनाते हैं। मैं तो इनसे रोज नई नई कहानियां और नए नए चुटकले सुना करूंगा।

नीरू : (प्रफुल्लित स्वर में) और मैं भी उनसे रोज नई नई कहानियां सुना करूंगी।

[अंदर से बच्चों की मां आती है। बच्चों की बात उनके कानों में पड़ जाती है।]

मां : नहीं, नीरू, अशोक। तुम मामाजी को कहानियां सुनाने के लिए तंग नहीं करोगे।

अशोक : क्यों, माताजी ?

मां : इसलिए अशोक कि अब मामाजी बूढ़े हो गए है। अब उनमें पहले वाली ताकत नहीं रही है। अब तो तुम लोगों को उनका ध्यान रखना होगा।

अशोक : हम मामाजी का पूरा ध्यान रखेंगे।

रेणु : हम मामाजी को जरा सी भी तकलीफ नहीं होने देंगे।

नीरू : हम मामाजी को हर तरह का आराम देंगे।

[तभी बंगले के मुख्य फाटक के पास एक तांगा रुकने की आहट आती है। कुछ देर बाद तांगे के जाने की आहट होती है। सब लोग बाईं ओर, यानी मुख्य फाटक की ओर, देखने लगते हैं।]

मां : शायद मामाजी आ गए हैं।

नीरू : पिताजी भी तो साथ होंगे।

मां : (बाईं ओर देखती हुई, कुछ निराशा से) मगर बात तो कुछ उल्टी ही दीख रही है। मामाजी तो अकेले ही आ रहे हैं। तुम्हारे पिताजी उनके साथ नहीं है।

[तभी मामाजी दाएं हाथ में छड़ी और बाएं हाथ में अपनी अटैची लिए प्रवेश करते हैं।]

मामाजी : कहो बच्चो, तुमने अपने मामाजी को पहचाना भी या नहीं ?

(मां से) क्यों शकुंतला, क्या तुम भी मुझे पहचान नहीं सकीं ?

मां : (आगे बढ़ती हुई) नमस्ते, मामाजी ! आप कैसी बातें कर रहे हैं ? क्या हम आपको पहचानेंगे नहीं ?(बच्चों की ओर मुड़कर) अरे ! तुम लोग बुत बने क्या ताक रहे हो ? नमस्ते करो मामाजी को।

तीनों बच्चे : (एक साथ) नमस्ते, मामाजी !

मामाजी : नमस्ते, बच्चो नमस्ते ! भई, तुम लोग तो अब बहुत बड़े बड़े हो गए हो।

अशोक : (आगे बढ़, मामाजी के हाथ से अटैची लेना चाहता है) लाइए मामाजी, यह अटैची मुझे दीजिए। आपके हाथ दुखने लगे होंगे।

मामाजी : (करारी आवाज में) नहीं भाई, यह इतनी भारी नहीं है। यह तो बहुत ही हलकी है। वैसे तुम इसे लेना चाहते हो तो लो।

अशोक : (अटैची लेता हुआ) लाइए।

[अशोक अटैची को हलकी समझ कर आसानी से पकड़ना चाहता है। मगर अटैची हाथ में लेते ही वह डगमगा जाता है, क्योंकि अटैची बहुत भारी है। मामाजी जोर से ठहाका लगाते हैं। सब लोग उनकी हंसी में साथ देते हैं। अशोक खिसिया जाता है और अटैची नीचे रख देता है।]

मामाजी : (हंसते हुए) क्यों भाई, इतनी छोटी अटैची से ही डगमगा गए। आगे चलकर क्या करोगे तुम ? तुम्हारा नाम अशोक ही है न।

अशोक : (दबे स्वर में) जी हां।

मामाजी : तुम तो एक छोटी सी अटैची उठाते ही लड़खड़ाने लगे... (हंसते हैं, रेणु की ओर मुड़कर) और तुम तो रेणु हो न।

रेणु : (प्रसन्न स्वर में) हां, मामाजी।

मामाजी : (स्नेह से उसके सिर पर हाथ फेरते हुए) तुम तो बेटा, अब बहुत बड़ी हो गई हो। अब तो तुम घर के सब काम करने लग गई होगी।

रेणु : (गर्व से) हां, मामाजी ! अब तो मैं खाना भी बनाने लग गई हूं।

मामाजी : शाबाश, बेटा ! अच्छा, यह तो बताओ, खीर में शक्कर डालते हैं या नमक ?

[सब हंसते हैं।]

रेणु : मामाजी मैं बुद्धू नहीं, मुझे पता है, खीर में शक्कर डालते हैं।

मामाजी : (**बनावटी आश्चर्य से**) अच्छा ! (**नीरू की ओर मुड़कर**) तो फिर यह चवन्नी डालती होगी खीर में नमक। (**सबकी हंसी**)

अशोक : (**हंसकर**) यह दिन भर मेरी और रेणु दीदी की चुगली खाती रहती है। बस उसके बाद इसके पेट में कुछ भी खाने की जगह ही नहीं रहती।

[सब हंसते हैं।]

मामाजी : (**हंसते हुए**) अच्छा तो है भाई। अन्न की थोड़ी-बहुत बचत तो करनी ही चाहिए...(**मां की ओर देखते हुए**) क्यों शकुंतला, तुम भी इधर अन्न की बचत कर रही हो क्या ? आजकल खाना नहीं खातीं ? बहुत कमजोर लग रही हो।

मां : (**सिर का पल्ला ठीक करती हुई**) नहीं तो मामाजी, पिछले महीने कुछ दिन बुखार रहा, उसी से कमजोर लग रही हूंगी। वैसे मैं बिलकुल ठीक हूं।

मामाजी : हूं...और जगदीशनारायणजी तो मजे में हैं ? वह हैं कहां ? क्या अभी तक सो रहे हैं ?

मां : (**आश्चर्य से**) वह तो आपको लेने के लिए स्टेशन गए थे ?

मामाजी : (**बात काटकर, आश्चर्य से**) मुझे लेने ? क्या मैं बच्चा हूं ? या मुझे स्टेशन से यहां तक का रास्ता नहीं आता है ?

मां : नहीं, हमने सोचा था कि आपको आने में तकलीफ न हो, इसलिए वह अगर आपको लेने चले जाएं तो अच्छा रहेगा। क्या वह आपको मिले नहीं ?

मामाजी : नहीं तो...(**सोचते हुए**) और भला मिलते भी कैसे ?

मां : (**आश्चर्य से**) क्यों ?

मामाजी : गाड़ी आज समय से आधा घंटा पहले आ गई थी। स्टेशन से बाहर निकल मैंने तांगा किया और सीधा यहां आ पहुंचा। जगदीशनारायणजी अब स्टेशन पहुंचे होंगे...खैर। चिंता की बात नहीं है। थोड़ी देर में वह अपने आप आ जाएंगे।

मां : (**सहसा**) अरे मामाजी आप तो खड़े ही रह गए। आइए, बैठिए न। (**अशोक की ओर घूमकर**) अशोक बेटा, मामाजी के लिए कुरसी लाओ।

अशोक : (**फुरती से**) अभी लाता हूं, माताजी !

मामाजी : अरे रहने दो, भाई। कुरसी की क्या जरूरत है ?

[अशोक अत्यंत तत्परता से बरामदे में रखी बेंत की

कुरसी उठा लाता है और एक वृक्ष के साए में रखकर उसकी गद्दी ठीक करने लगता है। मामाजी उस पर बैठ जाते हैं।]

मां : मैं कुछ खाने के लिए लेकर अभी आती हूं। (चलते हुए) सुनो नीरू, तुम मेरे साथ आओ।

नीरू : अच्छा, माताजी।

मां : (चलते चलते) रेणु, अशोक, मामाजी का ध्यान रखना।

रेणु-अशोक : (एक साथ) अच्छा, माताजी !

[मां और नीरू अंदर जाती हैं।]

मामाजी : क्या यह आज का अखबार है ?

अशोक : जी, आप आराम से बैठिए। मैं आपको पढ़कर सुनाता हूं।

मामाजी : लाओ, अखबार मुझे दो। मैं पढ़ लूंगा।

अशोक : आप अब बूढ़े होते जा रहे हैं न। शायद आपकी आंखों से अब साफ साफ न दीखता हो।

मामाजी : (हंसकर) यह क्या कह रहे हो, अशोक ! मैं ऐसा बूढ़ा नहीं हूं। मेरी आंखें तो तुम्हारी आंखों से भी अच्छी हैं। मुझे कुछ भी पढ़ने में कोई दिक्कत नहीं होती। लाओ, अखबार मुझे दो।

[अशोक पराजित भाव से मामाजी को अखबार दे देता है। मामाजी अखबार खोलकर तपाक से उसे देखने लगते हैं। अंदर से नीरू का दो प्लेटों में फल और मेवे—जिनमें अखरोट, बादाम आदि भी शामिल हैं—लिए प्रवेश। दोनों प्लेटें वह मामाजी के सामने वाली छोटी मेज पर रख देती है। फल के साथ रखी छुरी की ओर इशारा कर वह रेणु से कहती है।]

नीरू : दीदी ! माताजी ने कहा है, तुम ये फल काटकर मामाजी को दो। इतने में वह शरबत लाती हैं।

रेणु : अच्छा ! (सेब काटने लगती है) लीजिए मामाजी, ये सेब खाइए। आप कहें तो मैं इससे भी छोटे टुकड़े कर दूं ताकि आपको खाने में आसानी हो जाए।

मामाजी : (चौंककर अखबार से नजर उठाते हुए) भाई, छोटे छोटे टुकड़े करने की क्या जरूरत है ? मैं ऐसे ही खा लूंगा। इतने बड़े टुकड़े मेरे लिए ठीक हैं।

रेणु : नहीं मामाजी, इतने बड़े टुकड़े चबाने में आपको दिक्कत होगी ?

मामाजी : **(आश्चर्य)** क्या दिक्कत होगी ?

रेणु : आपके दांतों से इतने बड़े टुकड़े चबेंगे नहीं।

मामाजी : **(और भी आश्चर्य के साथ)** क्यों नहीं चबेंगे ? मेरे दांतों को क्या हो गया है ?

रेणु : बुढ़ापे के कारण शायद आपके दांतों के इतनी ताकत...

मामाजी : **(आश्चर्य और कुछ क्रोध से)** तुम लोग ये सब क्या कह रहे हो। **(कुछ रुककर)** तुम मेरे दांतों का करिश्मा देखना चाहते हो ? तो देखो...

[आवेश में मामाजी सामने रखी प्लेट में रखे अखरोट और बादाम उठा लेते हैं और अपने दांतों से उन्हें खटाखट तोड़ते जाते हैं। तीनों बच्चे आश्चर्य से उन्हें देखते हैं।]

मामाजी : तुम तोड़ सकते हो अपने दांतों से इस तरह अखरोट और बादाम ?

[तीनों बच्चे एक-दूसरे की ओर देख आश्चर्य से अपना सिर 'नहीं' की मुद्रा में हिलाते हैं।]

मामाजी : मैं बूढ़ा जरूर हो गया हूं, मगर इतना कमजोर नहीं कि मेरी आंखें, मेरे दांत, मेरे हाथ-पांव और मेरे कान ठीक तरह से काम न करते हों। और इसे मैं साबित भी कर सकता हूं।

[अंदर से मां का प्रवेश। हाथ में शरबत का गिलास है। मामाजी को आवेश में देख जल्दी से आगे बढ़ आती है।]

मां : **(आश्चर्य से)** कैसे, मामाजी ?

मामाजी : **(शरबत का गिलास खाली कर मां को देते हुए)** अभी बताता हूं। **(इधर-उधर देखते हैं। अचानक उनकी दृष्टि बाईं ओर वाली चट्टान के टुकड़े पर पड़ती है)** हां, वह रहा। उस चट्टान के टुकड़े को देख रहे हो न तुम लोग ?

सब : हां, मामाजी।

[मामाजी लपककर चट्टान के पास जाते हैं और फुरती से उस पर बैठ जाते हैं।]

मामाजी : देखो, जब मैं तुम्हारी तरह बच्चा था, तो इसी चट्टान को घोड़ा बनाकर खेलता था और हर रोज उठाने की कोशिश करता था।

तीनों बच्चे : **(साश्चर्य)** अच्छा! इस चट्टान को।

मामाजी : हां, इस चट्टान को। फिर जब मैं जवान हुआ, तब भी मैं रोज यहां आकर इस चट्टान को उठाने या सरकाने के लिए जोर लगाया करता था।

तीनों बच्चे : (आश्चर्य से) अच्छा !

मामाजी : और जिस दिन मेरी शादी हुई, उससे अगले रोज भी आकर मैंने इस चट्टान को हिलाने के लिए ताकत आजमाई थी। और देखो, आज इतने साल बाद फिर मैं इस चट्टान को हिलाने या उठाने की कोशिश करूंगा।

तीनों बच्चे : (एक साथ सहमते से) रामाजी !

मां : मामाजी, अब आप जवान नहीं हैं। अब आपको इसे उठाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।

मामाजी : (उठ खड़े होते हैं) तुम देखो नो, शकुंतला। मैं जवान नहीं हूं तो क्या, ताकत तो मुझमें उतनी ही है।

[मामाजी एकदम घुटनों के बल बैठकर दोनों हाथों से उस चट्टान को हिलाने-डुलाने की कोशिश करते हैं। वह पसीना पसीना हो जाते हैं, मगर चट्टान टस से मस नहीं होती। एकाध बार कोशिश और कर मामाजी आखिर उठ खड़े होते हैं और हाथ झाड़ने लगते हैं।]

मामाजी : (मुसकराकर) देख लिया न। होती है मेरी बात साबित कि मैं अब भी पहले ही जितना मजबूत हूं।

सब : (आश्चर्य) कैसे, मामाजी ?

मामाजी : (मुसकराते हुए) अरे भाई, सीधी बात है, जब मैं बच्चा था, तब भी मैं इस चट्टान को नहीं हिला सकता था। जब मैं जवान हुआ, तब भी मैं इस चट्टान को नहीं हिला सका। शादी के अगले दिन भी मैं इसे नही सरका सका...और आज इतने साल बाद भी मैं इसे नहीं हिला सका। क्या यह बात यह साबित नहीं करती कि मैं आज भी उतना ही ताकतवर हूं, जितना पहले था।

[मामाजी सहित सब लोग जोर का ठहाका लगाते हैं।]

पर्दा गिरता है

आदत सुधार दवाखाना

□ मंगल सक्सेना

पात्र

बब्बू	डब्बू
बाब	बबलू
अनिल	सुनील
कंपाउंडर	डाक्टर
इंस्पेक्टर	हवलदार

दो हंसोड़

[मंच पर एक पर्दा टंगा है, जो मंच को दो भागों में बांटता है। पर्दे के बीच में प्रवेशद्वार है, जिस पर रंगीन पर्दा पड़ा है। बाईं ओर के भाग में सामने एक बेंच पड़ी है, दो-तीन स्टूल पड़े हैं। पीछे पर्दे के सहारे डंडों पर एक तख्ती लगी हुई है। तख्ती पर लिखा है 'आदत सुधार दवाखाना'। दाहिनी ओर के भाग में सामने पर्दे के सहारे एक छोटी आलमारी रखी है, जिस पर दवाओं की कुछ शीशियां रखी हैं। द्वार के पास ही दाहिनी ओर एक कुरसी रखी है। कुरसी के सामने मेज है। मेज पर एक मोटा रजिस्टर, एक संदूकची, लाइन खींचने का एक रूल, दवात व कलम रखे हैं। बाईं ओर के भाग में मरीज बैठते हैं और दाहिनी ओर के भाग में मेज के सामने कंपाउंडर साहब बैठते हैं।

बाईं ओर के भाग के बेंच पर दाहिनी ओर से क्रमशः डब्बू, बब्बू, अनिल, सुनील बैठे हैं। डब्बू के पीछे बब्बू खड़ा है। बब्बू के पीछे बाब खड़ा है। कंपाउंडर साहब दाहिनी ओर के भाग से मध्य के द्वार का पर्दा उठाकर बाईं ओर के भाग में आते हैं।]

कंपाउंडर : (डब्बू से) हंजी। क्या नाम ?

बब्बू : यह मेरा दोस्त है डब्बू।

[डब्बू उठकर भागने की कोशिश करता है मगर बंधा है, इसलिए भाग नहीं पाता।]

कंपाउंडर : (लिखते हुए) अच्छा जी ! डब्बू ! इसे बांध क्यों रखा है जी ?

बबलू : यह आ ही नहीं रहा था, कंपाउंडर साहब, जबरदस्ती लाया हूं।

कंपाउंडर : क्या आदत है जी ?

बबलू : यह चुगली खाता है।

कंपाउंडर : (बब्बू से) कुछ और नहीं खा सकता ?...चुगली खाता है। (मुंह बनाता है) अच्छा जी। (बब्बू से) फीस लाओ।

[बब्बू एक रुपया देता है। कंपाउंडर जेब में रख लेता है।]

कंपाउंडर : (बब्बू के पीछे खड़े बाब से) हुंजी। क्या नाम ?

बाब : यह मेरा छोटा भाई है बबलू। यह मेरी गलतियां फौरन पकड़ लेता है।

कंपाउंडर : तुम्हारा नाम ?

बाब : मेरा ?

कंपाउंडर : हुंजी।

बाब : बाब !

कंपाउंडर : बाब (लिखता है) बैठ जाओ जी। गलतियां बहुत करने की आदत है। है न ?

बाब : जी...मैं तो छोटे भाई को लाया हूं।

कंपाउंडर : तुम भी बैठ जाओ जी।...बहुत गलतियां करने की आदत बुरी है। लाओ फीस ?

[कंपाउंडर हाथ पकड़कर बाब को भी बेंच पर जबरदस्ती बिठा देता है। बबलू मुसकराता रहता है। बाब जेब से रुपया निकाल कर देता है। कंपाउंडर झट जेब में रख लेता है। फिर बबलू की तरफ देखता है।]

कंपाउंडर : हुंजी, क्या नाम ?

बाब : (बीच में ही) मैंने बताया था न मेरा छोटा भाई हैं बबलू।

बबलू : (कंपाउंडर की नकल करते हुए) हुंजी क्या होता है जी ? हां जी, कहिए, हां जी। उच्चारण सही होना चाहिए।

कंपाउंडर : (गुस्से से घूरकर) हूं।

बबलू : हां जी।

कंपाउंडर : (लिखता है) आदत चिढ़ाना, नकल उतारना, गलतियां निकालना, हुंजी (बाब से) फीस..

बबलू : (पहले की तरह) हुंजी नहीं, हां जी। उच्चारण सही होना चाहिए।

कंपाउंडर : (बबलू की तरफ घूरकर) हूं।

बबलू : हां जी।

कंपाउंडर : (अगले लड़के अनिल से) हुं...हां जी। ('हुंजी' कहता कहता

अटक जाता है, फिर बोलने लगता है) क्या नाम ?

अनिल : मेरा नाम अनिल है।

कंपाउंडर : अनिल। (लिखता है) आदत ?

अनिल : मैं जरा जरा सी बात पर रूठ जाता हूं। (रूठे हुए बच्चे की तरह मुंह फेर लेता है)

कंपाउंडर : वा' जी। क्या कहने है आपकी आदत के।

बबलू : (बीच में ही) वा' जी नहीं, वाह जी। उच्चारण सही होना चाहिए।

कंपाउंडर : (मुंह बनाकर अनिल से) फीस ?

अनिल : (जेब से रुपया निकाल कर) लो।

कंपाउंडर : (सुनील से) हूं...हां जी। क्या नाम ?

सुनील : (रोनी सी शकल बनाए) सुनील।

कंपाउंडर : आदत ?

सुनील : मैं हर वक्त उदास रहता हूं।

कंपाउंडर : (लिखता है) अच्छा जी। फीस ?

[सुनील रुपया देता है।]

कंपाउंडर : (सबको संबोधित करके) हां जी। डाक्टर अभी अंदर से आते हैं और तुम सब बच्चों की आदतों को सुघारने की दवा देते हैं, अच्छा जी।

बबलू : सुघारना नहीं, कहो सुधारना। उच्चारण...

कंपाउंडर : (मुंह बनाते हुए) हूं।

बबलू : (पहले की तरह) हांजी।

[कंपाउंडर मध्य का पर्दा उठाकर दाहिनी ओर के भाग में आता है। मेज पर अपना रजिस्टर रखता है। अन्य कागज उलटता-पलटता है। फिर अंदर जाता है।]

वाब : यह कंपाउंडर घनचक्कर है। मुझे जबरदस्ती बैठा लिया। जब कंपाउंडर ऐसा है तो डाक्टर भी घनचक्कर ही होगा।

बबलू : (मुसकराता है) हूंजी।

डब्बू : (गौर से देखता है और सोचता है) हूं।

[डाक्टर का कंपाउंडर के साथ अंदर से प्रवेश। वह कुरसी पर बैठकर रजिस्टर पर एक नजर डालते हैं। फिर अंगूठे और उंगली के इशारे से पैसों की बाबत पूछते हैं। कंपाउंडर जेब थपथपाता और हंसता है।

कंपाउंडर : (**बाहर लड़कों की तरफ आकर**) हंजी...अ...ह...अ...हां जी। (**डब्बू से**) तुम चलो।

[डब्बू नहीं जाना चाहता। उसका दोस्त बब्बू उसे पीठ की तरफ से धकेल कर खड़ा करता है। बबलू उसे धकेल कर भीतर ले जाता है।]

डाक्टर : हां, तुम्हारा नाम है—डब्बू ?...डब्बू, तुम चुगली खाते हो ?

[सभी बच्चे मध्य के पर्दे के आस-पास खड़े हो जाते हैं और कान लगाकर भीतर की बातचीत सुनते हैं।]

डब्बू : (**डाक्टर के पास जाकर रहस्य भरी आवाज में, धीरे से**) डाक्टर साहब, वो बाहर एक लड़का बैठा है बाब, वो कंपाउंडर साहब के लिए कह रहा था कि कंपाउंडर घनचक्कर है।

कंपाउंडर : (**गुस्सा होते हुए**) हुंय।

[डाक्टर ही ही करके हंसता है। डब्बू भी हंसता है। पर्दे के दूसरी तरफ बाब के सिवा सब बच्चे मुंह दबा कर हंसी रोकते हैं। बाब गुस्से से भुनभुनाता है।]

डब्बू : और डाक्टर साहब, वो तो कह रहा था कि डाक्टर भी घन-चक्कर है।

डाक्टर : (**एकाएक क्रोधित होकर**) हुंय।

[कंपाउंडर खी...खी...खी करके हंसता है।]

बाब : (**गुस्से में एकदम पर्दा उठाकर भीतर प्रवेश करते हुए**) चुगल-खोर ! (**डाक्टर से**) डाक्टर साहब, आप भी इस चुगलखोर के कहने मे आ गए ! सब जने इसकी बात मान लेते हैं, इसीलिए इसकी चुगली खाने की आदत बढ़ती जाती है।

डाक्टर : इसे हम ठीक कर देंगे। अभी एक गोली देते हैं।

कंपाउंडर : (**गुस्से से**) डाक्टर साहब, इसे बिलकुल कड़वी दवा दीजिए, हंजी।

बबलू : (**पर्दे में से गर्दन अंदर निकाल कर**) हंजी नहीं, कहिए हां जी। उच्चारण सही होना चाहिए।

कंपाउंडर : हूं।

बबलू : हां जी।

[इतने में जोर जोर से हंसने की आवाजें आती है। दो गोल-मटोल नाटे आदमी बाहर से प्रवेश करते हैं। रंगीन कपड़े पहने वे दोनों लड़कों को हाथों से इशारे कर कर के झूम-झूम कर हंसते हैं। इन हंसोड़ों को

देखकर बारी बारी से सभी बच्चे हंसने लगते हैं।]

डाक्टर : (हंसते हुए) तुम कौन हो ?...जोकर जैसे...

[दोनों हंसोड़ मटकते मटकते, हंसते हंसते डाक्टर के पीछे आकर मध्य के पर्दे के पास खड़े हो जाते हैं और सीटी बजाते हैं। क्षण भर में ही बाहर के द्वार पर पुलिस का सिपाही और इंस्पेक्टर नजर आते हैं।]

इंस्पेक्टर : हवलदार, पकड़ लो इन बदमाशों को।

[कंपाउंडर और डाक्टर भागने की चेष्टा करते हैं। मगर वहां रास्ता रोके दोनों हंसोड़ अड़े हैं। हवलदार दोनों के हाथ में हथकड़ी डाल देता है।]

इंस्पेक्टर : प्यारे बच्चो, मुझे मालूम है तुम सब अपनी किसी न किसी बुरी आदत को सुधरवाने के लिए आए हो। मुझे मालूम है, इन दोनों बादमाशों ने स्कूल के पास कल से ही यह धंधा चालू किया है। मगर मैं तुम्हें बता दूं कि ये दोनों एक नंबर के मक्कार और धोखेबाज हैं।

लड़के : (आश्चर्य से) जी।

इंस्पेक्टर : जी हां, मैं सही कह रहा हूं। हमारे पास इनकी धोखेबाजी के कई सबूत हैं। हम इन पर मुकदमा चलाएंगे और इन्हें सजा दिलाएंगे।

लड़के : और हम लोग ? हमारी आदतें ?

इंस्पेक्टर : सुनो बच्चो, जब तक तुम अपनी आदतों को बस में नहीं करोगे, कोई दूसरा तुम्हारी आदतें नहीं सुधार सकता। याद रखो आदतों का दास नहीं होना चाहिए।

कंपाउंडर : हमें छोड़ दो शाब...हमें तो इसने खराब किया, शाब ! हम तो देखा देखी खराब हुआ।

बबलू : शाब नहीं, साहब कहिए। उच्चारण सही...

कंपाउंडर : हूं।

बबलू : हां जी।

[तभी एकाएक मंच का प्रकाश मंद होने लगता है। कम होते होते बिलकुल कम हो जाता है।]

झूठ का अलार्म

□ वेद राही

पात्र

संजू	अनिल
पुष्प	सुनील
मम्मी	निर्मला

भिखमंगा

[एक साधारण सा कमरा। एक ओर एक खाट पड़ी है, दूसरी ओर दो-तीन कुरसियां और एक मेज है। इधर-उधर कुछ खिलौने पड़े हैं। दीवारों पर कुछ चित्र और कैलेंडर टंगे हैं। एक चित्र संजू के पिताजी का भी है।
कमरे के दाईं और बाईं दोनों ओर दो दरवाजे हैं। बायां दरवाजा बाहर जाने के लिए है, और दायां घर के भीतरी भाग की ओर खुलता है।
संजू बाएं दरवाजे से आता है। उसके गले में बस्ता है।]

संजू : मम्मी ! मम्मी ! (**बस्ता खाट पर पटकता है**) उफ, कितना थका हूं, स्कूल जाना भी क्या मुसीबत है ! (**दोनों हाथ रगड़ता है**) आज तो मास्टरजी ने हद कर दी। न जाने कहां से वह मौलाबख्श उठा लाते हैं। (**हथेलियों पर फूंक मारता है**) मम्मी ! मम्मी !

मम्मी : (**दाएं दरवाजे से मंच पर आकर**) क्या बात है संजू, इतना चिल्ला क्यों रहे हो ?

संजू : भूख लगी है मुझे। दूध दो।

मम्मी : अभी लाती हूं, पहले यह बता, तूने आज पढ़ा क्या स्कूल में।

संजू : वही जो रोज पढ़ता हूं। स्कूल भी क्या चीज बनाई है किसी ने। रोज रोज जाना पड़ता है। यह नहीं कि एक ही दिन जो पढ़ाना है, पढ़ा डालें सब।

मम्मी : अच्छा एक ही दिन में तुम बी० ए०, एम० ए० कर लेना चाहते हो यानी सालों की पढ़ाई एक दिन में। वाह, जो थोड़ा सा एक दिन में पढ़ते हो, पूछो, तो वह भी कब आता है तुम्हें।

संजू : कौन कहता है कि नहीं आता ? क्लास का मानीटर क्या यों ही बना दिया गया।

मम्मी : देखो संजू, तुम झूठ न बोला करो। बहुत बुरी आदत अपना ली है तुमने। क्लास में सबसे पीछे बिठाया जाता है तुम्हें और डींग मारते हो कि मानीटर हो।

संजू : कौन कहता है कि मैं मानीटर नहीं ? यह किसने तुम्हारे कान भर दिए है, मम्मी ?

मम्मी : मेरे कान किसी ने नहीं भरे। मुझे सब पता चल गया है। मुझे हैडमास्टर साहब ने तुम्हारे बारे में पूरी रिपोर्ट भेजी है।

संजू : अगर यही कुछ लिखा है, तो सब गलत लिखा है हैडमास्टर साहब ने। मैं कल उनसे पूछूंगा।

मम्मी : अरे, हैडमास्टर साहब से पूछोगे ? जरा हाथ दिखाओ, देखूं आज कितने डंडे पड़े लाट साहब पर।

संजू : (**हाथ पीछे करके**) मुझे कभी मार नहीं पड़ी।

मम्मी : बाप रे ! कितना झूठ बोलने लगे हो।

संजू : म...म...मी...मैं...मैं।

मम्मी : बस चुप करो, यह आज की ही बात नहीं। मैं बहुत दिनों से देख रही हूं, तुम बात बात में झूठ बोलने लगे हो। मैंने तुम्हारे पिताजी को लिखा भी था, तुम्हारी इस आदत के बारे में। उन्होंने भी कोई जवाब नहीं दिया। मैंने उन्हें लिखा था कि या तो वह अमरीका से वापस आ जाएं या कोई ऐसा उपाय भेजें कि तुम्हारी इस बुरी आदत का सुधार हो। तुम्हारी इस झूठ बोलने की आदत से तो मैं बहुत तंग आ चुकी हूं। बैठो, मैं अभी तुम्हारे लिए दूध लाती हूं। अच्छा, जाओ पहले तुम मुंह-हाथ धोकर आओ।

[दोनों भीतर जाते हैं। उस समय बाहरी दरवाजे पर कोई ठक ठक करता है। मम्मी वापस आकर दरवाजा खोलने लगती है।]

मम्मी : कौन ?

आवाज : पोस्टमैन।

[मम्मी बाहर जाती है। थोड़ी देर में कुछ पकड़े हुए वापस आती है।]

मम्मी : अरे, यह तो अमरीका से पार्सल आया है। संजू के पिताजी ने भेजा है। अरे संजू ! संजू ! (**पार्सल खोलकर देखती है**) एक घड़ी है, साथ में पत्र है। (**पत्र पढ़ते हुए**) तुम्हारी चिट्ठी से यह जानकर बहुत दुख हुआ कि संजू बहुत झूठ बोलने लगा

है। झूठ बोलने की आदत को सुधारने के लिए मैं एक घड़ी भेज रहा हूं **(पत्र से नजर हटाकर)** घड़ी? झूठ की आदत छुड़ाने के लिए घड़ी? **(फिर पत्र पढ़ने लगती है)** इस घड़ी को संजू की छाती के बाईं ओर, ठीक जहां पर दिल होता है, वहां बांध दो। जब कोई बच्चा झूठ बोलता है और उसके दिल की धड़कन तेज हो जाती है तो तुरंत घड़ी का अलार्म बज उठता है। **(चिट्ठी समाप्त करके)** संजू! संजू! इधर देखो तुम्हारे पिताजी ने क्या भेजा है तुम्हारे लिए। कितनी अजीब चीज है—कभी देखी न सुनी, ऐसी चीज।

संजू : **(भीतर आते हुए)** क्या है मम्मी?

मम्मी : तुम्हारे पिताजी की चिट्ठी आई है और देखो उन्होंने क्या भेजा है तुम्हारे लिए।

संजू : क्या भेजा है, मम्मी? दिखाओ तो!

मम्मी : यह देखो, यह घड़ी। इस घड़ी को छाती पर बांधना पड़ेगा तुम्हें।

संजू : **(चौंककर)** छाती पर?

मम्मी : हां, इससे झूठ बोलने की आदत छूट जाएगी।

संजू : तुम क्या कह रही हो?

मम्मी : ठीक कह रही हूं। उतारो अपनी बुश्शर्ट।

संजू : मेरी तो समझ में कुछ नहीं आ रहा।

मम्मी : **(उसकी बुश्शर्ट उतारते हुए)** अभी सब समझ में आ जाएगा। **(घड़ी उसकी छाती पर बांधने लगती है)** यहां...हां...यहां... ठीक दिल के ऊपर।

संजू : **(तंग आकर)** यह क्या कर रही हो, मम्मी?

मम्मी : बस बंध गई। अब तुम झूठ नहीं बोल सकोगे।

संजू : आखिर होता क्या है इस घड़ी से?

मम्मी : जब भी तुम झूठ बोलोगे, जोर से घड़ी का अलार्म बज उठेगा।

संजू : **(बुश्शर्ट पहनते हुए रुक जाता है)** एं।

मम्मी : हां।

संजू : पर मैं तो कभी भी झूठ नहीं बोलता, मम्मी!

[अलार्म बज उठता है।]

संजू : **(घबराकर)** अरे, अरे, मम्मी बंद करो यह अलार्म!

[कमरे में इधर-उधर दौड़ने लगता है।]

मम्मी : पहले माना कि तुमने झूठ कहा।

संजू : मैं...मैं...मम्मी सच कहता हूं कि मैंने कभी झूठ नहीं बोला।
[अलार्म बजता जा रहा है।]

मम्मी : तुम सच बोलते तो अलार्म बजता ही क्यों?

संजू : मैं अभी उतार के फेंकता हूं इस घड़ी को।

मम्मी : फेंकोगे तो मैं तुम्हारे पिताजी को लिख दूंगी।

संजू : अच्छा, मैं झूठ बोलता रहा हूं।
[अलार्म बजना बंद हो जाता है।]

मम्मी : (**हंसते हुए**) देखो, तुमने सच बोला, तो अलार्म खुद ही बंद हो गया।

संजू : (**सांस फूला हुआ है**) मैं हर समय इसे बांधकर नहीं रख सकता।

मम्मी : अब तो तुम इसे नहीं उतार सकोगे। यहां बैठो, मैं तुम्हारे लिए दूध लाती हूं। (**भीतर जाती है**)

संजू : कैसी मुसीबत बांध दी है मेरे साथ। अब तो बात करना ही मुश्किल हो जाएगा। क्या पता, किस बात पर अब अलार्म बज उठे। आखिर पिताजी को भी यह क्या सूझा। और जिसने यह घड़ी बनाई है, उसे तो गोली से उड़ा देना चाहिए। (**अपने आपसे बातें करता हुआ पिताजी की तसवीर के सामने आकर**) पिताजी आप तो मेरी बात मानिए कि मैं कभी भी झूठ नहीं बोलता।
[अलार्म बजने लगता है।]

संजू : (**घबराकर हाथ अपनी छाती पर रख लेता है**) अरे...नहीं...नही...बोलता हूं...पिताजी मैं झूठ बोलता हूं...
[अलार्म बजना बंद हो जाता है।]

संजू : कैसी मुसीबत में डाल दिया। मैं तो बाहर फेंक दूंगा इस घड़ी को।
[बाहर से लड़कों की आवाज आती है—संजू ! संजू !]

संजू : कौन (**दरवाजे के पास जाता है**) अरे तुम, आओ, आओ।
[अनिल, पुष्प और सुनील भीतर आते हैं। उनके हाथों में पुस्तकें है।]

अनिल : क्या बात है संजू, आज तुम खेलने नहीं आए? हम तो बहुत देर तक वहां खेलते रहे।

संजू : अरे, मैं आने ही वाला...नहीं, नहीं, ठहरो मुझे सोचकर बात करने दो। मैं तो बड़ी मुसीबत में फंस गया हूं।

पुष्प : क्यों, मुसीबत वाली क्या बात हो गई ?

संजू : **(एकाएक छिपाते हुए)** अरे कुछ नहीं यार, मैं तो यों ही बात कर रहा था। भला मुझ पर क्या मुसीबत आएगी। मुझ पर तो कभी कोई मुसीबत नहीं आती।

[अलार्म बजता है।]

संजू : **(जल्दी से छाती पर हाथ रखकर)** अरे हां, हां, भई मुसीबत तो है—बहुत बड़ी मुसीबत है।

[अलार्म बजना बंद हो जाता है। सब आश्चर्य में हैं।]

सुनील : भई, यह घड़ी का अलार्म कहां से बज उठा ?

पुष्प : मुझे तो ऐसा लगा, जैसे संजू के मुंह से अलार्म की आवाज आ रही है।

अनिल : मैं तो समझा, मेरी ही कुरसी के नीचे से अलार्म बोल उठा है। यार, अब तुम हमसे घड़ियां भी छिपाकर रखने लगे।

संजू : मैं क्या जानू ? **(तुरंत बोलता है)** नहीं, नहीं, मुझे पता है घड़ी का, पर मैं बताऊंगा नहीं।

सुनील : क्यों नहीं बताओगे ?

संजू : बस नहीं बताऊंगा। मम्मी ने एक खास जगह पर घड़ी को छिपा रखा है।

अनिल : लेकिन कहां ?

संजू : मैं तुम्हारे किसी सवाल का जवाब नहीं दे सकता।

पुष्प : क्यों ?

संजू : बस इस बात का जवाब भी नहीं दे सकता।

पुष्प : तुम्हें बताना पड़ेगा।

संजू : **(रुआंसा होकर)** अब मैं तुम्हें कैसे समझाऊं। **(खीजकर)** मेरी समझ में नहीं आता। मैं अभी मम्मी से जाकर कहता हूं।

अनिल : क्या कहोगे मम्मी से जाकर ?

संजू : **(चिल्लाकर)** कुछ नहीं। कुछ नहीं।

[बाहर से निर्मला की आवाज आती है।]

निर्मला : **(भीतर आते हुए)** 'संजू। संजू।' मैं आवाजें देकर थक गई और तुम सुनकर भी चुप।

अनिल : संजू गुस्से में है निर्मला, इस समय उसे तंग मत करो।

निर्मला : गुस्से में होगा तो मेरा क्या कर लेगा ? जरा चलो तो, मेरे पिताजी बुला रहे हैं। मैंने तुम्हारी शिकायत की है उनसे।

[मम्मी भीतर से आती है।]

मम्मी : क्या हुआ, निर्मला ?

निर्मला : कल शाम संजू ने मुझे पीटा था, आंटी।

संजू : मैंने इसे नहीं पीटा था, मम्मी !

[अलार्म बजने लगता है।]

संजू : (घबराकर) पीटा था...हां, पीटा था...

[मम्मी हंसती है। अलार्म बंद हो जाता है। संजू घुटनों में मुंह छुपा लेता है। सभी विमूढ़ से खड़े हैं।]

निर्मला : यह अलार्म कहां से बजा, आंटी ?

संजू : इन्हें मत बताना, मम्मी, इन्हें मत बताना।

मम्मी : बताने में क्या हर्ज है, संजू ?

संजू : नहीं, नहीं मैं रूठ जाऊंगा, मम्मी !

मम्मी : संजू, जब तक इन सबको तुम्हारी घड़ी के संबंध में नहीं बताया जाएगा, तुम्हारी झूठ बोलने की आदत कैसे छूटेगी। तुम खुद ही क्यों नहीं बता देते कि अलार्म देने वाली घड़ी तुम्हारी छाती पर बंधी है।

संजू : (छिपाने की कोशिश करते हुए) मेरी छाती पर कहां बंधी हुई है ?

[अलार्म बजने लगता है।]

संजू : (घबराकर छाती पर हाथ रखते हुए) अरे, हां, हां। बंधी हुई है...घड़ी मेरी छाती पर बंधी हुई है।

[अलार्म बंद हो जाता है।]

संजू : (बिसूरते हुए) मम्मी ! मम्मी ! यह घड़ी उतार लो। मैं अब कभी झूठ नहीं बोलूंगा।

मम्मी : क्या पता तुम फिर झूठ बोलने लगो।

संजू : अब कभी नहीं बोलूंगा।

मम्मी : झूठ तो नहीं कह रहे हो ?

संजू : झूठ कहता तो क्या अलार्म न बजता।

[सब हंसते हैं। मम्मी संजू को गले से लगा लेती है।]

पर्दा गिरता है

(१९६५)

ऐ रोने वालो

☐ स्वदेश कुमार

पात्र

चंदन	रंजीत
संचिता	भूषण

[सेट : खाते-पीते घर के बच्चों का कमरा, चारपाई, मेज, कुरसी, किताबें, कपड़े आदि बच्चों का सब जरूरी सामान है, पर बेतरतीब पड़ा है। पीछे दीवार पर कोई चित्र आदि नहीं हैं, उसकी जगह गत्ते पर हाथ से बड़ा बड़ा लिखा है : 'रोना बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है'।

समय : शाम। कमरे में हलका प्रकाश है, जो वातावरण की उदासी को और भी बढ़ा रहा है।

जिस समय पर्दा उठता है, रंजीत दर्शकों की तरफ पीठ किए बाईं तरफ बड़ी कुरसी पर बैठा मेज पर सिर टिकाए हुए है। कुछ क्षण बाद उठकर उदास आंखों से कमरे में इधर-उधर देखता है और फिर सामने की दीवार के पास आकर गत्ते पर लिखे वाक्य के सामने खड़े होकर उसे पढ़ता है।]

रंजीत (**उदास, धीरे धीरे**) रोना बच्चों का जन्मसिद्ध अधिकार है। (**मुड़कर, दर्शकों की ओर मुंह करता है**) किसी महापुरुष ने बिलकुल ठीक कहा है। जन्म लेते ही बच्चा सबसे पहले रोता है। अगर न रोए तो लेडी डाक्टर मारती है। बड़े होने पर मां-बाप मारते हैं ताकि हम बच्चों का रोने का अभ्यास बना रहे।

[रंजीत की आंखें गीली हो आती हैं। हिचकी ले लेकर रोने लगता है। चारपाई पर बैठकर चादर से आंसू पोंछता है। फिर हिचकियां लेने लगता है।

दाएं दरवाजे से भूषण और संचिता आते हैं। दोनों उदास हैं। तीनों एक-दूसरे की तरफ चुपचाप देखते हैं। भूषण और संचिता बारी बारी से जाकर गत्ते के सामने खड़े होकर हाथ जोड़कर सिर झुकाते हैं और फिर बैठ जाते हैं।]

रंजीत : भूषण, आज तुमने आने में देर कर दी। संचिता, तुम भी देर

से आई हो।

भूषण : हां, रंजीत, देर हो गई।

संचिता : हम तो समय पर आ जाते। पर रास्ते में चंदन मिल गया।

रंजीत : कौन चंदन ?

संचिता : हमारे पड़ोस में उसके मां-बाप नए आकर बसे हैं।

भूषण : बहुत ही चंट लड़का है, हमें रोककर चुटकुले सुनाने लगा। मैंने बहुत मना किया कि हमारे 'गलाफाड़ रुदन क्लब' के सदस्यों को चुटकुला सुनना मना है।

संचिता : लेकिन वह फिर भी चुटकुला सुनाने पर अड़ा रहा। हमने बहुत समझाया कि चुटकुला सुनने से हमें हंसी आ गई तो हमारा धर्म बिगड़ जाएगा और हमें 'गलाफाड़ रुदन क्लब' से निकाल दिया जाएगा, पर वह अपनी जिद पर अड़ा रहा।

रंजीत : (**चौंककर**) तो क्या तुमने चुटकुला सुन लिया ?

भूषण : नहीं, जी। हम दोनों रोते हुए वहां से भाग खड़े हुए।

रंजीत : शाबाश ! इसी पर एक बार बुक्का मार के रोओ तो जरा।

[तीनों जोर जोर से रोते हैं। फिर चुप होकर अपने कपड़ों से आंसू पोंछते हैं।]

संचिता : लेकिन हमें डर है कि चंदन हमारा पीछा करता हुआ यहां भी आ पहुंचेगा।

भूषण : हां, उसे चुटकुले सुनाने का रोग है।

रंजीत : वह जरूर नर्क में जाएगा।

संचिता : वह तो जब जाएगा तब जाएगा, लेकिन अभी यहां आ गया तो क्या होगा ?

रंजीत : आएगा कैसे ? मैं बाहर का दरवाजा बंद कर देता हूं।

[रंजीत उठकर दाईं तरफ का दरवाजा बंद करके वापस आ जाता है।]

रंजीत : चलो, अब संध्या-पूजन कर लें।

[रंजीत, भूषण और संचिता हाथ जोड़कर आंख बंद करके ध्यानमग्न हो जाते हैं और एक साथ प्रार्थना करते हैं।]

तीनों : (**एक साथ**) हे बच्चों के भगवान, हमें शक्ति दो कि हम सदा रोते रहें। हमारे मन में कभी भूले-भटके भी हंसने का कुविचार उत्पन्न न हो। हमें आशीर्वाद दो कि हम रोते रोते अपने बचपन के बाकी दिन काट सकें। हंसने-हंसाने के लोभ

में पड़कर हम नर्क के भागीदार न बनें।

[प्रार्थना करने के बाद तीनों श्रद्धावश आंखें बद करके झुककर भगवान को प्रणाम करते हैं फिर तीनों जोर जोर से रोने लगते हैं।

तभी दाएं दरवाजे पर खटखट होती है। तीनों चौंक कर उस तरफ देखते हैं। उनके चेहरों पर भय छा-छाता है। खटखट और जोर से होने लगती है।]

भूषण : लगता है, चंदन हमें खोजता हुआ यहां आ पहुंचा है।

संचिता : अब क्या करें ?

रंजीत : प्रार्थना !

[तीनों फिर आंखें मूंदकर, हाथ जोड़कर प्रार्थना करने लगते हैं।]

तीनों : (एक साथ) हे बच्चों के भगवान ! इस मुसीबत से हमारी रक्षा करो।

[तीनों ध्यानमग्न है। चंदन पाछे की खिड़की से चढ़कर कमरे में आ जाता है और इन तीनों के आगे आकर खड़ा हो जाता है।]

चंदन : बच्चो, हम तुम्हारी भक्ति से बहुत प्रसन्न हैं। आंखें खोलो, हम तुम्हें वरदान देना चाहते हैं।

[तीनों आंखें खोलकर चंदन की तरफ देखते हैं। घबराहट के कारण भूषण और संचिता अपने अपने मुंह के पसीने पोंछने लगते है।]

भूषण, रंजीत : यह तो वही चुटकुले सुनाने वाला चंदन है।

चंदन : नहीं, बच्चो, हम तो बच्चों के भगवान हैं। तभी तो दरवाजा बंद रहने पर भी इस कमरे में घुस आए। हम दुनिया के दौरे पर निकले थे। रास्ते में ट्रांजिस्टर पर तुम तीनों की प्रार्थना सुनी तो तुरंत इधर आ गए।

रंजीत : मुझे यकीन नहीं आता।

चंदन : तुम दोनों अभी हमारी प्रार्थना नहीं कर रहे थे कि हे बच्चों के भगवान हमें शक्ति दो कि हम सदा रोते रहें ?

रंजीत : हां, कर तो रहे थे।

चंदन : बस, तो यही प्रार्थना हमने अपने ट्रांजिस्टर पर सुनी थी।

[भूषण, रंजीत और संचिता बड़े गौर से चंदन को ऊपर से नीचे, आगे, पीछे देखते हैं। चंदन मुसकराता हुआ

बड़े मजे से खड़ा रहता है। भूषण, रंजीत और संचिता आंखों ही आंखों में इशारा करते हैं। फिर कमरे के बाएं कोने में जाकर सिर से सिर भिड़ाकर खड़े हो जाते हैं और खुसर-फुसर करने लगते हैं, मानो किसी बात पर बहस कर रहे हों। अंत में तीनों जोर जोर से ऊपर नीचे गरदन हिलाते हैं मानो किसी निश्चय पर एकमत हो गए हों। फिर तीनों गरदन घुमाकर चंदन की तरफ देखते हैं। तीनों धीरे धीरे चंदन के पास आकर खड़े हो जाते हैं।]

चंदन : हां, तो रोने वाले बच्चो, हम तुमसे बहुत प्रसन्न हैं। तुम सब मिलकर हमसे कोई भी एक वरदान मांग सकते हो।

रंजीत : अजी, बच्चों के भगवान जी, तुम बेकार की बैंड़ मत मारो।

चंदन : (चौंककर) ऐं ? यह क्या बोलते हो ?

रंजीत : हम सच बोल रहे हैं, भगवान जी ! तुम हमें वरदान नहीं दे सकते।

चंदन : नादान बालक, तुम हमारी परीक्षा लेना चाहते हो ? कोई बात नहीं। तुम वरदान मांग कर तो देखो।

संचिता : अच्छा, भगवान जी, हम यह वरदान मांगते हैं कि तुमने जिस ट्रांजिस्टर पर हमारी प्रार्थना सुनी थी, वह हमें दे दो।

चंदन : (घबराकर) ट्रांजिस्टर ?...वह... तो...वह...तो...

रंजीत : (बीच में ही) अब हो गई सीटी गुम... हो गई न। बड़े भगवान जी बन कर आए थे।

भूषण : अबे, मैं जानता हूं, तू चंदन है, जिसे हंसने की बीमारी है ?

संचिता : दूर हो जा, पापी, हमारी आंखों के सामने से।

चंदन : (मुसकराकर) और अगर मैं न जाऊं तो ?

रंजीत : तो...तो हम यहां से चले जाएंगे।

चंदन : तो चले जाओ।

[रंजीत, भूषण और संचिता उठकर खड़े हो जाते हैं। लाइन बनाकर बाएं दरवाजे की तरफ जाते हैं। रंजीत दरवाजा खोलने का प्रयत्न करता है। पर वह नहीं खुलता। देखकर चंदन शैतानी से मुसकराता है।]

चंदन : तुम लोग कमरे से बाहर नहीं जा सकते।

[गुस्से से भरे भूषण, रंजीत और संचिता पैर पटकते हुए चंदन के पास आकर खड़े हो जाते हैं।]

मंचिता : क्यों ?

चंदन : (मुसकराकर) क्योंकि मैंने दोनों दरवाजे पहले ही बाहर से बंद कर दिए हैं।

संचिता : (क्रोध से) यानी ! आखिर तू चाहता क्या है ?

चंदन : मैं अपनी तरह तुम तीनों को भी पापी बनाना चाहता हूं।

भूषण : यह कभी नहीं हो सकता।

[यह बात कहकर भूषण रंजीत और संचिता की तरफ देखता है, जो गरदन हिलाकर अपनी सहमति प्रकट करते हैं।]

चंदन : मैं मानने वाला नहीं हूं।

रंजीत : तुम लाख कोशिश कर लो पर हम झूठमूठ को भी हंसने वाले नहीं।

चंदन : अच्छा, शर्त रही ?

संचिता : कैसी शर्त ?

चंदन : यही कि अगर मैं तुम तीनों को एक बार हंसाने में सफल हो जाऊं तो तुम फिर कभी नहीं रोओगे। और अगर मैं असफल रहा तो मैं भी तुम्हारे 'गलाफाड़ रुदन क्लब' का सदस्य बन जाऊंगा।

संचिता : हमें शर्त मंजूर है। हम तुम्हें रुलाकर छोड़ेंगे।

[संचिता, रंजीत और भूषण चारों तरफ से चंदन को घेर लेते हैं और रोना शुरू कर देते हैं। चंदन हंसता रहता है। जैसे जैसे इन तीनों का रोना जोर पकड़ता है, चंदन और भी जोर जोर से हंसने लगता है। कुछ देर बाद रंजीत, संचिता और भूषण चुप हो जाते हैं। चंदन भी चुप हो जाता है।]

रंजीत : चंदन तो बड़ा बेशर्म निकला। हमने इसे रोने के लिए इतना ललचाया, पर इस पट्ठे ने झूठमूठ को एक बार भी तो हिचकी नहीं भरी।

संचिता : इसे मारो गोली। हम भले और हमारा रोना भला।

चंदन : गोली कैसे मारो ? अब मेरी बारी है।

संचिता : तो कर लो तुम भी कोशिश।

भूषण : तुम कभी भी हमें हंसाने में सफल नहीं हो सकते।

चंदन : लोगों को हसाना मेरे बाएं हाथ का खेल है। देखते जाओ तुम तीनों अभी हंसते हंसते लोटन कबूतर बन जाओगे।

रंजीत भूषण, संचिता, सावधान। हमें किसी भी तरह संकट का सामना करना है।

संचिता हे बच्चों के भगवान हमें शक्ति दो।

भूषण अब हम तैयार हैं।

[चंदन तरह तरह से मुंह बनाकर, हाथ नचाकर, उछलकूद कर तीनों को हंसाने की कोशिश करता है। लेकिन ये तीनों रोनी सूरत बनाए खड़े रहते हैं।]

संचिता मुझे तो तुम्हारी ये बचकाना हरकतें देखकर रोना आ रहा है। हाथ से आंसू पोंछती है।

चंदन यह बात है। तो पहले तुम पर ही वार करता हूं।

[चंदन बिल्ली की तरह हाथ-पैरों पर चलकर संचिता के चारों तरफ जल्दी जल्दी चक्कर लगाता है और बीच में 'म्याऊं ! म्याऊं' बोलता है। संचिता को हंसी आने लगती है।]

संचिता अरे बाबा, अब बस भी करो।

[तीनों कुछ देर तक हंसते रहते हैं।]

भूषण चंदन, आखिर तुमने हमारा धर्म बिगाड़ ही दिया।

चंदन मैं तो बस इतना जानता हूं कि जो बच्चा हमेशा रोता रहेगा वह जिंदगी में कभी कुछ नहीं कर सकेगा। और फिर एक दिन जब हमारे मां-बाप रिटायर हो जाएंगे तब हमें ही देश की बागडोर संभालनी है। लेकिन अगर हम रोते रहे तो समझ लो सारा देश रोता रहेगा। सोचो, जो हमेशा रोता रहेगा, वह कैसे देश की उन्नति कर सकेगा।

संचिता लेकिन यह बताओ कि अगर रोना बुरा है तो हम बच्चे पैदा होते ही क्यों रोने लगते हैं ?

चंदन गलत बात है। बच्चे पैदा हाते ही रोते नहीं हैं बल्कि एक फौजी अफसर की तरह अपनी मम्मी को आर्डर देते हैं कि जल्दी से हमें दूध पिलाओ।

भूषण, संचिता, रंजीत (एक साथ) बोलो चंदन भगवान की जय !

[जय बोलकर तीनों चंदन के चारों तरफ नाचने लगते हैं।]

पर्दा गिरता है

(१९६५)

चकमा

□ डा० मस्तराम कपूर 'उर्मिल'

पात्र

महिम, असीम, निम्मो : बच्चे

द्विजेंद्रनाथ : पिता

मालती देवी : मां

[असीम, महिम और निम्मो के पढ़ने का कमरा। पुस्तकें इधर-उधर बिखरी हुई हैं। ताक पर रखी घड़ी में नौ बजकर पच्चीस मिनट हुए हैं। असीम की आयु लगभग बारह वर्ष, महिम उससे कुछ छोटा और निम्मो लगभग पांच वर्ष की है। असीम एक जासूसी उपन्याम पढ़ने में डूबा है। महिम आगे-पीछे सिर हिला कर किताब से कुछ घोटने में लगा है और बीच बीच में उचक उचक कर असीम की पुस्तक देख रहा है। निम्मो कोने में पड़ी खिलौनों की टोकरी से खिलौने निकालती जाती है और किसी पर मुंह बिचका कर तथा किसी को प्यार करके रखती जाती है।]

महिम : (**जोर जोर से पढ़ने लगता है**) क्रिया वह शब्द है जिसमें किसी काम का करना, होना, सहना पाया जाए। क्रिया वह शब्द है जिसमें किसी काम का करना, होना, सहना पाया जाए, क्रिया वह शब्द है जिसमें...

असीम : महिम, चुपचाप पढ़ो।

महिम : भाई साहब, चुपचाप तो याद किया जाता है। पढ़ना तो वही जिसे दूसरे सुन सकें।

असीम : (**उपन्यास में डूबे हुए**) खबरदार ! आगे बढ़े तो गोली मार दूंगा।

महिम : (**चौंककर**) किसे ? मुझे गोली मार दोगे ?

असीम : तुम्हें नहीं, इस डाकू को। बच्चू, बहुत देर बाद काबू में आया है। हैंड्ज अप...

[निम्मो डरकर अपने दोनों हाथ ऊपर उठा देती है।]

महिम : भैया, परीक्षा सिर पर आ रही है और तुम जासूसी उपन्यास

पढ़ रहे हो ? बहुत बुरी बात है।

असीम : बोलो मत।

महिम : मैं पिताजी से कह दूंगा।

असीम : (**उपन्यास में डूबते हुए**) जो कुछ कहना है मैजिस्ट्रेट के सामने कहना...

महिम : (**मुंह बिचका कर**) समझ में नहीं आता कि यह जासूसी कहानियों के पीछे पागल क्यों है ?

[निम्मो खिलौनों की टोकरी से तलवार निकालकर महिम को दिखाती है।]

निम्मो : महिम, तुम्हारी तलवार।

महिम : (**लपक कर उसके हाथ से तलवार ले लेता है**) मैं शक्तिसिंह हूं। (**असीम की ओर देख कर**) प्रताप, अपनी तलवार उठाओ। आज यह फैसला हो जाएगा कि तुम बड़े वीर हो या मैं।

[असीम पुस्तक में डूबा रहता है और कोई उत्तर नहीं देता।]

महिम : तुम मुझे हमेशा छोटा छोटा कहते रहते हो। आज मेरी यह तलवार तुम्हें बता देगी कि मैं तुमसे किसी बात में छोटा नहीं हूं।

असीम : हूं...

महिम : आज मैं तुम्हारा सारा अभिमान तोड़ दूंगा।

असीम : हूं...

[महिम असीम पर चिढ़कर तलवार पटक देता है। इतने में बगल के कमरे से उनके पिता द्विजेंद्रनाथ की आवाज आती है।]

द्विजेंद्रनाथ : असीम यह क्या हो रहा है ?

निम्मो : कुछ नहीं, पिताजी, हम स्कूल का पाठ याद कर रहे हैं।

महिम : (**बगल के कमरे की ओर देखकर**) पिताजी अभी तक दफ्तर नहीं गए।

[द्विजेंद्रनाथ की आवाज फिर आती है।]

द्विजेंद्रनाथ : अरे महिम, आज स्कूल भी जाना है कि नहीं ?

महिम : हां पिताजी, जाना है (**घड़ी की ओर देखकर धीरे से**) अभी तो साढ़े नौ बजे हैं। पूरा एक घंटा पड़ा है।

द्विजेंद्रनाथ : खाना-वाना खा लो। दस बज रहे हैं।

निम्मो : दस बज रहे हैं। इस घड़ी में तो...

महिम : **(दूसरी ओर झांक कर देखता है)** कमाल हो गया, खाना भी तैयार है। बात क्या है ?

असीम : हर चीज का कोई न कोई कारण होता है।

महिम : तो फिर इसका क्या कारण है ?

असीम : किसका ?

महिम : यही कि आज सब कुछ जल्दी हो रहा है।

असीम : **(उपन्यास में डूबते हुए)** जल्दी, जल्दी और जल्दी। गाड़ी पूरी स्पीड पर छोड़ दो।

[द्विजेंद्रनाथ कमरे में आते हैं।]

द्विजेंद्रनाथ : कहां जा रही है गाड़ी पूरी स्पीड पर ?

[असीम उपन्यास में ही डूबा रहता है।]

असीम : **(बड़बड़ाते हुए)** डाकू भागे जा रहे हैं। गाड़ी और तेज कर दो।

द्विजेंद्रनाथ : ओहो, तो जासूसी उपन्यास पढ़ा जा रहा है।

[असीम चौंककर ऊपर देखता है और घबराकर पुस्तक छिपा देता है।]

द्विजेंद्रनाथ : खैर, कोई बात नहीं। कभी कभी जासूसी कहानियां भी बुरी नहीं होतीं। अच्छा, अब जाकर खाना खाओ, स्कूल के लिए देर हो रही है।

निम्मो : पिताजी, असीम तो हमेशा जासूसी कहानियां ही पढ़ता रहता है।

द्विजेंद्रनाथ : और तुम क्या करती हो, दूसरों की चुगली ?

असीम : **(घड़ी की ओर देखकर)** लेकिन अभी तो...

द्विजेंद्रनाथ : यह घड़ी खराब है **(अपने हाथ की घड़ी दिखाकर)** देखो, दस बज चुके हैं।

[द्विजेंद्रनाथ कमरे की घड़ी ठीक करते हैं। निम्मो, महिम आदि जाने लगते हैं। दूसरी ओर से पत्नी मालती देवी आती हैं।]

द्विजेंद्रनाथ : तुमने अभी तक कपड़े नहीं बदले। साढ़े दस बजे का शो है।

मालती देवी : कपड़े बदल लूंगी तो बच्चे समझ नही जाएंगे कि हम कहीं बाहर जा रहे हैं।

द्विजेंद्रनाथ : बच्चों को मैंने चार चार आने देकर खुश कर दिया है। अब उनका इस तरफ ध्यान भी नहीं जाएगा।

मालती देवी : तो फिर इतनी जल्दी क्या है ? घड़ी तो आधा घंटा आगे कर दी है। कपड़े बदलने में तो पांच मिनट लगते हैं।

[मालती देवी रसोईघर में चली जाती है।]

द्विजेंद्रनाथ : अच्छा तो तुम उन्हें जल्दी जल्दी तैयार करो।

[कुछ देर बाद द्विजेंद्रनाथ भी मुसकराते हुए बाईं ओर के कमरे में चले जाते हैं। कुछ देर तक कमरा खाली रहता है, फिर तीनों बच्चे स्कूल के लिए तैयार होकर आते हैं।]

असीम : मैं कहता हूं हर चीज का कोई न कोई कारण होता है।

निम्मो : किसका कारण ढूंढ़ रहे हो ?

असीम : साढ़े नौ बजे ही दस बजने का कारण, दो आने जेबखर्च की जगह चार आने जेबखर्च मिलने का कारण।

महिम : जासूसी उपन्यास हाथ में देखकर भी झाड़ न पड़ने का कारण...

निम्मो : और चाकलेट को भी अच्छा बताने का कारण।

असीम : जाहिर है कि इन सबके पीछे कोई न कोई कारण है।

महिम : (घड़ी की ओर देखकर) बाप रे, दस बज कर पांच मिनट ही गए।

[तभी मालती देवी की आवाज आती है।]

मालती देवी : असीम बेटा, जल्दी करो। देर हो रही है।

द्विजेंद्रनाथ : (अंदर से ही) स्कूल में हमेशा कुछ देर पहले पहुंच जाना चाहिए।

असीम : जल्दी, जल्दी, जल्दी। कुछ समझ में नहीं आता। (कुछ सोचकर) महिम !

महिम : क्या है ?

असीम : तुम्हें याद है, हमने एक बार सप्रू हाउस में नाटक देखा था।

महिम : हां, देखा तो था।

असीम : नाटक कितने बजे हुआ था।

महिम : दस...साढ़े दस बजे।

असीम : पिताजी मां के साथ नाटक देखने जा रहे हैं। इसीलिए हमें जल्दी जल्दी भेज रहे हैं।

निम्मो : (और जोर से) हम नाटक देखने जाएंगे। हम नाटक देखने जाएंगे।

[तभी द्विजेंद्रनाथ कमरे में प्रवेश करते हैं।]

द्विजेंद्रनाथ : तुम लोग अभी गए नहीं ?
निम्मो : हम तो नाटक देखने जाएंगे।
द्विजेंद्रनाथ : कौन जा रहा है नाटक देखने ?
महिम : असीम कहता है कि आपने आज इसीलिए छुट्टी ली है।
द्विजेंद्रनाथ : बिलकुल झूठ। मैंने छुट्टी नहीं ली है। बस एकाध घंटा देर से जाने वाला हूं। क्यों, असीम, तुमने कैसे कह दिया ?
असीम : नहीं, पिताजी, मैं तो...मैं तो...
द्विजेंद्रनाथ : चलो, जल्दी जाओ, स्कूल की घंटी लगने वाली है।

[तीनों हड़बड़ाकर बाहर की ओर भागते हैं। जब वे कमरे से बाहर हो जाते हैं, तब द्विजेंद्रनाथ अपनी योजना पर मुसकराते हैं।]

द्विजेंद्रनाथ : ये बच्चे भी बड़े चालाक होते हैं। निम्मो की मां, तैयार हो गई कि नहीं ?
मालती देवी : (**अंदर से**) बस, तैयार हूं।

[तभी तीनों बच्चे फिर अंदर आ जाते हैं।]

मालती देवी : तुम लोग लौट क्यों आए ?
असीम : स्कूल का गेट अभी बंद है। चौकीदार कहता था, अभी तो दस भी नहीं बजे हैं।

[सहसा द्विजेंद्रनाथ खूब जोर जोर से हंसने लगते हैं। उनकी देखा-देखी सभी हंसने लगते हैं।]

द्विजेंद्रनाथ : (**निम्मो से**) अरी क्यों हंस रही है ?
निम्मो : आप भी तो हंस रहे हैं।
द्विजेंद्रनाथ : इसलिए कि हमने तुम लोगों को चकमा देना चाहा लेकिन खुद ही चकमे में फंस गए।
असीम : तो आप नाटक देखने जा रहे हैं न ?
द्विजेंद्रनाथ : हां बेटे, हम नाटक देखने ही जा रहे थे। सोचा, तुम्हें बताएंगे, तो तुम लोग जाने की जिद करोगे।
निम्मो : (**उछलकर**)हम नाटक देखने जाएंगे। हम नाटक देखने जाएंगे।
द्विजेंद्रनाथ : भई, सच्ची बात यह है कि हमने दो ही टिकट लिए हैं। चूंकि हम सब लोग नहीं जा सकते, इसलिए इन दोनों टिकटों को मैं फाड़ देता हूं...

[असीम और महिम दोनों आपस में सलाह करते है।]

महिम : पिताजी, टिकट मत फाड़िए। हम लोग नाटक देखने नहीं जाएंगे।

निम्मो क्यों ?

असीम आपने सारी बातें सच सच बता दी हैं और सच बोलने वाले को कुछ इनाम जरूर मिलना चाहिए।

महिम बस, हम स्कूल जाएंगे और आप नाटक देखने।

द्विजेंद्रनाथ क्या सच ?

निम्मो सच, बिलकुल सच। चलो, महिम, स्कूल की घंटी बजने वाली है।

[तीनों बच्चे बाहर निकलते हैं। फिर थोड़ी दूर से वापस लौटकर वे टा-टा करते हैं।]

पर्दा गिरता है

(१९६५)

बहादुर बेटा

□ विष्णु प्रभाकर

पात्र

मां	:
संदीप	बड़ा बेटा
कुलदीप	छोटा बेटा
मधुर	बेटी
एक युवक डाक्टर और एक युवती	दोनों रेडक्रास के सदस्य
एक युवक	संदीप का मित्र

[मंच पर एक साधारण से घर का एक कमरा। मधुर बैठी पढ़ रही है। बीच-बीच में कार्नस पर रखी घड़ी की ओर देख लेती है। उसी समय मां अंदर से आती है।]

मां : क्या बज गया मधुर...अरे, चार बजने वाले हैं और उन दोनों में से कोई भी नहीं आया।

मधुर : यही तो मैं भी देख रही हूं। बड़े भैया तो बारह बजे तक आ जाते थे और दो बजे तक कुलदीप भी आ जाता था। आज दोनों न जाने कहां चले गए?

[इसी समय कुलदीप तेजी से भागता हुआ आता है।]

कुलदीप : मां, मां, तुमने सुना?

मधुर : तुम अब तक कहां थे कुलदीप?

मां : हां, आज इतनी देर कैसे हो गई?

कुलदीप : तुमने सुना नहीं मां। बहुत बुरी हालत है।

मां : किसकी बुरी हालत है? क्या हुआ?

कुलदीप : मां, तुम सुनती तो हो नहीं। बड़े जोर का तूफान आया है। नदियों में बाढ़ आ गई है। स्कूल में मास्टरजी कह रहे थे, गांव के गांव बह गए। सैकड़ों आदमी मर गए। जानवरों का तो कहना ही क्या? मकान गिर पड़े। बस चारों तरफ हाहाकार मचा है। मास्टरजी ने कहा है कि हम लोगों को उनकी मदद करनी चाहिए, वहां जाना चाहिए। उनको कपड़े और पैसे देने चाहिए। **(तेजी से बोलता चला जाता है)**

मां : तू तो बेटा, एक सांस में इतनी बात कह गया कि मेरी तो कुछ समझ में नहीं आया। सुना तो मैंने भी है कि जोर की बाढ़ आई है, पर इतना नुकसान हो गया यह किसी ने नहीं बताया था।

मधुर : चर्चा तो आज हमारे स्कूल में भी हो रही थी पर ऐसी कोई बात मैंने नहीं सुनी कि इतना नुकसान हुआ।

कुलदीप : तुमको कुछ पता भी है? इतने जोरों का तूफान आया कि नदी का सारा पानी गांव में भर गया। और अभी भी नदी बढ़ रही है। कल तक यहां भी बुरी हालत होने वाली है। इसलिए यह हुक्म हुआ है कि जो कोई जो कुछ भी कर सके, करे। जो युवक हैं और स्वस्थ हैं, वे वहां जाकर लोगों को बचाने का काम करें। जो धनी हैं वे धन दें, जिनके पास अनाज है वे अनाज दें। कपड़े हैं, कपड़े दें...

मां : हां, हां, यह तो होना ही चाहिए। मेरे पास पैसा तो नहीं है लेकिन जो कुछ हो सकता है वह अवश्य करूंगी। कहां भेजना होगा पैसा।

कुलदीप : वह तो लेने वाले यहीं आ जाएंगे। लेकिन मैं जा रहा हूं।

मधुर, मां : (एक साथ) तू कहां जा रहा है?

कुलदीप : लोगों को बचाने।

मां : (हंसकर) तेरे विचार बहुत अच्छे हैं। लेकिन तू इतना छोटा है कि उनको क्या बचाएगा। खुद वे लोग तुझे ही बचाने की परेशानी में पड़ जाएंगे।

मधुर : काम करने को तो यहां भी बहुत हैं। चाहो तो तुम घर घर जाकर चंदा इकट्ठा कर सकते हो।

कुलदीप : वह तुम करना। मैं लड़की थोड़े ही हूं। मैं मर्द हूं और मर्द घर नहीं बैठा करते।

मां : अच्छा, अच्छा, पहले तू रोटी खा ले। और हां, संदीप अभी तक क्यों नहीं आया। कहीं वह भी...

मधुर : हां, मां, वह जरूर चले गए होंगे। वह दिन-रात इसी तरह की बातें किया करते हैं—मैं कुछ करना चाहता हूं। मेरे पिता और मेरे चाचा ने आजादी की लड़ाई लड़ी थी। मेरे देश के हजारों लोगों ने अपने प्राण दिए थे। अपना सब कुछ लुटा दिया था। अब मुझे भी तो कुछ करना चाहिए। मुझे भी अपने देश की सेवा करनी चाहिए।

[सहसा एक युवक का प्रवेश]

युवक : संदीप का घर यही है।

सब : (एक साथ) हां, हां, यही है। क्या बात है?

युवक : मैं आपको यह बताने आया हूं कि संदीप बाढ़पीडित लोगों की सहायता करने के लिए चला गया है।

मां : (घबराकर) क्या?

मधुर : तो भैया चले ही गए।

युवक : लेकिन आप कोई चिंता न कीजिए। (तेजी से कहकर लौटता है।)

मां : सुनो तो बेटा, सुनो। कितनी देर हो गई उसे गए।

युवक : वह तो सुबह ही चले गए थे। लेकिन मैं आपको जल्दी खबर नहीं दे सका।

[तेजी से चला जाता है।]

मधुर : मैं जानती हूं। यह सब सुनकर वह रुक ही नहीं सकते थे।

कुलदीप : लेकिन मुझे तो रुकना पड़ेगा। बहुत बुरे हैं। सब कामों में वही आगे रहते हैं।

मां : (हंसकर) वह बड़ा जो है। मुझे खुशी है कि वह ऐसा है। बिलकुल अपने पिता पर गया है। जिंदगी भर वह भी यही करते रहे। कभी चैन से नहीं बैठे।

मधुर : और अब भैया भी नहीं बैठेंगे। अच्छा ही है, पिताजी का काम कोई तो करे। (एकदम) मां।

[सहसा रुक जाती है। मां तब तक जैसे ध्यानस्थ हो गई हैं और धीरे धीरे बोल रही हैं।]

मां : हे भगवान! यह सब क्या हो रहा है? कब दूर होंगी ये परेशानियां। कितना बलिदान चाहता है तू? हे भगवान! तू मेरे बच्चे की रक्षा करना। वह खूब सेवा करे। पर...पर...

मधुर : (मां को झकझोरकर) मां, मां, तुम कहां खो गई हो? क्या सोचने लगीं? हमें कुछ करना चाहिए। चलो, हम दोनों घर, घर से अनाज और धन इकट्ठा करें। और हां, बाढ़पीड़ितों के लिए खाने की जरूरत भी तो होगी।

कुलदीप : खाना, कपड़ा, मकान सभी चीजों की जरूरत होगी। मास्टरजी कहते थे कि सरकार प्रबंध कर रही है। कैंप लगवा दिए हैं। मां, मैं जाता हूं। स्कूल में वालंटियरों की जरूरत है। मैं कैंप में जाकर तो काम कर ही सकता हूं।

मां क्यों नहीं कर सकता ? तू भी जा। लेकिन एक बात का ध्यान रखना, नदी के पास मत जाना।

कुलदीप मैं नदी के पास क्यों जाऊंगा। वह तो खुद ही हमारे पास आ गई है। (हंसकर) अच्छा, मैं चला।

मां : लेकिन खाना तो खाता जा।

कुलदीप : नहीं, नहीं, देर हो जाएगी। वहीं कुछ खा लूंगा।

[तेजी से चला जाता है। बाहर शोर उठता है। मां खिड़की से झांकती है।]

मधुर : देखो, देखो, मां कितने लोग इधर ही चले आ रहे हैं। और वह देखो ट्रक भी आ रहे हैं। ऐसा लगता है कि ये बाढ़पीड़ित गांवों से लोगों को निकालकर ला रहे हैं। क्यों मां, एक परिवार को तो हम भी अपने घर में रख सकते हैं।

मां : क्या ही अच्छा हो यदि सभी ऐसा कर सकें। फिर तो बहुत सारी समस्याएं यों ही खत्म हो जाएं। पता नहीं सरकार क्या करेगी ? लेकिन मुझे खुशी है कि मेरे दोनों बेटे सेवाकार्य में लग गए। भगवान उनकी रक्षा करे।

मधुर : जो दूसरों की रक्षा करते हैं, भगवान उनकी रक्षा करते हैं।

मां : हां, करते तो हैं।

[सहसा मां फिर ध्यानस्थ हो जाती है। और वहीं बैठ जाती है। मधुर उसे फिर झकझोरना चाहती है। लेकिन सहसा रुक जाती है। जैसे दूर कहीं से संगीत का मधुर स्वर उठता है। वह चारों ओर देखती है। तभी एक युवती वहां आ जाती है। उसके वस्त्रों पर रेडक्रास का चिह्न लगा हुआ है।]

युवती : क्या संदीपजी का मकान यही है ?

मधुर : जी।

मां : (आंखें खोलकर) संदीप, कहां है संदीप ? कैसा है वह ?

युवती : आप शायद उनकी मां हैं ? चिंता न कीजिए। कोई विशेष बात नहीं है।

मधुर : लेकिन आप हैं कौन ?

युवती : मैं रेडक्रास की सदस्या हूं। बाहर मेरे बहुत से साथी हैं। हम सब लोग बाढ़पीड़ितों की सहायता करने के लिए गए हुए थे। आपके पुत्र संदीपजी ने वहां बहुत काम किया। अपने प्राणों की चिंता किए बिना उन्होंने सैकड़ों लोगों को बचाया।

उनका साहस देखकर हम लोग दंग रह गए। हमारे मना करने पर भी उन्होंने जरा आराम नहीं किया। लेकिन अचानक...

मां और मधुर : (**एक साथ**) अचानक क्या हुआ ? बोलतीं क्यों नहीं ? उन्हें क्या हुआ ?

युवती : आप घबराइए नहीं, मैं बता रही हूं। लोगों को बचाते बचाते अचानक उनकी नाव उलट गई। उन्हें तैरना आता था। उन्होंने वहां भी लोगों की मदद की। जब तक सबको दूसरी नाव में नहीं चढ़ा दिया, तब तक वह नहीं चढ़े। और जब चढ़ने लगे तब सहसा पानी का बड़े जोर का रेला आया और वह बह गए।

मां : (**चीखकर**) हाय राम !

युवती : (**शीघ्रता से**) नहीं, नहीं, दूसरे लोगों ने उन्हें शीघ्र बचा लिया। कठिन परिश्रम के कारण वह बेहोश हो गए हैं। लेकिन हमने उन्हें फर्स्ट-एड दे दी है। बहुत जल्दी ही वह ठीक हो जाएंगे।

मधुर : वह हैं कहां ?

युवती : बाहर। हमारी गाड़ी में। आप मेरे साथ आइए। उन्हें अंदर ले आएं।

[सब तेजी से चले जाते हैं। मधुर एकदम लौटती है और पलंग बिछाती है। फिर बाहर की ओर भागती है। तभी वे सब संदीप को लाकर पलंग पर लिटा देते हैं।]

युवती : (**युवक को दिखाकर**) यह हमारे डाक्टर हैं। इन्होंने अच्छी तरह देख लिया है। डर की कोई बात नहीं है। अभी दो क्षण में इन्हें होश आया जाता है।

युवक : मैं अभी एक और इंजेक्शन दिए देता हूं। चिंता की कोई बात नहीं है। आपका बेटा बहुत बहादुर है।

मधुर : और आप लोग कम बहादुर हैं !

[इसी बीच में युवक संदीप के इंजेक्शन लगाता है। मां संदीप के ऊपर झुकी हुई है। बार बार उसके चेहरे को छूती है। मधुर कभी भैया की ओर देखती है, कभी रेडक्रास के सदस्यों के बैज को देखती है। तभी कुलदीप भागा हुआ आता है।]

कुलदीप : मां, मां, मैंने सुना है...(**एकदम देखकर**) अरे, यह तो भैया आ गए। क्या हुआ इन्हें, और ये कौन हैं?

मधुर : बाढ़पीड़ितों को बचाते बचाते भैया स्वयं नदी में गिर गए। इन लोगों ने उन्हें बचाया है। थक गए हैं और कोई खास बात नहीं है।

[अंदर जाती है।]

युवक : बस, इन्हें होश आ रहा है। लेकिन आप लोग इनसे ज्यादा बातें मत कीजिए। शाम तक चुपचाप पड़े रहने दीजिए। रात कों मैं आकर देख जाऊंगा।

मां : हे भगवान ! इस दुनिया में कितने अच्छे लोग हैं।

संदीप : (**आंखें खोलकर**) मैं, मैं कहां हूं?

युवक : अपने घर में हो। यह तुम्हारी मां है, बहन है, भाई है। और हम हैं तुम्हारे साथी।

संदीप : ओह ! तुम हो डाक्टर। मुझे इतना ही याद है कि जैसे मैं डूब गया हूं और फिर कोई अंतरिक्ष में से आकर बचा रहा है। वह तुम थे।

युवती : संदीप बाबू, आप बोलिए नहीं। एक-दो दिन आराम कीजिए।

संदीप : बहुत अच्छा डाक्टर ! आपकी आज्ञा का पालन होगा। (**सब हंस पड़ते हैं**)

युवक और युवती : (**एक साथ**) अच्छा, अब हमें आज्ञा दीजिए।

मां : नहीं, नहीं, ऐसे नहीं। बिना मुंह मीठा किए तुम नहीं जा सकते। अरे, मधुर...लो वह तो अंदर चली भी गई। शायद चाय बना रही होगी।

युवक : मां, हमें तो आज्ञा ही दीजिए।

कुलदीप : समझ लीजिए, भैया को अभी होश नहीं आया है। बस पांच मिनट लगेंगे।

[सब हंसते हैं। वह भी अंदर चला जाता है।]

मां : आप लोग दुनिया की इतनी सेवा करते हैं। कभी कभी हमें भी तो अवसर दिया कीजिए।

युवती : हम भी तो आपके ही हैं। और फिर आपने कम सेवा की है?

[दोनों मुसकराते हैं और अंदर से मधुर, कुलदीप चाय का सामान लेकर आते हैं। पर्दा गिरने लगता है।]

(१९६९)

चुन्नू का चमत्कार

□ चिरंजीत

पात्र

चुन्नू	:	एक विचारशील बालक, जो अपने मोटापे के कारण मोटी अक्ल का भ्रम पैदा करता है
मुन्नू	:	चुन्नू का तेज-तर्रार छोटा भाई
पुष्पा	:	चुन्नू-मुन्नू की छोटी बहन
बब्बू	:	मुन्नू का मित्र
राजू	:	चुन्नू-मुन्नू के मोहल्ले का एक दुष्ट लड़का
कलुआ	:	दूसरे मोहल्ले का दुष्ट लड़का
सरजू	:	राजू का छोटा भाई
सलीम, विलियम, कर्तारसिंह	:	चुन्नू-मुन्नू के मोहल्ले के अन्य लड़के
एक लड़का	:	कलुआ का साथी

[सुबह के कोई नौ बजे हैं। रंगमंच के पिछले आधे भाग में चुन्नू-मुन्नू के मकान का बगीचा दिखाई देता है और अगले भाग में है दाईं से बाईं ओर जाती हुई मोहल्ले की गली। बगीचे के पीछे मकान में आने-जाने के लिए एक दरवाजा है। आगे की ओर भी बाड़ के बीचोबीच खपचियों का बना एक छोटा सा दरवाजा है जो गली में खुलता है। जब पर्दा उठता है तब बगीचे में मुन्नू निकर-बनियान पहले डंड पेल रहा है और चुन्नू एक ओर कुरसी पर बैठा कोई रंग-बिरंगी पत्रिका पढ़ रहा है।]

चुन्नू : **(पत्रिका से ध्यान हटाकर मुन्नू की ओर देखते हुए)** मुन्नू, अब और डंड मत पेलो। काफी हो गए।

मुन्नू : **(रुककर हांफते हुए)** कहां काफी हो गए? अभी तो मैं मुश्किल से बीस डंड ही पेल पाया हूं। **(और फिर डंड पेलने लगता है)**

चुन्नू : **(हंसते हुए)** मुन्नू, तुम तो पूरे पहलवान जान पड़ते हो। कहीं दंगल-वंगल हो, तो तुम्हारे जौहर देखें।

मुन्नू : **(हंस कर)** आओ, आज तुमसे ही कुश्ती हो जाए?

[यह कहकर मुन्नू खम ठोंक कर चुन्नू की ओर झपटता है और उससे गुत्थम-गुत्था हो जाता है।]

चुन्नू : (अपने को छुड़ाते हुए) अरे रे रे ! छोड़ो मेरी गर्दन। क्या कर रहे हो मुन्नू। मैं गिरा...

[मुन्नू चुन्नू को नीचे पटक कर उस पर चढ़ जाता है। तभी गली की दाईं ओर से पुष्पा घबराई हुई आती है...मुन्नू चुन्नू को छोड़कर हंसते हुए खड़ा हो जाता है।]

चुन्नू : (कराहते हुए) पुष्पा, मुझे जरा उठाना। मुन्नू ने तो मेरे इंजर-पिंजर ढीले कर दिए।

मुन्नू : (हंसते हुए) वाह रे नाजुक भैंसे ! एक ही झापड़ में चीं बोल गए।

[चुन्नू खिसियाना सा हो उठता है।]

पुष्पा : लेकिन मैं कहती हूं यों घर में जोर-आजमाई करने का क्या फायदा, जब बाहर वाले न मानें ?

मुन्नू : क्या कह रही हो पुष्पा। कौन बाहर वाला मुन्नू की शक्ति का लोहा नहीं मानता ?

पुष्पा : मैं क्या कहूं, जरा अपने मित्र बब्बू से ही पूछ लो।

मुन्नू : कहां है बब्बू ?

पुष्पा : (गली की बाईं ओर संकेत करके) वह पीछे आ रहा है।

[बब्बू लंगड़ाता हुआ गली की ओर से आता है। उसके माथे और घुटने से खून निकल रहा है। कपड़े फटे हुए हैं।]

मुन्नू : (चौंक कर) एँ, बब्बू का यह हाल ?

चुन्नू : (चिंतित होकर) बब्बू, यह तुम्हें क्या हुआ ?

मुन्नू : तुम्हें किसने मारा, बब्बू ?

बब्बू : मैं एक काम से साथ के मोहल्ले में गया था। कलुआ और उसके साथियों ने मुझे पीट डाला।

मुन्नू : (गुस्से से) कलुआ की यह हिम्मत ?

पुष्पा : हां, इस तरह की शिकायतें हमारे मोहल्ले के कुछ और बच्चों ने भी की हैं। बात दरअसल यह है कि हमारे मोहल्ले के बच्चे अकसर उन्हीं के मोहल्ले से होकर स्कूल आते-जाते हैं। कलुआ और उसके साथी जब भी किसी को अकेला पाते हैं, उसे तंग करते हैं।

मुन्नू : लेकिन पुष्पा, यह बात किसी ने मुझे पहले क्यों नहीं बताई ?

पुष्पा : इसलिए नहीं बताई कि पहले उन्होंने कभी किसी को मारा-

पीटा नहीं था। आज उन्होंने बब्बू को मारा है तो...

बब्बू : उन्होंने मुझे मारा ही नहीं, मुझे धमकी भी दी है कि अगर मैं या मेरे मोहल्ले का कोई लड़का उधर से फिर गुजरा तो वे टांगें तोड़ देंगे।

मुन्नू : (गुस्से से) टांगें वे क्या तोड़ेंगे ! पहले हम ही जाकर उनकी टांगें तोड़ते हैं। पुष्पा, अंदर से मेरी स्टिक तो लाना।

पुष्पा : अभी लाई।

[पिछले दरवाजे से मकान में चली जाती है।]

बब्बू : मुन्नू यह क्या पागलपन कर रहे हो ? दुश्मन के मोहल्ले में यों अकेले जाना खतरे से खाली नहीं है।

मुन्नू : बब्बू, इसी कायरता के कारण ही आज तुम उनसे पिटकर आए हो ? अरे, मैं अकेला पचास कलुओं को नाक चने-चबवा सकता हूं। तुम्हें मारकर उन्होंने सोए हुए शेर को जगा दिया है। अब यह शेर उन गीदड़ों के झुंड की अकेले खबर लेने जा रहा है। आज मैं हमेशा के लिए उस कलुए का गुंडा-पन निकाल दूंगा। ऐसी मार मारूंगा कि फिर कभी हमारे मोहल्ले के किसी बच्चे की ओर वह उंगली उठाने की हिम्मत न कर सके।

[पुष्पा अंदर से हाकीस्टिक लिए हुए आती है।]

पुष्पा मुन्नू, यह लो अपनी स्टिक। (**मुन्नू स्टिक लेकर घुमाता है**) मुन्नू, मैं भी चलूं तुम्हारे साथ ?

मुन्नू नहीं, मैं अकेला ही काफी हूं उन गीदड़ों के लिए। (**बाईं ओर जाने लगता है**)

चुन्नू ठहरो, मुन्नू ! जल्दबाजी न करो। दूसरे मोहल्ले में लड़ने के लिए सोच-समझ कर जाना चाहिए।

मुन्नू चुन्नू, लगे तुम भी कायरों की सी बातें करने ?

चुन्नू नहीं, मैं कायर-वायर बिलकुल नहीं। तुम्हारी तरह मैं भी बड़े से बड़े दुश्मन को जाकर पछाड़ सकता हूं। लेकिन अकेले जोश से काम नहीं चलता। जोश के साथ होश भी होना चाहिए।

पुष्पा : चुन्नू की बात ठीक ही जान पड़ती है। बेहतर तो यह होगा कि बजाय अकेले जाने के तुम भी अपने मोहल्ले के दस-बीस लड़ाकू लड़के चुन कर अपने साथ ले जाओ।

बब्बू : मेरी भी यही राय है।

मुन्नू मगर मैं आप लोगों से सहमत नहीं हूं। मैं अभी जाकर कलुआ और उसके साथियों का हिसाब बेबाक करना चाहता हूं। अपने मोहल्ले के लड़कों को बुलाने और इकट्ठा करने में दो-तीन घंटे लग जाएंगे।

पुष्पा नहीं, मुन्नू! आज रविवार है। इस समय मोहल्ले के सभी लड़के अपने अपने घर होंगे। मैं और चुन्नू जाकर सबको यहां बुला लाते हैं। जाओ, चुन्नू!

चुन्नू चलो।

[दोनों गली की दाईं ओर जाते हैं]

बब्बू : **(ऊंचे स्वर में)** पुष्पा, राजू को जरूर बुलाकर लाना।

मुन्नू **(इधर-उधर अधीरता से टहलते हुए)** हां, राजू की दुष्टता आज हमारे काम आएगी। बब्बू, तुम लोगों ने मुझे बेकार रोका। मैं अकेला ही...

बब्बू मैं जानता हूं मुन्नू, तुम अकेले सौ पर भारी हो, कलुए को तुम्हारे साथियों की शक्ति का भी तो पता चलना चाहिए। उसके साथी हैं, तो तुम्हारे भी साथी हैं।

मुन्नू सो तो ठीक है लेकिन तुम्हारी ये चोटें देखकर मेरे तन-बदन में आग लगी हुई है। बदला लेने के लिए मेरे हाथ खुजला रहे हैं। **(एकाएक रुककर)** बब्बू, उस मोहल्ले पर धावा बोलने से पहले हमें दुश्मन की गतिविधि का पता लगाना चाहिए।

बब्बू हां, हमें अपना कोई जासूस वहां भेजना चाहिए।

[तभी गली की दाईं ओर से लाठी लिए राजू आता है।]

राजू अरे, मैंने जासूस भेज दिया।

मुन्नू राजू, तुम आ गए?

राजू प्यारे, तुम बुलाओ तो हम भला कैसे न आएं? पुष्पा से हमें सब मालूम हो गया है। मैं ऐसी बीसियों लड़ाइयां लड़ चुका हूं। इस बदमाश कलुए से मैं दो दो हाथ करने की सोच ही रहा था कि आज बब्बू का बहाना मिल गया। प्यारे, यह जो तुम जासूस भेजने की बात सोच रहे थे, वह अपने राम के दिमाग में पहले ही आ गई थी। मैंने पुष्पा से तुम्हारी हमले की योजना का हाल सुनते ही अपने छोटे भाई सरजू को गली के चोर दरवाजे से शत्रु की छावनी में भेज दिया।

बब्बू लेकिन राजू, सरजू को तो वे लोग पहचान लेंगे।

राजू बब्बू, तुम तो बस मिट्टी के बबुआ हो। अरे, मैंने सरजू को

भेजा है गूंगे-बहरे भिखारी के भेस में। उस भेस में उसे कलुआ तो क्या, तुम भी नहीं पहचान सकते। सारी खबर लेकर सरजू आता ही होगा।

[पुष्पा के साथ दाईं ओर से विलियम, सलीम, कर्तारसिंह आदि आते हैं। सभी हाकीस्टिक, छड़ी, डंडे आदि हथियारों से लैस हैं। विलियम के पास बिगुल है।]

पुष्पा : मुन्नू, हम हाजिर हैं। (**बिगुल देते हुए**) लो कूच का बिगुल बजाओ और हम झपट कर दुश्मन पर टूट पड़ें। कलुए ने हमें समझ क्या रखा है?

सलीम : आज हम सिर पर कफन बांधकर आए हैं।

कर्तारसिंह : आज फतह होगी या मौत।

पुष्पा : चुन्नू कहां है?

सब बच्चे : चुन्नू? (**सबकी आंखें इधर-उधर चुन्नू को ढूंढ़ती हैं**) चुन्नू तो यहां देखा ही नहीं।

मुन्नू : (**झुंझलाकर**) पुष्पा, वह तुम्हारे साथ ही तो गया था, इन सबको बुलाने के लिए?

सलीम, विलियम और कर्तार : (**एक साथ**) हां, वह पुष्पा के साथ था।

पुष्पा : हां, हां, वह मेरे साथ तो था, लेकिन वह साथ लौटा नहीं था।

मुन्नू : (**घृणा से**) है तो वह मेरा बड़ा भाई, लेकिन मैं जानता हूं कि वह जन्म जन्म का कायर है। लड़ाई से वह घबराता है।

राजू : (**व्यंग्य से गुनगुनाता है**) इक बाप के दो बेटे, किस्मत जुदा जुदा है।

मुन्नू : (**कमांडर की तरह डपटकर**) यह हंसी-मजाक का मौका नहीं। इस समय हमारे मोहल्ले की इज्जत और आबरू खतरे में है। हमें सिर-धड़ की बाजी लगाकर अपने शत्रु को कुचलना है। अच्छा ही हुआ कि चुन्नू जैसा कायर हमारे साथ नहीं है।

[तभी गली की बाईं ओर से भिखारी के भेस में सरजू तेजी से आता है।]

सरजू : चुन्नू दुश्मन के साथ है।

सब बच्चे : (**अचरज से**) क्या?

पुष्पा : यह सब झूठ है। यह दुश्मन की कोई चाल है। (**घृणा से**) यह भिखारी कौन है, जो...

राजू (बड़े गर्व से) यह है मेरा छोटा भाई सरजू, जो दुश्मन का भेद जानने के लिए भिखारी का भेस बनाकर जान पर खेल कर उसकी छावनी में घुस गया था। जैसा दिलेर मैं, वैसा मेरा भाई। (सरजू से) क्यों बहादुर जासूस, क्या खबर लाए हो?

सरजू दुश्मन को हमारे इरादों का पहले पता चल गया है और वह अपने मोहल्ले के लड़कों को इकट्ठा करके हमसे लड़ने के लिए जोर-शोर से आ रहा है।

मुन्नू शौक से आए। हमारा एक एक जवान पचास पचास पर भारी होगा। लेकिन सवाल यह है कि कलुआ को हमारे इरादों का किससे पता चला?

सरजू कहा न, चुन्नू से? मैंने चुन्नू को अभी अभी अपनी आंखों से कलुआ के साथ बातें करते हुए देखा है। अब मैं और पता लगाने जाता हूं। (जाता है)

बब्बू यह चुन्नू भी अजीब है. जो...

मुन्नू (परेशान सा) कुछ समझ में नहीं आ रहा।

राजू इसमें समझ न आने वाली कौन सी बात है। स्पष्ट है कि तुम्हारा भाई जयचंद बनकर दुश्मन से जा मिला है।

बब्बू ओह, अब घर का भेदी लंका ढाएगा।

पुष्पा ओह, चुन्नू को यह क्या सूझी? अपने मोहल्ले से द्रोह और...

[तभी गली की बाई ओर से चुन्नू भागा हुआ आता है।]

चुन्नू : रुको, रुको। लड़ाई नहीं होगी, लड़ाई नहीं होगी।

सब बच्चे : आ गया गद्दार। आ गया मोहल्ला द्रोही।

मुन्नू साथियो, कर लो गिरफ्तार इस गद्दार को। इसने हमारे साथ विश्वासघात किया है। इसका इसे कड़े से कड़ा दंड मिलेगा?

[बच्चे उसकी ओर लपकते हैं। राजू उसके हाथ बांधता है।]

चुन्नू : (हंसकर) कमांडर साहब, पहले मेरी बात तो सुन लो। मैने कोई विश्वासघात नहीं किया।

मुन्नू तो फिर तुम कलुआ के पास क्या करने गए थे?

पुष्पा (हैरानी से) अरे, यह क्या? मुन्नू, उधर देखो, कलुआ और उसके साथी फूलों का हार और मिठाई की थाली लिए इधर चले आ रहे हैं।

[गली की बाईं ओर से कलुआ अपने साथी लड़कों के साथ फूलों का हार और मिठाई की थाली लिए हुए

मुसकराता हुआ आता है। मुन्नू के साथी आश्चर्य से उसे देखते हैं।]

चुन्नू राजू, चाल-वाल कुछ नहीं।

मुन्नू चुन्नू, तुम्हें शर्म आनी चाहिए, जो तुम अपने साथियों के विरुद्ध दुश्मन से जा मिले।

चुन्नू हां, जरूर जा मिला, लेकिन दुश्मन से नहीं मित्र से।

बब्बू कलुआ तुम्हारा मित्र होगा, हमारा तो नहीं।

चुन्नू यही तुम लोगों की भूल है। कलुआ और उसके साथी आज से हमारे मोहल्ले के सच्चे मित्र बन गए हैं और फूल-मिठाई लेकर हम सबका अभिनंदन करने आए हैं।

सब बच्चे (अचरज से) अभिनंदन करने ?

कलुआ हां, मैं आप सबका अपने मोहल्ले की ओर से अभिनंदन करता हूं और दोस्ती का हाथ बढ़ाता हूं।

मुन्नू लेकिन...

चुन्नू अरे, कलुआ इस मोहल्ले का नेता मुन्नू है। उसके गले में हार पहनाओ। (कलुआ हार पहनाता है) गले मिलो। (कलुआ और मन्नू गले मिलते हैं) कलुआ, अब इस बब्बू को भी गले लगाओ। (कलुआ बब्बू को भी गले से लगाता है। बच्चे तालियां बजाते हैं)

कलुआ बब्बू, मैंने तुम्हें पीटा था न। लो, अब मैं तुम्हारे सामने हाजिर हूं। मुझे जीभर कर पीट लो, और दिल की भड़ास निकाल लो।

बच्चे (हैरान होकर) अरे, यह क्या ? कलुआ तो बिलकुल बदल गया।

कलुआ हां, दोस्तो, मैं बिलकुल बदल गया हू और इसका सारा श्रेय चुन्नू को है जिसने मुझे और मेरे साथियों को प्रेम और मेल-मिलाप की राह दिखाई। हमारे मोहल्ले अलग अलग हों, लेकिन हमारा स्कूल एक है, नगर एक है और देश भी एक है। सलीम, विलियम और बब्बू को हमने जरूर तंग किया था, पीटा था। लेकिन इसमें दोष इनका भी था।

मुन्नू : वह क्या ?

कलुआ : इन्होंने हमारे मोहल्ले के कुछ लड़कों को बाग के माली से पिटवाया था ?

मुन्नू : क्यों बब्बू ?

बब्बू हां, मुन्नू। यह गलती हम से हुई थी, लेकिन...

चुन्नू मुझे एकाएक खयाल आया कि बजाय लड़ाई के क्यों न प्रेम और शांति से आपसी झगड़ा दूर कर लिया जाए। यह तो तुम जानते ही हो कि आज अगर हम इन पर हमला करते, तो कल ये हम पर हमला करते और इस तरह लड़ाई-झगड़े का कभी अंत न होता। इसीलिए मैंने प्रेम का मार्ग अपनाया। कल्लूआ और इसके साथी आज से हमारे प्रिय मित्र हैं और ये हमारे मोहल्ले के किसी बच्चे को कुछ नहीं कहेंगे। आओ, अब सब मिलकर मिठाई खाएं। **(मिठाई की थाली आगे करता है)**

मुन्नू वाह, चुन्नू, तुम्हारी बुद्धि के आगे मेरी शारीरिक शक्ति धरी की धरी रह गई।

चुन्नू इसीलिए तो मैं कह रहा था कि बेकार ज्यादा दंड न पेला करो।

[सब बच्चे हंसते हैं और मिलकर मिठाई खाते हैं।]

पर्दा गिरता है

(१९६६)

तोतली भाषा का सूबा

□ सत्य जैसवाल

पात्र

हाकर	अजीत
अशोक	सप्पू
पप्पू	अखिलेश

पहला दृश्य

[पर्दा उठता है। एक सजे हुए कमरे का दृश्य। कमरे में भक्त प्रह्लाद, भक्त ध्रुव, वीर अभिमन्यु, शहीद हकीकत राय जैसे बालकों के चित्र टंगे हुए हैं। कुछ छोटे छोटे बच्चे—अशोक, अजीत, अरविंद, अखिलेश, पप्पू, सप्पू आदि बैठकर अपनी तोतली भाषा में बातचीत कर रहे हैं। सभी प्रसन्न नजर आ रहे हैं। तभी बाहर एक समाचारपत्र विक्रेता (हाकर) बहुत से दैनिक पत्र उठाए आवाज लगाता हुआ आता है।]

हाकर : आज का ताजा समाचार...सरकार ने भाषाई सूबे की मांग स्वीकार कर ली...भाषाई सूबे बनना तय हो गया...पढ़िए आज की ताजा खबरें :

अशोक : हे हें...क्या भाषाई सूबो का बनना निश्चत हो गया...?

[सभी एक-दूसरे की तरफ देखते हैं और आश्चर्यचकित होते हैं।]

अशोक : (बाहर आकर) ऐ पेपरवाले ! एक पेपर देना...

हाकर : (उतावली से) हां, हां, लीजिए, राजा बाबू...आज तो कमाल हो गया...

[समाचारपत्र अशोक को देता है और अशोक से पैसे लेकर अपनी जेब में रखता हुआ 'आज का ताजा समाचार' चिल्लाता हुआ आगे बढ़ जाता है। अशोक कमरे में आता है।]

पप्पू : (आश्चर्य से) अले अछोक भैया, त्या थबल है ?

अशोक : अजीत समाचारपत्र पढ़कर आप सभी को सुनाएगा।

अजीत : (समाचारपत्र लेकर पढ़ता है) नई दिल्ली, आज सरकार ने

भाषाई आधार पर सूबे बनाना स्वीकार कर लिया है।

पप्पू याल, मेली छमज में तो तुछ नई आता, यह 'भाचाई भाचाई' त्या होता है?

अखिलेश अले बोलचाल, औल त्या।

सप्पू औल हम तौन छी भाचा बोलते हैं?

पप्पू तोतली भाचा।

सप्पू तो फिल हमें भी अपनी तोतली भाचा ता अलद छूबा बनाने ती मांग तरनी चाइए।

अशोक : (आश्चर्य से) तोतली भाषा का सूबा...

[सभी हंस पड़ते हैं।]

सप्पू : तो इछ में हंचने ती तौन छी बात है? जव छव लोद अपनी अपनी भाचाओं ता छूबा बना रए ऐं, तो त्या हमें अपनी तोतली भाचा ता छूबा नई बनाना चाइए?

अरविंद बनाना चाइए, औल जलूल बनाना चाइए।

पप्पू तोतली भाचा ता छूबा अवछ्य बनेदा।

अजीत हम अपनी तोतली भाषा का सूबा लेकर ही रहेंगे।

सप्पू तोतली भाचा...

सब जिंदाबाद!

पप्पू तोतली भाचा बोलने वाले...

सब अमर रहें?

पप्पू तोतली भाचा ता छूबा लेना हमाला...

सब जन्मछिद्ध अधिकार है!

[गगनभेदी नारों से पूरा कमरा गूंज उठता है।]

अशोक प्यारे तोतले भाइयो, तो हमारा यह अटल निश्चय है कि अब हम अपना तोतली भाषा का सूबा लेकर ही रहेंगे। हम देश के सभी तोतलों को एक सूत्र में पिरोएंगे और दुनिया को दिखा देंगे कि तोतली भाषाओं का सूबा कितनी शान-शौकत वाला है।

सप्पू तो हमाले देछ में तोतलों ती छंख्या तितनी है?

अरविंद यह त्या बड़ा छवाल है! भालत ती जनछंख्या पैंतालीछ तलोल है, और उछ पैंतालीछ तलोल में छे दछ तलोल छंख्या छोते बच्चों ती ऐ, जो ति छबी तोतले बोलते ऐं। तो त्या हम दछ तलोल बच्चे बी अपना तोतली भाछा ता छूबा लेने ते अधि-ताली नई ऐं?

अजीत : क्यों नहीं हैं ?

अशोक : फिर क्या है, हम लोगों को अपनी कार्यवाही शुरू कर देनी चाहिए।

सप्पू : इछते लिए हमें त्या तलना चाइए ?

पप्पू : अनछन तलने होंगे, मम्मी छे लूठना होगा, पापा तो ताम ते नाम पल नैन मतताने होंगे औल छबी तोतलों तो एत छूत्ल में पिलोना होगा।

अरविंद : औल त्या तलना होगा ?

पप्पू : औल दैदी तो यह चेतावनी देनी होगी कि हमाला जेब खलच इछ चाल दूना तल दें।

सप्पू : मम्मी ती पिताई हम नई छएंगे।

अजीत : पढ़ाई का समय एक घंटे और खेलने का समय चार घंटे कराना होगा।

अशोक : तो फिर आप लोग पूरी तरह तैयार हैं ?

सब : तैयाल ऐं...तैयाल ऐं...!

अशोक : तो हमें अपनी मांग मनवाने के लिए एक तोतले को अनशन के लिए बिठाना है। बताओ, कौन अनशन करेगा ?

[सब चुप होकर एक-दूसरे की ओर देखने लगते हैं।]

अशोक : (अरविंद को बुलाकर) अरविंद, क्या तुम अनशन के लिए तैयार हो ?

अरविंद : (सकपकाते हुए खड़े होकर) भैया, जब मुझे लोटी खाने तो थोली देल हो जाती ऐ, तो मेले पेत में बहुत जोल छे दलद होने लगता ऐ।

अशोक : तो तुम नहीं कर सकते ?

अरविंद : (सकुचाकर) न...न...नई।

अशोक : (अजीत से) अजीत, तुम तैयार हो ?

अजीत : (घबराकर) मुझे तो अनशन का नाम सुनते ही बड़ी जोर से भूख लग आई है, फिर अनशन क्या कर पाऊंगा।

अशोक : तो तुम भी तैयार नहीं हो ?

अजीत : मैं कुछ कम तोतला हूं इसलिए उचित भी नहीं रहूंगा, भैया... हां...

अशोक : अच्छा, तुम रहने दो। (पप्पू से) पप्पू, बोलो, क्या तुम अनशन कर सकते हो ?

पप्पू : (खुशी से) अनशन तो तल दूंगा, पलंतु मुझे आप छभी को छुपा

छुपा तल ताफी, आइछक्लीम, तेत औल विछकुट थिलाने पलेंगे।

अशोक : यह सब कुछ भी नहीं मिलेगा।

पप्पू : तो मेला अनछन भी नईं चलेगा।

अशोक : **(अखिलेश को पुकारकर)** अखिलेश, तुम बहुत अच्छे आदमी हो, मुझे तुम से पूरी उम्मीद है कि तुम अनशन करके सरकार को हिला दोगे और तोतलों के लिए सूबा मंजूर करा लोगे।

अखिलेश : हां, भैया, मैं तैयाल हूं, मैं अनछन कलूंदा, मैं लोती नई थाऊंदा, पानी नई पीऊंदा औल तब तक नई पीऊंदा जब तक कि हमें छूबा नई मिल जाता।

अशोक : **(खुश होकर)** शाबाश ! मुझे तुमसे यही उम्मीद थी।

अखिलेश : मैं अतल हूं, भैया, लेतिन...

अशोक : लेकिन क्या ? बताओ, हमें तुम्हारी सभी शर्तें मान्य होंगी।

अखिलेश : यई ति मुझे लोती ते बदले लछदुल्ला औल पानी ते बदले छलबत पिलाना होदा।

अशोक : नहीं, कुछ नहीं, अनशनकर्ता को पानी के अतिरिक्त कुछ नही मिलेगा।

अखिलेश : जब भूत लदेदी तब ?

अशोक : भूखा ही रहना होगा।

अखिलेश : तो पइले आप तलेंदे, छप्पू नलेदा, और छब तलेंदे, तब मैं तल दूंदा।

अशोक : अच्छा सप्पू, तुम्हारा क्या विचार है ?

सप्पू : **(डरकर)** भैया, मैं अनछन तल दूंदा तो मेली मम्मी मुझे बहुत मालेदी, जब मुझे लोती को थोली देल ओ जाती है, तो वह मुझे बहुत दातती है।

अशोक : तुमसे भी नहीं होगा, सप्पू, कोई और ही तलाश करना होगा।

सप्पू : आप ई तल दीजिएदा ना...

अशोक : अरे भाई, जब मैं ही कर देता, तो आप लोगों को काहे को पूछता। दिन में छह बार खाता हू, यदि एक बार न मिले, तो दिन में ही तारे नजर आने लगते हैं।

सप्पू : आं...आं...याद आया, भैया !

अशोक : क्या याद आया ?

सप्पू : त्यों न अनछन अमाली गुड्डी से तलाया जाए, वह तीन मईने

ती ऐ, लोटी तो त्या पानी बी नई पीनी ए।

अशोक : पर दूध तो पीती है।

सप्पू : पानी ती जगह पल दूद मांदा जाए।

सब : (**खुशी से**) ठीक है, ठीक है।

अशोक : तो घोषणा करा दी जाए कि तोतली भाषा के सूबे की मांग के लिए गुड्डी देवी ने आज से अपना आमरण अनशन शुरू कर दिया है।

[सभी चले जाते हैं। अकेला अजीत गले में ढोल डाल-कर उसे पीटता हुआ मुनादी करता फिर रहा है।]

अजीत केंद्रीय सरकार, राज्य सरकार तथा नगरवासियों को यह जान कर दुख होगा और छोटे बच्चों को यह जानकर खुशी होगी कि हम सभी बच्चों ने अपना जन्मसिद्ध अधिकार 'तोतली भाषा का सूबा' प्राप्त करने के लिए आंदोलन छेड़ दिया है क्योंकि तोतली भाषा ही हमारी मातृभाषा है। हमारे दल की एक सदस्या गुड्डी देवी ने अपना आमरण अनशन शुरू कर दिया है। जब तक हमें यह सूबा नहीं मिलेगा, तब तक गुड्डी देवी का अनशन समाप्त नहीं होगा। यह सूचना हमने दिल्ली प्रधानमंत्री के पास भी भेज दी है।

[ढोल पीटता है—डम् डम् डम्]

दूसरा दृश्य

[अशोक कमरे के अंदर चिंतित अवस्था में चहलकदमी कर रहा है। तभी अजीत भीतर आता है, उसके चेहरे पर उदासी छाई है।]

अशोक : कहो, अजीत, क्या समाचार है?

अजीत : अभी कुछ ठीक नहीं है, भैया!

[तभी पप्पू, सप्पू, अखिलेश, अरविंद जय जयकार करते हुए आते हैं। सभी बहुत प्रसन्न नजर आ रहे हैं।]

सब : तोतली भाछा... जिंदाबाद। अमाला छूबा...अमल लहे। गुड्डी देवी की जय ओ! तोतले बच्चों की, जय ओ!

अशोक : (**आश्चर्य से**) अरे भाई, यह कैसी खुशी मनाई जा रही है?

सप्पू : (**खुशी से**) भैया, तमाल हो गया, अमाली मांग मजूल तल ली दई।

अजीत : (**खुशी से उछलकर**) क्या हुआ, बताओ तो ?

अखिलेश : मंत्ली जी ने अमाली मांग छ्वीताल तल ली ऐ। अब हमें तोतली भाछा ता छूबा मिल जाएगा।

अजीत : (**बहुत जोर से उछलकर**) जियो, प्यारे, मार दिया पापड़ वाले को।

[सभी डटकर उछलते कूदते हैं। जोर-शोर की नारे-बाजी होती है।]

तीसरा दृश्य

[चारों ओर चहल-पहल है। झंडियां लगी हैं। मंत्रीजी के आगमन की तैयारियां हो रही हैं। एक छोटी कुरसी और मेज लगी हुई है जिस पर फूलदान रखे हैं। कुछ कुरसियां मेज के चारों ओर रखी हुई हैं जिन पर अजीत, अखिलेश, पप्पू, सप्पू आदि बैठे हुए हैं। तभी एक लड़का मंत्रीजी की वेशभूषा में आता है। अशोक द्वारा मंत्री जी के गले में फूलों का हार पहनाया जाता है। पास ही अरविंद तीन माह की गुड्डी को, जिसने 'आमरण अनशन' किया है, गोद में लिए बैठा है। तभी मंत्री जी खड़े होकर अपना भाषण देते हैं।]

मंत्री : 'देश के प्यारे तोतले भाइयो, आज आप लोगों को मुझे यह बताते हुए अपार हर्ष होता है कि आपकी तोतली भाषा के सूबे की मांग हमें पूर्णतः स्वीकार है। मैं आपसे बहुत प्रभावित हूं। परंतु मैं आप लोगों से कुछ प्रश्न करना चाहता हूं। बोलो, क्या आप सभी लोग तैयार हैं ?

सब : तैयार हैं, तैयार हैं।

मंत्री : आप लोगों की भाषा कौन सी है ?

अशोक : तोतली भाषा ही हमारी भाषा और मातृभाषा है।

मंत्री : अच्छा, अच्छा, लेकिन एक शर्त आपको माननी होगी।

सप्पू : त्या है वह छरत ?

मंत्री : यही कि आप लोगों को जीवन भर अपनी तोतली भाषा बोलनी होगी।

सप्पू : जब बले होंगे तब भी ?

मंत्री : हां, तब भी। और आपकी अनशन करने वाली गुड्डी देवी को अभी मेरे ही सामने अनशन तोड़कर पूड़ी, कचौड़ी, मालपूआ, रबड़ी, रसगुल्ला आदि खाने होंगे। बोलो, क्या आप लोगों को मेरी शर्त मंजूर है ?

[सभी एक दूसरे को तरफ देखते हैं। तभी एक स्त्री मंच पर आती है।]

स्त्री : (**अरविंद की गोद से गुड्डी को छीनकर**) नहीं, नहीं, मैं कुछ भी नहीं खाने दूंगी अपनी दुधमुंही बच्ची को। क्या इसे मारने को लाए हो मुझसे ?

[जोरदार ठहाका लगता है। धीरे धीरे पर्दा गिरता है।]

(१९६६)

चोर पकड़ा गया

□ स्वदेश कुमार

पात्र

राम : जासूस, उम्र १२ वर्ष। नाम तो राम है, पर क्योंकि अपने को जबरदस्त जासूस समझता है इसलिए मित्र उसे जासूस राम कहते हैं।

श्याम : राम का मित्र और पड़ोसी। उम्र में वह राम से सिर्फ एक दिन छोटा है, जिस कारण राम उस पर रोब जमाता रहता है।

बड़े भैया : श्याम के बड़े भाई। उम्र २५ वर्ष। काफी हट्टे-कट्टे हैं।

चोर : उम्र २५ वर्ष। दुबला-पतला छोटा कद। लड़का ही लगता है। बड़ी बड़ी मूछें।

[राम पलंग पर सामने की तरफ मुंह किए पेट के बल लेटा एक जासूसी किताब पढ़ रहा है। तभी मेज पर रखी घड़ी का अलार्म सात बजे टनटना उठता है। राम एकदम चौंक कर उछल पड़ता है और पलंग से नीचे आ गिरता है। किताब भी हाथ से छूट जाती है। फिर वह उठता है और किताब उठाता है।]

राम : (**स्वतः खिसियाई आवाज में**) धत्त तेरे की ! यह तो मेरी ही घड़ी का अलार्म था। मैं बेकार ही डर गया।

[राम मेज के पास जाकर अलार्म बंद करता है और वहीं कुरसी पर बैठ कर किताब पढ़ने लगता है। तभी खिड़की के बाहर की तरफ से श्याम थोड़ा सा सिर उठा कर अंदर कमरे में झांकता है। मुसकराता है और जोर से खिड़की के शीशे पर ठक ठक करके जल्दी से नीचे दुबक जाता है। इस आवाज से राम फिर चौंक कर मय कुरसी के गिर पड़ता है। इधर-उधर संभल कर देखता है, पर किसी को कमरे में न पाकर कुरसी उठा कर रख देता है। पलंग के पांयते जाकर बैठ जाता है और किताब पढ़ने लगता है। उसकी पीठ खिड़की की तरफ है।

विना कोई आवाज दिए श्याम खिड़की के रास्ते कमरे में आता है और दबे पांव पलंग के सिरहाने आकर उछल कर राम की पीठ पर जा चढ़ता है। राम डर के मारे चीख पड़ता है।]

राम (**चीखते हुए**) बचाओ ! बचाओ ! चोर ने मुझे पकड़ लिया।

श्याम (**भारी आवाज बना कर**) चुपचाप अलमारी की चाबी मुझे दे दे वरना गला भींच दूंगा।

राम (**घिघिया कर**) अलमारी खुली है। मेरी जान मत लो।

श्याम (**अपनी असली आवाज में हंसते हुए**) वाह, बेटा ! इतनी आसानी से डर गए।

राम (**आश्चर्य से**) हैं ! यह तो श्याम की आवाज है।

[श्याम कूद कर राम के आगे आकर खड़ा हो जाता है।]

श्याम (**हंसते हुए**) हां, बेटा ! देख ले मैं श्याम ही हूं।

राम (**बिगड़ कर**) देख, श्याम ! तू मुझसे उम्र में एक दिन छोटा है। खबरदार जो मुझे बेटा कहा।

श्याम अच्छा, बेटा नहीं कहूंगा। पर तू है निरा डरपोक ही। इसी बूते पर तू जासूस बनना चाहता है ?

राम अभी तो मैंने आधा ही जासूसी उपन्यास पढ़ा है। खत्म कर लेने दो, फिर देखना !

श्याम अरे, कहीं जासूसी उपन्यास पढ़ने से कोई जासूस बन सकता है। उसके लिए अक्ल चाहिए, हिम्मत चाहिए, जिनकी तुझमें बिलकुल कमी है।

राम (**शेखी मारते हुए**) अरे, मैं तो आधा जासूस बन भी गया हूं।

श्याम (**व्यंग्य से**) तभी तो डर गया था, बेटे !

राम (**बिगड़ कर**) फिर बेटा कहा ? मैं उम्र में तुझसे एक दिन बड़ा हूं। अपने से बड़ों के साथ तमीज से बात करनी चाहिए।

श्याम फिर गलती हो गई।

राम चलो माफ किया। और हां, आज से तुम मुझे आदरपूर्वक जासूस राम कहा करो। समझे ?

श्याम मैं तो तब समझूंगा, जब तुम जासूस वाली कोई बात करो।

राम यह बात है।

श्याम हां, बेटे, यही बात है।

राम (**बिगड़ कर**) फिर बेटा कहा ?

श्याम ओह फिर गलती हो गई।

राम : तू मेरी जासूसी की परीक्षा लेना चाहता है।

श्याम : हां। कोई चोर पकड़ कर दिखाओ।

राम : बाएं हाथ का खेल है। पर चोर कहां है?

श्याम : हां, यह तो मुश्किल हुई? जरूरत के वक्त कोई चोर भी नहीं आता। (सोचता है, फिर एकाएक खुशी से उछल कर कहता है) अगर मैं चोर बन जाऊं?

राम : तू क्या चोर बनेगा। चोरी करने की ट्रेनिंग ली है?

श्याम : ट्रेनिंग की क्या जरूरत है? मैंने एक फिल्म में एक चोर को चोरी करते हुए देखा है। बस, मैं भी वैसा ही करूंगा।

राम : वह फिल्मी चोर पकड़ा गया था न?

श्याम : हां, लेकिन बहुत दिनों बाद।

राम : खैर, मैं तो रंगे हाथों पकड़ लूंगा। ठीक है। मैं पलंग पर सो जाता हूं। तू बाहर जा और कमरे में चोरी करने आ। फिर देख मैं कितनी आसानी से तुझे पकड़ लेता हूं।

श्याम : पहले मैं अपने घर जाकर फिल्मी चोर की तरह बड़ी बड़ी मूंछें तो लगा लूं।

राम : अबे बुद्धू, इतनी जल्दी मूंछें कहां से मिल जाएंगी?

श्याम : मेरे बड़े भैया नाटकों में पार्ट करते हैं। उनके पास हैं बड़ी बड़ी मूंछें। वे ही लगा लूंगा।

राम : तब ठीक है। भाग कर जा और जल्दी आ।

श्याम : अभी आया।

[श्याम दरवाजे से बाहर जाता है। राम दरवाजे की चटखनी लगाता है। फिर खिड़की की लगाता है कि रुक जाता है।]

राम . अगर इसे भी बंद कर दिया तो श्याम कमरे में कैसे आएगा? आखिर है तो अनाड़ी चोर ही।

[राम खिड़की से हटकर बिजली बुझा देता है। कमरे में अंधकार हो जाता है—सिर्फ पलंग के पास छोटी मेज पर रखा लैंप जलता रहता है जिससे थोड़ा थोड़ा प्रकाश पलंग के आसपास रहता है। राम चादर ओढ़कर पलंग पर लेट जाता है। मुंह ढंका हुआ है। कुछ देर सन्नाटा रहता है। फिर धीरे से खिड़की का एक पल्ला खुलता है और बड़ी बड़ी मूंछों वाला एक चेहरा—सिर पर पगड़ी, दोनों गाल साफे के छोर से

ढंके हुए, बड़ी सावधानी से अंदर आता है। इधर-उधर देखता है। चौकन्ना होकर देखता हुआ वह अलमारी की तरफ बढ़ता है और उसे खोलता है। उसके अंदर टंगे कपड़े निकालने लगता है। खिड़की में श्याम का चेहरा—जो सिर पर पगड़ी बांधे हैं और उसके सिरों को दोनों गालों पर लपेटे है, नकली बड़ी बड़ी मूंछें लगाए है, चोर जैसी—देखकर चोर झट से अलमारी में छिपकर उसके पल्ले अंदर से बंद कर लेता है। श्याम खिड़की के रास्ते अंदर आता है और पलंग की तरफ बढ़ता है। तभी दरवाजे के बाहर से श्याम के बड़े भैया की आवाज आती है।]

बड़े भैया : (बाहर से) श्याम ! श्याम ! अरे तू मेरी मूंछें तो नहीं लाया।

[आवाज सुनकर श्याम चट से पलंग के नीचे छिप जाता है। बड़े भैया बाहर से दरवाजा खटखटाते हैं। फिर खिड़की के रास्ते कमरे के अंदर आते हैं। पलंग के पास आकर राम के मुंह से चादर हटा देते हैं। राम उठ बैठता है।]

बड़े भैया : इसका मतलब है आने वाला है। मैं इंतजार करूंगा। लेकिन तुम अभी से चादर ओढ़े क्यों लेटे हो ?

राम : मैं जासूस हूं न ! चोर पकड़ने के लिए बहाना बनाए लेटा था।

बड़े भैया : असली या नकली चोर ?

राम : नकली। अभी तो मैं छोटा जासूस हूं। बड़ा होने पर असली चोर भी पकड़ लूंगा।

बड़े भैया : चोर कौन बना है ?

राम : श्याम ! बड़ी बड़ी मूंछों वाले असली चोर की तरह।

बड़े भैया : और, तब तो वही मेरी मूंछें लाया होगा।

राम : पर वह अभी तक आया क्यों नहीं।

बड़े भैया : मेरे खयाल से जरूर आ गया होगा। तुम मुंह ढंके लेटे थे—तुम्हें पता नहीं चला होगा।

राम : तब तो मैं उसे पकड़ता हूं।

[राम पलंग से उठकर इधर-उधर देखता है और अलमारी के पास लाकर उसका एक पल्ला थोड़ा सा खोलता है।]

राम : (**मुसकराकर**) तो तुम यहां छिपे हो। मुझे पता भी नहीं चला कब आए। बड़े भैया, यह रहा चोर !

[बड़े भैया भी वहीं आ जाते हैं।]

बड़े भैया : (**अलमारी के अधखुले पल्ले से अंदर झांक कर**) श्याम, तू मेरी मूंछें लगाए यहां चोर बना बैठा है और उधर मुझे नाटक की रिहर्सल करने के लिए देर हो रही है। ला मेरी मूंछें !

[बड़े भैया अंदर हाथ डालकर चोर की मूंछें खींचते हैं तो चोर जोर से चीख पड़ता है।]

बड़े भैया : (**आश्चर्य से**) यह तो श्याम की आवाज नहीं है। क्या गोल-माल है ?

[बड़े भैया अलमारी के दोनों पल्ले खोलते हैं तो चोर उछलकर भागने लगता है। लेकिन बड़े भैया उस पर झपट पड़ते हैं। राम भी चोर की एक टांग पकड़ लेता है। चोर बड़े भैया को जोर से धक्का दे देता है। बड़े भैया पलंग पर जा गिरते हैं। पर राम जोर से चोर की टांग में काट लेता है। चोर चीख पड़ता है। इतने में बड़े भैया संभलकर फिर चोर पर झपट पड़ते हैं। राम पलंग की चादर ले आता है जिससे बड़े भैया चोर के हाथ-पैर बांध देते है।]

बड़े भैया : अब यह कहीं नहीं जा सकता। मैं अभी पुलिस को फोन करके आता हूं। तुम यही रहना। डर तो नहीं लगेगा ?

राम : (**शान से**) मैं जासूस राम हूं ! मैं भला क्यों डरने लगा !

[बड़े भैया दरवाजा खोलकर बाहर जाते है।]

श्याम : (**पलंग के नीचे से आवाज भारी बना कर**) असली चोर तो यहां छिपा है, जासूस राम !

[राम चौंककर इधर-उधर देखता है। फिर पलंग के नीचे देखता है।]

राम : मेरे डर के मारे यहां छिपे हो ? निकलो बाहर।

[श्याम पलंग के नीचे से बाहर निकलता है।]

राम : तू चोरी करने आया था और यहां डरकर छिप गया ?

श्याम : मैं तो बड़े भैया के डर के मारे छिपा रहा वरना कभी का रफूचक्कर हो गया होता, बेटा !

राम : फिर बेटा कहा ? मैं तुझसे उम्र में एक दिन बड़ा हूं।

श्याम : फिर गलती हो गई।

राम : खैर, माफ किया। अच्छा, एक तमाशा करते हैं। पहले इस चोर को घसीटकर पलंग के नीचे छिपा दें।

[राम और श्याम चोर को घसीटकर पलंग के नीचे कर देते हैं। फिर राम पलंग की दूसरी चादर लेकर श्याम के हाथ-पैर बांध देता है और उसे उसी जगह बैठा देता है जहां चोर बैठा था। तभी बड़े भैया अंदर आते हैं।]

बड़े भैया : पुलिस आ रही है। (**फिर श्याम की तरफ देखकर आश्चर्य से**) हैं! चोर इतना छोटा कैसे हो गया?

राम : डर के मारे।

[बड़े भैया श्याम के पास जाकर उसकी मूछें उखाड़ लेते हैं।]

बड़े भैया : (**मुसकराकर**) छोटे चोर के इतनी बड़ी बड़ी मूंछें नहीं होतीं। पर इसने मेरी मूंछों की चोरी की है। इसलिए इसे भी पुलिस हवाले कर देता हूं।

श्याम : (**गिड़गिड़ाकर**) बड़े भैया, मैंने तो वही किया है जिसे आप नाटक में करते हैं। आप उसमें चोर बनते हैं, मैं यहां चोर बन गया। फिर मुझे ही अकेले पुलिस के हवाले क्यों करते हैं।

[बड़े भैया ठहाका लगाकर हंस पड़ते हैं।]

बड़े भैया : चल माफ किया। तुझे भी मूंछें खरीद दूंगा। अब इसे खोल दो, राम!

बड़े भैया : लेकिन असली चोर भाग गया क्या?

राम : (**शान से**) जासूस राम से बचकर कैसे भाग सकता है। वह रहा पलंग के नीचे।

[बड़े भैया चोर को पलंग के नीचे से खींचकर बाहर निकालते हैं।]

बड़े भैया : राम, अगर तुमने चोर की टांग पकड़कर काटा नहीं होता तो यह तो निकल गया होता हाथ से।

राम : (**शान से**) आखिर मैं जासूस राम हूं।

श्याम : शाबाश, बेटा!

[राम श्याम को मारने को हाथ उठाता है। श्याम बचकर दूर हो जाता है। बड़े भैया ठहाका लगाते हैं।]

पर्दा गिरता है

(१९६८)

हमें बापू से शिकायत है

□ अमृतलाल वेगड़

पात्र

सभापति	हलवाई
दर्जी	अभिनेता
पायलट	ज्योतिषी
देवदास गांधी	ताजमहल
साबरमती आश्रम	जमनालाल बजाज

[बच्चे जिन पात्रों का अभिनय करने जा रहे हैं, उन्हीं के अनुरूप पोशाक पहने हैं। जैसे, जो बालक हलवाई बना है, वह धोती पहने है और उसके उघड़े बदन पर अंगोछा पड़ा है। दर्जी के गले से फीता झूल रहा है। जो बालक ताजमहल बना है, वह सफेद कपड़े पहने है और सिर पर सफेद गुम्बदनुमा टोपी धारण किए है। जो साबरमती आश्रम बना है, उसे सूत की माला से सजाया गया है। पर्दा उठता है। एक सजे हुए कमरे का दृश्य। दीवार पर बापू का भव्य चित्र टंगा है। बच्चे आपस में बातें कर रहे हैं। सभी प्रसन्न नजर आ रहे हैं। तभी सभापति खड़े होकर बोलना शुरू करते हैं।]

सभापति : सज्जनो, आज सारी दुनिया में बापू का सौवां जन्मदिन बड़े उत्साह के साथ मनाया जा रहा है। उमंग, उल्लास और भाई-चारे का एक त्योहार आया है, जिसे सारे संसार के लोग एक साथ मना रहे हैं। लोग बापू का गुणगान करते नहीं अघाते। भला इस नक्कारखाने में हमारी तूती कौन सुनेगा ? कोई सुने या न सुने, हम अपने दिल की बात कह कर ही रहेंगे। हमें बापू से शिकायत है। इस बात को बिलकुल स्पष्ट कर देना चाहते हैं। हम लोग बारी बारी से आपके सामने आएंगे और अपनी शिकायतें पेश करेंगे। शुरुआत हलवाई महोदय करेंगे।

हलवाई : मैं हूं इस देश का श्रेष्ठ हलवाई। ऐसी मिठाई बनाता हूं कि उसकी महक से लोगों की जीभ लपलपाने लगती है। मुंह से लार टपकती है। जैसी खोवे की मिठाई बनाता हूं, वैसी ही छेने की बंगाली मिठाई बनाता हूं। और मेरे नमकीन का क्या कहना ! लोग टूट पड़ते हैं। लौटकर बार बार आते हैं। अपने

साथ घर ले जाते हैं। पर बापू ने मेरी मिठाई को सूंघा तक नहीं। कहते थे, मैं शक्कर नहीं खाता। तली हुई चीज नहीं खाता। स्वाद के लिए नहीं खाता। यह नहीं खाता, वह नहीं खाता। भला यह भी कोई बात हुई !

दर्जी : मुझे भी बापू के कपड़े सीने का सौभाग्य नहीं मिला। कपड़े मैं ऐसे शानदार सीता हूं कि पहनने वाले का रूप ही बदल जाए। कुर्ता, पाजामा, चूड़ीदार पाजामा, शेरवानी, बंद गले का कोट सभी तरह के कपड़े सीने में मुझे कमाल हासिल है। बापू यदि सिला हुआ कपड़ा पहनते, तो मैं उनके लिए वो चूड़ीदार पाजामा और शेरवानी सी देता कि सारी दुनिया के दर्जी हैरान रह जाते ! पर बापू ने मेरा यह अरमान कभी पूरा होने न दिया। बस, एक धोती पहनकर रह गए और हम दर्जियों को अपनी कला दिखाने का कोई अवसर ही न दिया।

अभिनेता : दोस्तो, जब कला की बात चल पड़ी है, तो मुझसे भी रहा नहीं जाता। बापू ने कभी सिनेमा नहीं देखा। बहुत समझाने-बुझाने पर उन्होंने बस दो फिल्में देखीं। दोनों ही उन्हें खास अच्छी नहीं लगीं। न रेडियो पर कभी गाने ही सुनते थे। अभिनेताओं के बारे में कोई जानकारी तक न रखते थे। वह जब गोलमेज परिषद के लिए इंग्लैंड गए थे, तब दुनिया के मशहूर अभिनेता चार्ली चैपलिन ने उनसे मिलना चाहा। बापू ने अपने साथियों से पूछा, यह चार्ली चैपलिन है कौन ?

पायलट : मैं हूं पायलट। हवाई जहाज का चालक। मेरी कितनी साध थी कि बापू को अपने हवाई जहाज में बैठाकर आकाश में ऊंची उड़ान भरता। उनके बैठते ही मेरा जहाज पुष्पक विमान बन जाता। पर बापू ने मेरी साध पूरी न होने दी। भीषण गरमी में लंबी लंबी यात्राएं रेलगाड़ी से कीं, पर मुझे कभी मौका न दिया। कम से कम एक बार ही बैठ लेते !

ज्योतिषी : बापू ने कभी मुझे अपने पास फटकने न दिया। न अपनी कुंडली बताई, न हाथ दिखाया, न अपना भविष्य ही पूछा। दुनिया के बड़े बड़े राजनेता मेरे पास दौड़े दौड़े आते हैं। बापू हुकुम करते, तो मैं भागा भागा उनके पास चला जाता। पर क्या कहूं, मेरी विद्या पर कभी उन्होंने रत्ती भर भरोसा न किया।

देवदास गांधी : मैं हूं देवदास गांधी। बापू के चार बेटों में से सबसे छोटा।

मुझे इस बात की कोई शिकायत नहीं कि बापू हमारे लिए जमीन-जायदाद या रुपया-पैसा नहीं छोड़ गए। उनके पास था ही क्या जो हमारे लिए छोड़ जाते। पर एक बात है, जो रह रहकर मेरे मन में आती है। कभी कभी मैं अपने परिवार के साथ सेवाग्राम जाता। बापू का अपना कोई घर तो था नहीं। सेवाग्राम ही उनका घर था। वहां मैं दो-चार दिन ठहरता, तो ठहरने और खाने के खर्च का बिल बापू मेरे हाथ में थमा देते। वह कोई दस-बीस रुपए का ही होता। मैं दिल्ली का बड़ा पत्रकार था। खासा कमाता था। दस-बीस क्या, सौ-सवा सौ रुपए भी चुका सकता था। पर मैं पूछना चाहता हूं कि क्या बेटे का बाप पर इतना अधिकार भी नहीं कि वह उसके यहां कुछ दिन रह ले और खा ले।

साबरमती आश्रम : जब सेवाग्राम का नाम आया, तो मुझे भी अपने अरमान निकाल लेने दीजिए। आप जानते ही हैं कि दक्षिण अफ्रीका से आने के बाद बापू ने मुझे बसाया था। पंद्रह वर्षों तक उनके कार्य-कलापों की मैं ही रंगभूमि रहा। तभी तो वह साबरमती के संत कहलाए। १९३० में यहीं से उन्होंने अपनी विश्वप्रसिद्ध डांडी-यात्रा प्रारंभ की थी। यात्रा पर निकलते समय उन्होंने कहा था, स्वराज्य लिए बगैर इस आश्रम में पैर न रखूंगा। बस, उसी घड़ी से मैं स्वराज्य की बाट जोहने लगा। कब स्वराज्य आए और कब बापू वापस आएं। मैं सत्रह साल तक इंतजार करता रहा। स्वराज्य आया, तो मेरी खुशी का क्या कहना! मैं सोचता रहा कि बापू अब आए, अब आए। उनकी प्रतिज्ञा पूरी हो गई है, वह आते ही होंगे। पर हाय! बापू नहीं आए, सो नहीं आए।

ताजमहल : मैं हूं ताजमहल! दुनिया की सबसे सुंदर इमारत। देश-विदेश से लोग मुझे देखने आते हैं। हरदम मेरे यहां मेला लगा रहता है। न जाने कितने कवियों ने मुझ पर कविताएं लिखी हैं। कितने तरह से मेरे फोटो खींचे गए हैं। और चांदनी रात में तो मेरी सुंदरता का क्या कहना! पर बापू थे जो मेरी सुंदरता से कभी आकर्षित न हुए। अपनी इच्छा से कभी मुझे देखने न आए। एक बार नेहरूजी ले आए, तो देखकर बोले, 'ताजमहल और कुछ नहीं, गरीबों से जबरदस्ती कराई गई मेहनत का प्रतीक है।' हाय, मेरी ऐसी अवहेलना तो किसी ने नहीं की।

जमनालाल बजाज : मैं हूं जमनालाल बजाज। बापू की कांग्रेस का कोषाध्यक्ष। दान में प्राप्त लाखों रुपए वह मुझे ही सौंप देते। एक बार 'हरिजन फंड' के सिलसिले में हम लोग उड़ीसा गए थे। हमारे देश में उड़ीसा शायद सबसे गरीब प्रदेश है। किंतु बापू की झोली भरने में उसने कोई कसर न रखी। एक दिन की बात है। गाड़ी से उतरकर हम लोग जब सभा-मंडप की ओर बढ़ रहे थे, तब एक बुढ़िया आई। शायद भिखारिन थी। आंखों से उसे ठीक से दिखाई भी नहीं पड़ता था। बापू के पास आकर उसने अपने मैले आंचल से एक पैसा निकाला—उसमें कुल एक पैसा ही था—और अपने कांपते हाथ बापू की ओर बढ़ा दिए। बापू की आंखें डबडबा आईं। उन्होंने बुढ़िया के सिर पर हाथ रखा और पैसे को अपनी टेंट से बांध लिया। कोषाध्यक्ष के नाते मैंने बापू से जब वह पैसा मांगा, तो उन्होंने साफ इंकार कर दिया। कहने लगे, नहीं, यह पैसा मैं तुम्हें नहीं दे सकता। बापू ने मुझ पर लाखों का विश्वास किया, पर उस एक पैसे का भरोसा न किया।

सभापति : सज्जनो, वक्ता तो अभी बहुत से हैं, पर समय काफी हो चुका है। अतः हम एक प्रस्ताव आपके सामने रखते हैं, जिसे आप प्रचंड बहुमत से पास कर देंगे, ऐसा हमारा पूरा विश्वास है। प्रस्ताव इस प्रकार है—

बापू से असंतुष्ट लोगों की यह सभा एक स्वर से इस बात की घोषणा करती है कि बापू ने हमारे बहुत से अरमानों को पूरा न होने दिया। वह यह कैसे भूल गए कि हमारा भी उन पर कोई अधिकार था। इसलिए हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वह दोबारा हमारे बापू को हमारे बीच भेज दें, ताकि हम उन्हें 'कारण बताओ नोटिस' जारी कर सकें और उनसे जवाबतलब कर सकें।

[प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हो जाता है। 'महात्मा गांधी की जय!' 'बापू अमर हैं!' के घोष से सभा-भवन गूंज उठता है।]

पर्दा गिरता है।

मां का प्यार

□ संकलित

पात्र

शिवाजी मालवजी

बालक तानाजी

दरबान

पहला दृश्य

स्थान : शिवाजी का शयनगृह ।

[एक सुसज्जित कमरे में शिवाजी एक पलंग पर सो रहे हैं। सामने भवानी का चित्र लटक रहा है। पास ही मालवजी हाथ में नंगी तलवार लिए हुए शिवाजी की हत्या करने के लिए तत्पर है। शिवाजी एक भयानक स्वप्न देखकर अचानक आंखें मलते हुए उठ बैठते हैं। मालवजी उन पर वार करता है। पीछे से तानाजी आकर उसका हाथ पकड़ लेते हैं। शिवाजी प्रेमभरी दृष्टि से तानाजी की ओर देखते हैं।]

शिवाजी : (बालक की वीरता पर आश्चर्य करते हुए) तुम कौन हो वत्स ?

बालक : (वीरतापूर्वक) मेरा नाम मालवजी है।

शिवाजी : (गंभीर स्वर में) मालवजी ! जानते हो, इस अपराध के लिए क्या दंड भोगना होगा ?

मालवजी : (निर्भय होकर) मृत्यु !

शिवाजी : मृत्यु-दंड पाने से पहले तुमको मुझे एक बात बतानी होगी।

मालवजी : वह क्या ?

शिवाजी : तुम्हारी बातों और चाल-ढाल से जान पड़ता है कि तुम वीर-पुत्र हो, सत्यवादी हो। इससे मुझे आशा है कि तुम झूठ न बोलोगे।

मालवजी : जो बात सच है, उसे मैं अवश्य बता दूंगा। इसमें छिपाने की क्या बात है !

शिवाजी : वीर पुत्र ! मुझे मारकर क्या मराठा साम्राज्य के मालिक बनना चाहते हो ?

मालवजी नहीं।
शिवाजी फिर क्या मेरे वैरियों ने तुम्हें मुझे मारने के लिए भेजा था ?
मालवजी हां।
शिवाजी क्यों ? क्या मैंने कभी तुम्हें हानि पहुंचाने की चेष्टा की है ? क्या मैंने कभी हिंदुत्व की आन पर धब्बा लगाया है ? क्या मैंने किसी को धोखा दिया है ?
मालवजी महाराष्ट्र-कुल-भूषण ! यह सब कुछ नहीं।
शिवाजी फिर क्या बात है ?
मालवजी यदि आप पूछते ही हैं तो सुनिए। मेरे पिता आपकी सेना में सिपाही थे। मुगलों से लड़ते समय उन्होंने अपने देश और जाति की रक्षा के लिए अपने प्राण निछावर कर दिए। आज उनको मरे हुए दो वर्ष हो गए। इस समय घर में मैं और मेरी माता, केवल दो प्राणी हैं। आज तीन महीने से हम दोनों को पेट-भर अन्न मिलना दूभर हो रहा है। इस संसार में मनुष्य सब कुछ सहन कर लेता है, परंतु पेट की ज्वाला सहन करना बड़ा कठिन है। एक दिन मैं तो इसी विचार में बैठा था कि एक यवन ने आकर मुझसे कहा कि यदि तुम शिवाजी का वध कर दो तो मैं बहुत कुछ इनाम दूंगा। इसी लालच में पड़कर मैं आपकी हत्या करने के लिए यहां आया था; सौभाग्य-वश आपकी आंखें खुल गईं।
शिवाजी जब तुम्हें इतना कष्ट था, तब मेरे पास क्यों नहीं आए ?
मालवजी महाराष्ट्र नरेश ! प्रजापति होकर आपके मुख से ये शब्द शोभा नहीं देते। जिस सिपाही ने आपकी सेना में भरती होकर आपका नाम उज्ज्वल किया, उसके बाल-बच्चों की देखरेख करना आपका कर्तव्य है।
शिवाजी **(बालक की वीरता मन में सराहते हुए दिखावटी रोब से)** तानाजी ! इस बालक को ले जाकर जेलखाने में बंद कर दो। कल इसे मृत्यु-दंड दिया जाएगा।
मालवजी मृत्यु-दंड पाने से पहले मैं एक बात की भीख मांगता हूं।
शिवाजी वह क्या ?
मालवजी मरने से पहले मैं अपनी पूजनीय माता का एक बार दर्शन करना चाहता हूं।
शिवाजी यदि तुम अपनी माता का दर्शन करके न लौटे तब ?
मालवजी : मैं वीर-पुत्र हूं। झूठ बोलकर मृत्यु से बचना नहीं चाहता।

प्रतिज्ञा करता हूं, मैं एक घंटे में माता का दर्शन करके अवश्य लौट आऊंगा।

शिवाजी : (**बालक की वीरता की मन में सराहना करते हुए**) अच्छा; जाओ। यही देखना है। (**मालवजी का प्रस्थान**)

शिवाजी : ओह ! इस बालक में वीरता कूट कूट कर भरी है। साथ ही अपनी माता का भक्त भी है। ऐसे ही बालक अपने माता-पिता की लाज रखते है। तानाजी तुम्हारा क्या विचार है ?

तानाजी : महाराज ! आप क्या कहते हैं। मैं तो इसकी वीरता और साहस पर मुग्ध हूं।

शिवाजी : तानाजी ! जानते हो, मैं इस बालक के साथ क्या व्यवहार करूंगा ?

तानाजी : नहीं महाराज।

शिवाजी : मैं इसकी परीक्षा लेने के पश्चात इसे मृत्यु-दंड से मुक्त करके अपनी सेना में भरती करूंगा। मेरा अनुमान है कि मातृभूमि की सेवा में यह कोई कसर उठा नहीं रखेगा।

तानाजी : घातक के साथ इतनी दया ? धन्य हैं।

शिवाजी : तानाजी ! मारने वाले से बचाने वाले में अधिक शक्ति होती है। आज तुमने मेरी जान बचाई। इसलिए मैं तुम्हारा आभारी रहूंगा।

तानाजी : महाराज ! आप यह क्या कहते हैं ? मैं तो आपका दास हूं। स्वामी की रक्षा करना दास का कर्तव्य है। इसमें आभारी होने की क्या बात है ?

शिवाजी : तानाजी, तुम धन्य हो। तुम्हारे ही जैसे सेनानायकों पर भारत-माता गर्व करती है। अच्छा, थोड़ी देर विश्राम करो।

तानाजी : (**प्रणाम करता है**) जो आज्ञा महाराज। (**प्रस्थान**)

दूसरा दृश्य

[स्थान : शिवाजी के दुर्ग का कमरा। समय : दोपहर।]

शिवाजी : (**तानाजी की ओर मुंह फेरकर**) तानाजी न जाने क्यों मेरे हृदय में उस बालक के प्रति अगाध प्रेम है। जब से वह मेरे सामने से गया है, तब से मैं उसी का स्वप्न देख रहा हूं।

तानाजी : महाराज ! यह उसकी वीरता और साहस का फल है।

शिवाजी : तुम सच कहते हो। मैं उसकी वीरता पर मुग्ध हूं। इतनी छोटी अवस्था और इतना साहस ! जिस शिवाजी के नाम से मुगल

सेना कांपती है, उसके सामने एक बालक का इतना साहस !

तानाजी : इसमें भी क्या कोई संदेह है !

दरबान : (**प्रवेश कर**) महाराज ! एक बालक आपसे मिलना चाहता है।

शिवाजी : उसे बुला लाओ।

[दरबान के साथ मालवजी का प्रवेश]

मालवजी : महाराज ! आपका अपराधी मृत्यु-दंड पाने के लिए प्रस्तुत है।

शिवाजी : वीर-पुत्र ! तुम इतनी जल्दी कैसे आ गए ?

मालवजी : महाराज ! आपसे विदा होकर मैं घर पहुंचा। माता बड़ी देर से मेरी प्रतीक्षा कर रही थीं। देखते ही उन्होंने मुझे छाती से लगा लिया। उस समय मैंने सोचा कि मैं उनसे सारा भेद कह दूं। परंतु मेरी हिम्मत न पड़ी। कायरता से नहीं वरन भय मे कि यदि मैं सारी बातें उनसे कह दूंगा तो वह मुझे आप तक न आने देंगी और मैं अपनी प्रतिज्ञा का पालन न कर सकूंगा। अब मैं आपकी सेवा में उपस्थित हूं। आप जो चाहें, कर सकते हैं; परंतु मरने से पहले मैं एक बात की भिक्षा और मांगता हूं।

शिवाजी : कहो, वह कौन सी बात है ?

मालवजी : मेरी मां की देखरेख का समस्त भार आप अपने ऊपर ले लीजिए।

शिवाजी : वीरपुत्र ! तुम सचमुच क्षत्रियपुत्र हो। शिवाजी वीरों का आदर करता है, उनकी हत्या नहीं करता। अब तक मैं तुम्हारी परीक्षा ले रहा था। वत्स ! तुम मेरी परीक्षा में सफल हुए। जाओ, मैं तुम्हारा अपराध क्षमा करता हूं।

मालवजी : (**शिवाजी के पैरों पर गिरकर**) आप धन्य हैं।

शिवाजी : (**मालवजी को छाती से लगाकर**) वीर-पुत्र ! जिस प्रकार तुम अपनी माता के दुख में दुखी होकर व्याकुल हो रहे हो, उसी प्रकार मैं भी दुखी हूं। रात-दिन मैं इसी चिंता में रहता हूं कि किस प्रकार मैं भारतमाता का दुख दूर करूं।

मालवजी : महाराज ! यह शरीर आपका है। आपने मुझे जीवनदान दिया है। मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि जब तक इस शरीर में जान है, मैं कभी मातृभूमि की सेवा से पीछे न हटूंगा।

शिवाजी : वीरपुत्र ! मैं तुमसे यही आशा करता हूं।

पर्दा गिरता है

'बाल भारती', महाराष्ट्र से

(१९७०)

भूलसुधार

☐ देववती शर्मा

पात्र

गीता : चौदह वर्षीय छात्रा
प्रवीण : तेरह वर्षीय छात्र
सुनील : सात वर्षीय प्रवीण का छोटा भाई
रवि : प्रवीण का मित्र सहपाठी
मास्टरजी : अध्यापक
रतनलाल : प्रवीण का पिता
शांता : प्रवीण की मां
नीतू : पड़ोस की लड़की

[मध्यवर्गीय परिवार का ड्राइंग रूम। कमरे के एक कोने में अलमारी के किवाड़ों के स्थान पर पर्दा। उसके पीछे मेज पर रखा हुआ संदूक। ताक में रेडियो पर रखा गुलदस्ता। बिछे हुए फर्श पर प्रवीण, गीता और सुनील कैरम बोर्ड खेलने में व्यस्त। पास में सोफे पर बैठी हुई शांता बटन टांक रही है। अचानक नीतू का प्रवेश।]

नीतू : नमस्ते चाचीजी।

शांता : नमस्ते बेटा, आओ बैठो, कहो कैसे आना हुआ? बहुत बड़ी बात है, आज तुम्हारी भाभी ने खेलने की छुट्टी दे दी।

नीतू : छुट्टी तो नहीं मिली चाचीजी, मुझे तो उन्होंने ही आपके पास भेजा है।

शांता : अच्छा, अच्छा। क्या चीज चाहिए, बोलो। गीता, उठो न नीता को पानी पिलाओ। नौकर के बिना बड़ी परेशानी है।

नीतू : नहीं गीता, तुम न उठो, मुझे प्यास नहीं है। चाचीजी आपसे भाभी ने यह पूछने भेजा है कि कल दुकानदार के यहां से सफेद मोजे तो आपके थैले में भूल से नहीं चले आए।

शांता : नहीं बेटा, मेरे थैले में कोई मोजे भूल से नहीं आए। मैंने तो वहां से आते ही सब चीजों को एक बार घर पर आकर देख लिया। दुकानदार से ही पूछें, भाभी से कहना।

नीतू : अच्छा। नमस्ते चाचीजी! गीता कल स्कूल में मिलेंगे।

(**कहती हुई चली गई**)

शांता : कैसा जमाना आ गया, साथ खड़े होने का धर्म भी नहीं। (**अपने आप कहती है**)

[प्रवीण और गीता कैरम खेलते हैं। सुनील अचानक गोटी को चुटकी लगाकर कहता है।]

सुनील : जीजी, मेरी बारी में आप क्यों चलीं।

गीता : बारी मेरी थी, तुम समझते हो नहीं, सब खेलों के बीच में अड़ जाते हो।

सुनील : (**गुस्से में सारी गोटों को मिला कैरम बोर्ड उठाकर चल देता है**) मैं तुम्हें खेलने नहीं दूंगा।

शांता : सुनील तुम बड़े नटखट हो, जरा सी बात पर बिगड़कर इन दोनों को तंग करते हो। दे दो, उनका कैरम बोर्ड, मैं तुम्हें नया खिलौना दूंगी।

सुनील : (**सुनील गोटें फेंक कैरम बोर्ड रख देता है। शांता के पास जाकर**) चलो दो मेरा खिलौना।

शांता : देती हूं, सब्र करो।

सुनील : मां, खिलौना कहां रखा है ? क्या नाम है ? कितना बड़ा है ?

शांता : (**हंसकर**) ठहरो अभी देख लेना। खिलौना संदूक में रखा है। उसमें तुम्हारा हाथ नहीं पहुंचेगा। (**कहती हुई उठती है, और संदूक खोलकर निकालती हुई कहती है**) प्रवीण कल तुम्हारे लिए नया खिलौना नेट हवाई जहाज लाया है।

सुनील : अच्छा ?

[शांता संदूक से बटन टांकने के लिए कमीज निकालती है तो सफेद मोजों की थैली हाथ में लेती हुए प्रवीण को गुस्से में आवाज लगाती है।]

शांता : प्रवीण, इधर तो आओ।

प्रवीण : अभी आया, मां ! (**पास पहुंचकर मुंह की ओर देखते हुए**) नाराज क्यों हो रही हो मां, क्या बात है, बताओ तो ?

शांता : ये मोजे तुम लाए हो ?

प्रवीण : नहीं, मैं तो वही मोजे लाया हूं, जो तुमने पसंद किए। सफेद मोजे के लिए तो आपने कहा था कि जल्दी मैले हो जाते हैं। इसलिए मत खरीदो।

शांता : फिर ये थैली में सफेद रंग के मोजे कहां से आए ? तुमने तो मुझे मुंह दिखाने लायक नहीं छोड़ा। कल नीतू की भाभी ने

तुम्हें अवश्य ही मोजे उठाते हुए देखा होगा। तभी उसने मेरे घर पर नीतू को पूछने भेजा था।

प्रवीण : सच कहता हूं, मां ! मैं नहीं जानता कि ये मोजे कैसे और कब आपकी थैली में आए।

शांता : **(गुस्से से एक थप्पड़ लगाकर)** फिर झूठ। मैं झूठ को बरदाश्त नहीं कर सकती। यदि उसने आकर मुझसे कसम उठवाई, तो मैं क्या करूंगी ? मुझे पहले पता होता तो कह ही देती कि भूल से आ गए। अब क्या करूं, मैं तो मना कर चुकी। कैसे उसे जाकर दूं।

प्रवीण : मुझ पर विश्वास करो, मां !

शांता : जिसने मेरी, दुकानदार और पड़ोसन की आंखों में धूल झोंक कर हाथ की सफाई दिखाई हो वह अब भी विश्वास का पात्र बनना चाहता है ?

गीता : मां ! सब्र तो करो। हो सकता है कि दुकानदार गलती से इस थैली में रख गया हो।

शांता : **(गुस्से में ही)** चुप रहो, चली हमें शिक्षा देने, थैली का सामान रात को ही संभाल लिया था। फिर अब ये मोजे इस थैली में कहां से आए ?

प्रवीण : मां, तुम्हें अपने प्रवीण पर भरोसा नहीं रहा ?

शांता : यह देख कैशमीमो, इसमें कहीं मोजे लिखे हैं ? तुमने इन मोजों के पैसे दुकानदार को दिए थे ?

गीता : यही तो मैं कह रही हूं कि मैं दुकानदार को वापस दे आती हूं, जब नीतू पूछने जाएगी तो वह दे देगा।

शांता : चोरी करने का सबूत भी अपने आप ही देना चाहते हो। चालाकी के लिए भी अक्ल चाहिए।

प्रवीण : मां, भगवान साक्षी है, मैंने इन मोजों को इस समय से पहले छूना तो दूर रहा, देखा भी हो।

शांता : तुम्हारे जैसे चोर रात-दिन भगवान की सौगंध खाते हैं, तुमने बाप के और मेरे नाम को कलंकित कर दिया। **(क्रोध में भरी हुई वह दूसरे कमरे में चली जाती है)**

[प्रवीण थोड़ी देर विचारमग्न सा दुख के सागर में डूब जाता है और फिर बेचैनी के साथ उठकर आराधना करता है।]

प्रवीण : हे भगवान ! मुझपर झूठा आरोप क्यों लगाया गया ? मैंने

कभी भी अपनी याद में किसी को नहीं सताया है। मेरी मां के विश्वास को मेरे प्रति लौटा दो।

सुनील : भैया ! भगवान क्या ऐसे विश्वास लौटा देंगे ? तुम मां से कह दो, अब कभी ऐसी गलती नहीं करूंगा।

गीता : भैया ! तुम इधर परेशान हो और मां उधर। देखो न कितनी खराब हालत हो रही है। आप स्वीकार क्यों नहीं कर लेते ?

प्रवीण : मैं मां के लिए प्राणों की बाजी लगा दूंगा, लेकिन झूठा आरोप सहन नहीं कर सकता। यदि इस स्थान पर कोई और होता तो उसे ठीक पता लगता कि किसी निर्दोष को दोषी ठहराने का क्या फल होता है ?

गीता : भैया, प्रायश्चित करो, क्रोध नहीं।

प्रवीण : गीता, मुझे मां और बहन दोनों ने नहीं पहचाना। मैं इतना नीच हूं, तुम्हारी नजरों में !

[अचानक रवि का प्रवेश।]

रवि : गीता आज अजीब ढंग का सन्नाटा क्यों है, क्या हुआ। प्रवीण क्यों सिर झुकाए बैठा है ? (**सिर ऊपर करते हुए**) अरे रोया है क्या ?

गीता : प्रवीण भैया ही बताएंगे। आप बैठिए। (**रवि बैठ जाता है**)

प्रवीण : तुम्हारा मित्र चोर है, उसका आचरण गिर गया है। मां की नजरों में मैं चोर हूं।

रवि : उठो प्रवीण, मुंह धोओ. चाची को मैं समझाता हूं। प्रवीण कभी ऐसा घिनौना कार्य नहीं कर सकता। गीता ! तुमने क्या चाची को नहीं समझाया ?

[बाहर से मास्टरजी आवाज देते हुए आते हैं।]

सुनील : नमस्ते मास्टरजी !

मास्टरजी : नमस्ते।

[द्वार पर खड़े होकर]

सुनील : (**धीरे से**) आज भैया नहीं पढ़ेंगे। उनसे मां नाराज है।

मास्टरजी : क्यों ?

सुनील : (**धीमे स्वर में**) वे दुकान से कल एक जोड़ी मोजा उठा लाए थे।

प्रवीण : (**कुरसी से उठते हुए**) रवि ! मास्टर साहब से कह देना मैं नहीं पढ़ूंगा।

मास्टरजी : मैंने सुन लिया प्रवीण। क्या बोर्ड में प्रथम आने का इरादा

समाप्त कर दिया !

प्रवीण : मैं सिर्फ आज के लिए कह रहा था।

मास्टरजी : (**कुरसी पर बैठते हुए प्रवीण से मुंह की ओर देखते हुए**) मनःस्थिति तो ठीक है, क्या किस्सा है मोजों का ?

[हाथ में एक बड़ा सा कुल्हड़ लेकर रतनलाल का प्रवेश।]

रतनलाल : नमस्ते मास्टरजी !

मास्टरजी : नमस्ते, नमस्ते।

रतनलाल : आज तो बहुत ही दिनों के बाद आपके दर्शन हुए। पढ़ाने के पश्चात थोड़ी देर गपशप होगी।

मास्टरजी : अवश्य होगी।

रतनलाल : सुनील ! आज तुम लोगों ने मुहर्रमी सूरत क्यों बना रखी है ? मैं तो तुम सबके लिए रसगुल्ले लाया हूं। क्या मास्टरजी की डांट पड़ी है ?

सुनील : प्रवीण भैया कल दुकान से मोजे उठा लाए, बिना पैसे दिए।

रतनलाल : इसका मतलब यह निकला प्रवीण किसी बुरी संगति में पड़ गया, तब ही यह नौबत आई। गीता, लाओ वे मोजे, मैं भी तो देखूं कैसे हैं ?

शांता : (**क्रोध में**) अभी देती हूं। आपको विश्वास नहीं हो रहा ? मैं ठीक कह रही हूं। (**मोजे मेज पर जोर से लाकर रखती है**)

[रतनलाल मोजे हाथ में लेकर उलट-पलटकर देखता है। और कुरसी से उठकर संदूक की ओर जाता है।]

मास्टरजी : प्रवीण, तुम भी तो कुछ बोलो। ऐसे निरुत्तर रहने से काम नहीं चलता।

प्रवीण : मुझे कुछ नहीं कहना।

रतनलाल : (**संदूक से दो थैले उठाकर लाता है और कहता है**) वाह शांताजी ! आप भी खूब हैं, घर में बिना कारण अशांति फैला देती हैं। ये मोजे तो मैं तुम्हारे लिए लाया था। सवेरे जल्दी जल्दी में बनियान निकाला तो मोजे भी निकल आए, मैं भूल से आपकी थैली में रख गया।

शांता : बस रहने दो। ऐसे ही बेटे के अवगुणों को दबा दबाकर इसके साहस को बढ़ावा देते रहना, तुम्हें क्या ? भुगतेगा तो यही।

मास्टरजी : रतनलालजी, आपकी थोड़ी सी भूल का परिणाम है कि प्रवीण के उज्ज्वल चरित्र में कुछ देर के लिए धब्बा लगा।

रतनलाल : (शांता से) अच्छा, आप अधिक शुभचिंतक हैं, प्रवीण की ?

शांता : बस रहने दीजिए। आपने इसे बहुत सिर चढ़ाया है।

रतनलाल : क्या तुम्हारा विश्वास मुझसे भी उठ गया। प्रमाण देने पर तो यकीन करोगी। लो देखो। कैशमीमो में लिखा है, एक जोड़ी सफेद मोजे और चार बनियान।

[शांता कैशमीमो देखती है कि नीतू आती है।]

नीतू : नमस्ते चाचाजी !

रतनलाल : नमस्ते बेटी, आओ बैठो। (नीतू बैठ जाती है)

नीतू : चाचाजी भाभीजी ने कहलवाया है कि मोजा जोड़ी का पता लग गया है। भैयाजी पहनकर चले गए थे। मैं बड़ी लज्जित हूं।

[नमस्ते कर नीतू चली जाती है।]

शांता : उसने यह कहकर छुट्टी पा ली, मैं लज्जित हूं। आपने कह दिया भूल हो गई, यहां तो कितना बड़ा अनर्थ हो गया।

मास्टरजी : शांताजी ! मां के मन को इतनी जल्दी अपनी संतान के प्रति संदेहशील नहीं बनना चाहिए। और फिर आपके प्रवीण का चरित्र तो कितना महान है !

रतनलाल : अब तो सबने अपनी भूल स्वीकार कर ली। अब तो अपनी भूल में सुधार कर अपने बेटे को छाती से लगाओ।

[शांता पास जाकर प्रवीण को छाती से लगाती है।]

शांता : बेटा, मां के गुस्से का खयाल न करना। मैं मोजे जोड़ी देखकर अपने पर काबू न पा सकी और न ही तुम्हारे पिताजी ने मुझे बताया था कि मैं मोजे भी लाया हूं। (प्यार से सिर चूमती और पीठ पर हाथ फेरती है)

[मां की छाती से चिपका प्रवीण सुबक पड़ता है।]

[रतनलाल ने प्लेट में दो रसगुल्ले रखकर मास्टरजी को दिए और प्रवीण को मां की छाती से हटाकर अपने हाथ से रसगुल्ला खिलाया। सब लोग प्लेट से रस-गुल्ला उठा उठाकर खाने लगे और रतनलाल मुंह में एक रसगुल्ला रखकर मुसकराते हुए बाहर चला जाता है।]

पर्दा गिरता है

(१९७०)

मुर्गीचोर

□ देववती शर्मा

पात्र

असलम	:	मुर्गीखाने का मालिक
अनवर	:	असलम का नौकर
हुक्मचंद	:	थानेदार
रामलाल	:	सिपाही
बरकत	:	सिपाही
मंगल पांडे	:	सिपाही
श्याम	:	सिपाही
धौलू	:	गडरिया

[पुलिस थाने का दृश्य। थानेदार की मेज खाली है, सिपाही अपनी ड्यूटी दे रहा है। सामने दीवार पर एक घंटा और कलैंडर और द्वार पर एक सिपाही कंधे पर बंदूक लिए खड़ा है। असलम थाने के द्वार पर आता है। आकृति हास्यप्रद, मोटा किंतु कद ठिगना, ऊंचे-नीचेकपड़े।]

सिपाही : कहां जाना चाहते हो मियां ?

असलम : रिपोर्ट दर्ज कराने। (**कहता हुआ अंदर चला जाता है**)

सिपाही : कहिए कैसे आना हुआ ?

असलम : नमस्ते संतरी साहब ! आप रोजनामचे में मेरी रिपोर्ट दर्ज कर लीजिए।

सिपाही : क्या रिपोर्ट है तुम्हारी ?

असलम : मेरी मुर्गियां रोज चोरी होती हैं—चोर का पता लगाना है।

सिपाही : क्या काम करते हो ?

असलम : मैं मुर्गियों का व्यापारी हूं। लगभग सात माह से मेरे यहां रोज चोरी हो रही है। मेहरबानी करके चोर का पता लगाएं।

सिपाही : क्या मुर्गीचोर का पता भी पुलिस ही लगाएगी, खुद नहीं लगा सकते ?

असलम : संतरी साहब, यदि मैं स्वयं पता लगा सकता तो यहां तक चल कर क्यों आता ? देखते नहीं, मुझे चलने-फिरने में कितना कष्ट होता है। इस शरीर से तो उठना-बैठना भी मुश्किल है।

सिपाही : ऐसा तो नहीं है, कि तुम खुद मुर्गी खा लेते हो और गिनते वक्त यह भूल जाते हो कि मैंने मुर्गी खाई है।

असलम : नहीं साहब, मैं भुलक्कड़ नहीं हूं।

सिपाही : तुम्हारे पेट से तो ऐसा ही मालूम होता है जैसे मुर्गी के बच्चे तुम्हारे पेट में फुदक रहे हों ? **(हंसता है)**

असलम : **(कुछ नाराज होते हुए)** आपको मजाक सूझता है, मेरा हजारों का नुकसान हो गया।

सिपाही : कितने दिन से चोरी हो रही है ?

असलम : लगभग सात माह से।

सिपाही : आज से पहले भी रिपोर्ट दर्ज कराई थी ?

असलम : नहीं।

सिपाही : फिर आज क्यों करवाते हो ?

असलम : इस प्रकार तो मेरी एक मुर्गी भी नहीं रहेगी। मेरा व्यापार ठप्प हो जाएगा।

सिपाही : क्या नौकर देखभाल नहीं करते ?

असलम : मैं जो नौकर रखता हूं, वह मुर्गी नहीं खाता। अंडे जरूर खा जाता है। इसी बात से परेशान हू।

सिपाही : जो चीज खाने के लिए बनी है। वह खाई ही जाएगी।

असलम : लेकिन मुझे अंडों के पैसे देकर तो खाए।

सिपाही : एक तरकीब बताता हूं, मानोगे।

असलम : जरूर मानूंगा। नेक सलाह को मानने में क्या बुराई है।

सिपाही : एक नौकर रखो। उसको पूरा वेतन दो। और चार अंडे रोजाना खाने को दो। तब पता चलेगा।

[तभी असलम का नौकर अनवर आता है।]

अनवर : साहब मेरी रिपोर्ट लिख लो।

सिपाही : अभी ठहरो। एक से बात तो करने दो।

अनवर : इसी के खिलाफ तो रिपोर्ट लिखनी है।

असलम : क्या ? अरे दुष्ट तू यहां भी आ गया ?

सिपाही : ये क्या किस्सा है ?

अनवर : साहब यह मोटा पेटू, मेरी तनख्वाह नही देता।

सिपाही : कितने दिन की तनख्वाह है।

अनवर : एक साल की।

सिपाही : ठीक, तभी तुम्हारी मुर्गी चोरी होती हैं। तुम ईमानदार नहीं हो, तुमने इस गरीब से बेईमानी की, खुदा ने तुम्हें दंड दिया।

असलम : नहीं नहीं ऐसा नहीं। मैं इसे २० रुपए महीना देता हूं। यह कहता है कि ७५ लूंगा।

सिपाही : तुमने इससे ठहराया क्या था?

अनवर : हुजूर ७५ रुपए माहवार और दो अंडे रोज के, पर यह दुष्ट वहां तोंद फैलाए पड़ा रहता है। एक भी अंडा नहीं खाने देता।

सिपाही : चोरी कब होती है।

असलम : रात को सूरज छिपने से पहले। मैं मुर्गी के बच्चे गिनकर मुर्गी घर बंद करता हूं, सवेरे गिनता हूं, तो एक-दो कम मिलती हैं।

सिपाही : अंडे भी?

असलम : नहीं।

सिपाही : तुम्हारी ड्यूटी कब खत्म होती है?

अनवर : सूर्य छिपने पर।

सिपाही : फिर तो तुम ५०० रुपए का इनाम घोषित करो। सारे गांव में ढिंढोरा पिटवाओ। जो कोई मुर्गीचोर का पता लगाएगा उसे ५०० रुपए नकद इनाम दिया जाएगा।

असलम : नकद।

सिपाही : और क्या उधार? जो मुर्गीचोर का पता लगाकर देगा वह नकद ही लेगा?

[ढिंढोरा पीटा गया। 'गांव और मोहल्ले वालों ५०० रुपए इनाम पाओ और मुर्गी-चोर का पता लगाओ। चोर का पता लगने पर सूचना थाने को दो।']

दृश्य परिवर्तन

धोलू : (थाने में आकर) नमस्ते संतरी जी!

सिपाही : नमस्ते!

धोलू : मुझे इनाम दिलवाओ। मैंने चोर का पता लगा लिया।

सिपाही : कहां है चोर?

धोलू : अभी पकड़ा नहीं है। पता लगाया है।

सिपाही : पकड़ा क्यों नहीं।

धोलू : वह तो आपका काम है। चलो हथकड़ी लेकर। चार-पांच सिपाही चलना। वह घेरा डालकर पकड़ा जाएगा। बड़ा तेज भागता है।

सिपाही : तुम्हें कैसे पता?

धौलू : मैंने कल कोशिश की थी। मुर्गी उठाकर इतना तेज भागा कि मेरी पकड़ में नहीं आया।

सिपाही : तुम अच्छे पहलवान हो, फिर मात कैसे दे दी।

धौलू : खेतों में जाकर छिप गया। हां, एक फोटोग्राफर भी ले चलना। कभी हम सबको देख भागने की रफ्तार और भी तेज कर ले।

सिपाही : (दूसरे सिपाही से) रास्ते में रेत बिछवा देना ताकि पैरों के निशान जाते हुए और आते हुए दिखाई दें।

धौलू : वह पक्का मुर्गीचोर है। आधा इनाम तो अभी दिलवा दो।

सिपाही : इनाम तब मिलेगा जब चोर पकड़वाओगे।

धौलू : फिर बताओ, कब पकड़वाऊं।

सिपाही : कल बताओ, किस समय आओगे ?

धौलू : (जाते हुए) शाम को छः बजे साहब जरूर आऊंगा। (लौटकर) एक बात भूल गया।

सिपाही : क्या ?

धौलू : रुपए ले लेना। वह मोटा पेटू तो बेईमान है। सुना है नौकरों की तनख्वाह भी साल साल भर नहीं देता।

सिपाही : तू बता हमें क्या मिलेगा ?

धौलू : सोच लूंगा, जैसा चाहोगे हो जाएगा। (कहता हुआ बाहर चला गया)

दृश्य परिवर्तन

[शाम को धौलू थाने में आता है। चार सिपाही और धौलू मुर्गी फार्म पर जाते हैं। दो घंटे बाद चोर को पकड़कर ले आते हैं। साथ में असलम भी जाता है।]

थानेदार : क्यों चोर पकड़ लाए ?

धौलू : जी हां, ये है बोरी में।

थानेदार : असलम, निकालो ५०० रुपए इनाम के।

असलम : साहब पहले मुर्गीचोर तो दिखाओ।

[थानेदार के संकेत पर सिपाही मुर्गीचोर का पिंजड़ा लाकर रख देता है।]

असलम : अरे यह डेढ़ फुटा बिलाव, मुर्गी चोर ! मेरी डेढ़ हजार की मुर्गियां खा गया। लेकिन साहब इसके लिए ५०० रुपए इनाम ज्यादा है।

थानेदार : तू बड़ा बेईमान है। इनाम देने का ढिंढोरा पीटकर मुकरता

है। लोग ठीक ही तुझे बेईमान कहते हैं। (**गुस्से में आंखें दिखाते हुए**) निकाल इनाम, नहीं तो तुझे भी इस बिलाव के साथ बंद करता हूं।

असलम : (**डरते हुए, तीन सौ रुपए निकालकर मेज पर रखता हुआ कहता है**) साहब अभी आप ये रख लो, पहले मैं यकीन तो कर लूं कि मुर्गीचोर यही है।

धोलू : थानेदार साहब मैं पूरे पांच सौ रुपए ही लूंगा। मैंने सारी सारी रात जागकर इस मुर्गी चोर का पता लगाया है।

[अनवर का अचानक प्रवेश]

अनवर : थानेदार साहब, उससे मेरी पूरी तनख्वाह भी दिलवाओ। घर में मेरी बच्ची बीमार पड़ी है।

असलम : (**रोते हुए**) मेरा घर खाली करवा लो। कमबख्त अनवर भी चढ़े चूल्हे पर हाथ सेंकने आ गया।

[इनाम के बाकी रुपए निकालकर मेज पर रखता है। थानेदार धोलू को रुपए देता है। धोलू रुपए लेकर नमस्ते कर चल देता है। सब लोग हंसते हैं और असलम की ओर देखकर कहते हैं—'कहो, कैसा रहा मुर्गीचोर']

पर्दा गिरता है

(१९७०)

क्षीरसागर

□ संकलित

पात्र

गुसाईंजी	नौकर
चांदमल	एक आदमी
चेतन	चार हरिजन युवक

[गांव के एक संपन्न घर का दृश्य]

गुसाईंजी : बड़े ढीठ हो गए हैं ये लोग। स्वराज्य क्या आ गया है, नीच जाति के लोग भी हमारे सिर पर बैठने को तैयार हैं।

चांदमल : महाराज, हलकू कहता है, मैं मंदिर के दरवाजे पर खड़ा होकर प्रार्थना करूंगा। अब आप ही बताइए, चमार को भगवान के पवित्र मंदिर के आंगन में कैसे घुसने दिया जाता?

गुसाईंजी : तुमने उसे धक्का देकर बाहर नहीं निकाल दिया?

चांदमल : धक्का देकर निकाल देता गुरुदेव, मगर इतने में चेतन भैया आ गए और मुझे आंखें दिखाकर कहने लगे, खबरदार हलकू को हाथ न लगाना।

गुसाईंजी : चेतन! मेरा पुत्र, मठाधीश की पवित्र गद्दी का उत्तराधिकारी! उसको यह हिम्मत! कहां है वो...चेतन...ओ चेतन!

चेतन : (**प्रवेश कर**) क्या आज्ञा है पिताजी!

गुसाईंजी : (चांदमल तुम्हारी शिकायत लाए हैं कि तुमने धर्म को तिलांजलि दे दी है?

चेतन : चांदमल धर्म को नहीं समझते, पिताजी!

गुसाईंजी : (**सक्रोध**) अच्छा तो तुम आवारागर्दी करनेवाले छोकरे धर्म को समझते हो और ये बूढ़े और अनुभवी धर्म को नहीं समझते!

चांदमल : आप नाराज न हों, गुरु महाराज! बच्चे हैं, नया खून है, विद्रोह करना इनका धर्म है।

गुसाईंजी : तुम जानते हो चेतन कि एक साल पहले उसी हलकू ने मेरे कुएं पर पानी भरने का दुस्साहस किया था। मगर मैंने उसे

ऐसा दंड दिया कि रोता-कराहता घर लौट गया।

चेतन . आपने अच्छा नहीं किया था पिताजी !

गुसाईंजी : चेतन !...मुझसे...बहस ! क्या मैं अपनी कर्म परंपरा छोड़ दूं और भंगी, चमार सबों को इतने पवित्र धर्ममठ के कुएं का पानी गंदा करने दूं ?

चांदमल : पुराने जमाने से एक रीति चली आई है चेतन भैया ! ये ईश्वर की बनाई बातें कहीं तोड़ी जाती हैं ?

चेतन : जात-पांत ईश्वर की बनाई नहीं है, चांदमलजी ! आपने और हमने बनाई हैं। ये सफाई और चमड़े का काम करते हैं इसलिए नीच कैसे हो गए ? वे एक काम करते हैं तो आप दूसरा काम। संसार के सभी मनुष्य बराबर हैं, कोई नीच-ऊंच नहीं है।

गुसाईंजी : हमारा काम पवित्र काम है, धर्म का है, उनके काम की तरह गंदा नहीं है।

चेतन : सच पूछिए तो हमारे काम ही नहीं, मन और आचरण भी बहुत गंदे हैं। हम दूसरों के काम की कमाई खाना चाहते हैं—दूसरों को लूटना चाहते हैं—हम मठ से स्वामी हैं—केवल दो-चार बड़े बड़े शब्दों को बोलकर गरीब अंधे भक्तों की मेहनत पर घर बैठे मौज-मजे करते हैं...बेचारे दुखी लोग चांदमलजी से पैसा उधार लेते हैं और चांदमल सूद ले लेकर उनका खून चूसता है। क्या ये सब बातें गंदी नहीं हैं ?

चांदमल : चेतन को आपने शहर भेजकर अच्छा नहीं किया, गुसाईं महाराज ! इनका दिमाग फिर गया है।

गुसाईंजी : आज मुझे भी ऐसा लग रहा है।

चेतन : मैं ठीक कहता हूं पिताजी, आज अकाल है, गांव के सारे कुएं सूख गए है। सब लोग मंदिर में भगवान से प्रार्थना करने आते हैं। हलकू को भी भगवान से प्रार्थना करने का अधिकार है।

चांदमल : ये किसने कहा उसे प्रार्थना करने का अधिकार नही है, मगर अपने अपने स्थान से। हलकू का स्थान बाहर है।

नौकर : **(प्रवेश कर)** गुसाईं मालिक, गांव के लोग अपने अपने कुएं पर इकट्ठे हैं। पर अब सिर्फ कीचड़ बचा है। सब मुहल्ला में त्राहि त्राहि मची है। सब लोग गांव छोड़कर भाग रहे हैं।

गुसाईंजी : बड़ी मुसीबत है। अब क्या किया जाए ?

चांदमल : गुसाईं महाराज, दो दिन तक मैं गांव का काम चला सकता हूं।

गुसाईंजी : कैसे ?

चेतन : मैं बताता हूं। इन्होंने सौ नांदें पानी घर में इकट्ठा किया है, अनाज की तरह। और ये दो आने गिलास पानी बेचेंगे।

गुसाईंजी : चांदमल, तुम गांव वालों की आपत्ति में भी फायदे की बात सोचते हो।

चेतन : व्यापार करनेवाले में धर्म की भावना मर जाती है, पिताजी !

चांदमल : क्या करूं, गुरु महाराज ! यह तो जरूरत का सौदा है। जिनको आवश्यकता होगी वे खरीदेंगे।

चेतन : पानी भगवान की वस्तु है। वह बेची नहीं जाती। भगवान उसे मुफ्त में देता है।

चांदमल : तो मांग लो न।

गुसाईंजी : तुम्हारी नीयत ठीक नहीं, चांदमल। भगवान इसका दंड देगा।

चेतन : भगवान क्या, हम ही सब इसका दंड देंगे, पिताजी ! आपकी आज्ञा तो मिले।

गुसाईंजी : मार-पीट, लड़ाई-झगड़ा मैं पसंद नहीं करता।

चेतन : नहीं, पिताजी, ऐसा कुछ नहीं होगा, आप हां कहिए।

गुसाईंजी : अच्छा जा।

[चेतन और नौकर का प्रस्थान।]

चांदमल : बाप रे बाप, ये मेरे घर पर हमला बोलेंगे ? गुसाई बाबा मैं चलता हूं।

[प्रस्थान करता है।]

गुसाईंजी : (**धक्का देकर पीछे हटाता हुआ**) वहां खड़े हो जाओ।

[चांदमल धम्म से जमीन पर बैठकर सिर पर हाथ मारता है। हाय अब क्या होगा—मार डालो मुझे—महाराज, आपको पाप लगेगा, आदि कहता है।]

गुसाईंजी : (**लाल आंखों से**) चुप रहो।

[चांदमल एकाएक खड़े होकर आंख पर हथेली की छाया करता हुआ बाहर की ओर देखता है—फिर प्रसन्न होकर गुसाईंजी की ओर देखकर जोर से हंसता है।]

गुसाईंजी : क्या देखकर हंस रहे हो चांदमल ?

चांदमल : हो हो हो...वो देखो...वहां।

गुसाईंजी : कुछ लोग पानी के घड़े लेकर आ रहे हैं। इसमें हंसने की क्या बात है ?

चांदमल : हो हो हो...जरा ध्यान से देखिए धर्मावतार, वे लोग कौन हैं ?

गुसाईंजी : (**देखकर**) चेतन और उसके साथी।

चांदमल : आपकी आंखें कमजोर हो रही हैं गुसाईं बाबा। ये हरिजन बस्ती के लोग हैं ?

गुसाईंजी : हरिजन बस्ती के ! इनके यहां पानी कहां से आया ? (**चांदमल जोर से हंसता हुआ इधर से उधर चलता है**)

चेतन : (**प्रवेश कर**) लीजिए पिताजी। कितना पानी चाहिए ?

[साफ-सुथरे दिखने वाले चार हरिजन युवक घड़े लिए प्रवेश करते हैं।]

उधर रखो, यहां एक प्याऊ बनाई जाएगी और मुफ्त पानी बांटा जाएगा।

[सब लोग अपने अपने घड़े चबूतरे पर रख देते है।]

गुसाईंजी : यह पानी कहां का है। किसने भरा है ?

एक युवक : यह पानी हमारे क्षीरसागर का है।

गुसाईंजी : (**आश्चर्य से**) क्षीरसागर !

चांदमल : हो हो हो...क्षीरसागर। (**खूब हंसता है और गोल गोल घूमता है**)

दूसरा युवक : गुसाईं महाराज, भैयाजी हमारे नेता हैं। इनकी सलाह से हम सबने अपनी बस्ती में एक नया कुआं खोदा है।

चेतन : पिताजी इस कुएं में दो काली चट्टानें हैं, उनके नीचे न मालूम कहां की झिरें हैं। दूध सा स्वच्छ पानी दिन-रात उस कुएं में आता रहता है।

गुसाईंजी : मगर हम लोगों को भंगी-चमारों की वस्ती का पानी पिलाकर भ्रष्ट करोगे ?

चेतन : पिताजी, ये हरिजन हैं। बस्ती में चलकर देखिए कि ये किस सफाई से रहते हैं ! इनकी स्वच्छता को देखकर हमें और गांव के ऊंचे कहे जानेवाले लोगों को शर्म से सिर झुकाना पड़ेगा। जात-पांत पूछे नहिं कोई, हरि को भजे सो हरि का होई। (**चेतन एक घड़े से लोटा भरकर गुसाईंजी को पानी देता है**)

चेतन : इस प्याऊ का उद्‌घाटन कीजिए, पिताजी !

गुसाईंजी : मैं...मैं...दूर रह। मेरा स्पर्श न करना। (**झेंपता है और चांदमल की तरफ देखता है**)

चांदमल : गांव आपके दरवाजे पर थूकने तक नहीं आएगा। आपके मठ

में आग लगा देगा।

चेतन : चल लोभी। तू आदमी नहीं जानवर है। भाग यहां से...

चांदमल : यह मेरा अपमान है। मैं इसे सहन नहीं कर सकता। मैं बदला लूंगा।

[भागता है।]

चेतन : आपको कोई सोच-विचार नहीं करना चाहिए पिताजी।

गुसाईंजी : समय बड़ा बलवान मालूम होता है चेतन। मुझे ऐसा अनुभव हो रहा है कि भगवान हमसे तो नाराज हैं और इन पर कृपालु है तभी तो मठ का कुआं और सारे गाव की बावड़ियां सूखी है और इनका कुआ पानी से भरा है। आखिर ये भी तो उसी की संतान हैं।

चेतन : मैंने कहा न—ये हरिजन हैं, पिताजी! भगवान के प्यारे।

गुसाईंजी : ला बेटा ला, मैं पानी पीऊंगा (लोटा लेकर पानी पीता है। सब लोग कहते हैं, 'क्षीरसागर जिंदाबाद। गुसाईंजी की जय')

नौकर : मालिक, गांव के लोग इधर ही आ रहे है। सब यही पूछ रहे है, क्या इतने बड़े गुसाईंजी ने हरिजन बस्ती का पानी पिया है

गुसाईंजी : हां पिया है, और आज से रोज पीऊंगा।

[पांच लोग प्रवेश करते है। चांदमल उनके आगे उलटा चलता हुआ आता है।]

एक आदमी : गुसाईंजी, आप हमारे धर्म के नेता है। हम जानना चाहते है कि आपने अछूतों के कुएं का पानी पिया है?

गुसाईंजी : गांव के मेरे शिष्यो! मैंने आज अछूतों के कुएं का पानी पिया है।

दूसरा आदमी : क्या यह धर्म के अनुकूल है?

गुसाईंजी : भाई इस आपत्ति ने, इस सूखे अकाल ने हमें सच्चा धर्म बताया है। हम सब उस भगवान की संतान हैं। हममें कोई ऊंच-नीच नहीं, बल्कि जिन्हें हम नीच बताते हैं भगवान उनकी रक्षा करता है, उनसे प्यार करता है तभी तो हमारे कुएं सूखे है और उनका भरा है।

एक आदमी : आप हमारे धर्मपिता हैं। अगर आप ही ऐसा सोचते हैं तो ठीक है। भाइयो, फिर संकोच किस बात का? जो बड़े लोग कहें, वही धर्म है।

सब : हम भी इनमें पानी लेंगे।

चेतन : साथियो, तैयार।

[तीन हरिजन युवक घड़े लेकर चबूतरे पर खड़े हो जाते हैं और चौथा लोटा लेकर भरने लगता है।]

क्षीरसागर जिंदाबाद! (सब एक साथ बोलते हैं)

[अब कतार बनाकर चार आदमी अपने अपने लोटों में पानी भरवाते हैं और पानी देनेवाले युवक 'रघुपति राघव राजाराम' गाते हैं।]

पर्दा गिरता है

(१९७०)

अनुशासन

□ महेंद्रनाथ झा

पात्र

वृद्ध	किशन
हरी	रामू
रमेश	भोंदू
रूपा	यात्री
श्यामू	गार्ड

पहला दृश्य

[सुबह का समय। वृद्ध बाबा घर में चटाई पर बैठे अखबार पढ़ रहे हैं।]

वृद्ध : आओ रामू, रूपा, भोंदू, श्यामू, किशन, रमेश और...और यह कौन है? अरे, सोहन और हरी भी! ठीक है, क्या तुम भी आए हो?

हरी : हां बाबा, रमेश ने कहा कि बाबा आज हमें सवेरे घुमाने ले जाएंगे। वहां अनुशासन के बारे में बताएंगे। इसलिए मैं भी आ गया साथ चलने।

वृद्ध : ठीक है। तो तुम भी चलो। अच्छा बताओ, तुम लोगों में से कौन कौन अपने पिताजी से या माताजी से मेरे साथ घूमने जाने की आज्ञा लेकर आया है!

हरी और भोंदू : मैं, मैं।

रमेश : अरे वाह! भोंदू तो भोंदू ही रहा। इसमें पूछकर आने की क्या बात थी? भोंदू के साथ हरी भी भोंदू ही हो गया।

[सब बच्चे हंसते हैं।]

वृद्ध : तुम गलती करते हो रमेश। इन दोनों ने बिलकुल ठीक काम किया है। तो सुनो, अनुशासन का पहला पाठ है—हमेशा अपने माता-पिता से आज्ञा लेकर कोई काम करो। यदि तुम इतना भी नहीं कर सकते तो राज्य-शासन कैसे करोगे?

रामू : बाबा, पिताजी तो कहते हैं कि समय पर पढ़ना और समय पर खेलना चाहिए। क्या इसके लिए भी माता-पिता से पूछने की

जरूरत है ?

वृद्ध : वह भी माता-पिता की आज्ञा है। उसका पालन करना ही चाहिए। किंतु बिना कहे बाहर चले जाना ठीक नहीं। माना कि तुम लोग मेरे साथ चले आए और माता-पिता समझें कि तुम खो गए, तो उन्हें कितनी परेशानी होगी। वे तुम्हें ढूंढ़ते फिरेंगे। काम करने में मां का जी नहीं लगेगा ? वे खाना नहीं बना पाएंगी। जब तुम शाम को जाओगे तो क्या होगा ?

हरी : डंडों की मार पड़ेगी और खाना नहीं मिलेगा।

वृद्ध : (हंसकर) डंडों की मार न भी पड़े, पर खाना तो जरूर नहीं मिलेगा; क्योंकि फिक्र के कारण माताजी की तबीयत ही खाना बनाने की नहीं होगी, जब तक तुम वापस न आओ।

रमेश : यह तो ठीक है बाबा। पर माता-पिता से आज्ञा मांगने का राज्य-शासन से क्या संबंध है ?

वृद्ध : जो बच्चे बचपन में माता-पिता की आज्ञा का पालन करना सीखते हैं, बड़े होने पर वे ही अपने बड़ों की, अपने अधिकारियों की आज्ञा के अनुसार काम करना सीखते हैं।

रूपा : तो सचमुच हम लोगों से गलती हो गई है। चलें, हम सभी अपने अपने माता-पिता से आज्ञा लेकर आएं।

वृद्ध : ठहरो ! देखो, मैं बूढ़ा हूं न।

रमेश : हां, बाबा !

वृद्ध : तुम मुझे बाबा कहते हो न ?

सभी बच्चे : हां।

वृद्ध : श्यामू, जब तुम्हारे पिताजी मिलते है तो वह मुझसे पहले क्या कहते हैं ?

श्यामू : वह आपसे कहते हैं, 'चाचा प्रणाम'।

वृद्ध : देखो, तुम्हारे पिताजी बड़े होकर भी मुझसे प्रणाम करते हैं। पर, तुम लोगों में से, छोटे होकर भी, किसी ने मुझसे प्रणाम, नमस्ते, राम राम कुछ भी नहीं कहा।

[बच्चे मुंह नीचा कर लेते हैं।]

वृद्ध : तुम लोग चुप क्यों हो ?

श्यामू : हमसे गलती हो गई, बाबा।

वृद्ध : अपने से बड़ों का आदर करना, यह अनुशासन का दूसरा पाठ है। सभी अपने से बड़ों का आदर करते हैं और करना भी चाहिए। अपने प्रधानमंत्री भी राष्ट्रपति का आदर करते हैं,

क्योंकि उनका पद प्रधानमंत्री से ऊंचा है।

हरी : अब हम गलती नहीं करेंगे, बाबा !

वृद्ध : तो फिर जाओ और अपने अपने माता-पिता से आज्ञा लेकर ठीक दस बजे यहां आ जाओ।

[सब बच्चे जाते हैं।]

दूसरा दृश्य

[समय : साढ़े दस बजे। सभी बच्चे एक एक कर आते हैं और वृद्ध को प्रणाम, नमस्ते करते हैं।]

किशन : बाबा, मेरे पिताजी ने मुझे आने के लिए मना कर दिया था। इसीलिए तो मैं उनसे पूछता नहीं।

वृद्ध : तुमने गलती की। यदि उन्होंने तुम्हें आने से मना कर दिया तो तुम्हें नहीं आना चाहिए था। केवल आज्ञा मांगना ही नहीं, उसे मानना ही जरूरी है। तुम वापस जाओ।

[किशन वापस जाता है।]

वृद्ध मैंने तुम्हें कितने बजे बुलाया था ?

रमेश दस बजे।

वृद्ध और, तुम लोग कितने बजे आए हो ?

रमेश बाबा, यह कोई स्कूल तो है नहीं कि बिलकुल समय पर ही आया जाए।

वृद्ध यही तो तुम्हारी गलती है। समय का पालन सब जगह जरूरी है। तुमने सुना होगा, 'अब पछताए होत क्या, जब चिड़ियां चुग गई खेत'। मेरे एक मित्र की कार दस बजे आई थी। मैंने उनसे प्रार्थना की थी कि हमें भायखला तक पहुंचा दें। उन्हें देर हो रही थी। वह चले गए। अब समय भी खराब होगा और पैसा भी। समय पर आ जाते तो यह नुकसान न होता।

रमेश : बाबा, आपने पहले तो कहा ही नहीं था कि मोटर आने वाली है।

वृद्ध : समय पालन करने के लिए लालच देने की जरूरत नहीं। जब भी हो जहां भी हो, समय का हमेशा ध्यान रखना चाहिए। अनुशासन का यह तीसरा नियम है।

[सब बच्चे वृद्ध के साथ जाते हैं।]

तीसरा दृश्य

[रूपा बीच सड़क पर चल रहा है। पीछे से साइकिल आती है और उससे टकरा जाती है। दूसरे बच्चे उसे उठाते हैं। वृद्ध बच्चे का हाथ पकड़कर चलाता है और सड़क के किनारे ले जाता है। कई साइकिलें, मोटरें सड़क पर निकल जाती हैं।]

वृद्ध : बच्चो, सड़क पर चलने के लिए फुटपाथ बने हैं, फिर भी रूपा बीच सड़क पर चल रहा था। इससे उसके साथ यह दुर्घटना हुई।

रामू : वाह बाबा ! एक तो साइकिल वाले ने देखकर साइकिल नहीं चलाई और उल्टे आप हमें ही शिक्षा देने लगे।

वृद्ध : बच्चो, जो नियमों का पालन नहीं करता, दोष उसी का होता है। साइकिल वाले का वह रास्ता ही था। इसलिए अनुशासन का यह चौथा नियम ध्यान में रखो। देश के शासन के लिए बने कानूनों का पालन करो।

भोंदू : बाबा, कानून तो कभी कभी बड़ी तकलीफ के होते हैं। जैसे सड़क पर होकर हमें रास्ता पार करना है। कानून के अनुसार हमें उधर से ही पार करना चाहिए, जहां से रास्ता बना है। उसके लिए करीब एक फ़र्लांग का चक्कर पड़ जाता है।

वृद्ध : बच्चे, शासन चलाना आसान नहीं है। यदि हमें अपने शासन में सहायता करनी है तो हमें कानूनों की तकलीफ सहन कर भी उसे मानना होगा। आलस के कारण कानून न मानना अनुशासन के विरुद्ध है।

चौथा दृश्य

[स्टेशन पर कतार लगी है।]

वृद्ध : जाओ श्यामू, सबके लिए भायखला के टिकट ले आओ।

[श्यामू जाता है। कतार देखता है और कतार में खड़े एक लड़के से टिकट खरीद देने के लिए कहता है। लड़का आंखें दिखाता है और कतार में खड़े होने के लिए कहता है। जब तक श्यामू लाइन में आकर खड़ा होता है तब तक चार-छः आदमी लाइन में बढ़ जाते हैं।]

वृद्ध : देखा बच्चो ! कानून है, लाइन में खड़े होकर टिकट लो। फिर

भी, श्यामू आगे वाले उस बच्चे से टिकट लेने के लिए कहने लगा। अच्छा हुआ उसने श्यामू को डांट दिया।

मोहन : मैं अभी जाकर उसे पीटता हूं। उसने श्यामू को डांटा क्यों ?

वृद्ध : तुम उसे पीटोगे और मैं उसे शाबाशी दूंगा।

[श्यामू आता है।]

वृद्ध : क्यों श्यामू, थोड़ा सा समय बचाने की फिक्र में तुम कानून तोड़ना चाहते थे न। देखा, तुम्हें इससे कितना नुकसान हुआ ? एक तो उस बच्चे से बेइज्जती सहनी पड़ी और दूसरे जब लज्जित होकर तुम लाइन में लौटे तब तक कई आदमी लाइन में और आ गए। तुम्हारा ज्यादा समय ही लगा। तुम्हें अपनी गलती मालूम पड़ी या नहीं ?

श्यामू : हां, बाबा, मैंने स्वयं अपना नुकसान किया।

[सभी बच्चे गाड़ी में चढ़ते हैं। रूपा फुटबोर्ड पर खड़ा होता है। बाकी सब बच्चे गाड़ी में जाकर बैठते हैं। गाड़ी चलती है और झटके के कारण रूपा एक यात्री से टकरा जाता है। वह रूपा को चांटा मार देता है। लड़ाई जोर पकड़ लेती है। एक आदमी जंजीर खींचकर गाड़ी को रोक देता है। थोड़ी देर में गार्ड आता है।]

यात्री : क्यों बे, धक्का क्यों देता है ?

रूपा : मैंने धक्का नहीं दिया। गाड़ी के झटके के कारण धक्का लग गया।

यात्री : काटकर रख दूंगा। जानता है, मैं कौन हूं ?

रूपा : पर मैंने...(**रोता है**)

गार्ड : जंजीर किसने खींची ?

एक यात्री : मैंने। ये दोनों दरवाजे पर लड़ रहे थे। कोई गिर जाता तो ?

गार्ड : क्या बात है ? तुम लड़ते क्यों थे ? गिर पड़ते तो ?

यात्री : इसने जानबूझकर मुझे धक्का दिया, फिर झूठ बोलता है।

रूपा : मैं तो यहां खड़ा था। गाड़ी चली तो इन्हें धक्का लग गया था।

गार्ड : तो तुम फुटबोर्ड परस फर कर रहे थे ?

रूपा : नहीं !

वृद्ध : झूठ बोलकर बचना चाहते हो ? (**गार्ड से**) हां, यह फुटबोर्ड पर सफर कर रहा था।

गार्ड : लड़के, फुटबोर्ड पर चढ़कर चलना तो जुर्म है। तुम्हें पुलिस में

जाना पड़ेगा। (**रेलवे पुलिस से**) सिपाही, इसे ले जाओ।

पुलिस : (**रूपा को खींचते हुए**) चलो, थाने चलो।

एक आदमी : (**धीरे से**) अजी हवलदार साहब, छोड़ दीजिए। बच्चा है।

पुलिस : तुम चुप रहो जी।

[रूपा पुलिस के साथ जाता है। एक आदमी रूपा की ओर रुपए का इशारा करता है। वृद्ध देख लेता है कि रूपा जेब से पैसे निकालना चाहता है।]

वृद्ध : खबरदार रूपा, अगर तुमने रिश्वत देकर छूटने की कोशिश की तो...रिश्वत देना अनुशासन के विरुद्ध है।

गार्ड : क्या, यह आपके साथ है ?

वृद्ध : जी हां !

गार्ड : फिर आप ही इसके खिलाफ क्यों बोल रहे है ?

वृद्ध : आज इन बच्चों को अनुशासन की शिक्षा देने के लिए ले जा रहा हूं। यदि ये स्वयं ही कानून भंग करेंगे तो सीखेंगे क्या ?

गार्ड : (**रूपा से**) बच्चे, अनुशासन का पालन न करके तुमने अपना और दूसरे यात्रियों का नुकसान किया है। क्या तुम्हें अपनी गलती मालूम पड़ी ?

रूपा : अब मैं भविष्य में ऐसी गलती नही करूंगा।

गार्ड : तो जाओ, गाड़ी में बैठो।

[सब गाड़ी में बैठते हैं।]

वृद्ध : रूपा, क्या तुम्हें कुछ समझ में आया ?

रूपा : हां, बाबा, नियमों का कड़ाई से पालन करना चाहिए।

वृद्ध : और यह भी, रिश्वत लेने और देने जैसे दुराचारों से दूर रहो।

[रूपा चुप है और सभी बच्चे उसका मजाक उड़ाने की कोशिश कर रहे हैं।]

किशन : चलो रूपा और फुटबोर्ड पर सफर करें।

रूपा : (**चिल्लाकर**) बाबा, ये लोग...

वृद्ध : किशन, यह सामने की सीट पर पैर रखकर क्यों बैठे हो ?

किशन : इसमें नुकसान ही क्या है, बाबा ?

वृद्ध : सीट पैर रखने के लिए है या बैठने के लिए ? और ये यात्री पास खड़े हैं, उन्हें तुम नहीं देख सकते क्या ? एक तो उन्हें बैठने नहीं दे रहे हो और ऊपर से चिल्ला चिल्लाकर दूसरों को परेशान कर रहे हो। क्या तुम्हारे खयाल में यह भी अनुशासन का एक अंग नहीं कि दूसरे का अधिकार छीनने

का प्रयत्न न किया जाए और दूसरे की शांति में खलल न डाला जाए।

[किशन चुप हो जाता है और पैर नीचे कर लेता है।]

वृद्ध बस, इतना ही काफी नहीं है। सामने वाली सीट को साफ करो और पास वाले यात्री से कहो कि वह बैठ जाएं।

किशन (सीट साफ करके) आप बैठिए, मुझसे गलती हुई

वृद्ध : अनुशासन के इन नियमों को सदैव ध्यान में रखना बहुत जरूरी है।

पांचवां दृश्य

[स्थान : रानी बाग। सब बच्चे हाथ में पुड़िया लेकर कुछ खाते हुए आगे बढ़ रहे हैं। श्याम खाना खतम करके कागज मोड़कर जमीन पर फेंक देता है।]

वृद्ध : श्याम, यह सामने क्या है?

श्याम : कूड़े का डिब्बा।

वृद्ध : यह यहां क्यों रखा गया है?

श्याम : कूड़ा डालने के लिए।

वृद्ध : तो फिर जब तुम जानते हो, तब तुमने वह कागज वहां क्यों फेंका? जानबूझकर गलती करना अनुशासन के विरुद्ध माना जाता है। चलो उस कागज को उठाकर डिब्बे में डालो।

[श्याम कागज उठाकर डिब्बे में डालता है। घूमते-घामते सभी वृद्ध के पास वापस आ जाते हैं।]

वृद्ध : हां बच्चो! अनुशामन का पालन कठिन काम है। हमें हर कदम पर सोचना पड़ता है कि हम किसी कानून का उल्लंघन तो नहीं कर रहे हैं, हम किसी के अधिकार को तो नहीं छीन रहे हैं, हमारे कारण किसी को कोई तकलीफ तो नही हो रही है, समय का ध्यान रखते है या नहीं आदि। सदा ध्यान रखो कि हमें अपना कर्तव्य करना है और दूसरों का छीनना नही है। कानून छोटा क्यों न हो उसका पालन करना चाहिए। अच्छा, अब तुम लोग जाओ।

[सब बच्चे वृद्ध को प्रणाम करके जाते हैं।]

पर्दा गिरता है

'बाल भारती', महाराष्ट्र से
(१९७०)

हिरण्यकश्यप मर्डर केस

□ श्रीकृष्ण

पात्र

जज	मिस खप्परभरनी
सरकारी वकील	हस्तीदमन
विष्णु	चरमसुख
नारद	साक्ष्यजीवी
चपरासी	सिपाही

[बच्चों की अदालत। सामने दीवार पर बीचोंबीच एक तराजू बनी है। जो न्याय का प्रतीक है। मंच के पिछले भाग को कुछ ऊंचा बनाने के लिए एक तख्त के ऊपर एक बड़ी सी मेज और कुरसी रखी है। मेज पर कुछ फाइलें, कलम-दवात और लकड़ी की हथौड़ी रखी है।

मंच के दोनों ओर लकड़ियां खड़ी करके दो कटघरे बनाए गए हैं। तख्त के सामने दर्शकों के बैठने के लिए दो-तीन बेंचें पड़ी हैं।

पर्दा उठने पर तेरह-चौदह वर्ष का एक लड़का जज की कुरसी पर बैठा दिखाई पड़ता है। बाईं ओर वाले कटघरे के नजदीक काला चोगा पहने बारह-तेरह वर्ष का एक लड़का खड़ा है। यह सरकारी वकील है। सभी बेंचें दर्शक बच्चों से खचाखच भरी हैं। दरवाजे पर एक लड़का पेटी कसे अर्दली बना खड़ा है।

तभी पुलिस के दो सिपाही भगवान विष्णु को, जो इस समय नरसिंह रूप में हैं, पकड़े हुए लाते हैं। उनके दोनों हाथों में हथकड़ियां पड़ी हैं। उनके कोर्ट में प्रवेश करते ही पहले तो 'शेर आ गया, शेर आ गया' का शोर मचने लगता है, लेकिन दूसरे ही क्षण 'अरे यह तो आदमियों की तरह चलता है, 'यह कैसा कैदी है,' सारा शरीर तो इसका आदमियों जैसा है पर मुंह बिलकुल शेर जैसा' आदि आवाजें सुनाई पड़ती हैं।

सिपाही विष्णु को ले जाकर मुलजिम के कटघरे में खड़ा कर देते है।]

जज : (**मेज पर हथौड़ी मारकर**) आर्डर ! आर्डर !

[सब चुप हो जाते हैं।]

सरकारी वकील : (**जज से**) माई लार्ड, यही है वह खतरनाक कातिल जिसने किंग हिरण्यकश्यप का मर्डर किया है।

जज : (**आश्चर्य के साथ**) यह आधा शेर, आधा आदमी।

सरकारी वकील : हुजूर, आप इस बहुरूपिए के धोखे में न आएं। कछुए के ऊपरी खोल की तरह यह इसका असली रूप नहीं है। यह तो इसने कानून के शिकंजे से बचने के लिए शेर का मुखौटा पहना हुआ है।

जज : हम समझे नहीं।

सरकारी वकील : हुजूर, अगर कोई आदमी मर्डर करे, तो उसे आप एकदम फांसी पर लटका देंगे। लेकिन अगर कोई जानवर जैसे शेर, भेड़िया, चीता या बैल किसी आदमी को मार डाले, तो क्या आप उस पर भी कत्ल का केस चलाएंगे ?

जज : जानवरों पर भी कहीं मुकदमा चलता है ?

सरकारी वकील : बस तो, हुजूर, शेर की खाल और मुखौटा पहन कर मर्डर करने से मुलजिम की यही चाल थी। इसने सोचा था कि इसे असली शेर समझ कर कोई इसके नजदीक नहीं आएगा और यह चुपचाप खिसक लेगा। लेकिन, माई लार्ड, हमारी पुलिस की चौकन्नी और तेज आंखों से इसकी चाल छिपी न रह सकी और इससे पहले कि यह चम्पत हो जाए, उसने इसे मौके पर जा पकड़ा।

जज : हूं...(**विष्णुजी से**) तुम्हारा वकील कहां है ?

नारद : (**प्रवेश करते हुए**) नारायण, नारायण, माई लार्ड, मैं उपस्थित हूं।

[नारदजी वकीलों की तरह काला कोट और सफेद पतलून पहने हैं। सिर घोटमघोट है जिस पर कुतुब-मीनार की तरह खड़ी मोटी चुटिया दूर से ही नजर आ रही है।]

नारद : (**धीमे स्वर में विष्णु भगवान से**) प्रभु, आप कहां आ फसे ? यहां तो रात-दिन सच को झूठ और झूठ को सच बनाया जाता है।

जज : (**नारद से**) आप ही हैं मुलजिम के वकील ?

नारद : जी हां, मैं ही हूं इनका तीनों लोकों का रजिस्टर्ड वकील।

सरकारी वकील : मैंने पहले कभी जनाब को देखा नहीं ?

नारद : मेरे केस ज्यादातर हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट, मेरा मतलब है ऊपर की अदालतों में होते हैं, लोअर कोर्ट में यह पहला ही चांस है।

सरकारी वकील : आपकी तारीफ ?

नारद : बैरिस्टर नारद।

सरकारी वकील : नारद ! (**व्यंग से**) महाशय, आप अपनी वीणा कहां भूल आए ?

नारद : रेलवे के क्लाक रूम में जमा कर आया हूं। कमबख्त बहुत ही भारी है। फिर अब उसका फैशन भी नहीं रहा। सोचता हूं अब तो उसे जामा मस्जिद पर बेचकर 'सुपर बाजार' से इलैक्ट्रिक गिटार' या क्या कहते हैं उसे...जो मुंह से बजाया जाता है।

जज : माउथ आर्गन ?

नारद : हां, हां, माउथ आर्गन खरीद लूं। (**विष्णु भगवान से**) क्यों प्रभु, आपकी राय में क्या ठीक रहेगा—इलैक्ट्रिक गिटार या माउथ आर्गन।

विष्णु : (**तनिक धीमे स्वर में**) पहले फांसी के फंदे से मेरी गरदन तो छुड़ाओ।

जज : (**विष्णु से**) आर्डर ! यह खुसर-पुसर क्या हो रही है, जल्दी से नाम बोलो।

विष्णु : नाम ? हुजूर, एक नाम हो, तो बताएं ! विष्णु, कृष्ण, राम, हरि, लक्ष्मीपति, नारायण—जिस नाम से भी कोई भक्त याद करता है, वही मेरा नाम है।

नारद : यह नृत्य के आचार्य हैं, इसीलिए लोग इन्हें नटवर भी कहते हैं।

जज : क्या ? नटवरलाल। वही मशहूर ठग, जिस पर मद्रास में कई मुकदमे चल रहे हैं ?

नारद : नहीं, माई लार्ड, नहीं। यह भक्तों के नटवर हैं, वह कुलकलंकी नटवरलाल हैं।

जज : ओह ! लाल हैं—तब जरूर वह इसका पुत्र होगा।

सरकारी वकील : माई लार्ड, मुलजिम के अनेक नामों का होना ही यह जाहिर करता है कि वह अव्वल दर्जे का 'फोर ट्वंटी' है। जाली नाम रख रख कर भोले-भाले लोगों की आंखों में धूल झोंकना और उनको उल्लू बनाना ही इसका पेशा है। हुजूर, मैं दफा ३०२ के साथ साथ इस पर भारतीय दंड संहिता की धारा ४२० का भी आरोप लगाता हूं।

नारद : नारायण, नारायण, साक्षात भगवान पर फोर ट्वंटी का आरोप।

जज : (विष्णु से) कहां रहते हो ?

विष्णु : सारी दुनिया ही मेरा घर है।

सरकारी वकील : अदालत नोट करे, हर शरीफ आदमी का एक न एक घर होता है, लेकिन इन जनाब का अपना कोई घर ही नहीं है। माई लार्ड, यह भी मुलजिम की आवारगी का एक सबूत है।

जज : आर्डर ! आर्डर ! (विष्णु से) पेशा ?

विष्णु : गरीबों, दुखियों, सताए हुओं की मदद...पापियों का नाश... भक्तों का उद्धार...

सरकारी वकील : यह काम करने का तो सभी डाकू और कातिल दावा करते हैं। खैर, इससे पहले और कितने कत्ल किए हैं ?

नारद : माई लार्ड ! मुझे इस प्रश्न पर सख्त आपत्ति है।

सरकारी वकील : माई लार्ड ! मैं अदालत को बताना चाहता हूं कि यह मुलजिम का पहला खून नहीं है और इससे पहले भी यह कई मर्डर कर चुका है। हुजूर, यह पेशेवर कातिल है।

जज : यह आप कैसे कह सकते हैं ?

सरकारी वकील : माई लार्ड ! पुलिस से प्राप्त इसकी यह हिस्ट्री शीट इसका सबूत है। मथुरा की पुलिस की रिपोर्ट के अनुसार यह हजरत वहां भी कृष्ण के जाली नाम से कंस का मर्डर करके भागे हुए हैं और पुलिस अरसे से इनकी तलाश में है।

नारद : माई लार्ड ! मैं मानता हूं कि मेरे मुवक्किल ने कंस का बध किया, लेकिन सवाल उठता है कि उसने ऐसा क्यों किया ? हुजूर, उसे मजबूर किया गया इसके लिए।

जज : किसने किया मजबूर ?

नारद : हुजूर, उसी गुंडों के सरदार कंस ने। उसने मेरे मुवक्किल के डैडी-मम्मी को ही अपने यहां कैद नहीं किया, उसके नन्हे-मुन्ने सात भाई-बहनों का भी बड़ी बेरहमी से गला घोंटकर और पत्थर पर पटक पटक कर मार डाला। मेरे मुवक्किल के पीछे भी उसने पूतना, बकासुर, अघासुर, शकटासुर, वृत्तासुर, प्रलंबासुर, धेनुकासुर आदि अपने कई 'गुंडे' लगाए। इतना ही नही, मेरे मुवक्किल को धोखे से अपने घर बुलवाकर उस पर हमला किया। आखिर जनता की जान की हिफाजत के लिए उसे उस नीच का बध करना ही पड़ा।

सरकारी वकील : माई लार्ड ! सीलोन हमारा पड़ोसी ही नहीं, सदियों पुराना मित्र देश है। विश्व प्रसिद्ध प्राइवेट डिटेक्टिव मिस्टर तुलसी-

दास की विस्तृत रिपोर्ट 'रामायण' के अनुसार 'राम' के जाली नाम से यह वहां भी 'रावण' का मर्डर कर चुका है। माई लार्ड ! इसके इस कुकृत्य से हमारे अंतर्राष्ट्रीय शांति प्रयत्नों को बहुत धक्का पहुंचा है।

नारद : माई लार्ड ! वह दुष्ट 'रावण' मेरे मुवक्किल की धर्मपत्नी को उठा ले गया था। मैं अपने (**सरकारी वकील की ओर इशारा करके**) सम्माननीय मित्र से पूछना चाहूंगा कि अगर कोई उनकी वाइफ को उठा ले जाए, तो क्या उनका खून नहीं खौल उठेगा ?

[लोगों के जोर जोर से हंसने और तालियां बजाने का शोर]

सरकारी वकील : तो इसके लिए पुलिस में रिपोर्ट करनी थी। पुलिस अपने आप उससे निपटती रहती। कानून कसूरवार को अपने आप सजा देता। कानून को अपने हाथ में लेकर सजा देने वाला यह कौन था ? हुजूर, मैं इस पर कानून की मर्यादा भंग करने का भी आरोप लगाता हूं।

नारद : (**कानों पर हाथ रखकर**) कैसा घोर कलयुग आ गया है। नारायण ! नारायण !

सरकारी वकील : माई लार्ड ! इजाजत हो तो अब मैं कुछ गवाह पेश करूं, जो आज के मुकदमे पर रोशनी डालने के साथ साथ मुलजिम की करतूतों का भी पर्दाफाश करेंगे।

जज : इजाजत है।

सरकारी वकील : हुजूर, मेरी सबसे पहली गवाह है मिस खप्परभरनी।

चपरासी : (**पुकारकर**) मिस खप्परभरनी हाजिर है ? (**स्वत:**) बाप रे !

[एक विकराल औरत गवाह के कटघरे में आकर खड़ी हो जाती है।]

जज : आपका इस मुकदमे से क्या संबंध है ?

खप्परभरनी : जी, मैं बेबी प्रह्लाद की आया हूं।

नारद : आया कि आयी ?

[सब हंसते हैं।]

जज : (**मेज पर हथौड़ी मारकर**) आर्डर ! आर्डर ! (**नारद से**) गवाह को बोलने दें, उसे डिस्टर्ब न करें। हां, तो मिस खप्परभरनी, आप (**विष्णु की ओर इशारा करके**) मुलजिम के बारे में क्या जानती हैं ?

मिस खप्परभरनी : हुजूर, यह अकसर घंटों बेबी प्रह्लाद से अकेले में मिला करता था और पता नहीं उसे क्या-क्या उल्टे-सीधे पाठ पढ़ाता था। इसने बेबी को इस कदर अपने वश में कर लिया था कि बेबी रात को नींद में अकसर इसका नाम लेकर चौंक पड़ता था और ऊल-जलूल बड़बड़ाया करता था। इसकी संगत के कारण बेबी हाथ से बिलकुल निकल गया था, यहां तक कि अपने डैडी का भी कहा बिलकुल नहीं सुनता था, उल्टे बात-बात में उन्हें जवाब देता था और उनसे उलझता था।

सरकारी वकील : अदालत नोट करे कि इसने एक नाबालिग बच्चे को गुमराह किया और अपने डैडी के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए उकसाया। माई लार्ड ! यह एक बहुत ही संगीन जुर्म है।

नारद : भगवद्भक्ति को आप जुर्म कहते है। नारायण ! नारायण !

सरकारी वकील : माई लार्ड ! इस शैतान की आंत ने साइंस के मामूली करिश्मे दिखाकर लोगों की भावनाओं के साथ खिलवाड़ किया।

नारद : यह झूठ है, माई लार्ड ! मेरे अजीज दोस्त अपने इस आरोप के पक्ष मे क्या कोई सबूत दे सकते हैं ? मैं कहता हूं वह तो भगवान की लीला थी ?

सरकारी वकील : हां, हां, क्यों नही ? बिल्ली के बच्चों के कुम्हार के जलते अवे में से जिंदा निकलने वाली घटना को ही ले लें। 'फायर प्रूफ सोल्यूशन' लगाकर बिल्ली के बच्चों को इन जनाब ने पहले से ही कुम्हार के अवे में छिपा छोड़ा था। फिर आग में से उनका जिंदा निकल आना तो 'नेचरल' ही था। इसमें 'लीला' कहां से आ घुसी ?

नारद : नारायण ! नारायण ! फिर तो आप प्रह्लाद के आग में से सही सलामत निकल आने, लेकिन उसकी आंटी 'होलिका' के जल जाने वाली घटना को भी शायद 'विज्ञान की करामात' ही कहेंगे ?

सरकाली वकील : 'एक्जैक्टली'। दोनों 'सिमिलर केस' हैं। सिर्फ इतना फर्क है कि बिल्ली वाले केस में तो 'फायर प्रूफ सोल्यूशन' 'यूज' किया गया था। लेकिन प्रह्लाद के केस में 'फायर प्रूफ' कपड़े।

नारद : नारायण ! नारायण ! प्रभु, आज तो हम घोर नास्तिकों में आ फंसे।

सरकारी वकील : माई लार्ड, अब मैं किंग हिरण्यकश्यप के चीफ महावत मिस्टर हस्तीदमन को गवाह के रूप में पेश करूंगा।

[एक लंबा-चौड़ा आदमी, हाथ भर का अंकुश लिए, आकर गवाह के कटघरे में खड़ा हो जाता है।]

जज : मिस्टर हस्तीदमन, तुम मुलजिम को जानतें हो ?

हस्तीदमन : हुजूर, आप जानने की बात कहते हैं, मैं इसका सताया हुआ हूं।

जज : पहेलियां न बुझाओ, पूरा किस्सा बयान करो।

हस्तीदमन : हुजूर, राजकुमार प्रह्लाद राज्य के खिलाफ खुल्लमखुल्ला विद्रोह पर उतर आया था। सो, महाराज ने मुझे बुलाकर हुक्म दिया कि सुबह होते ही मैं उस गद्दार को खूनी हाथी के आगे डाल दूं।

जज : वेरी इंटेरेस्टिंग केस। फिर क्या हुआ, मिस्टर एच० डी० ?

हस्तीदमन : हुजूर, न जाने इसने हाथी को क्या खिला दिया कि जो हाथी आदमी की गंध पाते ही खूंखार हो उठता था, वह एक ही रात में बिलकुल बदल गया। जब मैंने बेबी प्रह्लाद को उसके आगे डाला, तब उसने उसे पैरों के नीचे न कुचलकर सूंड से उठाकर अपने मस्तक पर बैठा लिया। हुजूर, मैं तो बेमौत मारा गया। गवर्नमेंट सर्विस हाथ से गई सो गई, तीन महीने की जेल अलग काटनी पड़ी।

सरकारी वकील : माई लार्ड, अब मैं अपने अगले गवाह, किंग हिरण्यकश्यप के हैड जल्लाद चरमसुख को पेश करता हूं।

[चरमसुख उपस्थित होता है।]

जज : तुम इस मुकदमे पर क्या रोशनी डाल सकते हो ?

चरमसुख : हुजूर, जब इसकी साजिश से प्रह्लाद खूनी हाथी से भी बच गया, तो मरहूम बादशाह ने मुझे तलब किया और हुक्म दिया कि उस आफत के परकाले प्रह्लाद को मैं पहाड़ से गिराकर मार डालूं।

जज : तो तुमने राजकीय आदेश का पालन किया ?

चरमसुख : क्यों न करता, सरकार ? जिसका नमक खाता हूं, उसका हुक्म भी बजाता हूं। लेकिन, हुजूर, मैं तो ताज्जुब में रह गया [illegible] इस संपोले को इतने ऊंचे से गिराया, फिर भी, उसके [illegible] खरोंच तक नहीं आई।

[illegible]) ऐसा कैसे हो सकता है। नामुमकिन ! जरूर तुम्हारा भी हाथ रहा होगा, मिस्टर चरमसुख ?

[illegible], हुजूर मैं तो बेकसूर हूं। सब शरारत (विष्णु की ओर

इशारा करके) इसी की है। इसने जासूसों के जरिए पूरी टोह पा ली और पहले से ही अपने एजेंटों की मदद से पहाड़ के नीचे 'डनलपपिलो' के गद्दे बिछवा दिए।

सरकारी वकील : माई लार्ड, मुलजिम के अपराधों की सूची में यह एक जुर्म और बढ़ा। और हुजूर, मुझे पता चला है कि जिस 'डीलर' से इसने 'डनलपपिलो' के गद्दे किराए पर मंगाए थे, वह भी अपने भुगतान के लिए इस पर नालिश करने वाला है।

नारद : नारायण ! नारायण !

जज : (**सरकारी वकील से**) हमने इन सभी गवाहों के बयान सुने; इन बयानों से यह तो साबित हो गया कि मुलजिम पक्का षड्यंत्रकारी और गिरोहबंद है। लेकिन इसके सबसे सगीन जुर्म यानी हिरण्यकश्यप के मर्डर का चश्मदीद कोई गवाह अभी तक पेश नहीं हुआ।

सरकारी वकील : माई लार्ड, अब मैं आखिरी गवाह साक्ष्यजीवी को पेश करूंगा, वह इस मर्डर का चश्मदीद गवाह है।

जज : साक्ष्यजीवी को हाजिर किया जाए।

चपरासी : (**आवाज देकर**) साक्ष्यजीवी हाजिर है ?

[साक्ष्यजीवी आता है।]

जज : (**साक्ष्यजीवी से**) तुमने मुलजिम को मर्डर करते अपनी आंखों से देखा है ?

साक्ष्यजीवी : हां, हुजूर, अभी तक वह भयानक दृश्य जैसे मेरी आंखों के आगे घूम रहा है।

जज : पूरा किस्सा सही सही बयान करो।

साक्ष्यजीवी : हुजूर, मैंने देखा कि बेबी प्रह्लाद खंभे से बंधा हुआ था और महाराज नंगी तलवार हाथ में लिए उससे कह रहे थे कि 'आज तू मेरे हाथ से नहीं बच सकेगा। बुला ले अपने हिमायती को।'

जज : लेकिन तुम उस समय राजमहल में क्या करने गए थे ?

साक्ष्यजीवी : हुजूर, मैं नगर कमेटी के बिजली विभाग में काम करता हूं। किंग के महल सेक्रेटरी ने रिपोर्ट की थी कि राजमहल की बिजली फेल हो गई है, मैं वहां उसी सिलसिले में गया था।

जज : दिन के समय गए कि रात के ?

साक्ष्यजीवी : हुजूर, उस समय न दिन था, न रात।

जज : यह क्या मजाक है।

सरकारी वकील : *माई लार्ड, गवाह ठीक ही कहता है। पुलिस की भी रिपोर्ट है कि जिस समय मर्डर हुआ, वह झुटपुटे का टाइम था।*

जज : हूं...(**साक्ष्यजीवी से**) आगे बयान करो।

साक्ष्यजीवी : हुजूर, महाराज का इतना कहना ही था कि बड़े जोर का धमाका हुआ। ऐसा लगा जैसे खंभा फट गया हो। चारों ओर धुंआ ही धुंआ भर गया, मानो पुलिस ने अश्रुगैस छोड़ दी हो। मेरी तो आंखें बंद हो गई, हुजूर ! जब धुंआ कुछ हल्का हुआ तब मैंने देखा...

जज : क्या देखा तुमने ?

साक्ष्यजीवी : मैंने देखा, हुजूर, कि मुलजिम महल की देहरी पर बैठा हिरण्यकश्यप को अपनी जांघों पर रखे उसका पेट चाक कर रहा था।

जज : उसके हाथ में क्या हथियार था।

साक्ष्यजीवी : हुजूर, जिस तरह शिवाजी ने बघनखे से अफजल खां की आंतें खींच ली थीं, उसी तरह की कोई चीज इसके पंजों में थी।

सरकारी वकील : माई लार्ड, साक्ष्यजीवी के बयान से साफ जाहिर है कि मुलजिम ने ही हिरण्यकश्यप का मर्डर किया है। मैं अदालत से अपील करता हूं कि 'इंडियन पैनल कोड' की दफा ३०२ के अधीन मुलजिम को फांसी की सजा दी जाए।

नारद : नारायण ! नारायण ! प्रभु, इस पापी को तो घोर नरक में डालना।

जज : (**मेज पर हथौड़ी मारकर**) आर्डर ! आर्डर ! (**विष्णु से**) तुम्हें अपनी सफाई में कुछ कहना है ?

नारद : नारायण ! नारायण ! कहना बहुत कुछ है। सरकारी गवाहों के बयान से यह साफ जाहिर है कि मर्डर न दिन में हुआ, न रात को। न महल के अंदर हुआ न बाहर। न आदमी ने किया, न जानवर ने। फिर आखिरी गवाह का नाम ही यह जाहिर करता है कि इसकी जीविका ही झूठी गवाहियां देना है। इसके अलावा, माई लार्ड, जिस हथियार से मर्डर हुआ बताया जाता है वह भी पुलिस ने बरामद नहीं किया। और सबसे आखिरी बात यह है कि जिस हस्ती के खिलाफ यह इलजाम लगाया गया है वह इंसानी इंसाफ से परे है। बस, मुझे यही कहना है।

जज : फैसला हो गया। गले में रस्सी का फंदा डालकर लटकाए रखा जाए—जब तक दम न निकल जाए।

नारद : नारायण ! नारायण !

[भगवान विष्णु खटाक से शेर का सिर अपने कंधों से उतारकर फेंक देते हैं। एक लड़का उनकी जगह लाल आंखें किए खड़ा दिखाई देता है।]

विष्णु : (रोनी सी आवाज में) पर मेरा दम तो अभी निकला जा रहा है। मुझसे तो कहा गया था कि बस पांच मिनट खड़े रहना है। यह अदालत की कार्यवाही क्या हो गई, थर्ड वर्ल्ड वार हो गई। जाओ, मैं नही बनता भगवान-वगवान !

[कटघरे से निकलकर भाग लेता है। सब खड़े होकर चिल्लाते हैं : अरे, पकड़ो, पकड़ो ! नारद जी की 'नारायण, नारायण' भी सुनाई पड़ती है।]

पर्दा गिरता है

(१९७१)

वीर अभिमन्यु

□ डा० चंद्रप्रकाश वर्मा

पात्र

युधिष्ठिर	दुर्योधन
भीम	कर्ण
अभिमन्यु	अश्वत्थामा
लक्ष्मण	शल्य

[कुरुक्षेत्र में धर्मराज युधिष्ठिर का शिविर। शिविर पर राजपताका फहरा रही है। प्रहरीगंण सशस्त्र पहरा दे रहे हैं। शिविर में आसन पर चिंतामग्न युधिष्ठिर बैठे हुए हैं। पास ही भीम, नकुल, सहदेव अपने अपने आसनों पर आसीन हैं। अन्य योद्धागण गंभीर मुद्रा में अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित खड़े हुए हैं।]

युधिष्ठिर : (**गंभीर स्वर में**) अब क्या होगा ? सूचना मिली है कि आचार्य द्रोण ने अजेय चक्रव्यूह की रचना की है। कुटिल दुर्योधन ने उनकी क्रोधाग्नि को बहुत भड़का दिया है। युद्ध क्या है, भाग्य का खेल है।

भीम : दादा ! जब तक अर्जुन के करों में गांडीव और भीम के हाथों में गदा है, तब तक आप चिंता न करें।

युधिष्ठिर : ठीक है भीम ! पर आज तो मुझे एक ही भुजा से लड़ना है। सेना के मुख्य भाग से दूर अर्जुन का आज रण में शत्रु से सामना है। चक्रव्यूह भेदन का रहस्य अर्जुन के अतिरिक्त अन्य किसी को ज्ञात नहीं। तुम्हारी गदा पर्वत फोड़ सकती है, पर चक्रव्यूह को वह कैसे तोड़ेगी ? कूटनीति से रचा जाल केवल बल से तो नहीं टूटता। विष ही विष की औषधि है। अब क्या होगा ? चक्रव्यूह कैसे टूटेगा ?

['अवश्य टूटेगा, धर्मराज ! चक्रव्यूह अवश्य टूटेगा'—कहते हुए अभिमन्यु का प्रवेश।]

अभिमन्यु : पार्थ नहीं तो क्या हुआ, पार्थ का पुत्र तो सेवा में उपस्थित है। आज्ञा दीजिए। बचपन में मैंने खेल ही खेल में अनेक व्यूह तोड़े हैं। एक और परीक्षा सही। आज अभिमन्यु पांडव सेना के अग्रभाग में होगा।

युधिष्ठिर : (स्नेह से अभिमन्यु को देखते हुए) भीम देखा ! बिलकुल अर्जुन की तसवीर है। यह अभिमन्यु नहीं, अर्जुन का ही तारुण्य बोल रहा है। पर बेटे ! तू भी क्या कर सकेगा। तू वीर है माना, पर आज वीरता मात्र से तो काम न चलेगा। आज तो व्यूह तीरों से नहीं किसी दूसरी तदबीर से ही टूटेगा। तुझे चक्रव्यूह तोड़ने का भेद कहां मालूम है ?

अभिमन्यु : मालूम है धर्मराज ! आप चिंता छोड़ें। मैं इस तरह सरलता से गुरु द्रोण के चक्रव्यूह में धंस जाऊंगा, जैसे मतवाला हाथी कमल वन में धंस जाता है।

भीम : धन्य, अभिमन्यु, धन्य ! ऐसे ही बालक तो देश का नाम उज्ज्वल करते हैं।

युधिष्ठिर : पर अभिमन्यु कहां तू और कहां चक्रव्यूह। तेरे पिता को छोड़ इस कुटिल व्यूह को तोड़ने में कोई समर्थ नहीं।

अभिमन्यु : धर्मराज ! विश्वास तो कीजिए। अभिमन्यु की परीक्षा तो आज लीजिए। मैं वह रहस्य प्रथम बार प्रकट कर रहा हूं। मैं चक्रव्यूह भेदन का रहस्य जानता हूं।

युधिष्ठिर : (आश्चर्य से) सो कैसे, बेटे ?

अभिमन्यु : मेरे जन्म से पूर्व की बात है, धर्मराज ! मैं माता के गर्भ में था। माताजी का मन बहलाने के लिए पिताजी उन्हें चक्रव्यूह तोड़ने का भेद बतला रहे थे। माताजी ने शायद उसे सुना-अनसुना कर दिया, पर मैं भीतर गर्भ में पिताजी की बातें ध्यान से सुनता रहा। अर्जुन का पुत्र युद्धविद्या जन्म के बाद में नहीं, पेट से ही सीखकर आया है।

युधिष्ठिर : (सराहना से) आश्चर्य है ! तेरी कितनी विलक्षण बुद्धि है, अभिमन्यु ! अब मेरी चिंता कुछ मिटी। पांडव दल में कोई तो ऐसा है जो आज के रण का जवाब दे सकेगा। वीरता में तू अपने पिता से भी दो हाथ आगे रहेगा—मेरा आशीर्वाद है।

अभिमन्यु : पर एक बात अवश्य है, धर्मराज। मेरा ज्ञान कुछ अधूरा है। पिताजी तो रोचक ढंग से चक्रव्यूह का रहस्य माताजी को समझाते रहे, पर इसी बीच वह सो गईं। उन्हें सोया जान पिताजी ने भी अपनी बात बंद कर दी। जिसे वह सुना रहे थे वह सो गई और जो सुन रहा था, उसका पिताजी को ध्यान न था। मैं चक्रव्यूह में प्रवेश तो कर गया पर उसमें फंसा ही रह

गया और फिर पिताजी भी सो गए। उस दिन से आज तक बस चक्रव्यूह में ही फंसा हूं। कभी अवसर ही न मिला कि पिताजी से कुछ अधिक ज्ञान पाता।

युधिष्ठिर : अरे! यह फिर दूसरी समस्या सामने आ गई।

अभिमन्यु : यह भी कोई समस्या है, धर्मराज। पहले मैं व्यूह तोड़ दूंगा। फिर पीछे पीछे चाचा भीम, नकुल, सहदेव और अन्य योद्धा कौरव दल में धंस पड़ेंगे। हम सब साथ मिलकर ऐसा प्रहार शत्रु पर करेंगे कि कौरव दल आंधी में पत्ते सा उड़ जाएगा। क्यों न चाचा, भीम!

भीम : बहुत ठीक! बहुत ठीक! अभिमन्यु! तुम व्यूह को तोड़ भर देना। फिर तो मैं गाजर-मूली की तरह शत्रु को काटकर रख दूगा। तीर वालों की बात तीर वाले जानें। मेरी गदा तो वज्र सी टूटकर दुश्मन को यमलोक पहुंचा देती है।

युधिष्ठिर : ठीक है, अभिमन्यु! आज तुम्हारे ही हाथ हमारी लाज है।

अभिमन्यु : धर्मराज! चिंता न करें। पिताजी के गांडीव के लिए तो सारा भूमंडल पड़ा है। इस तुच्छ चक्रव्यूह को तो मैं ही आज खंडित कर डालूंगा।

भीम : दादा! हमारी भुजाएं आज वीर अभिमन्यु का कवच बन जाएंगी।

[बाहर से रणभेरियों का स्वर सुनाई देता है।]

युधिष्ठिर : (**गहरी सांस भरकर**) अभिमन्यु! युद्ध की बेला आ पहुंची। जाओ, सुभद्रा और उत्तरा से भेंट कर आओ।

अभिमन्यु : माता का आशीर्वाद तो हर दिन लेकर ही आता हूं। वह माथे पर तिलक लगा, हर दिन विदा देती हैं। उत्तरा आरती उतारती है। आज तो मां माथे पर बहुत बड़ा तिलक लगाएंगी और उत्तरा की आरती के दीप भी अधिक जलेंगे। पर वाह! रोज रोज तिलक-आरती करा संध्या में युद्ध से सकुशल लौट आना क्षत्रिय को शोभा नहीं देता। क्षत्रिय की शोभा तो बस मारने और मर जाने में ही है। जो दूसरों के शीश काटने का संकल्प करता है, उसे अपना शीश भी तो नहीं गिनना चाहिए। आज दादा कुछ कर दिखाने की इच्छा है। आशीर्वाद दीजिए।

युधिष्ठिर : (**भरे कंठ से**) बेटा अभिमन्यु! यशस्वी बनो। (**भीम से**) भाई भीम! आज पांडवों की जीवन मणि तुम्हें सौंप रहा हूं। आज

अर्जुन यहां नहीं है। पार्थ की आंखों का तारा आज तुम्हारी पलकों की छांह में रहे—बस यही चाहता हूं।

भीम निश्चित रहें, धर्मराज ! हम आज चक्रव्यूह को भंग कर विजयी बनेंगे।

['धर्मराज की जय' का स्वर]

दूसरा दृश्य

[कुरुक्षेत्र की समरभूमि में कौरव सेना चक्रव्यूह बनाकर खड़ी हुई है। कौरव योद्धाओं के मुख विजय की आशा से चमक रहे हैं। एक ओर तेजी से रथ दौड़ाते हुए अभिमन्यु का प्रवेश। पीछे पीछे भीम और पांडव योद्धाओं के रथ हैं। कोलाहल मचता है। बाणवर्षा आरंभ होती है। अभिमन्यु के कुशल शर संचालन से चक्रव्यूह का अग्रभाग छिन्न-भिन्न हो जाता है। अभिमन्यु का रथ कौरव सेना मे धंस जाता है। अभिमन्यु का मार्ग रोकते हुए दुर्योधन के पुत्र लक्ष्मण का रथ आगे आता है।]

लक्ष्मण : बस ! बस अभिमन्यु ! बहुत वीरता तुम दिखला चुके। निरीह कुरु सैनिक नही, अब दुर्योधन सुत लक्ष्मण सामने है। संभल जाओ। रथ पीछे ले जाओ। आग से मत खेलो।

अभिमन्यु : आग मे खेलना ही क्षत्रियों का जीवन है। तुम्हें प्राणों का मोह है तो जाओ, प्राण दान देता हूं। भाग जाओ।

लक्ष्मण : अभी दूध के दांत भी तो नही टूटे हैं, मेरे शूरवीर ! यह कुरुक्षेत्र है, बच्चों का खिलवाड़ नहीं। चक्रव्यूह भंग करने की बड़ी कीमत चुकानी होगी। लोहे के चने मत चबाओ।

अभिमन्यु : इन तीरों से तो आज वज्र को भी खंड खंड करने की इच्छा है। तीर का उत्तर बातों म नही, तीर से ही दो। चक्रव्यूह तो कभी का खडित हो चुका। सुन रहे हो, पांडव सेना का हर्षनाद और चाचा भीम की गर्जना।

लक्ष्मण : गांडीवधारी का बेटा भी आज अपनी धनुही को गांडीव मान बैठा है, यही तो अचरज है।

अभिमन्यु : हा, मेरे हाथों में आज एक छोटा गांडीव ही आ टिका है, बचा

[अभिमन्यु शर छोड़ता है। लक्ष्मण भी आक्रमण का उत्तर तीर छोड़कर देता है। दोनों मे युद्ध होता है। अंत में अभिमन्यु का तीक्ष्ण शर लक्ष्मण के शीश को

काट धड़ से अलग कर देता है। दुर्योधन यह दृश्य देखकर दुख से चीत्कार कर उठता है। अभिमन्यु का रथ बिजली की गति से चक्रव्यूह के भीतरी और अंतिम द्वार की ओर बढ़ जाता है।]

दुर्योधन : (**उच्च स्वर से पुकार कर**) कौरव वीरो ! आओ ! सब आओ। गुरु द्रोणाचार्य से कहो, वीर कर्ण से कहो कि अभिमन्यु ने मेरे पुत्र को सदा को रणभूमि में सुला दिया। धर्म या अधर्म की चिंता मत करो। जैसे भी हो अभिमन्यु का वध करो।

[कौरव सेना के सात महारथी एकत्र होते हैं। सब एक साथ मिलकर अभिमन्यु पर आक्रमण करते हैं। अभिमन्यु का मुकुट तिरछा हो गया है। अस्ताचल-गामी सूर्य की किरणों से वह दमक रहा है। उसका शरीर रक्तरंजित है। माथे पर श्रमकण झलक रहे हैं। केश अस्त-व्यस्त हैं। कुंडल शर संचालन में द्रुत गति से हिल रहे हैं। युद्ध-भूमि से उड़ी धूल के बीच मानो बिजली चमक रही है।]

कर्ण : अद्भुत शौर्य है। ऐसी वीरता तो इस अवस्था पर देखी-सुनी नहीं गई। क्यों न हो, अर्जुन का पुत्र है।

अश्वत्थामा : अभिमन्यु नहीं दिखता, एक बिजली भर चमक रही है। कब तीर लेता है, कब छोड़ता है, कुछ समझ में नहीं आता। बस सैनिकों का चीत्कार सुनाई देता है।

शल्य : अरे ! आज तो सर्वनाश कर रहा है यह दुधमुंहा बच्चा।

दुर्योधन : (**अधीरता से**) तुम सब प्रशंसा ही करते रहोगे या इस काल की आंधी को रोकोगे भी।

शल्य : (**व्यंग्य से**) बात तो ठीक कह रहे हो, दुर्योधन ! पर प्रश्न तो यही है कि इस आंधी को रोके कौन ? आगे आओ। तनिक इस आंधी का थपेड़ा तो देखो। कुरुपति ! यह पांसे का खेल नहीं है।

दुर्योधन : समय नष्ट मत करो। सब मिलकर अभिमन्यु पर आक्रमण करो।

[सात महारथी मिलकर अभिमन्यु पर आक्रमण करते हैं। भीषण युद्ध छिड़ता है। अभिमन्यु शत्रुओं को आहत करता हुआ स्वयं लहू-लुहान हो जाता है। रथ

टूट जाता है। सारथी और घोड़े नष्ट हो जाते हैं। धनुष-डोर कट जाती है। कृपाण भी दो टूक होती है।]

अभिमन्यु : एक बालक से सात महारथी जूझ रहे हैं। यह अधर्म है।

दुर्योधन : धर्म-अधर्म की बात तो तू धर्मराज से पूछना जिन्होंने एक अबोध बालक को काल के मुख में झोंक दिया। कहां है अर्जुन? कहां है भीम? कृष्ण के सुदर्शनचक्र को क्या हो गया?

अभिमन्यु : चुप रहो कुरुपति! वह समय निकट है जब गांडीव की ज्वाला में कौरव सेना पतंगों सी भस्म हो जाएगी। जयद्रथ ने व्यूह द्वार पर ही चाचा भीम को रोक लिया। नहीं तो आज तुम्हारे पापों का घड़ा फूट जाता। मुझे धनुष-वाण दे दो। नई तलवार दे दो। फिर लड़ो। देखूं किसमें कितना जीवट है।

दुर्योधन : (हंसते हुए) अभिमन्यु भीख मत मांग। युद्ध में मौत मिलती है, भीख नहीं। अब तेरी गिनती की सांसें हैं।

अभिमन्यु : **(रथ का पहिया हाथ में उठाए अभिमन्यु रथ से कूदकर शत्रुओं पर टूट पड़ता है)** बचो! बचो! तुम्हारे अधर्म का दंड गांडीव देगा। इस रथ के पहिए से ही जीवन की अंतिम सांस तक तुम सबसे युद्ध करूंगा।

[अभिमन्यु रथचक्र से शत्रुओं से लड़ता है। अंत में चक्र भी टूट जाता है। उसी क्षण कौरव सेना के सात महारथी अभिमन्यु को घेरकर उसका वध कर देते हैं।]

कर्ण : दुर्योधन! अभिमन्यु तो मारा गया, पर धन्य है ऐसी वीरता। जीवित रहता तो अर्जुन को मात करता। कुरुक्षेत्र में अब कल से युद्ध का रूप क्या होगा, इसी विचार में डूब रहा हूं।

दुर्योधन : कैसा विचार?

कर्ण : अर्जुन मेरा प्रतिद्वंदी है। मै उसके रथ की गति को भरसक रोकूंगा। पर पुत्रवध का बदला वह लेगा, अवश्य लेगा। अभिमन्यु के वध का मूल्य क्या होगा, कह नहीं सकता। पर इसकी कीमत मैं भी बन सकता हूं और तुम भी।

दुर्योधन : कल की बात कल देखी जाएगी। कर्ण! यह तो हमारी विजय का क्षण है, हर्ष मनाओ।

[दुर्योधन विजय शंख फूंकता है।]

पर्दा गिरता है

'बालभारती', म० प्र० से

हड़ताल

□ विष्णु प्रभाकर

पात्र

सुनील	शुभ्रा
मनु	हेडमास्टर
इरा	राजेश
माया (डाइरेक्टर)	नरेश

सुधीर कुमार

[मंच पर धीरे धीरे प्रकाश उभरता है और उसी के साथ नारों की तेज होती हुई आवाज पास आने लगती है। दूसरे ही क्षण दस-पंद्रह बच्चों की टोली अलग वेश-भूषा में हाथ में प्ले-कार्ड लिए हुए और नारे लगाते हुए प्रवेश करती है। प्ले-कार्डों पर उनकी मांगें लिखी हुई हैं। सबके आगे एक बहुत बड़ा प्ले-कार्ड लिए हुए मनु और इरा हैं।]

मनु : 'जो रोजी-रोटी दे न सके, वह सरकार निकम्मी है!' 'यह अन्याय अब और नहीं चलेगा!' 'हमारी मांगें स्वीकार करो, नहीं तो गद्दी छोड़ दो!'

इरा : हमारी पहली मांग है कि परीक्षाएं लेना बंद कर देना चाहिए।

शुभ्रा : हमारी दूसरी मांग है कि स्कूलों में समय पर पहुंचने की बंदिश नहीं होनी चाहिए।

नरेश : हमारी तीसरी मांग है कि हमको कोर्स से बाहर की किताबें स्कूल में पढ़ने की आज्ञा होनी चाहिए।

राजेश : हमारी चौथी मांग है कि हमें हर पीरियड में खाने के लिए टाफी मिलनी चाहिए।

मनु : और हमारी पांचवीं मांग है कि बारी बारी से हर बच्चे को स्कूल का हेडमास्टर और मैनेजर बनाना चाहिए।

शुभ्रा : हमारी मांगें मंजूर करो।

सब : जब तक हमारी मांगें मंजूर नहीं होंगी, हम क्लास में नहीं जाएंगे।

[दोनों कमरों के आगे पुलिस के कई सिपाही खड़े हुए हैं। थानेदार के वेश में सुनील थोड़ा आगे बढ़ता है।]

थानेदार : यह हड़ताल गैर कानूनी है। मेरा हुक्म है कि सब बच्चे अपनी अपनी कक्षाओं में जाएं। मैं तीन मिनट का समय देता हूं।

मनु : (आगे बढ़कर) हम क्लासों में नहीं जाएंगे। पहले हमारी मांगें मंजूर करो।

इरा : हमें हेडमास्टर साहब और डाइरेक्टर साहब से मिलने दो।

थानेदार : तुम लोग अंदर नहीं जा सकते।

[हेडमास्टर साहब के रूप में विश्वास का प्रवेश।]

हेडमास्टर : मैं स्वयं आ गया हूं। हड़ताली विद्यार्थियो, तुम्हारी मांगों पर हम सबने बहुत विचार किया, लेकिन हम उन्हें मंजूर नहीं कर सकते। तुम्हें किसी ने गुमराह किया है। ये मांगें तुम्हारे हित में नहीं हैं। कोई भी समझदार आदमी इनको मंजूर नहीं कर सकता। मैं तुम्हें हुक्म देता हूं—तुम अब अपनी अपनी कक्षा में जाओ।

सब विद्यार्थी : नहीं जाएंगे, हमारी मांगें मंजूर करो।

हेडमास्टर : शोर मत करो। या तो कक्षाओं में जाओ या फिर स्कूल से बाहर निकल जाओ। तुम नहीं निकले, तो पुलिस निकाल देगी।

सब : हम नहीं जाएंगे ! हमारी मांगें मंजूर करो !

हेडमास्टर : (चीखकर) थानेदार, देखते क्या हो ! इन सबको बाहर भगा दो।

[पुलिस डंडे घुमाती हुई आगे बढ़ती है सब बच्चे वहीं बैठ जाते हैं।]

सब : हम नहीं जाएंगे ! हम भूख हड़ताल करेंगे !

हेडमास्टर : ठीक है, तुम भूख हड़ताल करो, मैं खाना खाने जाता हूं।

राजेश : अरे बाप रे, मुझे अब भूख-हड़ताल करनी पड़ेगी और हेडमास्टर साहब खाना खाएंगे !

मनु : तभी तो हमारी मांगें मंजूर होंगी। तुम सब सुनो, अब यहां राजेश और नरेश दोनों भूख हड़ताल करेंगे। बाकी सब लोग अपने अपने घर जाएं।

[सब गोल कोठी के पृष्ठ भाग में चले जाते है। नारों की आवाज दूर होती है। राजेश और नरेश एक-दूसरे की ओर देखते हैं।]

राजेश : बाप रे, सिर मुंड़ाते ही ओले पड़े ! मेरी तो जान निकल जाएगी। यह थानेदार का बच्चा भी यहां से क्यों नहीं जाता ?

नरेश : (मुसकराकर) यह इसलिए नहीं जाता कि तुम जेब से मूंगफली निकालकर खाना न शुरू कर दो ! लेकिन डरो नहीं, उन्हें जल्दी ही हमारी मांगें पूरी करनी होंगी।

राजेश : मुझे तो बड़ा डर लगता है। हेडमास्टर साहब बड़े सख्त हैं। खुद तो बैठे खीर-पूरी खा रहे होंगे। (चटखारा लेकर) हेडमास्टर साहब की खीर होती बहुत बढ़िया है। हेडमास्टरनी जी खूब मेवा डालती हैं।

नरेश : (हंसकर) तुम तो अव्वल नंबर के पेटू हो। इतनी जल्दी फिसल गए, तो हेडमास्टर साहब हमारे सिर पर सवार हो जाएंगे। जरा हिम्मत करो, फिर देखो वह कैसे घुटने टेकते हैं !

राजेश : पर उनके घुटने टेकने तक मेरे तो घुटने टूट जाएंगे। मुझे बड़े जोर की भूख लगी है।

[तभी बाहर से फेरीवालों की आवाजें उठती हुई पास आती हैं।]

एक आवाज : केला हरी छाल का, बंबई का, शहद सा मीठा !

दूसरी आवाज : मूंगफली करारी, भाड़ में भुनी।

तीसरी आवाज : चाट ले लो आलू की, संतरे की, पपीते की, चाट ले लो !

[जैसे जैसे आवाजें आती हैं, राजेश जीभ चाटता है और पेट पर हाथ फेरता है।]

राजेश : यार, मेरे पेट में तो चूहे कूदने लगे हैं। आधी छुट्टी का वक्त हो गया। सब खोमचेवाले आ गए।

नरेश : चुप रहो, कानों में रूई ठूंस लो, आंखों पर रूमाल बांध लो, मुंह में कपड़ा दे लो।

राजेश : यार, यह सब तो कर लूंगा, पर नाक का क्या करूं ! आह, कैसी प्यारी प्यारी खुशबू आ रही है !

नरेश : देखो, राजेश, तुम्हें वही करना होगा जो मनु दादा ने कहा है, नहीं तो मैं अभी जाकर रिपोर्ट कर देता हूं।

राजेश : अच्छा अच्छा, मैं वही करता हूं। (कानों में रूई ठूंसता है। आंखों पर कपड़ा बांधता है, मुंह में रूमाल दबाता है और उंगलियों से नाक बंद करता है। फिर छींक पड़ता है।) यार नरेश, क्यों न हम बाहर हो आएं। किसी को पता नहीं लगेगा।

नरेश : ओफ्फो, भाई ! तुमने तो हद कर दी। मैं कहता हूं मनु दादा से कोई बात नहीं छिप सकती। और फिर यह तो हमारे

अधिकारों का सवाल है। हमने हिम्मत हार दी, तो कुछ नहीं होगा।

[डाइरेक्टर के वेश में माया का मंच पर प्रवेश]

डाइरेक्टर : अच्छा तो आप लोगों ने भूख हड़ताल कर दी है। ठीक है। ठीक है। वैसे मैंने तुम्हारे लिए चाय और बरफी का इंतजाम किया है। तुम चाहो तो...

नरेश : हमारी मांगें मंजूर करो। तब तक हम कुछ नहीं खाएंगे। तुम्हारी बरफी की ओर देखेंगे भी नहीं।

राजेश : नहीं नहीं, यार, देखने में कोई हर्ज नहीं है। खाएंगे तभी, जब हमारी मांगें मंजूर होंगी। आप बहुत अच्छे हैं, हमारी मांगें मान लीजिए, हम आपकी चाय और बरफी मंजूर कर लेंगे।

डाइरेक्टर : नहीं, आपकी मांगें मंजूर नहीं हो सकतीं। हम किसी की धमकी में नहीं आ सकते।

राजेश : आप बहुत सख्त हैं, लेकिन हम उतने सख्त नहीं हैं। हम आपकी मांगें मंजूर कर सकते हैं।

नरेश : (चीखकर) क्या करते हो? तुमको अपने नेता का बिलकुल खयाल नहीं। तुम निरे पेटू हो। जाना है, तो जाओ, मैं नहीं जाऊंगा।

राजेश : तुम नहीं जाओगे, तो मैं भी कैसे जा सकता हूं? अब तो मरना ही होगा। हे भगवान, क्या तू मेरे मुंह में चुपचाप टाफी नहीं भेज सकता!

डाइरेक्टर : भगवान कुछ नहीं कर सकता, करना हमारे हाथ में है। तुमको जरूरत हो तो आ जाना, नहीं तो थानेदार तुमको हवालात में बंद कर देगा।

[चले जाते हैं]

राजेश : बाप रे, हवालात में बंद होना होगा। वहां तो सुना है रात को खटमल और पिस्सू काटते हैं, मच्छर भिनभिनाते हैं और जमीन पर सोना पड़ता है।

नरेश : और सूखी रोटी चबानी पड़ती है।

राजेश : सूखी रोटी? कोई चिंता नहीं, कोई चिंता नहीं, मेरे दांत बहुत मजबूत हैं। मुझे जल्दी वहां ले चलो। (थानेदार से) थानेदार साहब, आप हमें हवालात कब ले चलोगे?

थानेदार : मैं तुम्हें हवालात नहीं ले जाऊंगा। तुम्हें यहीं भूखों मरना होगा।

राजेश : बाप रे, यह तो इन्होंने भी हड़ताल कर दी ! कैसे बेमौके हड़ताल की है ! अब क्या होगा, नरेश भैया ?

नरेश : होगा क्या, हमारी जीत होगी !

राजेश : लेकिन मेरे मरने के बाद ।

नरेश : तो क्या फिक्र है ? तुम शहीद बन जाओगे । सब लोग तुम्हारे गीत गाएंगे, तुम्हारे बारे में लेख लिखेंगे, तुम्हारी कहानी कहेंगे ।

राजेश : और टाफी खाएंगे, मूंगफली खाएंगे, फलों की चाट खाएंगे, मुरमुरों की बरफी खाएंगे । नहीं, मैं ऐसा शहीद नहीं बनूंगा ।

[अंदर से हेडमास्टर और डाइरेक्टर बाहर आते हैं ।]

डाइरेक्टर : अपने नेता को हमारे पास भेजो । अगर वह समझौता करना चाहें, तो हम तैयार हैं । लेकिन हमारी भी कुछ मांगें तुम्हें स्वीकार करनी होंगी ।

राजेश : हमें मंजूर है, मंजूर है ।

नरेश : चुप रहो, हम कुछ मंजूर नहीं कर सकते । हमारे नेता मनु दादा और इरा दीदी हैं ।

हेडमास्टर : तो उन दोनों को हमारे पास भेजो ।

राजेश : मैं अभी बुलाता हूं । (**भागता हुआ पृष्ठभूमि में जाता है**)

डाइरेक्टर : राजेश को भूख हड़ताल किए कई घंटे हो गए । न जाने कैसे भूखा रह सका ! मुझे उस पर बड़ी दया आती है । इसीलिए मैं समझौता करने को तैयार हुआ हूं ।

हेडमास्टर : राजेश केवल नरेश के कारण ही इतनी देर भूखा रह सका है ।

डाइरेक्टर : रह तो सका है न, यह बहुत बड़ी बात है ।

[राजेश के साथ मनु और इरा का प्रवेश]

मनु : मुझे पता लगा है कि आप लोग हमारी मांगों को मंजूर करने के लिए तैयार हैं ।

डाइरेक्टर : हां, अगर तुम लोग हमारी कुछ मांगें मान लो, तो हम भी तुम्हारी मांगों पर विचार कर सकते हैं । आओ, इस संबंध में अंदर बैठकर विचार करें ।

मनु : नहीं, अंदर जाने की कोई आवश्यकता नहीं । हम यहीं सबके सामने विचार करेंगे । हमारी मांगें बहुत सीधी-सादी है । हम कोई समझौता करने को तैयार नहीं हैं ।

राजेश : नहीं, मनु दादा, हमें हठ नहीं करनी चाहिए । हेडमास्टर साहब और डाइरेक्टर साहब दोनों हमारी मांगों पर विचार

करने को तैयार हो गए हैं। उनकी मांगों पर भी हमें विचार करना चाहिए। यही न्याय है।

मनु : यदि आप सब लोग तैयार हैं, तो मुझे कोई आपत्ति नहीं है।

इरा : भाइयो, सुझाव आपके सामने हैं। क्या आप लोग चाहते हैं कि हम अधिकारियों से समझौता कर लें ?

राजेश : भाइयो, अधिकारी हमारे सामने झुक गए हैं। हमें उनकी बातों पर विचार करना चाहिए। इसी में हमारा बड़प्पन है। हम चाहते हैं कि हमारी ओर से मनु दादा और इरा दीदी दोनों को यह अधिकार दिया जाए कि वे उचित शर्तों पर समझौता कर लें। लेकिन एक बात पर हम समझौता नहीं करेंगे। हमें खाने के लिए टाफियां जरूर मिलनी चाहिए।

सब : हमें मंजूर है। हम मनु दादा और इरा दीदी को सब अधिकार देते हैं।

मनु : धन्यवाद। आइए, अब हम हरेक मांग पर विचार करें। हमारी पहली मांग है कि परीक्षाएं लेना बंद कर दिया जाए।

डाइरेक्टर : हम इस मांग को स्वीकार करते हैं। अब से वार्षिक परीक्षाएं नहीं होंगी। समय समय पर टेस्ट हुआ करेंगे। विद्यार्थियों के रोज के काम करने के ढंग को देखकर ही उन्हें अगली कक्षा में चढ़ा दिया जाया करेगा। मैं समझता हूं, यह प्रस्ताव आपको मंजूर होगा।

शुभ्रा : मनु दादा, बात तो ठीक लगती है।

राजेश : बिलकुल ठीक है, साहब।

सब : हमें कोई आपत्ति नहीं।

मनु : तब हम यह प्रस्ताव स्वीकार करते हैं। अब हम अपनी दूसरी मांग पर आते हैं। हमारी दूसरी मांग है कि स्कूलों में समय पर पहुंचने की बंदिश न हो।

हेडमास्टर : यह मांग किसी भी शर्त पर स्वीकार नहीं की जा सकती। अगर विद्यार्थी समय पर स्कूल नहीं आएंगे तो कोई काम नहीं हो सकेगा। और कोई काम नहीं होगा, तो फिर स्कूलों की जरूरत ही क्या है ?

मनु : हां, आपकी बात में सचाई तो है। अच्छा, फिलहाल हम इस मांग को वापस लेते हैं। लेकिन हम यह जरूर चाहेंगे कि जितना समय पढ़ने के लिए दिया जाता है, उतना ही समय

खेलने और यात्रा पर जाने के लिए दिया जाए।

डाइरेक्टर : आपको यह जानकर खुशी होगी कि इस बारे में हमने एक योजना बनाई है। आपको प्रतिवर्ष एक महीने के लिए यात्रा पर ले जाया जाएगा। प्रतिदिन एक घंटा टेलीविजन पर पढ़ाई होगी। क्रिकेट, हाकी, फुटबाल आदि खेलों के साथ बुद्धि-परीक्षा के कुछ 'इनडोर' खेलों की सुविधा भी होगी। लेकिन एक बात का आपको ध्यान रखना होगा कि इनका भी टेस्ट हुआ करेगा। उदाहरण के लिए आप लोग यात्रा में कैसा व्यवहार करते हैं, इसके भी अंक दिए जाएंगे।

इरा : बात है तो कुछ कठिन, लेकिन हमें कोई आपत्ति नहीं है।

नरेश : क्यों, राजेश, तुम्हारा क्या खयाल है ?

राजेश : मुझे यह बात मंजूर है। जितना खेलूंगा, उतना ही अधिक खाऊंगा और पचा भी लूंगा। और यात्रा में तो नई नई चीजें खाने को मिलेंगी।

शुभ्रा : तुम्हें तो बस खाने की चिंता लगी रहती है। मनु दादा, हमें यह मांग स्वीकार कर लेनी चाहिए।

मनु : ठीक है, अब आगे चलिए। हमारी तीसरी मांग है कि हमको कोर्स की बाहर की किताबें पढ़ने की आज्ञा मिलनी चाहिए।

हेडमास्टर : जरूर जरूर, यह आज्ञा तो अब भी है, लेकिन क्लासरूम में नहीं। केवल लाइब्रेरी के पीरियड में ही आप ऐसा कर सकते हैं। और वे ही पुस्तकें पढ़ सकते हैं जिनको हम या आपके माता-पिता सही मानते हैं।

नरेश : हम यह मांग स्वीकार नहीं कर सकते। हम वे ही पुस्तकें पढ़ेंगे, जिनको हम चाहते हैं।

डाइरेक्टर : हमें इस पर कोई आपत्ति नहीं है, लेकिन सवाल यह है कि तुम लोग तो अभी पढ़ ही रहे हो। तुम क्या जानो कि कौन कौन सी किताबें छपी हैं और कहां मिलती हैं और कौन सी उनमें पढ़ने लायक हैं ? हम तुम्हारे लिए अच्छे अच्छे लेखकों से अच्छी पुस्तकें लिखवा रहे हैं।

शुभ्रा : यह बात तो अच्छी मालूम होती है। हमें इसे मान लेना चाहिए।

राजेश : हां हां, इसे मानकर जल्दी से चौथी मांग पर आओ।

मनु : तो इसका मतलब यह है कि आप हेडमास्टर साहब की इस बात से सहमत हैं। ठीक है, मैं इसे स्वीकार करता हूं। कभी

कोई मतभेद हुआ, तो मिलकर बात कर लेंगे। अब आती है हमारी महत्त्वपूर्ण मांग कि हमें हर पीरियड में खाने के लिए टाफी मिलनी चाहिए।

डाइरेक्टर : आपको स्कूल में खाने के लिए मिलना चाहिए, इससे मैं सहमत हूं किंतु सोच लीजिए—रोज रोज टाफी खाकर तुम ऊब जाओगे।

राजेश : अरे, बाप रे ! यह तो हमने सोचा ही नहीं। हां हां, डाइरेक्टर साहब, आप हर रोज नई चीज दें—कभी हरी छाल का केला, कभी रसगुल्ला, मूंगफली, बरफी और कभी बंबई का चीकू।

शुभ्रा : (हंसकर) खाने के मामले में राजेश बहुत तेज है, पूरे हफ्ते का मीनू तैयार कर दिया।

राजेश : अभी कहां, अभी चाट तो रह ही गई !

हेडमास्टर : हां हां, फलों की चाट का प्रबंध भी किया जाएगा। इसके अतिरिक्त दूध का भी। लेकिन हर पीरियड में ऐसा नहीं हो सकता। केवल आधी छुट्टी में ही ऐसा हुआ करेगा।

राजेश : बस, दिन में एक बार !

मनु : हां, यह बात बहुत उचित है। ज्यादा खाने से आलस बढ़ता है और आलसी आदमी पढ़ नहीं सकता।

सब : ठीक है, ठीक है, हमें मंजूर कर लेना चाहिए।

मनु : तो बस एक मांग और रह गई कि हर छात्र को बारी बारी से हेडमास्टर बनाना चाहिए।

डाइरेक्टर : आपकी यह मांग हमें सिद्धांत रूप में स्वीकार है। लेकिन इस प्रकार वर्ष में सारे बच्चे हेडमास्टर नहीं बन सकेंगे। इसलिए मैंने एक योजना बनाई है। महीने में एक दिन पूरे स्कूल का संचालन विद्यार्थियों की समिति करेगी। वही सब अधिकार चुनेगी। स्कूल के अधिकारी उनकी सहायता करेंगे।

सब : हम इसे मंजूर करते हैं।

डाइरेक्टर : हमें बहुत खुशी है कि हमने एक-दूसरे की बात को समझा और बहुत जल्दी समझौता हो गया।

शुभ्रा : समझौता कुछ जल्दी हो गया।

राजेश : जल्दी हो गया ? तुम्हें भूख हड़ताल करनी पड़ती, तब पता लगता !

शुभ्रा : मैं तीन दिन तक पानी भी नहीं मांगती...

मनु : शांत शांत, यह नाटक यहीं समाप्त होता है।

राजेश : नहीं नहीं, नाटक समाप्त नहीं होगा। हेडमास्टर साहब, टाफी मंगवाइए और डाइरेक्टर साहब, आप मिठाई मंगवाइए, फल मंगवाइए, जल्दी।

[सहसा पीछे से आवाज आती है।]

सुधीर कुमार : क्या मंगवाना है ? मैं हाजिर हूं।

[सब पीछे मुड़कर देखते हैं। कोठी के मालिक इरा के पिता डाइरेक्टर सुधीर कुमार खड़े दिखाई देते हैं।]

राजेश : अरे, बाप रे, यह तो असली डाइरेक्टर साहब आ गए ! अब क्या होगा ?

इरा : कुछ भी नहीं होगा। पिताजी, हम लोग नाटक खेल रहे थे।

सुधीर कुमार : मुझे सब मालूम है। नाटक के हेडमास्टर ने मुझे फोन पर सब कुछ बतला दिया था। मैं तुम्हारे लिए केले, बरफी, टाफी, आईसक्रीम लेकर आया हूं।

राजेश : सचमुच ? आप तो बहुत अच्छे हैं। नाटक के डाइरेक्टर से भी अच्छे।

सुधीर कुमार : (हंसकर) उससे अच्छा क्यों न होऊंगा। उसके विरोधी का पिता जो हूं। लेकिन अब जाओ, कार से सब चीजें उतारकर ले आओ।

[सब बच्चे हंसते-खिलखिलाते बाहर भागते हैं और फिर बारी बारी से पैकेट लिए हुए कमरों में घुस जाते हैं। जोर जोर से हंसी की आवाज उठती है।]

पर्दा गिरता है

(१९७०)

अक्ल बड़ी या भैंस

□ देवेंद्रप्रताप पांडेय

पात्र

बाघ गधा

प्रवक्ता (महिला स्वर)

[प्रारंभिक वाद्य की समाप्ति के बाद]

प्रवक्ता : हरी हरी कोमल खेतों में उगी हुई थी दूब।
गधेराम को चरने को थी दूब मिली थी खूब।
बड़े मजे में गधेराम थे चरने में मशगूल
इसी फेर में चिंता सारी गए सभी वे भूल।
और उठाया सर जो अपना आते देखा बाघ—
समझ गया, मारेगा मुझको निश्चय ही यह बाघ।
'जान बचे तो लाखों पाऊं' करने लगा विचार—
कैसे अपनी जान बचाऊं, हे मेरे करतार।
तुरत समझ में आई उसके एक नई तदबीर,
सारस और लोमड़ीवाली पकी-पकाई खीर।
लंगड़ाकर चलने का उसने रचा नया इक ढंग,
असह्य कष्ट से कांप रहे हों, जैसे सारे अंग।
तुरत गधे ने दिखलाई चल करके लंगड़ी चाल।
पास पहुंचकर कहा बाघ ने—यह क्या तेरा हाल?
[गधे के रेंकने का स्वर]

गधा : हाय, क्या कहूं भला आपसे, हे मेरे सरकार।
मरा जा रहा कष्ट-दर्द से, करें आप उद्धार।
नहीं आपसे बढ़कर कोई वन में है बलवान,
रूप-रंग औ' चाल-ढाल सबमें हैं आप महान।
अगर आपकी मदद मिले तो मिट जाए यह क्लेश;
नारायण वन आप पधारे, धारे मनहर वेश।
[बाघ की गरज का स्वर]

बाघ : नहीं समझ में आती मुझको तेरी यह बकवास—
मेरे पल्ले नहीं पड़ रहा, धेली-दाम-छदाम।

लंगड़ी कैसे हुई तुम्हारी पिछली दाईं टांग;
यह बतलाता नहीं, बक रहा खाकर जैसे भांग।
रहा गधा का गधा सदा तू, मोटी तेरी अक्ल।
जा, पहले दरपन में जाकर देख खुदाई शक्ल।

गधा : माफ करें अब मेरी गलती, हे मेरे सरताज !
अभी बताता घटना जो घट चुकी संग है आज।
गड़ी पैर में है बबूल की मोटी लंबी कांट।
प्राण विकल हो रहे हमारे, जैसे चुभती कांच।
इसीलिए लंगड़ा-लंगड़ा कर उठा रहा हूं पांव,
और करम-फल भोग रहा हूं पाकर कष्ट कुठांव।

बाघ : नहीं भोगना होगा तुझको भोग रहा जो भोग।
अभी मोक्ष पा जाएगा तू, नहीं रहेगा रोग।
भूखा हूं मैं कई दिनों का, लगी पेट में आग,
उस पर तुझे देखकर मेरी भूख उठी है जाग।
तेरी कोई अंतिम इच्छा मन में हो तो बोल।
अगर नहीं तो पलक झपकते जाएगा हरि बोल।

गधा : बात सही है तेरी राजा मैं भी लेता मान;
पर जो सच है कहता हूं, मैं छूकर दोनों कान।
अगर बनाना ही है मुझको निश्चित ही आहार;
एक बात को सुन लें मेरी, तब फिर करें प्रहार।
मुझको खाने के पहले लें कांटा अलग निकाल;
नहीं गले में अटक गया तो गए काल के गाल।

बाघ : लगती तो कुछ मुझको भी हैं तेरी बातें ठीक।
कभी कभी गदहे भी हैं कह जाते बात सटीक।
चली जाएगी मुफ्त जान जब गड़ी कांट है सख्त;
कहीं गले में अटक न जाए मुझको खाते वक्त।
लाओ, देखूं पहले तेरा कांटेवाला पैर।
बात हुई झूठी तो तेरी आज नहीं है खैर।

[हलका वाद्य-संगीत, थोड़ी देर तक]

प्रवक्ता : हुई आज की भली बोहनी, अच्छा रहा शगुन।
बाघ घाघ के मन में थी अब, शेष यही एक धुन—
अगर किसी विधि कांटा निकले, होवे बेड़ा पार;
अच्छा फंसा शिकार, आज है भोजन का त्योहार।
खा-पीकर मोटा-ताजा है माल बना तैयार;

छककर खाऊंगा मैं इसको और छकेंगे यार।
दीन गधे की कथनी-करनी आई उसे पसंद।
पैर उठाकर लगा ढूंढने कांटा वह सानंद।
देख गधे ने मौका अच्छा दिया दुलत्ती झाड़।
लगा बाघ को जैसे यह हो, भड़भूंजे का भाड़।
जब तक संभले बाघ, सर्र से गधा गया था भाग,
और बाघ को लगी सालने गुस्से की थी आग।
मुंह पर पड़ी दुलत्ती की थी ऐसी गहरी चोट,
जिससे मुखड़ा होकर टेढ़ा बन बैठा अखरोट।
सभी सामने वाले उसके झड़े नुकीले दांत;
भर आए थे सने खून से जबड़े के सब पांत।

[क्षणिक वाद्य के साथ बाघ की गरज का स्वर]

बाघ उफ् ! बेअक्ल गधे ने मुझको खूब पढ़ाया पाठ।
और बुद्धि को मेरी जैसे मार गया था काठ।
चतुर गधे के आगे बल ने दिया न कोई काम।
दुआ-बंदगी खूब रही यह, अच्छा मिला इनाम।
बड़ा समझना अपने को, फिर मन में लाना तैश,
सच ही है यह कही कहावत—अक्ल बड़ी या भैंस ?

[दूर से गधे के रेंकने के साथ समाप्ति का वाद्य।]

(१९७३)

अप्सरा का तोता

□ रेखा जैन

पात्र

इंद्र	अप्सरा
प्रहरी	पनिहारिनें (तीन या चार)
तोता	दो लकड़हारे
किसान	किसान लड़के-लड़कियां (चार)

[इंद्र का दरबार। इंद्र एक सुंदर सिंहासन पर बैठे हैं। उनके पीछे दो परिचारिकाएं चंवर डुला रही हैं। रंगमंच के दोनों ओर दो प्रहरी हाथ में लकड़ी लिए हुए खड़े हैं। ये लकड़ियां गोटे आदि से मढ़ी हुई हैं। रंगमंग पर सामने अप्सराएं तथा गंधर्व नाच-गा रही हैं। तभी इंद्र की प्रधान अप्सरा घबराई हुई वहां आती है। उसकी परेशानी को देखकर इंद्र नृत्य-संगीत रुकवा देते हैं।]

इंद्र : (**नर्तकों से**) ठहरो। बंद करो यह संगीत।

[नृत्य रुक जाता है। अप्सराएं एक ओर और गंधर्व दूसरी ओर धीरे धीरे पीछे चले जाते हैं।]

इंद्र : (**अप्सरा से**)
रही हो क्यों घबराय, अप्सरा, रही हो क्यों घबराय।
ऐसा क्या दुख हुआ है तुमको, हमको दो बतलाय अप्सरा,
हमको दो बतलाय।

अप्सरा : (**घबराए हुए स्वर में**)
राजा सुनो तुम इंद्रपुरी के, हुई गजब की बात।
मेरा प्यारा सुंदर तोता, कहीं उड़ गया रात।

इंद्र : पर नर्तकी, वह तो तुमको इतना प्यारा,
फिर क्यों छोड़ा साथ ! कुछ तो होगी बात ?

अप्सरा : क्या बतलाऊं राजा तुमको, समझ न आवे राज।
चार चार नौकर रक्खे थे, देखभाल के काज।

इंद्र : क्या तुम उसे खिलातीं खाना ?

अप्सरा : मैं क्यों खिलाती, नौकर एक खिलाने को था।

इंद्र : क्या तुम उसको देतीं पानी ?

अप्सरा : मैं क्यों देती, नौकर एक पिलाने को था।

इंद्र : क्या तुम अपने हाथ सुलातीं ?

अप्सरा : मैं क्यों सुलाती, नौकर एक सुलाने को था, नौकर एक घुमाने को था।

इंद्र : नौकर ही करते थे उसका काम सारा,
फिर कैसे कहती हो तोता तुमको प्यारा ?

अप्सरा : मैं सुंदर सुकुमार नर्तकी, देवों की इस इंद्रपुरी की।
नाच करूं और मन बहलाऊं, मैं कैसे यह मेहनत करती ?

इंद्र : समझ गया मैं।

अप्सरा : (पास आकर, आश्चर्य से) क्या महाराज ?

इंद्र : तोता सचमुच चला गया है, तुम्हें छोड़कर उस धरती पर,
अपना काम सभी नर-नारी करते जहां नाच-गा गाकर।

अप्सरा : (जैसे विश्वास न हो रहा हो) क्या कहा महाराज ?
अपना काम सभी नर-नारी, करते जहां नाच-गा गाकर ?

इंद्र : हां हां।

अप्सरा : यह तो अनहोनी सी आज।
मैंने बात सुनी महाराज।

इंद्र : तुमको यदि विश्वास नहीं तो, खुद धरती पर जाकर देखो।

अप्सरा : (सोचते हुए अपने आप से) खुद धरती पर जाकर देखूं ?
(इंद्र से) पर कैसे जाऊं महाराज ?

इंद्र : (द्वारपाल से) प्रहरी। जाओ, मार्ग दिखाओ, धरती पर इनको पहुंचाओ।

प्रहरी : जो आज्ञा महाराज।

[प्रहरी आगे आगे चलता है, उसके पीछे पीछे अप्सरा चली जाती है। इंद्र भी दरबार से चले जाते हैं। उनके पीछे पीछे सब दरबारी और नर्तकी चले जाते हैं। इंद्र के दरबार का दृश्य खत्म होते ही धरती का दृश्य शुरू हो जाता है। चारों ओर हरियाली, पेड़-पौधे हैं। झोपड़ी कुआ आदि दिखाई पड़ते हैं। जो लोग यह दृश्य न दिखा सकें, एक पेड़ और कुएं से काम ले सकते हैं। धरती का दृश्य शुरू होते ही संगीत पर लोकधुन बजती है और एक ओर से गाना गाती हुई गगरी लेकर पनिहारिनों का प्रवेश।]

पनिहारिनें :

गीत

चलो प्यारी गुइयां पनियां भर लावें।
सोने की गगरी और रेशम की डोरी।
रतन जड़ाऊ ईडरी लगावें।
चलो प्यारी...

[पनिहारिनें नाचती-गाती कुएं के पास पहुंचकर पानी भरती हैं। तभी अप्सरा वहां पहुचकर उन्हें नाचते-गाते देख उनसे पूछती है।]

अप्सरा : सुनो, सुनो, तुम बात जरा।

पनिहारिनें : क्या, क्या, क्या ?

अप्सरा : हो तुम धरती की अप्सरा ?

पनिहारिनें : (उसको आश्चर्य से देखकर, एकदम खिलखिलाकर हंसते हुए) अप्सरा !...(जोर की हंसी) ना जी, ना। (हंसते हुए) हम पनिहारिन पानी लाएं। काम करें और नाचें गाएं।

अप्सरा : (आश्चर्य से) काम करो और नाचो गाओ ?

पनिहारिनें : हां जी, हां।

[फिर गाना गाती हुई चलने लगती हैं। तभी तोता उड़ता हुआ आता है और एक पनिहारिन के सामने चोंच खोलकर खड़ा हो जाता है। पनिहारिन उसे पानी पिलाती है। अप्सरा तोते को देखकर उसके पास जाती है। पर तोता इधर-उधर उड़ता है, पनिहारिनें चली जाती हैं। तोता उड़ता हुआ जाने को होता है, तभी अप्सरा पुकारकर कहती है।]

अप्सरा : तोते, तू तो मुझको परम पियारा।
फिर क्यों छोड़ा साथ हमारा ?

तोता : सुनो अप्सरा, कहती हो तुमको हूं प्यारा,
क्यों न किया फिर काम हमारा ?
अब बतलाओ, अपने हाथों दोगी दाना ?

अप्सरा : मैं क्यों दूंगी, नौकर जो है।

तोता : अपने हाथों दोगी पानी ?

अप्सरा : मैं क्यों दूंगी, नौकर जो है। नहीं जानता है तू तोते, मेरा काम नाचना गाना, देवों के मन को बहलाना, कैसे यह सब काम करूंगी।

तोता : (फुदकते हुए)
तो फिर साथ न आऊंगा, धरती पर रह जाऊंगा।
काम करें और नाचें गाएं, वे ही मेरे मन को भाएं।

[यह कहता हुआ तोता उड़ जाता है। पीछे पीछे अप्सरा पकड़ने की कोशिश करती हुई चली जाती है। तभी दूसरी ओर से लकड़हारों की मंडली आती है। सबके सिर पर लकड़ी के गट्ठर हैं।]

एक लकड़हारा : (दूसरे लकड़हारों को पुकारता हुआ) अरे ओ, कलुआ, बुधुआ ?

दोनों लकड़हारे : हां, काका।

पहला लकड़हारा : अरे जंगल से लकड़ी तो काट लाए,
अब जरा नाच-गाकर थकान मिटा लें।

दोनों लकड़हारे : हां, बड़ी अच्छी बात कही। (आवाज देकर) नत्थू-फत्थू, आओ।

[तभी जोर का ढोल बजता है। बाकी लकड़हारे भी आ जाते हैं और वे नाचना शुरू कर देते हैं। कुछ देर नाच होने के बाद अप्सरा का प्रवेश। उन्हें नाचते-गाते देखकर कहती है।]

अप्सरा : सुनो, सुनो, तुम बात जरा।

लकड़हारे : क्या, क्या, क्या ?

अप्सरा : हो तुम धरती के गंधर्व ?

लकड़हारे : (हंसकर) गंधर्व। ना जी, ना।
हम जंगल से लकड़ी लाएं, थक जाएं तब नाचें गाएं।

अप्सरा : (स्वतः) थक जाएं तब नाचें गाएं ?
यह तो बात बड़ी अचरज की, अजब रीति धरती की लगती ?

[तभी तोता फुदकता हुआ आता है और लकड़हारों के संग जाता है। नर्तकी उसे देखकर पकड़ने को दौड़ती है, पर तोता फुदककर पेड़ की डाल पर बैठ जाता है।]

अप्सरा : प्यारे तोते, अब तो चल तू मेरे साथ।
सच कहती हूं तेरे बिन मैं बड़ी उदास।

तोता : नहीं अप्सरा, काम करें और नाचें गाएं,
वे ही मेरे मन को भाएं।

[तोता उड़ जाता है। अप्सरा उदास मन से एक ओर बैठ जाती है। तभी एक ओर से टिप्पणी नृत्य करती

हुई मजदूर औरतें आती हैं। औरतें नृत्य करती हुई चलने लगती हैं तो अप्सरा फिर उनसे पूछती है।]

अप्सरा सुनो, सुनो। तुम बात जरा।

मजदूरिनें क्या, क्या, क्या ?

अप्सरा : हो तुम धरती की अप्सरा।

मजदूरिनें (हंसकर) अप्सरा ! ना जी, ना !
हम मजूर, घर महल बनाएं, काम करें और नाचें-गाएं।

[मजदूरिनें नृत्य करती हुई चली जाती हैं। अप्सरा सोचती है।]

अप्सरा (सोचते हुए)
सचमुच रीति यहां की न्यारी, काम करें दिन भर नर-नारी।
मेहनत के संग नाचें गाएं, नाच कूदकर थकन मिटाएं।

[अप्सरा चली जाती है। दूसरी ओर से हल-बैल लेकर किसानों का प्रवेश, गीत गाते हुए। दो बच्चे बैल का मुखौटा पहने होते हैं। पोशाक में सफेद रंग का कुर्ता-पायजामा भी ठीक लगेगा।]

गीत

किसान हेई संभालो, हेई संभालो धान हो,
खेत हमारी जान हो।
मिट्टी खोदें, पानी डालें, और उगाएं धान, ये ही शान हो।
हेई...खाद डालें, बीज लगाएं और रोपें धान, ये ही शान हो।
हेई...खेत देखें, नाचें-गाएं और काटें धान, ये ही शान हो।
हेई...

[किसान औरतें भी आकर संग संग नाच करती हैं, तभी अप्सरा आती है।]

अप्सरा : प्यारी बहन, इधर को आओ, तुम हो कौन जरा बतलाओ।

किसान लड़के लड़कियां } हम किसान धन-धान्य उगाएं, काम करें और नाचें-गाएं।

अप्सरा मैं भी संग संग काम करूंगी। मेहनत करके नाच करूंगी।

सब ना जी, ना !
तुम सुंदर सुकुमार नर्तकी ! तुम कैसे यह काम करोगी ?

[अप्सरा फावड़ा उठाकर मिट्टी खोदने का अभिनय करती है। तभी तोता फुदकता हुआ आता है, अप्सरा को काम करते देखकर आश्चर्य में पड़ जाता है।]

तोता : अरे अप्सरा, ये सब क्या है ? काम करोगी ?

अप्सरा : हां रे तोते, समझ गई मैं, अपने हाथों काम करें और नाचें-गाएं। वे ही सबके मन को भाएं।

तोता : (खुशी से) सुनो अप्सरा, फिर तो मैं भी संग चलूंगा। सदा तुम्हारे पास रहूंगा।

[अंत में सब एक साथ नाचते-गाते हैं।]

पर्दा गिरता है

काकभगोड़ा

□ रेखा जैन

पात्र

कौवा	गौरैया
तोता	कबूतर
चिड़ियां	हरिया : किसान का बेटा
मोना : नन्ही बच्ची	राहगीर

किसान

[एक सुंदर सा हरा-भरा खेत है। जौ की बालें लगी हुई हैं। बीच बीच में तीन-चार पेड़ हैं। तरह तरह की चिड़ियां आकर बैठती हैं। इर्द-गिर्द घूमती हैं। उसकी हरियाली और बालों को देखकर खुश होती हुई नाचती है। चिड़ियों में तोता कबूतर, गौरैया, कौवा, बुलबुल आदि है। कौवा मुख्य चिड़िया का पार्ट करता है।]

कौवा : कांव कांव, देखो, देखो सुंदर खेत
देखो हरा-भरा यह खेत, जौ की बालों से भरा खेत।
[चिड़िया जो उड़ती हुई कुछ आगे चली गई थी, फुदक-फुदक कर वापस आती है।]

गौरैया : हां हां, यह है सुंदर खेत,
बेहद हरा भरा है खेत
जौ की बालों से लदा खेत।

एक चिड़िया : अरी, आओ हम कुछ दाने चुगें। (**खाती है। फिर रुककर**)
और पेड़ पर हैं जो बच्चे उनके लिए कुछ संग ले चलें।

सब : हां, हा, यह तो करना होगा। उनका पेट भी भरना होगा।
[तोते आ जाते है।]

तोता : अहा, हा, यह सुंदर सा खेत, और मौसम सुहावना
क्यों न चलो, प्यारे तोते, कुछ चुग लें दाना।
[गौरैया उड़ती हुई गुजरती है और अन्य चिड़ियों से चिल्ला-कर कहती है।]

गौरैया : प्यारी चिड़ियों, इधर को आओ।
हरा भरा यह सुंदर खेत, तुम भी कुछ दाने चुग जाओ।

[तभी दूर पर कबूतर और बुलबुल आते हैं। पूछते हैं, 'क्या है, क्या है']

गौरैया देखो, मेरे खेत पर सारी चिड़ियां पहुंच गई हैं और हमें भी बुला रही हैं।

एक चिड़ियां : हम भी झट से जाएं वहीं।

सब चिड़ियां : हां, हम भी जाएं झट से वहीं।

[बाकी चिड़ियां भी उड़कर उसी खेत पर पहुंचती हैं। घूम-घूमकर उड़ती हैं, चुगती हैं। गाना गाती हैं।]

गाना

कैसा हरा-भरा है खेत, जौ की बालों से लदा खेत।
लगता सेठ बड़ा ही दानी, तभी नहीं रखता निगरानी।
कोई न डराने वाला यहां, घूमो, चुगो मन चाहे जहां।

[तभी हरिया गाता हुआ आता है। सभी चिड़ियां बालें चुगने में मस्त हैं।]

हरिया : मैं किसान का बेटा हूं, हरिया मेरा नाम।
चिड़ियां चुगती खेत को, उन्हें भगाना काम।

[हरिया खेत में आ जाता है और कौवे को भगाता हुआ कहता है।]

हरिया : ओ...भागो...शू...

[चिड़ियां दूर फुदकती हैं।]

हरिया : (**फिर से**) शू...

[चिड़ियां भाग जाती हैं। हरिया काकभगोड़े को खेत में गाड़ देता है।]

हरिया : (**काकभगोड़े से**) देखो, अब डरावने लगना, समझ गए। (**उसके हाथ उठाकर**) अपने ये हाथ ऐसे फैला दो, और सीना सीधा। हाथ नीचे हुए तो उनसे चालाक चिड़ियों की तो बात ही क्या, किसी चूहे तक को नहीं डरा सकते, समझे।

[तभी बहुत नन्हीं सी बच्ची सोना आती है, उसके हाथ में एक रंगीन रूमाल, पुराना पाइप और जेब में खाने को लड्डू हैं।]

हरिया : (**गर्व से**) देखो, अब देखो इसे।

सोना ओह हरिया, यह तो बहुत ही प्यारा है। पर देखो, मैं इसके लिए क्या लाई हूं !

हरिया मुन्नी जी, यह तो बाबूजी का पाइप है। इसे तुम किसी को

कैसे दोगी ?

सोना : वाह, पिताजी के पास तो सैकड़ों पाइप हैं।

[और वह उस पाइप को काकभगोड़े के मुंह में लगा देती है।]

हरिया : तुम्हारे पिताजी नाराज नहीं होंगे ?

[हरिया रंगमंच के दाईं ओर आ जाता है।]

सोना : (**काकभगोड़े से**) तुम हो बड़े प्यारे, बुढ़ऊ। ठीक दादाजी की तरह। बड़े अच्छे। मैं तुम्हें कालू दादा कहा करूंगी। (**और उसके गले में बड़ा सा रूमाल बांध देती है**) ये लो—अब देखो, तुम्हारे लिए मैं क्या लाई हूं ? (**अपनी जेब से लड्डू निकालकर काकभगोड़े के कोट की जेब में रखते हुए**) अब ठीक, अब बोलो—ओ छोटी-छोटी चिड़ियो ! मेरे बापू की खेती न उजाड़ो। (**वह ऐसा मुंह बनाती है जैसे कालू दादा सचमुच उसकी बात दुहरा रहा हो**)

सोना : बहुत ठीक, अब तुम उन चिड़ियों को डरा सकोगे। अच्छा, टा-टा-टा-टा। (**फिर पास आकर**) पर सुनो, नन्हीं चिड़ियों को मत डराना। वे मुझे बहुत अच्छी लगती हैं।

[सोना कालू दादा के लिए हाथ हिलाती चली जाती है। कौवा रंगमंच पर आकर काकभगोड़े को देखता-परखता है, तभी अन्य चिड़ियों का झुंड भी आ जाता है।]

कौवा : (**जैसे हिम्मत दिखाता हुआ**) 'काव !' कहकर दूर फुदक जाता है। (**काकभगोड़ा कोई ध्यान नहीं देता**) काव !

सब चिड़िया : कौवे, जरा होशियारी से।

कौवा : बूढ़े रामू के खेतों में चुगता हूं मैं जौ के दाने।

चिड़िया : ए कौवे ! खबरदार, कौवे, कोई पकड़ लेगा।

[पर कौवा काकभगोड़े के बहुत पास पहुंच जाता है।]

कौवा : (**चिड़ियों के पास आकर**) अरे आओ न, वह कुछ नहीं कर सकता।

चिड़िया : अच्छा, एक बार फिर प्यारे कौवे, जरा उसके पास जाओ।

कौवा : डरपोक कहीं की, तुम भी तो यहां आओ।

[सारी चिड़िया पास आने लगती हैं। कौवे के साथ-साथ वे भी बूढ़े रामू का गीत गाती हैं, पर कोई उतने पास नहीं जाता, जितना कौवा जाता है।]

तोता : जरा पास आकर छुओ तो जानें।
कबूतर : है हिम्मत ?
सब : है हिम्मत ? कौवे !

[कौवा लपककर काकभगोड़े के हाथ में से थोड़ा सा तिनका नोंचता है और बहुत जल्दी लौट जाता है।]

चिड़िया : शाबाश, कौवे, शाबाश ! हा, हा, हा !

[काकभगोड़ा नहीं हिलता। अब सारी चिड़ियां उसको चिढ़ाती हुई आगे बढ़ती हैं।]

सब चिड़ियां : काकभगोड़ा, काकभगोड़ा, जितना लंबा, उतना चौड़ा, तिनकों से है सारा भरा, कौन भला है उससे डरा।

एक चिड़िया : **(बाहर देखकर)**
कोई आया, कोई आया, भागो, भागो, जल्दी भागो।

सब : **(घबराकर)**
कोई आया, कोई आया। भागो, भागो, जल्दी भागो।

[चिड़ियां चारों तरफ उड़ जाती हैं। पीछे से राहगीर का प्रवेश। उसके कपड़े मैले और फटे हुए हैं, पर वह खुश है। वह काकभगोड़े के पास आता है।]

राहगीर : भगवान भला करें, ऐसा बढ़िया, सीधा खड़ा काकभगोड़ा तो कभी देखा ही नहीं। कहिए जनाब, मजे में तो हैं ? इतना घमंड, हाथ भी नहीं हिलाते ? कोई बात नहीं। देखो, यह रूमाल तो मेरे लायक है। **(उसके गले से निकालकर अपने गले में बांधते हुए)** और इस पाइप में कुछ है भी ? **(देखते हुए)** ठीक है। जाड़े में बहुत काम आएगा। भई, यह कोट बड़ा नया है। जरा ठहरो, जरा ठहरो। कोट भी क्यों न बदल लिया जाए ? **(काकभगोड़े के साथ कोट की अदला-बदली करता है। मुड़कर अपने आपको सराहते हुए)** बड़ा नए फैशन का है। **(जेब देखते हुए)** ऐं ! जेब में भी कुछ है ? **(लड्डू निकालता है, चखता है, खुश होकर)**यह कोई बड़ा मालदार किसान है कि अपना काकभगोड़ा इतना बढ़िया बनाता है। **(टोपी की भी अदला बदली करता है)**

[दूर किसान की आवाज सुनाई देती है।]

किसान : हरिया, बैलों पर निगाह रखना। मैं जरा खेतों के पार जा रहा हूं, आधे घंटे में लौटूंगा।

[राहगीर डर जाता है, पर भाग नहीं सकता, इसीलिए

वह काकभगोड़े के सामने हाथ फैलाकर और पूरी तरह सिर झुकाकर खड़ा हो जाता है। किसान प्रवेश करके उधर जाने लगता है।]

किसान : (**बनावटी काकभगोड़े पर नजर डालते हुए**) हूं, लगता है जैसे इस आदमी को वर्षों से जानता हूं। ये काकभगोड़े भी अजीब चीज होते हैं। सब एक तरह के लगते हैं।

[किसान चला जाता है। राहगीर उसी मुद्रा में कुछ क्षण रहता है, वह हाथ नीचे गिराने को ही होता है कि चिड़ियां लौट आती हैं। वह उसी मुद्रा में खड़ा रहता है। कौवा आकर चोंच मारता है।]

चिड़िया : कौवे, रुको, उसे मत अधिक सताओ।
बस उसके पैरों में चोंच लगाओ।

[कौवा राहगीर के पास जाकर धीरे से उसके पैरों में चोंच मारता है, राहगीर चुपचाप खड़ा रहता है।]

सब चिड़ियां : हा, हा, हा !

[वे उसे चारों तरफ से घेर लेती हैं, कौवा और भी हिम्मत करके राहगीर की जेब से रूमाल निकालने की कोशिश करता है। अचानक राहगीर उसे पकड़ लेता है। चिड़ियां चीख-पुकार करती उड़ जाती हैं।]

राहगीर : पकड़ लिया।

कौवा : कांव, कांव, रहम करो ?

राहगीर : तुमने समझ क्या रखा था ? तुम्हें इतनी भी अकल नहीं कि सामने कौन है ?

कौवा : रहम...

राहगीर : ज्यादा अकड़े तो भुर्ता बना दूंगा। अब चलते बनो।

[कौवा उड़ जाता है। पर खेत के बाहर पहुंचते ही बड़े रोब से कांव कांव करता है। राहगीर चलना ही चाहता है कि उसे सोना एक कटोरे में दूध और रोटी लाती हुई दिखाई पड़ती है।]

राहगीर : एक बार धोखे की बात, बना जनम भर का जंजाल।

[अपने हाथ फैलाकर काकभगोड़े की मुद्रा में फिर खड़ा हो जाता है। सोना पास आती है।]

सोना : बेचारा कालू दादा। बड़ी भूख लगी है ना। (**कटोरा नीचे रख कर उसकी जेब टटोलती है। डरी सी लगती है, पर खुश हो**

जाती है) खा लिया न लड्डू ! मैं जानती थी कि तुम सचमुच के हो। तुमने मेहनत भी खूब की है। खेत में कौवा भी नहीं। तुम बहुत ईमानदार हो, कालू दादा ! लो, ये रहा तुम्हारा कलेऊ। **(कटोरे की तरफ इशारा करती है)** रोटी और दूध बढ़िया है न। मेरा मतलब है, कालू दादा के लिए, मेरे बराबर बड़ी मुन्नी के लिए नहीं। फिर मालूम है, कालू दादा, मुझे यह खीर लाने में देर क्यों हो गई ? मैं मास्टरजी से नाच सीख रही थी। दिखाऊं, देखोगे न ? **(नाच करती है, पीछे से राहगीर खुशी से सिर हिलाता है और जैसे ही सोना उसकी ओर देखती है, वैसे ही खड़ा हो जाता है। कुछ देर नाच करने के बाद सोना रुक जाती है।)** अब बस, कल और दिखाऊंगी। **(कटोरे को देखकर)** हां, मगर खबरदार, खीर जरूर खा लेना। सबेरे जब आऊं तो सब खाया हुआ मिले। अब मेरे सोने का समय हो गया। अच्छा कालू दादा, टाटा...

[राहगीर सिर हिलाता है, पर तुरंत ही वह लड़की के देख लेने के भय से चुपचाप खड़ा हो जाता है। लड़की टाटा करके भाग जाती है। आंखों से ओझल होने से पहले एक बार और हाथ हिलाती है। राहगीर कुछ देर वैसे ही रहता है, फिर झुककर देख लेता है और कटोरे को उठाकर बड़े प्रेम से खीर खाता है। खीर खाकर कटोरा काकभगोड़े के पैरों के पास रख देता है और उसे ठीक तरह से सीधा खड़ा भी कर देता है। फिर काकभगोड़े से कहता है।]

राहगीर : तो भाई असली कालू दादा, राम राम ! इस मुलाकात के लिए धन्यवाद। कभी फिर मिलेंगे। **(कुछ दूर चलकर फिर लौट आता है)** असल बात पूछो तो इस कड़ी ठंड में इस कोट की मुझे बड़ी जरूरत है। पर नहीं, यह कोट तुम्हीं पहन लो। बिटिया ने मुझे ईमानदार कहा था न ! मैं भी उसे धोखा नहीं दूंगा। **(वह कोट लकड़ी के काकभगोड़े को पहना देता है)** पर इतना तुम मानोगे, दोस्त, तुम्हारा काम आसान कर दिया। अब डर के मारे कोई चिड़िया यह खेत नहीं चुगेगी। है न ? अच्छा, राम राम ! भोली बिटिया का खेत ठीक से देखना, एं !

[राहगीर चला जाता है। पर्दा गिरता है।]

उद्यम-धीरज बड़ी चीज हैं

□ रेखा जैन

पात्र

लोमड़ी	गीदड़
खरगोश	हिरन
मेढ़क	कछुआ

[पर्दा खुलते ही जंगल का दृश्य दिखाई पड़ता है। पेड़ों के बीच में से नदी बह रही है। पेड़ और नदी बच्चे पात्रों द्वारा भी दिखाए जा सकते हैं। पीछे से संगीत के साथ गाना होता रहता है। धीरे धीरे चारों ओर से सब जानवर अपनी अपनी चाल के अनुसार संगीत की लय में रंगमंच पर आते हैं और सभा के रूप में बैठ जाते हैं। गाने की पंक्तियों के अनुसार जानवर अपने अपने हाव-भाव दर्शाते जाते हैं।]

गाना

कैसी है वन की हरियाली, फूल रही है डाली डाली।
हरी घास पर जहां नदी है, जानवरों की सभा लगी है।
जमा यहां हर कौम के लीडर, हिरन, लोमड़ी, मेढ़क, गीदड़।
कछुएजी जल में से आए, सबने उनको शीश नवाए।
झाड़ी से खरगोश भी निकला, नींद से उठकर आंखें मलता।

[जब सब इकट्ठे हो जाते हैं तब लोमड़ी और गीदड़ आगे बढ़ते हैं और बड़े गौरव के साथ अपनी बहादुरी का वर्णन करते हैं।]

लोमड़ी-गीदड़ : कौन है जो यह बात न माने सबसे ज्यादा हम हैं सयाने
लड़ना हो तो सबके पीछे, भागना हो तो सबके आगे।

[लड़ने के वक्त पीछे और भागने के वक्त आगे रहने की बात पर अन्य जानवर हंसते हैं। फिर खरगोश, हिरन अपना गुण गाते हैं।]

खरगोश : **(हिरन की तारीफ करते हुए)**
इसके सुंदर सींग सजीले, भोले-भाले नयन रसीले।

हिरन : **(खरगोश की तारीफ करता है)**
इसका अंग है गोरा गोरा, चेहरा भी है कितना भोला।

हिरन-खरगोश ; **(दोनों)** तेज हमारी सबसे चाल, दौड़ने में हम करें कमाल,

जब तक नींद से चीता जागे, हम हों उमसे कोसों आगे।

मेढ़क : मैं मेढ़क का नन्हा बच्चा, उछल-कूद का खूब हूं पक्का।
वर्षा की जब पड़ें फुहारें, टर्र टर्र हम गायें गाने।

कछुआ : मैं इक जीव हूं, भारी-भरकम, चाल है बेशक मेरी मद्धम।
पर जब चलने पर आ जाऊं, थकूं न दम लूं चलता जाऊं।

[यह सुनकर खरगोश खिलखिला कर हंस पड़ता है और कहता है।]

खरगोश : हम कछुएजी क्यों कर मानें, साथ हमारे चलो तो जाने।

कछुआ : **(गुस्से से)**
चाल पै इतना घमंड दिखाते, जब देखो तब शान जताते।

खरगोश : **(व्यंग से)**
तो फिर पक्की रही न बात।

कछुआ : हां, हां, कह तो दिया हजार बार।

हिरन : **(आश्चर्य से)**
कछुए चाचा क्या करते हो, खरहे से बाजी रखते हो।

कछुआ : मान गया मैं, ये खरहा है फुर्तीवाला, मेरा अंग है ढीला-ढाला,
पर मेहनत करके देखूंगा, हार-जीत का फल भोगूंगा।

सब जानवर : ठीक ठीक हम सब हैं इस बात पै राजी, रहे तुम्हारी दौड़ की बाजी।
ताल जो है दरिया के किनारे, पेड़ों के इस झुंड से आगे,
पहले जो इस ताल में पहुंचे, जीत उसी की होगी, समझे।

[हिरन और सियार रंगमंच के एक कोने पर लकीर खींचने का अभिनय करते हैं। फिर सब जानवर खेल शुरू करने से पहले 'एक, दो, तीन' कहते हैं। उनके 'एक, दो, तीन' कहते ही खरगोश और कछुआ लकीर फलांग कर चलने लगते हैं। सब जानवर कुछ देर उनको देखते हैं, फिर वहां से चले जाते हैं। खरगोश दो बार पूरा रंगमंच पार करके चला जाता है। कछुआ एक ही बार जा पाता है, तभी खरगोश तीसरी बार वहां पहुंचकर कछुए को देखता है।]

खरगोश : अभी कछुए चाचा नजर भी न आते, यहां सुंदर पक्षी भी है चहचहाते। जगह भी है सुंदर हवा है सुहानी, छिन भर को सो लूं तो क्या बुराई।

[खरगोश पेड़ के नीचे सो जाता है। कुछ देर बाद

कछुआ आता है, खरगोश को सोते देखकर कहता है।)

कछुआ : जो शेखी में सोते हैं, सब कुछ अपना खोते हैं।
माना जगह यह है सुंदर, हवा है सुहानी,
न ठहरूंगा छिन भर, यही मैंने ठानी।

[यह कहकर कछुआ चलने लगता है। पीछे से कछुए और खरगोश की चाल का अलग अलग ढंग से संगीत बजता है। कछुआ खरगोश को सोता देखकर चलने के बाद फिर एक बार और रंगमंच पर आकर चला जाता है, फिर रंगमंच के एक कोने में से वे जानवर कछुए, खरगोश का इंतजार करते हुए दिखाई पड़ते हैं। हिरन आगे बढ़कर देखता है और चिंता का भाव दिखाते हुए कहता है।]

हिरन : पता नहीं क्या हुआ, अभी खरगोश न आया।
तेज चाल होने पर भी वह पहुंच न पाया।

लोमड़ी : मुझको लगता है, दुष्ट शेर ने खाया।

[तभी किसी के आने की आहट सुनाई पड़ती है।]

हिरन : **(गीदड़ से)**
चढ़ के देखना भाई सियार, क्या आ पहुंचा मेरा यार।

गीदड़ : **(चट्टान पर चढ़कर देखते हुए)**
हां हां आ पहुंचा है यार। **(तभी रुककर)**
अरे नहीं, यार नहीं, कछुआ चाचा हैं।

हिरन : क्या कहते हो? खरहा नहीं, कछुआ चाचा हैं।

सियार : हां, हां, भाई!

हिरन : **(गुस्से से)**
चल हट मैं देखूं कौन आया है,
लगता है तेरी आंखों ने धोखा खाया है।

[तभी कछुआ सामने आ जाता है।]

मेढ़क : अहा, हा, अहा, हा, कछुए चाचा जीत गए।

[सब आश्चर्य मे देखते हैं, फिर गले मिलते हैं।]

हिरन : वाह, वाह! आपने तो कर दिया कमाल,
हरा दिया उस खरहे को, जिसकी थी इतनी तेज चाल।

[तभी खरगोश भागता हुआ आता है, कछुए को वहां देखकर सिर झुका कर खड़ा हो जाता है।]

सियार-लोमड़ी : लो, अब आए खरगोश जी।

मेढ़क : (चिढ़ाते हुए)
क्यों खरहे जी, क्यों कर माने, साथ हमारे चले तो जाने।

कछुआ : मेढ़क भाई, खरहे को ऐसे न चिढ़ाओ
हार पै इनको यों न खिझाओ।

[कछुआ खरगोश का हाथ पकड़कर उसे आगे ले जाता है और समझाता है)

यह तो थी एक खेल की बाजी, हम तुम सब हैं साथी साथी।

खरगोश : समझ गया मैं, कहा ठीक है, उद्यम-धीरज बड़ी चीज हैं।

सब जानवर : बहुत ठीक है, बहुत ठीक है, उद्यम-धीरज बड़ी चीज हैं।
आओ अब हम मिलकर गाएं, खेले-कूदें, धूम मचाएं।

[सब जानवर हाथ पकड़कर गोल घेरे में चक्कर लगाते हैं। कछुआ बीच में है। मेढ़क सबके बीच में उछलता-कूदता घेरे के बाहर-भीतर मटकता आता है।]

पर्दा गिरता है

(१९७३)

डाक्टर चुनचुन

□ गोविंद शर्मा

पात्र

हाथी	जिराफ
चूहा	खरगोश

गधा

[शेरदिल चूहे चुनचुन ने बुद्धू हकीम यूनियन के दफ्तर की अलमारी को कुतर-कुतर कर डाक्टरी का सर्टिफिकेट प्राप्त कर लिया। वहीं से सिरदर्द की गोलियों की एक थैली और एक एक्स-रे की मशीन उठा लाया और डाक्टर बन-कर अपना अस्पताल खोलकर बैठ गया। डाक्टर चुनचुन के पास सबसे पहले आया हाथी।]

हाथी : सलाम, नन्हे डाक्टर चुनचुन।

डाक्टर : ओह, हाथी दादा! कहिए, क्या तकलीफ है आपको? क्या सिर दर्द है?

हाथी : नहीं, सिरदर्द नहीं है। मेरी आगे की दोनों टांगें दर्द कर रही हैं।

डाक्टर : तो आपको टांगदर्द है। अगर आपको सिरदर्द होता तो मैं ऐसी दवा देता कि लेते ही गायब!

हाथी : सिर या दर्द? खैर, मेरा टांगदर्द भी आपको ही गायब करना होगा। हां, आप जांच करके यह तो बताएं कि यह क्यों है?

डाक्टर : आपकी अगली टांगों में दर्द का कारण है—आपकी आगे की पूंछ का पीछे की पूंछ से ज्यादा भारी होना!

हाथी : आगे की पूंछ?

डाक्टर : हां, हां, जिसे आप सूंड कहते हैं। आपकी आगे की दोनों टांगों को पीछे की टांगों की अपेक्षा अधिक भार उठाना पड़ता है। इससे बैलेंस बिगड़ जाता है। बैलेंस बिगड़ने से दर्द होता है।

हाथी : तब, इसका इलाज?

डाक्टर : इसके लिए आपको किसी बड़े अस्पताल में जाना होगा। वहां आप आपरेशन करवा के आगे और पीछे की पूंछ बराबर करवा लें। आपको यदि कभी सिर दर्द हो तो मेरे पास जरूर

आएं। हां, मेरी सलाह की फीस देते जाएं।

हाथी : फीस के पैसे मेरे पास नहीं हैं। यदि कभी वर्षा न हुई तो दूर की नदी से पानी लाकर तुम्हारे खेतों पर सूंड से वर्षा कर दूंगा। अगर सूंड बच गई तो !

[हाथी चला जाता है। फीस न मिलने पर डाक्टर बड़-बड़ाता है। इतने में जिराफ आता है।]

डाक्टर : जिराफ भाई, यह बताओ तुम्हारे सिर में दर्द है ?

जिराफ : नहीं, डाक्टर साहब !

डाक्टर : फिर मेरे पास क्यों आए हो ?

जिराफ : दो दिनों से मेरी नाक टपक रही है। पता नहीं, क्या कारण है।

डाक्टर : तुम्हें जुकाम है। यदि सिरदर्द होता तो डाक्टर चुनचुन की एक ही टिकिया काफी थी।

जिराफ : मुझे तो आपने जुकाम बताया है। इसका इलाज करें।

डाक्टर : इसका इलाज जरा मुश्किल है। तुम्हारी गरदन लंबी तथा ऊंची होने के कारण तुम्हारी नाक पर बादलों और ठंडी हवाओं के हमले होते रहते हैं। इन हमलों से अपनी नाक को बचाओ और किसी बड़े अस्पताल में जाकर अपनी गर्दन का आपरेशन करवाकर इसे छोटी करवा लो। और मेरी इस सलाह की फीस देते जाओ।

जिराफ : फीस के पैसे मेरे पास नहीं है। मैं अपनी गर्दन का कटा हुआ हिस्सा आपके पास भिजवा दूंगा। उसकी चमड़ी से आपकी पत्नी के लिए नवीनतम डिजाइन की साड़ियां तैयार हो जाएगी। उसे फीस मान लेना।

[जिराफ चला जाता है। फीस न मिलने पर डाक्टर चुनचुन मायूस हो जाता है। थोड़ी देर बाद अपने कान सहलाते हुए खरगोश आता है।]

डाक्टर : आइए, मिस्टर खरगोश कुमार ! क्या आपको हेडेक है ?

खरगोश : हां श्रीमान, मेरे हेड एक ही है !

डाक्टर : मेरा मतलब है क्या तुम्हें सिरदर्द है ?

खरगोश : अच्छा अच्छा, हेडेक का अर्थ सिरदर्द होता है। मुझे इयरेक यानी कानदर्द है। मेरे दोनों कानों में जोरों की धू धू हो रही है। कोई दवा दीजिए न !

डाक्टर : अगर तुम्हे सिरदर्द होता तो मैं ऐसी दवा देता कि लेते ही दर्द गायब।

खरगोश : मुझे बहुत अफसोस है कि मुझे सिरदर्द नहीं है। कृपया मेरे कानों का इलाज करें।

डाक्टर : इसके लिए आपको किसी बड़े अस्पताल में जाना पड़ेगा।

खरगोश : क्यों ? क्या आपके पास सिरदर्द के सिवाय कोई दर्द नहीं है ? मेरा मतलब है, आपके पास सिरदर्द को दवा के सिवाय कोई दवा नहीं है ?

डाक्टर : लेकिन तुम्हारे कानों का इलाज दवाओं से नहीं, आपरेशन से होगा। तुम्हारे कान लंबे और गुदगुदे हैं। तुम दौड़ते भी काफी तेज हो। दौड़ने से तुम्हारे कानों में हवा तेजी से घुसती है। लंबे और गुदगुदे कान तेज हवा नहीं सह सकते। इन्हें कटवा कर छोटे करवा लो। इस महत्वपूर्ण सलाह की फीस देते जाओ।

खरगोश : मैं बड़े अस्पताल जा रहा हूं। वहां अपने कान कटवाऊंगा। कटे हुए कान आपको भिजवा दूंगा। आपकी कुरसियों के लिए नरम नरम गद्दी बन जाएगी। वही आपकी फीस होगी।

[खरगोश चला जाता है। इससे भी फीस न मिलने पर डाक्टर चुनचुन की मायूसी बढ़ जाती है। ठुमुकती चाल से गधा आता है।]

डाक्टर : बोल, क्या बात है ?

गधा : मिस्टर डाक्टर, मैं इस नगर का सम्मानित नागरिक श्रीमान गधाधरजी हूं। आप मुझसे यूं रूखेपन से बात क्यों कर रहे हैं ?

डाक्टर : अच्छा श्रीमान गधाधरजी, आपको क्या तकलीफ है ? सिरदर्द है ?

गधा : आह सिरदर्द ! भले लोग इसे मस्तक वेदना कहते हैं। देखिए डाक्टर साहब, मेरा मस्तक कैसा दमक रहा है। ध्यान से देखिए, इसमें आपको बुद्धि का विशाल भंडार साफ दिखाई देगा !

डाक्टर : हे विशाल बुद्धिसागर, अपनी तकलीफ बताओ। मेरे पास वक्त कम है।

गधा : मुझे कई बीमारियां हैं। मुझे दिल के दौरे पड़ते हैं, पेट के दौरे पड़ते हैं, लातों के दौरे पड़ते हैं, बातों के दौरे पड़ते हैं। कभी कभी...

डाक्टर : सिरदर्द के दौरे...

गधा : आप अभी इस मनहूस बीमारी को भूल जाए। हां, मैं दौरों का

जिक्र कर रहा था। जब मुझे दिल का दौरा पड़ता है, तब मैं अपने आपको श्रीमान गधाधरजी न समझकर जंगल का राजा शेर समझने लग जाता हूं। भला हो मालिक के डंडे का, जो ऐन मौके पर मुझे इस दौरे से बाहर निकाल लेता है। जब पेट का दौरा पड़ता है तब मैं विटामिनों वाला भोजन 'चीथड़े' छोड़कर हरी घास चरने लग जाता हूं। जब लातों का दौरा पड़ता है तब हवा को अपना दुश्मन समझकर, हवा में दुलत्तियां झाड़ने लग जाता हूं। कभी आगे की दुलत्ती तो कभी दोनों, आगे-पीछे की, एक साथ उछाल देता हूं। ऐसा करते ही धरती पर गिर पड़ता हूं। उस वक्त मुझे धरती हिलती हुई महसूस होती है। डर है, किसी दिन सरकार मुझे भूकंप लाने के जुर्म मे पकड़कर जेल में न ठूंस दे। जब बातों का दौरा पड़ता है तब चाहे तपती दुपहरी हो या शीतल चांदनी, मैं ढेंचू ढेंचू की धुन पर रेंक संगीत सुनाने लग जाता हूं। उसे सुनकर कइयों को नींद आ जाती है, तो कइयों की नींद हराम हो जाती है। जिनकी नींद हराम हो जाती हैं वे आते हैं और डंडों से मेरी पीठ पर अपना नाम लिख जाते हैं। किसी की पीठ पर...

डाक्टर आपकी बातें सुनकर सिरदर्द का दौरा मुझे पड़ा है। यह देखिए, मैं दवा लेता हूं (**डाक्टर चुनचुन एक टिकिया अपने मुंह में रखता है**) आपके रोग दूर करने की दवा यह है कि आप यहां से दूर किसी निर्जन स्थान पर जाकर दोपहर का इंतजार करें। जब तपती दुपहरी का शुभ समय हो तब गरम गरम गर्द-मिट्टी में लोटिए-पोटिए। फिर खड़े होकर एकलत्ती, दुलत्ती और चौलत्तियां झाड़िए। ढेंचू ढेंचू के स्वर से धरती-आकाश को गुंजा दीजिए। पेट के दौरे, अक्ल के दौरे और दिल के दौरे के लिए मालिक के डंडों का इंतजार करिए। अब आप यहां से जल्दी चले जाएं वरना मुझे दूसरी बार सिरदर्द की दवा लेनी होगी। जाइए, जाइए, मैं आपसे फीस भी नहीं मांग रहा हूं।

[गधा चला जाता है। डाक्टर निढाल होकर कुरसी पर पसर जाता है। इतने में उसे खतरे की घंटी 'म्याऊं' सुनाई देती है। वह चौकन्ना हो जाता है। पीले रंग की साड़ी पहने, इठलाती हुई बिल्ली रानी आती है।]

बिल्ली : *म्याऊं !*

डाक्टर : हलो, आंटीजी, आपने आने की तकलीफ क्यों की ? फोन कर देती, मैं खुद ही आपके पास भागा आता।

बिल्ली : प्यासे को ही कुएं के पास जाना पड़ता है। कुआं प्यासे के पास नहीं आता।

डाक्टर : मौसी रानी, कैसा कुआं और कैसी प्यास ! मैं सिर पर पांव रखकर आता आपके पास। आप मुझे बहुत अच्छी लगती हैं। आपको देखकर मुझे नानी याद आ जाती है।

बिल्ली : अब बंद भी करो यह चापलूसी। मैं अपना इलाज कराने आई हूं।

डाक्टर : ओह, मैं समझा, आप मेरा नाश्ता करने आई हैं।

बिल्ली : ओह, मैं तो लंच डकार के आई हूं।

डाक्टर : थैंक्यू आंटी, कहो क्या तकलीफ है ? क्या सिरदर्द है ?

बिल्ली : नहीं, सिरदर्द नहीं है। मैंने अभी अभी पेट भरकर खाना खाया है, फिर भी पेट का एक हिस्सा खाली खाली सा लग रहा है।

डाक्टर : आप जरा एक्स-रे मशीन तक चलें। आपके पेट का एक्स-रे करूंगा।

[बिल्ली एक्स-रे मशीन के सामने खड़ी हो जाती है। मशीन की एक प्लेट पर पेट के अंदर का नजारा उभर आता है।]

डाक्टर : आंटी जी, लंच में आपने एक मछली, एक चिड़िया, पाव भर मलाई वाला दूध और एक टुकड़ा डबलरोटी का लिया है।

बिल्ली : वेरी गुड, तुम्हारी डाक्टरी और यह मशीन दोनों कमाल के है और क्या है मेरे पेट में ?

डाक्टर : एक कोना खाली नजर आ रहा है।

बिल्ली : बस बस, यही रोग का घर है। इसका इलांज करो।

डाक्टर : मौसी, यदि आपको सिरदर्द होता तो मैं फौरन ठीक कर देता। आपके इस खाली कोने का इलाज तो किसी बड़े अस्पताल में हो सकेगा और वह भी आपरेशन के द्वारा।

बिल्ली : यह तो तुम्हें ही करना पड़ेगा।

डाक्टर : आपका आपरेशन भला मैं क्यों न करूंगा ? हमारा तो जन्म जन्म का संबंध है। चूहा-बिल्ली और डाक्टर-रोगी का प्यार तो संसार के प्रसिद्ध प्यारों में से एक है। लेकिन...

बिल्ली : लेकिन-वेकिन कुछ नहीं। इलाज करना है तो करो, नही तो...

डाक्टर : लेकिन बात यह है कि आपरेशन करने से पहले आपको बेहोश करना पड़ेगा, क्योंकि बिना बेहोश किए चीर-फाड़ करने पर आपको ज्यादा दर्द होगा। मेरे पास बेहोशी की दवा नहीं है।

बिल्ली : न, न, मैं चीर-फाड़ कतई पसंद नहीं करती।

डाक्टर : बिना चीर-फाड़ किए पेट के अंदर का आपरेशन कैसे होगा?

बिल्ली : पेट के अंदर का आपरेशन। (कुछ देर सोचकर) तुम यूं करो, मैं मुंह फाड़कर बैठ जाती हूं, तुम मुंह के रास्ते पेट में चले जाओ और अपना काम करके वापस लौट आना।

[यह कहकर बिल्ली अपना मुंह खोलकर बैठ जाती है। चुनचुन समझ जाता है कि चूहे खाने का यह अहिंसक तरीका है। डाक्टर चुनचुन कुछ सेकेंड सोचता है और फिर सिरदर्द की गोलियों की थैली और बुद्धू हकीम यूनियन का सर्टिफिकेट बिल्ली के मुंह में ठूंस कर भाग जाता है।]

(१९७३)

ये भी धरती के बेटे हैं

□ ओमप्रकाश आदित्य

पात्र

पिता — जेबकतरा बालक

पुत्र — तस्कर बालक

भिखारी बालक

[मंच पर मद्धम प्रकाश है। पिता-पुत्र चले जा रहे हैं। पार्श्व में कुछ मिली-जुली आवाजें उभरती हैं।]

हम भूखे है। हम नंगे हैं। हम बेघर हैं।

पुत्र : ये किसकी आवाजें, ये कैसी आवाजें? सुनो, पिताजी, उधर सुनो, ये कौन लोग है?

[पार्श्व में पुनः आवाजें]

ओ बाबू दो पैसे दे दे। ईश्वर तेरा भला करेगा। ओ माता बासी रोटी का टुकड़ा दे दे। फटा-पुराना कपड़ा दे दे।•

'आगे चल, आगे बढ़, चल हट। शर्म नहीं आती बे, तुझको भीख मांगते।'

'फेंटे में क्या है?' 'कुछ नहीं।' 'दिखाओ!' 'घड़ियां!' 'ये कैसी घड़ियां हैं?' 'स्मगलिंग का धंधा करता है, अबे चरकटे।'

[तड़ातड़ थप्पड़ों की आवाज]

'मेरी जेब। कट गई मेरी जेब। वो भागा। वो भागा लड़का! पकड़ो, पकड़ो!'

[दौड़ने की आवाजें]

'क्यों बे! क्यों बे, जेब काटता है. चोरी करता है। मारो, मारो। इसको पीटो, पीटो।'

[थप्पड़ों की आवाजें]

पुत्र : सुना पिताजी! सुना आपने! कौन लोग थे? कौन पीटता है इनको यों! क्या चक्कर है?

पिता : बेटा, ये बच्चे हैं! छोटे छोटे बच्चे! ये बुरे काम करते हैं। कोई जेब काटता, भीख मांगता कोई। कोई स्मगलिंग का धंधा

करना है। पुलिस पीटती है इनको। ये सब समाज को दूषित करते हैं। गंदगी बिखेर रहे हैं।

पुत्र : क्यों करते हैं बुरे काम ये ? क्या इनके मां-बाप नहीं हैं ?

[प्रकाश उभरता है। मंच के दांई ओर से एक लड़का भिक्षा का पात्र लिए प्रवेश करता है, उसके पीछे दो-तीन बच्चे और हैं।]

भिखारी : हां, मेरे मां-बाप नहीं हैं। वे अंधे हैं। उनका होना न होने से भी ज्यादा वेदनापूर्ण है।

[मंच के बाईं ओर से जेबकतरे और तस्कर का प्रवेश, उनके पीछे भी कई बच्चे और हैं।]

जेबकतरा : मेरे तो मां-बाप नहीं हैं। मैं अनाथ हूं। मेरा कोई नहीं कहीं पर।

तस्कर : मेरी मां है, पिता नहीं है।

पिता : क्या करते हो ? तुम सब क्या धंधा करते हो ?

भिखारी : भीख मांगता हूं मैं दर दर।

जेबकतरा : मैं लोगो की जेब काटता, चोरी करता।

तस्कर : माल इधर का उधर, उधर का इधर। बड़े बड़े तस्कर मुझसे यह काम कराकर मुझको भी टुकड़ा-दो टुकड़ा दे देते हैं।

पुत्र : पर ये तो सब बुरे काम हैं !

पिता : शर्म नहीं आती तुमको यों भीख मांगते, जेब काटते, चोरी करते, स्मगलिंग करते ? डूब मरो तुम !

भिखारी : हमें पता है भीख मांगने से मरना ज्यादा अच्छा है। लेकिन कैसे मरें छोड़कर अपने अंधे मात-पिता को। पापी पेट नहीं होता तो हम यों हाथ नहीं फैलाते। दर दर नहीं मांगते फिरते।

जेबकतरा : जेब काटकर अपना जीवन नहीं काटते।

तस्कर : गुंडों के हाथों में पड़कर ऐसे गंदे काम न करते।

पुत्र : क्या तुमको एहसास नहीं होता, तुम कितने अपमानित हो !

पिता : जनता की नजरों में कितने गिरे हुए हो ! क्या तुम भी इंसान नहीं हो !

भिखारी : हमें पता है, हम भी धरती के बेटे हैं।

जेबकतरा : लेकिन किस्मत के हेटे हैं।

तस्कर : गंगा-जमुना की धारा से बिछुड़ गंदगी में लेटे हैं। हमें गंदगी से निकाल लो।

तीनों : हमें गंदगी से निकाल लो।
भिखारी : हम गरीब हैं, लेकिन इतने बुरे नहीं हैं।
तस्कर : जितना लोगों ने समझा है।
जेबकतरा : हम मजबूरी के हाथों में पड़े हुए हैं।
भिखारी : हम बदकिस्मत भिक्षा के टुकड़ों पर पलकर बड़े हुए हैं।
तस्कर : हमको राह बता दे कोई। हम भूले-भटके राही हैं। चौराहे पर खड़े हुए हैं।
पुत्र : क्या तुम स्कूल नहीं जाते हो ?
तस्कर : हम अनपढ़ हैं। हमें क्या पता कालिज-स्कूल किसे कहते है।
भिखारी : कांटे ही जिंदगी हमारी। हमें क्या पता सुंदर फूल किसे कहते हैं।
जेबकतरा : हम भंवरों में फंसे हुए हैं। हम क्या जानें जग में कूल किसे कहते हैं।
पुत्र : क्या तुम पढ़ने के इच्छुक हो ?
तस्कर : हां, हां, हां, हां। कौन नहीं पढ़ना चाहेगा ! अनपढ़ लोगों का जीवन है पशुओं जैसा।
जेबकतरा : पढ़कर-लिखकर कौन नहीं बढ़ना चाहेगा।
भिखारी : उन्नति के ऊंचे शिखरों पर कौन नहीं चढ़ना चाहेगा।
पिता : ऐसा अगर सोचते हो तो बुरे काम क्यों करते हो फिर ?
भिखारी : और क्या करें ?
तस्कर : कहां जाएं हम ?
जेबकतरा : कैसे जीएं ?
पिता : काम करो कुछ। काम करो कुछ।
जेबकतरा : सब कहते हैं काम करो कुछ, काम करो कुछ। लेकिन, करने को कोई कुछ काम न देता।
भिखारी : कोई ऐसा धनी नहीं है जो हम पर कुछ खर्च कर सके। जो हमको जिंदगी दे सके। जीवन की रोशनी दे सके।
तस्कर : सबको अपनी पड़ी हुई है। कौन दूसरे की सुनता है।
जेबकतरा : फूल बीनने वाले हैं सब, कांटे कौन यहां चुनता है ?
पुत्र : कौन काम तुम कर सकते हो ?
तस्कर : जो मिल जाए।
पुत्र : जो मिल जाए।
जेबकतरा : जैसा भी हो। हम घर घर सब्जी बेचेंगे।
तस्कर : जूतों पर पालिश कर लेंगे।

भिखारी : हम घर में नौकर रह लेंगे। कपड़े धोएंगे, बरतन मार्जेंगे। घर को साफ रखेंगे। पर हमको अपनाए कोई, हमें सुधरने का अवसर दे।

[पुत्र पिता की ओर देखता है]

पुत्र : इन्हें ले चलो, इन्हें ले चलो। इन्हें स्कूल में भर्ती कर दो। इन्हें काम दे देंगे घर का। काम करेंगे, पढ़ें-लिखेंगे। इनका जीवन सुधर जाएगा।

पिता : ये भिखमंगे, चोर, उचक्के, इनको कैसे घर ले जाएं।

पुत्र : नहीं पिताजी, ये नफरत के पात्र नहीं हैं। लाचारी ने इनको ऐसा बना दिया है। ये भी भारत के बच्चे हैं। इनमें-मुझमें फर्क नही है। आप धनी हैं। इनका जीवन सुधर गया तो सभी आप के गुण गाएंगे। पढ़-लिखकर अच्छे कामों में लगकर ये भी भारत मां के सच्चे बच्चे कहलाएंगे। इन्हें ले चलो।

[पुत्र पिता से आग्रह करते हुए मचलता है। पिता के चेहरे पर हलकी मुसकान आती है।]

पिता : अच्छा, तुम सब मेरे साथ चलोगे ? जो जो काम तुम्हें मैं दूंगा, सब कर लोगे !

सब : हां, हां, बेशक। आप धन्य है, आप धन्य हैं। धनी-उदार आप जैसे सब हो जाएं तो कोई बच्चा भीख न मांगे, जेब न काटे। सबके दुख सुख में बंट जाएं। हम अनाथ बच्चों के सिर से मुसीबतों के ये काले बादल हट जाएं।

हम जीवन भर सदा आपके गुण गाएंगे। भारत का झंडा हम भी अब अपने इन उज्ज्वल हाथों से फहराएगे।

पर्दा गिरता है

नाटक जो नहीं हो सका

☐ केशव दूबे

पात्र

शहंशाह अकबर	अनारकली
सलीम	प्रांपटर
मानसिंह	पर्दा खींचने वाला
चोबदार	इदरीस मास्टर

दर्शकगण

स्थान : स्कूल का रंगमंच, खुले मैदान में।

समय : स्नेह सम्मेलन की एक रात्रि।

[शहंशाह अकबर का दरबार। शहंशाह का ऊंचा-पूरा कद है, तना हुआ शरीर। अधेड़ उम्र, बड़ी बड़ी सफेद मूंछें, जो चेहरे पर मजबूती से चिपकी हैं। लकड़ी की, सफेद पन्नी जड़ी तलवार, तख्त से टिकी है। सिंहासन, याने एक ऊंची कुरसी पर (ठीक वैसी, जैसी हजामत की दुकान पर होती है) शहंशाह अकबर बैठे हैं। दरबारी सिर झुकाए खड़े हैं। सबसे आगे राजा मानसिंह। शहंशाह विचारमग्न हैं। हाथ मलते हुए मानसिंह से कहते हैं।]

शहंशाह : हम तुमसे कह रहे हैं मानसिंह, तुमसे। यह क्या गजब हो गया! हमें तो खबर ही न हुई। सलीम—हमारा लड़का, हमारी इजाजत के बगैर अनारकली से शादी करना चाहता है?

मानसिंह : साहबजादे का लड़कपन है सरकार! समझ जाएंगे।

शहंशाह : कब समझेंगे? ऐसी गुस्ताखी पहले किसी ने नहीं की? नहीं, नहीं...लड़के हैं तो क्या हुआ, उसूल सबके लिए बराबर है।

मानसिंह : सिर्फ एक बार गौर कीजिए हुजूर...

शहंशाह : बिलकुल नहीं। उसे तुम समझा दो। अगर न माना, तो फिर हम फैसला देंगे।

मानसिंह : ऐसा न करना हुजूर! आपने फैसला दे दिया तो गजब हो जाएगा! बाप-बेटे की तलवारें टकराईं तो...

[शहंशाह कुछ कहते कहते रुक जाते हैं। कुरसी से उठकर खड़े हो जाते हैं। गुस्से में मुट्ठियां भींचते हैं। नथुने फुलाते-पिचकाते है और जोर से पैर पटकते हैं। फिर

कुरसी का हत्था पकड़कर जोर से खींचते हैं, जो एकदम हाथ में आ जाता है। प्रशंसा से अपने मजबूत बाजुओं को टटोलते हैं, दूसरे हत्थे पर जोर आजमाते हैं जो टस से मस नहीं होता। वे निराश होकर सिर झुका लेते हैं।]

शहंशाह : (**दुखी स्वर में**) अब हम बूढ़े हो गए। जवानी में माशाअल्ला दो कड़ियल पट्ठों को बगल में दबाकर आगरे के किले पर घोड़ा दौड़ाते थे। उफ्, उम्र ने हमको कितना लाचार बना दिया !

मानसिंह : धीरज रखें आका ! आज भी दक्खन से कंधार तक आपके नाम से थर्राता है। मुगलिया सल्तनत के पाये आज भी मजबूती से जमे हैं...

शहंशाह : और हत्था हमारे हाथ में...क्यों ? मानसिंह, ये नई उम्र के छोकरे नालायक हैं।

मानसिंह : आपका खयाल दुरुस्त है।

शहंशाह : और साहबजादे हमारे बारे में भी ऐसा ही सोचते हैं।

मानसिंह : उनका खयाल दुरुस्त है।

शहंशाह : (**चौंककर**) क्या बक रहे हो ? मानसिंह, तुम भंग पीकर तो नहीं आए ?

मानसिंह : आपका खयाल दुरुस्त...ऐं ! क्या कहा...हुजूर मुआफी चाहता हूं। दरअसल मैं साहबजादे के बारे में सोच रहा था।

शहंशाह : क्या सोच रहे थे ?

मानसिंह : यही कि उन्हें बुलाकर पूछा जाए कि आखिर मामला क्या है ?

शहंशाह : तुम मठिया गए हो। मगर शायद...तुम ठीक कहते हो ! शायद हमारी समझ में कुछ नहीं आ रहा (**कुछ सोचकर दृढ़तापूर्वक**) ठीक है। साहबजादे को हुक्म दो कि वह हमारे सामने हाजिर हो।

[वह उठकर चहलकदमी करने लगते हैं। तीन-चार दरबारी सिर झुकाए खड़े हैं। मानसिंह बार बार सिर खुजाते हुए पगड़ी जमाते हैं। शहंशाह उन्हें देखकर खीज उठते हैं।]

शहंशाह : क्या बदतमीजी है ? दरबार में सिर खुजलाते हो !

मानसिंह : हुजूर...

शहंशाह : चुप रहो। बोलो, तुम्हें दरबार का कायदा नहीं आता ?

मानसिंह : अन्नदाता...

शहंशाह : बस, एक जवाब। सिर क्यों खुजला रहे थे ?

[मानसिंह घबराए से बगलें झांकते हैं। अपने आप बुदबुदाते हुए—'कमबख्त ये डायलाग कहां से आ गया ? अब क्या जवाब दूं ?']

शहंशाह : तुमने सुना नहीं मानसिंह ?

मानसिंह : (हकलाते हुए) जी...जी...वो शाम को कटिंग कराई थी। ड्रामा...अरे, अरे...दरबार में पेश होना था (फिर ठंडी सांस खींचते हैं)

[शहंशाह तमतमाए चेहरे से उस ओर देखते हैं। तभी बुलंद आवाज गूंजती है—बा-अदब, बा-मुलाहिजा होशियार ! वली-अहदे सल्तनत, हुजूर शाहजादे सलीम तशरीफ ला रहे हैं...शहंशाह बैठ जाते हैं। सलीम निर्भीकता से चारों तरफ देखते भीतर आते हैं। दरबारियों की झुकी गर्दन देखकर व्यंग्यपूर्वक हंसते हैं।]

शहंशाह : (कोमल स्वर में) आओ बेटे, यहां आ जाओ, हमारे पास।

सलीम : (तीखी आवाज में) यह दरबार है, सिर्फ सरकारी बातें कीजिए हुजूर ! आपने हुक्म दिया, हम हाजिर हो गए।

शहंशाह : बाप से जुबान लड़ाते हो ? तैमूरी खानदान का असर, मुगलिया नस्ल का अदब...

सलीम : छोड़िए हुजूर ! जब पचास बरस के हो जाएंगे तब हम भी ऐसी ही बातें करने लगेंगे। फिलहाल हमें हुक्म कीजिए।

शहंशाह : (गरजकर) सलीम !

सलीम : (धीरे से) जब तक चीखें-चिल्लाएं नहीं तो पता कैसे चलेगा कि शहंशाह हैं। (कुछ रुक कर) आपको संग्रहणी है, जिस्म और दिमाग पर ज्यादा जोर मत डालिए।

[शहंशाह तिलमिला कर उठ खड़े होते हैं। कुरसी पर घूंसा मार कर फिर बैठ जाते हैं।]

शहंशाह : (दुखी स्वर में) तुम पर इल्जाम है, तुम नाचने-गाने वाली एक लड़की को प्यार करने लगे हो। हमारी पिछली सात पीढ़ियों में ऐसा नहीं हुआ। इश्क-मुहब्बत मामूली लोगों के काम हैं।

सलीम : हमने नासमझी का कोई काम नहीं किया।

शहंशाह : (अपनी ही रौ में) आजकल तुम सल्तनत के जरूरी काम-काज भूल गए हो। न शिकार पर जाते हो, न गाना-बजाना सुनते हो। खुफिया खबर है कि तुमने तीतर-बटेर लड़ाना भी छोड़ दिया है।

सलीम : यह मेरा खुद का मामला है।

शहंशाह : यही तो मुश्किल है। तुम शाहजादे हो। कोई भी मामला सिर्फ तुम्हारा नहीं हो सकता?

सलीम : क्यों नहीं हो सकता?

शहंशाह : क्योंकि तुम मुगलिया सल्तनत के शाहजादे हो, जिसके कंधे पर हिंदुस्तान की सल्तनत का बोझ आने वाला है।

सलीम : ऐसी इबारतें 'आइने-अकबरी' में शोभा देती हैं, हुजूर। यह हमारे दिल का मामला है। हद है, आप अपनी तारीफों के पुल बंधवाएं और हमारी नाव डुबोते जाएं—ये कहां का इंसाफ है! हमारा फैसला सुन लीजिए—हम अनारकली से शादी करेंगे—बस!

[शहंशाह उठकर खड़े हो जाते हैं और हवा में घूंसा लहराते हैं।]

शहंशाह : बदतमीज! तुम्हें लोक-लिहाज, धर्म, किसी चीज का खयाल नही?

सलीम : कौन सा धर्म? दीन-इलाही? जिसे मानने वाला पूरे मुल्क में कोई तेरहवां आदमी पैदा नहीं हुआ? आपने अपनी उम्र में काफी चोचले कर लिए जहांपनाह! अब बुढ़ापे में तीन चीजों से वास्ता रखिए—खाट, खांसी और खुदा! क्यों दो दिलों की बद्दुआ लेते हैं।

मानसिंह : बेटे! शहंशाह तुम्हारे बाप हैं...

सलीम : इसका हमें जिंदगी भर अफसोस रहेगा। और आप तो बोलिए ही राजा मानसिंह...चापलूसी करना आपका फर्ज है और ये गुलाम तलवे चाटने वाले दरबारी...

[शहंशाह पूरी ताकत से चीखते हैं—सलीम! और मुड़कर बगल में रखी तलवार झटके से उठा कर हवा में हिलाते हुए आगे बढ़ते हैं।]

शहंशाह : ऐसी नालायक, गद्दार औलाद से तो हम निपूते ही अच्छे...

[चारों ओर सन्नाटा छा जाता है। मानसिंह चीख मारते हैं।]

मानसिंह : रुकिए जहांपनाह ! रुकिए !

[सलीम पत्थर की मूर्ति बने खड़े रहते हैं।]

सलीम : (**अचानक जोर से हंसते हुए**) ऐ मुल्क के बादशाह...देख, तेरी काठ की तलवार की पन्नी निकल गई।

[दर्शकों में एक जोर का ठहाका उठता है। शहंशाह का हाथ जहां का तहां रुक जाता है और दरबारी मुंह बाए देखते रह जाते हैं। सचमुच तलवार पर चढ़ा पन्नी का खोल निकल कर गिर गया है और लकड़ी की कमजोर खुरदरी तलवार शहंशाह के हाथ में है। वे घबराकर पसीना पोंछते हैं। चारों ओर चोर निगाहों से देखते हैं और गुस्से में चीखते हैं।]

शहंशाह : किस गधे ने यह नकली तलवार रख दी यहां ? असली किधर गई ?

[सलीम लगता है पूरी तौर पर विद्रोह करने पर उतर आए हैं।]

सलीम : (**व्यंग्यपूर्वक हंसते हुए**) ऐसे दो कौड़ी के बादशाह को क्या असली तलवार मिलेगी ?

शहंशाह : (**भर्राए स्वर में**) तुम्हारी जुबान काफी लंबी हो गई है सलीम।

सलीम : जुबान की लंबाई नापने का काम सौंप दीजिए राजा टोडरमल को...पड़े पड़े मुफ्त का खाते हैं आखिर !

शहंशाह : शर्म नहीं आती बाप के सामने...

सलीम : चुप रहो। अगर हमने इदरीस मास्टर को ज्यादा मक्खन मारा होता, तो आज हम तुम्हारे बाप होते और तुम सलीम बने खड़े रहते यहां...

[दर्शकों में हंसी का तूफान मच जाता है। तरह तरह की आवाजें उठ रही हैं, तालियां पिट रही हैं। शहंशाह बुरी तरह घबरा कर, सिर्फ पसीना पोंछते खड़े रह जाते हैं। बार बार मदद के लिए दरबारियों के चेहरे देखते हैं।]

शहंशाह : (**रुआंसे स्वर में**) तुम्हें क्या हो गया है बेटे...अरे कोई जाओ... शाही हकीम को बुलाओ...शाहजादे पागलों जैसे बक रहे हैं।

सलीम : अब तो तुम हकीम लुकमान को भी बुला लाओ तो हम न रुकने के। तुम्हारे दरबार की चिंदिएं बिखेर कर रख देंगे आज।

शहंशाह : मानसिंह ! ये गुफ्तगू दरबारी कार्यवाही से निकाल दी जाए। इसका कहीं जिक्र न हो—'आइने-अकबरी' में भी नहीं।

सलीम : आपकी 'आइने-अकवरी' को पूछता कौन है टके में ? हुजूर, जमाना उसी चीज को याद रखेगा, जिससे उसका पाला पड़ता है। फिजूल की बातों को नहीं। वक्त गुजर जाएगा। लोग 'आइने-अकबरी' को भूल जाएंगे। मगर 'सलीम शाही जूता' चलता रहेगा।

शहंशाह : मिर्जा राजा मानसिंह ! तुम्हीं शाहजादे को समझाओ।

मानसिंह : हुजूर ! हमने पूरे ड्रामे का एक एक वाक्य रटा है। मगर अभी जो आप लोगों के डायलाग चल रहे हैं वे सपने में भी नहीं सुने। हम क्या बताएं। हो सकता है, आज शाम की फाइनल रिहर्सल में जब हम हजामत बनवाने गए थे, तभी कुछ नया जोड़ा गया हो। हम आपसे ज्यादा लाचार हैं, जहांपनाह !

[दर्शक हंसते है।]

सलीम : वो क्या बताएगा। बेटा अकबर ! हमको अनारकली मिले न मिले, तुम्हारी तो बखिया उधेड़ ही देंगे।

[शहंशाह चक्कर काटते हुए अपने पीछे लटके लाल पर्दे मे सटकर खुसर-फुसर करते है। परेशानी की हालत मे खड़े पसीना पोंछते हैं। पर्दा बार बार हिलता है। खुसफुसाहट तेज होती जा रही है...बताओ, बताओ मैं क्या बोलूं ? ये साला ऊटपटांग बक रहा है।

पर्दे के पीछे मे प्रांपटर की आवाज—मैं क्या बताऊं यार। पूरी स्क्रिप्ट पलट रहा हूं। ऐसे वाहियात डायलाग हैं ही नही...जैसे बने संभालो, वरना देखनेवाले जूते बरसा देंगे...]

सलीम : प्रांपटर क्या बतलाएगा, अब्बा हुजूर। खुदा को याद कीजिए। बाबा को याद कीजिए। इदरीस मास्टर को याद कीजिए। इसी गरीब शाहजादे का रिहर्सलों में मजाक उडाते थे आप लोग। फटकारते थे, हुकुम चलाते थे, तब याद नहीं आता था ? आज शिटल्ली नाई की कुरसी पर बैठकर सोचते हैं हिंदुस्तान का तख्त मिल गया, ऐं ?

[दर्शकों ने हल्ला-गुल्ला का तूफान मचा दिया है... 'बंद करो...चलने दो...पूरा देखेंगे' की आवाजें। दर-

बारी घबराकर सलीम को घेर लेते हैं। सलीम छिटककर बीच से निकल जाता है। 'पर्दा गिराओ, पर्दा गिराओ' की आवाजें।]

सलीम : (**चीखते हुए**) खबरदार ! कोई पर्दे को हाथ न लगाए। इतनी बड़ी हुकूमत के खिलाफ इस अकेले निहत्थे शहजादे की बगा-वत...बगावत जिंदावाद !

शहंशाह : चोबदार ! हमारा हुक्म है।

सलीम : हरगिज मत सुनना चोबदार ! तुम भी हमारे जैसे सताए हुए आदमी हो। पिछले तीन ड्रामों से तुम लगातार क्या बनते आए हो—चोबदार या चौकीदार। शहंशाहों, बादशाहों, राजों-महाराजों के दिन लद गए। इस बादशाह और इसके नकली चापलूस दरबारियों के खिलाफ बगावत कर दो। इन्हें धूल में मिला दो। जमींदोज कर दो।

[सब जगह भयंकर शोर मच जाता है।]

शहंशाह : (**हांफते हुए**) अच्छा बाबा...अच्छा। अनारकली ले लो... जितनी नाचने-गाने वाली छोरियां पसंद आएं, सब ले लो। मगर (**हाथ जोड़कर**) हमें बख्शो !

सलीम : अनारकली ? मुलायमचंद को साड़ी-ब्लाउज पहनाकर हमें और ये सामने बैठी रिआया को धोखा देते हो ?

शहंशाह : (**पूरी ताकत से**) हम तुम्हें तोपदम कर देंगे, सलीम !

सलीम : बारूद गीली हो चुकी है।

शहंशाह : दरिया में फेंक देंगे।

सलीम : हमारे लिए दरिया भी कम पड़ेगा। आपके लिए चुल्लू भर पानी काफी है।

शहंशाह : तुम्हें जिंदा दीवार में चुनवा देंगे।

सलीम : ऐसा चूना नहीं बना, जो हमें चुन दे। (**दर्शकों से**) अए हिंदुस्तान की रिआया ! ये पूरा दरबार...ये पूरी सल्तनत बोगस है। ये उधार का तख्त, उधार की ताम-झाम...उधार के दरबारी...खुद्दार राजपूत राजाओं के चूड़ीदार पाजामे जिनके कलफ के पैसे उधार हैं...ये मांगी हुई पगड़िएं, रटे हुए डायलाग, पुते हुए चेहरे, मिर्जा राजा मानसिंह, जो मम्मी की चप्पलें डाटकर रूबरू पेश हैं—और खुद हमारे बाप शहंशाह, जिनके दिल में खुदा से ज्यादा खौफ मास्टर इदरीस का है...इन सबके खिलाफ बगावत कर दो !

शहंशाह : **(रोते हुए)** सलीम...

[भीड़ धूल-मिट्टी फेंक रही है। पत्थर, सड़े टमाटर के दो-चार टुकड़े स्टेज की तरफ आते हैं।]

सलीम : खुदा को याद कर बूढ़े...इंकलाब का तूफान आ रहा है। वो देख...लाल आंधी उठ रही है। घोड़ों की टापें...तलवारों की झनझनाहट...बच, वो तोप का गोला आया...मुल्क की जनता ने बगावत कर दी है...आओ, आओ...किले के दरवाजे खुले हैं। ईंट से ईंट बजा दो ! **(वह पर्दे से चिपट जाता है)** खबर-दार जान चली जाए...परवाह नहीं। पर्दा नहीं गिरने देंगे। मारो-काटो...पूरे दरबार को मिट्टी में मिला दो !

[शहंशाह और सब दरबारी मिलकर सलीम को दबोच लेते हैं। हाथ-पांव पकड़कर उठा लिया है और उसे झुलाते हुए ले जा रहे हैं।]

सलीम: **(पूरी ताकत से मुकाबला करते हुए)** सलीम का बलिदान बेकार नही गया। अब चाहे तुम हमें सजाए मौत दे दो। मगर मुल्क की रिआया ने तुम्हारी ऐसी की तैसी कर दी...हमें खुशी है...

[भीड़ स्टेज पर चढ़ गई है। सब सामान तितर-बितर हो गया है। धूल-मिट्टी अब भी आ रही है...स्वयं-सेवक इधर-उधर दौड़ते व्यवस्था करने में लगे हैं।]

(माइक पर आवाज) भाइयो, शांत रैये...हमें अती खेद है की...

सलीम : **(नेपथ्य से)** हाय ! हमने तुमसे बदला ले लिया शहंशाह— अब्बा...खानदानी बदला। अब हमारी रूह जहां भी रहेगी, शांत रहेगी ! हमें खुशी है...खुशी है...आमीन !

[चीख-पुकार-भयंकर कोलाहल, माइक खराब। गहरी खामोशी। स्टेज पर घुप्प अंधेरा छा जाता है।]

(१९७५)

मालिक की सेवा

□ डा० रामकुमार वर्मा

पात्र

ईश्वर दयाल   सेवाराम

[**एक धनी-मानी** गृहस्थ का घर। कमरा सजा हुआ, किंतु **चीजें** अस्त-व्यस्त हैं। कुरसियां उल्टी-सीधी रखी हुई हैं। तिपाई लुढ़की है। एक **बक्स** खुला पड़ा है। **टेबल क्लाथ** गमले में पड़ा है। फूलदान औंधा रखा है।]

ईश्वरदयाल : (**क्रोध से नौकरों को डांटते हुए**) कम्बख्त सब कहां मर गए। दो रोज के लिए बाहर क्या जाता हूं, मकान की हुलिया ही बिगड़ जाती है। यह सामान देखो, जैसे कमरे में भूकंप आ गया हो और सब सामान उलट-पलट गया हो। जब मैं घर में रहता हूं तो कम्बख्त सब हाथ जोड़े खड़े रहते हैं। बाहर गया तो सब नौकर से मालिक बन जाते हैं। (**जोर से पुकारते हुए**) अरे सेवाराम! खूबचंद! रामनरायन! कम्बख्त कोई नहीं। (**अधिक जोर से**) अरे कोई है?

सेवाराम : (**नेपथ्य से**) आया सरकार!

ईश्वरदयाल : (**मुंह चिढ़ाते हुए सेवाराम की आवाज में**) नाम सेवाराम, पर सेवा से कोई वास्ता नहीं। मालिक की सेवा करने के बदले खुद अपनी सेवा चाहते हैं। (**दांत पीसकर**) गधे कहीं के!

[सेवाराम का प्रवेश।]

सेवाराम : (**हाथ जोड़ कर**) सरकार!

ईश्वरदयाल : और सब नौकर कहां हैं? खूबचंद, रामनरायन?

सेवाराम : मुझे पता नहीं सरकार!

ईश्वरदयाल : तो तुझे किस बात का पता है? यह कमरा देखता है? कोई सामान अपनी जगह है? कुरसियां ऐसे पड़ी हैं, जैसे इनमें कुश्ती होने वाली है। तिपाई जैसे शीर्षासन करने जा रही है। क्या इसी तरह काम किया जाता है?

सेवाराम : सरकार, अब घर का काम करने में मेरा मन नहीं लगता।

ईश्वरदयाल : इसीलिए कमरे की यह हालत है। घर का काम नहीं करेगा तो क्या बाहर का काम करेगा? और वह नौकर क्या जो घर-

बाहर दोनों जगह का काम न देखे ?

सेवाराम : अब किसी जगह काम करने की इच्छा नहीं है, सरकार !

ईश्वरदयाल : 'सरकार, सरकार' कहता जाता है और काम से जी चुराता है।

सेवाराम : काम से जी नहीं चुराता, पर अब यह नौकरी मुझसे नहीं होगी।

ईश्वरदयाल : आजकल का जमाना ! नौकर सिर पर चढ़ गए हैं। (चिढ़ाकर) नौकरी मुझसे नहीं होगी। क्यों नहीं होगी ? क्या तेरे हाथ-पैर जवाब दे गए हैं ? तन-बदन में ताकत नहीं रही ?

सेवाराम : नहीं सरकार ! हाथ-पैर ठीक हैं। तन-बदन में ताकत भी खूब है।

ईश्वरदयाल : तो काम क्यों नहीं करेगा ?

सेवाराम : आपका काम नहीं करूंगा।

ईश्वरदयाल : अच्छा, यह हिम्मत ! मुंह पर जवाब देता है कि आपका काम नहीं करूंगा। तो किसका काम करेगा ? क्या कोई दूसरा मालिक मिल गया है ?

सेवाराम : जी हां, मिल गया है।

ईश्वरदयाल : अच्छा, इसलिए इतनी लापरवाही है। अब कोई दूसरा मालिक खोज लिया है। लेकिन सेवाराम, तुझे अनाथाश्रम से लाकर इतने दिनों रखा—खाना, कपड़ा, कोठरी, पैसा—सब कुछ दिया। क्या इसीलिए कि आगे चलकर तू मुझसे कहे कि आपका काम नहीं करूंगा ?

सेवाराम : सरकार, माफ कीजिए। आपने सब कुछ दिया, पर वह सब नहीं के बराबर है, सरकार !

ईश्वरदयाल : एक तमाचा लगाऊंगा, सिर टेढ़ा हो जाएगा। मेरा दिया हुआ नहीं के बराबर है। क्या मतलब ?

सेवाराम : उसकी कोई कीमत नहीं है, सरकार !

ईश्वरदयाल : जबान संभालकर बोल ! कम्बख्त कहीं का। मालूम होता है किसी बड़े मालिक के बल पर अपना होश-हवास खो बैठा है। लेकिन ऐसा कौन सा मालिक तुझे मिल गया ?

[सेवाराम चुप रहता है।]

ईश्वरदयाल : बोलता क्यों नहीं ? ऐसा कौन सा मालिक तुझे मिल गया ?

सेवाराम : अब क्या बतलाऊं, मुझे कैसा मालिक मिल गया ! उस मालिक का नाम है—(रुककर) अभी नहीं बतलाऊंगा, सरकार !

ईश्वरदयाल : अभी कह रहा था कि बतलाता हूं। फिर कह दिया कि नहीं बतलाऊंगा। क्या मैं तेरे नए मालिक की खुशामद करूंगा कि सेवाराम को मेरी नौकरी से न हटाए।

सेवाराम : आप क्यों खुशामद करेंगे, सरकार !

ईश्वरदयाल : तो बतलाता क्यों नहीं ?

सेवाराम : देखिए सरकार, आप नाराज तो नहीं होंगे ?

ईश्वरदयाल : नाराज होने की क्या बात है ? जान तो लूं कि वह तेरा कैसा मालिक है, जिसके सामने मेरी कोई कीमत नहीं है।

सेवाराम : देखिए सरकार, पांच बातों से मैंने अपने नए मालिक को समझा है।

ईश्वरदयाल : पांच बातों से ? अरे तू एक ही बात बतला।

सेवाराम : देखिए सरकार, पहली बात तो यह है कि जब आप बैठते हैं तो मुझे हमेशा आपके सामने खड़ा रहना पड़ता है। लेकिन जब मैं अपने मालिक की सेवा करूंगा तो बैठ के सेवा करूंगा।

ईश्वरदयाल : लेकिन तुझे बैठने से कौन रोकता है ?

सेवाराम : सरकार, आपके सामने बैठ जाऊं, तो आप ही कहेंगे कि इस नौकर को मालिक का लिहाज नहीं है। पर, सरकार उस मालिक के सामने बैठने से कोई मनाही नहीं है।

ईश्वरदयाल : (कुतूहल से) अच्छा, बड़ा विचित्र है तेरा मालिक।

सेवाराम : दूसरी बात यह है सरकार, जब आप खाते हैं तो मैं आपको देखत हुआ पंखा डुलाता रहता हूं। पर मेरे नए मालिक ऐसे हैं कि जब उनके खाने के लिए मैं कुछ भी रखता हूं तो वह खुद तो कुछ नहीं खाते, मैं ही सब प्रेम से खा लेता हूं।

ईश्वरदयाल : (हंसकर) अजीब मालिक है तेरा !

सेवाराम : सरकार, तीसरी बात यह है कि जब आप सोते हैं तो मुझे सारी रात जागकर आपका पहरा देना पड़ता है। पर सरकार, अब जब मैं सोता हूं तब सारी रात मेरे मालिक मेरा पहरा देते हैं।

ईश्वरदयाल : मालिक पहरा देते हैं ? ऐसा कौन सा मालिक है जो रात भर नौकर का पहरा देता है।

सेवाराम : सरकार, इसीलिए तो कहता हूं कि मेरा नया मालिक सचमुच बड़ा मालिक है। एक बात बड़ी वैसी कहता हूं, आप नाराज हो जाएंगे।

ईश्वरदयाल : जब तू मेरी नौकरी छोड़ रहा है सेवाराम, तो नाराज होने

की बात ही क्या है ?

सेवाराम सरकार, भगवान आपको बहुत सालों तक जिंदा रखे पर दुनिया का तो यह नियम है कि किसी न किसी दिन सबको जाना पड़ता है। तो बहुत बरसों बाद जब आप इस संसार से जाएंगे, तब मैं बेसहारा हो जाऊंगा। फिर मैं कहां रहूंगा ? पर मेरा मालिक कभी नहीं मरेगा। वह सदा से है और सदा रहेगा। मैं अपने जीवन भर उसकी सेवा करता रहूंगा।

ईश्वरदयाल (हंसकर) अच्छा, अब मैं समझा कि तेरा वह मालिक कौन है। लेकिन यह मालिक है कहां ?

सेवाराम यहां, वहां, सब जगह, सरकार ! आप तो एक जगह हैं, वह सब जगह है। जहां घूमूंगा, वहीं उसकी परिक्रमा होगी। जहां लेटूंगा, वहीं उसको दंडवत प्रणाम करूंगा।

ईश्वरदयाल वाह, वाह सेवाराम ! तू तो बड़े बड़े संतों जैसी बातें करता है।

सेवाराम नहीं सरकार, कहां संत और कहां मैं ! यह तो अपनी अपनी समझ है।

ईश्वरदयाल : अच्छा और पांचवीं बात क्या है ?

सेवाराम : पांचवीं बात यह है सरकार, कि जब मुझसे कोई कसूर बन पड़ता है तो आप नाराज होते हैं। यही देखिए, कमरे में चीजें ढग से नहीं रखी गई, तो आप नाराज हो गए। गाली देने लगे। मेरा नया मालिक कभी गाली नहीं देता। मैं चाहे जैसा कसूर करूं, वह मुझे माफ कर देता है। इसलिए मैं अब सिर्फ उसी मालिक की सेवा करना चाहता हूं।

ईश्वरदयाल : मालूम होता है, तेरा यह मालिक सर्वशक्तिमान ईश्वर है। वह ईश्वर तो मेरा भी मालिक है।

सेवाराम : तब तो मुझे और भी खुशी है कि मैं अपने मालिक के मालिक की सेवा करूंगा।

ईश्वरदयाल : बहुत अच्छा सेवाराम, हम दोनों ही अपने मालिक की सेवा करेंगे।

सेवाराम : तब तो मुझे यहां से जाने की जरूरत नहीं है। मैं आपके साथ ही रहूंगा। चलिए।

[दोनों का हाथों में हाथ देकर प्रस्थान।]

पर्दा गिरता है

(१९७५)

भों भों-खों खों

□ सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

पात्र

नट	नटी
लड़का : एक	लड़का : दो
भों भों	खों खों
सूत्रधार	चूं चूं चूं

[भूमिका दृश्य : मंच पर दो बच्चों का लड़ते हुए प्रवेश। दोनों एक दूसरे से किसी खाने की चीज पर छीना-झपटी कर रहे हैं।]

लड़का-एक : मैं नहीं दूंगा, नही दूंगा।

लड़का-दो : देगा कैसे नहीं ? कल मेरी क्यों खा गया था ?

लड़का-एक : बकवास मत कर।

लड़का-दो : बकवास कहता है। अभी हड्डी-पसली...

लड़का-एक : देखा था तूने ?

[दोनों गुत्थमगुत्था होने लगते हैं। तभी नट और नटी मंडली सहित आ जाते हैं।]

नट : (**मंडली के सदस्यों की ओर देखकर**) देखा तुमने ? दोनों भों भों, खों खों कर रहे हैं। आज हम इस पर ही नाटक खेलेंगे।

नटी : नाम भों भों, खों खों रख दें ?

नट : हां, और यही दोनों भों भों, खों खों भी बनेंगे, लेकिन पहले वंदना कर लें। दीदी कहती है कि बिना वंदना के नाटक नहीं खेलना।

[नटी हाथ जोड़कर खड़ी होती है। साथ साथ सारी मंडली भी हाथ जोड़कर खड़ी हो जाती है।)

नट : हाथ जोड़ने की जरूरत नहीं। हम पूजा नहीं कर रहे हैं। इरादा पक्का कर रहे हैं।

वंदना : समूह गान

हाथ हमारे हैं मजदूर, पैर हमारे बने किसान,
कोई छोटा-बड़ा नहीं है, हम सब बच्चे एक समान।
आओ आओ मिलकर गाओ चूं चूं चूं चिड़ियों का गान।

भों भों, खों खों नहीं करेंगे, देश हमारा हिंदुस्तान।
[सभी का गाते हुए प्रस्थान। दोनों लड़के एक-दूसरे से मैं 'भों भों' बनूंगा, कहते लड़ते जाते हैं।]

नटी : मैं चिड़िया बन जाऊं ?

नट : चिन्नो रानी, चिन्नो रानी मैं करता हूं शुरू कहानी,
पंख लगाकर तुम आ जाओ, जैसे आए आंधी-पानी।
[नटी का प्रस्थान। बाद में वह चूं चूं चूं बनकर आती है।]

नट : एक गांव था छोटा सा, जिसमें भों भों, खों खों रहते थे।
दोनों में थी बड़ी दोस्ती, हर सुख-दुख हिलमिल सहते थे।
उन दोनों की एक सहेली थी, चूं चूं चूं चिड़िया रानी।
इतनी प्यारी इतनी ज्ञानी, जैसी होती बुढ़िया रानी।
गांव में पड़ा इस कदर सूखा, मरने लगा हर कोई भूखा।

पहला दृश्य

[एक ओर से भों भों आता है, दूसरी ओर से खों खों। भों भों के मुंह में रोटी के दो टुकड़े हैं। दोनों प्रेम से बैठ जाते हैं। एक टुकड़ा भों भों खाने लगता है, दूसरा खों खों।]

भों भों : अब कल से यह भी नहीं मिलेगी ?

खों खों : क्यों ?

भों भों : गांव में कोई नहीं, सब भाग गए।

खों खों : पेड़ में फल भी नहीं हैं।

भों भों : अब हम लोग क्या करें ?

खों खों : रहें कहां, पेड़ पर पत्तियां तक नहीं, ऐसा सूखा पड़ा है।

भों भों : ऐसे तो हम मर जाएंगे।

[एक मदारी दूर खड़ा उनकी बात सुनता रहता है। वह दूर से उन्हें झोले से निकालकर एक रोटी दिखाता है। फिर झोले में रख लेता है। भों भों धीरे धीरे पूंछ हिलाता हुआ उसके पास जाता है पर वह रोटी देता नहीं। निकाल निकालकर दिखाता रहता है। खों खों दूर बैठा ललचाई निगाह से देखता है पर पास जाते डरता है। मदारी जानवरों की आवाज में 'चें-में', 'चें-में' करता उसे बुलाता है।]

चूं चूं चूं : आओ आओ कहें मदारी
बोली बोले न्यारी न्यारी।
हाथ में उसके सोटी है
झोले में उसके रोटी है।
देखो देखो दुनिया सारी
भों भों, खों खों की लाचारी।
[इस बीच भों भों बार बार खों खों को देखता है। इशारा करता है। खों खों धीरे धीरे सरकता हुआ मदारी के पास आ जाता है। और मदारी उन्हें रोटी दिखाता दिखाता मंच से ले जाता है।]

दूसरा दृश्य

सूत्रधार : भों भों, खों खों शहर में पहुंचे रोटी के पीछे पीछे।
धूम-धड़क्का देख के डर के मारे थे आंखें मीचे।
[शहर का दृश्य : तमाम बच्चे पों पों, घर्र-भर्र, टन टन की आवाज करते मोटर, ट्राम, तांगे, रेड़ी, फटफट बने मंच पर दौड़ते शहर का दृश्य प्रस्तुत करते हैं। मदारी उसी में भों भों, खों खों को लेकर आता है। उसने खों खों के गले में रस्सी बांध रखी है। भों भों पीछे-पीछे चल रहा है। धीरे धीरे गाड़ियों का शोर कम होता है जैसे कि वह एक गली में आ पहुंचा है।]

खों खों : (भों भों से) इसने तो मेरे गले में रस्सी बांध दी है। मारता है। बार बार नाचने को कहता है। क्या करें ?

भों भों : अभी तो जो कहता है करना होगा।

खों खों : न करें तो ?

भों भों : और मारेगा। रोटी भी नहीं देगा।

सूत्रधार : जो रोटी देता है हमको पहले खूब नचाता है,
कुत्ता पूंछ हिलाता है, बंदर स्वांग दिखाता है।
[बंदर के नाच का दृश्य : मदारी डुगडुगी बजाता है। बच्चे शोर करते एकत्र होते हैं। मदारी जानवर की बोली में बार बार चिल्लाता है।]

सूत्रधार : चिड़िया रानी हमें बताओ, मियां मदारी क्या कहते हैं ?
बात नहीं कुछ समझ आ रही, डुग डुग करते रहते हैं।

चूं चूं चूं : (सूत्रधार से)
हुई जानवर सी क्यों बोली अच्छे-खासे हैं इनसान ?

सूत्रधार क्योंकि दूसरों की छीनेंगे आजादी यह था अरमान।

चूं चूं चूं सुनो बताती हूं तुमको यह क्या कहता है ।
पैसा पैसा बार बार रटता रहता है।

[बंदर का नाच शुरू होता है। खों खों नाचता है। मदारी जानवर की आवाज में जो कहता है, उसे चिड़िया दुभाषिया की तरह बताती जाती है। मदारी पहले बोलता है, चिड़िया बाद में, जिसे सुनकर खों खों भाव दिखा नाचता है।]

चूं चूं चूं कि बेटा नेता बनकर चल। ('खों खों' टोपी लगा नेता जैसा चलता है)

चूं चूं चूं कि बेटा सेठ की चाल चल। ('खों खों' तोंद निकाल सेठ की चाल दिखाता है)

चूं चूं चूं कि बेटा बन जा तू मजदूर। ('खों खों' झोला लाद कमर झुका चलता है)

चूं चूं चूं कि बेटा खेत में फावड़ा चला। ('खों खों' किसान की तरह फावड़ा चलाता है)

चूं चूं चूं कि बेटा बजा मंजीरा दिखा। ('खों खों' मंजीरा बजाता है)

चूं चूं चूं कि बेटा घर की गरीबी हटा। ('खों खों' झोला वगैहरा मदारी पर फेंककर मुंह पर पाउडर लगाने और कंघी से बाल काढ़ने लगता है)

चूं चूं चूं कि बेटा पेट बजाकर दिखा।('खों खों' पेट बजाने लगता है)

[मदारी उसी जानवर जैसी आवाज में फिर कुत्ते से कहता है।]

चूं चूं चूं कि बेटा पूंछ हिलाकर दिखा (कुत्ता पूंछ हिलाने लगता है)

[मदारी हाथ जोड़कर बच्चों के सामने भाषण करता है।]

मदारी हाजरीन ! यह सब तमाशा पेट के लिए है, पेट के। ये जानवर बड़े भूखे हैं। इनकी रोटी का सवाल है, रोटी का। दो रोटी की इनकी फरियाद है। देखिए एक पूंछ हिला रहा है। एक पेट बजा रहा है। दो-चार आने बख्शीश हमें भी मिल जाए। एक जोड़ा कपड़ा। मालिक आपको बनाए रखे।

[दर्शक बच्चे तालियां बजाते और पैसे देते हैं।]

भों भों : (खों खों से) देखो देखो कितना झूठ बोलता है। हमें बदनाम करता है। जैसे हम भूखे हैं, यह नहीं।
खों खों : वैसे जितनी रोटी मिलती है खुद खा जाता है।
भों भों : मांगता हमारे नाम पर है, पर हमें भूखा रखता है।
खों खों : ज्यादा रोटी मिल जाती है तो बेच देता है।
भों भों : पैसे जेब में रखता है।
खों खों : उन पैसों से भालू खरीदेगा।
भों भों : उसे भी नचाकर कमाएगा।
खों खों : अब हम नहीं नाचेंगे।
भों भों : चुप चुप, वह सुन रहा है। आदमी की बोली बोलना जरूर भूल गया है, पर समझता है।

[दोनों चुप हो जाते हैं।]

सूत्रधार : पैर झुलसते थे खों खों के गली गली में घूमते।
भूखे रहकर नाच दिखाते सबके तलुए चूमते।
भों भों पूंछ हिलाता रहता हर एक की गुर्राहट सहता।
लेकिन किसी से कुछ न कहता जैसी हवा थी वैसा बहता।
एक रात दोनों ने मिल छुटकारे की तरकीब निकाली,
उधर मदारी ने उनको लड़वाने की झट चाल बना ली।

तीसरा दृश्य

[मदारी भों भों और खों खों के बीच बैठा हुआ है। वह झोली में से एक टुकड़ा निकालता है और मंच के एक कोने में ले जाकर खों खों को देता है और कान में कुछ कहता है। फिर भों भों को दूसरे कोने में ले जाकर इसी तरह एक टुकड़ा निकाल कर देता है और कान में कुछ कहता है। दोनों एक दूसरे को घूर घूर कर देखते हैं, पर भूखे हैं इसलिए खा लेते हैं। मदारी निश्चिंत हो सो जाता है। भों भों, खों खों आपस में बात करते हैं।]

भों भों : तुम बदमाश हो।
खों खों : तुम नीच हो।
भों भों : दोस्ती का यह बदला।
खों खों : (व्यंग से) तुम बहुत मेहनत करते हो न। इतना नाचते हो।
भों भों : (व्यंग से) तुम मुझसे ज्यादा मेहनत करते हो। मेरा बोझ ढोते हो।
खों खों : क्या मैं नहीं ढोता ?

भों भों : इसलिए तुझे ज्यादा रोटी चाहिए ?
खों खों : नहीं तो तुझे चाहिए। सारी कमाई तू करता है।
भों भों : नहीं, मैं भूखा रहूं, तू खा।
खों खों : नहीं, तू खा, मैं भूखा रहूं। सारा कमाल तू करता है।
भों भों : नहीं, तू खा, सारा बोझ ढोता है। मैं कुछ नहीं करता।
खों खों : हां, तू कुछ नहीं करता।
भों भों : तू भी कुछ नहीं करता।
खों खों : मैं तुझ पर खड़ा हो जाऊं तो टें बोल जाए।
भों भों : तुझे नाचना पड़े तो चें बोल जाए।
खों खों : खबरदार जो आगे कुछ कहा।
भों भों : क्या तू खा जाएगा मुझे, तेरे जैसे बहुत देखे हैं।
खों खों : बकवास करता है। हड्डी-पसली एक कर दूंगा।

[धीरे धीरे दोनों की आवाज जानवर की आवाज में बदलने लगती है। और गुत्थमगुत्था होते ही बंदर और कुत्ते की तरह की आवाज में बदल जाती है। मदारी निश्चित हो करवट बदलता है।]

चौथा दृश्य

सूत्रधार लड़ा करके उनको इस तरह मदारी सोता चादर तान,
देखकर के उनका यह ढंग बेचारी चूं चूं थी हैरान।

चू चू चू (सूत्रधार से)
खो गई क्यों बतला दो हमें आदमी सी इनकी आवाज ?
यही भों भों खों खों रह गई कहां है मीठापन वह आज।

सूत्रधार मिली थी इनको वह आवाज क्योंकि हिलमिल कर रहते थे
कभी आपस में लड़ते न थे, लाख सुख-दुख हो सकते थे।
जानवर भी यदि मिलकर रहे आदमी के गुण पाता है
आदमी अगर लड़ाए लड़े, जानवर वह बन जाता है।

चूं चूं चूं इन्हें मैं लड़ने दूंगी नहीं, भेद सारा समझाऊंगी,
मदारी भी रखेगा याद, सबक ऐसा सिखलाऊंगी।

[चूं चूं चूं नृत्य करती भों भों खों खों के पास जाती है। दोनों आपस में लड़कर थके उदास बैठे हैं।]

चूं चूं चूं (दोनों से) आखिर मदारी ने तुम्हें लड़वा दिया।
भों भों नहीं. यह मुझसे खुद लड़ा है।

खों खों : तू मुझसे लड़ रहा है स्वार्थी।
भों भों : तू मेरे काम को छोटा कहता था। ज्यादा रोटी मांगता था।
खों खों : और तू बड़ा नेक है।
भों भों : तू झूठा है।
खों खों : तू बड़ा सच्चा है।
चूं चूं चूं : ना कोई झूठा ना कोई सच्चा।
डुगडुग का बच्चा, दे गया गच्चा।
यह सब मदारी की चाल है।
खों खों, भों भों : (एक साथ) मदारी की चाल कैसे?
चूं चूं चूं : (भों भों से) तूने इसे ज्यादा रोटी मांगते देखा है?
भों भों : नहीं।
चूं चूं चूं : (खों खों से) तूने इसे ज्यादा रोटी मांगते देखा है?
खों खों : नहीं।
चूं चूं चूं : (भों भों से) तेरे कान में उसने कुछ कहा था?
भों भों : हां।
चूं चूं चूं : (खों खों से) तेरे कान में उसने कुछ कहा था?
खों खो : हां।
चूं चूं चूं : बस, इस तरह झूठ बोलकर उसने तुम दोनों को लड़ा दिया। वह चाहता है तुम दोनों लड़ो। वह तुम दोनों की मेहनत का फायदा उठाए, कमाए, खाए।
सूत्रधार : कान में कही गई हर बात लड़ाने की होती है चाल,
कान पर करो न कभी यकीन आंख का देखा सच्चा हाल।
[भों भों, खों खों कभी सूत्रधार की ओर देखते हैं, कभी चूं चूं चूं की ओर।]
भों भों : (गुस्से से) यह मदारी का बच्चा।
खों खों : (गुस्से से) खा जाऊंगा इसे कच्चा।
भों भों : अब हम क्या करें?
खों खों : हमें मदारी को सबक सिखाना होगा।
भों भों : पर हम अकेले हैं।
चूं चूं चूं : नहीं मैं तुम्हारे सभी साथियों को लेकर आती हूं। जल्दी करो। नहीं तो वह जाग जाएगा। (चूं चूं चूं प्रस्थान करती है)
[भों भों मदारी का जूता पहन लेता है। खों खों उसकी टोपी लगा लेता है। उसका झोला पीठ पर लादता है और डंडा उठा कंधे पर रख लेता है। दोनों मदारी के

चारों तरफ लेफ्ट-राइट करने लगते हैं। तभी चूं चूं चूं के साथ बहुत से बंदर और कुत्ते आ जाते हैं। बच्चे बंदर और कुत्तों के खाली मुखौटे लगा लेते हैं। मदारी को घेर कर युद्ध नृत्य शुरू कर देते हैं। मदारी घबरा कर उठता है पर भाग नहीं पाता। अंत में बेदम होकर गिर जाता है। नृत्य समाप्त होता है। सभी सूत्रधार और चूं चूं चूं के साथ पंक्ति बनाकर खड़े हो जाते हैं और गाते हैं।]

समापन गान

जिसके हाथ में कोड़ा है उसे बनाना घोड़ा है
जो हमको लड़वाएगा उसकी नाक पकौड़ा है।
भों भों, खों खों के संग मिलकर गांव को स्वर्ग बनाएंगे
नानीजी का मूसल है औ' नानाजी का हथौड़ा है।

पर्दा गिरता है

(१९७५)

बिल्ली का खेल

□ लक्ष्मीनारायण लाल

पात्र

घोड़ा, गधा, बिल्ली : जानवरों की वेशभूषा में बच्चे

तीन लड़के : पहला, दूसरा और कुमार

मंत्री

राजा

मजदूरों का दल

[पहला दृश्य शुरू होते ही तीन लड़के क्रमशः घोड़ा, गधा और बिल्ली लिए मंच पर दिखते हैं। बड़ा लड़का अपने घोड़े के साथ, मंझला अपने गधे के साथ बहुत खुश है। दोनों उपहास कर रहे हैं।]

पहला लड़का : मेरा घोड़ा कितना शानदार है।

दूसरा लड़का मेरा गधा बोझा ढोने में होशियार है।

पहला लड़का घोड़ा बड़ी बात है। बिल्ली वाहियात है।

दूसरा लड़का हर वक्त म्याऊं ! म्याऊं !

पहला लड़का अपने मालिक को ही खाऊं ! खाऊं !

[हंसते हैं।]

मेरा घोड़ा बड़ा कमाऊ।

दूसरा लड़का मेरा गधा है सीस नवाऊ।

पहला लड़का बिल्ली का तो काम है चोरी।

दूसरा लड़का छोटी, ओछी और छिछोरी।

[छोटा लड़का कुमार अलग उदास बैठा है। बिल्ली अपने मालिक का उदास मुख देखकर दुखी है और उन दोनों भाइयों और जानवरों के मजाक से उसे गुस्सा आता है।]

बिल्ली कैसा कैसा कैसा ! पड़े पड़े पड़े। होंगे अपने घर के बड़े। माना ये दोनों मुझसे बड़े हैं। पर हैं छोटे तो क्या, हम भी यहां खड़े हैं। इनकी हिम्मत देखो, मेरे मालिक का मजाक करने चले हैं।

हे घोड़े, गधे ! हे उनके मालिक ! मत हो शेखचिल्ली । मैं भी नहीं हूं ऐसी मामूली बिल्ली। ऐसे मजे चखाऊंगी, बिल्ली चरित्र दिखाऊंगी। **(अपने मालिक से)** हे मेरे मालिक ! हे मेरे कुमार ! छोड़ो उदासी, करो विचार। ला दो मेरे लिए घुंघरू। मैं करूं नाच छम्मक छम्मा, देखें लोग हुम्मक हुम्मा।

[इस बीच दोनों भाई और उनके जानवर बिल्ली पर हंसते और उपहास करते रहे हैं।]

कुमार : **(उठता है)** हे, तू करेगी नाच ?

बिल्ली : हां, बिलकुल सांच !

[कुमार उसके पैरों में घुंघरू बांधता है। वे दोनों जानवरों सहित उपहास कर रहे हैं। बिल्ली गा गाकर नाचती है। दर्शकों की भीड़ लग जाती है। उपहास करने वाले आश्चर्यचकित रह जाते हैं]

गुलाबो खूब झगरिहैं, मलीदा घोरि के पीहैं।
हे हे ! गुलाबो खूब झगरिहैं।
गुलाबो बनावे रोटी, एक छोटी एक मोटी
सितावो बनावे लड्डू, एक छोटा एक बड्डू
गुलाबो के जरिगं रोटी, सिताबो भई मोटी।
गुलाबो खूब झगरिहैं, सिताबो खूब लड़इहैं...

[बिल्ली के फैले आंचल में लोग खूब पैसे-रुपए डालते हैं। दृश्य बदलता है। राजा के दरबार में बिल्ली एक तलवार भेंट करने के लिए आती है।]

मंत्री : राजा राजा ! यह बिल्ली आई है, भेंट करने तलवार लाई है।

राजा : अच्छा ! ऐसी बिल्ली कहां है ?

बिल्ली : जै हो राजन् ! बिल्ली यहां है।

राजा : बता, यह किसकी तलवार है ?

बिल्ली : मेरा बहुत बड़ा सरदार है। खूब कारोबार है। वहां सदाबहार है। उसी ने भेंट की आपको यह तलवार है। **(राजा को भेंट देती है)**

राजा : **(प्रसन्न)** वाह ! कितना सुंदर विचार है। उपहार यह तलवार है। तलवार ही उपहार है।

बिल्ली : राजन्, हमारे मालिक को दरसन दीजिए, हम सबका परनाम लीजिए।

राजा : अच्छा, अच्छा, कल शाम टहलने जाऊंगा तो उधर जरूर

आऊंगा।

बिल्ली : मैं रास्ते में मिलूंगी। मालिक तक खुद ले चलूंगी।

राजा : मुझे खुशी होगी।

बिल्ली : हमें बहुत बहुत खुशी होगी।

[दृश्य बदलता है बिल्ली पुकारती है।]

मालिक, मालिक। मालिक कुमार। (कुमार आता है)

कुमार : क्या है ?

बिल्ली : तलवार भेंट कर आ रही हूं।

कुमार : अच्छा !

बिल्ली : राजा को कल लाऊंगी, तुम्हें उनसे मिलाऊंगी।

कुमार : ना ना ना, यह तूने क्या किया ?

बिल्ली : जो करना था वही किया। राजा का विश्वास जिया।

कुमार : अरे अपने पास न कपड़े लत्ते, न घर दुआर।

बिल्ली : चिंता क्यों करते कुमार ? सुनो। कल शाम तुम इस वक्त नदी में नहाना। करूंगी मैं एक लाजवाब बहाना।

कुमार : मुझे बता ना !

बिल्ली : ना ना ना !

कुमार : अच्छा !

बिल्ली : हां, बस नहाते रहना, जब मैं पुकारूं तो बाहर निकलना।

कुमार : ऐसा !

बिल्ली : हां, ऐसा !

कुमार : और उड़ावें लोग हमारी खिल्ली !

[दृश्य बदलता है। घोड़े जुते रथ पर राजा टहलने निकले हैं। राजदरबार के लोग, नौकर-चाकर, सिपाही आदि भी साथ हैं। आगे आगे बिल्ली चल रही है।]

राजा : कहां है तेरे मालिक का निवास ?

बिल्ली : बिलकुल आ गए पास।

राजा : अच्छा, बहुत खूब।

[सब चलते रहते हैं। अचानक बिल्ली चिल्लाती है।]

बिल्ली : हाय हाय ! यह क्या हो गया ! मेरा मालिक नदी में गिर गया। बचाओ ! बचाओ !

राजा : जाओ, इसके मालिक को बचाओ। उसे नए कपड़े पहनाओ और सादर मेरे पास लाओ।

[जाते हैं]

बिल्ली : हाय, भगवान ने बचा लिया ! मैंने अपने मालिक को जो देख लिया !

राजा : वह उधर कहां जा रहे थे ?

बिल्ली : हाथ-पैर धोकर आपसे ही मिलने आ रहे थे।

राजा : मिलकर खुशी होगी !

बिल्ली : हमारा धन्य भाग्य होगा।

राजा : जिसकी बिल्ली ऐसी है, मालिक का कितना अहोभाग होगा ?

बिल्ली : वह आ रहे हैं मेरे मालिक।

[राजसी वस्त्रों में कुमार लोगों के साथ आता है।]

कुमार : राजा की जयजयकार !

सब : राजा की जयजयकार !

[राजा कुमार से गले मिलकर सादर अपने रथ पर बैठा है।]

बिल्ली : आप लोग टहलते आइए। मैं आगे मिलूंगी, मिलते मिलाइए।

[बिल्ली चली जाती है। राजा और कुमार एक साथ रथ पर बैठे घूमते हुए जाते हैं। दृश्य बदलता है। तमाम किसान खेत में काम कर रहे होते है। बिल्ली नाचती हुई आती है। सारे किसान उसका नाच देखने घिर आते हैं। बिल्ली के नाच से किसान रीझकर]

एक किसान : हाय बिल्ली नाचे छुम्मक छुम्म।

दूसरा : बोलो बोलो लोगी क्या तुम ?

[नाच नाचकर बिल्ली और रिझाती है।]

बिल्ली : देखो भाई, अभी इधर से राजा की सवारी आएगी। राजा पूछे किसकी खेती ? किसकी जमीन ? तुम सब कहना कुमार की खेती, कुमार की जमीन।

सब : ठीक है यही कहेंगे।

[बिल्ली नाचती हुई चली जाती है। राजा की सवारी आती है।]

सब : राजा की जयजयकार !

राजा : किसकी प्रजा ? कौन करतार ?

पहला : हम प्रजा हैं कुमार की।

दूसरा : यह खेती है कुमार की।

राजा : ओहो !

सब : राजा की जय हो !

राजा : ओ हो ! ओ हो !

सब : कुमार की जय हो ! राजा की जय हो !

[दृश्य बदलता है। मजदूरों का गिरोह एक जगह काम कर रहा है। बिल्ली नाचती हुई आती है।]

सारे मजदूर : (देखते ही) हे लो, हे लो, हे लो !

[बिल्ली मजदूरों को रिझाती हुई नाचती है।]

एक मजदूर : बोलो बोलो !

दूसरा मजदूर : मुखड़ा खोलो।

तीसरा मजदूर : हम तुम्हें क्या दें इनाम में ?

चौथा : माल में या रुपए दान में ?

बिल्ली : मेरा एक काम करोगे ?

सब : यह भी कोई पूछने की बात है।

बिल्ली : राजा अभी आएगा।

सब : अच्छा।

बिल्ली : एक सवाल पूछेगा।

सब : अच्छा अच्छा !

बिल्ली : तुम हो किसके मजदूर ?
कहना, बिल्ली के मालिक के।

सब : हां, हां, भाई, कौन ?

बिल्ली : कुमार।
राजा के साथ ही बैठकर आएगा।
दूध-मिठाई लाएगा।

सब : कुमार आएगा।
दूध-मिठाई लाएगा।

[सब नाचने लगते हैं। बिल्ली चली जाती है। मजदूर फिर अपने काम पर लग जाते हैं। राजा की सवारी आती है। साथ में कुमार और अन्य लोग हैं। राजा को देखते ही]

सब मजदूर : राजा तेरो सुंदर नाम
हम करते कुमार के काम।

राजा : अच्छा, इतने मजदूर कुमार के।

कुमार : आपके आशीर्वाद से।

राजा : बहुत खुशी भाई बहुत खुशी।
बहुत खुशी, भाई बहुत खुशी।

[राजा कुमार के गले मिलता है। हां में हां मिलाता है। दृश्य बदलता है। रास्ते में कुमार और बिल्ली।]

कुमार : अरे सुनो सुनो, यह क्या कर डाला ?

बिल्ली : क्या हुआ मालिक ?

कुमार : मैं कहां का इत्ता बड़ा कुमार, कहां का मालिक, कहां का सरदार ?

बिल्ली : निराशा मिटाओ। सब देखते जाओ।

कुमार : न रहने की जगह और न खाने को रोटी।
पता चला राजा को तो काटेगा बोटी बोटी !

बिल्ली : (दर्शकों से) घबड़ाते नहीं, अपने आप पर विश्वास रखते हैं। हाथ में दम है तभी तो आम रखते हैं। पता है जंगल में एक बार मुझे मिला एला अलबेला एक सुंदर जादूगर का किला। जादूगर के किले में जाकर अपने करिश्मे दिखाऊंगी। जादूगर से मिलकर किले में गुल खिलाऊंगी। हां, नहीं तो बिल्ली किसकी, जो हंसते थे खिल्ली उनकी।

[दृश्य बदलता है। जादूगर का किला। चारों तरफ सिपाही तैनात हैं। तरह तरह के जीव-जंतु घूम रहे हैं। अजब दृश्य है जादूगर के किले में उसका। बिल्ली आती है। दरबान सिपाही उसे फाटक पर ही रोकता है।]

सिपाही : ऐ बिल्ली की जात। कहां चली जात ?

बिल्ली : कृपा करो मुझ पर, मत दो कोई सजा, मैं गरीब प्रानी हूं। जादूगर के दरसनों के लिए आई हूं।

सिपाही : अच्छा, अच्छा, जा।

बिल्ली : धन्यवाद।

[आगे बढ़ती है। जादूगर के पास पहुंचती है। जादूगर का साम्राज्य देखकर आश्चर्यचकित हो जाती है। सेवकों में कोई उसका पैर दबा रहा है। कोई चमर डुला रहा है।]

बिल्ली : जै जै जै जादूगर महान। है प्रसिद्ध तू जग जहान, अजब निराली तेरी शान। बहुत दूर से आई हूं। पान-फूल ले आई हूं। स्वीकार करो मेरा उपहार। दर्शन कर हो गई निहार।

[जादूगर बिल्ली के हाथ से फूल लेकर खुश होता है।]

जादूगर : बोलो, बोलो, क्या चाहोगी ?

बिल्ली : मुझे दिखाओ जादू खेल
कुछ ऐसा जो हो अनमेल।

जादूगर : लो ! छू मंतर छू मंतर छू।
[अपने सारे सेवकों को जादू से बंदर, चिड़िया आदि में बदल देता है।]

बिल्ली : वाह वाह ! जैसा सुना था वैसा पाया। अजब तुम्हारी जादू माया।

जादूगर : (**घमंड से**) हा, आ हा, आ हा, आ हा।

बिल्ली : हि ही, हि ही, हि ही, हि ही, ही।

जादूगर : बोलो और क्या देखना चाहोगी ?

बिल्ली : बुरा न मानना, एक बात पूछूं ?

जादूगर : हां हां, हां हां, हां हां, हां हां !

बिल्ली : जादू क्या दूसरों पर ही करते,
ऐसा तो सब जादूगर करते।
क्या ऐसा जादू कर सकते
अपने को शेर बना सकते ?

जादूगर : हां हां, हां हां, हां हां !
छू मंतर, छू मंतर, हां !
[जादूगर शेर बनकर दहाड़ने लगता है। बिल्ली डरने और रोने का अभिनय करने लगती है। जादूगर फिर अपनी असली हालत में लौट आता है। पर बिल्ली अब तक डर के मारे कांप रही है।]

जादूगर : अरे अरे, अब क्या डरती।

बिल्ली : शेर की सूरत से मैं मरती।

जादूगर : अरे रे रे, तुझे हो क्या गया ?

बिल्ली : डर से दिल का दौरा पड़ गया।

जादूगर : इस दर्द की दवा क्या है ?

बिल्ली : हाय मैं मरी ! हाय मैं गिरी ! हाय मैं डरी ! हाय मैं मरी !

जादूगर : बोलो, मैं तुम्हारे लिए कुछ भी ला सकता हूं। कुछ भी बन सकता हूं। कुछ भी पैदा कर सकता हूं।

बिल्ली : कुछ भी बन सकते हो ?

जादूगर : हां हां, कुछ भी। चिड़िया, मक्खी, चूहा कुछ भी बन जाऊं ?

बिल्ली : नहीं, तुम चूहा नहीं बन सकते। चूहा बनना बड़ा कठिन है।

जादूगर : मैं बन सकता हूं। छू मंतर, छू मंतर छू।

चूहा बोले चूं चूं चूं।

[जादूगर चूहा बन जाता है। बिल्ली दौड़कर चूहे को खा लेती है। सारे सिपाही, नौकर-चाकर आश्चर्य से देखते रह जाते हैं।]

बिल्ली : सुनो सुनो सुनो ! सारे आ जाओ पास। जादूगर गया मेरे पेट में। यह सब मिल गया मुझे भेंट में।

[जादूगर के सेवकों में आश्चर्यपूर्ण बातचीत। संकेत-व्यापार। उनके संकेतों से पता चलता है कि वे बिल्ली की ताकत को सहर्ष स्वीकार करते हैं और जादूगर से मुक्ति की सांस लेते हैं।]

बिल्ली : सुनो सुनो सुनो ! अच्छे से अच्छा खाना तैयार करो। अच्छे से अच्छे संगीत तैयार करो। इस जगह को और सजाओ, खुद सजो और पूरे किले को सजाओ।

सब : जो आज्ञा, महाराज।

बिल्ली : मैं जाती हूं। और इस किले के असली राजा को ले आती हूं।

[जाती है। सब तैयारी में लग जाते हैं। दौड़-धूप होती रहती है। संगीत बजने लगता है। राजा की सवारी आती है। साथ में है राजकुमारी, कुमार और लोग, और बिल्ली।]

राजा : ओह, तुम्हारा इतना बड़ा शानदार किला। ऐसा राजकुमार मुझे कहीं नहीं मिला। बिल्ली !

बिल्ली : आज्ञा, महाराज !

राजा : बिल्ली, तुझे धन्यवाद है अनेक अनेक बार। तूने मिलाया मुझे इतना अच्छा राजकुमार। धन-दौलत किला शानदार। मुझे भी देना है एक बड़ा उपहार !

बिल्ली : आप राजा, यह मेरे मालिक, आप दोनों जानें। आप दोनों खुश रहें, मुझे सिर्फ एक बिल्ली मानें।

राजा : अपनी राजकुमारी को राजकुमार के हाथ देता हूं। इस शादी में अपनी आधी दौलत साथ देता हूं !

बिल्ली : खाओ पियो जश्न मनाओ। मेरे मालिक की शादी है, नाचो गाओ।

[खाना-पीना, नाचना-गाना शुरू होता है। मंच के किनारे, किसान के वही दोनों लड़के अपने घोड़े और गधे के साथ उदास दिखते हैं।]

बिल्ली : (दर्शकों से) कैसा कैसा कैसा ! पड़े पड़े पड़े होंगे अपने घर के बड़े । अब बोलो, कहां रहा तेरा घोड़ा, कहां है तेरा गधा ? छोटी बातों में न फंसो । छोटों पर ऐसे न हंसो । असली चीज है बुद्धि और आशा । मैं थी छोटी पर मानी नहीं निराशा । (पास जाती है) ऐ मत हो उदास । हो सब मेरे मेहमान । मेरे मालिक की शादी है आओ । नाचो गाओ, खुशियां मनाओ ।

[उन्हें लेकर बिल्ली उस नाच-गाने में मिल जाती है ।]

पर्दा गिरता है

(१९७६)

शोर

□ डा० मस्तराम कपूर 'उर्मिल'

पात्र

कैलाश	पिताजी
तनु	मां
अंजु	इंस्पेक्टर
मंजु	लाला दीनानाथ

[एक साधारण मकान का कमरा। एक कोने में रैक पर पुस्तकें अस्त-व्यस्त पड़ी हैं। मेज पर पुस्तकें, पतंग की चरखी, दवात-कलम, एक-दो खिलौने आदि बिखरे हैं। फर्श पर बच्चों के जूते आदि भी पड़े हैं। घर का और सामान भी कमरे में मौजूद है किंतु मुख्य रूप से यह बच्चों का ही कमरा लगता है। पर्दा उठते ही कमरा खाली दिखाई पड़ता है, किंतु कुछ देर बाद ही बगल के दरवाजे से चार बच्चे आते हैं। कैलाश इन सबमें बड़ा है, इसकी उम्र दस वर्ष है। तनु, अंजु और मंजु उसकी छोटी बहनें हैं जिनमें तनु सबसे बड़ी और मंजु सबसे छोटी है।]

कैलाश : हम तो पतंग उड़ाने जाएंगे। मेरे पास दस पैसे हैं। मैं नया पतंग लूंगा। तनु, तुम मेरे साथ चलोगी ?

तनु : कहां ?

कैलाश : ग्राउंड में, बड़ा मजा आएगा।

तनु : मुझे भी उड़ाने दोगे ?

कैलाश : हां हां ! पहले मैं उड़ाऊंगा, फिर तुम उड़ाना।

अंजु : मैं भी चलूंगी।

कैलाश : नहीं, हम मंजु को नहीं ले जाएंगे। इसे बाहर लू लग जाएगी।

मंजु : मैं तो जाऊंगी।

कैलाश : एक थप्पड़ मारूंगा।

मंजु : (चिल्लाकर) पिताजी ! कैलाश मुझे पीट रहा है।

[इतने में उनके पिताजी कमरे में आते हैं।]

पिताजी : तुम लोग क्यों इतना शोर मचा रहे हो ?

मंजु : पिताजी, कैलाश, तनु और अंजु ग्राउंड में खेलने जा रहे हैं। मुझे कहते हैं तुम मत जाओ।

पिताजी : कौन जा रहा है इस वक्त खेलने ? देखते नहीं बाहर लू चल

रही है ? थोड़ी देर सो जाओ।

कैलाश : लेकिन पिताजी, हमें तो दिन में नींद नहीं आती है।

पिताजी : तो चुपचाप बैठे रहो। किसी ने शोर मचाया तो कान पकड़कर दरवाजे से बाहर कर दूंगा।

[कैलाश, तनु आदि एक दूसरे की ओर देखते हैं।]

मंजु : पिताजी, फिर तो इन्हें मजा आ जाएगा। ये लोग ग्राउंड में भाग जाएंगे।

पिताजी : नहीं नहीं, मैं रस्सी से बांधकर तुम्हें धूप में खड़ा करूंगा, समझे ?

[पिताजी दूसरे कमरे में चले जाते हैं। कुछ देर तक चारों में कोई बातचीत नहीं होती, फिर कैलाश गेंद निकालकर खेलने लगता है।]

कैलाश : तनु, तुम खेलोगी मेरे साथ ?

अंजु : मैं भी खेलूंगी।

मंजु : पिताजी ने कहा है, चुपचाप बैठो। खेलोगे तो मैं पिताजी से कह दूंगी।

तनु : आओ कैलाश, हम चोर-सिपाही खेलेंगे।

मंजु : हम भी खेलेंगे।

कैलाश : हम मंजु को नहीं खिलाएंगे।

मंजु : हमको नहीं खिलाएंगे, हम गड़बड़ खूब मचाएंगे (**गाते हुए झूमने लगती है।**)

कैलाश : (**मंजु को एक धौल जमाकर**) बोल, अब मचाएगी गड़बड़ ?

मंजु : (**चिल्लाकर**) पिताजी ! कैलाश मुझे पीट रहा है।

[मां रसोई घर में सफाई का काम छोड़कर कमरे में आती है।]

मां : यह क्या हो रहा है ? तुम लोग किसी को घड़ी भर आराम नहीं करने दोगे ?

मंजु : मां, कैलाश मुझे बार बार पीटता है।

मां : क्यों कैलाश, यह क्या बात है ? अपने से छोटों को पीटते तुम्हें शर्म नहीं आती ?

कैलाश : पिताजी भी तो हमें पीटते हैं। स्कूल में मास्टरजी भी अपने से छोटे लड़कों को पीटते हैं।

मां : (**मुसकराकर**) लेकिन वह तो तुम्हें समझाने के लिए ऐसा करते हैं।

कैलाश : मैं भी मंजु को समझा रहा था।

मंजु : मैं तो अपने से छोटों को कभी नहीं पीटती, बस बड़ों को ही पीटती हूं।

मां : (हंसकर) तुम बहुत अच्छा करती हो। अच्छा भई, अब मेहरबानी करके यहां शोर मत मचाना। उन्हें घड़ी भर आराम करने देना। इस गरमी में पंछी-पंखेरू भी अपने अपने कोटरों में आराम करते हैं। तुम भी घड़ी भर सो जाओ।

कैलाश : लेकिन मां, हमें इस वक्त नींद नहीं आती।

मां : तो चुपचाप बैठे रहो।

तनु : हम चुपचाप बैठकर थक नहीं जाएंगे ?

मां : अच्छा तो चुपचाप खेलो, बस शोर मत मचाना। मैं बरतन मांज कर आती हूं और फिर तुम्हें कहानी सुनाऊंगी।

[मां रसोईघर में जाती है और उसके जाते ही सभी बच्चे 'ओए, ओए, हम कहानी सुनेंगे...हम कहानी सुनेंगे' गाते हुए भांगड़ा नाच करने लगते हैं। पैरों के धमाकों और 'ओए ओए' की आवाजों से कमरा गूंजने लगता है। कुछ देर बाद मां फिर वापस आ जाती है।]

मां : अरे, अरे, मैंने कहा था, शोर मत मचाना और तुम लोगों ने भांगड़ा शुरू कर दिया। (बच्चे नाच बंद करके चुपचाप खड़े हो जाते हैं।) निचले मकान वाले हर रोज शिकायत करते हैं कि तुम लोग उन्हें आराम नहीं करने देते।

कैलाश : लेकिन हम तो नीचे जाते ही नहीं।

तनु : हम कभी भी नीचे जाकर शोर नहीं करते।

मां : हां, लेकिन तुम यहां जोर जोर से नाचोगे-कूदोगे तो नीचे आवाज नहीं होगी। सारा फर्श डोल रहा था।

मंजु : तो हम क्या करें।

अंजु : हम अपने घर में भी नहीं खेल सकते !

मां : खेल सकते हो, लेकिन ऐसे खेलो कि दूसरों को कष्ट न हो। इस वक्त सभी लोग अपने अपने घरों में आराम करते हैं।

कैलाश : तो हम बाग में चले जाते हैं।

मां : नहीं, नहीं, बाग में कोई नहीं जाएगा। चुपचाप यहां बैठकर खेलो। अगर किसी ने शोर मचाया तो मैं उसे छड़ी से पीटूंगी।

तनु : और जो बिलकुल नहीं बोलेगा, उसको ?

मां ; उसको दस पैसे इनाम दूंगी।

सभी बच्चे : बहुत अच्छा !

[सब बच्चे चुप रहते हैं। अंजु तनु को छू कर और फिर अपनी नाक छू कर बताती है कि वह 'नकसूड़ी' है और फिर बच्चों की हंसी फूट पड़ती है। तनु कैलाश के गिरने का अभिनय करती है। और बच्चे फिर हंसते हैं। मां भी हंस पड़ती है।]

मां : अरे मुंह से कुछ बोलो, क्या हुआ ?

[सब बच्चे होंठों पर उंगली रखकर यह स्पष्ट करते हैं कि आपने ही बोलने के लिए मना किया है। फिर सब बच्चे हाथ बढ़ाकर दस दस पैसे मांगते हैं।]

मां : क्या चाहिए ?

तनु : आपने तो कहा था जो बच्चा नहीं बोलेगा, उसे दस पैसे इनाम !

मां : लेकिन तुम तो इतना शोर मचा रहे थे।

कैलाश : हम बोल तो नहीं रहे थे।

मां : नहीं, नहीं, हंसना और बोलना दोनों शोर मचाने में शामिल हैं।

कैलाश : नहीं जी, हम तो दस पैसे लेंगे।

[सभी बच्चे उछल उछल कर गाने और नाचने लगते हैं, 'हम दस पैसे लेंगे, हम दस पैसे लेंगे।' मां 'नहीं', 'नहीं' कह कर अपने आपको छुड़ाने की कोशिश करती है किंतु बच्चे उसे घेर लेते हैं। इतने में बगल के कमरे से कैलाश आदि के पिता, पुलिस का इंस्पेक्टर और निचले मकान में रहने वाले लाला दीनानाथ कमरे में प्रवेश करते हैं। बच्चे पुलिस इंस्पेक्टर को देखकर सहम जाते हैं।]

इंस्पेक्टर : तो यही हैं वे बच्चे ?

पिताजी : जी हां, यही हैं। जब से स्कूल की छुट्टियां हुई हैं, हम इनकी धमाचौकड़ी से तंग आ गए हैं। खाना, पीना, नाचना, गाना— यही काम है इनका। हर दम आसमान सिर पर उठाये रहते हैं।

इंस्पेक्टर : (**कैलाश की ओर देखकर**) क्या नाम है तुम्हारा ?

कैलाश : मेरा नाम कैलाश और इनका नाम तनु अंजु और मंजु।

इंस्पेक्टर : अच्छा तो तुम लोग खूब शोर मचा रहे थे।

कैलाश : हम तो चुपचाप खेल रहे थे।

मां : मैं इन्हें कई बार समझा चुकी हूं कि दोपहर को लोग आराम करते हैं, शोर मत मचाया करो। (**लाला दीनानाथ की ओर देखकर**) मैं इन बच्चों की तरफ से आप से माफी मांगती हूं।

लाला दीनानाथ : नहीं, नहीं, बहनजी। माफी मांगने की बात नहीं है। मैं तो इन बच्चों का बहुत आभारी हूं। मेरा हजारों रुपए का माल इन बच्चों के शोर मचाने से बच गया। मैं तो इन्हें इनाम देना चाहता हूं।

मां : इनाम?

इंस्पेक्टर : जी, बात यह हुई कि लाला दीनानाथ और इनके घर वाले सो रहे थे। तभी तीन चोर घर में घुसे और इनकी कीमती चीजें बांधने लगे। बच्चों ने यहां नाचना शुरू किया तो नीचे लाला जी की आंख खुल गई। उन्होंने दूसरे कमरे में चोर देखे तो झट पुलिस को टेलीफोन कर दिया। अब तीनों चोर पकड़े गए हैं और लालाजी का सारा सामान बच गया है।

लाला दीनानाथ : अगर बच्चे शोर न मचाते तो चोर नहीं पकड़े जाते।

कैलाश और तनु : चोर?

मंजु और अंजु : चोर?

इंस्पेक्टर : हां, हां, नीचे चल कर देखो, कितने लोग जमा हैं। सब लोग तुम्हें देखना चाहते हैं।

[चारों बच्चे 'ओए ओए' कहते हुए बाहर की ओर भागते हैं। शेष चारों व्यक्ति भी ठहाका मारकर हंसते हैं और फिर बाहर निकल जाते हैं।]

पर्दा गिरता है

(१९७६)

उपवास

□ डा० मस्तराम कपूर 'उर्मिल'

पात्र

प्रतिभा	रमा
निशि	बिरजू

पहला दृश्य

[निशि, रमा और प्रतिभा एक कमरे में बैठी स्कूल का काम कर रही हैं। इनकी आयु क्रमश: दस, आठ और छ: वर्ष है। सुबह का समय, मेज पर रखी घड़ी आठ बजा रही है। प्रतिभा जो आयु में सबसे छोटी है, रह-रहकर पीछे के दरवाजे की ओर देख रही है। बगल की ओर एक और दरवाजा है जो इस समय बंद है। रमा भी बीच बीच में अपना काम छोड़कर उस ओर देखने लगती है। आखिर प्रतिभा गुस्से में अपनी कापी पटक कर खड़ी हो जाती है।]

प्रतिभा : 'मैं पूछती हूं जब पेट में चूहे दौड़ रहे हों तो पढ़ने में मन कैसे लगेगा ?

निशि : (चिढ़कर) एक बिल्ली पकड़कर पास बिठा लो चूहे भाग जाएंगे। समझीं। अब अपना काम कर, नहीं तो यहां से बाहर चली जा। दूसरों के काम में क्यों ...

रमा : दूसरों की वकालत क्यों करती हो ? दूसरों को क्या भूख नहीं लगती; उन्हें क्या भगवान ने पेट नहीं दिया है ?

प्रतिभा : यह अन्याय है। बिरजू तो सुबह सुबह दूध का गिलास चढ़ाकर हाकी खेलने चला जाए और हम बेचारियों पर यह पाबंदी कि पहले स्कूल का काम खत्म करो फिर नाश्ता।

रमा : और स्कूल का काम कभी खत्म होने वाला है ? स्कूल में स्कूल का काम, स्कूल से आते ही स्कूल का काम, रात को दस बजे तक स्कूल का काम, सुबह उठो तो स्कूल का काम...

प्रतिभा : रात को सपने में भी स्कूल का काम। और उधर नवाबजादा बिरजू है जो सुबह-शाम हाकी खेलता है और सोने के लिए आठ नहीं बजने देता।

निशि : बिरजू लड़का है। हम भी लड़का होतीं तो बिरजू के स्कूल में

पढ़तीं और मौज उड़ातीं। (**अपना काम बंद करती हुई**) आज तुम भी मौज उड़ा सकती हो। स्कूल की छुट्टी है न...

प्रतिभा : हूं...भूख के मारे दम निकल रहा है और निशि को मौज उड़ाने की सूझ रही है।

निशि : अरी तो इतना क्यों चिल्लाती है। भूख सभी को लगी है।

प्रतिभा : तुम्हें भी ?

[रमा और प्रतिभा हंस पड़ती हैं।]

निशि : क्या मैं इंसान नहीं हूं ?

रमा : तो क्या करें ?

निशि : तुम जाकर देखो कि नाश्ते में कितनी देर है।

[रमा तैयार हो जाती है।]

प्रतिभा : और सुन, नाश्ता तैयार हो तो पहले हमें पता दे जाना, खुद नाश्ता करने मत बैठ जाना।

रमा : अच्छा...अच्छा।

[रमा अंदर जाकर वापस आती है। वह नाक के रास्ते गहरी सांस खींचकर किसी सुगंध का स्वाद लेती है।]

रमा : आ हा...

प्रतिभा : नाश्ता तैयार है ?

रमा : (**अनसुनी करके**) आ हा ! आ हा !

निशि : आ...हा...आ...हा...किशमिश, बादाम, पिस्ता, छुहारे, चार मगज आ...हा...आ...हा...

प्रतिभा : तू खा आई ?

रमा : खा कहां आई ? अभी तो सुगंध ही मिली है। मेवे, नाशपाती, अंगूर, केले और न जाने क्या क्या...आ हा, आ हा।

निशि : लेकिन ये सब तू कहां देख आई ?

रमा : अम्मा, भाभी और बड़ी दीदी के लिए। वे आज हरतालिका का उपवास करेंगी। आग में पकी और लोहे से कटी कोई चीज नहीं खाएंगी।

प्रतिभा : अच्छा, तो फिर मैं भी व्रत करूंगी।

रमा : (**कुछ गंभीर होकर**) निशि प्रतिभा तो सचमुच प्रतिभा है। इसने बहुत अच्छी योजना सुझाई है।

निशि : क्या ?

रमा : यही कि हम तीनों व्रत करें।

निशि : तेरा भी दिमाग खराब हो गया है।

रमा : नहीं निशि, मैं कहती हूं...

निशि : लेकिन इससे लाभ क्या होगा ?

रमा : लाभ यह कि हमें किशमिश, बादाम, पिस्ता, सेब, नाशपाती जैसे बढ़िया मेवे, फल मिलेंगे।

निशि : ये तो हमें व्रत न करने पर भी मिल जाएंगे।

रमा : हूं...वह तो ज़रा ज़रा सा परसाद होगा। व्रत करेंगी तो भर-पेट फल-मेवे ही मिलेंगे।

[इतने में बिरजू सीटी बजाता हुआ प्रवेश करता है।]

बिरजू : एक सेर ? तेरा पेट है या इंडिया गेट है ?

प्रतिभा : यह लो, आ गए नवाब साहब, एक पैसे की अक्कल नहीं और अकड़ देखो तो क्या कहने ?

बिरजू : अच्छा तू अक्कल की पुतली ही सही। अब नाश्ता करने चल। अम्माजी बुला रही हैं। चलो निशि...

निशि : हम आज नाश्ता नहीं करेंगी।

बिरजू : क्यों ?

रमा : आज हमारा व्रत है।

बिरजू : व्रत ? पागल तो नहीं हो गईं।

प्रतिभा : पागल ही सही। जब हमें ढेर सारे फल-मेवे मिलेंगे और तुम्हें इतना सा परसाद, तब देखना क्या मजा आता है। मैं दिखा दिखाकर खाऊंगी।

निशि : (**डांटकर**) प्रतिभा ?

बिरजू : यह बात है ?

प्रतिभा : हां हां, यही बात है, जो कुछ तुम्हें करना हो कर लेना।

[बिरजू पांव पटकता हुआ चला जाता है। तीनों एक-दूसरे की ओर देखकर हंसती हैं। पर्दा गिरता है।]

द्वितीय दृश्य

[कुछ समय बाद पर्दा उठता है। मेज पर रखी घड़ी चार बजा रही है। निशि कुरसी पर कुम्हलाई हुई पड़ी है। रमा पेट पकड़कर इधर-उधर टहल रही है। मेज पर कई तश्तरियां पड़ी हैं जिनमें मेवे और फल पड़े हैं। प्रतिभा प्रवेश करती है। उसका चेहरा भी कुम्हलाया हुआ है। प्रतिभा को देखकर रमा का चेहरा कुछ चमक उठता है।]

रमा : कुछ काम बना।

प्रतिभा : काम क्या बनेगा? सब लोग मंदिर गए हैं। रसोईघर के दरवाजे पर तो बिरजू पहरा दे रहा है। रोटियां मिलें तो कैसे?

प्रतिभा : हाय हाय, मेरी तो भूख से जान निकल रही है।

[बिरजू टहलता टहलता प्रवेश करता है। उसके हाथ में एक रोटी है जिस पर अचार रखा हुआ है।]

बिरजू : अरे तुम लोगों ने तो फलाहार भी नहीं किया। बड़ी जबरदस्त तपस्या है तुम्हारी। भगवान तुम तीनों पर बहुत खुश होंगे।

प्रतिभा : बिरजू भैया...तुम्हारे हाथ में क्या है?

बिरजू : प्रतिभा बहनजी, इसे रोटी कहते हैं और इस पर जो चीज रखी हुई है, उसे आम का अचार कहते हैं। खट्टा, तीखा, जायकेदार अचार होता है आम का।

[तीनों अचार का नाम सुनकर होंठों पर जीभ फिराती हैं।]

प्रतिभा : बिरजू भैया, थोड़ी सी रोटी और अचार दो ना?

बिरजू : छि: छि:, यह क्या कहती हो प्रतिभा बहनजी, हरतालिका का व्रत और रोटी-अचार? हरे शिव, हरे शिव! फल-मेवे चाहिए और ला सकता हूं।

रमा : न... न... उनकी बात मत करो।

बिरजू : अरे ढेर सारे ला दूंगा।

रमा : बस...बस...तुम यहां से चले जाओ, हमें तंग मत करो।

बिरजू : तंग तो मैं किसी को नहीं कर रहा हूं।

रमा : अच्छा बाबा, अब मेहरबानी करो। भगवान के लिए यहां से चले जाओ।

बिरजू : इतना नाराज क्यों होती हो रमा दीदी। तुम व्रत तोड़ने के लिए तैयार हो तो मैं अभी खाना ले आऊं।

निशि : दिन भर व्रत रखकर शाम को क्यों तोड़ दें? हमें कौन सी मजबूरी है?

बिरजू : अच्छा, तुम्हारी मरजी। मैं तो तुम लोगों की भलाई के लिए ही कह रहा था।

[बिरजू सीटी बजाता हुआ बाहर निकल जाता है।]

रमा : निशि, हमें बिरजू की बात मान लेनी चाहिए।

प्रतिभा : निशि दीदी, हम बिरजू से कहेंगी कि वह और किसी को न बताए और हमें चुपके से रोटी दे दे।

निशि : तुम दोनों एकदम बुद्धू हो। बिरजू को इतना सीधा क्यों समझती हो। अव्वल तो आज ही सारे भर में मुनादी पीटकर कह देगा कि हमने रोटी खा ली है और अगर आज न भी कहे तो कल तो कह ही देगा। तब सब लोग हमारी हंसी उड़ाएंगे।

प्रतिभा : तो दीदी, हंसी उड़ाने से हमारा क्या बिगड़ जाएगा? जान तो बच जाएगी।

निशि : जान बचाने की एक तरकीब और भी है।

रमा : क्या?

निशि : मेरे पास पचास पैसे हैं। मैंने रोज के जेबखर्च से बचाकर रखे हैं। इनके गरम गरम पकौड़े ले आओ, पर बिरजू को पता न चले। हम दरवाजा बंद करके खाएंगी। उसके बाद हम फल-मेवे भी खा सकेंगी। बस पेट भर जाएगा।

प्रतिभा : अच्छा तो निकालो पचास पैसे। मैं पिछले दरवाजे से जाकर ले आती हूं।

[निशि पचास पैसे देती है। प्रतिभा दूसरे दरवाजे से बाहर जाती है। कुछ देर कमरे में सन्नाटा रहता है। रमा दरवाजे की ओर देखकर प्रतिभा के आने की प्रतीक्षा करती है। निशि मुख्य दरवाजे को बंद कर लेती है। थोड़ी देर में प्रतिभा भागी भागी अंदर आती है।]

रमा : ले आई पकौड़े?

निशि : और चटनी भी लाई न?

प्रतिभा : (**हांफती हुई**) ले तो आई दीदी, लेकिन गजब हो गया।

रमा : क्या हुआ?

प्रतिभा : गजब हुआ, गजब।

निशि : क्या गजब हुआ! कुछ बोल भी तो!

प्रतिभा : बिरजू ने मुझे पकौड़े लाते देख लिया।

निशि : तुम निरी बुद्धू हो। कैसे देख लिया उसने? कहां था वह?

प्रतिभा : गली के नुक्कड़ पर खड़ा था। मैंने सोचा था, वह रसोईघर के दरवाजे पर बैठा पहरा दे रहा होगा।

निशि : (**चिढ़कर**) अब खाओ पकौड़े।

रमा : नहीं दीदी, खाने से पहले यह दरवाजा बंद कर लो। कहीं वह आ न जाए।

[वह झटपट दरवाजा बंद करती है।]

रमा : जल्दी जल्दी खा जाओ। उसके आने से पहले सब साफ हो जाएं।

[तीनों पकौड़े मुंह में ठूंसने लगती हैं। बाहर दरवाजे पर खट खट की आवाज होती है और बिरजू की आवाज आती है।)

बिरजू : प्रतिभा दरवाजा खोलो...रमा...निशि...अरी दरवाजा खोलो, अम्मा, भाभी और दीदी मंदिर से आ गई हैं...

[तीनों जल्दी जल्दी पकौड़े खाती हैं। जल्दी से निगलने के कारण किसी को छींकें आती हैं, कोई खांसने लगती है। विरजू बाहर से चिल्लाता ही जाता है और वे खाती ही जाती हैं। आखिर प्रतिभा बड़ा सा पकौड़ा मुंह में डालकर उसकी वात का उत्तर देती है।]

प्रतिभा : ठहरो.. आई। खोलती हूं। (**पकौड़ा उसके मुंह से निकलकर रमा के ऊपर आ गिरता है।)**

पर्दा गिरता है

(१९७६)

जादूगर

□ केशव दुवे

पात्र

जादूगर　　मास्टर
लड़का　　दर्शक
तोतली बच्ची

[स्टेज का पर्दा गिरा हुआ है। ऊपर एक बड़ा सा पोस्टर लटक रहा है जिनमें मोटे मोटे लाल अक्षरों में लिखा है :
महान जादूगर अजायबसिंह,
बी० पी० टी० एम० एस० आर० सी० (लंदन)
घंटी बजती है। स्टेज पर घुप्प अंधेरा और पार्श्व में डरावना संगीत बज रहा है। एकाएक घुंघरुओं की ध्वनि और दिल दहलाने वाली चीख गूंजती है। फिर लाइट से स्टेज जगमगा उठता है। स्टेज पर कुछ नहीं है। अब कर्णप्रिय फिल्मी धुन के साथ पर्दा हटता है। चटक लाल सूट और पीली टाई पहने जादूगर अजायबसिंह दिखाई ेता है।]

जादूगर : दो तो ! देख रहे हैं आप ? भूत-प्रेत, तंत्र-मंत्र स्पेशलिस्ट की डिग्री, कद्रदानो और मेहरबानो। आपके सामने हाजिर है विश्व का महान जादूगर ए० सिंह, जादू की दुनिया का बादशाह। शो शुरू होनेवाला है। आप लोग दिल थामकर बैठिए। रेडी...वन...टू...थी।

[बड़ी बड़ी बत्तियां बुझ जाती हैं। स्टेज पर हलका सा उजाला रह जाता है, जिसमें साफ साफ कुछ समझ में नहीं आता।]

जादूगर : मास्टर...मास्टर...किधर गया। पता नहीं...हमेशा ऐन टाइम पर भाग जाता है। आने दो, सजा देनी पड़ेगी।

[काफी देर बाद धम धम की आवाज]

मास्टर : आ गया, सर।

जादूगर : कहां मर गया था तुम ? इधर शो शुरू करना है। पब्लिक रास्ता देख रही है और तुम्हारा पता नहीं !

मास्टर : सारी सर।

जादूगर : (गुस्से में) ऐसे काम नहीं चलेगा। तुम हमेशा हमको परेशान करते हो। आज हम तुम्हारा काम ही खत्म कर देगा। तुम्हारा मर्डर किया और फुर्सत।

मास्टर : (घबराने का अभिनय करता है) नहीं, नहीं सर ! मुझे मत मारिए। अब की बार माफ कर दीजिए। फिर गलती नहीं होगी।

जादूगर : हम तो नहीं छोड़ेंगे। तुमको मरना पड़ेगा। फिर गड़बड़ करोगे। अभी मरना पड़ेगा। लो...

[मेज से छुरी उठाकर मास्टर के भोंक देता है। मास्टर चीख मारकर गिर पड़ता है। खून की धार स्टेज पर फैल जाती है।]

जादूगर : अरे ! ये क्या हुआ। ये तो मर गया। ना बाबा ! हमको हत्या नहीं करनी थी। खैर, हम कुछ तो करेंगे ही, नहीं तो पुलिस पकड़कर ले जाएगी।

[जादूगर सिर पर रूमाल लपेटकर दोनों हाथ ऊपर उठाता है और आंखें मूंद लेता है।]

जादूगर : अऐ। समंदर वाले जिन्न। बोतल वाले भूत ! उतर नीचे ! इस छोकरे को जिंदा कर दे।

[वह हाथ की कोई चीज हवा में बिखराता है जिससे चिनगारियां निकलती हैं। कुछ मंत्र बुदबुदाते हुए मास्टर के सिर पर हाथ फेरता है। दर्शक देख रहे हैं कि अब जादूगर छुरे की मूठ पकड़कर हिला रहा है। दूसरे क्षण छुरा उसके हाथ में दिखता है। छुरे पर खून का एक दाग भी नहीं है। थोड़ी देर में मास्टर पेट पर हाथ फेरता हुआ उठ खड़ा होता है। जादूगर ताली बजाता है।]

जादूगर : शाबाश ! तुम मर कर जिंदा हो गया। तुमने मरने के बाद क्या देखा ?

मास्टर : जी, मरकर हम ऊपर गए। वहां एक राक्षस देखा। उसने पूछा, क्या नाम है ? उसके पास एक लिस्ट थी। उसमें हमारा नाम नहीं था। राक्षस ने हमको वापस ढकेल दिया। बोला भाग जाओ। अभी तुम्हारा नंबर नहीं है।

जादूगर : किधर जाने को बोला ?

मास्टर : वापस, दुनिया में। राक्षस बोला, उधर ही जाओ। हमारे बड़े

भाई अजायबसिंह के पास ।

जादूगर : (**चीखकर**) क्या ? राक्षस का भाई हूं ? शैतान ! कल हम तुमको मारेंगे, तो जिंदा ही नहीं करेंगे । (**दर्शकों से**) देखा मेहरबान ! भलाई का जमाना नहीं है । अच्छा अब आप देखेंगे, असली बंगाल का जादू । अभी स्टेज पर अंधेरा होगा । इधर एक भूत आकर हमसे बातें करेगा । कोई कमजोर दिल वाला हो तो बाहर चला जाए । है कोई ? कोई नहीं ? सब बहादुर हैं । तो तैयार रहिए । अभी सीटी बजेगी और कमाल शुरू हो जाएगा ।

[पहले हाल की सब बत्तियां गुल हो जाती हैं । फिर स्टेज की लाइट धीरे धीरे बुझती है । पूर्ण शांति है । धीरे धीरे सीटी का स्वर उभरता है, जो तीव्र होता जाता है । कुछ देर बाद स्टेज पर धम् से एक हड्डियों का ढांचा कूदता है और पूरी ताकत से किलकारी मारकर चीखता है । हाथ, पांव, छाती, गले और खोपड़ी की हड्डियां मात्र चमक रही हैं । वह नर-कंकाल इधर-उधर डोलता-नाचता है । सब देखनेवाले सांस रोके बैठे हैं । फिर अचानक वह कंकाल अदृश्य हो जाता है और धीरे धीरे स्टेज पर पुनः रोशनी लौटती है । हाल की लाइट भी जल जाती है । स्टेज पर खड़ा जादूगर मुसकरा रहा है ।]

जादूगर : देखा आपने ? कितनी भूखी आत्मा थी उस पिशाच की । ये मेरे हाथ की चमकदार अंगूठी देख रहे हैं ना । यह तंत्र-मंत्र से सिद्ध है । अगर यह न होती तो वह किसी का खून पी जाता । पिशाच को बुलाना हंसी-खेल नहीं ।

एक लड़का : जादूगर साहब, मुझे एक सवाल पूछना है ।

जादूगर : मुन्ना ! ये क्लास रूम नहीं है । दुनिया का सबसे बड़ा...

लड़का : (**जादूगर की बात काटकर**) जी, मैंने कहीं पढ़ा है कि एक चीज होती है फासफोरस । वह घुप्प अंधेरे में भी चमकता है । कहीं आपका यह भूत काले लबादे पर फासफोरस की लाइनें...

जादूगर : (**चीखकर**) मैंने कहा न, आप बैठ जाइए, बाद में मुझसे पूछना । इतने बड़े पिशाच का मजाक उड़ाते हो । वह पीछे पड़ गया तो जिंदा नहीं छोड़ेगा । हां तो मेहरबानो, आगे खेल

दिखाऊं या इन्हीं महाशय से बकवास जारी रखूं।

[लड़का विवशता से इधर-उधर देखता है। फिर निराश होकर बैठ जाता है।]

जादूगर : तो जनाब-आली ! किस्सा तब का है जब मैंने लंदन में प्रोग्राम दिया। वहां पर हजारों आदमी मौजूद, सब अंगरेज और मैं अकेला हिंदुस्तानी। अब ऐसा हुआ कि एक अस्सी बरस का बुड्ढा उठकर खड़ा हो गया और बोला...

एक दर्शक : क्या बोला ?

जादूगर : 'ऐई जाडूगर ! हम हिंडुस्टान में रहा है। हम फोरटी टू में नखलऊ में डिप्टी कमिश्नर था। हमको लंगड़ा आम खूब पसंड था। टुम अबी हमको लंगड़ा आम खिलाने सकटा ?' अब, साहब, हमारी पूरी पार्टी वाले एक-दूसरे का मुंह ताकने लगे। हजारों आदमियों के सामने मुल्क की इज्जत का सवाल था।

जानते हो मैंने क्या किया ? ऐसी ही एक टेबिल रखी थी वहां स्टेज पर। उस पर एक कपड़ा डाला। देखिए, ठीक वैसे ही, जैसे मैं अभी डाल रहा हूं। फिर मंत्र पढ़ के कपड़ा हटाया (कपड़ा हटाता है)। देखिए, जैसे छोटे से गमले में यह आम का पौधा आ गया ना, वैसे ही वहां भी आ गया था। फिर कपड़ा डाला और हटाया। आम में बौर आ गए। तीसरी बार कपड़ा डालकर हटाया तो छोटे पौधे में अच्छा पका हुआ लंगड़ा आम लगा था। ठीक ऐसा ही, जैसा अभी लगा है।

देखिए, आपके सामने यह आम तोड़ता हूं। अब मैं इसे काटता हूं। वाह ! खूब मीठा है (खाते हुए) लीजिए, आप भी खाइए (सामने बढ़ाता है)।

एक दर्शक : (आम खाते हुए) वाह साहब, मान गए। आप तो कभी भी, कुछ भी उगा सकते हैं।

जादूगर : क्यों नहीं ?

दर्शक : आप पैसों का वृक्ष भी उगा सकते हैं ?

जादूगर : जरूर उगा सकता हूं। कहो तो एक चवन्नी का पौधा लगा दें। नोटों का पेड़ लगा दें। एक डंडा मारो और सौ-पचास नोट गिरा लो।

[एक छोटी बच्ची उठकर खड़ी होती है।]

बच्ची : (तुतलाकर) जादूगलजी, आप जादूगल का झाल ही उगाइए। खुद जमीन में गल जाइए। औल छैंकलों अजायब छींग दालियों

पल लतकेंगे—खूब छाले जादूगल।

जादूगर : खामोश! मेरा मजाक उड़ाती हो। अब किसी ने गड़बड़ किया तो उसे मैं पत्थर का बना दूंगा, समझे।

वही बच्ची : मुझे छोने का बना देना।

[जादूगर अनसुनी कर जाता है और दो-तीन बार हाथ थपथपाकर सबको शांत करता है।]

जादूगर : हां तो दोस्तो! अगला आइटम पेश है। इसे काला जादू कहते हैं। आप में से दो सज्जन स्टेज पर आइए, जरा।

[दो आदमी स्टेज पर आते हैं और जादूगर अपनी उंगली से एक अंगूठी निकालकर उनके हाथ में देता है।]

जादूगर : देखिए। गौर से देखिए। यह अंगूठी पहचान लीजिए। ठीक है ना? अब मैं इसे छुपाकर रखता हूं (**जेब से एक छोटा सा पर्स निकालकर**) हां, तो यह अंगूठी, सोने की चमकदार अंगूठी, पर्स में रख दी मैंने। आप दोनों के सामने।

[दोनों दर्शक सिर हिलाते हैं। जादूगर वह पर्स स्टेज के एक कोने में उछाल देता है।]

जादूगर : मेरे दोस्तो! अंगूठी पर्स में रखकर एक कोने में फेंक दी। मास्टर, ऐ मास्टर! किधर गए तुम?

[छोटा वाला लड़का फिर स्टेज पर आता है।]

मास्टर : हुकम करो सरकार!

जादूगर : मेरी आंखों पर काला कपड़ा बांध दो। खूब कसकर।

[लड़का कपड़ा बांधता है।]

जादूगर : बांध दिया ना? अब इन दोनों सज्जनों से कहो कि जाकर सीट पर बैठें। हां, दोस्तो अब मैं मंत्र पढ़ रहा हूं। आप शांत रहेंगे। यह बहुत कठिन क्रिया है। जरा भी तंत्र-मंत्र की गलती हुई और आदमी खून की उल्टी करने लग जाता है। सब खामोश रहेंगे।

[हाल में पूर्ण शांति छा जाती है। थोड़ी देर बाद जादूगर चीखता है—आ गया। आ गया।]

मास्टर : क्या आ गया हुजूर?

जादूगर : (**हंसते हुए**) आंखों से पट्टी हटाओ। अब जरा मेरे पैंट की जेब में देखो तो क्या है?

[मास्टर टटोलकर देखता है। जेब से एक पर्स निका-

लता है, जिसमें से वह अंगूठी निकलती है। वही अंगूठी दर्शकों को भी दिखाता है।]

मास्टर : **(ताली बजाकर)** जादूगर साहब, यह तो वही अंगूठी है। मगर आपने तो पर्स फेंक दिया था, वापस आपकी जेब में कैसे आ गया ? वाह, कमाल है।

[वह ताली बजाता है। मास्टर चुपचाप उस कोने की ओर खिसकता है, जहां जादूगर ने अंगूठी वाला पर्स फेंका था।]

जादूगर : दोस्तो ! यह है प्रेत साधना। अब अगला जादू होगा। मैं एक लड़की को बक्से में बंद कर दूंगा। यह पतला बक्सा गत्ते का है। अब इसे बीच में से आरी से काटकर दोनों हिस्से अलग-अलग करके फिर जोड़ दूंगा। लड़की सही-सलामत निकल आएगी।

[अचानक मास्टर घबराया सा आकर जादूगर के कान में कुछ कहता है। जादूगर का चेहरा सफेद पड़ जाता है।]

जादूगर : **(चीखता है)** क्या कहा ? नहीं है ? फिर से देखो, अच्छी तरह देखो। ऊपर देखो, नीचे देखो, अगल-बगल में देखो, अभी पांच-दस मिनट तो हुए ही हैं।

मास्टर : **(रुआंसे स्वर में)** सब देख लिया, कहीं नहीं है।

[जादूगर उछलकर उसका गला पकड़ लेता है।]

जादूगर : तो कहां गया ? जमीन निगल गई या आसमान खा गया ? उधर ही तो फेंका था, हरे परदे के पास। तुम अंधे हो। चलो मैं देखता हूं। माफ करना दोस्तो...बड़ी गड़बड़ हो गई है।

[जादूगर पागलों की तरह बाल नोचता स्टेज के एक कोने पर कुछ टटोल रहा है। मास्टर भी थर थर कांप रहा है।]

जादूगर : चीज खो गई, तो गई कहां ? अरे, मैं लुट जाऊंगा। बुलाओ पुलिस को। मैं एक एक की तलाशी करवाऊंगा। यहां इस बस्ती में ऐसे शातिर चोर भी भरे हैं। अरे, डाकुओं ने लूट लिया। खबरदार ! कोई भागने न पाए।

एक दर्शक : **(खड़े होकर)** क्या बक रहे हो जी तुम ? क्या चोरी चला गया ? यहां सब भले आदमी बैठे हैं। कोई चोर नहीं।

जादूगर : हाय मेरा पर्स ! अरे, उसमें मेरे रुपए थे। यहां के शो का

एडवांस भी था। दो सौ रुपए। फेंका था पर्स मैंने इसी कोने में...किसी ने उठा लिया।

एक दर्शक : मगर जादूगरजी, पर्स तो जेब में से निकाला था तुमने और उसमें अंगूठी भी थी।

जादूगर : **(सकपकाकर)** वो...वो तो दूसरा था। पहले वाले से मिलता-जुलता। वह सब हाथ की सफाई थी। अरे मेरा पर्स...मेरी अंगूठी ! ऐसे शातिर बदमाश हैं।

एक दर्शक : जिसने आपका पर्स चुराया हो, उसे भस्म कर दो।

दूसरा दर्शक : जादू से पता लगाओ। कहां मर गए सब तुम्हारे भूत-प्रेत-पिशाच !

तीसरा दर्शक : जल्दी करो भाई, आपको यह लड़की काटकर जोड़नी है।

[स्टेज पर तीन-चार लोग बड़ी बेचैनी से पर्स ढूंढ़ रहे हैं।]

छोटी लड़की : **(तुतलाकर)** छुनो जादूगलजी, आप पल्छ औल अंगूठी का झाल क्यों नहीं उगा लेते ? नोत का झाल ! एक दंदा मालो...छौ का नोत नीचे...

जादूगर : **(खीजकर रुआंसे स्वर में)** आपको मजाक सूझता है ? अरे सात सौ की अंगूठी है। दो सौ एडवांस के और करीब साढ़े तीन सौ रुपए और हैं पर्स में। बता दो भाई, किसी ने उठाया हो तो। मैं गरीब मारा जाऊंगा। थोड़ी सी हाथ की सफाई दिखाकर पेट पालता हूं।

एक दर्शक : **(तमककर)** वाह ! गरीब बनते हो अब। गरीब हो तो मजदूरी करो और खरे पसीने की कमाई खाओ। क्यों जनता को बेवकूफ बना रहे हो ? अब उगाओ ना नोटों का झाड़। बड़े जादूगर की दुम बनते हो।

जादूगर : सबकी मिली-भगत है। हथकड़ी लगेगी, तब पता चलेगा...पुलिस ! पुलिस ! लूट लिया...यहां चोर भरे हैं।

[गुस्से में कुछ दर्शक स्टेज पर चढ़ जाते हैं। मास्टर और जादूगर के अन्य साथी परेशान से अभी भी पर्स ढूंढ़ रहे हैं और जादूगर सिर के बाल नोच रहा है।)

एक दर्शक : **(जादूगर का कालर पकड़कर)**—क्या कहा, फिर से कहना। तूने पूरी बस्ती को चोर कहा, ठग कहीं का। अभी दूंगा एक झापड़ और घुसेड़ दूंगा स्टेज के नीचे, समझे ?

जादूगर : स्टेज के नीचे ? स्टेज के नीचे। अरे वाह ! अरे जरा घुसकर

नीचे देखो। जल्दी देखो...कोई टार्च देना जरा।

[मास्टर नीचे घुसता है। जादूगर टार्च मारता है।]

जादूगर : (**अचानक खुशी से किलकारी मारकर**) अरे चूहे ! मोटे मोटे चूहे और वो रहा मेरा पर्स। जल्दी निकाल मास्टर। हाय मेरे रुपए, हाय मेरी अंगूठी...हे भगवान, मेरी तो जान ही सूख गई थी।

[जादूगर जल्दी जल्दी अंगूठी और नोट देखता है। चूहों ने पर्स का एक कोना कुतर खाया है।]

जादूगर : (**स्टेज पर आकर बौखलाया सा हंसता है**) ही...ही...मेरा पर्स मिल गया। यहां चूहे भी अच्छा मजाक करते हैं जी, आपकी बस्ती में ! मेरा पर्स ही खींच ले गए। याने हद है...तो मेहरबानो, कदरदानो, अब एक लड़की को आरी से बीच में से चीरा जाएगा। आप लोग दिल थामकर बैठिए।

[दर्शकों में भयंकर शोर-गुल और एक आवाज...'हमें नहीं देखना तुम्हारा जादू—अपना डेरा-डंगर उठा लो।' सब उठकर जाने लगते हैं। जादूगर सिर थाम लेता है। मास्टर उस पर पानी के छींटे मारता है।]

पर्दा गिरता है

(१९७७)

लाख की नाक

□ सर्वेश्वरदयाल सक्सेना

पात्र

नटी	दूत
नट	चोबदार
मुसाफिर	लोहार
सेनापति	लोहारिन
राजा	लड़की
रानी	मंत्री
सैनिक	कुत्ता

[मंच पर नट और नटी गाते हुए आते हैं। उनके पीछे बच्चों की भीड़ है जो गायन के बीच बीच में 'ले लो नाक !', 'ले लो नाक !' चिल्लाते हैं। उनके पास एक लाठी में बंधी कागज की तरह तरह की नाक लटक रही हैं। सब बच्चों ने अलग अलग तरह की नाक लगा भी रखी है।]

नट-नटी गान

नाक लंबी हो, नाक छोटी हो,
नाक पतली हो, नाक मोटी हो,
नाक से ही यहां जमाना है,
नाक को कटने से बचाना है।
[बच्चे 'ले लो नाक !', 'ले लो नाक !' चिल्लाते हैं।]
नाक तोते की हो या खोते की,
नाक हंसते की हो या रोने की,
नाक चेहरे का तोपखाना है,
नाक को कटने से बचाना है।
[बच्चे 'ले लो नाक !', 'ले लो नाक !' चिल्लाते हैं।]
नाक भिंडी सी हो या आलू सी,
नाक बंदर सी हो या भालू सी,
चाहे नाकों चने चबाना है,
नाक को कटने से बचाना है।
[बच्चे नकियाते हुए 'लें लों नांक !', 'लें लों नांक !

चिल्लाते हैं। इसी बीच एक मुसाफिर का प्रवेश।]

मुसाफिर : क्यों भाई, यह क्या बेच रहे हो?

नट : नाक।

मुसाफिर : नाक! क्यों?

नट : चेहरे पर लगाने के लिए और क्यों!

नटी : क्योंकि तुम नकटे हो।

मुसाफिर : (**अपनी नाक टटोलते हुए**) मेरी नाक साबित है। मैं नकटा नहीं हूं।

नट : तुम नकटे हो, यह हम जानते हैं।

मुसाफिर : (**तैश में**) वाह, वाह, कैसे हूं? तुम्हारे कहने से?

नटी : हां, हां, हमारे कहने से!
हम नाक के पहरेदार हैं।
इस नाटक के किरदार हैं!
लगानी हो तो लगाओ, वरना हमारा नाटक नहीं देख सकोगे।

मुसाफिर : (**दर्शकों की ओर इशारा करके**) और ये सब लोग जो देख रहे हैं...

नट : सबके नकली नाक लगी है। किसी की नाक यहां साबित नहीं है।

नटी : (**ताली बजाकर**) सब नकटे हैं।

मुसाफिर : मैं सबकी नाक हिलाकर देखूं?

नट : जाओ, जाओ हिलाओ! देखो! कोई नहीं हिलाने देगा अपनी नाक।

मुसाफिर : (**श्रोताओं से**) भाईसाहब! मेहरबानी करके मुझे अपनी नाक हिलाने दीजिए। इसे झूठा साबित करने दीजिए। वरना यह हम सबको नकटा...

नटी : (**बात काटकर**) सब डरते हैं कहीं पोल न खुल जाए।

मुसाफिर : (**हारकर**) कब शुरू होगा नाटक?

नट : वह कब का शुरू हो गया! आप नाक लगा लीजिए!

[मुसाफिर को एक लंबी नाक लगा दी जाती है।]

नटी : अब चुपचाप बैठो। बीच बीच में अपनी नाक मत घुसाना।

[नट-नटी साथ आए बच्चों को मंच के एक कोने में बैठा देते हैं और गाते हैं।]

गान

नाक राजा की हो या रानी की,
नाक अंधे की हो या कानी की,
नाक से मक्खियां उड़ाना है,
नाक को कटने से बचाना है।

नटी : हाजरीन नाक वालो, अब नाटक आगे शुरू होता है—'लाख की नाक!' मेहरबानी करके अपनी अपनी नाक ठीक से चेहरे पर जमा लीजिए। जमाना खराब है। अब मेले-तमाशों में जेब कतरों से कम, नाक काटने वालों से ज्यादा बचकर रहिए। इसीलिए सावधान कर दिया। और देखिए, आपकी नाक पर कहीं मक्खी न छींक जाए। जैसे नाक का भरोसा नहीं, वैसे मक्खी का भी नहीं। शांत, शांत! महाराज नाकड़ादिन्न की सवारी आ रही है।

[बैठे हुए बच्चे पिपहरी, बांसुरी, सीटी, टीन की ढोलक जैसे बच्चों के बाजे बजाते मंच पर परिक्रमा करने लगते हैं, फिर एक लाइन में हो जाते हैं। राजा-रानी लिल्ली घोड़ी पर सवार आते हैं, जैसे परेड की सलामी ले रहे हों। बच्चे सलामी देकर बैठ जाते हैं और राजा रानी लिल्ली घोड़ी (कमर में बंधा कागज का घोड़े का मुंह और चारों तरफ खपचियों पर तना पैरों तक ढांकता हुआ कपड़ा। खपचियों के घेरे में पीछे लटकती रस्सी या चुटीले की पूंछ) का नाच नाचते हैं। नाच नट-नटी के गाने की लय पर होता है।]

नट-नटी गान

ऊंट की नाक में नकेल
जरा बच के रहना,
शुरू होता है अपना खेल
जरा बचके रहना!
कोई न दे तुमको ढकेल
जरा बचके रहना!
कैसी मची है रेलमपेल
जरा बचके रहना!

[राजा नाचते नाचते रुक जाता है। कुछ मनहूस आवाजें आने लगती हैं। एक कुत्ता मंच पर आता है

और राजा के चारों ओर भौंकता और रोता है।]

रानी : टामी ! टामी ! भागो। राजा तुम नाचो रुक क्यों गए।

राजा : मैं परेशान हो गया हूं।

रानी : क्यों ?

राजा : मुझे लगता है मैं लड़ाई फिर हार गया हूं।

रानी : कैसे ?

राजा : देखती नहीं हो टामी मेरा जासूस कुत्ता है। कुत्ते की नाक बड़ी तेज होती है। यह सब सूंघ लेता है। हार-जीत भी।

[राजा का नाचना बंद देख, कुत्ता भी चुप हो जाता है।]

राजा : (ताली बजाकर) सेनापति को बुलाओ !

[दूत आता है। आदेश सुनकर प्रस्थान कर जाता है।]

नट-नटी गान

नाक नौकर की, हुक्मरानों की,
नाक सेनापति की, जवानों की,
नाक की सीध चले जाना है
नाक को कटने से बचाना है।

दूत : सेनापति नासिकारंधु जी आ गए हैं, महाराज !

[सेनापति आते हैं, मुंह लटकाकर खड़े हो जाते हैं। उनकी कमर में टूटी हुई तलवार है।]

राजा : सेनापति, हम क्यों हार गए ?

[सेनापति चुप खड़े रहते हैं।]

राजा : सुना आपने, हम क्यों बार बार हार रहे हैं ?

[सेनापति चुप खड़े रहते हैं।]

राजा : शर्म नहीं आती आपको ? आप हर बार अपनी और हमारी दोनों की नाक कटाते हैं।

[सेनापति चुप खड़े रहते हैं।]

राजा : चुप रहने से काम नहीं चलेगा। मैं जवाब चाहता हूं। इस बार आपके सैनिक भी शत्रु से चौगुने थे। फिर भी हम हार गए, क्यों ?

सेनापति : महाराज !

राजा : हां कहो। कहो कि तुम्हारे सैनिक भूखे थे !

सेनापति : तलवारें कच्ची थीं महाराज। लड़ाई में टूट गईं।

राजा : झूठ ! तलवारें कच्ची नहीं थीं। सैनिक कच्चे थे। कहो तुम

सब कायर हो।

सेनापति : नहीं महाराज ! मैं सच कह रहा हूं।

राजा : जानते हो, तलवारें हमारे मंत्री जी चुनते हैं।

रानी : वह आपकी नाक के बाल हैं।

राजा : तुम चुप करो रानी। उन्हें लोहे की पहचान है। उनकी देख-रेख में तलवारें बनती हैं। वह देखकर ही बता सकते हैं कि लोहा कच्चा है या पक्का।

सेनापति : हो सकता है महाराज ! पर हर बार लड़ाई में हारने का यही कारण होता है कि तलवारें कच्ची होती हैं, इसी से हमारी...

राजा : (**बात काट कर**) कच्ची होती है। सेनापति ! मैं जानता हूं तुम मंत्री से जलते हो। जाओ युद्ध की तैयारी करो। हम फिर लड़ेंगे।

[सेनापति का प्रस्थान]

रानी : (**राजा से**) आप भी महल में चलिए। आराम कीजिए। परेड की सलामी लेते लेते थक गए होंगे। चलिए, खूब अच्छे अच्छे पकवान बने हैं। सूंघिए, खुशबू यहां तक आ रही है।

[राजा जोर जोर से सूंघते हैं।]

नट-नटी : (**दर्शकों से**) जरा इनसे नाक बचा के सूंघें, कहीं गिर न जाए।

[राजा आंखें तरेरकर नट को देखता है, फिर नाचती हुई रानी के पीछे उदास हो चला जाता है।]

नट-नटी गान

सूंघ सूंघ कर कदम रख रहे
फिर भी नाक में दम है,
पर जो सच्चाई पर रहता
नहीं किसी से कम है,
वह सच्चा लोहार भी जो
तलवार बनाता है,
बात लड़ाई की फिर सुनकर
देखो आता है।

[लोहार कंधे पर कुछ तलवारें रखे आता है। पीछे पीछे लोहारिन भी आती है। लोहारिन के कंधे पर हथौड़ा है और हाथ में खाने की पोटली।]

लोहारिन : लड़ाई का फिर एलान हुआ है। जल्दी जाओ। तलवारें दिखा आओ। यह लो खाना।

लोहार : मेरा मन नहीं हो रहा।
लोहारिन : मन नहीं हो रहा ! जाओगे नहीं तो क्या भूखों मरोगे ?
लोहार : भूखे तो मरना ही है।
लोहारिन : शायद इस बार काम बन जाए।
लोहार : मैं जानता हूं नहीं बनेगा।
लोहारिन : क्यों नहीं बनेगा ? क्या दूसरों की तलवारें हमसे अच्छी होंगी ?
लोहार : वह बात नहीं है।
लोहारिन : फिर !
लोहार : फिर क्या ? मैं जानता हूं राजा के यहां मेरी तलवारें नहीं ली जाएंगी।
लोहारिन : क्यों नहीं ली जाएंगी ! यहां इतना पक्का लोहा पीटते पीटते जान निकल जाती है। राजा लेगा क्यों नहीं ?
लोहार : जैसे हर बार नहीं लेता।
लोहारिन : हर बार तुम राजा के मंत्री को दिखाते हो। इस बार तलवार खुद राजा को दिखाना।
लोहार : राजा कहीं तलवार देखता है ? यह काम मंत्रीजी का है। उसी को दिखानी पड़ेगी। वही मालिक है। यह उसी का काम है।
लोहारिन : इस बार जरा हाथ जोड़कर कहना कि हमने बड़ी मेहनत से बनाई है। ऐसा पक्का लोहा है कि पहाड़ काट लो।
लोहार : हर बार कहता हूं। पर वह एक नहीं सुनता। पैरों पड़ता हूं, गिड़गिड़ाता हूं, हजूर बाल-बच्चे भूखे मर जाएंगे। रहम कीजिए, इसी में पेट पलता है।
लोहारिम : फिर क्या करे ! चोबदार जी से कहना, वह तो अपने गांव के ही आदमी हैं।
लोहार : अब उसका चेहरा बदल गया है। वह हमें पहचानता तक नही।

[लोहार की लड़की का प्रवेश। वह फटे कपड़े पहने है।]

लड़की . बापू, बापू तुम कहां जा रहे हो ?
लोहार : बेटा, तलवारें बेचने।
लड़की : राजा के मंत्री के पास !
लोहार : हां, उसी के जो हमें सताता है। हमारी तलवारें नहीं खरीदता।
लड़की : वह फिर सूंघेगा।

लोहार : और कह देगा कच्ची है।

लोहारिन : ढोंगी है ढोंगी ! भला सूंघकर भी कहीं पता चलता है कि लोहा कच्चा है या पक्का।

लड़की : उसकी नाक भी सड़ गई होगी !

लोहार : नहीं, लालची है वह घूसखोर। जो पैसा खिला दे उसकी तलवार अच्छी, जो पैसा न दे उसकी तलवार गंदी।

लोहारिन : इस बार तुम भी कुछ पैसे दे दो।

लोहार : कहां से दूं, भीख मांग कर ?

लड़की : नहीं, हम उसे पैसे नहीं देंगे। झूठ-मूठ क्यों दें ! हमारी तलवार जब अच्छी तो वह खरीदे। हम राजा से कहेंगे।

लोहार : राजा तक हम नहीं पहुंच सकते।

लड़की : अच्छा तो (लोहार के कान में कुछ कहती है) ऐसा सबक सिखाएंगे जिंदगी भर याद रखेगा।

लोहारिन : क्या सबक बेटा ?

लड़की : कुछ नहीं मां। इस बार तलवार तुम अच्छी सी म्यान में रखकर देना। राजा का मंत्री अच्छी सी म्यान देखकर सोचेगा तलवार भी अच्छी होगी। चलो चलो, मैं अच्छी सी म्यान लाती हूं।

[लड़की लोहार का हाथ पकड़ प्रस्थान करती है। लोहारिन भी पीछे पीछे जाती है। जाते जाते वे कहते हैं।]

लोहार : ठीक तो है लेकिन...

लड़की : लेकिन-वेकिन क्या बापू ?

नट-नटी गान

ले के तलवार पहुंचा वो दरबार में
मंत्री जी जहां पर विराजमान थे,
मूंछ रह रह के थे ऐंठते जा रहे
गाल में अपने दाबे हुए पान थे,
कैसी तलवार है इसकी चिंता न थी
उनके पैसों में अटके हुए प्रान थे,
बस उसी वक्त लोहार आया वहां
[illegible] हैरान थे।

[illegible] दृश्य। लोमड का मुखौटा लगाए [illegible]ता हुआ कुरसी लेकर आता है। कुरसी

वह सिर पर रखे हुए है। पीछे पीछे मंत्रीजी आते हैं। मूंछें ऐंठते, पान गाल में दबाए, तोंद फुलाए। दूसरी तरफ से लोहार म्यान में धरी तलवार लेकर आता है। झुककर तलवार पेश करता है। मंत्रीजी पहले तो म्यान को ललचाई नजर से देखते हैं, फिर सख्त हो जाते हैं।]

मंत्री : तुम फिर आ गए ?

लोहार : क्या करें हुजूर ! अपना यही धंधा है।

मंत्री : (चोबदार से) लोमड़, इसे कहो यह अंधा है।

चोबदार : तुम अंधे हो।

लोहार : हां हुजूर !

मंत्री : लोमड़ इससे कहो यह गधा है।

चोबदार : तुम गधे हो।

लोहार : हां हुजूर !

मंत्री : इससे कहो निकल जाए यहां से।

चोबदार : तुम निकल जाओ यहां से।

लोहार : तलवार देख लें हुजूर, गरीब आदमी हूं।

मंत्री : पता नहीं कहां से मरभुक्खे कंगाल आ जाते हैं। निकालो इसे यहां से !

[चोबदार जाने का इशारा करता है।]

लोहार : हुजूर आप पारखी आदमी हैं। बड़ी मेहनत से तलवार बनाई हैं। सूंघकर देख लें तो हमें भी तसल्ली हो जाए।

[चोबदार लोहार के कान में कुछ कहता है।]

लोहार : नहीं मालिक ! हमारे पास एक फूटी कौड़ी भी नहीं है। गरीब आदमी हैं। मेहनत करना जानते हैं। यही है बस !

मंत्री : (गरजकर) गरीब आदमी हैं ! सब मेरे पास आते ही गरीब हो जाते हैं। मुफ्तखोरे कहीं के, चाहते हैं मुफ्त में काम हो जाए। लोमड़ लाओ, देखें इसकी तलवार।

[लोमड़ लोहार से तलवार लेता है।]

लोहार : (झुककर) हुजूर की नाक बनी रहे !

[लोमड़ नाचता हुआ जाता है। तलवार मंत्रीजी को देता है। मंत्री तलवार म्यान से निकालता है। नाक-भौं सिकोड़कर बड़ी हिकारत से उसे सूंघता है। पर सूंघते ही उसे छींक आ जाती है। उसकी नाक कट जाती

है। वह तलवार लोमड़ को थमा हाथों से नाक पकड़ कराहने लगता है। मंच पर बैठे बच्चे दरबारियों की तरह अपनी अपनी नाक पकड़ लेते हैं। चोबदार तुरंत प्रस्थान कर जाता है। तलवार लोहार को पकड़ा देता है।]

नट-नटी गान

म्यान में मिर्च भरी थी
म्यान में मिर्च भरी थी।
धार पर मिर्च लगी थी
सूंघते छींक आ गई।
कट गई नाक बेचारी
झट गई नाक बेचारी।
किए की सजा पा गई
झट गई नाक बेचारी।
आ गए राजा - रानी
बढ़ी उनकी हैरानी।
नाक मंत्री की कट गई
हुए वे पानी पानी।
इसी से हम कहते हैं
कि लालच बुरी बला है।
नाक कटवा देती है
सदा लेती बदला है।

[मंच पर बैठे बच्चे दरबारी की तरह जब देख लेते है कि उनकी नाक सलामत है तो तालियां बजाकर नाचने और गाने लगते हैं।]

नाक कट गई, नाक कट गई
मंत्रीजी की नाक कट गई !

[वे लोहार को पकड़कर नाचते है। मंत्री सिर झुकाए कटी नाक लिए कुरसी पर से खड़े हो जाते हैं। चोब-दार नाक कटते ही दौड़ा दौड़ा प्रस्थान कर गया था। राजा-रानी को लेकर आता है। राजा-रानी लिल्ली घोड़ी पर आते हैं। उनके आते ही नाच रुक जाता है।]

राजा : मंत्री की नाक कैसे कट गई ?

लोहार : क्षमा करें महाराज, मंत्रीजी तलवार सूंघ रहे थे।

राजा : क्यों ?

चोबदार : महाराज, हुजूर इसी तरह कच्चे-पक्के लोहे का पता लगाते हैं।

राजा : लोहे को सूंघकर ?

चोबदार : हां महाराज।

राजा : (**डांटकर**) क्यों मंत्रीजी ?

मंत्री : गलती हो गई महाराज।

चोबदार : (**दर्शकों से। अपना मुखौटा उतारकर, जैसे बहुत अच्छा हुआ**) गलती हो गई महाराज ! घूस के सारे पैसे खुद रख लेता था, बड़े बड़े महल खड़े कर लिए। हमें एक पाई नहीं दी ! अच्छा हुआ, खूब सजा मिली।

राजा : अब हम क्या मुंह दिखाएंगे कि राजा का मंत्री नकटा ! तुम फौरन हमारा राज्य छोड़कर चले जाओ !

[रानी आगे बढ़कर जाती है। सेनापति आते हैं।]

राजा : (**सेनापति से**) तुम ठीक कहते थे। जरूर तलवारें कच्ची रही होंगी। हमें पक्का यकीन हो गया कि लड़ाई हम अपने...

रानी : लालची मंत्री की वजह से हारते थे।

राजा : लोहार, अपनी तलवार सेनापति जी को दिखाओ।

[लोहार तलवार पोंछकर सेनापति को देता है। सेनापति तलवार लेकर देखते हैं, फिर चोबदार को इशारा करते हैं। चोबदार एक सैनिक को बुलाता है। सैनिक और सेनापति तलवार चलाते हैं।]

सेनापति : तलवार अच्छी है महाराज। असली पक्के लोहे की है। (**लोहार से**) तुम अच्छी तलवार बनाते हो। अब हमारी सेना के लिए तलवार बनाने का काम तुम्हें सौंपा जाता है।

[मंत्री का नाक पकड़े हुए प्रस्थान। लोहार सेनापति और राजा-रानी के आगे कृतज्ञता से सिर झुकाता है। राजा-रानी फिर नाचने लगते हैं और उनके साथ सभी लोग। चोबदार, लोहार, सेनापति तथा अन्य लोग एक साथ और राजा-रानी अकेले मंच की दूसरी ओर। अचानक नाच रुक जाता है।]

नट-नटी गान

पर कहानी यहीं खत्म होती नहीं,
सुनते हैं मंत्रीजी ने प्रायश्चित किया

अपने चेहरे की रौनक गई देखकर
लाख की नाक उसने था लगवा लिया
धूप में वह खड़े होके दूर टांका पर
कहते हैं प्रायश्चित ज्यों ही करने लगे
लाख की नाक भी पिघलकर बह गई।

फिर से नकटे के नकटे वो लगने लगे
यह कहानी बहुत ही पुरानी सुनो
फिर भी हर बार दोहराई जाती है यह
घूसखोरों की कटती यहां नाक है
हमको जातक कथा बताती है यह।

[नाच फिर शुरू हो जाता है। सारे पात्र मंच से नाचते नाचते चले जाते हैं। नट-नटी और बच्चे रह जाते हैं। सब अपनी अपनी नाक उतार लेते हैं। मुसाफिर की भी नाक उतरवा लेते हैं। फिर लाठी उठाकर, जिसमें नाक बंधी है, मंच पर चिल्लाते हैं। शुरू मुसाफिर करता है: 'ले लो नाक', 'ले लो नाक'।]

नट-नटी समापन गान

नाक हो लाख की या लोहे की
नाक दिल्ली की हो, अमरोहे की
नाक को कटने से बचाना है
नाक से ही यहां जमाना है!

पर्दा गिरता है

(१६७७)

तलाश अर्जुन की

□ के० पी० सक्सेना

पात्र

भोंपूभाई सेठ	पोपट
बंगाली बाबू	मिर्जा साहब
सरदार जी	

[मंच पर एक छोटे से तख्त पर गद्दा-मसनद लगी है। कुछ फाइलें और फोन रखा है। दीवार पर कुछ पोस्टर और रंगीन फिल्मी तसवीरें। एक ओर फूलों के हार से सजा लक्ष्मीजी का चित्र, जिसके नीचे धूपदानी सुलग रही है। तख्त से लगी दो-तीन कुरसियां। पर्दा खुलता है।]

भोंपूभाई सेठ : **(रोनी आवाज में लक्ष्मीजी के आगे हाथ जोड़कर)** हे लक्ष्मी माई, अब तो कर सुनवाई। म्हारो मन उदास है। बस फिल्म की प्यास है। 'भीम की राइफल' सैट पर है, मांग हाई रेट पर है। पर म्हारे को एक धांसू टाइप अर्जुन नही मिलता। माई, म्हारे को अर्जुन दिला दे, पिक्चर आगे बढ़ा दे। **(सुबकता है)**

[लंबे मोजे, बूट और नेकर पहने छोटे कद के पोपट का प्रवेश। वह लालीपाप चूस रहा है।]

पोपट : भोंपू सेठ, मैं आ गया। तुम अबी काहे को मुन्सीपाल्टी का बंबा माफक टप टप रोता है ?

भोंपूभाई सेठ : पोपट, तू म्हारी फिल्म का हीरो है। अभिमन्यू है। पर म्हारे को तेरा फादर, मने अर्जुन नहीं मिलता। कैमरा ठप्प पड़ा है। 'भीम की राइफल' नहीं बनेगी क्या ? म्हारी रोकड़ फंसी है।

पोपट : अब्बी रोने को नहीं मांगता, सेठ। मैं तेरे वास्ते—आई मीन फिल्म का वास्ते तीन ठो फादर लाया है। तीनों फादर बाहर खड़ेला है।

भोंपूभाई सेठ : हाय, सच ! तीन तीन फादर ? पोपट, तू तो ग्रेट है, बेटा ! म्हारी अगली फिल्म 'सिकंदर का जूता' में तू ही हीरो होगा। अब उन्हें बारी बारी बुला बेटा। म्हारे को अर्जुन मिल जाएगा।

पोपट : **(दरवाजे की ओर आवाज देकर)** फादर नंबर वन ! कम इन !

[छाता संभाले एक दुबले-पतले बाबू का प्रवेश]

बंगाली बाबू : (सेठ से) नमोश्कार !

भोंपूभाई सेठ : थारो नाम ?

बंगाली बाबू : भीषम पितामा शेनगुप्ता।

भोंपूभाई सेठ : भीषम पितामा ! एकदम महाभारती नाम है !

पोपट : मोशाय, आपको अपुन का पिक्चर में अर्जुन बनना है।

बंगाली बाबू : बोनेगा, बाबा ! बरोब्बर बोनेगा। काहे शे कि पीछे एक ठो नाटुक में अभी द्रोपदी बोन चुका है। तबी खाभी गया था— तोबला बोजे, शोरोंगी बोजे और बोजे मृदोंग···राधाजी का नुपूर बोजे कृश्नाजी के शोंग। भालो तो ?

भोंपूभाई सेठ : कट ! म्यूजिक नहीं मांगता। म्हारी फिल्म का म्यूजिक डरेक्टर है— चंघाड़जी तबलाफाड़जी। तू म्हारे को एक डैलाग बोल—'अभिमन्नू ! तुम्हें युद्ध में जाना है, पुत्र !' बोलो।

बंगाली बाबू : पन अभिमन्यु कोताए ? (अभिमन्यु कहां है ?)

भोंपूभाई सेठ : (पोपट की ओर इशारा करके) जो है म्हारो अभिमन्नू।

बंगाली बाबू : मोरे गैलो (मर गया) ! एई खोखा माफक अभिमन्यु ? जुद्ध में जाएगा रोमो रोमो ! जुद्ध में गोली चोलता है। मोर जाने का डोर है। अबी इशे पाटशाला भेजो। जुद्ध में भेजने का उमिर नई है इशका।

भोंपूभाई सेठ : (गुस्से से) डैलाग बोलो। 'अभिमन्नू, तुम्हें युद्ध में जाना है।'

बंगाली बाबू : (घबराकर) न बाबा, कोब्बी नई बोलेगा ! दूशरा का खोखा को हम जुद्ध में कइशे भेजेगा ? उशका बाबा को पता चोल गया तो हमरा खोपड़ी ओपन कर देगा। हम जाता है।

[प्रस्थान]

भोंपूभाई सेठ : पोपट, वह तो गया।

पोपट : घबराने का नई, सेठ ! अभी दो पीस फादर और खड़ेला है बाहर। (आवाज देकर) कम इन, फादर नंबर दो।

[मखमल का कुरता-पाजामा पहने, लखनवी टोपी लगाए, सब्जी की टोकरी और हुक्का संभाले दुबले-पतले मिर्जा साहब का प्रवेश]

मिर्जा : आदाब बजा लाता हूं।

भोंपूभाई सेठ : पोपट, यह तो कुछ बजाता है !

पोपट : तेरे को उर्दू में गुडमार्निंग बोलता है, सेठ। मिर्जा साब, तेरे को अपनु का फिल्म में अर्जुन बनना है।

मिर्जा : (पान मुंह में दबाकर) ऐ हुजूर, अब तो आ गए हैं। चाहे

अर्जुन बनाइए, चाहे अनारकली। हम तो घर से बटेर का दाना और हुक्के की तंबाकू खरीदने निकले थे। लोगों ने लग्घे पर चढ़ा दिया कि जाओ मिर्जा, अर्जुन बन जाओ !

भोंपूभाई सेठ : बक बक बंद। अभिमन्नू को डैलाग मारो।

मिर्जा : अजी, अदब मे कहिए न। डायलाग मारा नहीं, बोला जाता है। जनाब अभिमन्नू साहब हैं कहां ?

पोपट : हम हैं।

मिर्जा : तौबा ! आप अभिमन्नू हैं ? नेकर सही बांधनी आती नहीं, अभिमन्नू हो गए। खैर, बोलना क्या है ?

पोपट : मेरे को बोलो—'अभिमन्नू, तुम्हें युद्ध में जाना है।'

मिर्जा : (हंसकर) और अपनी जान गंवाना है। यानी कि हद हो गई। आप जैसे चिलगोजे जंग में जाएंगे ? अल्ला कसम, आप मारे डर के रात में अकेले बाथरूम तो जा नहीं सकते, जंग में क्या खाकर जाएंगे ?

भोंपूभाई सेठ : (चीखकर) अभिमन्नू ! युद्ध में जाना है।

मिर्जा : अजी, चला जाएगा। आप डांटते क्यों हैं ? हम समझाए देते हैं। (पोपट से) मियां अभिमन्नू, हमारी एक बात मान लो, दिल न तोड़ना हमारा। जंग में चले जाओ। दो-चार रोज बाद लौट आना। तुम्हारे अब्बा और अम्मी को हम समझा देंगे। दिल बहलाने को कन्कइया, लूडो वगैरह लेते जाओ।

भोंपूभाई सेठ : गेट आउट। तुम म्हारी फिल्म कन्कइया कर देगा !

मिर्जा : अदब से बात कीजिए। हम तशरीफ वापस ले जाते हैं। (पोपट से) मियां अभिमन्नू, जग में हर्गिज मत जाना। हमारे नाना गए थे, मार डाले गए।

[प्रस्थान]

भोंपूभाई सेट : पोपट ! ये कहां कहां के कनखजूरे पकड़ लाओ ?

पोपट : काए को खाली-पीली दुखी होता है ? अब्बी थर्ड फादर आता है। (आवाज देकर) फादर नंबर थ्री, कम इन।

[लुंगी-बनियान पहने सरदारजी का प्रवेश]

सरदारजी : लो जी मोतियां वालों, अस्सी वी आ गए।

भोंपूभाई सेठ : (घबराकर) नाम ?

सरदारजी : लक्कड़सिंह पत्थरसिंह मुंहतोड़सिंह लुधियाणे वाला।

भोंपूभाई सेठ : पूरी कालोनी का नाम नहीं पुच्छा।

सरदारजी : (निकट आकर सेठ की तोंद देखकर) मैं क्या, ओए मालगोदाम

सिंह ! ए कालोनी दा नां नई है। साड्डे साड़े अपणे नां दा शार्ट फारम है।

पोपट : आपने कभी डिरामे-शिरामे में काम किया है ?

सरदारजी : मैं मरजावां। अपणे गांव दे मेले बिच कई बरी रोल कीत्ता है। सोहणी दा रोल कीत्ता। हीर दा रोल कीत्ता।

पोपट : वेरी गुड। आपको हमारी फिल्म में अर्जुन का रोल निकालना है। डैलाग मारो—'अभिमन्नू, तुम्हें युद्ध में जाना है।'

सरदारजी : कित्थे है अभिमन्नू दा पुत्तर ? अस्सी हुणे पेज देवांगे।

भोंपूभाई सेठ : यही है म्हारो अभिमन्नू। हें हें हें !

सरदारजी : चल, ओये नेकरसिंह ! जा युद्ध विच। फिकर करन दी लोड़ (जरूरत) नहीं। पिच्छे पिच्छे में वी आ रयां। छेत्ती कर, ओये मुर्गी दे बच्चे।

[पोपट की गर्दन पकड़कर दरवाजे की ओर फेंक देता है पोपट मुंह के बल गिरता है।]

होर हुक्म करो जी, मालगोदाम सिंह।

पोपट : (औंधे मुंह) मर गया ! सारी बत्तीसी हिला दी फादर ने। भाड़ में गया रोल ! (चीखकर) गेट आउट यू, लुधियाना सिंह ! आह...मर गया।

सरदारजी : हद हो गई। तेरे अभिमन्नू दी छुट्टी हो गई। मैं चल्या। सत-सिरी अकाल ओय तोंदासिंह।(प्रस्थान)

भोंपूभाई सेठ : मैं लुट गया। म्हारी फिल्म डूब गई। अर्जुन नहीं मिला। (एक पल सोचकर उछल पड़ता है) पोपट, आइडिया !

पोपट : (कराहकर) क्या ?

भोंपूभाई सेठ : गोल्डन जुबली आइडिया ! तू तो अभिमन्नू है ही, हें हें हें...मैं बनता हूं अर्जुन ! हें हें हें !

पोपट : (चौंक कर) क्या बोला, सेठ ? आप...आप अर्जुन बनेगा। मैं मर गया। पानी...सोड़ा...लेमन...कुछ लाओ। आप अर्जुन ? तीन तीन कैमरे तो तोंद के क्लोजअप में लग जाएंगे। आप अर्जुन ! आप...(बेहोश हो जाता है)

भोंपूभाई सेठ : (पास बैठकर) पोपट, मेरे पोपट ! क्या हो गया थारे को ! हे भगवान ! अर्जुन भी नहीं मिल्यो, अभिमन्नू भी गयो...मैं मर गया। (रोता है)

पर्दा गिरता है

(१९७८)

चोंच नवाब

□ के० पी० सक्सेना

पात्र

नवाब कुस्तुनतुनियां

मीर

[पर्दा खुलता है। मंच पर एक तख्त है और पास में रखी हैं दो कुरसियां। तख्त पर पालथी मारे नवाबसाहब बैठे हैं। उनके पास पानदान रखा है और एक बाल्टी। साथ ही लाल रूमाल में बंधी एक पोटली रखी है। नवाब साहब कुरते, पाजामे और टोपी में सजे हैं और दहाड़ें मार मार कर रो रहे हैं। पहले से गीले किए गए रूमाल मे आंखें पोंछ पोंछ कर बाल्टी में निचोड़ रहे हैं। रो रोकर कहते जाते हैं—'हाय चोंचू नवाब! आप कहां चले गए?' रोना रोककर नवाब साहब पान खाते हैं और आवाज देते हैं।]

नवाब : कुस्तुनतुनियां...जनाब कुस्तुनतुनियां साहब! (**खीझकर**) अबे ओ कुस्तुनतुनियां के बच्चे।

[लुंगी पहने, नंगे बदन, टोपी लगाए नौकर कुस्तुनतुनिया का प्रवेश।]

कुस्तुनतुनियां : लो जी, मै आ गया। आप हुक्म दे मारो।

नवाब : हम यहां मारे रंज के रो रोकर शोरबा हुए जा रहे हैं और आप अंदर मजे म आमलेट झाड़ रहे हैं।

कुस्तुनतुनियां : अजी, कहां बना आमलेट? आज मुर्गी ने अंडा नहीं दिया। उसका मूड नही था।

[बाहर से एक आवाज—'अरे भई, नवाब साहब घर में हैं या नहीं?']

नवाब : देख तो, बाहर कौन हलक फाड़ रहा है?

[कुस्तुनतुनियां बाहर चला जाता है। नवाब साहब जल्दी जल्दी रोने लगते हैं और चोंचू नवाब को याद करते हैं। नौकर लौटता है।]

नवाब : (**आंसू बाल्टी में निचोड़कर**) कौन आया है?

कुस्तुनतुनियां : जी वही, जो पान में खाए जाते हैं।

नवाब : मिर्जा कत्थाजानी!

[कुस्तुनतुनियां 'नहीं' में सिर हिलाता है।]

नवाब : पंडित चूनाचरन चतुर्वेदी ?

कुस्तुनतुनियां : वे भी नहीं।

नवाब : लाला छालीपरसाद ?

कुस्तुनतुनियां : नहीं।

नवाब : तो यह क्यों नहीं कहता कि मीर इलायची साहब हैं।

कुस्तुनतुनियां : हां हां, वे ही हैं।

नवाब : जा, उन्हें अदब से उठा ला और हमारे पास रख दे।

[कुस्तुनतुनियां जाता है और तुरंत मीर इलायची के साथ लौटता है। मीरसाहब छड़ी हिलाते आते हैं। नवाब साहब फूट फूटकर रो रहे हैं।]

मीर : (कुरसी पर बैठते हुए) ऐं ? किस्सा क्या है, आप तो बिना कामा-फुलस्टाप रोए चले जा रहे हैं।

नवाब : आप भी रोइए। बड़ी मनहूस खबर है, चोंचू नवाब नही रहे।

मीर : (अचंभे से) क्या कहा ? चोंचू नवाब नही रहे ? रात ग्यारह बजे तक तो हमारे यहां शतरंज खेलते रहे थे। आखिर किस वक्त हो गए ?

नवाब : आज सुबह सुबह। (आंसू निचोड़कर) भाई, किसी तरह हमारे आंसू रोकिए। हम सुबह से अब तक साढ़े चार गैलन रो चुके हैं। न यकीन हो तो बोतल मगाकर आंसू नाप लीजिए।

मीर : नाप लूंगा। मगर जरा बताओ तो कि चोंचू नवाब मरे कैसे ?

नवाब : कुछ न पूछिए। बड़ी दर्दभरी कहानी है। कल रात ग्यारह बजे हमें खबर मिली कि लाटसाहब गवर्नर बहादुर सुबह सात बजे हमसे कानपुर में मिलना चाहते हैं।

मीर : अच्छा, तो ?

नवाब : हमने फौरन साईस को बुलाकर हुक्म दे दिया कि घोड़े को चार बजे जगा दिया जाए।

मीर : खैर, घोड़ा चार बजे जाग गया। आगे ?

नवाब : और हम तीन ही बजे जाग गए। नहाए, बालों में खुशबूदार तेल डाला। कुरते पर इत्र लगाया और..

मीर : आप चल दिए।

नवाब : अभी कहां। अभी तो बेगम डब्बे में पान रख रही थीं।

मीर : ओफ्फो। खैर, पान-बान लेकर आप तांगे पर बैठे और तांगा चला।

नवाब : ऊंहूं। चला कहां। अभी तो घोड़ा मुसम्मी का रस पी रहा था।

मीर : क्या कहा?

नवाब : हां हां, मुसम्मी का रस। वगैर बाल्टी भर रस पिलाए हमने उसे कभी तांगे में नहीं जोता। खैर, तांगा चला और हवा की रफ्तार से हो लिया फैजाबाद वाली सड़क पर।

मीर : मगर जाना तो आपको कानपुर था?

नवाब : भई, आप भी अजीब हैं! नवाबी घोड़े को कोई टोक सकता है कि किधर जा रहे हो? फैजाबाद पहुंचकर उसे खुद गलती पता लगी और पलटकर कानपुर की तरफ भागा। बस जी, कोई पैंतालीस मिनट में आ पहुंचे।

मीर : गोया राकेट हो गया भाई, कुछ कम करो।

नवाब : कम काहे को करें? घोड़ा मुसम्मी का रस पीकर चला था। अब जो कानपुर में तांगा रुका, तो चें की आवाज हुई। हम घबराकर नीचे उतरे और देखते ही सिर पीट लिया।

मीर : (**घबराकर**) क्यों?

नवाब : (**रोकर**) अंधेरे में कमबख्त साईस ने घोड़े की जगह धोखे से चोंचू नवाब को जोत दिया था। वे भी घोड़े के पास ही सोते थे। हाय! बेचारे इतने सीधे थे कि दौड़ते रहे, मुंह से कुछ न बोले। कानपुर में हांफकर दम तोड़ दिया और पहिए तले कुचले गए।

मीर : हाय बाप! यह तो गजब हो गया। उनकी लाश कहां है?

नवाब : (**सुबककर**) अरे लाश कहां बची। सारा गोश्त कुत्ते खा गए। कुछ पंख ही हमारे हाथ लगे। यह रहे।

[नवाब पोटली खोलकर मुर्गे के पर निकालते हैं और चूमकर रोने लगते हैं।]

मीर : (**झुंझलाकर**) क्या! ये तो मुर्गे के पंख हैं? तो क्या चोंचू नवाब मुर्गा थे? उनके चोंच थी?

नवाब : और क्या सूंड होती? आप उन्हें मुर्गा कह लीजिए। हमारे तो चोंचू नवाब थे। हाय चोंचू नवाब! (**रोते हैं**)

मीर : लानत है। मैं समझा आप अपने चचेरे बड़े भाई चोंचू नवाब की बात कर रहे हैं।

नवाब : भई, उनका नाम तो चींचू नवाब है। काश, वे ही मर जाते। हमारे चोंचू नवाब तो बचे रहते।

मीर : भाड़ में जाइए आप ! (छड़ी उठाकर बाहर निकल जाते हैं)

नवाब : कुस्तुनतुनियां !

कुस्तुनतुनियां : लो जी, आ गया।

नवाब : (रोकर) जनाजा उठाओ।

[नौकर नवाब साहब को उठा लेता है।]

नवाब : नामाकूल। मुझे नहीं, चोंचू नवाब को।

[नौकर मुर्गे के पर उठाए धीरे धीरे अंदर जाता है। उसके पीछे पीछे नवाब साहब आंसुओं की बाल्टी उठाए रोते हुए जाते हैं।]

(१६७८)

दस पैसे के तानसेन

□ के० पी० सक्सेना

पात्र

नजूमी	सुखबीर
बेबी	नरेश
राजू	गणेश
एक लड़का	कुछ बच्चे

[समय : स्कूल के फाटक से कुछ हटकर सड़क का फुटपाथ।
स्थान : संध्या चार बजे।
फुटपाथ पर चारखाने की लुंगी और लंबा कुर्ता पहने एक नजूमी जड़ी-बूटियां सजाए बैठा है। पास ही एक बहुत से बंद लिफाफे कतार में बिछे हैं और पिंजड़े में बंद एक तोता रखा है। नजूमी के हाथ में एक पुराना टेनिस रैकिट है जिस पर खाल मढ़कर डमरू जैसा बनाया गया है।]

नजूमी : (**डमरू बजाकर**) गिड़क...।...गिड़क...गिड़क। प्यारे प्यारे बच्चो और बच्चियो! मोटे-ताजे तरबूजों और बांस की खपच्चियों। चले आओ...हेल्थ बनाओ।...हीरामन तोता भाग्य बताएगा। जय बजरंग बली, तोड़ दुश्मन की नली। गिड़क...गिड़क...गिड़क...।

[बच्चे-बच्चियां इकट्ठे होने लगते हैं।]

नजूमी : शाबाश! तुम्हें कनपटीमार चूरन खिलाएंगे, जिस्म मजबूत बनाएंगे। आज खाओ, लंबे; कल खाओ, बिजली के खंबे। पत्थर पर घूंसा मारो, टन से बोले, बच्चे समझें कि स्कूल की छुट्टी हो गई। इस जालिम चूरन में गुल चमचम की जड़, हाथी दांत का बुरादा, सफेद कौवे की चोंच और गुलाबजामुन का अर्क घोटकर दस दस साल बीस पहाड़ों पर घोटा गया है। दस पैसे पुड़िया! आज चूरन खाओ, कल अमिताभ बच्चन जैसे लंबू हो जाओ।

[बच्चे चूरन खरीदते हैं।]

नजूमी : एक खेल खत्म, दूसरा चालू।...हीरामन का कमाल देखो। दस पैसे लगाओ, अपना भाग्य पढ़ते जाओ...शाबाश बेबी!

दस का सिक्का !...चल बेटा हीरामन ! चिट्ठी टांच दे, बेबी का भाग्य बांच दे।

(तोता चोंच से पकड़कर एक चिट्ठी निकाल लेता है।)

नजूमी : लो बेबी अपनी गुड लक पढ़ो।

बेबी : (पढ़ती है) तुम परीक्षा में टाप करोगे, हिस्ट्री में सबसे ऊंचे नंबर लाओ। आगे चलकर प्रोफेसर बनोगे, नाम कमाओगे। (चिढ़कर) हुंह, यह तो किसी लड़के के बारे में लिखा है।

नजूमी : ठीक है। यही जादू है। तोते ने निकाला है। हम इसकी तोती घर छोड़ आए। यही चिट्ठी अगर तोती निकालती तो यह चिट्ठी लड़की के नाम छपी होती। लेकिन भाग्य तुम्हारा एकदम पक्का है।

बेबी : खाक पक्का है। मैंने हिस्ट्री ली ही नहीं। बायलोजी ले रखी है।

नजूमी : चिट्ठी गलत नहीं हो सकती, तुम्हें बायलोजी छोड़कर हिस्ट्री पढ़नी होगी। यानी मेढ़क छोड़ो, नेपोलियन पढ़ो।

[बच्चे हंसते हैं। राजू पैसे देता है, तोता उसका भाग्य निकालता है।]

नजूमी : (पढ़कर) तुम ऊंचे-संगीतकार बनोगे। तुम्हारे पैरों में तानसैन की जूतियां होंगी...अपना गला गरम पानी से खंगाला करो... शाबाश !

राजू : सिर्फ रेडियो ! (बच्चे हंसते हैं) खाक संगीतकार बनूंगा। मुकेश का गाना गाता हूं तो गले से दादाजी की खंखार जैसा स्वर निकलता है। लताजी का गाना गाता हूं तो लगता है दादीजी सिलबट्टा पीस रही हैं।

नजूमी : हीरामन का हुक्म है, तुम तगड़े संगीतकार बनोगे।

राजू : सच ? गाकर दिखाऊं ?

नजूमी : नहीं हमारे तोते का हार्ट फेल हो जाएगा। घर में पुराने घड़े पर मुंह औंधा कर प्रैक्टिस किया करो...चलो बच्चो। अपना भाग्य निकालो।

[नरेश पैसे देता है। तोता कार्ड चुनता है।]

नजूमी : (पढ़कर) हायर ! ग्रेट ! तुम डाक्टर बनने जा रहे हो।

एक लड़का : क्या जानवरों का डाक्टर।

नजूमी : ठीक। जानवरों के बहुत ऊंचे डाक्टर बनोगे ? कई हाथियों के पेट का आपरेशन करके नाम कमाओगे। बड़े बड़े ऊंट और

चीते तुमसे खांसी का इलाज कराएंगे। कई चूजे तुम्हारी दवा से मुर्ग बन जाएंगे।

एक लड़का : यानी यह सर्कस में भर्ती हो जाएगा।

[बच्चे हंसते हैं।]

नजूमी : आओ जी, पीली शर्ट वाले मास्टर ! पैसे निकालो।

[सुखबीर दस का सिक्का देता है। तोता कार्ड निकालता है।]

नजूमी : मार डाला ! तुम्हारा भाग्य सबसे अधिक पावरफुल है। एक लाख की गाड़ी पर सवार रहोगे ! जेब नोटों से भरी रहेगी। ड्राईवर तुम्हारा हुक्म मानेगा।

देवी : हाय, सुखबीर बस कंडक्टर बनेगा।

[जोरदार हंसी]

सुखबीर : (खिसियाकर) शन्नो, तू भी भाग्य जंचवा ले न।

नजूमी : येस येस, पैसे निकालो।

[शन्नो दस का सिक्का देती है। तोता कार्ड निकालता है।]

शन्नो : मैं खुद पढ़ूंगी। अरे वाह, मैं एयर होस्टेस बनूंगी। हवाईजहाज पर घूमूंगी। देश-विदेश की यात्रा करूंगी। मजा आ गया।

सुखबीर : और जो कहीं हवाईजहाज से नीचे टपक पड़ी तो जमीन पर आटे का ढेर ही नजर आएगा। पैदल सड़क पार करने पर नानी याद आती है और चढ़ेगी हवाईजहाज पर। चिट्ठी गलत निकल गई तेरी।

[सब हंसते हैं।]

शन्नो : अच्छा कुमार, तुम निकलवाओ अपनी चिट्ठी।

[कुमार पैसे देता है।]

नजूमी : (पढ़कर) आदाब अर्ज करता हूं। आप पुलिस के बड़े अफसर बनने वाले हैं। क्या समझे ?

कुमार : समझ गया। कल से ही कोयला पीसकर मूंछें बनाना शुरू करता हूं। जरा रोब पड़ेगा। मेरी जीप और घोड़ा कहां हैं ? पिस्तौल किधर गई।

सुखबीर : बस बस, ज्यादा हवा मत भर। अभी भांय से पेट दग जाएगा।

[बच्चे हंसते हैं।]

नजूमी : वाह भाई, वाह ! यह अपने पाजामा मास्टर पीछे क्यों खड़े हैं ? जरा सामने आइए। दस का सिक्का दिखाइए।

बेबी : क्यों गणेश, तुम्हें कार्ड नहीं निकलवाना ? दस पैसे मैं दिए देती हूं।

सुखबीर : हें हें हें। पैसे बरबाद मत करो। हम यूं ही इनका भाग्य बताए देते हैं। कुछ दिनों में इनकी नाक कट कर सूंड हो जाएगी और यह चूहा स्कूटर पर बैठकर सचमुच गणेश हो जाएगा। दनादन लड्डू खाएगा।

नरेश : नहीं, नहीं, यह पढ़ाकू मियां किसी लाइब्रेरी में नौकर होंगे।

[सब हंसते हैं। पाजामा, कमीज और पुरानी चप्पल पहने सीधा-सादा गणेश आगे आता है।]

गणेश : दस पैसे मेरे पास भी हैं। लेकिन मैं उन्हें बरबाद नहीं करना चाहता। अपना पाकिट मनी जोड़ जोड़ कर मैं अपनी पढ़ाई का सामान खरीदता हूं। पिताजी नहीं रहे, पैसा पैसा जोड़कर दादाजी मुझे किस तरह पढ़ा रहे हैं, मैं ही जानता हूं। तुम लोग बहकावे में मत आओ। अगर सबका भाग्य इस तोते की चोंच में ही होता, तो यह नजूमी साहब आज दस दस पैसे के लिए फुटपाथ पर नजर न आते।

नजूमी : जाओ जाओ, अपना काम देखो।

गणेश : तुम बच्चों को फुसला कर पैसे ऐंठ रहे हो। आगे चलकर हम डाक्टर, इंजीनियर, वकील, पायलेट जो कुछ बनेंगे, अपनी लगन, परिश्रम और ईमानदारी से बनेंगे, तोते की चोंच में नहीं। अभी हमें पढ़ाई में दिल लगाकर न जाने कितनी सीढ़ियां पार करनी हैं। तुम हमें बहका नहीं सकते। इस तरह बेईमानी से पैसे बटोरना पाप है।

बेबी : गणेश ठीक कहता है।

कई बच्चे : नजूमी मुर्दाबाद। कनपटीमार चूरन मुर्दाबाद। नजूमी का तोता हाय हाय !

[नजूमी घबराकर अपना सामान समेटने लगता है। तोता टेहूं टेहूं चिल्ला रहा है। बच्चे हंसते हुए घर जाने लगते हैं।]

पर्दा गिरता है

(१९७८)

थप्प रोटी थप्प दाल

□ रेखा जैन

पात्र

मुन्नी	नीना
तरला	चुन्नू
सरला	टिनकू
अन्य बच्चे	बिल्ली

[पर्दा खुलने पर बच्चे खेलते हुए दिखाई पड़ते हैं। सब बच्चे हल्ला मचाते, हंसते हुए बड़े उत्साह के साथ खेल ही रहे होते हैं कि मुन्नी अपने घर से भागी भागी वहां आती है और नीना को पुकारती है। नीना खेल छोड़कर सामने एक किनारे आ जाती है। खेल चलता रहता है।]

मुन्नी : **(पुकारकर)** ओ नीना, नीना सुन !

नीना : **(पास आते हुए)** क्यों, क्या बात है, मुन्नी ?

[एक ओर जरा धीमी आवाज में, ताकि खेल का छंद सुनाई पड़ता रहे।]

मुन्नी : देख नीना, आज मैंने अम्मा से आटा, घी, दाल, दही, साग, चीनी, मक्खन सब चीज ली हैं। चल, रोटी का खेल खेलेंगे।

नीना : रोटी बनाने का ?

मुन्नी : हा हां।

नीना : हां, खूब मजा आएगा। चलो, उन लोगों को भी बुला लें। **(ताली बजाकर)** अरे चुन्नू, तरला सुनो, अब इस खेल को खेलते तो बहुत देर हो गई। चलो, अब रोटी का खेल खेलें।

सब : हां, हां, यह ठीक है।

मुन्नी : अच्छा अच्छा, चलो। देख चुन्नू, तू और टिनकू, बाजार से साग-सब्जी लाने का खेल करना।

नीना : नहीं मुन्नी, इन दोनों से जरा दाल बनवाएंगे और जब इनसे आग तक नही जलेगी तब बड़ा मजा आएगा।

चुन्नू : तो क्या तू समझती है हम आग नहीं जला सकते ? चल रे टिनकू, आज इन्हें दाल बनाकर ही दिखा देंगे। क्यों ?

टिनकू : हां हां, यार देख लेंगे।

मुन्नी : तो सरला, तू क्या करेगी ?
सरला : मैं तो, भई, तेरे दही का मठा चला दूंगी।
मुन्नी : और तरला, तू।
तरला : मैं ? मैं तेरे संग रोटी बनाऊंगी।
नीना : देख तरला, रोटी तो मैं बनाऊंगी।
मुन्नी : (थोड़ा झल्लाकर) फिर सभी रोटी बनाएंगे तो बिल्ली कौन बनेगा ? नीना, तू ही बिल्ली बन जाना।
नीना : (चिढ़ाते हुए) तू बिल्ली बन जाना। वाह जी वाह, मैं बिल्ली बहुत बनी। अच्छा चलो, पुगन की पुगाई करके देख लो। जो चोर बनेगा, उसको ही बिल्ली बनना पड़ेगा।

[सब बच्चे घेरा बनाकर खड़े हो जाते हैं और मुन्नी हर बच्चे के ऊपर हाथ रखकर कहती जाती है
अक्कड़ बक्कड़ बम्बे बौं, अस्सी नब्बे पूरे सौ,
सौ में लगा धागा, चोर निकल के भागा।
आखिरी शब्द के साथ हाथ नीना के ऊपर जाता है।]

चुन्नू : (चिढ़ाते हुए) ले नीना, तू बहुत बच रही थी। ले बन गई न बिल्ली ?
नीना : (खिसियाते हुए) तो क्या हुआ, मुझे तो और भी मजा, मैं तुम्हारी सारी चीजें खा जाऊंगी।

[खेल शुरू होने से पहले संगीत स्वर। फिर संगीत स्वर क्रमशः कम होता जाता है और मठा चलाने की हांडी लेकर अभिनय के साथ दो बच्चियां लयबद्ध कदम रखती हुई रंगमंच पर आती हैं। फिर गगरी उतारने का और रई से मठा चलाने का अभिनय करती हैं। साथ ही निम्नलिखित गीत गाती हैं।]

सरला-तरला : घुम्मड़ घुम्मड़ दही बिलोवे, जाटनी का छोरा रोवे।
रोता है तो रोने दे, मां को दूध बिलोने दे।

[इन पंक्तियों को गाते समय जाटनी के बेटे के रूप में एक बच्चा रोता हुआ जाटनी के पास आता है। यह उसे मक्खन देने का अभिनय करती है और प्यार से पास में बिठाकर फिर मठा चलाने लगती है। मुन्नी दौड़कर आती है। मठा देखने का अभिनय करती है।]

मुन्नी : वाह वा, खूब चलाया मट्ठा, देखूं यह मीठा या खट्ठा।

सरला : क्या देखोगी।
इस मट्ठे का बढ़िया स्वाद, खाकर सब करते हैं याद।

मुन्नी : (मुसकराकर) अच्छा। बड़ी शान है।

[चुन्नू, टिनकू कंधे पर बोझ रखकर लयबद्ध पैर रखते हुए आते हैं।]

तरला : यह लो, चुन्नू-टिनकू आए, देखें क्या तरकारी लाए।

चुन्नू : (बोझ उतारते हुए) ओ हो, पीठ रही है दूख।

टिनकू : मुझको लगी करारी भूख।

मुन्नी : (मुंह मटकाते हुए) बच्चूजी भूख लगने से क्या होगा? अब पहले तुम आग जलाओ, और हांडी में दाल पकाओ।

चुन्नू : अरे हां।
चल जल्दी से दाल पकाएं। बड़ियों का भी स्वाद चखाएं।

[दोनों आग जलाने का, फूंक मारने, धुएं से आए आंसू पोंछने का अभिनय करते हैं। फिर दाल और बड़ी पकाते हैं। कलछी से दाल चलाकर चखते हैं कि अंगुली जल जाती है। बच्चों के दाल पकाने के अभिनय से प्रकट होना चाहिए कि ये अनाड़ी हैं। अंगुली जलने के अभिनय के साथ साथ मुन्नी पास आकर इन्हें देखती है।]

मुन्नी : टिनकू ने पकाई बड़ियां, चुन्नू ने पकाई दाल,
टिनकू की बड़ियां जल गईं, चुन्नू का बुरा हाल।

[तरला तथा अन्य सहेलियां एक ओर से आती हैं। हाथ कमर पर इस प्रकार रखा है जैसे हाथ में डलिया हो। आकर बैठ जाती हैं। फिर गाकर रोटी पकाने का अभिनय करती हैं।]

थप्प रोटी थप्प दाल,
खाने वाले हो तैयार।

[ये पंक्तियां दो बार गाई जाने के बाद चुन्नू और टिनकू के दोस्त एक पंक्ति में एक के पीछे एक कदम बढ़ाते हुए बड़ी शान के साथ आकर एक ओर बैठ जाते हैं। फिर लड़कियों की ओर हाथ फैलाकर मांगते हुए गाकर दो बार कहते हैं।]

चुन्नू आदि : लाओ रोटी लाओ दाल, लाओ खूब उड़ाएं माल।

[मुन्नी और तरला की सहेलियां रोटी की डलिया

उठाने का अभिनय करती हुई एक पंक्ति में लड़कों के पास आकर उन्हें रोटी देने के अंदाज में दो बार गाकर कहती हैं।]

मुन्नी आदि : ले लो रोटी ले लो दाल, चखकर हमें बताओ हाल।

[इसके बाद वे वापस लौट जाती हैं, अपने पहले स्थान पर आकर बैठ जाती हैं।]

चुन्नू आदि : (चिढ़ाकर) खट्टा—(पर जैसे ही मुन्नी गुस्से से उसकी ओर देखती है तो कहते हैं) नहीं, नहीं मीठा। खट्टा—नहीं नहीं, मीठा। (खाने का अभिनय करते हुए) खट्टा, मीठा, खट्टा मीठा, खट्टा, मीठा, खट्टा, मीठा।

[कुछ रुककर]

सब बच्चे : आधी खाएं आधी रक्खें, अब सो जाएं उठकर चक्खें।

[सब बच्चे सो जाते हैं। और पृष्ठभूमि से संगीत बजता है। धीरे धीरे संगीत की ध्वनि कम होने के साथ साथ बिल्ली की म्याऊं सुनाई पड़ती है। बिल्ली का प्रवेश। वह चारों ओर दृष्टि दौड़ाकर जब देखती हैं तो ओंठों पर जीभ को फेरकर बड़ी खुश होकर कहती है।]

बिल्ली : ओ हो ! मक्खन कितना सारा, झट से चटकर करूं किनारा।

[आगे बढ़कर ऊपर उछलती है, छींके पर से कुछ चीज लेने का अभिनय करती है।]

हैं छींके पर यह क्या रक्खा, वान रही क्या, अगर न चक्खा।

[हाथ बढ़ाकर रोटी निकालते हुए]

रोटी कैसी गरम गरम है, घी से चुपड़ी नरम नरम है।

[खाते हुए]

मक्खन रोटी चावल दाल, जी भर खाया कित्ता माल।

और देखो वह, मुन्नी, चुन्नू, टिनकू सारे,

खर्राटे भर रहे बिचारे।

अब चुपके से सरपट जाऊं।

आलसियों को सबक सिखाऊं।

म्याऊं, म्याऊं, म्याऊं, म्याऊं।

[बिल्ली जाती है। अंगड़ाई लेकर सरला उठती है और मक्खन के बर्तन को खाली देखकर आश्चर्य से चिल्लाती हुई कहती है।]

सरला : ओ रे चुन्नू, टिनकू भाई, कहीं न मक्खन और मलाई।

मुन्नी : (**चौंककर उठते हुए**)
अरे जरा छींके तक जाना, और रोटी का पता लगाना।
हाय रे,
ना रोटी ना दूध मलाई, लगता है बिल्ली ने खाई।

तरला : हूं...ऊं...

जाटनी का बेटा : बिल्ली आई आधी रात,
खा गई रोटी खा गई भात।

एक बच्चा : क्या कहा,
बिल्ली आई आधी रात,
खा गई रोटी, खा गई भात ?

टिनकू : चलो चलें बिल्ली की ढूंढ मचाएं
फिर उसको चोरी का मजा चखाएं।

सब बच्चे : ठीक ठीक।

[बच्चे मिलकर बिल्ली को ढूंढ़ने चलते हैं। साथ साथ संगीत बजता है।]

चुन्नू : (आवाज देकर) अरी ऐ, कहां छिपी बैठी ओ बिल्ली ?

मुन्नी : वा भई वा, तुम हो पूरे शेखचिल्ली।

चुन्नू : क्यों जी क्यों ?

मुन्नी : और नहीं तो क्या ?
बिल्ली क्या खुद ही बोलेगी ?
कुछ अपना रहस्य खोलेगी ?

टिनकू : अच्छा चलो, वहां भी देखें।

[फिर सब बच्चे इधर-उधर ढूंढ़ते हैं। कुछ बच्चे अंदर जाते हैं, बाहर आते हैं। कुछ रंगमंच पर सामने की ओर देखते हैं, कभी बैठकर नीचे झुककर देखते हैं, कभी विंग की ओर देखते हैं और नहीं मिलने का हाव-भाव प्रकट करते जाते हैं। तभी तरला-सरला चीखकर कहती हैं।]

तरला-सरला : यह लो, मिल गई बिल्ली, मिल गया चोर।

चुन्नू-टिनकू : सच, सच, सच।

[बिल्ली घबराई हुई सी रंगमंच पर आ जाती है। सब उसे पकड़ते हैं।]

सब : करो पिटाई इसकी जोर।

[हंसकर मारने का अभिनय करते हुए।]

बोल, अब खाएगी मेरी रोटी

अब खाएगी मेरी दाल ?

बिल्ली : हां खाऊंगी सौ सौबार

जो सोओगे टांग पसार।

[यह कहकर बिल्ली भागने का प्रयत्न करती है। पर सब बच्चे उसे घेर लेते हैं। तीन-चार बार ऐसा करने के बाद बिल्ली घेरा छोड़कर भाग जाती है, और सारे बच्चे 'पकड़ो पकड़ो' का शोर मचाते हुए उसके पीछे पीछे भागते हैं।]

पर्दा गिरता है

(१९७८)

डर

□ श्याम व्यास

पात्र

विजय शर्मा : परिवार का प्रमुख अधेड़ उम्र,
नौकरी पेशा

नंदना : विजय की पत्नी, अधेड़ वय,
नौकरी पेशा

कल्पना : विजय और नंदना की लड़की,
किशोरवय

रवि : कल्पना का छोटा भाई

[घड़ी एक एक कर छः ठोके लगाती है।
ड्राइंगरूम में सोफे पर मस्त पड़ी, अधेड़वय की नंदना अचानक व्यग्र हो, खड़ी हो जाती है। कभी घड़ी की ओर, कभी दरवाजे की ओर देखती है। कमरे में चक्कर लगाने लगती है।]

नंदना : (**स्वयं से**) पता नहीं अब तक रवि क्यों नहीं लौटा। स्कूल की छुट्टी हुए भी दो घंटे हो गए। क्या जाने कहां मारा मारा फिरता है? भगवान जाने इस लड़के का क्या होगा?

[फिर आवाज देती है।]

अरी कल्पना, भो कल्पना! कहां चले जाते हैं सब लोग? मैं ही अकेली खटती रहती हूं इस घर में। और किसी को कोई वास्ता ही नहीं है जैसे! अरी...ओ...कल्पना!

कल्पना : (**दौड़ती हुई आती है**) हां मां, क्या बात है, मुझे बुलाया क्या?

नंदना : भई कहां चले जाते हो सब लोग। मैं कब से आकर बैठी हूं। तू एक प्याली चाय भी मुझे नहीं पिला सकती। कितनी थक जाती हूं।

कल्पना : चाय ही ला रही थी मां, बस तैयार है।

नंदना : और तेरे पापाजी बाथरूम से बाहर आए भी या नहीं?

कल्पना : पापाजी हाथ-मुंह धो रहे हैं। मैं दोनों के लिए चाय ला रही हूं।

नंदना : और सुन, तेरा वह लाड़ला भाई रवि कहां है? अभी स्कूल से

ही नहीं लौटा क्या ? (**कल्पना चुप रहती है, जाने लगती है**)

नंदना : अरे, तू चली कहां ? मेरी बात का जवाब भी नहीं देगी। देखती हूं तेरे दिमाग भी बहुत सड़ने लगे हैं। आज उस नालायक को घर में आने तो दे फिर देखती हूं कैसे कभी बाहर जाता है।

कल्पना : मां, ऐसे तो वह दरअसल किसी दिन घर से भाग जाएगा। घर में भी प्यार नहीं, स्कूल में भी प्यार नहीं। तभी तो वह घर से और स्कूल से दूर दूर रहता है।

नंदना : तू अपना ज्ञान मत बघार। जरा सा कालेज क्या जाने लगी खुद को बुद्धिमान समझ बैठी है।

[कल्पना चुपचाप खिसक जाती है। नंदना सोफे पर बैठ जाती है। तभी तौलिए से मुंह रगड़ते हुए विजय शर्मा ड्राइंगरूम में आते हैं और नंदना को गौर से देखते हैं।]

विजय : क्यूं, क्या बात है ? बड़ी उखड़ी हुई लग रही हो। थक गई क्या ?

नंदना : दफ्तर में खटना पड़ता है। सुबह से शाम तक टाइपरायटर पर खट खट करते शरीर टूट जाता है।

विजय : और हम क्या दफ्तर में ऐश करते हैं ? हमें भी तो फाइलों से जूझना पड़ता है। नौकरी तो नौकरी ही होती है मेम साहब, न बने तो छोड़ दो और घर बैठो।

नंदना : मुझे कौन शौक है नौकरी करने का। छोड़ तो आज दूं मगर घर-गृहस्थी कैसे चलेगी। अभी क्या कम परेशानियां हैं। और फिर ये बच्चे ! राम राम ! कल्पना कालेज क्या जाने लगी बस हमेशा मुझे ही लेक्चर देती रहती है। और रवि, वह तो गया काम से। सारे दिन आवारगी करता रहता है। नौकरी करूं या बच्चों को संभालूं, समझ ही नहीं आता मुझे।

[कल्पना ट्रे रखती है और एक एक प्याली अपनी मां और पापा के सामने रखती है। जाने को होती है तो पापा रोकते हैं।]

विजय : क्यों क्पू बेटी, मां क्या कर रही हैं ? मां को ही लेक्चर देती हो !

कल्पना : ना पापा, अब ऐसा न होगा। (**रुआंसी हो जाती है**)

विजय : अरे बात तो बता मुझे। दो टूक जवाब दिया और छुट्टी ! बोल क्या बात है, कहां है रवि ? स्कूल भी नहीं जाता है वह,

घर में भी नहीं रहता। अभी तो बच्चा है। ऐसा क्यों हो रहा है ?

नंदना : (बीच में बात काटकर) मैं बताती हूं। आप चले जाते हैं दफ्तर। मैं भी चली जाती हूं। बच्चों को कोई डांटने वाला नहीं घर में सो मरजी की बातें कर रहे हैं।

विजय : पर दूसरे परिवारों में भी तो पति-पत्नी नौकरी करते हैं, वहां भी तो बच्चे अकेले रहते हैं। फिर तुम्हारा रवि ही क्यों आवारगी करता है।

नंदना : (जोर से) यह मैं नहीं मानती। पर मां-बाप घर से बाहर रहेंगे तो बच्चे भी आवारा होंगे ही।

कल्पना : मां...?

नंदना : मैं ठीक कह रही हूं।

विजय : (आवेश में) तो नौकरी छोड़ दो और घर में बैठ बच्चों को लायक बनाओ।

नंदना : हां, हां यही सब चलता रहा तो नौकरी भी छोड़ दूंगी। परंतु नालायक बच्चों की मां नहीं बनूंगी।

विजय : तो यही ठीक है, कल ही इस्तीफा भेज दो।

[कमरे मे खामोशी भर जाती है। कल्पना खाली प्याले ट्रे में रखने लगती है और अंदर की ओर चली जाती है। कमरे में विजय और नंदना अकेले रह जाते हैं। दीवार पर घड़ी के कांटे एक जगह इकट्ठा होते हैं। तभी अंदर के कमरे में फुसफुसाहट सुनाई देती है। विजय इशारे से नंदना को बुलाता है। वह भी दरवाजे से कान लगा लेती है। अंदर के कमरे मे मद्धम आवाजें सुनाई देती है।]

कल्पना : रवि, कितनी बार कहा तुझे पर तू मानता ही नहीं। तेरे कारण मां और पापा कितने दुखी हैं।

रवि : मुझसे कैसा दुख है। मां-पापा दिनभर दफ्तर में रहते हैं, शाम सैर को जाते हैं और फिर सो जाते हैं। मुझे तो नहीं लगता कि वे दुखी हैं।

कल्पना : अरे तेरे कारण ! तू न स्कूल जाता है...

रवि : (बीच में) कौन कहता है मैं स्कूल नहीं जाता। मैं तो एक दिन भी स्कूल मे गैरहाजिर नहीं होता।

कल्पना : अब झूठ मत बोल। मैं ही कल तेरे स्कूल गई थी। तेरे टीचर

ने बताया कि तू कई दिनों से क्लास में नहीं गया। यह सब क्या है ?

रवि : देख कपू दीदी। तुझसे सच सच कह दूं। मैं स्कूल नहीं जाता हूं। मेरी पढ़ाई पिछड़ गई है। टीचर मुझे क्लास में डांटते हैं, बैंच पर खड़ा होने को कहते हैं, दूसरे बच्चे मुझ पर हंसते हैं। मुझे स्कूल के टीचर से डर लगने लगा है। मैं वहां नहीं जाऊंगा।

कल्पना : पर भैया तेरी पढ़ाई क्यों पिछड़ रही है। घर में पढ़ता क्यों नहीं ?

रवि : दीदी, कैसे पढ़ूं। घर में मां-पापा सभी बिजी हैं। तुम भी कालेज जाती हो। कभी मां ने पूछा कि कैसी पढ़ाई चल रही है। पापा कभी हमारे टीचर से मिले ? बस हमेशा डांटते रहते हैं, नालायक कहते रहते हैं, मां तो पीटती भी है। मुझे इस घर से भी डर लगता है। सच कहता हूं दीदी, किसी दिन सब कुछ छोड़कर चल दूंगा। अभी तो बच्चा हूं न ?

[विजय आंखें उठाकर नंदना को देखता है। दरवाजे से दोनों दूर हो जाते हैं। नंदना अपराधभाव से भर जाती है और विजय का हाथ पकड़ अंदर ले जाती है। मां और पापा को देख दोनों बच्चे थोड़ा घबरा जाते हैं परंतु नंदना आगे बढ़ रवि को अपनी छाती से लगा लेती है, कल्पना विजय के पास खड़ी हो जाती है।]

नंदना : (भरे कंठ से) अरे पगले ! अपनी मां से डरता है, पापा और घर से डरता है। बेटा दोष तो हमारा ही है। हम कसूरवार हैं...

कल्पना : मां ! आप ऐसा न कहिए। रवि भी समझता है। अब और ऐसा नहीं होगा।

विजय : जो भी बात हो, बेटे, हमें साफ साफ कह दिया करो। ठीक है न ? आज से हम दोस्त हुए। हुए कि नहीं, चलो शेकहैंड करो।

[विजय बारी बारी से रवि और कल्पना से शेकहैंड करते हैं। दोनों बच्चे खुलते हैं और फिर हंसने लगते हैं। नंदना के आंसू बहते रहते हैं।

विजय सभी के साथ फिर से ड्राइंगरूम में आता है। रवि बारी बारी से मां-पापा की ओर देखता है।]

रवि : अब ऐसा नहीं होगा मां। कभी नहीं होगा।

[और भावावेश में उसकी आंखें डबडबा जाती हैं। दीवार घड़ी सात ठोके बजाकर खामोश हो जाती है।]

पर्दा गिरता है

(१९७८)

श्वान धर्म यह जिंदाबाद

□ लक्ष्मीकांत वैष्णव

पात्र

कुत्ते हाथी
बंदर रीछ
गधा

[बच्चे अपने सिरों पर विभिन्न जानवरों के चेहरे फिटकर यह नाटक खेल सकते हैं।]

कुत्ता-१ : इसको काटूं, उसको काटूं, किसको काटूं ?

कुत्ता-२ : सबको काटो। जो जो गुजरे आज गली से उसको काटो।

[एक गधा उधर से निकलता है]

कुत्ता-१ : इसके घुटने आज फोड़ दो। कान पकड़कर भी झंझोड़ दो।

गधा : (मुड़कर) मोती भैया तुम क्यों भौंके, रोज निकलता हूं इस पथ से, आज मुझे क्यों देख के चौंके ?

कुत्ता-१ : सुन बे गधे, काम हमारा यही भौंकना

कुत्ता-२ : अजनबियों को देख चौंकना।

कुत्ता-१ : सोच रखा है, आज जाएगा जो इस पथ से
उसे भौंककर डांटेंगे।

कुत्ता-२ : हां, सोच रखा है
जो गुजरेगा आज गली मे
उसे लपककर काटेंगे।

गधा : मगर निहत्थों को धमकाना
धर्म नही है,
तुम जैसे ताकत वालों का धर्म नहीं है।

[एक बंदर उधर से गुजरता है। गधे की बात सुनता है। फिर गधे से कहता है]

बंदर : कूकर का है काम भौंकना
और काटना
अपने से ताकत वाले के पैर चाटना।
जो लतियाए उसके आगे पूंछ हिलाना
जो डर जाए उसे घूरकर आंख दिखाना।

कुत्ता-१ : इस बंदर को भी झंझोड़ दो
दोनों आंखें आज फोड़ दो।

बंदर : तुम जमीन पर रहने वाले
छोटी है औकात तुम्हारी।
मेरा भला बिगाड़ेगी क्या
यह कुत्ते की जात तुम्हारी।
लपक पेड़ पर चढ़ जाऊंगा
दांत दिखाकर खखुआऊंगा।

कुत्ता-१ : **(कुत्ते-२ से)**
इसको अपनी बत्तीसी का मजा दे
हमसे उलझने की सजा दे।

[कुत्ता-२, भौंक कर दौड़ता है। बंदर पास के पेड़ पर चढ़ बैठता है।)

कुत्ता-१ : नीचे से क्या भौंक रहा है
गले का धम्मन धौंक रहा है।
ऊपर चढ़ जा और काट खा
सारा गुर्दा आज चाट खा।

बंदर : **(मुंह चिढ़ा कर)**
श्वान गली के चलने वाले
बेमतलब ही जलने वाले
ऊपर कैसे चढ़ पाएंगे ?
यों जीवन में आगे कैसे बढ़ पाएंगे ?

[फिर मुंह चिढ़ाना है। उसके बाद उतरकर तेजी से भाग जाता है।]

गधा : **(खड़ा खड़ा खुशी से चेंपो चेंपो करता है)**
बंदर निकला मस्त कलंदर खी खी खी खी
भाग गया कुत्तों को डरा कर खी खी खी खी।

कुत्ता-१ : मत कुत्तों को ताव दिला तू
मौन गधे मत पास बुला तू।
तुझको तो हम काट खाएंगे
तेरा भेजा चाट जाएंगे।

कुत्ता-२ : दोनों आपस में बांट खाएंगे
तुझको तो हम काट खाएंगे।

गधा : (नेपथ्य की ओर देखकर)
बत्तीसी को बेमतलब यों मती चलाओ
बाप तुम्हारा आता है, लो दुमें दबाओ।
[हाथी गुजरता है]

कुत्ता-१ : (हाथी को देखकर)
यह है चूहा, इस पर तो हम रोज भौंकते
मगर बेशरम कभी न तकता ओर हमारी।

कुत्ता-२ : देखें कैसे ?
पैने दांतों से डरता है
इसीलिए तो ओर हमारी
अपनी सूंड नहीं करता है।

कुत्ता-१ : चलो आज ललकारें इसको और चाब लें
अपने पंजों से इसका सिर आज दाब लें।

गधा : कुत्तो, मत उलझो महान से।
माफ हमेशा जो करता है,
वह जब कभी क्रोध करता है,
तब फिर नहीं बख्शता है वह
चले जाओगे आज जान से।

कुत्ता-१ : हट बे ढेंचू, हेंचू-पेंचू !
दो कौड़ी की अकल तुम्हारी।

कुत्ता-२ : गधे ैसी शक्ल तुम्हारी।

कुत्ता-१ : तू ह को क्या सिखलाएगा ?
सही-गलत क्या दिखलाएगा ?
(कुत्ता-२ से) चल बे टामी भौंकू नामी
इस हाथी की टांग खींच ले
सिर जबड़ों के बीच भींच लें।
[दोनों कुत्ते लपकते हैं और हाथी के पैरों से जूझते हैं।]

कुत्ता-१ : बहुत हो गया
अब तू सहन नहीं होता है।

कुत्ता-२ : तुझे छोड़ने का अब ये
मन नहीं होता है।

कुत्ता-१ : आज तुझे हम खा डालेंगे।

कुत्ता-२ : चमड़ा तेरा चबा डालेंगे।
[हाथी हंसता है।]

हाथी : कुत्तो अपने से टकराओ
मत मोटों को आंख दिखाओ।

कुत्ता-१ . चल बे चूहे
तू डरकर कांप रहा
हमें देखकर हांफ रहा।

कुत्ता-२ : मोती कुत्ता बहुत तेज है।
तेरे डर को भांप रहा।
बड़ा बड़ा तक हमसे डर कर
अपना रास्ता नाप रहा।
अजब मूर्ख है तू जो अब तक
टुकुर टुकुर यूं टाप रहा !

हाथी : अच्छा तो लो,
पहचानी औकात तुम्हारी।
तब जानेंगे जब सह जाओ
छोटी सी यह लात हमारी।

[एक लात उठाकर कुत्ता-१ पर रखना है। कुत्ता नीचे दब कर काऊं काऊं करता है।]

कुत्ता-१ : अरे मर गया !
किससे उलझा ये क्या कर गया ?

गधा : देख लिया अंजाम तुम्हारा ?
दो मिनट में मिट जाएगा
इस दुनिया से नाम तुम्हारा।

कुत्ता-१ : हाथी भैया आज छोड़ दो !

गधा : ऊं हूं !
नहीं छोड़ना, कमर तोड दो।

बंदर : (भागकर आकर)
इस पाजी की आंख फोड़ दो।

गधा : ऊं हूं।
गरदन को मरोड़ दो।

हाथी : (कुत्ते-२ से)
तू आ, तुझको भी दिखला दूं।
पाठ सभ्यता का सिखला दूं।

कुत्ता-२ : मैं इसकी सोहबत में बिगड़ा
मेरा आपका भला क्या झगड़ा ?

नहीं किसी को अब काटूंगा,
बड़ा आदमी कभी
दिखेगा, पग चाटूंगा।

हाथी : **(कुत्ते-१ से)**
बोल बे कुत्ते, तुझे छोड़ दूं?
या मैं तेरी कमर तोड़ दूं
गरदन को तेरी मरोड़ दूं?
या तेरी मिट्टी निचोड़ दूं?

कुत्ता-१ : **(गिड़गिड़ाकर)**
हाथी भैया आज छोड़ दो।

बंदर : पहले इसकी कमर तोड़ दो।

गधा : इसकी गरदन आज हिला दो।

बंदर : बेमतलब की भौं भौं करना
आज भुला दो।

हाथी : दया बड़ों का धर्म रहा है
और क्षमा का कर्म रहा है।
छोटा सा यह सबक दिया है
जा बे तुझको माफ किया है।
(पैर उठा लेता है)
[कुत्ता-१ लगभग अधमरा हो चुका है। पीड़ा से कराहता है। दूसरा कुत्ता उसके जख्म चाटने लगता है। हाथी चला जाता है। गधा और बंदर हंसते हुए एक ओर रवाना होते हैं। एक रीछ गले में स्टेथस्कोप डाले आता है। वह डाक्टर की वेश-भूषा में है।]

रीछ : मैं हूं एक बेकार डाक्टर,
बहुत दिनों से बीमारों को ढूंढ़ रहा हूं।
(कुत्ते को देखकर) अरे क्या हुआ?

घायल कुत्ता : हाथी ने धींगामुश्ती की।
जबरन मुझसे कुश्ती की।

रीछ : बड़ा गधा था।
तुमको भौंक भगा देना था।
दस कुत्तों को उसके पीछे और लगा देना था।

घायल कुत्ता : नहीं अकेला मैं काफी था
मार पटखनी उसको मारा।
हाथी गिरा पीठ के बल
भग गया बिचारा।

कुत्ता-२ चंद खरोचें आई हैं बस, दवा लगा दो!
मोती कुत्ता बहुत बहादुर, दवा लगा दो।

[रीछ दवा लगाकर चला जाता है।]

कुत्ता-२ अब क्या करेंगे ?
क्या हम सारी दुनिया से डरेंगे ?

कुत्ता-१ : नहीं डरेंगें
केवल एक सीख मिली है हमको
उस पर अमल करेंगे।

कुत्ता-२ वह क्या ?

कुत्ता-१ अपने से छोटों को काटो
और बड़ों के तलुवे चाटो।
बलवानों से पड़े जो पाला, दुम दबाओ,
कमजोरों पर भौंको,
काटो, चबा के खाओ।

कुत्ता-२ : श्वान कर्म यह जिंदाबाद !

कुत्ता-१ श्वान धर्म यह जिंदाबाद !

पर्दा गिरता है

(१६७८

परी सभा

□ चंद्रकिरण सोनरेक्सा

पात्र

उद्घोषक	कमल परी
चुन्नी परी	धीरज परी
नीलम परी	हीरादेव
अनुपमदेव	मुक्ता परी

लालदेव

[मंच तरह तरह के रंगों से दमक रहा है। उद्घोषक प्रवेश करता है।]

उद्घोषक : ढम, ढम, ढम...मैं अनुपमदेव बोल रहा हूं। परी देश के सब नागरिक सुनें। आगामी बसंत पूर्णिमा के दिन महारानी मुक्ता परी एक परी सभा बुला रही है। देश के सभी नागरिक उसमें भाग लें। उस खुली सभा में परी देश के लिए प्रधान परी का चुनाव होगा। यह पद किसी देव युवक को भी मिल सकता है। शर्त केवल यह है कि देश के लिए जिसने सबसे अधिक उपयोगी श्रम किया हो, उसी को वह पद मिलेगा। ढम ढम ढम...सब परी देश के नागरिक सुनें।

[जाता है। परियों का प्रवेश]

चुन्नी परी : नीलम परी...ओ नीलम परी...सुना तूने ? अगली पूर्णिमा को प्रधान का चुनाव होने जा रहा है।

नीलम परी : अरे बहन, होने दो। कोई हम-तुम तो प्रधान बनने से रहीं। हमें तो मालूम ही है कि कमल परी सबसे बाजी मार ले जाएगी। वह तो परी क्या है, पूरी जादूगरनी है। दिन-रात देश के छोटे लोगों में, अरे उन्हीं में, जिन्हें हम सेवक परियां कहते हैं, घूमती रहती है। उनके साथ नगर के सभी कामों में में हाथ बंटाती है। भला मुक्ता परी उसे छोड़ दूसरे को प्रधान क्यों बनाएंगी ?

चुन्नी परी : लेकिन बहन, तब तो हम सब की मुश्किल आ जाएगी। कमल परी प्रधान बन गई तो हम सब उच्च परियों को भी काम में जुटना पड़ेगा।

नीलम परी : क्यों न थोड़ी चालाकी की जाए। पूर्णिमा वाले दिन कमल परी को कहीं बंद कर दिया जाए। परंतु महारानी को पता लग गया तो हम सबको दंड मिलेगा।

चुन्नी परी : अरे, कमल परी को किसी ऐसे काम में फंसा देंगे कि वह बसंत पूर्णिमा को सभा में जा ही न सके। तब हम सब महारानी से कहेंगे, 'देखा आपने ! कमल परी न तो कोई काम ही समय पर पूरा करती है और न आपकी आज्ञा का पालन ही करती है। देखिए आज सभा में ही नहीं आई।'

नीलम परी : वाह, यह तरकीब खूब है ! इसमें अनुपम देव को भी शामिल कर लें तो कैसा रहे ? वह देखो, वे ढोल पीटते चले आ रहे हैं।

[अनुपम देव का प्रवेश]

अनुपम देव : ढम, ढम, ढम...आगामी बसंत पूर्णिमा को परी सभा होगी...

नीलम परी : भाई अनुपम देव, नमस्कार। अजी यह ढोल पीटते पीटते तो आपके हाथ थक गए होंगे। भला किसी सेवक परी से यह कार्य क्यों न करा लिया ?

अनुपम देव : बहन नीलम, वह आपकी कमल परी है न, उसने महारानी से कहकर यह आज्ञा जारी कर दी है कि सब देवों और परियों को महीने में एक दिन अवश्य किसी सेवक परी का कार्य संभालना होगा। आज मेरी बारी थी।

चुन्नी परी : यह कमल परी बहुत चालाक है, अनुपम जी। महारानी से प्रशंसा पाने के लिए दिन-रात काम में जुटी रहती है। भला हम परियों का काम तो केवल उड़ते फिरना है। दूसरे तारों के लोक में जाकर वहां के फूलों से श्रृंगार करना है।

नीलम परी : हां, पर कमल परी कहती है कि हम क्यों दूसरे तारों के देश में जाकर वहां से फूल चुराएं। क्यों कहीं और से मधु-पराग लाकर खाएं। हम लोगों को स्वयं सब कुछ उगाना चाहिए। सेवक परियों को अपने बराबर समझना चाहिए।

अनुपम देव : हमें स्वयं मेहनत करके सब कुछ उगाना हो तो फिर ईश्वर ने हमें पंख ही क्यों दिए ? यह काम तो सेवक परियों का है। वे ही महल, उद्यान, सड़कें बनाती हैं। उनके पंख भी छोटे छोटे होते हैं। वे हमारे जितना ऊंचा कहां उड़ सकती हैं।

नीलम परी : क्यों भाई अनुपम देव, क्यों न इस कमल परी को कुछ सीख दी जाए।

अनुपम देव : यही तो मैं भी चाहता हूं। अन्यथा यदि यह प्रधान बन गई

तब तो हम सब से काम ले लेकर हमारे पंख तक घिसा डालेगी। देखो, वह कमल परी चली आ रही है। नमस्ते कमल परी जी !

कमल परी : नमस्कार बहनो। नमस्कार अनुपमदेव जी। कहिए आप लोग प्रसन्न तो हैं ? बहन नीलम, मैं तो समझती थी कि आपने परी-लोक के बालकों को नृत्य सिखाने का जो कार्य अपने ऊपर लिया है उसको हृदय से निभाती भी होंगी। परंतु मैं आज नृत्य विद्यालय में गई तो देखा सब बच्चे बेढंगे ढंग से पंख फैला-फैलाकर मटक रहे हैं।

नीलम परी : क्या बताऊं कमल परी, आज मेरे सिर में बहुत दर्द था। इसलिए घूमने चली आई। आपने भी तो विद्यालय में सभी सेवक परियों के बच्चे भर लिए हैं। वे लोग अच्छा नृत्य सीख ही नहीं सकते।

कमल परी : यह बात तो सच नहीं है नीलम जी, उड़ना और नृत्य करना तो परियों को जन्म से ही आता है। बस बच्चों को थोड़ा सा सिखाना भर होता है। फिर सेवक परियों के बच्चे तो श्रम करने में हम सबसे आगे रहते हैं। यदि काम अधिक है तो आप धीरज परी को साथ ले लें।

नीलम परी : उंह, धीरज परी ! उसे भला क्या आता है नाचना ! सेवक परियां कितना ही सीख लें, हमारे समान नृत्य कर ही नहीं सकती।

चुन्नी परी : कमल परी जी, आप नाराज न हों तो कल से मैं भी विद्यालय में नृत्य सिखाया करूंगी।

कमल परी : हां बहन, हमें पूरे परी देश और उसके एक एक नागरिक की उन्नति करनी है। भला जो सेवक परियां मूंगे के महल और मोतियों के उद्यान रचती हैं, जो सोने की सड़कें और चांदी के बरतन बनाती हैं, उनके ही बालक नृत्य-गान न सीख पाएं !

नीलम परी : अरे, अंतर तो सभी बातों में है। क्या सेवक परियां, मूंगे के महलों में रहती हैं ? चांदी के बरतनों में भोजन करती हैं ?

कमल परी : हां, करती तो नहीं। इसका कारण यह है कि हम सब परियां, जो ऊंची परियां कहलाती हैं, उन लोगों की बनाई सब वस्तुओं पर झटपट कब्जा कर लेती हैं। परंतु अब ऐसा नहीं होगा। महारानी मुक्ता परी समझ गई हैं कि परी देश की थोड़ी सी ऊंची परियों को महल-उद्यान, मधु-पराग और मखमल-रेशम

मिल जाने से उनका देश सुखी नहीं है। वह असली महारानी तभी कहला सकती हैं, जब परी देश में सबको ये वस्तुएं मिलें और यह तभी हो सकता है, जब परी देश के सब नागरिक मिलकर काम करें।

चुन्नी परी — हां हां, कमल बहन। आप ठीक कहती हैं। अब से हम सब आपके साथ साथ काम करेंगे। अब तो खुश ?

कमल परी — हां बहन, मैं बहुत खुश हूं क्योंकि सब मिलकर काम करेंगे तो हमारा परी देश सब तारों के लोगों से अधिक सुंदर, सुखी और संपन्न बन जाएगा। क्या आप लोग मेरे साथ पूर्णा नदी के बांध पर काम करने को तैयार हैं ? हम चाहते हैं कि बसंत पूर्णिमा तक वह बनकर तैयार हो जाए, जिससे इस गरमी की ऋतु में हमने जो गुलाबों के तथा अंगूरों व फलों के बाग लगाए हैं, उनमें सारे साल पानी पहुंचता रहे तथा पूर्णा नदी का आधा पानी भी एक सरोवर में इकट्ठा हो जाए।

नीलम परी — अच्छा चलो, हम तैयार हैं।

कमल परी — धन्यवाद बहनो।

[प्रकाश मिटता है। अंधकार छा जाता है। दो मिनट बाद प्रकाश फिर फैलता है तो खट-पट-पट—खुदाई मशीनों की आवाज उठती है। परियां काम कर रही हैं।]

धीरज परी — (आती है) हम सब परियां हैं होशियार, बांध किया हमने तैयार।

कमल परी — वाह भई धीरज परी, तुम तो कविता करने लगीं।

हीरा देव — कमल दीदी, बात यह है कि भजन गाने और कविता गुनगुनाने से काम बड़ी सरलता से हो जाता है।

कमल परी — सो तो है, पर अब तुम थक गए होगे। देखो, सब परियां तो चली भी गईं। उधर परी सभा भी तो आज रात ही है न।

हीरा देव — नहीं, मैं सब काम करके ही जाऊंगा। आप भी साथ ही चलें।

कमल परी — क्या चलूं हीरा देव, मैं तो समझती थी कि नीलम परी, चुन्नी, अनुपम, लाल परी इत्यादि के आ जाने से काम जल्दी होगा परंतु न जाने क्या बात है कि काम में और भी देर लगी। बांध कल ही तैयार हो जाना चाहिए था।

हीरा देव — हां दीदी, नाराज न हो तो मैं एक बात कहूं।

कमल परी — हां हां, क्यों नहीं।

हीरा देव : दीदी, चुन्नी परी इत्यादि स्वयं तो ठीक से काम करती ही नहीं थीं, साथ में दूसरों को भी बातों में लगाए रहती थीं। यही नहीं, अनुपम देव तो बांध की दीवार के लिए नए नए मसाले लाकर भी मिलाते थे।

कमल परी : (चौंककर) मसाले ? क्यों ? हमारे इंजीनियर साहब ने जो मसाले बनाए थे उनके अतिरिक्त और वस्तुएं क्यों डाली गई ? तुमने मुझे पहले क्यों नहीं बताया ? चोरी से किया काम कभी अच्छा नहीं होता।

हीरा देव : दीदी, मुझे तो आज ही मालूम हुआ। असल में प्रभा परी उनके साथ ही काम करती थी। उसने मुझसे कहा कि नए मसाले लगाने से दीवार जल्दी जुड़ती है। चुन्नी परी ने पीछे वाली दीवार में वही मसाला लगवाया है।

कमल परी : यह एक और चिंता हो गई। जाने क्या लगाया है। कहीं उधर वाली दीवार जल्दी न टूट जाए। तब तो सरोवर का पानी सारे नगर को डुबो देगा।

हीरा देव : (चौंककर) दीदी, देखो वो झर झर का स्वर कहां से आ रहा है ? (जोर का धमाका) दीदी, वह सामने की दीवार का एक भाग गिर पड़ा। पानी तो पिछली दीवार से भरा जा रहा है।

कमल परी : हाय, देखो तो पानी निकल रहा है। अरे पीछे वाले बांध की ओर जमा हो रहा है। वहां तो अब कोई नहीं है। हीरा देव, अब क्या होगा ? बांध में छेद हो गया तो पानी नगर में घुस जाएगा और नगर डूब जाएगा।

हीरा देव : क्यों न हम लोग उड़कर नगर में जाएं और सहायता ले आएं।

कमल परी : देखते नहीं, कितने जोर की हवा चल रही है। हम लोग दिन भर के थके हैं। हमारे पंख भला इस तूफान में सधे रह पाएंगे ? अच्छा सुनो मैं बांध के इस भाग के छेद में कंकड़ी भर कर पानी रोकती हूं। तुम उधर से मसाला लाकर इस दीवार में भरो।

हीरा देव : अच्छा दीदी।

[जोर का आंधी-तूफान आता है। प्रकाश मिट जाता है। फिर प्रकाश होता है तो परियां मंच पर हैं।]

सब परियां : महारानी मुक्ता परी की जय हो !

मुक्ता परी : नमस्कार मित्रो ! आज मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि हमारे देश का प्रसिद्ध पूर्णा बांध बनकर तैयार हो गया। आप सबने

अपने परिश्रम से इसे बनाया और परी देश के अनेक सूखे बागों व खेतों को पूर्णा के जल द्वारा जीवन दान दिया।

अनुपम देव : महारानी, इसके लिए तो अपने इंजीनियर लाल देव को धन्यवाद देना चाहिए। उन्हीं की देख-रेख में यह बांध तैयार हुआ है।

लाल देव : नहीं महारानी, धन्यवाद तो कमल परी को मिलना चाहिए। उन्हीं के साहस व लगन के कारण सब देशवासियों ने उस बांध को लग कर बनाया। पूर्णा सरोवर तो मात्र उन्हीं के कहने पर बना। मेरी बुद्धि में यह विचार आया ही नहीं।

नीलम परी : नहीं लाल देव, सरोवर बनाने की बात पहले चुन्नी परी ने सोची थी। क्यों अनुपम देव जी ?

मुक्ता परी : मैं आप सबको धन्यवाद देती हूं परंतु कमल परी अभी तक सभा में क्यों नहीं आई ? क्या वह नही जानती कि समय पर कार्य न करने वालों को मैं कठोर दंड देती हूं।

नीलम परी : महारानी जी, कमल परी आपको समझती ही क्या है ? वह सब सेवक परियों से कहती हैं कि तुम्हारी महारानी तो मैं हूं। मैं ही तुम्हारे लिए सुंदर सुंदर महल बनवाऊंगी।

चुन्नी परी : हां महारानी, कमल परी कहती थी कि बस जहां इस वर्ष मैं प्रधान बनी, सारी उच्च परियों को महारानी सहित देश से बाहर निकाल दूंगी। मुक्ता परी मुझे तनिक भी नहीं भाती।

अनुपम देव : जी महारानी जी, कमल परी कहती थी कि मैं परी सभा में क्यों जाऊं। महारानीजी स्वयं ही मेरे महल में आकर मुझे प्रधान बनाएंगी। उसे तो अपने पर बहुत ही घमंड है।

मुक्ता परी : (क्रोध से) ऐसी बात ! कमल परी देखने में तो बड़ी सीधी लगती है।

नीलम देव : जी, वह देखने की ही सीधी है। अभी तक नहीं आई और हम इतने आंधी-तूफान में भी उड़ते उड़ते आए कि कहीं सभा को देर न हो।

लाल देव : महारानी जी, मुझसे कमल परी ने कहा था कि आप सब चलें। मैं जरा सब कुछ अच्छी प्रकार देख-भाल कर तब आऊंगी।

अनुपम परी : देख-भाल वह क्या करेगी। अवश्य बांध तोड़ने में जुटी होगी।

मुक्ता परी : (चौंककर) बांध तोड़ने में ? कमल परी जैसी देशसेविका बांध तोड़कर सारे देश को बरबाद करेगी ? यह कैसे संभव है ?

अनुपम देव : बात यह है कि जब नगर पानी से भर जाएगा, खेत डूब जाएंगे, बाग नष्ट हो जाएंगे तब वह फिर आपसे प्रशंसा पाने के लिए सेवा में जुट जाएगी। सेवा वह स्वयं तो करती नहीं, बस मीठी मीठी बातें बनाकर सेवक परियों से काम करा लेती है।

नीलम परी : अवश्य ही कमल परी के मन में कोई दुष्ट विचार था तभी वह हमारे साथ नहीं आई। कमल परी बड़ी दुष्ट है, महारानी जी।

मुक्ता परी : तो हम स्वयं चलकर देखेंगे। आप सब लोग भी हमारे साथ चलेंगे। दुष्टता करने वाले को दंड देना हम जानते हैं।

[हीरा का तेजी से प्रवेश]

हीरा देव : महारानी जी, महारानी जी, बड़ा गजब हो गया। पूर्णा बांध टूट गया। दीवार में बड़ा भारी छेद हो गया। जल्दी सहायता पहुंचाइए अन्यथा नगर में पानी आ जाएगा।

नीलम परी : देखा महारानी जी, कमल परी ने आखिर बांध में छेद कर ही दिया।

हीरा देव : झूठ है, यह बात झूठ है। मैं जानता हूं कि बांध में छेद कैसे हुआ? वह छेद आप लोगों ने खराब मसाला भर कर बनाया है। महारानी जी शीघ्र चलें। कमल परी उस छेद में हाथ डाल कर उसे बंद किए हुए हैं। तीन घंटे से इस ठंड में बर्फ जैसे पानी में हाथ डाले पड़ी है। सरदी के कारण वह बेहोश हो गई हैं।

अनुपम देव : मसाला तो सब लाल देव का बनाया हुआ ही लगा है।

हीरा देव : अनुपम देव, झूठ न बोलो। प्रभा परी ने मुझे बताया है कि पीछे की दीवार में जहां छेद हुआ है, आपने तथा नीलम परी व चुन्नी परी ने अपना मसाला लगाकर दीवार खड़ी की थी। जो कमल परी ने हाथ से छेद बंद न रखा होता तो अब तक सारा नगर पानी में डूब जाता।

मुक्ता परी : हीरा देव, हम सब समझ गए। आओ, जल्दी उड़ कर कमल परी की सहायता करें।

लाल देव : महारानी जी, आप सभी यही रहें। मैं अपने कारीगरों सहित जाता हूं। बांध की मरम्मत करके हम अभी कमल परी को ले आते हैं। मैं छेद में हीरे के बुरादे का मसाला भर कर उसे एकदम पक्का कर दूंगा। (जाता है)

मुक्ता परी : नीलम परी, चुन्नी परी और अनुपम देव, तुम तीनो खड़े हो जाओ। बोलो, कमल परी ने तुम्हारा क्या बिगाड़ा था जो

तुमने उससे बदला लेने के लिए इस प्रकार बांध को कमजोर किया ! नगर को डुबाने की योजना की !

चुन्नी परी : महारानी जी, हीरा देव झूठ बोलता है। सेवक परियां तो सभी कमल परी की ओर हैं।

मुक्ता परी : हां, क्योंकि कमल परी सेवक परियों को अपनी बहनें समझती है। उनके साथ काम करती है। उनकी उन्नति के लिए प्रयत्नशील है। तुम तीनों को देश से निकाला जाता है क्योंकि तुमने सारे परी देश के साथ धोखा किया। तुम्हारे पंख छीन लिए जाएंगे और तुम तीनों पृथ्वी लोक पर जाकर नीलम, चुन्नी व अनुपम पत्थर की खान बन जाओगे। मनुष्य तुम्हें खोद खोद कर अपने काम में लेंगे। तुम जड़ हो जाओगे।

अनुपम देव : महारानी जी क्षमा करें।

मुक्ता परी : देशद्रोहियों को क्षमा नहीं मिलती। समस्त परी सभा सुने। कमल परी को उसकी देश सेवा के उपलक्ष्य में प्रधान बनाया जाता है। हम स्वयं उसको देखने जा रहे हैं। बोलो, देशसेविका कमल परी की जय !

सब : कमल परी की जय।

[प्रकाश तेज होता है। संगीत उभरता है।]

पर्दा गिरता है।

लालटेन की वापसी

□ के० पी० सक्सेना

पात्र

डाक्टर क्लर्क

मियां जी

[पर्दा खुलता है। चश्मा बनाने वाले डाक्टर की दूकान का दृश्य। तरह तरह के अक्षर लिखी हुई तख्तियां टंगी हैं। मंच के एक कोने में एक स्टैंड पर डाक्टर का बोर्ड लगा है—डा० सूरदास आई० स्पेशलिस्ट ऐंड आप्टीशियन। डाक्टर कमरे में नहीं है। एक ओर से एक दफ्तर का क्लर्क हाथ में टिफिन डिब्बा लटकाए एक बूढ़े मियांजी को सहारा देता हुआ दाखिल होता है। मियां जी छड़ी से टटोलते हुए आगे बढ़ रहे हैं।]

क्लर्क : अरे भाई, डाक साब है?

[एक चश्मा पहने, एक माथे पर चढ़ाए, डा० सूरदास का प्रवेश]

डाक्टर : यस। क्या चाहिए?

क्लर्क : चाहिए क्या, इन बुड्ढन का चश्मा बनवाना है। दफ्तर की जल्दी में इनसे टक्कर हो गई। ये बेचारे फुटपाथ पर ढेर हो गए। इनका चश्मा कहीं गुम हो गया। अब पीछे पड़े हैं कि बनवा कर दो।

डाक्टर : तो इसके लिए चार लोगों के आने की क्या जरूरत है?

क्लर्क : चार लोग? आपको दिखाई देता है? हम दो है।

डाक्टर : (**चश्मा बदल कर**) सारी! मैं जल्दी में घोड़े की आंख का चश्मा पहन गया जिसमें एक-एक के दो-दो नजर आते हैं। 'कीप हिम आन दी स्टूल...' तर्जुमा...उन्हें स्टूल पर रख दो।

[क्लर्क सहारे से मियांजी को स्टूल पर बिठा देता है।]

डाक्टर : 'रीड द प्लेट'...तर्जुमा...तख्ती पढ़िए।

मियांजी : कौन सी तख्ती?

डाक्टर : ओफ्फो! यही जो सामने दीवार पर लगी है।

मियांजी : (**हवा में टटोल कर**) कौन सी दीवार?

क्लर्क : (**जरा खीझकर**) कब्रिस्तान वाली दीवार! इतनी बड़ी

दीवार दिखाई नहीं देती ? अब इन्हें कुतुबमीनार दिखाओ तो कहेंगे चम्मच है। कहां फंस गया मुसीबत में !

डाक्टर : (**डांटकर**) 'डोंट मेक दी पेशेंट नर्वस'...तजुर्मा...मरीज को घबड़वाइए मत। मियां, यह है कमरे की दीवार।

मियांजी : (**टटोल कर**) कौन सा कमरा ?

क्लर्क : या अल्लाह ! मैं पागल हो जाऊंगा। डाक साब, मेरे लिए बादाम का हलवा मंगवाइए। सिर चकरा रहा है। तब तक मैं यह लस्सी पीता हूं।

[लपककर मेज पर रखा लस्सी का गिलास उठाता है।]

डाक्टर : (**खीजकर**) ओह, नो नो—'डोंट टच इन'...तजुर्मा...उसे मत छुओ। वह लस्सी नहीं, साबुन का पानी है। चश्मे के शीशे धोने के लिए।

क्लर्क : (**गिलास रख कर**) ओह, सारी ! मैं समझा लस्सी है।

डाक्टर : (**उसी गिलास से पीकर**) है तो लस्सी ही, मगर 'नाट फार पब्लिक यूज'...तजुर्मा...हर लल्लू-पंजू के लिए नहीं है। मिस्टर क्लर्क, इन बुड्ढन की लाइन एकदम फ्यूज है। चश्मे से काम नहीं चलेगा। इनकी दोनों आंखें निकाल कर साबुन और सोडे से साफ करनी होंगी। अंदर काफी चीकट जमा हो गई है।

क्लर्क : बाप रे, इतना बड़ा खतरा कैसे मोल ले सकता हूं ? डाक्टर साहब, कोई ऐसा तरीका नहीं है कि पूरी फिटिंग और मीटर खोले बगैर ही लाइट आ जाए।

डाक्टर : देखता हूं। एक आखिरी टेस्ट और है। (**कान में**) यह बड़ी सी थाली उठाइए।

[क्लर्क उठा लाता है।]

डाक्टर : (**थाली मियांजी की आंखों के पास रख कर**) यह क्या है ?

मियांजी : (**ठहाका लगाकर**) अजी क्यों मजाक करते हैं। हम इतने अंधे थोड़े ही हैं कि इसे न पहचान सकें। चवन्नी है...

[डाक्टर बेहोश होने लगता है। क्लर्क उसे गिलास की बाकी लस्सी पिलाता है।]

डाक्टर : (**ठंडी सांस लेकर**) इनका कोई इलाज नहीं है। आंखें निकालनी होंगी।

[क्लर्क की निगाह मेज पर पड़े एक पुराने चश्मे पर पड़ती है।]

क्लर्क : डाक साहब, यह चश्मा आपके पिता जी का है क्या ?

डाक्टर : ओह नो ! वे पैदायशी अंधे थे।

क्लर्क : और सूरदास नाम आपका रख दिया ! खैर, यह चश्मा आप मियांजी पर ट्राई कीजिए।

डाक्टर : यह फटीचर चश्मा मेरे नौकर को बाजार में पड़ा मिला था। अभी यहां लाकर फेंक गया है।

क्लर्क : आप ट्राई तो कीजिए। मैंने एलजबरा लगा लिया है। चश्मा भी पुराना, मियां भी पुराना। पुराना पुराना कट गया, चश्मा इन्हें लग गया।

[डाक्टर चश्मा लगाता है। मियां जी को दिखाई देने लगता है।]

मियां जी : (उछलकर) मिल गया, मेरा चश्मा यही है। अब दिखाई दे रहा है। कमरा, दीवार, तख्ती, तख्ती पर लिखा है ई...टी...बी...डी...एल...एन...(छड़ी उठाकर) मैं चलता हूं। आदाब अर्ज ! (धीरे धीरे प्रस्थान)

क्लर्क : मैं भी चलता हूं, आदाब अर्ज !

डाक्टर : (क्लर्क की गर्दन पकड़ कर) आप कहां जाते हैं ? 'माई फीस रुपीज ट्वंटी फाइव ओनली'...तजुर्मा...मात्र पच्चीस रुपए। 'आई कीप टू हैंड्ज'...तजुर्मा...मैं दो हाथ रखता हूं...वसूल लूंगा...निकालिए।

क्लर्क : (घबराकर) 'बट आई हैव वन फोर्थ रुपी ओनली।' तजुर्मा...

डाक्टर : आपके पास सिर्फ चवन्नी है ? मैं चालबाजी जानता हूं। अपने नौकर को बुलाता हूं। (आवाज देकर) रेडू, ब्लैकू, ह्वाइटा, तजुर्मा...लालू, कालू, सफेदा...

[क्लर्क घिघिया रहा है। डाक्टर गर्दन पकड़े गुर्रा रहा है।]

पर्दा गिरता है।

(१९७९)

बालसंसद

□ डा० हरिकृष्ण देवसरे

पात्र

अध्यक्ष	कालूराम
चंद्रभूषणसिंह	कुमारी नीलम
सूचना मंत्री	रक्षा मंत्री
रामगरीब	राजीव
वित्त मंत्री	खाद्य मंत्री
चंदूराम	शिक्षा मंत्री
नंदूराम	रामदीन
गृह मंत्री	स्वास्थ्य मंत्री

[इसे मंच अथवा किसी बड़े हाल में प्रस्तुत किया जा सकता है। इसकी मंच-व्यवस्था साधारण है। दो ओर अर्ध गोलाकार रूप में टेबिल-कुरसियां रखी होंगी। सदस्यों के रूप में कुछ अतिरिक्त बच्चे भी बिठाए जा सकते हैं। एक ओर कुछ ऊंचाई पर अध्यक्ष की कुरसी-टेबिल होगी। अभिनेता बालक चाहें तो नेताओं का मेकअप कर सकते हैं। चाहें तो साधारण कपड़ों में रहें। लेकिन कपड़ों में भिन्नता हो तो अच्छा है।

मार्शल आवाज लगाता है—'अध्यक्ष महोदय सदन में पधार रहे हैं।' और अध्यक्ष अपने स्थान पर आकर बैठते हैं। उनके सम्मान में सभी सदस्य उठकर खड़े होते हैं और फिर अध्यक्ष द्वारा अपना आसन ग्रहण करने पर वे भी अपने-अपने स्थान पर बैठ जाते हैं।]

अध्यक्ष : आज की कार्यवाही का आरंभ प्रश्नोत्तरकाल से हो रहा है। इसके बाद शिक्षा मंत्री द्वारा एक महत्वपूर्ण बिल प्रस्तुत होगा, जिस पर बहस भी होगी। श्री चंद्रभूषणसिंह अपना प्रश्न पूछें।

चंद्रभूषणसिंह : (खड़े होकर) क्या सूचना एवं प्रसारण मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि देश के विभिन्न समाचारपत्रों में छपने वाले 'गड़बड़ रेडियो' के प्रोग्रामों पर अब तक रोक क्यों नहीं लगाई गई?

[बैठ जाते हैं।]

सूचना मंत्री : मैं माननीय सदस्य को बताना चाहता हूं कि 'गड़बड़ रेडियो' के मीटरों का कुछ भी पता नहीं चल सका है। मालूम हुआ है कि यह कुछ शरारती बच्चों का खेल मात्र है। इससे सरकार को कोई नुकसान नहीं होगा। लेकिन हां, अगर कभी गड़बड़ रेडियो से किसी बच्चे की शैतानी की पोल खोल दी गई तो उसकी जिम्मेदारी हम पर न लादी जाए। अच्छा यह होगा कि लोग इन गड़बड़ रेडियो स्टेशनों के मालिकों से होशियार रहें।

अध्यक्ष : श्री रामगरीब पांडे।

रामगरीब : (उठकर) क्या वित्त मंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे कि उनका वित्तीय वर्ष पहली अप्रैल से क्यों शुरू होता है? क्या वह इस तारीख के महत्व को नहीं जानते?

[बैठ जाते हैं।]

वित्त मंत्री : माननीय सदस्य अगर पहली अप्रैल के महत्व को समझते हैं, तो यह भी समझते होंगे कि धन की देवी लक्ष्मी का वाहन कौन है और पहली अप्रैल का उसके साथ क्या रिश्ता है। वर्ष-भर बजट की गाड़ी चलाने के लिए क्या इससे अच्छा और कोई वाहन हो सकता है?

[सब लोग हंसते हैं।]

अध्यक्ष : श्री चंदूराम।

चंदूराम : क्य वित्तमंत्री महोदय यह बताने की कृपा करेंगे, कि महंगाई भत्ते की दर में बढ़ोत्तरी की घोषणा के साथ साथ बच्चों के जेब खर्च की दर में बढ़ोत्तरी की घोषणा क्यों नहीं की जाती?

वित्त मंत्री : (तुरंत खड़े होकर) इसलिए कि बच्चों की जेबें पहले जैसी ही छोटी हैं। सुना है कुछ दर्जियों ने बड़ी जेबें बनाने की साजिश की है। इसलिए सरकार बड़ी गंभीरता से उन दर्जियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करने पर विचार कर रही है। बच्चों की जेबें बड़ी बनाना अपराध है। इससे उनमें फिजूलखर्ची की आदत पड़ती है।

चंदूराम : लेकिन यह हमारे साथ अन्याय है।

वित्त मंत्री : अन्याय की कोई बात नहीं है। बड़ी जेबें ज्यादा खर्च...छोटे मुंह बड़ी बात...

[सब हंस पड़ते हैं। अध्यक्ष सबको शांत करते हैं।]

अध्यक्ष : श्री नंदूराम।

नंदूराम : मैं सदन के सामने आज एक रहस्य का उद्घाटन करना चाहता हूं। हमारे गृहमंत्री ने सादगी का आदर्श प्रस्तुत करने की प्रतिज्ञा की है, इसलिए उन्होंने सरकारी मोटर छोड़कर सरकारी साइकिल ली है। लेकिन आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि मंत्री महोदय साइकिल को खुद नहीं चलाते। उसका उपयोग कोई और करता है। मंत्रीजी साइकिल के कैरियर पर बैठकर आते हैं।

[सदन में ठहाका लगता है।]

गृह मंत्री : (**हंसी के दौरान**) मैं माननीय सदस्य की बात से सहमत हूं। मैं साइकिल के कैरियर पर बैठकर आता हूं। इसका कारण है कि मैं साइकिल चलाना नहीं जानता। इसलिए मैंने सरकस कंपनी के अवकाशप्राप्त साइकिलचालक को अपना ड्राइवर बना लिया है।

कुछ सदस्य : (**उठकर**) साइकिल खुद चलाइए...सादगी का पालन कीजिए।

[शोर मचता है।]

अध्यक्ष : आप लोग बैठ जाइए...शांत हो जाइए...(**सदस्य बैठ जाते हैं**) देखिए, जिस तरह आप अंगरेजी बोलने वाले को हिंदी बोलने के लिए मजबूर नहीं कर सकते, उसी तरह किसी को साइकिल चलाने के लिए मजबूर नहीं कर सकते। (**रुककर**) अगला प्रश्न...श्री कालूराम।

कालूराम : (**उठकर**) क्या स्वास्थ्य मंत्री महोदय अपने स्वास्थ्य का रहस्य बताएंगे?

[सदन में हंसी और गड़बड़ी]

अध्यक्ष : आप इस तरह के प्रश्न मत पूछिए...अपने शब्द वापस लीजिए।

कालूराम : (**खड़े हुए**) लेकिन मैंने तो सिर्फ स्वास्थ्य...

अध्यक्ष : सदन का समय नष्ट न करें। कृपया तुरंत अपने शब्द वापस लीजिए।

कालूराम : मैं अपने शब्द वापस लेता हूं।

[बैठ जाता है।]

अध्यक्ष : कुमारी नीलम...

कुमारी नीलम : क्या रक्षा मंत्री महोदय उन व्यक्तियों के नाम बता सकते हैं जो पिछले दिनों एन० सी० सी० परेड के दौरान बंदूक चलाने के अभ्यास से डरकर भाग खड़े हुए थे। सरकार ने उनके

खिलाफ क्या कोई कार्रवाई की है, यदि अभी तक उनके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की गई है तो क्यों ?

रक्षा मंत्री : बंदूक चलाने के डर से जो भागे थे...

[वाक्य पूरा नहीं हो पाता और शोर मचता है ।]

कुछ विपक्षी सदस्य : उन लड़कों के नाम मत बताइए...इससे उनका अपमान होगा...यह सदन की मर्यादा के खिलाफ है...

[शोर मचता है ।]

अध्यक्ष : शांत हो जाइए...उन बच्चों के नाम ज़रूर बताए जाने चाहिए । अगर ऐसा न किया गया तो देश में डरपोक बालकों की संख्या बढ़ेगी । (रक्षा मंत्री से) आप नाम बताइए । यह देश के हित में है ।

रक्षा मंत्री : उन बच्चों के नाम हैं—रमेशकुमार कक्षा आठ, सुनीलचंद्र कक्षा सात, कुलभूषण कक्षा सात, चंद्रदत्त बत्रा कक्षा आठ, सुरेंद्रप्रसाद कक्षा आठ और गिरधर गोपाल कक्षा सात । इन सबके नाम 'बुजदिलों की लिस्ट' में लिखकर नोटिस बोर्ड पर टांग दिए गए हैं ।

[सदन में हंसी-हुल्लड़ मचता है ।]

अध्यक्ष : शांत...शांत...अब प्रश्नोत्तरकाल...समाप्त...

राजीव : अध्यक्ष महोदय...मेरा एक प्रश्न राष्ट्रहित में है जो मैं खाद्य-मंत्रीजी से पूछना चाहता हूं ।

अध्यक्ष : ठीक है । इसके बाद कोई प्रश्न पूछने की अनुमति नहीं मिलेगी ।

राजीव : जिस तरह गरीब आदमी अधिक गरीब और अमीर आदमी अधिक अमीर हो रहा है, उसी तरह दुबला आदमी अधिक दुबला और मोटा आदमी अधिक मोटा हो रहा है । क्या खाद्य-मंत्री महोदय को इसकी जानकारी है । यदि हां तो क्या इस बारे में वह कोई उपाय कर रहे हैं ?

खाद्य मंत्री : हमने नई राशन नीति तैयार की है । सदन की अगली बैठक में इस बारे में एक बिल आएगा । हम इस नई नीति के अनुसार ज्यादा वजन वालों यानी मोटे लोगों को कम और हल्के वजन वालों को ज्यादा राशन देंगे । राशन होल्डरों को तौलने और उनके लिए राशन की मात्रा तय करने का भी एक फार्मूला बनाया गया है । आशा है, इससे देश में मुटापा कम किया जा सकता ।

[तालियां बजती हैं ।]

अध्यक्ष : **अब शिक्षा मंत्रीजी सदन के सामने 'अल्पाहार संबंधी बिल' प्रस्तुत करें।**

शिक्षा मंत्री : **अध्यक्ष महोदय व सदन के माननीय सदस्यो ! पिछले काफी दिनों से हम स्कूल के बच्चों की समस्याओं की जांच-पड़ताल कर रहे हैं। हाल ही में हमने एक जांच आयोग भी बिठाया था। उसके अध्यक्ष डा० मिश्रा ने जो रिपोर्ट दी है उसमें कहा गया है कि बच्चों को दोपहर का अल्पाहार ठीक से नहीं मिलता। यह एक गंभीर समस्या है। इस दिशा में तुरंत काम होना चाहिए। बच्चे दोपहर की छुट्टी में स्कूल के बाहर खड़े खोमचे वालों से मूंगफली, चाट, पकौड़ी आदि लेकर खाते हैं। इससे वे बीमार पड़ जाते हैं। इसलिए शासन ने आयोग की सिफारिश पर, बच्चों को दोपहर का अल्पाहार देने का फैसला किया है। शासन इसकी व्यवस्था स्वयं करेगा। बच्चों से इसके लिए अनिवार्य फीस ली जाएगी। आशा है इस प्रस्ताव को आप सब मंजूरी देंगे।**

अध्यक्ष : विपक्षी दल की नेता कुमारी नीलम...

कुमारी नीलम : अध्यक्ष महोदय, शिक्षामंत्री का यह 'अल्पाहार बिल' बच्चों की भावनाओं को कुचलने वाला है। यह उनकी आजादी पर खुला हुआ हमला है। बच्चों को खट्टी इमली, बेर, अमरूद, मूंगफली, चाट, पकौड़ी—ये सब चीजें बहुत पसंद होती है। इन चीजों को खाने के लिए उन्हें घर पर तो डांट पड़ती ही है, स्कूल में जो कुछ थोड़ी सी आजादी मिलती है, उसे भी शिक्षा मंत्री छीनना चाहते हैं। यह बच्चों ते साथ सरासर अन्याय है। मैं सदन से निवेदन करूंगी कि इस बिल को कदापि न स्वीकार किया जाए।

[बेंच-कुरसियां ठोककर शोर होता है।]

अध्यक्ष : **(शोर शांत करने के लिए हाथ से संकेत करते हुए)** श्री **चंदूराम।**

चंदूराम : **अध्यक्ष महोदय, यह बिल बहुत खतरनाक है। चूहे के बिल से भी ज्यादा खतरनाक। इसके पीछे छुपा हुआ चूहा न सिर्फ बच्चों का अल्पाहार खाएगा बल्कि उनकी फीस के भी रुपए खा जाएगा। यह बिल नहीं एक बड़ी साजिश है। लगता है इसमें कुछ हलवाई, दूध वाले, राशन वाले और फल वाले लोग भी शामिल हैं। (व्यंग्य से) उन्होंने कहीं हमारे अधि-**

कारियों की जेब गरम तो नहीं कर दी ?

शिक्षा मंत्री : (उठकर) यह झूठ है ! अपमान है ! सदस्य को ऐसी बात का प्रमाण प्रस्तुत करना चाहिए...

चंदूराम : मैंने तो सिर्फ शक किया है...

[दोनों बैठ जाते हैं। हो-हल्ला मचता है।]

अध्यक्ष : श्री रामदीन...आप कुछ कहना चाहते हैं ?

रामदीन : (खड़े होकर) अध्यक्ष महोदय ! शिक्षा मंत्रीजी का प्रस्ताव बहुत ही सुंदर है। इससे बच्चों में मितव्ययिता आएगी। उनकी भावनाओं का परिष्कार होगा। उनमें चारित्रिक उन्नयन...

[शोर मचता है—'सरल भाषा बोलिए...पांडित्य न बघारिए...' रामदीन चिढ़कर बैठ जाता है।]

अध्यक्ष : श्री चंद्रभूषणसिंह !

चंद्रभूषण : यह बिल रोजगार में लगे अनेक लोगों को बेरोजगार बना देगा। जरा सोचिए...कितने ही खोमचे वालों के परिवार इस आमदनी से पलते हैं। शिक्षा मंत्री उन्हें भूखों मारना चाहते हैं। इससे बेरोजगारी फैलेगी।

अध्यक्ष : स्वास्थ्य मंत्रीजी इस बारे में कुछ कहेंगे।

स्वास्थ्य मंत्री : महोदय, स्कूल जाने वाले बच्चों को ज्यादातर बीमारियां इन्हीं चीजों से होती हैं। डाक्टरों का कहना है कि चाट, पकौड़ी, दही-बड़े आदि से पेट की और टाफी, इमली, लालीपाप से गले की बीमारियां हो जाती हैं। इसलिए यह बिल निश्चय ही बच्चों के हित में है।

अध्यक्ष : श्री नंदूराम।

नंदूराम : अध्यक्ष महोदय ! यह बिल माता-पिता पर अतिरिक्त खर्च का बोझ डालेगा। लोग बड़ी मुश्किल से पढ़ाई का खर्च उठा पाते हैं। फिर अल्पाहार की अतिरिक्त फीस कैसे देंगे ! अस्तु, इसे वापस लिया जाना चाहिए।

अध्यक्ष : अब इस बिल के पक्ष और विपक्ष में मतदान होगा। पहले पक्ष वाले लोग हाथ उठाएं।

[अध्यक्ष खड़े होकर उठे हुए हाथों को गिनते हैं।]

अध्यक्ष : अब विपक्ष के लोग हाथ उठाएं।

[फिर से हाथों को गिनते हैं।]

अध्यक्ष : दोनों ओर से आठ आठ हाथ उठे हैं।

नंदूराम : अब आप अपना वोट देकर फैसला कीजिए।

[इसी समय कुमारी नीलम अध्यक्ष के पास जाकर उन्हें एक लालीपाप देती है। अध्यक्ष उसे देखकर खुश होते हैं।]

अध्यक्ष : (लालीपाप चूसते हुए) भाइयो...क्या मुझे अब भी वोट देने की जरूरत है...

[सब लोग हंसते हैं। सदन की कार्रवाई समाप्त होने की घंटी बजती है।]

पर्दा गिरता है

(१९७६)

□□